# المجالسة و جواهر العلم

تصنيف

أبي بكر أحمد بن مروان بن محمد الدينوري القاضي المالكي

(ت ٣٣٣ هـ)

المجلد التاسع

فهارس الآيات والأحاديث والأخبار والآثار والقوافي

خرج أحاديثه وآثاره ووثق نصوصه وعلق عليه

أبو عبيدة مشهور بن حسن آل سلمان



جمعية التربية الإسلامية

دار ابن حزم



حقوق الطبع محفوظة

لجمعية التربية الإسلامية

الطبعة الأولى

١٤١٩هـ ـ ١٩٩٨م



جمعية التربية الاسلامية

هاتف 720053 ـ فاكس 720340

ص.ب: 16216 ـ مبنى: 54 ـ أم الحصم ـ البحرين

دار ابن حزم للطباعة والنشر والتوزيع

بيروت ـ لبنان ـ ص.ب: ١٤/٦٣٦٦ ـ تلفون: ٧٠١٩٧٤

# بين يدي الفهارس

هذه فهارس الآيات والأحاديث والآثار والأخبار والأَشعار، وضعتُها لتذلِّل الصعب، وتقرِّب البعيد من مادة هذا الكتاب، وقدمت الأحاديث المرفوعة، ورتبتها على المسانيد، ثم أفردتُ الأحاديث التي وقعت ضمن الآثار والأخبار، وأوردها الصالحون والحكماء والعلماء دون إسنادهم إلى النبي صلى الله عليه وسلم، ورتبتُها على حروف المعجم.

وبعد ذلك رتّبتُ الأخبار والآثار على حسب قائليها، وأدرجتُها على حروف المعجم مع بعضها بعضاً، وبدأت بأسماء الرجال فكناهم، فأسماء النساء فكناهن، ثم ذكرت المجهولين بنعوتهم وأوصافهم عند المصنف: (الحكماء، الصوفية، الزهاد، ...)، ثم ختمتُ هذا القسم بذكر ما أدرجه الرواة على اختلاف أحوالهم وطبقاتهم وأزمانهم من الأحاديث الإلهية.

وبعد هذا القسم؛ ذكرتُ الأحاديث والآثار والأخبار ممزوجة، ورتبتُها على الحروف، وميّزت غير المرفوع بوضعي أمامه (ث).

وكنتُ ناظراً في ترتيب الأحاديث والآثار إلى السهولة واليسر، وعدم وقوف الباحث عليها بعناءٍ وعسر، فقطّعتُ بعض النصوص وذكرتُها في غير موطن.

وأما ما ورد ذكره في تعليقاتي وتخريجي للنصوص فمميّزتُها بوضعي رمز (ت) بعد الرقم.

ولا يفوتني ـ أخيراً ـ أنْ أنوِّه بجهد الإخوة الأَكارم:

أحمد شكوكاني، وعمر إبراهيم أبي طلحة، وعبد الكريم رسمي في صنع هذا القسم من الفهارس على وفق الخطة التي وضعتُها.

فجزاهم الله خيراً، وأحسن مثوبتهم.

* * *

# فهرس الآيات على حسب ترتيبها في القرآن الكريم


| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * الفاتحة: | | |
| بسم الله الرحمن الرحيم | ١ | ٢٦٦٦ |
| مالك يوم الدين | ٣ | ٣٥٠١ |
| * البقرة | | |
| وأعلم ما تُبدون وما كنتم تكتمون | ٣٣ | ٢٦٦٠، ٢٦٦١ |
| وكلا منها رغداً حيث شئتما | ٣٥ | ٢٧٠٦ |
| فتلقى آدم من ربِّه كلمات فتاب عليه | ٣٧ | ١٦١٠، ٢٦٢٨ |
| وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون | | |
| وأنتم تنظرون | ٥٠ | ١٣٣٥، ١٣٣٨ |
| وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان | ٥٣ | ١٣٣٦، ٣٣٥٥ |
| فاقتلوا أنفسكم | ٥٤ | ١٥٣٩، ١٥٤٠ |
| كونوا قردة خاسئين | ٦٥ | ٥١١ |
| فجعلناها نكالاً لما بين يديها وما خلفها | | |
| وموعظة للمتقين | ٦٦ | ١٤٨٨ |
| بقرة صفراء فاقع لونها | ٦٩ | ١٤٨٩ |
| فباءوا بغضب | ٩٠ | ٢٦٩٨ |
| صبغة الله ومن أحسن من الله صبغة | ١٣٨ | ١٤٦٤، ١٤٦٥ |
| فولِّ وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٤ | ١٤٦٢، ١٤٦٣ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره | ١٤٤ | ١٤٦٠، ١٤٦١، ١٤٦٢ |
| ولا تقولوا لمن يقتل في سبيل اللّه أموات بل أحياء ولكن لا تشعرون | ١٥٤ | ١٣٩٢ |
| الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا: إنّا للّه وإنّا إليه راجعون | ١٥٦ | ٨٦٧، ١٣٩٤، ٣٠٨٨ |
| وإلهكم إله واحد | ١٦٣ | ١٥ |
| وإذا سألك عبادي عني فإني قريب أجيب دعوة الداع | ١٨٦ | ٢٦١٤ |
| هن لباس لكم وأنتم لباس لهن | ١٨٧ | ١٨٥٠ |
| وأحسنوا إنّ اللّه يحبُّ المحسنين | ١٩٥ | ٩٤ |
| إنّ خير الزاد التّقوى | ١٩٧ | ٢٧٨ |
| ليس عليكم جناح أن تبتغوا فضلاً من ربّكم | ١٩٨ | ٧٥٤ |
| تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من كلّم اللّه | ٢٥٣ | ١٩٩١ |
| وآتينا عيسى بن مريم البيّنات | ٢٥٣ | ١٩٩١ |
| اللّه لا إله إلا هو الحي القيّوم | ٢٥٥ | ١٥، ٢٨٧٠ |
| وسع كرسيُّه السمواتِ والأرض | ٢٥٥ | ٢١ |
| فطلٌ واللّه بما يَعملون بصير | ٢٦٥ | ٢٧٧١ |
| الشيطان يعدكم الفقر ويأمركم بالفحشاء | ٢٦٨ | ١٢٩٣ |
| إلا كما يقوم الذي يتخبطه الشيطان من المس | ٢٧٥ | ٢٦٩٦ |
| واتقوا يوماً ترجعون فيه إلى الله | ٢٨١ | ٩٧١ |
| • آل عمران | | |
| ويحذركم الله نفسه | ٢٨ | ٩٧١ |
| وجد عندها رزقاً | ٣٧ | ٢٠٥ |
| ومكروا ومكر اللّه | ٥٤ | ٣٥٨١ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين | ٦١ | ١٤٤٢ |
| وكنتم على شفا حفرة من النَّار فأنقذكم منها | ١٠٣ | ٥٠٧ |
| والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله | ١٣٥ | ١٣٢٨ |
| هذا بيان للناس وهدىً وموعظة للمتقين | ١٣٨ | ٤٩٤، ١٠٦٥ |
| * النساء | | |
| وخُلِقَ الإنسانُ ضعيفاً | ٢٨ | ١٠٦٩ |
| ولا تقتلوا أنفسكم | ٢٩ | ٨٥ |
| إن الله لا يظلم مثقال ذرة | ٤٠ | ٢٠٥٩ |
| إنّ اللّه لا يغفر أن يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء | ٤٨، ١١٦ | ٦، ٢٨١١ |
| إنَّ اللّه يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | ٥٨ | ١٧٠١ |
| مع الذين أنعم الله عليهم مع النبيين والصديقين | ٦٩ | ٣٥٧٧ |
| ولا يذكرون اللّه إلاّ قليلاً | ١٤٢ | ١١٠٥، ٢٦٩٥ |
| وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبّه لهم | ١٥٧ | ٣٥٨١ |
| * المائدة | | |
| اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام ديناً | ٣ | ٢٣٦٧ |
| ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب اللّه لكم | ٢١ | ٢٧٧٢ |
| واتقوا اللّه وابتغوا إليه الوسيلة | ٣٥ | ١٣٣٢ |
| سمّاعون للكذب أكّالون للسحت | ٤٢ | ١٤٧٢ |
| مهيمناً | ٤٨ | ٣٠٧٢ |
| إنّه من يشرك باللّه فقد حرّم الله عليه الجنة | ٧٢ | ٦ |
| من أوسط ما تطعمون أهليكم | ٨٩ | ٢٧٧٨ |
| آمنوا وعملوا الصالحات ثم اتقوا وآمنوا ثمّ اتقوا وأحسنوا والله يحب المحسنين | ٩٣ | ٢٤٢ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم قالوا: لا علم لنا إنّك أنت علاّم الغيوب | ١٠٩ | ١٠٨١ |
| * **الأنعام** | | |
| ولو ترى إذ وقفوا على النّار | ٢٧ | ١٦٢٧، ٢٢٦٨ |
| ولو ترى إذ وقفوا على ربّهم | ٣٠ | ١٢٣٠، ١٦٢٧، ٢٢٦٨ |
| ولا تطرد الذين يدعون ربّهم بالغداةِ والعشي يريدون وجهه | ٥٢ | ١٤٤٩ |
| قد ضللت إذاً وما أنا من المهتدين | ٥٦ | ١٩٣٧ |
| وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة | ٦١ | ١٤٥٠ |
| توفته رسلنا وهم لا يفرطون | ٦١ | ٨٧ |
| لا تدركه الأبصار وهو يدرك الأبصار | ١٠٣ | ٩٢٩ |
| الله أعلم حيث يجعل رسالته | ١٢٤ | ٢٢٥٧، ٢٤٩٩ |
| * **الأعراف** | | |
| إنك لمن المنظرين | ١٥ | ٢٤٣١ |
| وإذا صرفت أبصارهم تلقاء أصحاب النّار | ٤٧ | ٢٢٧١ |
| أفيضوا علينا من الماء أو مما رزقكم الله | ٥٠ | ٢٢٥٦ |
| فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا | ٥٣ | ١٥١٤ |
| قريب من المحسنين | ٥٦ | ١٥٠٧، ٣٤٥٦ |
| نقصٍ من الثمرات | ١٣٠ | ١٣٩٣ |
| فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد | ١٣٣ | ٧٢٠ |
| ربِ أرني أنظر إليك، قال لن تراني | ١٤٣ | ٩٢٩ |
| سأصرف عن آياتي | ١٤٦ | ٨٤ |
| سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ١٨٢ | ٣٤٠٨ |
| * **الأنفال** | | |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| إن تتقوا اللّه يجعل لكم فرقاناً | ٢٩ | ٢٨٧٣ |
| إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مئتين | ٦٥ | ٢٥٣٧ |
| الآن خفف الله عنكم وعلم أنّ فيكم ضعفاً، فإن | | |
| يكن منكم مئة صابرة يغلبوا مئتين | ٦٦ | ٢٥٣٧ |
| * **التوبة** | | |
| لا تحزن إنَّ الله معنا | ٤٠ | ٢٢٣٨ |
| وفيكم سمّاعون لهم | ٤٧ | ٣٣٩٤ |
| ورضوان من الله أكبر | ٧٢ | ٢٢٢٣ |
| * **يونس** | | |
| للذين أحسنوا الحسنى وزيادة | ٢٦ | ٢٥٢٣ |
| هنالك تبلوا كل نفس ما أسلفت وردوا إلى الله | | |
| مولاهم الحق | ٣٠ | ١٧٥٥ |
| * **هود** | | |
| وما آمن معه إلاّ قليلٌ | ٤٠ | ١٨١٣ |
| فلما رأى أيديهم لا تصل إليه | ٧٠ | ٣٧ |
| بقيّة اللهِ خير لكم | ٨٦ | ٨٣٨ |
| * **يوسف** | | |
| وشروه بثمنٍ بخسٍ دراهمَ معدودة وكانوا فيه | | |
| من الزاهدين | ٢٠ | م/٩٥٦ |
| يا أسفى على يوسف | ٨٤ | ١٣٩٤ |
| أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب اللّه | ١٠٧ | ٢٢٧٠ |
| * **الرّعد** | | |
| الله يعلم ما تحمل كلُّ أنثى وما تغيض الأرحام | ٨ | ٥٦٨ |
| ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء | ١٣ | ١١٤٥ |
| سوء الحساب | ٢١،١٨ | ١٢٠ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل، ويخشون | | |
| ربّهم ويخافون سوء الحساب | ٢١ | ٢٠١٠ |
| * إبراهيم | | |
| وذكّرهم بأيام اللّه | ٥ | ١ |
| ولئن شكرتم لأزيدنكم | ٧ | ٢٦٨٧ |
| فردوا أيديهم في أفواههم | ٩ | ٣٠٢٦ |
| وسكنتم في مساكن الذين ظلموا | ٤٥ | ٤٤٤ |
| يوم تبدّل الأرض غير الأرض | ٤٨ | ٤١ |
| * الحجر | | |
| وما ننزله إلا بقدر معلوم | ٢١ | ٢٦٤٩ |
| لعمرك، إنّهم لفي سكرتهم يعمهون | ٧٢ | ٢٥٢٧ |
| * الإسراء | | |
| سبحان الذي أسرى بعبده ليلاًمن المسجد الحرام إلى | | |
| المسجد الأقصى | ١ | ٢٦٦٥ |
| وكلَّ إنسانٍ ألزمناه طائره في عنقه | ١٣ | ١٣٢٩ |
| وإن من شيءٍ إلا يسبِّحُ بحمده | ٤٤ | ١٠٣ |
| ولقد آتينا موسى تسع آيات بيّنات | ١٠١ | ٥٠٤ |
| * الكهف | | |
| وإنْ يستغيثوا يُغاثوا بماءٍ كالمهلِ يشوي الوجوه | ٢٩ | ١٤١٧ |
| فهي خاوية على عروشها | ٤٢ | ١٤٤٣ |
| ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه | ٤٩ | ٢١٣٠، ٢٩٩٣ |
| أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقاءه فحبطت | | |
| أعمالهم فلا نقيم لهم يوم القيامة وزناً | ١٠٥ | ١٢ |
| * مريم | | |
| كهيعص | ١ | ٤٣٧، ٣٤٢٢ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| إنّي أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيّاً | ١٨ | ٦٠٣ |
| إنه كان بي حفياً | ٤٧ | ١١٤٧ |
| وكان يأمُر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربِّه مرضياً | ٥٥ | ١٨٣٩ |
| ورفعناه مكاناً علياً | ٥٧ | ٣١١٨ |
| وما نتنزلُ إلاّ بأمرِ ربِّك | ٦٤ | ١٠١٩ |
| وإنْ منكم إلاّ واردها كان على ربِّك حتماً مقضياً | ٧١ | ١٠٨١ |
| ويأتينا فرداً | ٨٠ | ١٠٥١ |
| إنما نعدُّ لهم عداً | ٨٤ | ١٠٥٠ |
| لا يملكون الشفاعة إلاّ من اتخذ عند الرحمن عهداً | ٨٧ | ١٠٥٢ |
| هل تُحِسُّ منهم من أحد أو تسمع لهم ركزاً | ٩٨ | ٤٧٢، ١١٧٣، ٢٣٧٠ |
| **• طه** | | |
| طه | ١ | ٣٤٢٢ |
| فاضرب لهم طريقاً في البحر يبساً لا تخاف | | |
| دركاً ولا تخشى | ٧٧ | ٢٥٠٧ |
| وأني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحاً ثم اهتدى | ٨٢ | ٢٤٥٢ |
| إنّما نعُدُّ لهم عداً | ٨٤ | ١٠٥٠ |
| ونحشر المجرمين يومئذٍ زرقاً | ١٠٢ | ١٠٤٩ |
| وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلاّ همساً | ١٠٨ | ٥٨٧، ١٠٥٣، ٣٠٥٨ |
| وعنت الوجوه | ١١١ | ١٠٥٣ |
| وأْمُرْ أهلك بالصلاة واصطبر عليها لا نسألك رزقاً | | |
| نحن نرزقك والعاقبة للتقوى | ١٣٢ | ٣٠٥٥ |
| **• الأنبياء** | | |
| لا يسبقونه بالقول | ٢٧ | ١١٤٦ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| لا يسئل عما يفعل وهم يُسألون | ٢٣ | ١٤٩٢ |
| ففتقناهما | ٣٠ | ٢١٥٨ |
| أولم يرَ الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقاً ففتقناهما | ٣٠ | ٢١٥٩ |
| ونضع الموازين القسط ليوم القيامة | ٤٧ | ٢٩٩٣ |
| يا نار كوني برداً وسلاماً على إبراهيم | ٦٩ | ٦٣ |
| ووهبنا له إسحاق ويعقوب نافلة | ٧٢ | ١١٤٨ |
| وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث...ففهمناها سليمان وكلاً آتينا حكماً وعلماً | ٧٨ - ٧٩ | ١٥٩٧ |
| وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث | ٧٨ | ٣١٠٥ |
| * الحج | | |
| كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غمٍّ أعيدوا فيها | ٢٢ | ٥٨٧ |
| وَبشِّرِ المخبتين | ٣٤ | ٤١٦، ٣٠٣١ |
| خير الرازقين | ٥٨ | ١٣٢١ |
| * المؤمنين | | |
| يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة | ٦٠ | ١٤٥٦ |
| ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربِّهم وما يتضرّعون | ٧٦ | ٢٤٠٠ |
| ادْفع بالتي هي أحسن السيئة | ٩٦ | ١٤٨٣ |
| كلا إنها كلمة هو قائلها ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون | ١٠٠ | ٢١٣٠ |
| تلفح وجوههم النّار وهم فيها كالحون | ١٠٤ | ١٤١٦ |
| ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوماً ضالين | ١٠٦، ١٠٧ | ٨٤٦ |
| اخسئوا فيها ولا تكلمون | ١٠٨ | ٦٠٣، ٨٤٦، ١٩٨٤ ٢٠٥٢، ٢٢٩٣ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * **النور** | | |
| يوماً تتقلب فيه القلوب والأبصار | ٣٧ | ٢٨٠٣ |
| وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات | | |
| ليستخلفنّهم في الأرض | ٥٥ | ١٥٧٤ |
| * **الفرقان** | | |
| وعاداً وثمود وأصحاب الرس وقروناً بين ذلك كثيراً | ٣٨ | ١٨٩ |
| * **الشعراء** | | |
| أرجه وأخاه | ٣٦ | ٢٠٤٥ |
| فكان كل فرق كالطود العظيم | ٦٣ | ١٣٣٨ |
| إلاّ من أتى الله بقلبٍ سليم | ٨٩ | ١٢٥١، ٢٣٧٢ |
| وتقلبك في الساجدين | ١١٩ | ٣٤٨٩ |
| أتبنون بكلّ ريع آية تَعبثون...وإذا بطشتم بطشتم | | |
| جبارين | ١٢٨ - ١٣٠ | ٢٠٤٥ |
| * **النمل** | | |
| يخرج الخبء في السموات والأرض | ٢٥ | ٢٦٥٠، ٢٧٦٠ |
| فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا | ٥٢ | ٢٠٥١ |
| أمّن يجيب المضطر إذا دعاه | ٦٢ | ١٢٤١ |
| * **القصص** | | |
| فلما بلغ أشدّه واستوى آتيناه حكماً وعلماً | | |
| وكذلك نجزي المحسنين | ١٤ | ٣١٥، ٢٥٩٧ |
| إنّي لما أنزلت إليّ من خير فقير | ٢٤ | ٢٨٤٤، ٣٤٥٦ |
| ما علمت لكم من إلهٍ غيري | ٣٨ | ١٢٧٤ |
| ولا يُسئل عن ذنوبهم المجرمون | ٧٨ | ١٠٠٠، ١٠٠١ |
| فخرج على قومه في زينته | ٧٩ | ٢٧٢٦ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * السجدة | | |
| وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا لمّا صبروا | ٢٤ | ١٢١٦ |
| * الأحزاب | | |
| إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت | ٣٣ | ٣٥٥٤ |
| هو الذي يصلي عليكم وملائكته | ٤٣ | ١١٦٨ |
| تحيتهم يوم يلقونه سلام | ٤٤ | ٣٦٧ |
| * سبأ | | |
| وقليل من عبادي الشكور | ١٣ | ١٨١٣ |
| خير الرازقين | ٣٩ | ١٣٢١ |
| وحيل بينهم وبين ما يشتهون | ٥٤ | ٤٤ |
| * فاطر | | |
| وجاءكم النذير | ٣٧ | ١٣٦٤، ٣٣٥٦ |
| * يس | | |
| فهم مقمحون | ٨ | ٩٣١ |
| وجعلنا من بين أيديهم سداً ومن خلفهم سداً | ٩ | ٩٣١ |
| إنّ أصحاب الجنّة اليوم في شغل فاكهون | ٥٥ | ١٠٠٢ |
| سلام قولاً من ربٍّ رحيم | ٥٨ | ٢٢٢٣ |
| * الصافات | | |
| وقفوهم إنهم مسئولون | ٢٤ | ٢٢٦٧ |
| فلولا أنه كان من المسبحين للبث في بطنه إلى يوم يبعثون | ١٤٣ - ١٤٤ | ١٧٨٥ |
| وما منّا إلاّ له مقام معلوم | ١٦٤ | ٢٢ |
| * ص | | |
| وقليل ما هم | ٢٤ | ١٨١٣ |
| هب لي ملكاً لا ينبغي لأحدٍ من بعدي | ٣٥ | ٢٤٣١ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| إنَّا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدّار | ٤٦ | ٩٩٨ |
| * **الزمر** | | |
| لا تقنطوا من رحمة الله | ٥٣ | ٢٦١٤ |
| له مقاليد السموات والأرض | ٦٣ | ٢٩٢٣ |
| الحمد لله الذي صدقنا وعده وأورثنا الأرض | ٧٤ | ٢٦٣٧ |
| * **غافر** | | |
| تجزى كل نفس ما كسبت | ١٧ | ٢١٣٠ |
| وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر | | |
| كاظمين ما للظالمين من حميم ولا شفيع يطاع | ١٨ | ١٥١٤ |
| يعلم خائنة الأعين | ١٩ | ٩٣٠ |
| يا قوم إني أخاف عليكم يوم التناد يوم تولون | | |
| مدبرين ما لكم من الله من عاصم | ٣٢ | ٢٥٩٨ |
| ادعوا ربكم يخفف عنا يوماً من العذاب | ٤٩ ـ ٥٠ | ٨٤٦ |
| ادْعوني أستجب لكم | ٦٠ | ٢٦١٤ |
| * **فصلت** | | |
| إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا | ٣٠ | ١٠٢٣ |
| * **الشورى** | | |
| ليس كمثله شيء | ١١ | ٢٢٥٧ |
| له مقاليد السموات والأرض | ١٢ | ٢٩٢٣ |
| ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٢٦ | ٤٩٥ |
| * **الزخرف** | | |
| ومن يعشُ عن ذكر الرحمن | ٣٦ | ٩٣٢ |
| ما ضربوه لك إلاجدلاً بل هم خصمون | ٥٨ | ١١٠٤ |
| إنكم ماكثون | ٧٧ | ٢٢٩٣ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * الجاثية | | |
| إنّا كنّا نستنسخ ما كنتم تعملون | ٢٩ | ١٢٥٠ |
| * الأحقاف | | |
| وشهد شاهد من بني إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | ٣٤٥٩ |
| في أصحاب الجنة وعد الصدق الذي كانوا يوعدون | ١٦ | ٦٩١ |
| كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من | | |
| نهار، بلاغ فهل يهلك إلا القوم الفاسقون | ٣٥ | ١٩٩٦ |
| * محمد | | |
| ويدخلهم الجنّة عرّفها لهم | ٦ | ١٣٦٣، ٣٥٨٠ |
| * الفتح | | |
| ستدعون إلى قوم أولي بأس شديد | ١٦ | ١٥٧٣ |
| سيماهم في وجوههم من أثر السجود | ٢٩ | ١٨٩٨ |
| * الحجرات | | |
| ولو أنّهم صبروا حتّى تخرج إليهم لكان | | |
| خيراً لهم | ٥ | ١٧٢٠ |
| * ق | | |
| ما يلفظ من قول إلاّ لديه رقيب عتيد | ١٨ | ٢٦ |
| وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت | | |
| منه تحيد | ١٩ | ١٣٧٥، ١٣٧٦ |
| لكلّ أوّاب حفيظ | ٣٢ | ١٣٥٩، ٢٨٦٤ |
| ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما في ستة | | |
| أيام وما مسّنا من لغوب | ٣٨ | ٢٥٨١ |
| * الذاريات | | |
| وما خلقت الجن والإنس إلاّ ليعبدون | ٥٦ | ٢٢٥، ٣٤٤٢ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * الطور | | |
| يوم تمور السماء موراً | ٩ | ٢٦٢٥ |
| * النجم | | |
| ولقد رآه نزلة أخرى عند سدرة المنتهى | ١٣ | ١٩٩٠ |
| ليجزي الذين أساءوا بما عملوا، ويجزي الذين أحسنوا بالحسنى | ٣١ | ٢١٣٠ |
| * القمر | | |
| ولقد يَسَّرنا القرآن للذكر فهل من مدّكر | ١٧، ٢٢، ٣٢، ٤٠ | ١٠٤٢ |
| * الرحمن | | |
| يعرف المجرمون بسيماهم | ٤١ | ٩٩٩ |
| ولمن خاف مقام ربه جنّتان | ٤٦ | ١٣٣١، ١٤١٤، ٢٧٨٧ |
| يا معشر الجن والإنس إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض | ٣٣ | ٢٥٩٨ |
| هل جزاء الإحسان إلا الإحسان | ٦٠ | ٣٥٧٩ |
| * الواقعة | | |
| وظل ممدود | ٣٠ | ٤٧ |
| وفاكهة كثيرة لا مقطوعة ولا ممنوعة | ٣٢ - ٣٣ | ١٠٠٣ |
| * المجادلة | | |
| لا تجد قوماً يؤمنون بالله واليوم الآخر | ٢٢ | ١٠٧٧ |
| * الحشر | | |
| كمثل الشيطان إذ قال للإنسان اكفر فلما كفر | ١٦ | ٢٥٦٩ |
| * الجمعة | | |
| خير الرازقين | ١١ | ١٣٢١ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * الممتحنة | | |
| إن الله غفور رحيم | ١٢ | ٢٨١١ |
| * التغابن | | |
| ومن يؤمن بالله يهدِ قلبه | ١١ | ٢٢٣، ١٤٨٥، ٣٤٤١ |
| * التحريم | | |
| وإذ أسرّ النبي إلى بعض أزواجه حديثاً | ٣ | ٣ |
| * الملك | | |
| تبارك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير | | |
| الذي خلق الموتَ والحياة | ١ - ٢ | ٢٦٢ |
| * القلم | | |
| ولا تطع كلَّ حلاّف مهين همّاز مشّاء بنميم | ١٠ - ١١ | ١١٢٧ |
| سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ٤٤ | ٣٤٠٨ |
| * الحاقة | | |
| لا تخفى منكم خافية | ١٨ | ١٢٩١ |
| هاؤم اقرءوا كتابيه، أني ظننت أني ملاق حسابيه | ١٩ | ١٦١٤ |
| لا يأكله إلاّ الخاطئون | ٣٧ | ١٢١٩ |
| * المعارج | | |
| في يوم كان مقداره خمسين ألف سنة | ٤ | ١٠٧١ |
| نزاعة للشوى | ١٦ | ٢٠٦٩ |
| * الجن | | |
| يسلكه عذاباً صعداً | ١٧ | ١٨ |
| * المزّمل | | |
| إنّ لدينا أنكالاً وجحيماً | ١٢ | ١٠٤ |
| وآخرون يضربون في الأرض يبتغون من فضل الله | ٢٠ | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * **المدثّر** | | |
| وثيابك فطهّر | ٤ | ١٥٢٧، ١٥٢٨، ١٥٢٩، ٢٨٧٢، ٣٠٤١، ٣٠٤٢، ٣٠٤٣ |
| فإذا نقر في الناقور | ٨ | ١٣٦ |
| وجعلت له مالاً ممدوداً | ١٢ | ٣٤٢٣ |
| هو أهل التقوى وأهل المغفرة | ٥٦ | ٢٦٢٦ |
| * **القيامة** | | |
| ولو ألقى معاذيره | ١٥ | ١٠٧٠ |
| وجوه يومئذٍ ناضرة إلى ربّها ناظرة | ٢٢ - ٢٣ | ٩٢٩ |
| * **الإنسان** | | |
| ولقاهم نضرة وسروراً | ١١ | ٥٦٠ |
| * **النبأ** | | |
| لابثين فيها أحقاباً | ٢٣ | ٥٨٧ |
| فذوقوا فلن نزيدكم إلاّ عذاباً | ٣٠ | ٥٨٧، ١٤٩٢، ٢٢٦٩ |
| جزاءً من ربّك عطاء حساباً | ٣٦ | ٣٥٨٠ |
| * **النازعات** | | |
| أنا ربكم الأعلى فأخذه الله نكال الآخرة والأولى | ٢٤ - ٢٥ | ١٢٧٤ |
| * **الانفطار** | | |
| إن الأبرار لفي نعيم وإنّ الفجار لفي جحيم | ١٣ - ١٤ | ٣٤٥٦ |
| * **المطففين** | | |
| كلا إنّهم عن ربّهم يومئذٍ لمحجوبون | ١٥ | ٩٢٩ |
| ومزاجه من تسنيم | ٢٧ | ١٠٠٥ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * **الانشقاق** | | |
| إذا السماء انشقت | ١ | ٣١٦٢ |
| * **الفجر** | | |
| وجيء يومئذ بجهنم | ٢٣ | ٢٥٩٨ |
| يا أيتها النفس المطمئنة | ٢٧ | ٤٧٥ |
| * **الضحى** | | |
| ولسوف يعطيك ربك فترضى | ٥ | ٣٠١٠/م، ٣٤٣٣ |
| * **الشرح** | | |
| ألم نشرح لك | ١ | ١٣٩ |
| * **التين** | | |
| فلهم أجر غير ممنون | ٤ | ٢٥٢٦ |
| * **العلق** | | |
| اقرأ باسم ربك الذي خلق | ١ | ٣١٦٢ |
| * **البينة** | | |
| لم يكن الذين كفروا | ١ | ٣٥٥٣ |
| * **الزلزلة** | | |
| ومن يعمل مثقال ذرة خيراً يره ومن يعمل مثقال ذرة شراً يره | ٨-٧ | ١٨٣٥ |
| * **التكاثر** | | |
| ألهاكم التكاثر | ١ | ١٢٣٢، ١٨٣٩ |
| لتسألن يومئذٍ عن النعيم | ٨ | ٢٩٦٨ |
| * **العصر** | | |
| والعصر | ١ | ٢٥٤٦ |
| * **الهمزة** | | |
| نار الله الموقدة التي تطّلع على الأفئدة | ٦-٧ | ٤١١ |

| الآية | رقم الآية | رقم الحديث أو الأثر |
|---|---|---|
| * **الماعون** | | |
| ويمنعون الماعون | ٥ | ٣٥٥١ |
| * **الكافرون** | | |
| قل يا أيها الكافرون | ١ | ٩٥٢ |
| * **الإخلاص** | | |
| قل هو الله أحد | ١ | ١٣، ١٣٨، ٣٩٩، ٩٥٢، ١٠٠٤، ١٤٨٧، ٢٦٣٤، ٣٤٥٨ |
| الصمد | ٢ | ١٠٤٣ |


* * *

# فهرس الأحاديث النبوية مرتبة على المسانيد


| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **إبراهيم بن هشام** | |
| إن لصاحب الحقّ مقالاً | ٢٦٧٨ |
| **أبي بن كعب** | |
| أُنزل القرآن على ثلاثة أحرف | ١٤٥٩ |
| بَشِّر هذه الأمة بالسناء والنصر والتمكين ومن عمل | ٢٢٢١ |
| **أسامة بن زيد** | |
| قمت على باب الجنة فإذا عامّة من يدخلها المساكين | ٢٠٣٢ |
| **الأسود بن شريح** | |
| عرف الحقّ لأهله | ٥٦٢ |
| **أنس بن مالك** | |
| أتخوف الساعة (كان مضطجعاً في ظلّ نخلة) | ٩٥٤ |
| أخبرني جبريل آنفاً | ٧٢٤ |
| إذا تزوّج البكر أقام عندها سبعاً | ٦١٠ |
| إذا تزوج البكر على الثيب أقام عندها | ٦١٠ت |
| إذا خرج الرجل من منزله فقال: بسم اللّه | ٢٦٦٤، ٣٥٨٢ |
| إذا دخل أهل الجنة الجنة، يشتاق بعضهم | ٢٤٧٣ |
| إذا وجهت إلى عبد من عبيدي مصيبة في بدنه | ١٠١ |
| اذهب إليه فأعلمه أنّه ليس من أهل النار ولكنه من | ١٠٥ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| أرأيتم إن أسلم عبد اللّه | ٧٢٤ |
| أرسل رجلاً من أصحابه إلى رأس من رؤوس المشركين يدعوه إلى الله عز وجل | ١١٤٥ |
| أسست السموات السبع والأرضون السبع على ﴿قل هو الله أحد﴾ | ٣٤٥٨ |
| اسكن، عليك نبي وصديق وشهيدان | ٢٦٩٤ت |
| اصبروا فإنّه لا يأتيكم زمان إلاّ وما بعده أشد | ٣٣٠ |
| اطلبني أول ما تطلبني عند الصراط فإن وجدتني وإلاّ | ٣٠ |
| أعطيت السورة التي ذكرت فيها | ١٤ت |
| اكتب كيف شئت... اكتب كيف شئت | ٢٣٩٢ |
| ألا أن لكل نبي تركة وضيعة | ٤٠٤ت |
| اللهم اجعل أبا بكر معي في درجتي يوم القيامة | ٢٢٣٨ت |
| أمّا أول أشراط الساعة فنارٌ تحشرهم من... | ٧٢٤ |
| إن أعمالكم تعرض على أقاربكم وعشائركم من الأموات | ٢٠٩٥ت |
| إن العبد إذا وضع في قبره | ٣٣ت |
| إن الله احتجب التوبة عن كل صاحب بدعة | ٢٨١٦/م |
| إن اللّه عز وجل أمرني أن أقرأ عليك القرآن | ٣٥٥٣ |
| إن اللّه تبارك وتعالى قال إذا وجّهت إلى عبدٍ من عبيدي | ١٠١ |
| إن الله تبارك وتعالى ليرضى عن العبد | ٣٤٩٠ |
| إن الله عز وجل يقول: إذا ابتليت عبدي بحبيبتيه ثم صبر | ١٧٨٠ت |
| إن رجلاً كان يكتب للنبي صلى الله عليه وسلم وكان قد قرأ البقرة وآل عمران | ٢٣٩٢ |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبا بكر وعمر وعثمان كانوا يفتتحون القراءة | ٣٢١١ |
| إن لكلّ نبيٍّ نزلة وضيعة وإن الأنصار كرشي | ٤٠٤ |
| إن لله عز وجل ملكاً موكلاً بتأليف الأشكال | ١٢٥٢ت |

| طرف الحديث | الرقم |
| --- | --- |
| إن من كفارة الغيبة أن تستغفر لمن أغتبته | ٣٥٤٢ت |
| إن النبي صلى الله عليه وسلم قرأ: «هو أهل التقوى وأهل المغفرة» | ٢٦٢٦ |
| إن اليهود قومٌ بهت | ٧٢٤ |
| أنا فاعل (خويدمك أنس أشفع له...؟) | ٣٠ |
| أيّ رجل عبد الله فيكم؟ | ٧٢٤ |
| الإزار إلى نصف الساق | ٣١٧٤ت |
| بعثت على أثر ثمانية آلاف نبي منهم أربعة آلاف | ٣٢٠٥ |
| تسحّروا فإنّ في السحور بركة | ٢٩٩ |
| ثلاث كفارات وثلاث درجات | ٨٩٩ت |
| ثلاث مهلكات وثلاث منجيات... شح مطاع | ٨٩٩ |
| جاهدوا المشركين بأنفسكم وأموالكم | ١١٤٤ |
| الجنّة تشتاق إلى ثلاثة: عليٌّ وعثمانَ وسلمانَ | ٢٦٧ |
| خدمت رسول الله صلى الله عليه وسلم تسع سنين | ٣٤٩١ |
| خويدمك أنس اشفع له يوم القيامة | ٣٠ |
| الحجامة في النقرة تورث النسيان | ٢٣٤٩ |
| دخل مكة على رأسه المغفر | ٣٤٨٣ |
| دخلت الجنّة فرأيت قصراً من ذهبٍ، فقلت: لمن هذا القصر؟ | ١٩٧ |
| دعا بإناء فأتي بقدح من زجاج فيه شيء من ماء | ٣٠٨٢ |
| دفن شهداء المؤمنين بأحدٍ بدمائهم ولم يغسلهم ولم يُصَلّ عليهم | ٣٣٦٧ |
| الدعاء مستجاب ما بين النداء | ١٠٤٧ت |
| سبع للبكر وثلاث للثيب | ٦١٠ت |
| صليت خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبي بكر وعمر وعثمان وعلي رضي الله عنهم فكانوا | ٣٥٠١ |
| الصلاة وما ملكت أيمانكم | ٢٣٩١ |
| الطاعون شهادة لكل مسلم | ٤٨ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| الطاعون كفارة لكل مسلم | ٤٨ت |
| فُضِّلْت على الناس بأربع | ١٦٢٣ |
| قل ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبةً إلاّ أمرنا فيها بالصدقة | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| كان إذا أتى الخلاء أو قال: قضى الحاجة لم يرفع ثيابه حتى يدنو من الأرض | ١٩١٤ |
| كان إذا أتى الخَلاء أو قضى حاجته لم يرفع ثيابه حتى يدنو من الأرض | ٢٨٤٣ |
| كان إذا حضرت الصلاة بسطنا بساطاً لنا فقام وصفَّنا خلفه | ٢٨٣٦ |
| كان رسول الله وأبو بكر وعمر وعثمان لا يجهرون ببسم الله الرحمن الرحيم | ٣٥٦٩ |
| كان منا رجل من بني النجار قد قرأ البقرة وآل عمران | ٣٢٩٢ت |
| كان يحب أن يليَه المهاجرون | ١٨٧٥ |
| كان يحتجم ثلاثاً ثنتين | ٢٤١٠ |
| كان يشرب قائماً | ٣١٧٠ |
| كانوا لا يجهرون ببسم الله الرحمن الرحيم | ٣٥٠١ت، ٣٢١٢ت |
| كفارة الاغتياب أن تستغفر لمن اغتبته | ٣٥٤٢ |
| لم يكن شخص أحبَّ إليهم من رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانوا إذا رأوه لم يقوموا له لما يعلمون من كراهيته | ٢٣٥ |
| للبكر سبع وللثيب ثلاث | ٦١٠ت |
| لولا أن لا تدافنوا لدعوت الله أن يسمعكم عذاب القبر | ٣٢ |
| ما كنا نشاء أن نرى رسول الله صلى الله عليه وسلم من الليل مصلياً إلا رأيناه | ٢٣٥٨ |
| ما من معمر يعمر في الإسلام أربعين سنة إلا صرف الله عنه ثلاثة أنواع من البلاء | ١٣٣٤ |
| من اقتراب الساعة أن يفشو الفالج وموت الفجأة | ٣١٧٦ |
| من السنة إذا تزوج الرجل البكر على الثيب | ٦١٠ت |

| طرف الحديث | الرقم |
| --- | --- |
| من سمع النداء فلم يجب، فلا صلاة له | ٣٣٧١ت |
| من قال أستجير بالله من النار ثلاث مرّات | ٣٥٦٤ |
| من قتل عصفوراً عبثاً جاء يوم القيامة وله صراخ | ٣١٨١ |
| من قرأ ﴿قل هو الله أحد﴾ مئتي مرة غفر له ذنب مئتي سنة | ١٣٨ |
| من نصر أخاه بالغيب نصره الله في الدنيا والآخرة | ١٤١٢ |
| من يعلم علمه؟ | ١٠٥ |
| الموت كفّارة لكلّ مسلم | ٥٨ |
| نزل جبريل عليه السلام على النبي صلى الله عليه وسلم فقال: | |
| يا محمد مات معاوية | ٢٦٣٤ |
| نهى أن يشرب الرجل قائماً | ٣١٧٠ت |
| نهى عن الدبّاء | ٢٨١ |
| هكذا أمرني ربّي عزّ وَجَلَّ | ٩٤٩ |
| هل تدرون ما قال ربُّكم؟ | ٢٦٢٦ |
| الوعد الرق، فإذا وعد أحدكم أخاه فليلتمس العتق | (٢٣) ملحق |
| لا يردُّ الدعاء بين الأذان والإقامة | ١٠٤٧ |
| لا يؤمن عبد حتّى أكونَ أحبّ إليه من أهله وماله | ٣٤٧، ٣٥٦٧، ٣٥٦٨ |
| يا أبا جهل بن هشام، ويا شيبة بن ربيعة ويا أمية بن خلف، ألا هل | ٢٢٦٤ |
| يا أبا عمير ما فعل النُّغير؟ | ٢٨٣٦ |
| يا جبريل بم نال هذه المنزلة من الله عز وجل | ٢٦٣٤ |
| يد الله فوق رأس المؤذن فإذا فرغ من أذانه | ٩٥٠ |
| **أهبان بن صيفي** | |
| إذا وقعت الفتنة فاتخذ سيفاً من خشب | ٢٤٠١ |
| لا تكفنوني في قميص | ٢٤٠١ |
| **بشير بن الحارث** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| إذا أشكلت عليك آية من القرآن تؤنثها | ١٠٣٢ت |
| **البراء بن عازب** | |
| إنّ الله وملائكته يصلون على الصّف الأول | ١٨٧٦ |
| أهجهم أو هاجهم وجبريل معك | ٢٣١٥ |
| صاحب الدَّين مأسور يوم القيامة يشكو إلى الله عزّ وَجَلَّ | ٢١٣ |
| ما بينهما وقت (سُئل عن مواقيت الصلاة فأمر بلالاً، فقدَّم وأخَّر) | ٣١٤٤ |
| نهانا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن خاتم الذهب أو حلقة الذهب | ٣٥٤٧ |
| **بريدة الأسلمي** | |
| إلى مائة سنة يبعث الله ريحاً | ١٩٨٩ت |
| إن لله ريحاً يبعثها عند رأس مئة سنة | ١٩٨٩ت |
| خير أمّتي قرنا بعثْتُ فيهم ثم الذين يلونهم... ثم يظهر فيهم السَّمن ويرهقون الشهادة | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| دخلت الجنة فاستقبلتني جارية شابة | ١١٠٢ت |
| رأس مئة سنة يبعث الله ريحاً طيّبة | ١٩٨٩ |
| عند رأس المئة سنة يبعث الله ريحاً | ١٩٨٩ت |
| لا وجدته، إنما بنيت هذه المساجد لما بنيت | ٢٣٤٠ |
| يقول الله تبارك وتعالى ما أصيب ابن آدم بعد ذهاب دينه | ١٧٨١ |
| **بهز بن حكيم عن أبيه عن جدّه** | |
| أهديةٌ أم صدقة... (إذا أتي بالشيء سأل عنه) | ١١٦٢ |
| **تميم الداري** | |
| أول ما يحاسب به العبد صلاته فإن أكملها كتبت له | ٢٧٥٨ |
| **ثوبان مولى رسول الله** | |
| إنّ حوضي ما بين عدن إلى عمان البلقاء | ٢٠٣٣ |
| لا يزيد في العمر إلا البر ولا يرد القدر | ١٨٩٢ |
| **جابر بن عبد الله الأنصاري** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| أتي النبي صلى الله عليه وسلم بجنازة رجل فلم يصل عليه | ٢٤١ |
| اجلس وسمِّ الله وكُلْ بيمينك ممّا يليك | ٣١٥٥ |
| إن الله تبارك وتعالى خلق الخلق فلم يستعن على ذلك | ٨٤٥ |
| إن الله تبارك وتعالى يتحنّن على الموحدين فيبعث ملكاً | ٨٤٥ |
| أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يجمع بين الرجلين من قتلى أحد | ٣٣٦٧ت |
| إن لكلِّ نبي حواري وحواريّ الزبير | ٤٥٣ |
| أنا شهيد على هؤلاء | ٣٣٦٧ت |
| إنّه كان يبغض عثمان أبغضه الله | ٢٤١ |
| إيّاكم والغيبة، فإن الغيبة أشد من الزنا | ٣٥٤١ |
| بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم مئة راكب | ١٤٢١ت |
| بينما أهل الجنة في نعيمهم إذ سطع لهم نور | ٢٢٢٣ |
| ثلاث في المنافق، إذا وعد أخلف | ٣٤٦٤ |
| صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم على النجاشي فصففنا صفين | ١٢٤٥ |
| فلا يدع الله دعوةً دعا بها عبدُه إلاّ بَيَّن له إمّا أن يكون عُجِّلَ له في الدنيا | ١٢٦ |
| كان يفرغ على رأسه ثلاث حفن | ٣٥٢٦ |
| كل معروف صدقة | ٣١٧٨ |
| كلوا ما نبذ عنه ودعوا ما طفى | ٣٤٩٨ |
| كنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم نستمتع بالقبضة من الطعام | ١١٦١ت |
| كنا نستمتع بالقبضة من التمر | ١١٦١ت |
| لو أصدقها ملء كف ـ وذكر الطعام ـ فرضيت به لكان صداقاً | ١١٦١ت |
| لو أنّ رجلاً تزوّج امرأة على ملء كَفٍّ من طعام | ١١٦١ |
| لو أن رجلاً أعطى امرأة ملء يديه طعاماً، كانت به حلالاً | ١١٦١ت |
| ما اصطدتموه وهو حي فكلوه | ٣٤٩٨ت |
| ما ألقى البحر أو جزر عنه فكلوه | ٣٤٩٨ت |
| ما على ظهر الأرض من نفسٍ منفوسة تأتي عليها مئة سنة | ٣١٣٧ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| من أحب أن ينظر إلى سيد شباب أهل الجنة | ٣١٦٤ت |
| من أعطى في صداق امرأة ملء كف سويقاً أو تمراً فقد استحل | ١١٦١ت |
| من أعطى في صداق ملء كف تمراً | ١١٦١ت |
| من أنظر معسراً إلى ميسرة أنظره الله | ٣٥٠٢ |
| من سَرّه أن ينظرَ إلى رجل من أهل الجنة فلينظر إلى هذا | ٣١٦٤ |
| من قال سبحان الله العظيم وبحمده غرست له نخلة في الجنة | ٦٧، ٣٠٨٦ |
| من كان له إمام فقراءته له قراءة | ٣٥٢٣ |
| نعم الإدام الخلُّ | ٢٨٥٤ |
| نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يصلي الرجل على جواد الطريق | ٣٢٠٤ت |
| نهى عن المحاقلة والمزابنة | ٣٥٢٠ |
| النظر في المصحف عبادة | ٣٥٠٣ت |
| والذي نفس محمد بيده ما خرج أحدٌ من المدينة رغبة عنها | ٢٢٦٣، ٢٩٠٤ |
| لا تباشر المرأةُ المرأةَ تنعتها لزوجها | ٣٥٢٤ |
| لا تباشر المرأة المرأة ولا الرجل الرجل | ٣٥٢٤ت |
| لا تجزىء صلاة لا يقيم الرجل صلبه في الركوع والسجود | ٢١١ |
| يا جابر، أما علمت أن الله تبارك وتعالى أجلس أباك فكلّمه | ٣٥١٥ |
| يدعو الله تبارك وتعالى المؤمن يوم القيامة | ١٢٦ |
| يكون آخر هذه الأمّة خليفة يحثي المال | ٢٢٦٣ |
| **جُبير بن نفير** | |
| إن لكلّ أمّةٍ حكيماً وحكيم هذه الأمّة أبو الدرداء | ٤٠٥ |
| **جبير بن مطعم** | |
| انشق القمر على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى صار فلقتين | ٢٦٢٠ |
| **جرير بن عبدالله البجلي** | |
| إذا أبق العبد فلا ذِمّة له | ٣١٦٣ |
| اصرف بصرك | ١٧٤٧ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| إني عبد آبق من مواليه | ٣١٦٣ت |
| رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يمسح على الخفين | ٢٠٧١ |
| ما حجبني النبي صلى الله عليه وسلم، ولا رآني إلا ابتسم | ٨٢، ٣١٦٨ |
| ما حجبني رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا رآني منذ أسلمت إلاّ ابتسم | ٨٢ت |
| ما من قوم يعمل فيهم بالمعاصي هم أعزّ وأكثر | ٢٥٠٦، ٣٠٣٧ |
| ما من قوم يكون بين أظهرهم من يعمل بالمعاصي هم أعزّ وأمنع | ٢٨٨٢ |
| **حاطب بن أبي بلتعة** | |
| من زارني بعد موتي فكأنّما زارني في حياتي | ١٣٠ |
| **حذيفة بن اليمان** | |
| كلُّ معروف صدقة | ٣١٧٩ |
| لا تقولوا شاء الله وشاء فلان ولكن قولوا شاء | ١٩٨٨ |
| **حزام بن خالد** | |
| لما قدم ركب خزاعة على النبي صلى الله عليه وسلم يستغفرونه | ٥٨٤ |
| **الحسن البصري** | |
| إن جبريل عليه السلام أتاني فقال: إن عفريتاً من الجن | ٢٨٧٠ |
| كان يتمثل بهذا البيت: | |
| كفى الإسلام والشيب بالمرء ناهياً | ١٣٧٣، ٣٣٥٨ |
| ليدخلن الجنة بشفاعة رجل من أمتي | ٢٢١٦ |
| يقول الله تبارك وتعالى للمؤمن يوم القيامة: ما دعوتني بشيءٍ إلاّ استجبتُ لك | ١٢٥ |
| **الحسن بن علي بن أبي طالب** | |
| إن البخيل من ذكرت عنده فلم يصل علي | ١٠٤٨ |
| من ولد له ولد فأذن في أُذنه اليمنى | ٣٢١٢ت |
| يجيء قوم قبل قيام الساعة يُسمّون الرافضة برآء من الإسلام | ٢٥٧٦ |
| **الحسين بن علي بن أبي طالب** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| كان إذا توضأ فضل موضع سجوده | ١٦٠٧ |
| **خالد بن أبي عمران** | |
| بينما رسول الله صلى الله عليه وسلم على مضر | |
| **خزيم بن أوس** | |
| كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم فقال له العباس: إني أريد أن | ١٢١٨ت |
| **خزيمة بن ثابت** | |
| اتَّقوا دعوة المظلوم فإنّها تحملُ في الغمام | ٣١٧٣ |
| الموت كفارة لذنوب المؤمنين | ٥٨ت |
| **راشد بن سعد** | |
| إن الله تبارك وتعالى إطلع إلى عباده ليلة النصف | ٩٤٤ |
| **رافع بن خديج** | |
| اجتمعوا ولا يكن فيكم من غيركم | ٣٣٦٠ |
| أعطى رسول الله صلى الله عليه وسلم أبا سفيان بن حرب | ٣٣٦٠ت |
| أعطى المؤلفة قلوبهم يوم حنين مئة مئة | ٣٣٦٠ |
| قد بلغني ما قلتم أما إنّكم إنْ شئتم قلتم: ألم تأتنا طريداً فآويناك | ٣٣٦٠ |
| ما أحسن زرع ظهير...، خذوا زرعكم وردوا عليه نفقته | ١٠٢٠ت |
| من زرع في أرض قوم من غير إذنهم | ١٠٢٠ت |
| من زرع في أرض قوم فليس له من الزرع | ١٠٢٠ |
| **ربيعة بن عباد** | |
| رأيت النبي صلى الله عليه وسلم بسوق ذي المجاز يقول: | ١٣٠٤ |
| **الزّبير بن العوام** | |
| احمل فداك أبي وأمي | ٣٤٩ت |
| غيّروا الشَّيبَ لا تشبّهوا باليهود | ٣٤٥١ |
| لما كان يوم أحد اقبلت امرأة تسعى حتى كادت أن تشرف | |
| على القتلى | ٢٧٩٦ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| المرأة المرأة | ٢٧٩٦ |
| **زر بن حبيش** | |
| من قرأ ﴿ألم نشرح لك﴾ فكأنّما أتاني وأنا مغموم ففرّج عنّي | ١٣٩ |
| **زرارة بن أوفى** | |
| هل ترى ربك؟ فقال جبريل عليه السلام: إن بيني وبين العرش سبعين حجاباً | ٦٥ |
| **الزهري** | |
| هلا أقررتم... وأمرهم أن يغيّروا شعره | ١٦٢ |
| **زيد بن أرقم** | |
| إن هذه الحشوش محتضرة | ٣٤٨٨ |
| **زيد بن أسلم** | |
| ما من داع يدعو إلا كان بين | ١٢٥ت |
| من غدا إلى المسجد أو راح | ١١٩ت |
| **سعد بن عبادة** | |
| يا أبا ثابت ما هذا | ٢٢٣٠ |
| **سعد بن أبي وقّاص** | |
| ارم فداك أبي وأمّي | ٣٤٩ |
| جمع لي رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه يوم أحد | ٣٤٩ت |
| سألت ربي ثلاثاً فأعطاني ثنتين | ٣١٧١ت |
| سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يجمع لي أبويه يوم أحد | ٣٤٩ت |
| ما سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لأحدٍ يمشي على | |
| الأرض إنّه من أهل الجنة إلاّ لعبد الله بن سلاّم | ٣٤٥٩ |
| من استلحق نسباً ليس منه، حتّه الله حتّ الورق | ١٣٩٠ |
| من سعادة ابن آدم استخارة الله عز وجل | ٢٦٦٧ |
| يوم بدر كنت أرمي بين يدي النبي صلى الله عليه وسلم | ٣٤٨ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **سعد مولى عمرو بن العاص** | |
| لا تماروا فيه فإن المراء فيه كفر | ٣٤٩٧ت |
| **سعيد بن المسيب** | |
| شرُّ النّسك نسك أعجمي | ٢٣١٢ |
| **سفينة** | |
| تَعبَّد النبيّ صلى الله عليه وسلم واعتزل النساء حتّى صار | ١٩٣٨ |
| **سفيان بن عبدالله الثقفي** | |
| قل آمنت بالله ثم استقم | ١٧٢١ |
| قل ربي الله ثم استقم | ١٣٨٨ |
| **سفيان الثوري** | |
| أُمتي، أُمتي.... | ١٠٨١ |
| كان يتعوذ بالله من عذاب القبر | ١٠٨١ |
| **سلمان الفارسي** | |
| أحْدِث لذلك وضوءاً | ٢٢٩٠ |
| إن النبي صلى الله عليه وسلم عهد إلينا عهداً فتركنا ما عهد إلينا | ١١٢٤ت |
| **سلمة** | |
| كان يستفتح بسبحان ربّي الأعلى الوهّاب | ٣٠٩٩ |
| ما سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يستفتح دعاء | ٣٠٩٩ت |
| **سمُرة بن جندب** | |
| شعار المهاجرين عبدالله وشعار الأنصار | ٢٥٦٧ |
| قلَّ ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبة إلاّ أمرنا فيها بالصدقة | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| **سهل بن سعد الساعدي** | |
| إن في الجنة شجرة يسير الراكب في ظلها مئة عام | ٣٥٤٥ |
| دون الله تبارك وتعالى سبعون ألف حجاب من نور | ٢٥٧٧، ٣٠٢٢ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **شدّاد بن أوس** | |
| ثلاثة غرباء، قرآن في قلب رجل فاجر، ومصحف في | ٢٥٦٨ |
| **الصّلت بن عبد الرحمن** | |
| إنّي أكره زبد المشركين | ٣٥٤٦ |
| **صهيب** | |
| ما آمن بالقرآن من استحلّ محارمه | ٥٧ |
| **طلحة بن عبيدالله** | |
| فيم تتنازعون؟... فأمرنا بأكله (لحم الصيد يأكله المحرم) | ٣٥٢٧ |
| **عامر بن ربيعة** | |
| إذا رأيت جنازة فقم حتى تجاوزك | ٣٤٦٥ |
| **عبادة بن الصامت** | |
| ما على ظهر الأرض من رجل مسلم يدعو | ١٢٤ت |
| لا تشركن بالله شيئاً | ١٥٥٢ت |
| **العباس بن عبد المطلب** | |
| نهيت أن أمشي عرياناً | ١٨٦٢ |
| **العباس بن مرداس** | |
| يا عباس بن مرداس كيف كان إسلامك | ٢٠٤٤ |
| **عبد الله بن أبي أوفى** | |
| الله مع القاضي ما لم يجر | ٣٤٩٣ |
| بينما نحن قعود عند رسول الله صلى الله عليه وسلم إذ أتاه آت | ٥١٦ |
| الحمد لله الذي أنقذك [بي] من النار | ٥١٦ |
| فاشهدي الله واشهديني برضاك | ٥١٦ |
| **عبد الله بن أبي الجدعاء** | |
| ليدخلن الجنة بشفاعة رجل من أمتي | ٢٢١٦ت |
| **عبد الله بن جعفر** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| أزيدك، أزيدك | ٢٠٧٢ت |
| اللهم بارك له في بيعه | ٢٠٧٢ت |
| **عبد الله بن سلام** | |
| إني سائلك عن ثلاث لا يعلمهن إلاّ نبي | ٧٢٤ |
| ذلك عدو اليهود من الملائكة | ٧٢٤ |
| **عبدالله بن عباس** | |
| أتى سائلٌ امرأةً وفي فمها لقمة | ٣٥٢٩ |
| أشد الناس عذاباً يوم القيامة | ٩٠ت |
| اعتمر النبيّ صلى الله عليه وسلم أربع عمر، عمرة.. | ١٧٥٣ |
| إن خير أكحالكم الإثمد فإنّه يجلو البصر | ١٥١٢ |
| أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يوتر بثلاث ركعات | ٩٥٢ت |
| إن الميت ليسمع خفق نعالهم إذا ولّوا | ٣٣ |
| ألا أنبأكم بخير الناس منزلةً؟ رجلٌ ممسكٌ بعنان | ٢١٥٥ |
| أنفعهم للناس؟ (أي العباد أحب إلى الله) | ٣٥٤٣ |
| أول شيء خلق الله تعالى القلم | ١٢٥٠ت |
| الإضرار في الوصية من الكبائر | ٣٤٦٠ |
| بنعم الله عزّ وجل (تفسير قوله تعالى: ﴿وذكّرهم بأيّام الله﴾) | ١ |
| ثلاث من لم يكن فيه فإنّ الله تبارك وتعالى يغفر ما سوى ذلك لمن يشاء | ١٥٣٨ |
| حملة العرش ما بين كعب أحدهم | ٢٥٨٠ |
| خرجت امرأة ومعها صبي لها، فجاء الذئب فاختلس منها الصبي | ٣٥٢٩ت |
| سأل محمد صلى الله عليه وسلم ربّه أن لا يلبس أمّته شيعاً | ٣١٧١ |
| الصحة والفراغ نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس | ٩٧٧ |
| قيلوا فإنّ الشياطين لا تقيل | ٢٠٤٧ |
| كان إدريس زراداً وكان آدم حراثاً | ٣١١٨ت |
| كان عمر آدم ألف سنة وكان عمر داود ستين سنة | ٣٣٩٠ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| كان يقص شاربه وكان أبوكم إبراهيم | ٣٥٢١ |
| كان يوتر بثلاث بسبِّح، و﴿قل يا أيّها الكافرون﴾، ﴿وقل هو الله أحد﴾ | ٩٥٢ |
| كفّارة الذّنب النّدامة | ١١١٧ |
| كلمات الفرج: لا إله إلاّ الله الحليم الحكيم | ٤٣٥، ٢٧٧٠ |
| للجار أن يضع خشبه على جدار جاره | ٣١٦٠ت |
| ليس منّا من أحدٍ إلاّ وله قرين | ٢٢٨٩ |
| ما يمنعك أن تزورنا... فنزلت: ﴿وما نتنزّل إلاّ بأمر ربّك﴾ | ١٠١٩ |
| من أدرك شهر رمضان فصامه من أوّله إلى آخره | ١٦٢٢ |
| من ترك الحيات مخافة طلبهن فليس منا | ١٧٦٢ت |
| من سمع المنادي فلم يمنعه من اتباعه عذر | ٣٣٦٨ت |
| من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له | ٣٣٦٨ |
| من كَفَّ غضبه ستره الله | ٣٥٤٣ |
| من مشى مع أخ له في حاجة | ٣٥٤٣ |
| نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس | ١٦٧٥ |
| والذي نفسي بيده ما أطاع العبد ربَّه بشيءٍ أفضل | ٢٤٩٢ |
| هو اليوم التاسع. (في يوم عاشوراء) | ١٨٦٣، ٢٥٩٣ |
| لا يقف أحدكم موقفاً يُضربُ فيه رجل مظلوماً | ١٠٦ |
| يا ابن آدم! ما تصنع الدنيا | ٤٢١ت |
| يا أيّها الناس، تداووا | ٣٤٦٣ |
| **عبدالله بن عمر** | |
| إذا أتيتم الجمعة فاغتسلوا | ٣٥٦٠ت |
| إذا حلف الرجل، فقال: إن شاء الله فقد استثنى | ٣١٣٣ |
| إذا كان يوم القيامة دعا الله تبارك وتعالى | ١١ |
| إذا نكح العبد بغير إذن سيده | ١٢٩ت |
| اللهم اقسم لنا من خشيتك ما يحول بيننا وبين معاصيك | ٧٢٥ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| إن أول شيء خلقه الله عز وجل القلم | ١٢٥٠ت |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم أمر بالصدقة | ٢٢٣٩ |
| إنَّ النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن القزع | ١٣٨٩ت |
| أمر بقتل الكلاب إلا كلب ماشية أو صيد | ٣١٧٥ |
| أمرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن نغتسل يوم الجمعة | ٣٥٦٠ |
| إنه سابق بين الخيل من الغاية إلى ثنية الوداع | ٣٠٤ |
| ايكم أحسن عقلاً، وأورع عن محارم الله... | ٢٦٢ |
| الأعمال عند الله عز وجل سبعة، عملان موجبان وعملان | ٣٠٢١، ٢٥٤٨ |
| بعثت بين يدي الساعة حتّى يعبدَ الله وحده لا شريك له | ١٤٧ |
| تلا ﴿تبارك الذي بيده الملك﴾ حتّى بلغ ﴿أيّكم أحسن عملاً﴾ | ٢٦٢ |
| جعل الله رزقي تحت ظل رمحي | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |
| الحجامة على الرِّيق فيها شفاء وبركة وتزيد في العقل وفي الحفظ | ٦٣١ |
| دعائي ودعاء الأنبياء قبلي عشية عرفة | ٤٩ت |
| الدعاء ينفع مما ينزل ومما لم ينزل فعليكم | ١٦٨٦ |
| رجم يهودياً ويهوديّة | ٣٢١٠ |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يكاد يقوم من مجلس إلادعا بهؤلاء | ٧٥٢ |
| كان يُصَلِّي في نعليه | ٣١٦٩ |
| كل مسكر خمر وكل مسكر حرام | ١٦٣٣ت |
| ما رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يستلم إلاّ هذين الرّكنين | ٣٤٦٢ |
| ما سأل الله عبد شيئاً أحب إليه من أن يسأله العافية | ١٥٦٧ت |
| من أتى الجمعة فليغتسل | ٣٥١٩، ٣٥٥٧، ٣٥٥٨ |
| من أذن له منكم بالدعاء فتحت له أبواب الرحمة | ١٥٦٧ت |
| من استطاع منكم أن يموت في المدينة فليفعل فإنه من مات | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| بالمدينة | ٨١٠ |
| من زار قبري وجبت له شفاعتي | ١٢٩ |
| من شرب الخمر في الدنيا لم يشربها في الآخرة | ٣٥٦٦ |
| من فتح له في الدعاء منكم فتحت له أبواب الرحمة، وما يسأل الله | ١٥٦٧ |
| من كف لسانه ستر الله عز وجل عورته | ٣٥٣٦ت |
| من لطم وجه عبده فإنّ كفارته عتقه | ٣٥٣٦ |
| المكيال مكيال أهل المدينة والوزن وزن أهل مكة | ١٨٣٧ |
| نهى أن يُصَلَّى على قارعة الطريق | ١٩٥٦، ٣٢٠٤ |
| نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن القَزِع | ١٣٨٩ت |
| نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن النذر | ٣٥٠٠ت |
| لا تكرعوا واغسلوا أيديكم واشربوا | ٢٠٥٣ |
| يدنو المؤمن من ربِّه تبارك وتعالى يوم القيامة | ٤ |
| **عبد الله بن عمرو** | |
| الآيات خرزات منظومات | ٢١٥٦ت |
| إن أول الآيات خروجاً طلوع الشمس من مغربها | ٢١٥٦ت |
| إن الله تبارك وتعالى خلق الخلق ثم جعلهم في | ٢٢٢٠ |
| إن فقراء المهاجرين يسبقون الأغنياء يوم القيامة إلى الجنة | ٢٠٣٧ |
| إن الرحم معلقة بالعرش وليس الواصل بالمكافيء | ٢٠٠٣ |
| كل دَيْنٍ مأخوذ من حسنات صاحبه إلاّ من ادّان في ثلاث | ٢٦١١ |
| من شهد إملاك رجل مسلم كان كمن صام يوماً | ٢٦٢٢ |
| المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده | ٣٤٤٥ |
| يا عثمان ما سألني عنها أحد غيرك، تفسيرها لا إله إلاّ الله والله أكبر (تفسير قوله تعالى: ﴿له مقاليد السماوات والأرض﴾) | ٢٩٢٣ |
| يحشر المتكبّرون يوم القيامة أمثال الذر في صور الرجال | ١٩٥٧ |
| يصاح برجل من أمتي على رؤوس الخلائق يوم القيامة | ٢٢٩٥ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **عبدالله بن قيس** | |
| إن للمؤمن في الجنة لخيمة من لؤلؤة | ١٤١٣ت |
| جنتان من فضة آنيتهما وما فيهما | ١٤١٥ت |
| الخيمة درة مجوفة طولها في السماء ستون ميلاً في كل زاوية للمؤمن | ١٤١٣ |
| **عبدالله بن مسعود** | |
| اقتدوا باللّذين من بعدي أبي بكر وعمر | ٣٥٢٨ |
| إنّ الله ليؤيد الدّين بالرّجل الفاجر | ٣٤٩٦ |
| إن أولى الناس بي أكثرهم علي صلاة | ١٢٨ |
| إن حسن الصوت يزين القرآن | ٢٩٥٨ |
| إن لله ملائكة سياحين | ١٧٠١ت |
| الحيّات ما سالمناهن منذ حاربناهن | ١٧٦٢ |
| رأيت جبريل عند سدرة المنتهى عليه ست مئة جناح | ١٩٩٠ |
| فضل صلاة الليل على صلاة النهار | ٣٥٤٤ |
| ما أصاب أحداً قطُّ همٌّ ولا حزن، فقال: اللهمَّ إنّي عبدك | ١٨٠٣ |
| ما من حاكم يحكم بين الناس إلا حشر وملك آخذ بقفاه حتى يوقفه | ٣٢٥ |
| ما من عبدٍ مؤمن يخرج من عينيه دموع | ١٩٩ |
| من قال العشر كلمات ليلة عرفة ألف مرّة لم يسأل الله شيئاً إلاّ أعطاه إيّاه | ٥٨٣ |
| لا تزول قدم ابن آدم يوم القيامة من عند ربّه عز وجل حتّى يسأله عن خمسٍ | ٧ |
| لا يدخل الجنة من كان في قلبه مثقال حبة من خردل من كبر | ٦٧٨ |
| **عبد الله بن يزيد الخطمي** | |
| نهانا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن النهبة والمثلة | ٥١٥ت |
| **عبد الرحمن بن ساعدة** | |
| يا عبد الرحمن إن أدخلك الله الجنة كان لك فيها فرس من ياقوت | ٢٧٩ |
| **عبد الرحمن بن سمرة** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| ما استرعى الله عبداً رعية فلم يحفظها | ٢٣٤ |
| **عتبة بن عبد السلمي** | |
| كانت حاضنتي من بني بكر بن سعد، فانطلقت أنا وابن لها | ١٤٦ |
| من صلى صلاة الصبح في مسجد الجماعة ثم ثبت فيه | ٣٠٨٩ |
| **عُتبة بن النُّدَّر** | |
| إن موسى أجّر نفسه ثمان سنين أو قال عشر سنين | ٩٤٨ |
| **عثمان بن إبراهيم** | |
| وقف على قتلى بدر ومعه أبو بكر | ١٣٧٤ |
| **عثمان بن عفان** | |
| إن الجماء لتقتص من القرناء يوم | ١٠٦٧ |
| إن الله عز وجل مقمصك قميصاً أو مسربلك سربالاً | ٢٨٢، ٢٨٠٥ |
| ما من أحد أسدى إلى أحدٍ من بني هاشم يداً | ٢٨٠ |
| من أهان قريشاً أهانه الله | ٢٥٣٩ |
| من سره أن ينجيه الله من كرب يوم القيامة | ٥٦ت |
| **عثمان بن محمد بن المغيرة** | |
| تقطع الآجال من شعبان إلى شعبان | ٩٤٤ت |
| **العَدّاء بن خالد** | |
| كان حسن السَّبلة | ٢٦٢١ |
| **العرباض بن سارية** | |
| يقول الله عز وجل إذا أخذت من عبدي كريمتيه | ١٧٨٠ |
| **عروة بن الزبير** | |
| إن من الشعر حكمة | ٣٤٥٤ |
| **عطاء** | |
| دعا له ومسح رأسه (أبو محذورة) | ٩٤٧ |
| **عقبة بن عامر** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| لو كان بعدي نبيّ لكان عمر بن الخطاب | ٢١٧ |
| **عكرمة** | |
| كان فداء أسارى بدر مختلفاً | ٢١٧٨ت |
| **علي بن أبي طالب** | |
| إذا كان يوم القيامة نادى منادٍ | ٣٤٨٧ |
| أربع خصال من سعادة العبد أن تكون زوجته | ٥٤١، ٢٣٨١ |
| أفضل ما قلت أنا والنبيون من قبلي | ٤٨، ٤٨ت |
| أكثر ما دعا به رسول الله صلى الله عليه وسلم | ٤٩ت |
| إن أشد ما أتخوف عليكم خصلتين اتباع الهوى | ١٢٩٣ت |
| إن أفواهكم طرقٌ للقرآن فطهروها بالسواك | ٦٧٩ |
| إن الله أعطاني ثواب من آمن به من يوم خلق الله | ٣٥٦٣ |
| إن البخيل الذي ذكرت عنده فلم | ١٠٤٨ |
| إن لكلّ نبيٍّ حواري وحواريّ الزبير | ٤٥٢ |
| أوحى الله إلى داود: يا داود العبد ليأتي بالحسنة يوم القيامة... | ١٧٤٩ |
| بشر قاتل ابن صفية بالنار | ٤٥٢ت |
| تعلموا العلم وتعلموا للعلم السكينة | ١١٩٧ت |
| الدنيا دول ما كان منها لك أتاك على ضعفك | ٥٦١، ٢٣٦٩ |
| علم الإسلام الصلاة فمن فرّغ لها قلبه | ٢٣٨٠ |
| كان يأكل معنا اللّحم ويقرأ القرآن | ٢٥٩٥ |
| ما من نبي إلاّ وله سبع نجباء | ٣٥١٤ |
| من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له | ٣٣٦٩ت |
| **عمر بن الخطاب** | |
| تزوّجي عبد الرحمن بن عوف فإنّه سَيِّدُ المسلمين | ٣٧٧ |
| تغدوا خماصاً وتروح بطاناً | ٧٥٤ |
| ذاك يوم ولدت فيه ويوم أنزل عليّ فيه النبوّة (سُئل عن صوم يوم الاثنين؟) | ٢١٢ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| كلُّ مسكر حرام | ١٦٣٣ |
| لكلِّ أمّة أمين وأمين هذه الأمّة | ٢٤٩٦ |
| ما جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه لأحد | ٣٤٩ت |
| ما جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه لأحد إلاّ لسعد | ٣٤٩ت |
| ما هذا يا أبا بكر؟ ما أعرف هذا من فعالك؟ | ٢٢٣٨ |
| نهى عن مياثر الأرجوان، وعن التختم بالذهب | ٣٥٤٨ |
| هذا مال كثير فما تركت لأهلك؟ | ٢٢٣٩ |
| هم الشعث رؤوساً، الدنس ثياباً، الذين لا ينكحون المتنعمات | ٢٠٣٣ |
| يا أبا بكر لا تحزن إنّ الله معنا | ٢٢٣٨ |
| يدخل الجنة بشفاعة أويس مثل ربيعة ومضر | ٢٢١٦ت |
| **عمران بن حصين** | |
| دخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي عضدي حلقة صفر فقال: ما هذا؟ | ١٨٣٨ |
| قلَّ ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبة إلاّ أمرنا فيها بالصدقة | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| كُنَّا مع النبيّ صلى الله عليه وسلم في بعض أسفاره فنام عن الصبح | |
| حتّى طلعت الشمس فأمر المؤذن | ٢٩٣٢ |
| ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم إلا أمرنا بالصدقةِ ونهانا عن المثلة... ألا وإن من المثلة | ٥١٥ |
| ما هذا؟ أتحب أن توكل إليها، انبذها عنك | ١٨٣٨ |
| مقام الرجل في الصف في سبيل الله أفضل من عبادة ستّين سنة | ٣٤٥٧ |
| **عمرو بن حريث** | |
| مرّ بعبد الله بن جعفر وهو يبيع شناً كما يبيع الغلمان والصبيان | ٢٠٧٢ |
| **عمرو بن العاص** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| مر رسول الله صلى الله عليه وسلم بناس من قريش في ظل الكعبة | ٦٧٣ت |
| **عمرو بن عاصم الكلابي** | |
| لا ينبغي للمؤمن أن يذل نفسه... يتعرّض من البلاءِ ما لا يطيق | ٣٤٩٤ |
| **قتادة** | |
| بلغنا أن النبي صلى الله عليه وسلم بعد ذلك كان يحث على الصدقة | ٥١٥ت |
| **قيس بن أبي حازم** | |
| اللهم أجب دعوته وسدِّد رميته | ٣٤٨ |
| رأيت أُصبع طلحة بن عبيد الله | ٤٨٣ |
| رأيت يد طلحة بن عبيد الله شلاّء | ٤٨٣ت |
| **كعب بن عجرة** | |
| هذا يومئذٍ على الحق | ٢٢١٥ |
| **مجاهد** | |
| كان أشراف قريش يأتون النبي صلى الله عليه وسلم وعنده بلال | ١٤٤٩ |
| **محمد بن عبد الرحمن عن عَمَّته** | |
| الدنيا حلوة، فمن أخذها بحقّها بارك الله له فيها | ٢٧٨٨ |
| **محمد بن علي بن الحسين (أبو جعفر)** | |
| أسدُّ الأعمال ثلاثة | ١٠٢٦ت |
| **المستورد بن شدّاد** | |
| ما الدنيا في الآخرة إلاّ مثل ما يجعل أحدُكم أصبعه في اليمِّ | ٨٥٠ |
| من أكل برجلٍ مسلم أكلةً فإنّ الله عز وجل يطعمه مثلها | ١٨٢٣ |
| **المستورد الفهري** | |
| كذبتك الهواجر | ٦٣٢ت |
| **مسلم الخزاعي** | |
| شهدت النبيّ صلى الله عليه وسلم ينشد قول سويد بن عامر المصطلقي: | |
| ولا تأمننّ وإن أمسيت | ٥٥٧ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| لو أدرك هذا الإسلام | ٥٥٧ |
| **مسلم بن يسار** | |
| كلّكم أفضل منه | ٧٥١ |
| من كان يمهن له أو يكفيه أو يسعى له؟ | ٧٥١ |
| **المطلب** | |
| أفضل الدعاء دعاء يوم عرفة | ٤٩ت |
| **معاذ بن جبل** | |
| إن الله يطلع إلى خلقه في النصف من شعبان | ٩٤٤ت |
| كان يعجبه الصلاة في الحيطان | ٢٨٥٥ |
| ونحن نعمل بأيدينا | ٧٥٤ت |
| لا تشرك بالله شيئاً | ١٥٥٢ت |
| يكون في آخر الزمان قوماً إخوان العلانية | ٣٠٥٨ / ٣ت |
| **معاوية بن حيدة = انظر بهز بن حكيم عن أبيه عن جده** | |
| **معقل بن يسار** | |
| قلَّ ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبةً إلاّ أمرنا فيها بالصدقة | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| **المقدام بن معدي كرب** | |
| الحسنُ منّي والحسين من علي | ٣٤٤٤ |
| **ميمون بن سنباذ** | |
| قوام أمّتي بشرارها | ٢٧٢٩ |
| **النعمان بن مقرن** | |
| شهدت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كان عند القتال | ١١٣٩ت |
| كان أحب الأوقات إليه أن يلقى العدو إذا لم يلقه أول النهار | ١١٣٩ |
| **نُقَادَة الأسدي** | |
| اللهم أكثر مالَ فلانٍ وولده | ٢٩٧٢ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| اللهم بارك فيها وفيمن أرسل بها | ٢٩٧٢ |
| **النعمان بن مقرن** | |
| شهدت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذ كان عند القتال | ١١٣٩ت |
| كان أحب الأوقات إليه أن يلقى العدو إذا لم يلقه أول النهار | ١١٣٩ |
| **هشام بن عامر** | |
| قال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم ما اسمك؟ قلت | ٢٤٩٧ |
| **هشام بن محمد عن أبيه** | |
| ذاك رجل مذكور في الدنيا شريف فيها منسيٌّ في الآخرة خامِلٌ فيها | ١٠١٦ |
| **واثلة بن الأسقع** | |
| خير شبابكم من تشبّه بكهولكم وشرُّ كهولكم | ١١١٨ |
| **وهب بن حُنَيْش الطائي** | |
| عمرة في شهر رمضان تعدل حَجَّة | ٣٥٢٥ |
| **يزيد بن الأسود** | |
| صلى مع رسول الله عليه وسلم وهو غلام، وجعل الناس يقبلون يد رسول الله | ١٥٣٧، ٢٧٧٧ |
| **● الكنى ●** | |
| **أبو أمامة** | |
| إن القرآن يأتي على أهله يوم القيامة أحوج ما كانوا إليه | ٢١٨٩ت |
| ما ضلَّ قوم بعد هدى كانوا عليه إلاّ أوتوا | ١١٠٤ |
| من صَلّى صلاة الصبح في مسجد الجماعة ثم ثبت فيه حتّى يُسَبِّحَ | ٣٠٨٩ |
| من نظر إلى محاسن امرأة فغض طرفه | ٢٨٥٨ت |
| **أبو أيوب الأنصاري** | |
| اللهم اغفر لي خطاياي وذنوبي كُلَّها، اللهم | ١٤٤٧ |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة أُسري به مرّ على إبراهيم صلى الله... | ١٧٦٩ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| أن النبي صلى الله عليه وسلم ليلة أسري به مر على إبراهيم عليه السلام | ٣٦ |
| إن نفس المؤمن إذا قبضت تلقاها أهل الرحمة | ٢٠٩٥ت |
| تعرض على الأموات أعمالكم فإن رأوا حسنة استبشروا وقالوا: اللهم | ٢٠٩٥ |
| ليلة أُسْرِي به مَرّ على إبراهيم عليه السلام خليل الرحمن، فقال إبراهيم: | |
| يا جبريل من هذا الذي معك؟ | ٣٦ |
| يسألني أحدكم عن خبر السماء ويدع أظفاره كأظفار الطير | (٢١) ملحق |
| **أبو بردة** | |
| لا يموت رجل مسلم إلاّ أدخل الله عز وجل مكانه النار | ٢٤٧٢، ٣٠٠٠ |
| **أبو برزة** | |
| قل ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبة إلاّ أمرنا فيها بالصدقة | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| **أبو بكر الصديق** | |
| أشهد أنك رسول الله ما علمك الله الشعر وما ينبغي لك | ١٣٧٣ |
| اللهم سدد سهمه وأجب دعوته وحببه | ٣٤٨ت |
| أيّما لحمٍ نَبَتَ من حرامٍ أو جَسَدٍ غُذِّي بحرام... | ١٣٩١ |
| ليس شيء من الجسد إلاّ يشكو إلى الله اللسان على حدته | ١٠٨١ت |
| من قبِلَ الكلمة التي عرضتها على عَمِّي فردها | ١٨٢٢ |
| النظر في وجهه عبادة (يعني عليًّا) | ٣٥٠٣ |
| لا خيرَ في أسفل من ذلك | ٣١٧٤ |
| يا أبا بكر ما ظنُّك باثنين الله ثالثهما | ٢٨٦٩ |
| ينزل ربنا تبارك وتعالى ليلة النصف من شعبان | ٩٤٤ت |
| **أبو بكرة** | |
| أغد عالماً أو متعلماً أو مستمعاً أو محبّاً | ١٨٩٣ |
| **أبو ثعلبة** | |
| إذا كان ليلة النصف من شعبان يطلع الله عز وجل على خلقه | ٩٤٤ت |
| **أبو الدرداء** | |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| العبد من الله وهو منه ما لم يخدم، فإذا خُدِم وقع عليه الحساب | ٤٨٢، ٢٤٠٨ |
| ما أنكرت من زمانكم فيما غيرتم من أعمالكم | ٣٥١٠ت |
| يُلْقى على أهل النار الجوع حتّى يعدل ما فيهم من العذاب | ٨٤٦ |
| **أبو ذر الغفاري** | |
| ثلاثة نفر لا يكلمهم الله يوم القيامة | ٣٤٩٩ |
| كيف يصنع إذا مات نصيف النّاس حتّى يكون البيت بالوصيف | ٢٣١٦ |
| لقد علمت آخر أهل النار خروجاً من النار، وآخر أهل الجنّة دخولاً الجنة | ٢٦٣ |
| **أبو رافع** | |
| أذّن في أذن الحسن بن علي رضي الله عنه حين | ٣٢١٢ |
| **أبو رمثة** | |
| أنت رفيق والله الطبيب | ٢٧٧٦ |
| **أبو سعيد الخدري** | |
| أبردوا بالظهر، فإنّ شدّة الحرّ | ٣٥٥٠ |
| إذا أصبح ابن آدم أصبحت الأعضاء كلها تكفر اللسان | ٨٨٠ت |
| إذا خلص المسلمون من النار احتبسوا | ٢٧٣٤ |
| اشتكى رسول الله صلى الله عليه وسلم فرقاه جبريل صلى الله عليه وسلم، فقال: بسم الله أرقيك | ٢٤١٨ |
| إن الله عز وجل أعد لعباده الصالحين | ١١٠٢ت |
| إن أهل الجنة ليتراءون أصحاب الغرف من فوقهم | ٣١٥٨، ٣١٥٩ |
| إن أهل الدرجات العُلى ليتراءون من أسفل منهم | ٣٤٨٦ |
| أنت منّي بمنزلة هارون من موسى | ٣١٧٧ |
| إنيّ رفعت إلى الجنة، وإذا أنا | ١١٠٢ت |
| إيّاكم والغيبة فإن الغيبة أشد من الزنا | ٣٥٤١ |
| بلى والذي نفسي بيده، رجال آمنوا بالله وصدقوا المرسلين | ٣١٥٨، ٣١٥٩ |
| دخلت الجنة فإذا فيها طير كأنها البخت | ١١٠٢ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| نظرت إلى الجنّة فإذا الرّمّانة من رمّانها كجلد البعير المقتّب | ١١٠٢ |
| لا ضرر ولا ضرار | ٣١٦٠ |
| لا يجلس قوم مجلساً لا يصلون فيه على النبيِّ صلى الله عليه وسلم إلاّ | |
| كان عليهم حسرة | ١٢٧ |
| لا يرى امرؤٌ من أخيه عورةً فيسترها عليه | ١٦٧٩ |
| لا يصوم عبد يوماً في سبيل الله إلاّ باعد الله | ٢٠٩٤ |
| لك، ولك عشرة أمثاله | ٧٩ |
| والذي نفسي بيده لأحدهم أهدى بمنزله في الجنة منه بمنزله كان في الدنيا | ٢٧٣٤ |
| يؤتى بالعبد يوم القيامة فيقال: ألم | ٢١٩٠ت |
| **أبو طلحة** | |
| أجل إنّه أتاني ملك، فقال: يا محمد إنّ ربّك | ٩٩٥ |
| **أبو قتادة** | |
| إن يطع النّاس أبا بكرٍ وعمر يرشدوا | ١٦٥ |
| خير ما يخلف من بعده ثلاث | ٣٥٠٠ |
| صوم عاشوراء كفّارة سنة، وصوم عرفة | ٣١٦٥ |
| من أنسأ معسراً أو وضع له | ٣٥٠٢ت |
| من سَرَّهُ أن ينجيه الله من كرب يوم القيامة | ٣٥٠٢ت |
| **أبو محذورة** | |
| كنت أوذن للنبي صلى الله عليه وسلم فكنت أقول في آذان الفجر | ٩٤٧ت |
| **أبو مسعود** | |
| من قرأ بالآيتين من آخر سورة البقرة في ليلةٍ كفتاه | ٢٨٢٠ |
| دعاء الكرب: لا إله إلاّ الله العظيم الحليم | ٤٣٥ت |
| **أبو موسى الأشعري** | |
| إذا جمع الله الخلائق إذن لأمة محمد في السجود | ٢٤٧٢ت |
| إنكم لا تدعون أصماً ولا غائباً | ٢٣٦٨ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| تستأمرُ البكر في نفسها، فإنْ سكتت فقد رضيت | ٣١٦٦ |
| جنّتان من ذهب للسابقين، وجنّتان من وَرِق لأصحاب اليمين | ١٤١٥ |
| الخيمة دُرَّةٌ مجوفة طولها في السماء | ١٤١٣، ٢٧٨٦ |
| سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم متى تنقطع معرفة | ١١٥ |
| ما من مسلم يدعو الله عز وجل | ١٢٥ت |
| من سمع النداء فارغاً صحيحاً فلم يجب فلا صلاة له | ٣٣٧١ |
| يا أبا موسى أو يا عبدالله بن قيس ألا أعلمك كلمة من كنز الجنة | ٢٣٦٨ |
| يخرج ناسٌ في طلب العلم إلى المشرق، فلا يجدون عالماً | ٨٠٩ |
| **أبو هريرة** | |
| أبردوا بالظهر، فإنّ شدّة الحرّ | ٣٥٥٥ |
| اتقوا اللعانين | ١٦٦٠ت |
| احتجت الجنة والنّار، فقالت النار يدخلني الجبّارون | ٢٣٤٠/م |
| أخر كلام في القدر لشرار هذه الأمة | ٣٤٩٧ت |
| أدنى أهل الجنة منزلة عند الله تبارك وتعالى من يتمنّى على الله | ٧٩ |
| إذا أتى أحدكم فراشه، فلينفضه بصنفة ثوبه | ٣١٥٦ |
| إذا أراد أحدكم السلام فليقل: «السلام عليكم» فإن الله هو السلام | ٢٧٨١ |
| إذا أقيمت الصلاة فلا صلاة إلاّ | ٢٣٥٩ |
| إذا انتصف شعبان فلا صوم | ٢٦٥٤ |
| إذا حكم الحاكم فاجتهد فأصاب فله | ٣٤٩٢ |
| إذا خرج أحدكم إلى الجمعة فليغتسل | ٣١٧٢ |
| إذا قاتل أحدكم فليجتنب الوجه | ٣١٤٧ |
| إذا قرأ ابن آدم السجدة اعتزل الشيطان | ٢٧٠٥ |
| إذا قعد بين شعبها الأربع وأجهد نفسه | ٢٣٧٩، ٣٢٠٧ |
| إذا كان ليلة النصف من شعبان يغفر الله لعباده | ٩٤٤ت |
| إذا لبستم أوتوضّأتم فابدؤوا بميامنكم | ٢٣٥٠ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| إذا لبستم وإذا توضأتم أحدكم فابدؤوا بميامنكم | ٢٠٥٤ |
| إذا مات ابن آدم انقطع عمله إلاّ من ثلاث | ٣٥٠٠ت |
| أسلم سالمها الله | ٣١٥٣ت |
| أعطيت أمتي خمس خصال في رمضان لم تعطه | ٢٩٩١ |
| أكثر عذاب القبر في البول | ٣١ت |
| اللهم اشدد وطأتك على مضر | ٣١٥٢ |
| اللهم أنج عياش بن أبي ربيعة اللهم أنج... | ٣١٥٢ |
| اللهم إني أعوذ بك من الفقر والقِلّة والذلة... | ٢٨٥٣ |
| امريء القيس قائد الشعراء إلى النار- | ١٠١٦ت |
| إن أدنى مقعد أحدكم من الجنة | ٧٩ت |
| إن أشدَّ الناس عذاباً يوم القيامة عالمٍ لم ينفعه | ٩٠ |
| إن أصدق بيتٍ قالته العرب قول... | ١٣٧٨ |
| إن الله سبحانه جعل الحقَّ على لسان عمر وقلبه | ١٩٨ |
| إن الله تبارك وتعالى خلق خلقاً لحوائج الناس | ٣٤٨٢ |
| إن الله تبارك وتعالى قرأ طه ويس قبل أن يخلق | ١٤ |
| إن الله تعالى هو السلام، فلا | ٢٧٨١ت |
| إن أول ما يسأل العبد يوم القيامة أن يقال له | ٧٥ |
| إن الدّين بدأ غريباً وسيعود غريباً كما بدأ | ٨٦٤ |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا لبس قميصاً بدأ بميامنه | ٢٠٥٤ت |
| إن سورة من القرآن ثلاثون آية شفعت لرجلٍ حتى | ٩٩٦ |
| أن عمرو بن أقيش كان له رباً في الجاهلية فكان يمنعه ذلك الرب من الإسلام | ٢٤٢٤ |
| إن الفجر ليطلع ليلاً، إلا أن أشجار جنة عدن تغطيه | ٣٥٠٤ |
| إن في جهنم وادياً يقال له جبُّ الحزن | ١٩٣٩، ٢٩٦٥ |
| إن لله تسعاً وتسعين اسماً من أحصاها دخل الجنة | ٩١٨ |
| إن المؤمن إذا حضره الموت حضره ملائكة الرحمة | ٢٣٤٩/م |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| إنّي أرى الفتن تخلّل بيوتكم كما تخللها المطر | ٢٨٠٦ |
| اهدئي، فما عليك إلا نبي أو صديق أو شهيد | ٢٦٩٤ت |
| أُوقد على النار ألف عامٍ حتّى احمرت... | ١٦ |
| أول ما يُسأل عنه العبد يوم القيامة أن يقال له: ألم أصحّ | ٣٠١٨ |
| أول من يدخل الجنة عبدٌ وفقيرٌ وشهيد | ٢٦٩٤، ١٥٨٧ |
| إياكم والملعنة؟ قالوا يا رسول الله وما الملعنة؟ | ١٦٦٠ |
| بئس الشعب جياد، قال: ولم ذاك يا رسول الله؟ | ١٤٨٦ |
| تجد الناس معادن، خيارهم في الإسلام خيارهم في الجاهلية | ٣١٥٠ |
| تخرج دابة الأرض من جياد فيبلغ صدرها الركن | ١٤٨٦ت |
| تضمن الله عز وجل لمن خرج في سبيله | ١٣٩٢ت |
| تعلموا العلم وتعلموا للعلم السكينة | ١١٩٧ت |
| تعوذوا بالله من الفقر، والقلة، والذلة، وأن تَظلم أو تُظلم | ٢٨٥٣ت |
| تنزّهوا من البول فإنّ عامة عذاب القبر من البول | ٣١ |
| توضّأ فتمضمض ثلاثاً، واستنشق | ١٤٥٨ |
| جاء ضمام بن ثعلبة السعدي، قال: أيكم ابن عبد المطلب | ٢٤٤٧ |
| حسن الظن من حسن العبادة | ٥٩ |
| خروج الآيات بعضها على أثر بعض يتتابعن | ٢١٥٦ |
| خلق الله تبارك وتعالى كُلَّ دابة، وكتب أجلها ورزقها وأثرها | ٩ |
| خير نساء ركبن الإبل صالح نساء قريش | ٣١٥١ |
| ذنب يغفر، وذنب لا يغفر، وذنب يجازى به | ٦ت |
| رأيت جعفر بن أبي طالب يطير في الجنة | ٢٥٢٠ |
| الربا سبعون باباً أدناها عند الله عزّ وجل | ١٥٩٠ |
| روايا الأرض يسوقها الله عزّ وجل إلى قوم | ٢٦٤٨ |
| سجد أبو بكر وعمر رضي الله عنهما في ﴿اقرأ باسم ربك الذي خلق﴾ | ٣١٦٢ |
| سجدنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في ﴿إذا السماء انشقت﴾ | ٣٢٦٢ت |

| طرف الحديث | الرقم |
| --- | --- |
| سل عمّا بدا لك... اللهم نعم | ٢٤٤٧ |
| العين حق | ٣١٨٠ |
| غفار غفر الله لها، وأسلم سالمها الله | ٣١٥٣ |
| فأيُّ الرجلين أعظم أمانةً الذي أدّاها مرّتين | ٦١١ |
| قال الله تبارك وتعالى للملائكة: إذا همَّ عبدي بحسنة فاكتبوها واحدة | ٢٨ |
| قتل الرجل صبراً كفارة لمن قبله | ٥٨ت |
| قتل الصبر لا يمر بذنب إلاّ محاه | ٥٨ت |
| القتل شهادة | ٥٨ت |
| القتل في سبيل الله شهادة | ٥٨ت |
| القتل في سبيل الله يكفر كل خطيئة | ٥٨ت |
| كان إدريس خياطاً وزكريا نجّاراً (تفسير قوله تعالى: ﴿ورفعناه مكاناً علياً﴾) | ٣١١٨ |
| كان إذا كبَّر يرفع يديه في الصلاة حتّى يرى أطراف أنامله | ٣١٦٧ |
| كان رجل فيمن كان قبلكم يبايع بالأمانة فدعا رجلاً فبايعه | ٦١١ |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر | ٣١٦٧ت |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا لبس ثوباً بدأ بميامنه | ٢٠٥٤ |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حذو | ٣١٦٧ت |
| كان زكريا صلى الله عليه وسلم نجاراً | ١٣٣٣ |
| كتب الله تعالى على كل نفسٍ حظّاً من الزّنا | ٧٥٠ |
| كرم المرء دينه ومروءته عقله وحسبه خلقه | ٢٦٨٤ |
| كل خطبة ليس فيها شهادة فهي كاليدِ الجذماء | ١٠٦٨ |
| لكلِّ أمّةٍ مجوس، ومجوس هذه الأمّة القدرية، فإن مرضوا فلا تعودوهم | ٨٦٣ |
| لله أفرح بتوبة عبده من العقيم الوالد | ٣١٤٦ت |
| لله عزّ وجل أفرح بتوبة أحدكم | ٣١٤٦ |
| لما توفي رسول الله واستخلف أبو بكر وكفر من كفر | ٢٢٣٨ت |
| لمّا خلق الله الخلق كتب كتاباً فهو عنده فوق العرش | ٢٩ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| لن يستكمل عبدٌ الإيمان حتّى يدع المراء، وإنْ كان | ١٤٤٨ |
| ما من أحد يغدو أو يروح إلى المسجد ويؤثره على ما سواه | ١١٩ |
| ما نفعني مال قطُّ إلاّ مال أبي بكرٍ | ١٥١ |
| من أحبّني فارزقه العفاف والكفاف ومن أبغضني فأكثر ماله وولده | ٢٩٨٠ |
| من أقال مؤمناً عثرته أقاله الله عثرته يوم القيامة | ٦٢ |
| من أقال نادماً بيعته أقاله الله عثرته يوم القيامة | ٦١ |
| من أنظر معسراً أظلّه الله في ظلّه يوم لا ظلَّ إلاّ ظلّه | ٥٦ |
| من تعلّم علماً يبتغى به وجه الله لا يتعلّمه إلاّ ليصيب به عرضاً من الدنيا | ٩٧٦ |
| من حفظ على أُمّتي أربعين حديثاً من أمرِ دينها | ٣٠٧٠ |
| من سلك طريقاً يطلب علماً سَهَّل الله | ٢٣٤٣/م |
| من صام رمضان إيماناً واحتساباً غفر له ما تقدّم من ذنبه | ٧٧٧ |
| من قال مؤمناً | ٦٢ت |
| من قتل دون ماله فهو شهيد | ٣١٥٧ |
| من قرأ القرآن فقام به أناء الليل والنهار | ٢١٨٩ت |
| من كان عنده مظلمة لأخيه فليتحلله منها | ٣٥٤٢ت |
| من نفس عن مؤمن كربة من كرب الدنيا | ٢٣٤٤ |
| المراء في القرآن كفر | ٣٤٩٧ |
| نجر خشبة فجعل المال في جوفها وكتب إليه | ٦١١ت |
| نزل القرآن على سبعة أحرف | ٣٤٩٧ت |
| نية المؤمن خير من عمله | ١٣٥٧ت |
| الناس تبع لقريش في هذا الشأن، فمسلمهم تبع لمسلمهم | ٣١٤٩ |
| وكان المهاجرون يشغلهم الصفق بالأسواق | ٧٥٤ت |
| لا تدخلوا الجنّة حتّى تؤمنوا | ٣٤٨٥ |
| لا تردّوا الطيب فإنّه طيّب الريح خفيف المحمل | ٢٨١٠، ٣٣٤٩ |
| لا تقدموا رمضان بصوم يوم أو يومين | ٢٦٥٤ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| لا تقوم الساعة حتى تقاتلوا قوماً نعالهم الشعر | ٣١٥٠ت |
| لا تقوم الساعة حتى تقاتلوا اليهود | ٣١٥٤ |
| لا، ولكن إنّما يُوفَّى العامل أجره إذا قضَى عمله | ٢٩٩١ |
| لا يستر عبد عبداً إلا ستره الله يوم القيامة | ١٦٧٩ت |
| لا يؤمن العبد الإيمان كله حتى يترك الكذب في المزاح | ١٤٤٨ت |
| يا بني عبد المطلب اشتروا أنفسكم من الله، يا أمَّ الزّبير | ٣١٤٨ |
| يا رسول الله، هل نرى ربنا يوم القيامة | ٢١٩٠ت |
| يجاء بالجبارين والمتكبرين رجال في صورة الذر | ١٩٥٧ت |
| يجيء صاحب القرآن يوم القيامة فيقول القرآن | ٢١٨٩ت |
| يدخل الجنة أقوام أفئدتهم مثل أفئدة الطّير | ٣٥١٨ |
| يعطى الملك بيمينه والخلد بشماله ويوضع | ٢١٨٩ |
| يقول الله عزّ وجل يوم القيامة ابن آدم ألم أحملك على | ٢١٩٠ |
| يؤتى بالعبد يوم القيامة فيقال: | ٢١٩٠ت |
| **أبو اليقظان** | |
| جزاك اللهُ عن أمٍ خيراً فقد كنت خير أمٍّ (فاطمة بنت أسد أم علي بن أبي طالب) | ٢٦٥ |
| **ابن أبي لبيبة عن جده** | |
| والذي نفسي بيده إنه لمكتوب عند الله عز وجل حمزة بن عبد المطلب أسد الله | ١٢٤٦ |
| **● النساء ●** | |
| **أسماء بنت أبي بكر** | |
| سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهى عن المثلة | ٣٣١٦ت |
| سيخرج في ثقيف كذّاب ومبير | ٣٣١٦ |
| في ثقيف رجلان كذاب ومبير | ٣٣١٦ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **أسماء بنت عميس** | |
| الله الله ربّي لا أشرك به شيئاً | ٦٠ |
| **أسماء بنت يزيد** | |
| اسم الله الأعظم من هاتين الآيتين (الله لا إله إلا هو... | ١٥ |
| إذا جمع الله الأوّلين والآخرين نادى منادٍ | ١٠٨ |
| **أم كلثوم** | |
| تزوجي عبد الرحمن بن عوف فإنه سيد المسلمين | ٣٧٧ |
| **أميمة** | |
| لا تشركن بالله شيئاً | ١٥٥٢ت |
| **حواء** | |
| ردوا السائل بظلف محرق | ٢٤٧١/م ت |
| **عائشة** | |
| إذا دخل عليك صبي جارك ضعي في يده شيئاً | ٢٩٥٣ |
| إذا ظهر السوء في الأرض | ٢١٢٨ت |
| إذا نزل الرجل على قوم فلا يَصُم إلاّ بإذنهم | ٣١٦١ |
| أعظم النّساء بركة أيسرهنّ مؤنة | ١٨٠٢ |
| أقبلت فاطمة رضي الله عنها تمشي كأن مشيتها | |
| مشية رسول الله صلى الله عليه وسلم | ١٣٦٢ |
| إن الغارم إذا غرم حدث فكذب ووعد فأخلف | ١٦٤٥ |
| إن الله تعالى ينزل ليلة النصف من شعبان | ٩٤٤ت |
| إن اللّه عزّ وجلّ مقمّصك قميصاً ومسربلك سربالاً | ٢٨٢، ٢٨٠٥ |
| إن من أعظم النساء بركة | ١٨٠٢ت |
| إن من الشعر حكمة | ٢٣١٣، ٣٤٥٥ |
| إن من يمن المرأة تيسير خطبتها | ١٨٠٢ت |
| إن النبي صلى الله عليه وسلم صلى خلف أبي بكر | ٢١٢٨ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| أيها الناس كأن الموت فيها على غيرنا | ١٢٨٨ |
| التلبينة مجمة لفؤاد المريض تذهب ببعض الحزن | ٢٨٨٧ت |
| جاء أهل اليمن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم | ١١٠٣ت |
| الحجر الأسود من حجارة الجنّة، وزمزم خطفة مقام | |
| جبريل عليه السلام | ٢٩٧ |
| خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم على ناقته الجدعاء | |
| وليست العضباء | ١٢٨٨ |
| دعاء المرء لنفسه | ١٥٦٧/م |
| الدواوين عند اللّه تبارك وتعالى ثلاثة، فديوان لا يغفره اللّه | |
| عز وجل | ٦ |
| سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يستعيذ من عذاب القبر | |
| ومن عذاب جهنّم | ٣٤٩٥ |
| الشعر الذي كنت تمثلين به | ٦٩٨ |
| صلّى خلف أبي بكر | ٢١٢٨ |
| صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه الذي مات فيه خلف | ٢١٢٨ت |
| على الصراط (تفسير قوله تعالى ﴿يوم تُبدّل الأرض غير الأرض﴾) | ٤١ |
| عليكم بالتلبين البغيض النافع | ٢٨٨٧ |
| كان الشعر أبغض الحديث إليه | ٣٣٥٩ت |
| كان إذا استراث خبراً يتمثّل بقافية بيت طرفة: | |
| ويأتيك بالأخبار من لم تزوّد | ٣٣٥٩ |
| كان أحياناً إذا دخل بيته يقول | ٣٣٥٩ت |
| كان إذا اشتكى أحدٌ من أهله شيئاً لا تزال | ٢٨٨٧ |
| كان كرجل من رجالكم كأحسن الناس | ١٩١٥ |
| كان يبدأ بغسل يديه من الجنابة | ٣٤٥٢ |
| كان يتعوّذ في صلاته من المغرم | ١٦٤٥ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| كان يُصَلِّي في موضع بول الحسن والحسين | ٢٨٨٩ |
| كل مسكر حرام أوله وآخره | ١١٠٣ |
| كل شراب أسكر فهو حرام | ١٦٣٣ت |
| كنت أغتسل أنا ورسول الله صلى الله عليه وسلم من | |
| تور من شبة | ٣٤٨٤ |
| لما وجد رسول الله صلى الله عليه وسلم من نفسه خفة | ٢١٢٨ت |
| لولا أنّ السُوّال يكذبون ما قُدِّس | ٢٤٧١ |
| ما شبع آل محمد منذ قدموا المدينة ثلاث ليالٍ متتابعة | ٣٧٦، ٩١٩ |
| ما في السماء الدنيا موضع قدم | ٢٢ت |
| ما مست يد رسول الله صلى الله عليه وسلم امرأة قط | ٣٢٠٩ |
| ما من عبد يكف بصره عن محاسن امرأة | ٢٨٥٨ت |
| مرحباً بابنتي فأقعدها عن يمينه ثم أسرّ إليها حديثاً فبكت | ١٣٦٢ |
| مُري أبا بكر فليصلِّ بالناس | ٣٥٦١ |
| من نزل على قوم فلا يصومن تطوعاً إلا بإذنهم | ٣١٦١ت |
| من نوقش الحساب عُذِّب | ٣ |
| من الناس من يقول: كان أبو بكر رضي الله عنه المقدم بين يدي رسول الله | ٢١٢٨ت |
| نهى عن القزع للصبيان | ١٣٨٩ |
| لا تردوا السائل لو بشق تمرة | ٢٤٧١/م |
| لا يزال المسروق في تهمة من هو بريء | ٨٩٨ |
| لا يغني حذر من قدر، والدعاء ينفع مما نزل ومما لم ينزل | ١٦٨٦ت |
| يا حميراء أما علمت أنّ العبدَ إذا سجد للّه سجدة | ٢٦١٥، ٢٨٨٩ |
| يا عائشة إنّه لا يشكر الله من لا يشكر النّاس | ٦٩٨ |
| يا عائشة إياك ومحقرات الذنوب فإنّ لها | ١٧٠٠ |
| يا عائشة...هذا جبريل عليه السلام يقرئك السلام | ٢٩٨ |
| ينزل الله عز وجل من السماء الدنيا فيغفر لعباده | ٩٤٤ت |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| **فاطمة** | |
| يا بنية، اسكتي... شاهت الوجوه | ٢٥٢١ |
| **ميمونة** | |
| كيف أنتم إذا مرج الدِّين وظهرت الرغبة واختلف الإخوان | ٣٣٦٢ |
| **● كنى النساء ●** | |
| **أم أيمن** | |
| لا تشرك بالله شيئاً | ١٥٥٢ت |
| **أم سلمة** | |
| إذا ظهر السوء في الأرض أنزل الله بأسه بأهل الأرض | ٢١٢٧ت |
| إذا ظهرت المعاصي في أمتي أصابهم اللّه | ٢١٢٧ |
| إن الشر إذا فشا في الأرض فلم | ٢١٢٧ت |
| ما مُسِخَ أحد قطُّ فكان لهم نسلٌ ولا عقب | ٥١٢ |
| من كانت فيه واحدة من ثلاث، زوّجه اللّه من الحور العين | ١٤٨٧ |
| **أم كلثوم بنت عقبة** | |
| ليس الكذاب من أصلح بين الناس فقال خيراً أو نمى خيراً | ٣٢٠٦ |


* * *

## أحاديث وقعت ضمن أخبار، وليست مسندة وهي مرتبة على الحروف


| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| اعمل لا يأتيك الموت إلاّ ولسانك رطب | ٣٩٤ |
| أفضل ما قلت أنا والنبيّون من قبلي يوم عرفة | ٤٨ |
| اكلفوا من الأعمال ما تطيقون فإنّ اللّه عزّ وجل | ١٣٥٨ |
| أمتي ... أمتي | ١٠٨١ |
| إن الملائكة تضع أجنحتها لطالب العلم | ٢١٥٤ |
| أنا ابن العواتك من سليم | ٢٣٩٠ |
| إنما النساء شقائق الرجال | ١٢٩ت |
| إنّهما لأول من هاجر إلى الله بعد إبراهيم ولوط | ٢٤٠ |
| أوما أهديته لنا يا نعيمان؟ | ٧٤٩ |
| أول الوقت رضوان الله | ١٢٩ت |
| تغدوا خماصاً وتروح بطاناً | ٧٥٤ |
| ثلاثة أشياء يورّثن النّسيان أكل التفاح | ٢٣٤٩ |
| جعل الله رزقي تحت ظل رمحي | ٧٥٤ |
| حديث أم زرع: «عكموها رداح» | ٩٠٣ |
| حديث إنّ ابن آدم إذا أصبح كَفَّرت أعضاؤه اللسان فيقول: اتّق اللّه فإنّك إنِ استقمْتَ | ٨٨٠ |
| حديث إنّ اللّهَ تبارك وتعالى يرى في القيامة: «لا تَضامون في رؤيته» | ٩٢٩ |

| طرف الحديث | الرقم |
|---|---|
| حديث من اقتنى كلباً لغير زرع ولا حراسة | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم بعائشة رضي الله عنها وهي بنت تسع سنين | ١١٣٣ |
| زمزم لما شرب له | ٥٠٩ |
| سيِّد أهل الوبر | ٣٣٢٨ |
| عَلِّمي حفصة رقية النملة | ٧١٨ |
| فترج الأرض بأهلها فتكون كالسفينة المرنقة في البحر | ١٤٤٣/م |
| قال ربكم تبارك وتعالى: المجاهد في سبيل اللّه عليّ ضامنٌ إن قبضته | ١٣٩٢ |
| القضاة ثلاثة، اثنان في النار وواحد في الجنة | ١٥٩٧ |
| كان نعيمان الأنصاري يدور في أسواق المدينة فإذا دخل السوق طرفه | ٧٤٩ |
| كان يتعوّذ بالله من عذاب القبر | ١٠٨١ |
| كان يتعوذ باللّه من شَرِّ السامّة والحامّة | ١٩٠٠ |
| ما أحد عرضت عليه الإسلام أو النبّوة إلاّ كانت له كبوة | ١٠٧٧ |
| مثل المجاهد في سبيل اللّه كمثل القانت الصائم الذي | ١٣٩٢ |
| المجاهد في سبيل الله علي ضامن أن قبضته أدخلته الجنة | ١٣٩٢ |
| مطلُ الغني ظلمٌ | ٩٨٣ |
| من أحبَّ أن يتمثَّل الرجال له قياماً فليتبوأ مقعده من النار | ٣٤٢ |
| من زارني في مماتي | ١٣٠ت |
| من زارني وزار أبي | ١٣٠ت |
| نضّر الله امرءً سمع منّا حديثاً | ١١٤ |
| نية المؤمن خير من عمله | ١٣٥٧ |
| الندم توبة | ١١١٧ت |
| والحجامة على النقرة والبول في الماء الراكد | ٢٣٤٩ |
| لا ترفع عصاك عن أهلك | ١٥٥٢ |
| لا تمنعوا إماء اللّه مساجد اللّه وليخرجن | ١٩٨١ |
| لا عدوى ولا طيرة | ٩ت |
| لا يعدي شيء شيئاً | ٩ت |
| اليد العليا خير من اليد السفلى | ٣٣٥٠ |
| يضرب الناس آباط الإبل فلا يجدون عالماً أعلم من عالم أهل المدينة | (٢٤) ملحق |

# فهرس الأخبار والآثار مرتباً على قائليها


| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **حرف الألف** | |
| **آدم عليه السلام** | |
| يا رب ذنبي الذي كتبتَه عليَّ: قبل أن تخلقني أو ابتدعتُه من قبلي | ١٦٢٨ |
| **أبان بن عثمان** | |
| أساء أذني وباعد مجلسي | ٢٥٣٣ |
| خرجنا في جنازة النوار بنت أعين، وكانت تحت الفرزدق | ١٦٨٩ |
| قال لي أبي: يا بني إن وليت من أمر المسلمين شيئاً فأكرم قريشاً | ٢٥٣٩ |
| **ابن أبجر = عبد الملك بن أبجر** | |
| **إبراهيم عليه الصلاة والسلام** | |
| أُصيب على قبر إبراهيم الخليل صلى الله عليه وسلم مكتوباً في حجر | ٨٣ |
| تسمون الله تبارك وتعالى إذا أكلتم، وتحمدوه إذا فرغتم | ٣٧ |
| مر أمتك فليكثروا من غراس الجنة | ٣٦، ١٧٦٩ |
| لا حول ولا قوة إلا بالله | ٣٦، ١٧٦٩ |
| يا جبريل من هذا الذي معك؟ | ٣٦، ١٧٦٩ |
| يا رب وجدت نفسي كأنها تنزع بالسلا | ٣٩ |
| **إبراهيم بن أدهم** | |
| أتعرف هذه الجلسة؟ هذه جلسة رسول الله | ١٩٤٧ |
| أصلَّنا أصولنا على أنّا إذا رزقنا آثرنا وإذا مُنِعْنا | ١٤٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أعربنا في الكلام فلم نلحن، ولحنّا في الأعمال | ٨٥١، ١٩٢٨ |
| أمّا بعد يا أخي لأنْ أبيت ليلة على ساحل البحر | ٢٧٤٩ |
| أمعك شيءٌ... يا بقية ما أغفل الناس عمّا أنا فيه | ٢٢٤٢ |
| إنْ كنتَ غنياً قبلتها منك وإنْ كنتَ فقيراً | ٥٧٦ |
| إنما أردت أن أنظر كيف تواضعه للفقراء | ٢٩٧١ |
| إنما السرف ما ينفقه الرجل في معصية اللّه، فأمّا إذا أنفقه على إخوانه | |
| فهو من الدّين | ٨٧٦ |
| أهدى رجل إلى إبراهيم بن أدهم عنباً وتيناً في طبق فلم يكن عنده | |
| ما يكافئه فنزع | ٢٩٢ |
| أيّ دين، أيُّ دين، لو كان له رجال | ٨٥٢ |
| أيّما أكثر: كراي أو ما أفسدتُ عليك... فأطرح لك من الكرى بقدر | |
| ...المؤمنون عند شروطهم | ١٩٥٥ |
| الأسير لا يُكتَبُ عليه ذنب ما دام في أيدي العدو | ٢٢٥٤ |
| الإياس من روح الله (سُئِل: ما أكبر الكبائر؟) | ١٧٦، ٢٨٢٧ |
| برز عليك الأسود يا إبراهيم | ٣٩٤ |
| بلغني أنه يؤتى بالفقير يوم القيامة فيوقف بين يدي اللّهِ عزَّ وجَلَّ | ٢٨٩ |
| تخوّفْتُ أن أكون قد روّعته فقد بلغني أنّه لا يكون العبد من المتّقين | ٣٥٨ |
| تراني أحمل هذا الحطب من الجبل فأبيعه فلا يراني أحد إلا قال: | |
| فلاح أو حمال | ٢٨٣٨ |
| تعال فحدِّثنا... إنما أردت أن أنظر كيف تواضعه للفقراء | ٢٩٧١ |
| خفْتُ أنْ أقبض في الخطوة الثانية، فأسأل فيما خطوتَ الخطوة الثانية | ٢٨٤٥ |
| خلّوا لهم دنياهم يخلّوا بينكم وبين آخرتكم | ١٩٦٢ |
| دخل إبراهيم بن أدهم الجبل ومعه فأس رومي | ٣٦٠ |
| دخلت حصناً من حصون الساحل من قرى الشام وأنا مجتاز | ٣٩٤ |
| دعاؤك لنفسك خير من دعائي لك | ١٢٤٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| دعني عن هذا يا أبا عمر فإنه بلغني أنه من وقف موقف مذلة | ٩٦، ١/٢٩٩٣ |
| ذكرت يوماً تتقلب فيه القلوب والأبصار | ٢٨٠٣ |
| رأيت الذنوب تميت القلوب ويتبعها الذل إدمانها | ١٧٧ |
| الزهد ثلاثة أصناف: فزهد فرضٌ، وزهدٌ فضلٌ، وزهد سلامة | ٩٠٥ |
| فما كان التفاتك يميناً وشمالاً لا تفتر... فما الذي تُحَرِّكُ به شفتيك | ٣٩٤ |
| قد تهنيت بالعيش هاهنا أفر بديني من شاهق إلى شاهق | ٢٨٩ |
| قولوا: اللهم احرسنا بعينك التي لاتنام واحفظنا في كنفك | ٢٠٩ |
| كأنكم تأكلون في رهن | ٣٦٠ت |
| كلوا! كأنكم تأكلون في رهن | ٣٦٠ |
| كم عندك؟... فيسرُّك أن يكون عندك أربعة ألف؟ ...فأنت فقير لا أقبلها | ٥٧٦ |
| كُنْ ذَنَباً ولا تكُنْ رأساً فإنَّ الرأس يهلك، والذنب يسلم | ٩٥٨، ٢٢٤٢ |
| الكبائر أربعة، وأكبر الكبائر الإياس من روح الله عزَّ وجل | ١٧٦ |
| الكلام على أربعة وجوه فمنه كلام يرجو منفعته | ٢٣٦٦ |
| لأنّك قصَّرْت في الطعام | ٨٧٦ |
| لو غسلت وجهي للناس ما كنتُ إلا مرائياً | ٢٩٠ |
| ما أفسدت عليك أكثر أم كراي... فأطرح لك في الكرى بعدد | |
| ما أفسدت عليك | ٢٩٧٩ |
| ما شيَّب رأسي إلاّ الرّفقاء | ٢٩٩٨ |
| ما من العمل شيء أشدُّ على أهله في طول الكمد | ١٧٧٢ |
| متى أجد ثمانية دراهم أشتري بها فروا | ٣٥٩ |
| مُنْذ أربع وعشرين سنة | ١٩٤٣، ٢٨٣٨ |
| من ترك الأمر الذي يخاف أن يعذب عليه غداً (سُئل من الخائف؟) | ٢٨٢٧ |
| منذ أربع وعشرين سنة وما جئت لرباط... جئت لأشبع من خبزٍ | ١٩٤٣، ٢٨٣٨ |
| هكذا كلاب بلخ إذا رزقت أكلت وإذا منعت صبرت | ١٤٤ |
| والله ما قدمت مرابطاً ولا مجاهداً، وإنّما قدمتُ الشام لأشبع من | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| خبز الحلال | ١٩٤٣، ٢٨٣٨ |
| لا تجعل بينك وبين اللّه منعماً عليك، إذا سألت فسأل الله | ١٣١٦ |
| لا حاجة لي في الكرى المسلمون عند شروطهم | ٢٩٧٩ |
| يا حيّ حين لا حيّ، ويا حيّ قبلَ كلّ حيّ | ١٤٥ |
| يا بقية كن ذنباً ولا تكن رأساً | ٢٢٤٢ |
| يا شقيق على ماذا أصّلتم أصولكم؟ | ١٤٤ |
| يا شقيق ولم لا تكون أنت الطير الصحيح الذي أطعم | ٣٣٥٠ |
| يكون بجنبي ولا يكون بفروتي | ٣٥٩ |
| **إبراهيم بن إسحاق الحربي** | |
| أنشد لبعض الشعراء: نعى لك ظِلّ الشباب المشيب | ٦٢٩ |
| أنشد لغيره: وما نحن مثلهم غير إنّا | ٧٧٧، ٣٢٣٨ |
| أوصى بعض أهل العلم ابنه وكان له حظوة من السلطان: يا بني إيّاك أن تلبسَ من الثياب | ٣٤١٧ |
| بكار بن سحيم هذا شيخ مدني، وبكّار هم عشرة أنفس، فأقدمهم بكار بن سلام العنزي | ٢٧٨٢ |
| جلس قوم إلى بعض أهل العلم بالبصرة، فقال لهم: كيف تجمعون شيئاً وشيئان وثلاثة؟ | ٢٠٦٧ |
| الحازق: الذي ضغطه الخف، والحاقب: الذي يجد رزاءً في بطنه | ٥٩٦ |
| سئل أبو تراب النخشبي وكان رئيس الصوفية ما حد الأكل عندكم (ث) | (١٣) ملحق |
| سبعة ممن يحدث عنهم الحربي اسمه أسد: أحدهم أسد بن خويلد له صحبة، وأسد بن كرز | ١٠٧ |
| الطّحربة: اللّباس | ٧٢١ |
| قول النبي صلى الله عليه وسلم: «أنا ابن العواتك من سليم» العواتك ثلاثة نسوة | ٢٣٩٠ |
| قوله: أخفر ذمة اللّه أي: نقض ذمّة اللّه وعهده... يقول: إذا نقضوا ما بينكم | |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| وبينهم من الصلح... وأراد أبو بكر رضي الله عنه | ١٤٤٢ |
| كتب يعقوب بن داود إلى بعض العبّاد للقدوم عليه فأتى محمد بن | |
| النضر الحارثي | ١٣١٥ |
| مثل أصحاب الحديث مثل الصيّاد | ٣٤٨١ |
| مشريق الباب: مدخل الشمس فيه (حكاه تفسيراً لكلام وهب) | ٢٦٠٨، ٣٠٢٠ |
| هذا تقوله العرب في معنى الإغراء: كذبتك كذا أي: عليك به | |
| (معنى قول عمر بن الخطاب: كذبتك الظهائر) | ٦٣٣ |
| وابصاً أي برّاقاً...وبَصَ الشيء إذا برق | ٩١٣ |
| وكان أصلع أقنى له جمة أسفل من أذنيه | ٢٤٠ |
| لا تنسوا نصيبكم من الدنيا، فإن نصيبكم منها بقية أعماركم | ١٨٦١ |
| **إبراهيم بن الأشعث** | |
| حدثني أشياخ من أهل أيلة من أهل العلم أنّهم آووا إلى فرشهم في الليلة | |
| التي نزل فيها عذاب اللّه | ٥١١ |
| **إبراهيم بن بشار** | |
| سألت سفيان بن عينية فقلت له: دلني على جليس أجلس إليه | ٤٣٨ |
| **إبراهيم بن داود الدينوري** | |
| أي لساني (تفسير قول الأعشى:عليّ شاهدي) | ٦٦٧ |
| يعني الملك: (تفسير قول الأعشى يا شاهد اللّه) | ٦٦٧ |
| **إبراهيم بن داود النيسابوري** | |
| أنشدنا إبراهيم المهدي: | |
| باللّه ربّك كم بيت مررت به قد كان يعمر باللّذات والطرب | ٢٣٠ |
| **إبراهيم بن ربيع التيمي** | |
| إن الله تبارك وتعالى أغضب ما يكون قرب الساعة | ٤٢٤/م، ٢٩٢٤/م |
| إن الله عز وجل يريد أن يقيم الساعة أغضب | ٤٢٤/م ت |
| قال عيسى صلى اللهّ عليه وسلم لأصحابه: بحقٍّ أقول لكم إنّه من طلب | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الفردوس فخبز الشعير له | ٥٧٧ |
| قال عيسى عليه السلام: يا معشر الحواريين: اجعلوا كنوزكم في السماء | ٤٦ |
| لقي عيسى عليه السلام رجلاً، فقال له: ما تصنع؟ | ٧٥٣ |
| لا يقولون حتّى يقولَ ويأمر وينهى | ١١٤٦ |
| **إبراهيم بن رزين الزّاهد** | |
| إنّ اللّهَ تبارك وتعالى خلق العينين لينظر بهما العبد إلى عظمة اللّه تبارك وتعالى | ١٠٠ |
| **إبراهيم بن سفيان** | |
| اجتمع جماعة من أهل العلم عند المنصور | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| سُئل بعض الحكماء عن المروءة، فقال: إنصاف من هو دونك والسُموّ | ١٧٠٥ |
| سُئل رجل عن حاله، فقال: كُنّا إذا نحن أردنا لم | ١٩٠٦ |
| قال بعض الحكماء: من كان صبره على حادثات الرزية كشكره | ١٧١١ |
| قال موبذان لكسرى: لا ينبغي للملك أن يغضب | ٢١٢٥ |
| قدم أعرابي الحضر فأكل فطراً فأصابته الذُبحة فقيل له: | ٢٤٥٥ |
| قيل لأعرابي ما أسمنك؟ قال: قلة الفكر | ٢٣٤٧ |
| كان يقال: عقلُ الرجل مدفون في لسانه | ٣٠٤٨ |
| لما احتضر امرىء القيس بأنقرة نظر إلى قبر فسأل عنه. فقالوا: | ١٨٦٠ |
| وقفت أعرابية على قبر ابنها، فقالت: واللّهِ ما كان مالك | ٢٤٢١ |
| **إبراهيم بن صالح** | |
| كان له جام فيه حبُّ الرّمان مدقوقٍ على مائدة | ٢٤٥٧ |
| **إبراهيم بن الفضل** | |
| بينا إبراهيم بن هشام يخطب على المنبر إذ سقطت عصاً كانت معه من يده | ٢٢٣١ |
| **إبراهيم بن فهد** | |
| ولد لسيرين معبد ومحمد ويحيى وأنس وحفصة وكريمة بنت سيرين | ٢٧٢٧ |
| **إبراهيم القاري** | |
| قيل لبعض الحكماء: ما أرادوا بالخلوة والعزلة؟ قال ليستعدوا بذلك | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| دوام الفكرة | ٢٢٤ |
| **إبراهيم بن المنذر** | |
| قالت لي أُمّي: يا بني قد خلقت خلقة لا تصلح معها لمجامعة الناس | ٢١٢٦ |
| **إبراهيم بن مهاجر** | |
| فاكهة الشتاء في الصيف وفاكهة الصيف في الشتاء | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿وجد عندها رزقاً﴾). | ٢٠٥ |
| **إبراهيم المهدي** | |
| بالله ربك كم بيت مررت به قد كان يعمر باللّذات والطرب | ٢٣٠/م |
| **إبراهيم بن هشام** | |
| بينا هو يخطب على المنبر بالمدينة إذ سقطت عصاً | ٢٢٣١ |
| وفطنت لذلك...فإن له علي ديناً | ٢٦٧٨ |
| **إبراهيم بن يزيد النخعي** | |
| إنّي لأرى الشيء ممّا يعاب فما يمنعني من أن أتكلّمَ | ٨٨٩ |
| سرعة المشي تذهب بهاء المؤمن | ٨٢٥، ٣٣٣٩ |
| ليس من المروءة كثرة الالتفات في الطريق | ٨٢٥، ٣٣٣٩ |
| ما أخاف على دمي إلاّ من القرّاء أو العلماء | ٢٨٨١ |
| هو أن يحاسب الرجل بذنبه كله | ١٢٠ت |
| لا. إلاّ أن يضع يده على الفرج (الرجل يلمس امرأته أيتوضأ؟) | ٩٥١ |
| يأخذ عبده بالحق (تفسير قوله تعالى: ﴿سوء الحساب﴾) | ١٢٠ |
| يا فرقد! أتدري ما سوء الحساب | ١٢٠ت |
| **إبراهيم بن يسار** | |
| الآية التي مات منها علي بن الفضيل هي في الأنعام | ١٦٢٧ |
| **إبرويز** | |
| إن كلمة منك تسفك دماً، وأخرى تحقن دماً | ٢١٤٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **إبليس** | |
| ما رأيت لهؤلاء رأياً قط، إني لم أر رأياً قط | ١٨٠١ |
| من كانت فيه واحدة من ثلاث فقد استمكنت منه | ٩٢٦ |
| **أبي بن كعب** | |
| إن موسى صلى الله عليه وسلم قال: يارب دلني على عمل إذا قلته | |
| كان أداء شكر ما أنعمت به علي | ٢٥٤٠ |
| قام موسى يوماً في قومه فذكرهم بأيام الله | ١ت |
| ما ترك عبدٌ شيئاً لا يتركه إلاّ للّه تبارك وتعالى | ٢٥٨٣ |
| **أحمد بن أيوب** | |
| قطع اللّه لسانه فأين هو عن | ١٨٧١ |
| **أحمد بن حنبل** | |
| بلغني أنّك تقول: إسماعيل ابن عُلَيّة، وكان يكره أن يقال له إسماعيل ابن عُلَيّة (قاله ليحيى بن معين) | ٣٢٣٢ |
| رحم اللّهُ سفيان، هذا من مخبآت سفيان | ٣٩٥ |
| كان أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يتّجرون في البرّ والبحر | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |
| كفروا عني كفارة يمين واحدة، فإنّي أضمن أنّي قد حنثتُ في دهري في يمين واحدة | ٢٥٣ |
| لو لم يسمع الرجل من العلم إلاّ هذا لكان كثيراً | ٢٧ |
| ما الناس إلا من قال: حدثنا وأخبرنا | ٣٤٣٨ |
| نساء بني عجلان يحملن أربع سنين | ٣٣٥٣ت |
| هذا رجل جهل العلم | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |
| يا أبا النعمان! نحن قوم مساكين فلم يزل يدافعني حتى خرج ولم يقل لي شيئاً | ١١٤٣ |
| يهجرون ويضربون ولا يجلس معهم | ٢٧٤٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أحمد بن داود** | |
| فلا تحسبني كافراً لك نعمة علي شاهدي يا شاهد الله فاشهدِ | ٦٦٧ |
| وَعَظتك أجداث صمت ونعتك أزمنة خفت | ١٩٠/م |
| **أحمد بن رزين العابد** | |
| إن الله تبارك وتعالى خلق العينين لينظر فيهما العبد | ١٠٠ |
| **أحمد بن سلام (مولى يزيد بن حاتم)** | |
| قال كسرى: لاَ تنزلّن ببلدٍ ليس فيها خمسة أشياء، سلطان | ١١٨٨ |
| **أحمد بن شعيب** | |
| قيل لعبيد اللّه بن الحسن العنبري: أتجوز شهادة رجل عفيف تقي أحمق | ٦٢٢ |
| كُنَّا عند بعض المحدِّثين بالبصرة فحدّثنا بحديث | ٢١٥٤ |
| **أحمدبن صالح عن أبيه** | |
| نزل أعرابي بقوم ومعه زوجته وابنته | ٢٤٦٩ |
| **أحمدبن عبّاد** | |
| أنشد لبعضهم: | |
| ما أنزل الموت حق منزلته من عد يوم لم يأت من أجله | ١٨٩/م |
| يا ميّتاً في كلِّ يوم بعضه | ٧٤١ |
| **أحمدبن عبادة عن أبيه** | |
| قرأت في كتاب رجل إلى بعض الخلفاء: كان لي فيك أملان | ١١٥٧ |
| **أحمدبن عبدان الأزدي** | |
| حدّثني بعض أصحابنا أنّه قرأ على قبرٍ: | |
| تناجيك أجداث وهنَّ سكون | ٩١٤ |
| **أحمدبن علي المقري** | |
| أنشدونا لبعض الشعراء: رأيت اللسانَ على أهله | ٨٧٩ |
| قيل لبعض الحكماء: ما لك تُدْمِنُ إمساك العصا، ولست | ١٢٨٤ |
| **أحمدبن محرز الهروي** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| وجد على ميل في طريق مكة مكتوب: | |
| ألا يا طالب الدنيا دع الدنيا لشانكا | ٣٢٩٣ |
| **أحمدبن محمد الأزدي** | |
| أنشد لبعض الشعراء: قوم إذا أكلوا أخفوا كلامهم | ٣٢٥٤ |
| **أحمدبن محمد(مولى بني هاشم)** | |
| قال رجل من أخيار المسلمين: ما غَنَى من لا يملك نفسه | ٢٠٩٩ |
| **أحمدبن مروان الدينوري (صاحب المجالسة)** | |
| أنشدنا إبراهيم الحربي لأبي طالب في رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم: | |
| وأبيض يُستَسقى الغمامُ بوجهه | ٥٧٤ |
| أنشدنا لبعضهم: أنت ما استغنيت عن صاحبك الدهر | ٥٢١ |
| أنشدنا المبرّد: | ٣٤٧٣ |
| أنشدنا المبرّد لعنترة: | ٣٤٧٢ |
| أنشدنا المبرّد للنابغة: | ٣٤٧٤ |
| أنشدني إسماعيل بن يزيد | ٣٤٧١ |
| لما كان وقت الظهيرة من يوم الإثنين الذي توفي فيه | (٧) ملحق |
| **أحمد بن المعدّل** | |
| أشكو إليك حوادثاً أقلقتني | ٣٠٥٥ |
| ديارُكم أمامكم وحياتكم بعد موتكم | ١٥٦٢ |
| ضحّيت له كي أستظلّ بظله إذا الظلُّ أضحى في القيامة قالصاً | ٤٢٢ |
| كان إذا حجّ لا يستظل | ٤٢٢ |
| كان إذا حَزَبَهُ أمرٌ قام في الليل يُصَلّي ويأمر أهله بالصلاة | ٣٠٥٥ |
| كان رجل من الصالحين عندنا بالبصرة فما رُئي قطّ إلاّ كأنه | |
| غشيته النار | ٩٧١ |
| نؤمل جنّة لا موت فيها، ودنيا لا يكدرها البلاء | ٣٤١ |
| يا أمير المؤمنين، ما في بصري سوء، ولكن نزهتك من عذاب اللّه | ٣٤٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أحمدبن نيزك** | |
| قال بعض الحكماء: من حَدَّث نفسه بطول البقاء فليوطّن نفسه | ٢٧٤٦ |
| **أحمدبن يحيى بن ثعلب** | |
| أنشدَ: لقد ينعشُ اللّهُ الفتى بعد عثرة | ٣٤١٥ |
| **الأحنف بن قيس** | |
| احتكموا ... ذاك لكم... أنا أعطيكم ما سألتم غير أنّي قائِلٌ | ٢٥٦٦ |
| أصلح اللّه الأمير إنْ كانوا حُبِسُوا في باطل فالحق | ٨٣٠ |
| إنّ على كُلِّ رئيس حَقّاً | ١٠١٥ |
| أنشد لبعض الشعراء: وإن الله ذو حلم | ١٨٢١، ٣٣٢٧ |
| إنّي أعدُّه لسفر طويل | ٣٣٠٠ |
| إنّي ما أظنّك إلاّ ضعيفاً فيما تحاول..لأمر ما قيل | ٢١٢٤ |
| إني ما رددتُ عن حاجةٍ قط | ٨٢١/م، ٣٢٤٤ |
| بتركي من أمرك ما لا يعنيني، كما عناك من أمري | ٨٢١، ٣٢٤٢ |
| بعث عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه الأحنف بن قيس على جيش قبل خراسان | ١٠١٥ |
| تعلّمْتُ الحلم من قيس بن عاصم المنقري، لقد اختلفتُ إليه في الحلم | ٣٣٢٨ |
| ثلاثة ما أقولهنّ إلاّ ليعتبر بهن معتبر، لا أحلف | ١٨٣٤، ٣٠٨١ |
| الجزع شر الحالين، يباعد المطلوب، ويورث الحسرة | ١٩٢٤ |
| جَنِّبوا مجالسنا ذكر النساء والطعام فإنّي أبغضُ الرجلَ | ٦٤٤ |
| خير الإخوان من إن استغنيتَ عنه لم يزدك في المودّة | ٣٢٢٤ |
| رحم الله يا أمير المؤمنين أولادنا ثمار قلوبنا وعماد ظهورنا | ١٠٩٤ |
| الرفق والأناة محمود إلاّ في ثلاث | ٢٦٧٥ |
| الزّبد والكمأة | ٦٣٨ |
| السؤدد مع السواد: يعني من أتته في حداثته وسواد رأسه | ١٥٧٨ |
| الصمت لا يعدو صاحبه وفضل المنطق | ١٩٢٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| عجبت لمن يجري من مجرى البول مرّتين | ٢١٦٣ |
| العفّة والحرفة | ٨٢٤، ٣٢٤٥، ٣٣٣٨ |
| الفقه في الدين والصبر على النوائب والحلم عند الغضب والعفو | ١٧٣٠ |
| كاد العلماء أن يكونوا أرباباً | ١٩٠١ |
| كان الأحنف بن قيس يفر من الشرف والشرف يتبعه | ١٥٧٥ |
| كان أعظم الناس سلطاناً على نفسه | ١٧٢٨ |
| كان لا يحرص ولا يجهل ولا يدفع الحق إذا نزل به | ١٧٢٨ |
| كان يؤتي الخير ويتوقى الشر | ١٧٢٨ |
| كتمانُ السرِّ والتباعد من الشرِّ (سُئل: ما المروءة) | ١٩٦٩، ٣٠٩٥ |
| كُلُّ عِزٍّ لم يؤيّد بعلم فإلى ذُلِ | ١٩٠١، ٢٣٥٥ |
| ما خان شريفٌ ولا كذب عاقلٌ ولا اغتاب مؤمنٌ | ١١٢٨ |
| ما دخلتُ بين اثنين قط حتى يكونا هما يدخلاني في أمرهما | ٣٢٤٣ |
| ما يسرُّني بذل نفسي كذا وكذا | ١٩١٢، ٢١٨٢ |
| ما سمع الناس بمثل عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه في باب الدين والدنيا | ١٧٦٧ |
| ما يتبغي لمن خرج من مخرج البول مرتين | ٢١٦٣ت |
| من قيس بن عاصم المنقري، لقد اختلفت إليه في الحلم كما يختلف إلى الفقهاء في الفقه | ٨٠٤ |
| من لم يصبر على كلمة سمع كلمات، وربَّ غيظٍ قد تجرّعته مخافة ما هو أشدّ منه | م/٣٣٢٧ |
| وجدت الحلم أنصر لي من الرجال، ثم أنشد في أثره | ١٨٢١ |
| وكائن ترى من صامتٍ لك معجبٌ زيادته أو نقصه في التكلم | ٥٣١ |
| لا أجلسُ مجلساً أعلم أنّي لا أقام عن مثله، ولا أقف على باب | ٣٢٤٣ |


**ابن إدريس = عبد اللّه بن إدريس**

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **الأحوص بن حكيم** | |
| كان من دعاء داود عليه السلام: يا رب، يارازق النعاب في عشه | ١٣٥٣ |
| **إدريس الحداد** | |
| ذاكرت أحمد بن حنبل هذا الحديث | ٢٧ |
| كان أحمد بن حنبل إذا ضاق به الأمر آجر نفسه من الحكمة | (٨) ملحق |
| **أردشير** | |
| حسبكم دلالة على علو فضيلة العلم إنه ممدوح بكل لسان | ١٦٨٥، ١٧٨٨ |
| رضا الرجل عن نفسه دليل على قلة عقله | ١٨٥٧ |
| **إسحاق بن إبراهيم الحنظلي** | |
| سيردون فيعلمون | ٣٤ |
| **إسحاق بن خلف** | |
| لقيت عمر صاحب إبراهيم بن أدهم، فقلت له: راكب | ١٢٣١ |
| ليس الخائف من بكى وعصر عينيه، ولكنّ الخائف من ترك الأمر | ١٧٦ |
| **إسحاق بن عبد الله الغطفاني** | |
| كان ابن عمر لا يذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم إلاّ بكى | ٢٥٢٢ |
| **إسحاق بن منصور بن دينار** | |
| نظر بعض ملوك الأعاجم إلى شيبٍ في رأسه فجمع نسائه | ٣١٩٠ |
| **أسد بن عبد الله** | |
| وما حملك على ذلك | ١٤٠٩، ٣٢٧٥ |
| **أسلم** | |
| كانت لحيته عظيمة [فَرُئِيَ] الدخان يخرج من خلل لحيته | ٢١٦ |
| **أسماء بن خارجة** | |
| ما شتمت أحداً قطّ ولا رددْتُ سائلاً قط لأنّه إنّما يسألني أحدُ رجلين | ٤٩٩ |
| **إسماعيل بن أبي أويس** | |
| كنا عند سفيان بن عيينة في آخر عمره بمكة | ٢٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **إسماعيل (بن إسحاق)** | |
| الرغد عند أهل اللغة الرزق الواسع الذي | ٢٧٠٦ |
| **إسماعيل بن زيد** | |
| أحب الفتى ينفي الفواحشَ سمعُه | ٣٠٤٠ |
| **إسماعيل بن عيّاش** | |
| قال بعض الحكماء: مَنْ أُعْطِيَ أربعاً لم يمنع أربعاً | ٥٩٥ |
| **إسماعيل بن يونس** | |
| أنشد لأعرابي: أخاً لك ما تراه الدّهر إلاّ | ٣٢٢٦ |
| **إسماعيل الثقفي** | |
| سمعت أمية بن أبي الصلت عند وفاته وأُغمي عليه طويلاً | ٦٢٦ |
| **أشعب** | |
| أنا أطمع وأمّي تيقن فقلّ ما يفوتنا | ٣٢٦٨ |
| من ذهبت له قطيفة | ٢٤٨٥ |
| يا فديتك معي واللّه من لطف السؤال ما لا تطيب نفسي بتركه | ٢٤٨٤، ٣٣١٢ |
| **الأشعث بن سوار** | |
| يا أبا سعيد أخبرني عن العبد يذنب ثم يتوب ويستغفر | ٢٦١٢ |
| **الأعشى** | |
| فلا تحسبني كافراً لك نعمة علي شاهدي يا شاهد الله فاشهد | ٦٦٧ |
| **الأصمعي** | |
| أبدع بيت قالته العرب بيت أبي ذؤيب: النفس راغبة | ٢٧٦، ٢١٥٣ |
| أتى يزيد بن أبي مسلم برقعة وسأله أن يرفعها إلى الحجاج فنظر فيها يزيد | ١٥٥٤ |
| أُتِيَ المنصور برجلٍ فعاقبه على شيءٍ بلغه عنه | ٨٢٩، ٣١١١، ٣٢٤٧ |
| احتضر فتى من الحيِّ كان فيه زهوٌ فرفع رأسه | ٣٨٨ |
| أخبرنا شيخ من قضاعة، قال ضللنا مَرَّةً | ٢٣٣٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| اختصم رجلان إلى عمر بن الخطاب في غلام | ٢٠٨٥ |
| أخذ عبد الملك بن مروان رجلاً وأرادَ قتله | ٨٣١، ٣٢٤٨ |
| إذا أردت أن تَسْلَم من الحاسد فَعَمِّ عليه أمورك | ٦٥٦/م |
| أراد أنهم ملوك حلول في موضع واحد | ٧٤٨ |
| أراد عبد الملك قتل رجل، فقال له: يا أمير المؤمنين إنّك أعزّ | ٣١١٢ |
| أربعة: أزهدهم سليمان التَّيمي، وأفقههم أيوب السختياني | ٣٤٠١ |
| أصاب أشعب الطّمع ديناراً بمكة، فاشترى به منه قطيفة | ٢٤٨٥ |
| أعبَدُ الأربعة: سليمان التيمي، وأفقههم أيوب السختياني | ١١٧٨ |
| اعتذر رجلٌ إلى أعرابي، فقال له الأعرابي تخطئ ذنبك | ٢٧١٢ |
| أمر الحجّاجُ ابنَ القريةِ أن يأتي هند بنت أسماء | ٢٣٣١ |
| إنّ الأحنف بن قيس كان يجالسه رجلٌ يطيل الصمت | ٥٣١ |
| إن أبا بكر الصديق رضي الله عنه أعتق سبعة كلهم يعذب في الله عز وجل | ١٦٦ |
| إنّ أعرابياً ذكر رجلاً خائناً، فقال: إنّ الناس ليأكلون أماناتهم | ٢٣٣٦ |
| إنّ أعرابياً رأى أخاً له في أمرٍ فقال له | ٣٥٠٧ |
| إنّ أعرابياً لقي رؤبة بن العجاج، فقال له ما اسمك؟ | ٢٣٠٨ |
| إن النعمان بن امريء القيس الأكبر وهو الذي | ١٢٢٢ |
| أولى رجل أعرابياً معروفاً، فقال له الأعرابي: النعم | ٢٦٩٠ |
| بعث إليّ هارون الرشيد وقد زخرفت مجالسه وبالغ فيها | ١٦٢١ |
| بلغني أنّ أباك كان ذا منزلة من ابن سيرين فما حفظت منه | ٦٣٥ |
| بلغني أن رجلاً قال لآخر: والله لئن قلت واحدةً لتسمعنّ عشراً | ٨٠٣، ٣٣٢٧ |
| بلغني أن في الزبور مكتوباً: من بلغ | ١٢٧٨ |
| تغذى مع عبد الملك بن مروان أعرابي فجعل يضرب بيده في القصعة | ٣١٢٧ |
| ثلاثة أشياءُ ربَّما صَرَعْن أهل البيت عن | ٢٤٥٤ |
| جرى بين رجلين كلام فقال أحدهما لصاحبه: لمثل هذا | ١٥٩٩ |
| جعل بعض الخلفاء يقرِّع رجلاً بذنب وأراد عقوبته | ١١٨١، ٣٤٠٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| حاصر مسلمة بن عبد الملك حصناً وأصابهم فيه جَهْدٌ عظيم | ١٣٥٤ |
| حَجَّت أعرابية على ناقة لها فقيل لها: أين زادك | ١٤٦٩، ٣٢٦٥ |
| حججتُ مع هارون الرشيد سنةً من السنين | ٢٦٠٦ |
| حججت مع هارون الرشيد ومعه بعض ولد قتيبة بن مسلم الباهلي | ٢٦١٠ |
| حدثتُ بهذا الرشيد فأمر أن يشترَى له ألف نسمة ويعتقون ويكتب لهم هذا الكتاب | ٢٧٠ |
| حضرت أعرابياً الوفاةُ، فقيل له: أوصِ، فقال: هذا عمل لم أعمله قطُّ | ٣١١٠ |
| حضرت أعرابياً الوفاة، فقيل له: قل لا إله إلاّ اللّه فأشار بيده إليهم | ٣١١٠ |
| حضر جَدِّي عليّ بن أصمع الوفاة فجمع بنيه، فقال: يا بنيّ عاشروا | ٢٩٣ |
| خطب أعرابي إلى قوم، فقيل له: ما تَبذل من الصداق فرفع | ١٦٤١ |
| خطب سعيد بن العاص فقال في خطبته: | ٢٣٤١/م |
| خطب عبد الملك بن مروان بمكة لما حج | (٢٠) ملحق |
| دخل رجل على المهدي من بعض أشراف أهل البصرة | ٧١١ |
| دخل عطاء بن أبي رباح على عبد الملك بن مروان وهو على سرير وحواليه الأشراف | ٣٠٥ |
| دخل الهذيل بن زفر على يزيد بن المهلب في | ١١٦١ |
| دخلت بعض الخيام فإذا أنا بجارية واللّه ما أحسبها أتت عليها عشر سنين وهي تقول: عدمت الحياة ولا نلتها | ٣٤٤٨ |
| دخلت على هارون الرشيد يوم الجمعة وهو يقلم أظفاره | ١٥٩ |
| دفع أردشير إلى رجل كان يقوم على رأسه كتاباً | ١٣١٣ |
| ذكر أعرابي رجلاً، فقال: ما أدري أي الصبرين | ١٧١٠ |
| ذكر أعرابي قوماً، فقال: واللّه ما نالوا بأطراف أناملهم | ٢١١٩ |
| رأيت أعرابياً بمنى فصيحاً يسأل الناس فسمعته يقول في مسألته: | ١٣٨٦ |
| رأيت أعرابياً عند الملتزم، فقال: اللهمَّ إنّ لك عليّ حقوقاً | ١٥٦، ٣٣٧٢ |
| رأيت أعرابياً في بني عذرة قد أتت عليه مئة وعشرون سنة | ٦٦٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| رأيت أعرابياً في موقف عرفة وهو يقول: اللهم إني | ٣٢١٦ |
| رأيت أعرابياً يضرب أمّه، فقلت له: أتضرب أُمَّك؟ | ٣٢٥٨ |
| رأيت أعرابية ذات جمالٍ رائع تسأل بمنىً فقلت: يا أمة اللّه | ١٥٨٥ |
| رأيت دبرة بن ينبوب الأعرابي وهو يضرب أمه | ٢٥٧٣ |
| رفع رجل قصة إلى عمر بن عبد العزيز | ٣٥٨٤ |
| رُكَبُ النّاس في أرجلهم، ورُكَبُ ذوات الأربع في يديها | ١٤٣٩، [٤/٣٣٥٤] |
| سئل أعرابي فقيل له: كيف كتمانك للسر، فقال: أنا لحدها | ٢٤٦ |
| سأل أعرابي عن رجل، فقالوا: أحمق مرزوق، فقال: ذاك واللّه الكامل | ٢١٠٦ |
| سأل أعرابي قوماً، فقالوا له: بورك فيك | ٢٩٢١، ٢/٣٠٧١ |
| سأل رجل قوماً، فقال رجل منهم: اللهم هذا سألنا ونحن | ٥٥٢ |
| سأل زياد رجلاً من حكماء الفرس: ما المروءة؟ فقال أربع خصال | ٢٧٦١ |
| سقط جراد بقرب بيتِ أبي حنبل جاريةَ بن مُرَّ وكان أحد الكرماء | ٢٢٣٣ |
| سَمع أعرابي ابنَ عباسٍ يقرأ سورة آل عمران: ﴿وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها﴾ | ٥٠٧ |
| سمعتُ أعرابياً عند الملتزم يقول: اللهمَّ أعنّي على الموت وكربتِه وعلى القبر | ٣٤٥٠ |
| سمعت أعرابياً من حكماء العرب يقول: كفى جهلاً أن يمدح المادح | ٧/٢٤٣٥ |
| سمعت أعرابياً يدعو ويقول في دعائه: اللهمَّ اجعل التخمة دائي | ٢٩١٩ |
| سمعت أعرابياً يقول: إذا أردت أنْ تعرفَ الرجل فانظر كيف تحنّنه | ٣٣٢ |
| سمعت أعرابية بعرفات وهي تقول: اللهمَّ إنْ كان رزقي في السماء فأنزله | ٣٤٣٥ |
| سمعت مشيخة البصرة يقولون: ربَّما كان المطر الشديد بالليل وقراءة القرآن فلا يدري أيّ الصوتين أوقع | ٣٣٨٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| سُئل أعرابي وأنا أسمع؛ كيف برك بأمك؟ فقال: ما ضربتها قط | ٢٥٧٢ |
| سُئل أقرى أهل اليمامة للضيف كيف ضبطكم للقِراء | ٦٥١ |
| عاد قوم مريضاً في بني يشكر فأطالوا عنده، فقال لهم: إنْ كان لكم في الدَّار حقٌّ فخذوه | ٨٧٣ |
| قال أردشير: رضا الرجل عن نفسه دليل على قلة عقله | ١٨٥٧ |
| قال أعرابي: أأغسل رأسي أم تطيب مشاربي | ٧٩٣ |
| قال أعرابي لخالد القسري أصلح اللّه الأمير | ٢٣٢٧ |
| قال أعرابي: ما تاه عليَّ أحدٌ قيل ولم ذاك؟ | ١٥٨٣، ٢١٢٢ |
| قالت أعرابية من بنات عدي بن حاتم للمنصور في طريق مكّة بعد وفاة أبي العباس: أعظم اللّه أجرك في أخيك | ٣٢٣٥ |
| قال برزجمهر الحكيم: احذروا صولة اللئيم إذا شبع | ٢٤٥ |
| قال برزجمهر الحكيم: إذا اشتبه عليك أمران فلم تدر أيهما الصواب | ١٤٠٦ |
| قال برزجمهر: إذا أقبلت إليك الدنيا فأنفق فإنها لا تغني | ١٣٨٣ |
| قال برزجمهر: ثمر القناعة الراحة وثمر | ٢٤٤١ |
| قال برزجمهر: الفقر في الوطن غربة والغنى في الغربة وطن، وفقد الأحبة غربة | ٦٦٩ |
| قال برزجمهر: كل عزيز دخل تحت القدرة فهو ذليل | ١٣٤٥ |
| قال بعض الحكماء: أعظم النّاس خطيئة يوم القيامة عند الله المثلث | ١٦٩٠ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة يحكم لهم بالمروءة حتّى يتكلّموا، رجل رأيته راكباً | ٨٢٧، ٣٢٤٦ |
| قال بعض الحكماء: الشكر ثلاثة منازل لمن فوقك بالطاعة ولنظيرك بالمكافئة | ١١٥٨ |
| قال بعض الحكماء وسُئل عن رجل فقال: بلغ من كرمه أنّه لا يسئل أحداً | ١٨٠٠ |
| قال بعض حكماء العرب: إنّ ممّا تُعجل عقوبته ولا تؤخّر | ٢٦٧٧ |
| قال بعض حكماء العرب: لكلٍّ جواد كبوة ولكلٍّ صارم نبوة | ١٦٧٤ |
| قال بعض حكماء العرب من أهل خراسان لنصر بن سيّار: ينبغي أن يكون | ١٦٦٤ |
| قال بعض حكماء الهند: ما أقلّ منفعة كثرة المعرفة مع سرف | ١٦٧٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعض حكماء العرب: لا يَحتجب الوالي إلاّ عن ثلاث عن عيٍّ | ٢٢٦٠ |
| قال بعض العرب: الهوى هوان ولكن غلط باسمه | ١٤٠٦ |
| قال بعضهم: التمس لحوائجك صباح الوجوه فإن حسن | ١٧٩٢ |
| قال بنو شيبة لأعرابي: هب لنا حتّى ندلك على شيء تأمن معه العمى | ٣٤٤٧ |
| قالت أعرابية للمنصور في طريق مكّة بعد وفاة أبي العبّاس: أعظم الله أجرك في أخيك | ٧٦٧، ٣١١٣، ٣٢٣٥ |
| قال الهند: الحنة في ثلاثة أصناف من الحيوانات | ٣٣٣ |
| قال خال الفرزدق:إذا ما الدهر جدّ عليّ | ٣٣٠٥ |
| قال رجل: ما رأيت ذا كبرٍ قطّ إلاّ تحوّل داؤه فيّ | ١٥٨٣، ٢١٢٢ |
| قال رجل من حكماء العرب: بنات العم أصبر والغرباء أنجب | ١٤٣٨، ١/٣٣٥٤ |
| قال رجل من حكماء العرب: ما رأيت ذا كبرٍ قط إلاّ تحوّل داؤه في | ٢١٢٢ |
| قام أعرابي بين يدي هشام، فقال: يا أمير المؤمنين أتت على الناس | ٦١٤ |
| قدم على زياد نفر من الأعراب، فقام خطيبهم فقال: أصلح اللّه الأمير | ٢٢٧٣ |
| قدمت امرأة من هوازن على عبيد اللّه بن أبي بكرة بالبصرة وكان سيِّداً | ١٩٧٩ |
| قرأ الأصمعي﴿ لا يأكله إلا الخاطئون﴾ ثم أنشد قول الشاعر | ١٢١٩ |
| قيل العيال أرضة المال | ٣٣١٤ |
| قيل لأعرابي: أتشرب الخمر؟ قال:لا أشرب ما | ١٥٧٢ |
| قيل لأعرابي: إنّك تكثر لبس العمامة، فقال: إنّ عظماً فيه السمع والبصر | ٣٣٤٣ |
| قيل لأعرابي: أيّ ولدك أحبُّ إليك، فقال: صغيرهم | ١٠٩٦ |
| قيل لأعرابي: تمنّه. قال: الكفاية، والانتقال مِنْ ظل إلى ظل | ١١/٢٤٣٥ |
| قيل لأعرابي: كيف حزنك اليوم على ولدك | ١٩٠٨ |
| قيل لأعرابي: ما أحسن الثناء عليك؟ فقال: بلاء اللّه عندي أحسن من وصف المادحين، وإن أحسنوا | ٢٥١٦، ٣١٩٢ |
| قيل لأعرابي ما تشتهي؟ قال: أشتهي ضرساً طحوناً | ٣١٢٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قيل لبزرجمهر الحكيم: بِمَ أدركت ما أدركت من العلم؟ قال: ببكور كبكور الغراب | ٣١٠ |
| قيل لبرزجمهر الحكيم: هل يستطيع أحد أنْ يفعل المعروف من | ١١١٤ |
| قيل لبعض الحكماء: مالك لا تُرْضي بني فلان قال: ليس يرضيهم شيءٌ | ٢٩٣٤ |
| قيل لحكيم من حكماء العرب: تَمنَّ، فقال: منادمة الإخوان وكفاف من عيشٍ يَسُدُّ خُلَّتي | ٢٩٤٦ |
| قيل لدغفل النسابة: بم أدركت ما أدركت من العلم؟ | ٣٠٦ |
| قيل للعجّاج: إنّك لا تحسن الهجاء، فقال: إنّ لنا أحلاماً | ٥٣٤ |
| كان رجل من بني تميم يقال له: فرغان لا يزال يغير على الناس | ٢٠٦٤ |
| كانت لكسرى جامات من ذهبٍ يأكل فيها | ١٩٠٢ |
| كان يقال: انتهزوا فرص القول فإنّ للقول ساعات يضرُّ | ٢٢٠٢ |
| كتب عبد الحميد بن عبد الرحمن إلى عمر بن عبد العزيز: أما بعد: يا أمير المؤمنين فإن الناس | ٢٦٨٨ |
| كَلَّم النّاسُ عبدَ الرحمن بن عوف أنْ يُكلِّمَ عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه في | ١١٩٩ |
| كنت جالساً مع هارون الرشيد فأصعد إليه الأسقف وكان طبيباً عالماً | ٣١٣٠ |
| كنت عند هارون الرشيد وعنده أبو يوسف القاضي، فذكر أبو يوسف | |
| حديث ابن عمر أنه سابق بين الخيل | ٣٠٤ |
| لقد جعتُ حتَّى أكلت النَّوى المحرق | ١٣٨٦ |
| لو قسمتُ في الناس مئة ألف درهم كانوا أكثر | ٢١٧٧ |
| ليس نحو الغاية إنّما هو الغاية | ٣٠٤ |
| ما أطول عمرك (رأى أعرابياً في بني عذرة قد أتت له مئة وعشرون سنة | ٦٦٠ |
| ماجسنس الزيادي وهو شيخ من قدماء الفرس وحكماؤهم | ١٢٩٩ |
| ما تاه علي أحد قط مرتين | ٢١٢٢ |
| ما رأيتُ أحْضَرَ جواباً من زنديق أُدْخِلَ على الرشيد | ٣١١٥ |
| ما فعل الشاب؟...ما هذا السويق؟ | ٧٦٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما في هذا مما يمدحهم به، قال: أراد أنهم ملوك حلول | ٧٤٨ |
| مررت بأعرابية وبين يديها شاب في السّياق ثم رجعت وبين يديها قدح | ٧٦٩، ٣٢٣٦ |
| المثلث: هو الرجل يسعى بأخيه إلى الإمام | ١٦٩٠ |
| نزلنا في طريق مكة في بعض المناهل وحضرت الجمعة | ١٠٣٤، ٢٥٣٨ |
| هذا بيت جَيِّدٌ إنْ كان قاله عمر رضي اللّه عنه، ولا يحفظ لأبي بكر شعر ولا عمر | ٢٨٥٢ |
| وفد الأحنف والمنذر بن الجارود على معاوية رضي الله عنهم | ١٥٧٦ |
| وأحسن ما قيل في الكبر: أرى بصري قد رابني بعد صحَّة | ٢٧٦ |
| وأحسن مرثية قول أوس بن حجر الكندي:أيتها النفس احملي جزعاً | ٢٧٦ |
| لا تشاور صاحب حاجة تريد قضاءَها، ولا جائعاً ولا حاقناً | ٥٩٦ |
| يا أمير المؤمنين، وتخش أنت أيضاً الفقر؟ | ١٥٩ |
| يجتمع عشرة آلاف فيهم يعني ألف مقاتل أو أكثر ويجتمع ألف | ٣٣٣٢ |
| يقال: الثناء يضاعف كما تضاعف الحسنات | [٣/٣٠٧١] |
| **الأصمعي عن أبيه** | |
| سمعت أعرابياً يدعو ويقول: اللهمَّ أمتعنا بخيارنا | ٢٣٣٣، ٣٤٤٩ |
| كان أبو بصير اسمه يشكر بن وائل من بني | ١٩٣٠ |
| كان يقال: الصاحب رقعة في قميص الرجل فلينظر بِمَ يرقعه | ٧٠٧ |
| كتب الحجاج بن يوسف إلى الحكم بن أيوب: اخطب لي على عبد الملك بن الحجاج | ١٩٦٦ |
| **الأصمعي عن أبيه عن جَدِّه** | |
| إنّ أبا أيوب الأنصاري وهو خالد بن زيد غَزَا بلاد الروم فمات | ١٢٥٧ |
| **الأعمش** | |
| أحدث رجل من أهل الشام على قبر الحسين بن علي | ٤٤٦ |
| إذا أخذ الرجل اللّقمة فرمى بها خلف | ١٨٣ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى رفع بهذا القرآن أقواماً، وأنا ممَّن | ٥٠٨ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| أنبئت أن بين دعائهم وبين إجابته إياهم | ٨٤٦ |
| رجعت لما رمتُ مستحسراً | ٩١٣ |
| سَلْ ربّك واشترط أنْ يرزُقَك صحابةً صالحين | ٤٩٧ |
| كنت إذا رأيت مجاهداً ظننته خربندج | ٣٠١٥م |
| ما قرأ عليٌّ علج أقرأ منك | ٢٥٦١ |
| ولا أبالي أن لا يكون لي به عهدٌ أبداً... أما تعلم أنّي الجافي المراغم والملح | ٢٥٣٢ |
| واللّه لقد هربت منهم...سألتك باللّه إلاّ طلبته | ٢٣٠٩ |
| **الليث بن سعد** | |
| ضن بهذه الحكمة التي آتاك الله عز وجل | ١١٧٩ |
| **امريء القيس** | |
| وجرح اللسان كجرح اليد | ٦٧٤ |
| **أكثم بن صيفي** | |
| إذا اتخذتم عند رجل يداً فانسوها ولا تمتنوا فإن المنة تهدم الصنيعة | ٦٨٤ |
| أقلوا الخلاف على أمرائكم، واعلموا أن كثرة الصياح من الفشل | ١٥٣٣ |
| أملك الناس لنفسه من كتم سره من صديقه وخليله كيلا يتغير الذي بينهما يوماً فيفشي سره | ٨٨٨ |
| إني أخاف أن أتخذ العجز عادة | ٥٠٣ |
| الإفراط في الأنس يكسب قرناء السوء | ٣٤٧٩ |
| الانقباض من الناس مكسبة للعداوة | ٦٧١ |
| الحزم في الأمور، حفظ ما كلفت، وترك ما كفيت | ٨٢٠ |
| سرك من دمك فربما أفشيته فيكون فيه سبب حتفك | ٨٨٨ |
| السر فيه ضرب العنق | ٨٨٨ |
| الشّر بدؤه صغار فاصفح عنه لكي لا يخرجك إلى أكبر منه | ١٠٣٥ |
| الصمت يكسب أهله المحبة | ٨٨٢ |
| ما يسرني أني أنزل دار معجزة فأسمن وألبن | ٥٠٣ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما يسرني إني قمت بدارٍ معجزةٍ وإني أسمنت | ١٩٢٢ |
| المزاح يذهب المهابة | ٨٩٣ |
| مقتل الرجل بين فكيه، يعني لسانه، والفكان اللحيان | ٨٧٩، ٣٤٣٧ |
| **أمية بن أبي الصلت** | |
| لبيكما، لبيكما ها أنذا لديكما | ٦٢٦ |
| مجّدوا الله وهو للمجد أهل | ٣٤٠٤ |
| **أنس بن مالك** | |
| أبكي لعبدٍ يستحي اللّه منه ولا يستحي من اللّه عزّ وَجَلَّ | ٣٤١١ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى ليمتحن قلب العبد | ١٧٩٥ |
| إنَّ اللّه عزّ وجلَّ يقول: وعِزَّتي وجودي وارتفاعي في علوّ مكاني | ٣٤١١ |
| تبعث الخلائق يوم القيامة، وإن السماء لتطيش بالمطر | ٢٧٥٩ |
| خدمت رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم تسع سنين | ٣٤٩١ |
| السنة للبكر سبع وللثيب ثلاث | ٦١٠ت |
| فقد كذبوا واللّه لقد اجتمع حبُّهما في قلوبنا | ٢٩٢٩ |
| لما حشر اللّهُ الخلائق إلى بابل بعث عليهم ريحاً شرقية | ١٩٥٢ |
| ما أشبه عينيك بعيني رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ٤١٤ |
| يا أبا محمد تدري ما كُنَّا نقول للّرجل إذا أحسن فينا | ٢٥٢٨ |
| يخرج لابن آدم يوم القيامة ثلاثة دواوين | ٥ |
| يؤتى بابن آدم يوم القيامة حتى يوقف بين كفتي الميزان | ١٦٢٥ |
| يومين وليلتين لم تسمع الخلائق بمثلها، يوم تأتيك البشرى من الله تبارك وتعالى | ١٩ |
| **أنو شروان** | |
| ثقة الرجل بجودة عقله وإقراره بوفور عقله دليل على جهله | ١٨٥٨ |
| سُس خيار الناس بالمحبة، وأمزج للعامة الدعابة بالرهبة | ٢٢٠١ |
| ما رأس الأشياء؟ .... صدقت وبحق قلدناك ما قلدناك | ١٨٨٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أهبان بن صيفي** | |
| لا تكفنوني في قميصي فلما مات وغسل | ٢٤٠١ |
| **الأوزاعي** | |
| اللهمَّ إنّي أستغفرك لما تبت إليك منه | ٢٤١٧ |
| رأيتك قصرت في الأكل | ٨٧٦ |
| سفيان الثوري من أئمة المسلمين | ٢٨٧٧ |
| كان علي بن عبد الله بن عباس يصلي كل يوم ألف سجدة | ٥٤٤ |
| كان عندنا صياد يصطاد النينان فكان يخرج يوم الجمعة | ٧٦٢ |
| ما تخاف أن يكون سرفاً؟ | ٨٧٦ |
| ما رأيتُ هناك درجة أرفع من درجة العلماء | ٣٥٧٨ |
| يا أبا إسحاق إلى متى هذا! إخوانك يكفونك | ٩٦ |
| **أوس بن حارثة** | |
| يا بنيّ: إنّي قلتُ أبياتاً فاحفظوهاعنّي | ٣٤٦٨ |
| **أويس القرني** | |
| ليت تلك الشجرة لم تخلق | ٢٩١٠ |
| **إياس بن دغفل** | |
| رأيت الحسن ودع رجلاً وعيناه تهملان وهو يقول | ١٤٣١ |
| **إياس بن معاوية** | |
| أتذكرين ليلة ولدت؟...رُدَّ...رُدَّ | ٦٢١ |
| إذا أكلت فاتكأ على يسارك فإن الكبد يقع | ٥/٢٤٣٥ |
| أشهد أن لا إله إلاّ اللّه | ٦٢٠ |
| أفأعجبكم قولي؟ ...فأنا أحق أن أُعجب بما أقول وبما | ١٨٤٩ |
| أفتسمعون صواباً أو خطأ...فالزيادة من الخير خير | ١٨٤٨ |
| إنّي لا أصلح ... لأنّي عَيِيٌّ وإنّي دميم | ١٨٤٧ |
| جاء دهقان فسأله عن المسكر أحرام أم حلال | ٢٥٣٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| حتّى تتكامل العدّتان: عدّة أهل النّار | ٢٦٢٩ |
| الحقُّ أكبر منه ... فمن ينطق بحجّتي إذا سكتُّ أنا؟ | ٦٢٠ |
| كم لكفّك من أصبع... عجلت بالجواب... هذا جوابي | ١٨٤٧ |
| لم تردّها؟ ...أيُّ رجليك أطول؟ | ٦٢١ |
| لو أخذتُ كَفّاً من تراب فضربتك به أكان يوجعك؟ | ٢٥٣٥ |
| مُثلت الدنيا على طائر، فمصر والبصرة الجناحان | ٣١٨ |
| هو حرام ...حلال... حلال... حلال | ٢٥٣٥ |
| **أيمن بن خريم** | |
| من يؤذن الأمير؟ (خرج يأتي بشر بن مروان فلمّا أتى الباب) | ٣٤٢١ |
| يرى بارزاً للناس بشرٌ كأنّه | ٣٤٢١ |
| **أيوب السختياني** | |
| إنَّ أكثم بن صيفي قال: ما يسرُّني أنّي أنزل دار معجزة | ٥٠٣ |
| إنَّ الشهرةَ فيما مضى كانت في تذييل | ١٩١٩ |
| إن الملائكة لتعجب من خفة ذكر الموت على ألسنة بني آدم | ٣٠٩٦ |
| إنّي لأرحمه، نحن نفارقه ويبقى معه خلقه | ٩١٠ |
| حضرت بعضَ نُسّاك البصرة الوفاةُ وعنده أخ له من العباد | ٩٢٨ |
| سمعت أهل الفضل يقولون: وجدنا أعلمَ النّاس بالقضاء أشدّهم | ٢٨٢٥ |
| قذف المحصنة يحبط عمل سبعين سنة | ٢٦١، ٣٣٧٩ |
| قيل للحمار لِمَ لا تجْتر، قال: أكره مضغ المحال الباطل... | |
| مدّوا الحبل فلا هم جروه ولا نحن | ٢٩٥٠ |
| كان الحسن يبصر من الفتنة إذا أقبلت كما يبصر | ٢٤٠٧ |
| لما مات عبد الرحمن بن أذينة ذكر | ١٨٦٧ |
| ليتق اللهَ رجل وإنْ كان زاهداً فلا يجعل زهده عذاباً | ٣٣٦ |
| ما أحبَّ اللَّهُ عزَّ وجل عبداً إلاّ أحبَّ ألا يشعر به | ٩٥٩ |
| ما بقي على الأرض مثل يحيى بن أبي كثير | ١١٨٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| وجدنا أعلم الناس بالقضاء أشدهم له كراهية | ٢١٨ |
| ينبغي للعالم أن يضع التراب على رأسه تواضعاً لله عزَّوَجَلَّ | ٤٨٨ |
| ينبغي للعالم أن يضع الرّماد على رأسه تواضعاً لله عزَّ وَجَلَّ | ٣٠٣٢ |
| **حرف الباء** | |
| **البراء بن عازب** | |
| صدق أخي ﴿إنّ اللّهَ يأمركم أن تؤدّوا الأمانات إلى أهلها﴾ | ١٧٠١ |
| قِبَلَهُ (تفسير قوله تعالى: ﴿فولوا وجوهكم شطره﴾) | ١٤٦٠ |
| يلقون ملك الموت ليس من مؤمن يقبض روحه | ٣٦٧ |
| **البرائي** | |
| يا أخي إن العبادة لا تكون بالشركة، إنه من لم يأنس بالله لم يأنس بشيء | ١٧٨٢ |
| **بريدة الأسلمي** | |
| اللهم ذهب قرني من هذه الأمّة ألحقني بهم...اللّهمَّ وصاحبي هذا | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| حمزة بن عبد المطلب رحمه الله | ٤٧٥ |
| **بُزُرْجَمِهْر** | |
| آخ ذا العقل والكرم واسترسل إليه وإياك ومفارقته | ١٧٢٤ |
| احذروا صولة اللئيم إذا شبع، وصولة الكريم إذا جاع | ٢٤٥ |
| إذا اشتبه عليك أمران فلم تدر في أيهما الصواب | ١٤٠٦ |
| إذا أقبلت عليك الدنيا فأنفق فإنها لا تفنى وإذا | ١٣٨٣ |
| ارهب تحذر، وأنعم تشكر، ولا تمزح فتحقر | ٩٣٦، ٣٤٨٠ |
| أصيب في خزائنه مخدَّة من أدم، فَفُتِقَتْ، فأُصيب | ٩٣ |
| إياك وفورة الغضب فإنها مصيرتك إلى ذل الاعتذار | ٢١٤٢ |
| أيها الملك إن الدنيا حديث حسن وقبيح فإن استطعت | ٢٥٣٦ |
| ببكور كبكور الغراب، وحرص كحرص الخنزير | ٣١٠ |
| ثلاثة أشياء لا تنال إلا بارتفاع همة وعظيم خطر | ١٥٧٩ |
| ثمر القناعة الراحة، وثمر التواضع المحبة | ٢٤٤١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الفقر في الوطن غربة، والغنى في الغربة وطن | ٦٦٩ |
| كل عزيز دخل تحت القدرة فهو ذليل | ١٣٤٥، ٢١٧٦ |
| من سلم من الذنوب... المجتهد الموفق ... الورع | ٢٦٣٨ |
| نعم، من أحببت له الخير وبذلت له الود | ١١١٤ |
| لا، إن الذي لا عيب فيه لا ينبغي أن يموت أبداً | ٦٦٨ |
| لا ينبغي أن يكون الفاضل من الرجال إلا مع الملوك مكرماً | ١٥٧٩ |
| **بشر بن أبي عاصم الكوفي** | |
| سألتني بالله، فما وجدت في عملي شيئاً أفضل من صلاة الجماعة | ٣٧٠ |
| كان لنا جار من أهل العلم والفقه فمات، فرأيته في النوم، فقلت له: ما صنع اللّه عز وجل بك؟ | ٣٧٠ |
| **بشر بن الحارث (بشر الحافي)** | |
| أئمتنا أربعة: سفيان الثوري، ويوسف بن أسباط | ٢٨٦١ |
| احذر أن تمر في حاجتك، فيأخذك وأنت لا تدري | ٣٥٧٣ |
| أدنى القنوع التمتّع بالعِزّ | ٢٠٢٥ |
| إذا قصّر العبد عن طاعة اللّه عَزّ وجل سلبه | ٨٦ |
| أعيدوا الوضوء فإنّ بعض ما تذكرون شراً من الحدث | ٨٨٦ |
| أكره أن يأتيني أمر اللّه وأنا نائم | ٣٥٧٢ |
| اللهم إن كنت شهرتني في الدنيا | ٤٤٨ت |
| إنما هي في المصحف مرة واحدة، وأنزلت | ١٠٠٤ |
| الحزن ملك لا يسكن إلا قلباً مطهراً | ١٧٧٨ت |
| الحزن هو الملك، والملك لا يحلّ بدارٍ | ١٧٧٨ |
| رأى فضيل بن عياض رجلاً يسأل في الموقف | ١٣١٧ |
| طول بقاء البخيل أثقل شيء على الأبرار | ١٧٣٩ |
| فلمّا نظر إليه قال: هذا رجل محزون قد | ٢٤٢٦ |
| كنت بمكة مع الفضيل بن عياض فجلس معنا إلى نصف الليل | ٧٢٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لقي زاهدٌ زاهداً، فقال له: يا أخي إنّي أحبُّك في اللّه | ٩٦٩ |
| لو أن الروم بأسرهم جاءوا | ١١٢ت |
| لو أن الروم سبت من المسلمين كذا وكذا ألفاً ثُمَّ فداهم رجلٌ كان | |
| في قلبه سوءاً لأصحاب النبي صلى اللّه عليه وسلم | ١١٢ |
| ما ظنُّكم بقومٍ وقفوا بين يدي اللّه عَزَّ وَجَلَّ مقدار خمسين ألف سنة | ٣٥٧٤ |
| مررت برجل من العُبّاد بالبصرة وهو يبكي، فقلت: ما يبكيك؟ | ٣٣٧٦،١٨٢ |
| من ازداد علماً ولم يزدد ورعاً لم يزدد من اللّه إلاّ | ١٢٨٧ |
| من سأل اللّه عَزَّ وجَلَّ الدنيا فإنما يسأله طول | ١٣٩٧ |
| من عصى الله فقد انتقم منه | ٣٥١١ |
| من عمل في المعاصي فقد انتقم اللّه منه | ٧٦٦ |
| نظرت في هذا الأمر فوجدت لجميع النّاس توبة إلاّ من تناول أصحاب | |
| رسول اللّه صلى الله عليه وسلم | ٢٨١٦ |
| النظر إلى وجه الظالم خطيئة، والنظر إلى وجه الأحمق | ٣٧٢ |
| ويحك، كل واجعل أدم خبزك العافية | ٦٤٩ |
| لا أفارقك حتى تمليه عليَّ فإنما هذا دعاء أنطق اللّه به زهيراً | ٢٦٦٣ |
| يا أبا علي ألا تنام | ٧٢٣ |
| يا شيخ حفظت ما لا ينفعك اللّه به | ٢٨٨٦ |
| **بشر بن السّري** | |
| ليس من أعلام المحبّ أن يحبَّ ما يبغضه حبيبه | ٥٦٧ |
| **بشر بن مروان** | |
| يحتجب الحرم. وأجزل صلته وصرفه | ٣٤٢١ |
| **بشر بن منصور** | |
| إنّما أبكي من العطش الأكبر يوم القيامة | ٤١٣ |
| **بشير بن صالح** | |
| سأل يحيى بن أبي كثير عن عطاء مسألة، وعطاء لا يعرفه | ٢٧٤٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **بقية بن الوليد** | |
| دعاني إبراهيم بن أدهم إلى طعامه فأتيت فجلست | ١٩٤٧ |
| كنت مع إبراهيم بن أدهم بصور، فصلى على جنازة | ١٢٤٠ |
| كنّا مع إبراهيم بن أدهم في البحر | ١٤٥ |
| **بكار بن مالك** | |
| الشّيب (تفسير قوله تعالى: ﴿وجاءكم النذير﴾) | ٣٣٥٦, ١٣٦٤ |
| **بكر بن خنيس** | |
| بلغني أنّ إبليس اللعين قال: ثلاثة إذا | ٢٦٧٤ |
| **بكرالسهمي** | |
| أن قوماً كانوا في سفر وكان فيهم رجل | ٢٠٢٣ |
| **بكربن عبد الله المزني** | |
| اجتهدوا في العمل فإن قصرتم | ١١٩٠ |
| إذا انقطع شسع نعل صاحبك فلم تنتظره | ٢٧٠٣ |
| إذا رأيتَ أكبر منك، فقل: سبقني بالإسلام والعمل الصالح | ٢١١٦ |
| البسوا ثياب الملوك، وأميتوا قلوبكم بالخشية | ٣٠٢٩ |
| اللهّم إنّي أسألك من فضلك الواسع رزقاً | ١٦٨٣ |
| إنّ الطير ليلقى الطير بعضها بعضاً ليلة الجمعة | ٢٤٣٢ |
| إنّ المريض يعاد والصحيح يُزَار | ٨٧٢ |
| أين حذيم وهو طبيب كان في الجاهلية | ٦٣٦ |
| جاء رجل فشتم الأحنف بن قيس فسكت عنه فأعاد عليه وألحّ | ٣٣٢٣ |
| ذنبك إلى الحاسد دوام نعم الله عَزَّ وجل عليك | ٦٥٥ |
| رحم الله عبداً عمِل في طاعة الله، فإنْ ابتلى بضعفٍ فكفّ عن محارم الله | ٢٨٢٤ |
| زهدنا الله وإياكم زهد من أمكنه الحرام والذنوب من الخلوات | ٢٠٧٨ |
| زهدك الله زهد من أمكنه الذنوب | ٢٣٧٦ |
| فهذا رَجُلٌ خرج من ذنب لا يعلمُ ماذا عليه فيه فكيفَ بمن يذنب | ٢٨٦٨ |
| فيه يقول الشاعر: وهل لكم فيها فإنّي طبيب | ٦٣٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان رجلٌ من ملوك بني إسرائيل قد أُعطِيَ طول عمر، وكثرة مال وكثرة أولاد | ٢٨٦٨ |
| لمّا أرادوا أن يلقوا إبراهيم عليه السلام في النّار ضجّت عامّة الخليقة إلى ربّها | ٦٣ |
| لو دخلت هذا المسجد وهو منغص بالرِّجال، فقيل لي | ١٠٤٠ |
| ما أخرج من بيتي فيستقبلني أحدٌ إلاّ رأيتُ له الفضل عليَّ | ٢٩٣٩ |
| من سَرّه أن ينظر إلى أورع من أدركنا في زماننا فلينظر إلى ورع محمد ابن سيرين | ١٩٤٢، ٢٨٣١ |
| المستغني بالدنيا عن الدنيا كالمطفىء النار بالتبنِ | ٥٤٨ |
| يا بني لولا أني معهم لرجوت أن يغفر لهم | ٢٦٩٧ |
| **بكر العابد** | |
| كان لسفيان الثوري عباءةٌ يلبسها بالنهار، ويرتدي | ٢٠١٥ |
| **بكر بن ماعز** | |
| أعطي الربيع فرساً ـ أواشترى ـ فرساً بثلاثين ألفاً | ٥٧٥ت |
| **بلال أبي بردة** | |
| ما ينفعك دعائي لك، وعلى بابك مئتين يدعون عليك | ١١١٥ |
| لا يمنعكم سوء ما تعلمون منّا أن تقبلوا منّا أحسن | ١٥٦٣ |
| يا معشر النّاس لا يمنعنكم سوء منّا أن تقبلوا أحسن | ١٦٣٧ |
| **بلال بن سعد** | |
| أخ لك كلما لقيك أخبرك بعيبٍ فيك، خيرٌ من أخ | ١٤٢٨ |
| تنادي النار يوم القيامة: يا نار اشتفي، يا نار | ١٥٤١ |
| قضى سعد بن أبي وقّاص رضي اللّه عنه حاجةً للحرقة بنت النعمان ابن المنذر فكان من دعائها له أن قالت: لا جعل اللّه لك إلى لئيم حاجة | ٤٤٧ |
| كان يصلي الليل أجمع فكان إذا غلبه النوم في الشتاء | ٤٥٠ |
| ماء البركة في الدنيا خير من صديد جهنم | ٤٥٠ |
| يا أهل الخلود، ويا أهل الغنى إنكم لم تخلقوا للغنى | ١٨٤٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **بلال بن المنذر** | |
| كُنّا مع ابن أبي أوفى في جنازة فقالت له امرأة | ١٢٣٩ |
| **بنان الطفيلي** | |
| أشدُّ ما يمرُّ بالضيف إذا كان صاحب | ١٧٤١ |
| ويحك يا وكيع أنت ناقد الحديث وفقيه العراق | (١٥) ملحق |
| **بهز بن حكيم** | |
| صَلى بنا زرارة بن أوفى الغداةَ فقرأ ﴿فإذا نُقِرَ في الناقور﴾ فخرَّ مغشياً عليه | ١٣٦ |
| **بهلول** | |
| يا ابن إدريس أنت تعلم أني آخذ الرغيف وما أشبهه فكيف الدرهمين | ٩٨٢ |
| يا من لا تختزل الحوائج دونه اقض له حوائج الدنيا والآخرة | ٩٨٢ |
| **حرف التاء** | |
| **تميم الدّاري (تميم بن أوس بن حارثة الداري)** | |
| اشترى حُلّةً بألف فكان يقوم فيها بالليلِ | ٧٦١، ٣٣٨٢ |
| **تميم بن سلمة** | |
| أنّ عمر بن الخطاب خرج إلى الشام فلقيه | ٢٦٥٥ |
| **تياذوق** | |
| احفظ عني خلالاً: لا تشربن دواء من غير وجع، ولا تأكلن على شبع | ١٩٨٥ |
| إن اللحم على اللحم يقتل السباع في البرية فكيف | ٣١٢٩ |
| **حرف الثاء** | |
| **ثابت البناني** | |
| إن أبا بكر الصدّيق رضي اللّه عنه كان كثيراً ما يتمثل بهذا البيت | ١٣٧٢ |
| إن تميم الداري اشترى حلة بألف درهم | ٧٦١ت |
| بينما أنا واقف بجبل عرفات في ناحيةٍ في الناس إذ أقبل شابان | ١٢٣٧ |
| جاء رجل من آل حاطب إلى علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه فقال: | |
| يا أمير المؤمنين إني آتي المدينة غداً | ٢٤٢ |
| دعني فإنّي في وردي | ٢٥٥٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال عيسى ابن مريم عليه السلام: طوبى لمن علّمه اللّه كتابه ثم لم | ١١٩٦ |
| قيل لعيسى صلى اللّه عليه وسلم: لو اتّخَذْتَ حماراً تركبه | ٢٠٧٦ |
| كنت أطوف بالبيت ليلاً، فإذا أنا بجارية وهي تقول: اللهمّ اعصمني | ٨٥٤ |
| ممّن سمعتِ هذا؟ | ٨٥٤ |
| هل لك من زوج؟... فأنا ثابت | ٨٥٤ |
| واللّه لحمل الكارات أهون من العبادة ولا يُسَمَّى الرجل عابداً | ٥٧٩ |
| **ثابت بن جابان العجلي** | |
| إن الضحاك بن مزاحم ولد وهو ابن ستة عشر شهراً | ٥/٣٣٥٢ |
| **ثوبان الرّاهب** | |
| لأنّه أشبهُ شيءٍ بلباس أهل المصائب | ٧٣٣ |
| يرحمك اللّه وأيُّ مصيبةٍ أعظم من مصائب الذنوب | ٧٣٣ |
| **ثابت بن معبد** | |
| ثلاثة أعين لا تمسها النار | ٢٥٩ |
| **حرف الجيم** | |
| **جابر بن عبداللّه** | |
| لقي ذو القرنين ملكاً من الملائكة | ١٣٤٠ت |
| لما أرادوا حفر العين... قال سفيان: تُسمَّى عينَ أبي الزناد | ١٢٥٦ |
| يدعو اللّهُ تبارك وتعالى المؤمنَ يوم القيامة حتّى يوقفه بين يديه | ١٢٦ |
| يوشك أن لا يُجْبى من الشام دينار ولا قفيز | ٢٢٦٣ |
| **الجاحظ** | |
| سمك البحر كله ليس له لسان ولا دِماغ | ١٣٥١ت |
| **جارية بن مر** | |
| أين تريدون... أي جيراني؟ ... أما إذ جعلتموه جاراً فواللّه لا تصلون إليه أبداً | ٢٢٣٣ |
| **جبريل عليه السلام** | |
| إن بيني وبين العرش سبعين حجاباً لو دنوت منها لاحترقت | ٦٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **جُبَيْر بن مطعم** | |
| انشقَّ القمرُ على عهد رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ٢٦٢٠ |
| **جرير بن جرير** | |
| يا أمير المؤمنين إنّ اللّه قد أعدّ لك منّي قلباً معقوداً | ٢٩٦٤ |
| **جرير الشاعر** | |
| شيبتني هذه الجنائز ... هم نبذوني | ٦٩٦ |
| ودِّع أميمة حان منك رحيل | ٦٩٦ |
| **جرير بن عبد اللّه البجلي** | |
| أأذكر الضُّرَ والبلوى التي تركت | ٣٣١٨ |
| إنَّ أبا بكر الصديق رضي اللّه عنه لما مات حمل على السرير | ١٤٨ |
| لقد ظَلَّلنا عليك وما نعرفك | ٨٤٧ |
| ما حجبني النبي صلى الله عليه وسلم ولا رآني إلاّ ابتسم | ٨٢، ٣١٦٨ |
| المال ودائع اللّه في الدنيا وأنتم ونحن وكلاؤهما | ١٩٧٥ |
| نزلت الصَّفاح في يوم صائف شديد الحرِّ، فإذا رجل نائم | ٨٤٧ |
| وكيف يا سلمان وفيها الثِّمار؟ | ٨٤٧ |
| **جعفر بن أبي عثمان الطيالسي** | |
| قال بعض الحكماء: عاب رجل رجلاً عند بعض أهل العلم، فقال له: | |
| قد استدللت على كثرة عيوبك | ٦٦٤ |
| كنا عند يحيى بن معين فجاء رجل مستعجل فقال له: | ٥١٠ |
| **جعفر بن أبي المغيرة** | |
| كان حطيط صواماً قواماً يختم بكل يوم وليلة ختمة | ٣١٢٣ |
| **جعفر بن سليمان** | |
| قال تياذوق طبيب الحجّاج للحجّاج: إنّ اللحم على اللحم يقتل السباع في البرية | ٣١٢٩ |
| قيل لمحمد بن واسع: لِمَ لا تجلسُ مُتَّكِئاً، قال: تلك | ١١٧٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كانت امرأةٌ من العابدات بالبصرة تصاب بالمصيبة العظيمة فلا تجزع | ٦٩٥ |
| كنت إذا أحسست من قلبي قسوة أتيت محمد بن واسع فنظرت إليه نظرة | ١٧٨ |
| **جعفر بن عون** | |
| اذْهبوا عنّي فإني ربَّما أريدُ أن أشتريَ لحماً بنصف درهم، فإذا تبعتموني | ٢٨٢٦ |
| لِمَ تتبعوني، أليس قد جلست معكم من غدوةٍ إلى الساعة أحدِّثكم | ٢٨٢٦ |
| **جعفر بن محمد المستملي** | |
| إذا جاءَك ما تحبُّ فأكثر من الحمد للّه، وإذا جاءَك ما تكره | ١٧٩٧ |
| أرجى آية في كتاب اللّه عَزَّ وجل: ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ | ٣٠١٠م، ٣٤٣٣ |
| إنّ الحاجةَ لتعرض للرّجل قبلي فأبادِر إلى قضائها | ٦٩٩ |
| إنّ القلبَ لا يزال مائلاً حتّى يسكنَ، ولن يسكنَ | ٢٩٤٣ |
| إنّ من اليقين أن لا ترضى النّاسَ فيما يسخط اللّه | ٢٩٣٥ |
| حسن الجوار عمارة الديار وصدقة السرِّ مثراة للمال | ١٠٩٠ |
| صلة الرحم تهون على المرء الحساب يوم القيامة | ٢٠١٠ |
| قرأ على قبر: ما حال من سكن الثرى ما حاله | ٩١٤ |
| قُرِىء على قبر:حملوه على الرقاب ابتداراً | ٩١٦ |
| قُرىء على قبر: يا باكي الميّت على قبره | ٩١٥ |
| ما توسَّل إليّ أحدٌ بوسيلة هي أقربُ يداً إليَّ من يدٍ سلفت | ٦٨٣ |
| مرَّ رجل بجارين له ومعه ريبة، فقال أحدهما لصاحبه: فهمت ما معه | ٢١٧٣ |
| وجدت على بعض ألواح المقابر: وما عاشق الدنيا بناجٍ من الرَّدى | ٣٠٦٣ |
| **جعفر بن محمد الصائغ** | |
| أرانا عفّان، وأدخل أصابع كفِّه مبسوطة في فيه (تفسير قوله تعالى: ﴿فردّوا أيديهم في أفواههم﴾) | ٣٠٢٦ |
| **جعفر بن يحيى (البرمكي)** | |
| قد أغناك اللّهُ بالعذرِ منّا عن الاعتذار، وأغنانا بالمودّة لك | ١٠٩٧، ٣٢٢٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **جعفر** | |
| سألت بعض الرهبان: أيُّما أقتلُ للمحبين... كيف ذلك | ٣٢١٤ |
| **جلهمة بن عُرْفطة** | |
| إنّي لبالقاع من نمرة إذ أقبلت عير من أعلى نجد فلمّا حاذت الكعبة | ٢٥٣٤ |
| **جهضم بن الضحاك** | |
| رأيتُ رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم... صفه لي | ٢٦٢١ |
| **جوبير** | |
| أن الضحاك ولد لسنتين وشعبة ولد لسنتين | ١٤٣٦/م |
| **حرف الحاء** | |
| **حاتم الأصم** | |
| على التوكل على اللّه عزَّ وجَلَّ.. بنيت أمري على أربع خِصال على أنّ رزقي | ١٦١٧، ٦/٣٠٣٨ |
| من أعلام المعرفة الإقبال على اللّه، والانقطاع إلى اللّه، والافتخار باللّه | ٣١١٦ |
| **حاتم بن يحيى** | |
| قال بعض الشعراء: لأصبرنّ على يسري ومعسري يوماً | ٣٠٦٩ |
| **الحارث بن أبي أسامة** | |
| سئل يزيد بن هارون وأنا أسمع فقيل له: من الأبدال؟ قال: أهل العلم | ٣٠٢ |
| **الحارث بن كعب** | |
| أترى هذا الموقع فإني لقيت فتىً | ٥٣٢ |
| **الحارث بن كَلَدة** | |
| الذي قتل البَريَّة وأهلك السباع في البريّة | ٣١٢٩ت |
| إنّي أكره منها خصالاً، تبلى الثياب | ١٩٨٣ |
| **الحارث المحاسبي** | |
| إن للّه تبارك وتعالى عباداً هم خاصته من بين عباده وصفوته | ١٠٥٦ |
| **حارثة بن بدر الغداني** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أصلح اللّهُ الأميرَ ركبتُ فرساً أشقر فحملني حتىّ | ١٦٤٢ |
| **حبيب بن حجر** | |
| كان يقال: ما أحسَن الإيمان يزينه العلم وأحسن العلم | ٧٩٨، |
| يزينه العمل | ٣٣٢٢ |
| **حبيب بن شوذب** | |
| مَرَّ عيسى صلى اللّه عليه وسلم بقوم يبكون على | ٢٤٩٨ |
| يا أيها السائل عن هاشم | ٣٠٧٩ |
| **حبيب الفارسي** | |
| سفري بعيد بلا زاد وينزل بي في حفرة من الأرض | ١٨٨ |
| **حبيب بن الهيثم العايشي** | |
| رأيت البارحة فيما يرى النائم كأن قائلاً | ٢٢٨٠ |
| **حبيب بن وائل** | |
| رأيت ببلاد الهند شجراً لها ورد أحمر فيه | ٢٠٨١ |
| **حبيب أبو محمد** | |
| أحزني شيئان...وَقْتَ أوضعُ في لحدي فينصرف الناس عني | ٣٥ |
| أريد أنْ أسافر سفراً ما سافرته قط، أريد أن أسلك | ١٥٩٤ |
| **حُبَيْش بن زهير** | |
| عليك بالأناة فإنّ بها تنال الفرصة | ٢٧١٣ |
| **الحجاج بن عبد الأعلى** | |
| ما وصف لي رجل بفضل فلقيته إلا وكان دون ما وصف | ٢١٥٠ |
| **حجاج الأسود** | |
| من يدلني على رجل بكاء في الليل بسام بالنهار | ٧٨٥ |
| **الحجاج بن القرية** | |
| كظم ما يغيظك، واحتمال ما ينوبك (الصبر) | ١٧٠٩ |
| **الحجاج بن يوسف الثقفي** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أتضحك وقد هلك المحمّدان | ٣٠٨٨ |
| أتى الحجاج برجل من الخوارج وهو في خضراء واسط | ٢٠٤٥ |
| أخبرني عن أمهات الأولاد؟... فأخبرني عن العاقل والجاهل؟ ...فمن | |
| أكرم الناس؟ | ٢٠٧٠ |
| اختر أي: قتلة | ١٢١٥ |
| اخرجوا إلى السوق فاضربوا عنقه (حطيط) | ٣١٢٣ |
| اخطب لي على عبد الملك بن الحجاج أمة جميلة من بعيد | ١٩٦٦ |
| أرى في هذا شيئاً؟! | ٢٣٨٦ |
| أرجف الناس بموت الحجاج فخطب فقال: | ٢٤٣١ |
| اعفني يا أمير المؤمنين ... أنا لجوج حقود حسود | ٦٥٦ |
| اغسل يدك وتغدى معي | ١٣٥ |
| أما قولك ما رأيت الناس هابوا أميراً هيبتهم لك، فإني والله ما أعلم على وجه الأرض رجلاً | ٢٧٣٠ |
| إن امرىء ذهبت ساعة من عمره لغير ما خلق له لحري أن يطول عليها حسرة | ١٨٤٠ |
| إنّ طائفة من أهل العراق وأهل الشقاق والنفاق | ٢٤٣١ |
| انظر من يتغدى معي؟ | ١٣٥ |
| حج الحجاج فنزل بعض المياه بين مكة والمدينة | ١٣٥ |
| كتب الحجاج إلى المهلب يستعجله في الأزارقة | ٥٩٤، ٢٣٤٣ |
| أي إخوتي تعني؟ | ٢٠٤٥ |
| أيّ عشيرتك أفضل؟ .. فأيهم أسود .. فأيُّهم أدهر | ١٨٧٠ |
| أيّها الناس، الصبرعلى محارم الله أيسر ... لقد اجترأت علي | ٢٦٣٢ |
| سموك غضباناً وسنك ضاحك لقد غلطوا إذ لم يسموك ضاحكاً | ٢٠٧٠ |
| صف لي شيئاً أعمل عليه فإنّي أظنُّ أنّي أفارقك | ١٩٨٥ |
| خطب الحجاج يوماً ثم انشد قول سويد بن أبي كاهل | ٢٢٠٩ |
| قد جئتني وأنا أريد أن أضرب عنقك فما من أحدٍ أحبَّ إليَّ منك | ٤٣٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قد وجهت إليك بفرس أسيل الخد حسن القد | ٢١٠٢ت |
| قل للرجل: إنّها وافقت قدراً وقد قضيناها ونحن كارهون | ٣٢٧٤ |
| قل له: إنّها قد وافقت قدراً وقد قضيناها | ١٥٥٤ |
| قيل لأعرابي ـ وأراد الحجاج قتله ـ : اشهد على نفسك بالجنون. قال | ١٥٦٦ |
| كتب إلى المهلّب يستعجله في الأزارقة | ٥٩٤، ٢٣٤٦ |
| كيف رأيت ما صنعتُ بعدوّ اللّه؟ | ٣٣١٦ |
| ما أخرجك هذه الساعة وقد قلت لا أجد فيها أحداً إلا فعلت به وفعلت | ١٩٩٩ |
| ما اسمك؟ متى نزلت على هذه البلدة؟ ... إني مستعملك؟ ...على السلسلة؟ | ٢٧٣٠ |
| ما أسمنك؟ | ٢٣٤٧/م |
| ما تقول فيَّ؟ ... فما قولك في أمير المؤمنين؟ .. خذوه فَقَطِّعوا عليه العذاب | ٣١٢٣ |
| ما هذا؟ ... قولوا لهم: اخسؤوا فيها ولا تكلّمون | ١٩٨٤ |
| مات الحجاج، ومات الحجاج، فمه | ٢٤٣١ |
| المرء وزر عمله، امرؤٌ حاسب نفسه، امرؤٌ فكّر فيما | ٩٧٣ |
| لا أزال أحسنُ صلاتي ما حصبني سعيد | ٢٥٤٢ |
| لما مات الحجاج قال الحسن البصري: اللهم أمته. فأمت عنا سنته | ٢٠٦٢ |
| يا أمير المؤمنين، قد بعث إليك بفرس يسبق الطرف | ٢١٠٢ |
| يا حسن لا تملّ النّاس | ٣٠٣٩ |
| يزعم أهل العراق أنّي بقية ثمود ونِعْمَ واللّه | ٢٣٠٦ |
| **حذيفة بن قتادة المرعشي** | |
| أمّا بعد فإنّي أوصيك بتقوى الله والعمل بما علّمك | ١٣٨٧ |
| أمّا ما ذكرت من أن يكون العبد عارفاً باللّه عارِفاً بنفسه | ١٤٥٦ |
| بلغني أنّك بعت دينك بفلسين ...بلغني أنّك وقفت على رَجُل يبيع لبناً | ٢٠٢٤ |
| كتب إبراهيم بن أدهم رحمه اللّه إلى عبد العزيز بن رواد أما بعد: يا أخي | ٢٧٤٩ |
| ما جال في نفسي شيء منذ أربعينَ سنة إلاّ تركتُه | ٢٢٠ |
| مررت على راهبٍ في جبل أسود فناديته: يا راهب، فأشرف عليَّ | ٢٠١٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| من كنوز الجنّة كتمان الصدقة والمصيبة والمرض | ٢٨٤٧ |
| من نال الرّضا عن اللّه سقطت عنه الهموم | ٢٥٥٥ |
| هو ذا أجمع الخير كُلّه في كلمتين الخُبز من حِلّه | ١٧٤٨ |
| **حذيفة بن اليمان** | |
| أول الفتن قتل عثمان بن عفّان رحمة اللّه عليه وآخر الفتن خروج الدجّال | ٢٨٦ |
| أيسرك أن تغلب شر الناس | ١٣٦٨ |
| خياركم الذين يأخذون من دنياهم لآخرتهم ومن آخرتهم لدنياهم | ٧٥٢ |
| لو كنتُ منافقاً لم تخشَ | ٢٣٥٦ |
| هل تدرون لِمَ حلقتُ رأسي لأنّي أؤدّي الخراج | ٢٣٢٢ |
| لا تصبحون في أمر إلاّ أتاكم بعده أشدّ منه | ٢٩٦١ |
| **حرب بن قطّان** | |
| يقال: إنّ الرجل ليستفرغ ولد امرأتين يولد له | ١١٣٤ |
| **حرقة بنت النعمان** | |
| كنا ملوك هذا المصر قبلك يجبى إلينا خراجه | ٢٢٢٥ |
| يا سعد لا جعل اللّه لك إلى لئيم حاجة | ٤٤٧، ٢٢٢٥ |
| **حسان بن عطية** | |
| كان يستحبُّ أن يؤمّن على دعاء الرّاهب فإنّهم يستجاب لهم فيكم | ١٠٠٦ |
| **حسان الرّاهب** | |
| أنت يا سفيان طويل الأمل، قد أوهمت نفسك أنّك تعيش إلى الشتاء | ٢٧٩٩ |
| انظر لا تطفىء المصباح في بيتك فيدخل اللصوصُ بيتَك | ٨٥٦ |
| يا سفيان ما تصنع بهذا الخف؟ | ٢٧٩٩ |
| **حسان مولى بني مالك** | |
| رأيت مالك بن عبيد الله الخثعمي يتوضأ، وكان في ساقه مكتوب: لله | ٢٢٩٧ |
| **الحسن بن أبي جعفر** | |
| دخل مالك بن هنادٍ على بلال بن أبي بردة، فقال له:يا أبا يحيى ادع اللّه | ١١١٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| سمع مطرف رجلاً يقول: استغفر الله وأتوب إليه. فأخذ بذراعه فقال: | ١٩٣٤ |
| نَظَرَ الجاثليق إلى الحسن البصري فسجد له، فقالت له النصارى | ٢٧١٦ |
| **الحسن البصري** | |
| أبن آدم أسير الجوع صريع الشبع | ٦٤٥ |
| ابن آدم، إنما أنت عدد أيام إنْ مضى منك | ٥٨٢ |
| اتقوا الله، فإن عند الله حجاجين كثيرة | ٢٤٣٣ |
| أحسن العلماء علماً من أحسن تقدير معاشه | ١٦٧٢ |
| ادعُ الله في الرخاء يستجيب لك في البلاء | ١٧٨٥ |
| إذا تبينت لقيته أبيض بضّاً حديد النّظر ميّت القلب | ٩٥٥ |
| إذا أراد اللّه عزّ وجَلّ بعبدٍ خيراً أعطاه | ١٣٩٦ |
| أرى أعيناً ولا أرى أنيساً | ٩٥٥ت |
| أرى رجالاً ولا أرى عقولاً | ٩٥٥ت |
| أربعٌ من كُنّ فيه عصمه اللّهُ من الشيطان وحَرَّمه | ٣٠٩٤ |
| أزفت واللّهِ عقولهم، وطارت قلوبهم فشردت في أجوافهم | ١٥١٤ |
| أسلم أهل بدر من خشية اللّه وأسلم | ٢٦٩٣ |
| أشد النّاس صُراخاً يوم القيامة رَجُلٌ سَنَّ ضلالاً | ٣٣١٥ |
| أشدّ الناس عليك فقد أخيك الذي إنْ شاورته | ١٠٣٩ |
| أشهد على خمسة من أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم منهم: معقل | ١٥١١، ١٥٨٨ |
| أصلحَ الله الأمير، إنّه لم يبق إلاّ من لا حاجة له | ٣٠٣٩ |
| أعِزَّ أمرَ اللّه أين ما كنت يعزُّك اللّه | ٢٥٨٩ |
| أكلوا صفوها وتركوا كدرها يعني أصحاب محمد صلى اللّه عليه وسلم | ٣٥١ |
| أكون في زمانٍ فأبكي منه فيأتي عَلَيَّ زمان فأبكي عليه | ٥٠٠ |
| أُلْقِي يوسف صلى اللّه عليه وسلم في الجُبِّ وهو ابن سبعة عشر سنة | ٢٨٠٢ |
| اللهمّ إنّ فرقداً يسألك البلاء ونحن نسألك | ٦٤٢ |
| اللهمّ قد أمتّه، فأمت عنّا سنته... إنّ اللّه تبارك وتعالى قال لموسى | ٢٠٦٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أمّا أنت فقد أبقيت شيئاً وما يعلم اللّه أكثر | ٣٣٣٤ |
| إنّ أقواماً جعلوا خشوعهم في لباسهم وكبرهم في صدورهم | ٣٠٣٠ |
| إنّ أقواماً لبسوا هذه المطارف: الخزّ والعمائم والرِّقاق | ٦٤٥ |
| إنّ الحكماء ضربوا التذكر بالتفكر، والتفكر | ٢٦٧٢ |
| أن رجلاً كان فيمن خلا من الزمان، وكان عاقلاً لبيباً | ٤٨٠ |
| إنّ الرجل ليذنب الذنب فيحرم به قيام الليل | ٤٠٠، ٣٣٨١ |
| إنّ فيما قصَّ اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ عليك من نبأ داود وسليمان | ١٥٩٧ |
| إن المؤمن من يلقاه الزمان بعد الزمان | ١٩٣٦ |
| إنّما قَلَّ لأنّه كان لغير اللّه عز وجل | ١١٠٥ |
| أنه كان لا يرى بأساً أن يخرج الرجل زكاته قبل حلها | ٩٤٥ |
| إنّهم خَلَوا بالرَّحمن تبارك وتعالى فألبسهم اللّه عَزَّ وَجَلَّ نوراً من نوره | ١٣٣ |
| يا أيُّها العالم صُم قبل أن لا تقدر على صوم يوم تصومه | ٢١٠٠ |
| الأسواق موائد اللّه في الأرض فمن أتاها أصاب منها | ٢٥٢٩، ٣٠٣٥ |
| الأمر أسرع من ذلك | ٤٧٣ |
| بلغنا إنّ موضعَ هذا الحرف موضع ألف آية ﴿وإنْ من شيء إلاّ يسبح بحمده﴾. | ١٠٣ |
| الحسد أول ذنب كان في السماء | ٦٥٩ت |
| حيل بينهم وبين الإيمان | ٤٤ت |
| الحمد للّه الذي لم يجعل بكاء يعقوب صلى اللّه عليه وسلم على ابنه عاراً حتّى ابيضت عيناه | ٦٩١ |
| الحمد للّه بالإسلام، والحمد للّه بالقرآن، والحمد للّه بمحمد صلى اللّه عليه وسلم | ٣١٤٠ |
| خرج عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه في يوم حار واضعاً رداءه على رأسه | ١٤٠١ |
| ذهب الناس فلا صوت ولا عين | ٤٧٢، ٢٣٧٠ |
| رحم اللّه الحريص الجاهد والقانع الزاهد | ١٧٤٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| رحم اللّه علياً، إن علياً كان سهماً للّه في أعدائه | ١٢٦٧، ٢٩١٢ |
| ستعلم يا مسكين، تنفق دينك في شهوتك | ١١٩١ |
| السماء والأرض والجبال والأسحار (تفسير قوله تعالى: ﴿وإنْ من شيء إلا يسبح بحمده﴾) | ١٠٣ |
| الصبر عن محارم اللّه عَزَّ وَجَلَّ والسماحة فقيل له: وما | ١١٥٥، ١/٣٤٢٤ |
| الظالم أعذرُ من الشحيح، الظالم يغفر له ظلمُه، والشحيح يدخله اللّه بِشُحِّه النّار | ٣٢٠ |
| عجباً لقومٍ أوذنوا بالرَّحيل وترحلُ أوائلهم وهم يلعبون | ٨٤٣ |
| عمله (تفسير قوله تعالى: ﴿وكلَّ إنسان ألزمناه طائره في عنقه﴾) | ١٣٢٩ |
| عَيَّرت اليهود عيسى ابن مريم عليه السلام بالفقر | ١٥٨٠ |
| قالت اليهود خلق اللّه تبارك وتعالى الأرض في ستة أيام واستراح في | ٢٥٨١ |
| قد كان الرجل يدع المال إلى جنبه ولو شاء أتاه | ٢٨٦٠ |
| قد مات الأمم وأنتم آخرها فماذا تنتظرون فقد أسرع بخياركم | ٦١٦ |
| قرأت في بعض الكتب: يا ابن آدم تأكل رزقي وتعبد غيري | ٢٢٤١ |
| كان إذا عاد مريضاً لم ينتفع به أهله يوماً وليلة، وإذا شيّع جنازة | ٩٦٧ |
| كان عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه يمر بالآية من ورده بالليل فيسقط | ٥٤٤ |
| كان لا يرى بأساً أن يُعجِّل الرجل في زكاة ماله إذا رأى لها موضعاً | ٩٤٥ |
| كان يقال لأجر حاكم عدلَ يوماً أفضل من رجلٍ يُصَلِّي | ١٥٩٨ |
| كانوا يعدُّون النعيم أن يتغدّى الرجل ثم يتعشى | ٢٩٦٨ |
| كتب إلى عمر بن عبد العزيز: فيما أمر اللّه به لشغلاً عمّا نهى عنه | ٢٧٩٥ |
| كفاك من الغفل ما أوضح عَيَّكَ مِنْ رشدك | ١٦٧١ |
| كُلُّ نعيمٍ زائل إلاّ نعيم أهل الجنّة وكُلّ غم | ١٥٤٤ |
| كلاّ واللّه لو كان ذلك القليل للّه (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا يذكرون اللّه إلاّ قليلاً﴾) | ٢٦٩٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لأن أقضي حاجة لأخ أحبُّ إليّ من أن أعتكف سنة | ٧١٤ |
| لأنك أخّرت مالك ولو قدّمته لسرّك أن | ١٥٢٢، ٢٤٠٢ |
| لباب البرِّ بلعاب النحل بخالص السمن | ١٧٣٧ |
| لسان الطفل من وراء قلبه فإذا أراد الكلام تفكّر | ١٥٠٢ |
| لسان العاقل من وراء قلبه فإذا أراد الكلام تذكّر | ٣٠٤٩، ٣١١٤ |
| لستُ بخير الناس ولا أنتَ بشرّ الناس...يا أبا فراس ما أعددت لهذا المضجع | ١٦٨٩ |
| لستُ بخيرهم ولستَ بشرّهم ولكن | ١٨٧٤ |
| لقد أطفأ من نور اللّه شيئاً ما أصبح على وجه الأرض مثله | ٢٣٢٠ |
| لقد عدل عليك من جعلك حسيب نفسك | ١٣٢٩ت |
| لقد وقذتني كلمة سمعتها من الحجاج بن يوسف ... نعم سمعته | ١٨٤٠ |
| للشهيد عند الله تبارك وتعالى ست خصال، أول قطرة | ٧٨٠ |
| لمّا بعث اللّه عَزَّ وَجَلَّ نبيّه محمد صلى اللّه عليه وسلم، قال: هذا نبّي | ٢٦٣١ |
| لو جاءت كل أمة بخبيثها وفاسقها | ١٨١٧ت |
| لما حضرت سلمان الفارسي رحمه اللّه الوفاة بكى فقيل له: ما يبكيك؟ | ١١٢٤ |
| لما خلق اللّه الجنّة قالت: رَبِّ لمن خلقتني؟ قال: لمن مات وهو يخافني | ٣٤٠٧ |
| لولا ثلاث ما استطيع ابن آدم. إنّك لتجدهن | ٢١٥٢ |
| لو علم المحبّون في الدنيا أنهم لا يرون ربَّهم في الآخرة | ٢٩٧٤ |
| لو كان قتل عثمان هدىً لاحتلبت به الأمّة لبناً ولكن كان ضلالاً | ٢٤٣ |
| لو كان للناس جميعاً عقول خربت الدنيا | ١٣١٢ |
| ليس بين العبد وبين أن يكون فيه خيراً إلا أن | ٢١٦٤ |
| ليس من طعام الأحرار | ٢٤٨٣، ٢٩٤٩ |
| ما أجلسكم ها هنا تريدون الدخول على هؤلاء | ٤٦١ |
| ما أحسن الرجل ناطقاً عالماً ومستمعاً واعياً | ١٨٣٢ |
| ما أطال عبد الأملَ إلاّ أساء العمل | ٢٥٤١ |
| ما أنكرتم من زمانكم فبسوء عملكم | ٣٥١٠ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| مات أخ لنا فلمّا وُضِعَ في قبره ومُدّ عليه الثوب | ١٢٢٩ |
| ما الدنيا كلها من أوّلها إلى آخرها إلاّ كرجل نام نومة | ٢٠٥٦ |
| ما شيء أشدّ تَوَلِّياً من قارىء إذا تولّى | ٢٩٠٥ |
| ماظنك بأقوام قاموا على أقدامهم مقدارخمسين ألف سنة | ١٦١٣ |
| ما لي أراكم أخصب شيءٍ ألسنةً وأجدب قلوباً | ٩٥٥ت |
| ما من صاحب كبيرة لا يكون وجلَ القلب إلاّ كان ميّت القلب | ٢٤٧٤، ٣٠٠٢ |
| من أحسن عبادة اللّه في شبيبته لقّاه اللّه تبارك وتعالى الحكمة عند كبر سنّه وذلك قوله عَزّ وجلّ: ﴿فلمّا بلغ أشده و استوى آتيناه حكماً وعلماً﴾ | ٣١٥، ٢٥٩٧ |
| من استتر عن طلب العلم بالحياء لبس الجهل سربالاً | ١٦٣٦، ٢/٣٢٢٤ |
| ماأُعطي رجل شيئاً من الدنيا إلا قيل له خذه ومثله من الحرص | ٣٣١٣ |
| من اغتاب خرق ومن استغفر | ٣٣٥٢ |
| من كان الليل والنهار مطيته فإنه يسارُ به | ١٠٢٩ |
| من تُعَزَّرُ بالمعصية أورثه اللّه عَزّ وجل | ٢٦٩٢ |
| المزاح يذهب المروءة | ٤٩٦، ٣٤٦٦ |
| المؤمن لم يأخذ دينه عن رأيه ولكن أخذه من قبل ربه | ١٨٣٩ |
| المؤمن وقّاف على نفسه يحاسب نفسه للّه | ١٥٥٦ |
| نضرة في وجوههم وسروراً في قلوبهم | ٥٦٠ |
| نعم .. لا دون أن يقفه عليه ثم يسأل عنه | ٢٦١٢ |
| الناس ما داموا في عافية مسرورين، فإذا نزل البلاء صاروا إلى حقائقهم | ١٩١٧ |
| هذا الدعاء هو دعاء الفرج ودعاء الكرب: يا حابسَ يدِ إبراهيم عن ذبح ابنه | ١٢٣ |
| هم الذين لا يؤذون الذر | ٤٥ |
| هي التوبة (تفسير قوله تعالى: ﴿وحيل بينهم وبين ما يشتهون﴾) | ٤٤ |
| هي الدنيا تعذّب من هواها | ٣٩٣ |
| والذي نفس الحسن بيده ما أصبح في هذه مؤمن إلا وقد أصبح مهموماً حزيناً | ١٩١٧ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| واللّه لو وُلّيتُ من أمر المسلمين شيئاً ما كان فيكم أحد | ٢٠٩٦ |
| وتدريان ما التَّواضع؟ ...تخرج من بابك فلا تلقى مسلماً إلا | ١٦٨٠ |
| وقفت على بزاز بمكّة أشتري منه ثوباً فجعل يمدح وحلف | ٢٠٩١ |
| ويحك دعنا نتعاشر بسترِ اللّهِ عزَّ وجل إنّي أخاف أن نصطحب | ١١٥٦ |
| ويح كلمة رحمة | ١٤٣٤ |
| ويلك أتملك نشر الماء | ٩١٢ |
| الوضوء قبل الطعام ينفي الفقر، وبعده ينفي اللَّمم | ٦٤٠، ٢٠٤٠ |
| لا بُدَّ للناس من متنفّسات | ١٩٥٠ |
| لا بأس أن يعجل الرجل زكاته ثلاثة أعوام | ٩٤٥ت |
| لا تدنقوا فيدنق عليكم | ٢٧٥٦ |
| لا تلقى المؤمن أبداً إلا شاحباً ولا تلقى المنافق إلاّ وابصاً | ٩١٣ |
| لا غيبة لثلاث: فاسق مجاهر بفسقه، وذي بدعة، وإمام جائر | ١٣٤٧، ٣٣٥٢ |
| لا يستحق أحد حقيقة الإيمان حتّى لا يعيب | ١٩١٦ |
| يا أبا يعقوب بلغني أنك لا تأكل الفالوذج | ٦٤١ |
| يا ابن أدم أكلت الطيّب ولبستَ اللّين وركبت الذّلول | ١٥٩٢ |
| يا ابن آدم لا غنى بك عن نصيبك من الدنيا | ١٩١٧ |
| يا ابن آدم ليس يوم القيامة قصاص | ٢٤٤٨ |
| يا ابن آدم نهارك ضيفك، فلا يدخلنّ عليك | ١٢٨٦ |
| يالكع وهل تؤدي شكر الماء البارد | ٦٤١ |
| يا ليتني أنا ذلك الرجل | ٣٥٧٥ |
| يا مسكين تنفق دينك في شهوتك سرفاً | ٣٤٠٥ |
| يا معشر الشباب كم من زرع لم يبلغ | ١٢٨٥ |
| يحشر الناس كلُّهم عراة ما خلا أهل الزهد | ٢١٣٢ |
| يعتذر اللّه تبارك وتعالى إلى آدم يوم القيامة، يا آدم أنت اليوم عدل | ٢٧٩٠ |
| يقول اللّه عزّ وجل لآدم يوم القيامة: أنت عدل بيني | ١٠٧٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يكون الرجل عالماً ولا يكون عابداً، ويكون عابداً | ٢٥٣٠ |
| **الحسن بن جهور** | |
| أُخْرِج إلى بعضِ ولدِ سليمان بن عبد الله بن العبّاس بن عبد المطلب كتاباً لعبد المطلب بن هاشم | ٦٦٦ |
| **الحسن بن سهل** | |
| على رسلك أيُّها الرجل تَقدَّمتْ منك طاعة وتأخّرت لك | ٢٢٠٥ |
| صبروا عن الدنيا في قوله تعالى: ﴿وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا﴾ | ١٢١٦ |
| **الحسن بن صالح بن حي** | |
| أدركت جارة لناجدة إحدى وعشرين سنة | ١١٣٣ت |
| رأيت جَدَّةً بنت إحدى وعشرين سنة، قال: وأقلّ أوقات الحمل تسعة | ١١٣٣ |
| قام ليلة إلى الصبح بـ ﴿عم يتساءلون﴾ | ٢٢٦٩ |
| كان الحسن بن صالح يتمثل بهذين البيتين: | |
| إذا أنت لم تزرع وأبصرت حاصداً... أراد إذا أنت لم تعمل في الدنيا | ٤٧٩ |
| من أصبح وله هَمٌّ غير الله فليس من الله عزَّ وجَلَّ | ١١٦ |
| **الحسن بن علي بن أبي طالب** | |
| إنّ أمير المؤمنين قد خلا في بيت يدعو إذا حَزَبَه | ٤٣٧ |
| أنشد لامرأة من ولد حسان بن ثابت رضي الله عنه: | |
| سَلِ الخيرِ أهل الخير قدماً | ٣٢٧٦ |
| جئت يا أمير المؤمنين أقاتل معك فأُمرني بأمرك | ٢٨٣ |
| خطب بعد قتل علي رضي الله عنهما بيوم | ١٠٣٠ |
| السؤدد: التبَرع بالمعروف والإعطاء | ٢٦٤٤ |
| الصدق والوفاء يكونان للعباد حصناً من النّار | ٢٩٧٦ |
| فقه الرجل في دينه وإصلاح معيشته وحسن... الذبّ عن الجار والإقدام.. | |
| التبرع بالمعروف والإعطاء قبل السؤال | ١٧٠٤ |
| لقد فارقكم بالأمس رجل لم يسبقه الأولون بعلم | ١٠٣٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| يا ابن أخي إني أقدم على أمر لم أقدم على مثله | ٤٧٦ |
| **الحسن بن علي الأشناني** | |
| سمعت أبي يقول لبعض الزهّاد: ما تعدُّون الزاهد فيكم؟ قال:أن يعتزل الرجلُ في المكان | ١٤٥٧ |
| **الحسن بن علي الخلاّل** | |
| قال بعض الحكماء: خمسة أشياء ضائعة سراج يوقد في الشمس | ٧١٣ |
| قال بعض الحكماء: مجالسة أهل الدِّيانة تجلو عن القلوب صَدَأ الذنوب ومجالسة ذوي المروءة | ١٩٧٦، ٣٠٦٤ |
| **الحسن بن عيسى** | |
| اجتمع جماعةٌ من أصحاب ابن المبارك مثل الفضل بن موسى ومخلد بن حسين، ومحمد بن النضر، فقالوا: تعالوا حتّى نعد خصال ابن المبارك | ٢٨٣٧ |
| سئل ابن المبارك فقيل له: من الناس؟ فقال: العلماء | ٣٠٠ |
| **الحسن بن قحطبة** | |
| كنت واقفاً على رأس المأمون أمير المؤمنين، وقد قعد إلى المظالم | ٢٠٢٨ |
| **الحسن بن محمد المروزي** | |
| أهدى رجل إلى إبراهيم بن أدهم عنباً وتيناً في طبق فلم يكن عنده | ٢٩٢ |
| **الحسن بن مروان** | |
| رأيت بشراً الحافي في النّوم | ٣٥٧١ |
| **الحسن بن هانيء (أبو نواس)** | |
| كان له خاتمان يعني أحدهما من عقيق مربع عليه: تعاظمني ذنبي فلّما قرنته | ٦٠٨، ٣٣٤٦ |
| **الحسن الجعدي** | |
| أولئك جنٌ من أهل نصّيبين يشهدون معي ختمة القرآن | ٣٩٦ |
| وما الذي رأيت؟ | ٣٩٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **الحسن بن الحسين** | |
| سمعت أبي يقول: مَرَّ بهلول في السوق وهو يأكل فاستقبله بعض أصحابنا | ٩٨٣ |
| **حسين بن عبد الرحمن (رفيق بشر الحافي)** | |
| فربَّما قال لي بشرٌ أعِدْ عليَّ تلك الأبيات المرثية فيبكي | ١٤٧٥ |
| **الحسين بن علي** | |
| إن خير المال ما وقى العرض | ١١٧١ |
| رحمك اللّه أبا محمدٍ إنْ كنت لناصر الحق | ١٠٢٢ |
| يا أخي لأيّ شيء تجزع، تقدمُ على رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم وعلى علي بن أبي طالب وهما أبواك | ٤٧٦ |
| يا بنية انظري ما يدعو به عبد اللّه بن جعفر إذا خلا ... فأتيتُ الحجاج | ٤٣٦ |
| **حضين بن المنذر الرقاشي** | |
| بحسبٍ لا يطعن فيه ورأيٍ لا يستغنى عنه | ١٧٣١ |
| **الحطيئة** | |
| احملوني على حمار فإنه لم يمت عليه كريم قط | ٢١٣٨ |
| **حطيط** | |
| أنت شررة من شرره وهو أعظم جرماً منك | ٣١٢٣ |
| أنت عدوٌّ اللّه تقتل على الظنة | ٣١٢٣ |
| شربة من ماء | ٣١٢٣ |
| فإنّي قد عاهدت اللّه عَزَّ وَجَلَّ لئن سُئِلتُ لأصدقن ولئن ابتليت لأصبرنَّ | ٣١٢٣ |
| كان صوّاماً قوّاماً يختم في كُلِّ يوم وليلة ختمة | ٣١٢٣ |
| **حفص بن غياث** | |
| قدم رجل منا من سفر يقال له هند بن عوف | ٤٧١، ٢٣٨٥ |
| مررت بطاق المحامل وإذا أنا بـ «عليان» المجنون جالسٌ فلمَّا أن جزته | ٩٨١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **حفص بن الفرافصة** | |
| أدركت وجوهَ أهل البصرة شقيق بن ثور فمن دونه آنيتهم الجفان في بيوتهم | ٣٣٤٢ |
| **الحكم بن أيوب** | |
| قد أصبتها لولا عظم ثدييها | ١٩٦٦ |
| **الحكم بن عتيبة** | |
| مر أويس القرني على قصار في يوم شديد البرد فرحمه أويس | ٥١٤، ٢٩١٠ |
| **الحكم بن عوانة** | |
| واللّه لأعطينّك عطية لا يعطيها العبد فأعطاه | ١٩٠٤ |
| **الحكم بن عوانة عن أبيه** | |
| لم يُؤَيّد الملك بمثل كلب، ولم تعلُ المنابر بمثل قريش | ٢٢٨٢ |
| **الحكم بن هشام الثقفي** | |
| إنّ رجلاً أُخِذَ أسيراً فألقي في جُبٍّ ووضع على رأس الجب | ٢٤١٩ |
| إنّ رجلاً أُسِرَ وكان معه تقىّ وورع، فَأُلْقِي في جُبٍّ | ٢٨١٤ |
| دخل أسقف نجران على مصعب بن الزبير فضرب وجهه بالقضيب | ١٥٢٣ |
| **الحكم** | |
| بلغني أنه ينزل مع القطر من الملائكة أكثر من ولد آدم وولد إبليس | ٢٦٤٩ |
| **حكيم بن جابر** | |
| قالت الصحة: إني لاحقة بأرض العرب، قال الجوع: أنا معك | ٢٠١٧ |
| **الحكيم بن حزام** | |
| ما أصبحت صباحاً قطّ فلم أر أحداً ببابي طالب حاجة | ١٧٩٣ |
| **حلبس** | |
| قيل لأعرابي وأراد الحجاج قتله: اشهد على نفسك بالجنون | ١٥٦٦ |
| **حَمَّاد بن أبي حنيفة** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان يقال من يستقبل وجوه الآراء | ٢٦٣٠ |
| **حَمَّاد بن أبي سليمان** | |
| يا فرقد دع نصرانيتك هذه عنك فلقد رأيتنا نأتي | ١٩٢٠ |
| **حماد الراوية** | |
| كان لبيد بن ربيعة يثبت القدر في الجاهلية ومن قوله: | ١٩٣١، ٣٤١٩ |
| **حماد بن زيد** | |
| قال رجل للأحنف بن قيس: ما دخلتُ بين اثنين قطُّ حتَّى يكونا هما الذين يدخلاني | ٨٢١ |
| كانت إذا جالستنا لبست ثوباً رقيقاً حتَّى يمنعها البردُ من النوم | ٤٤٩ |
| كُنّا جلوساً عند يحيى البكَّاء فقرأ عليه القاريء ﴿ولو ترى...﴾ | ١٢٣٠، ٢٢٦٨ |
| لتأخذوا في أبزار الجنة | (٢٢) ملحق |
| **حمّاد بن سلمة** | |
| جنّتان من ذهب للسابقين، وجنّتان من وَرِقٍ لأصحاب اليمين | ٢٧٨٧ |
| ليست اللّعنة بسوادٍ يُرَى في الوجه، ولكن إنّما هو أن لا تخرج | ٧٦٥ |
| **حميد الحميري** | |
| كان يقال: من قلَّمَ أظفاره يوم الجمعة أخرج اللّه تعالى منه داءً وأدخل فيه شفاءً | ١٥٨ |
| **حميد الرؤاسي** | |
| رأيت الكسائي في المنام، فقلت: إلى ماذا صِرْت؟ قال: إلى الجنة فأنا منذ رأيت هذه الرؤيا أترحَّم عليه | ٢٧٣ |
| **حميد الشامي** | |
| من قرأ البقرة وآل عمران في ليلة كان أجره ما بين | ٢٩٠٦ |
| **حميد الطويل** | |
| اختطف صاحبنا (لما وضع في قبره) | ٨٦٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لما ولي إياس بن معاوية القضاء دخل عليه الحسن وإياس يبكي | ١٥٩٧ |
| ما سايرت ثابتاً البناني في حاجة قطّ إلاّ كان أوّل | ١٧٩٦ |
| **الحميدي الشاعر** | |
| بالوجه الذي ألقى به ربي وذنوبي إليه أكثر من ذنوبي إليك | ١١٢٩ |
| فما يمنعك أن تقول له: ما حاجتك عندي؟ | ٨٦٢ |
| كنا عند سفيان بن عيينة فحدثنا بحديث زمزم أنه لما شرب له | ٥٠٩ |
| ما لك يا أبا محمد واقفاً في هذا الموضع؟ | ٨٦٢ |
| **حنش بن الحارث** | |
| رأيت الأسود بن يزيد قد سالت عينيه على خديه | ١١٦١ |
| رأيت الأسود بن يزيد قد ذهبت عينيه من الصوم | ١١٦١ت |
| **حوثرة** | |
| قال بعض الحكماء: كُلُّ عَدُوٍّ أحبُّ أن يعودَ لي صديقاً إلاّ ما كان | ٢١٨٧ |
| **حيّ المدنيّة** | |
| اعتقاد المنن في رقابِ الرجال (الشرف) | ٥٤٩ |
| حاجة الكريم إلى اللئيم ثم يرده (الجرح الذي لا يندمل) | ٥٤٩ |
| وقوف الشريف بباب الدّنيء لا يؤذن له | ٥٤٩ |
| **حيّان بن سُلَيم** | |
| كان واللّه إذا وَعَدَ الخيرَ وَفّى، وإذا أوعَدَ الشرَّ | ١٨٩٦، ٣٠٥٤ |
| **حرف الخاء** | |
| **خاقان** | |
| إذا نصحت الرجل فلم يقبل منك فتقرّب إلى الله بغشه | ٢٥٧١ |
| **خالد بن صفوان الأهتم** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أتم الله عليك يا أمير المؤمنين نعمه | ٢٩٠٣ |
| أربع لا يطمع فيهنّ أحد عندي القرض والفرض | ٢٠٤٨ |
| استَغني به عن علمِ غيره (سُئِل عن علم الحسن؟) | ١٧٨٩ |
| الذي يغفر زلّتي، ويسُدُّ خللي ويقبل | ٣٢٩٤ |
| إليكم عنّي فإني عاهدت الله ألا أخلو بملك إلاّ ذكرته الله عز وجل | ٢٩٠٣ |
| إن شئت يا أمير المؤمنين أخبرتك عنه في ثلاث | ١٧٢٨ |
| إنّ فوت الحاجة خيرٌ من طلبها إلى غير أهلها. | ١٣٨٥، ١٤٢٤ |
| أي الإخوان أحب إليك؟ | ٣٢٩٤ |
| بت ليلةً أتمنّى ليلتي كُلَّها حَتَّى كسوت البحر الأخضر بالذهب | ١٨٢٩ |
| الدّهر أعرض منه... ولا أخاف أن أموت في أوّله | ٢٠٣١، ٢٤٨٦ |
| رحم الله أباك كان يَقرُّ العين جمالاً والأذن بياناً | ١٦٤٠ |
| فأما عمود الجمال فالطول، وأما رداءه فالبياض | ٣١٢٦ |
| فوت الحاجة خيرٌ من طلبها إلى غير أهلها وأشدّ | ١٣٨٥ |
| كان الأحنف بن قيس يفرُّ من الشرف، والشرف يتبعه | ١٥٧٥ |
| كيف تقولين هذا فوالله ما فيّ عمود الجمال ولا ردائه ولا برنسه | ٣١٢٦ |
| لأنك حمار في مثال إنسان | ١٧٣٨ |
| من تزوّج امرأةً فليتزوجها عزيزةً في قومها | ٣٢٧٩ |
| لا تطلبوا الحوائج في غير حينها ولا تطلبوها إلى غير أهلها | ١٠٦١ |
| لا تطلبوا ما لا تستحقون فإنّ من طلب | ١٧٩٤ |
| يا أمير المؤمنين إنّ ملكاً من الملوك خرج في عامٍ مثل عامنا | ٢٩٠٣ |
| **خالد بن عبد الله القسري** | |
| املؤه دراهم | ٢٣٢٧ |
| إن حدث بهذا الغلام حدث فأنا صاحبه أوطأته | ٢١٦٩ |
| تكلّم... بل بهيئة الأمل | ٣٣١٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| سلني يا أعرابي... أسرفت يا أعرابي...ما أدري يا أعرابي أيّ أمريك | ١٦٥٦ |
| كنت كذلك ما شئت أن تكون لا يعلم كيف أنت إلاّ أنت | ٩٧٤ |
| لا تحجبن عني أحداً إذا أخذت مجلسي | ٢٢٦٠ت |
| **خالد بن معدان** | |
| إنّ العرش يثقل على حملةِ العرش من أوّل النّهار | ٢٣، ٢٨١٢ |
| لو كان الموت علماً يسبق إليه ما سبقني إليه أحد | ٨١٨ |
| **خالد بن الوليد** | |
| لقد اندقّ في يدي يوم مؤتة تسعة أسياف | ٢٢٥٣ |
| لقد لقيت كذا وكذا زحفاً، وما في جسدي شبر إلاّ وفيه ضربة بسيفٍ | ٨٣٦ |
| لما مات أبو بكر الصديق رضي اللّه عنه أمر عمر بن الخطاب رضي الله عنه خالداً بالمسير إلى الشام والياً | ١٠١٨ |
| **خالد بن يحيى** | |
| الحاسد عدو مهين لا يُدْرِك وطره إلاّ بالتمنّي | ٢١٨٦ |
| **خالد بن يزيد بن معاوية** | |
| أتهددني ويد اللّه فوقك مانعة وتمنعني | ١٩٧٨ |
| أقرب شيءٍ الأجل، وأبعد شيء الأمل، وآنس شيء الصّاحب | ٩٩٤ |
| قل ... سَل ... (للأعرابي الذي مدحه ببيتين من الشعر) | ٢٢٣٢/م |
| **خالد الحداد** | |
| اثبت على ما أنت عليه وإيّاك أن تَجزع من الضرب، فإنّي قد ضربت (قاله لأحمد بن حنبل) | ٧٥٥ |
| **خبيق بن سابق** | |
| سمعت بعض أصحاب يوسف بن أسباط يقول ليوسف معمر | ١٦٥١ |
| سمعت هذا الرجل يقول ليوسف بن أسباط: من ملك المال فلم | ١٦٥٢ |
| **خزيمة** | |
| إنّ رجلاً أتى بعض الزّهاد، وقال له الزاهد: ما جاء بك؟ | ١١٢٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **الخضر عليه السلام** | |
| إن الناس معذبون في الدنيا على قدر همومهم بها | ١٧٨٣ |
| سبحان ذي الملك والملكوت، سبحان ذي العزة والجبروت | ١٠٤٦ |
| صبراً يا نفس صبراً لأيام تنفذ لتلك الأيام الأبد | ١٨٨٦ |
| فادع الله به دبر كل صلاة | ١٠٢ |
| يا من لا يشغله سمع عن سمع | ١٠٢ |
| يا موسى إن الناس معذبون في الدنيا على قدر همومهم بها | ١٧٨٣ |
| يا موسى تعلم العلم لتعمل به ولا تعلمه لتحدث به | ٢٨١٩ |
| يسر الله عليك طاعتك | ٢٠٠٧ |
| **خلف بن إسماعيل** | |
| سألت رجلاً من العُبَّاد عن الشهيق الذي يعتري | ٢٧٦٣ |
| **خلف بن تميم** | |
| دخل إبراهيم بن أدهم الجبل ومعه فأس رومي | ٣٦٠ |
| كنا مع إبراهيم بن أدهم في بلاد الروم وكانت عليه فروة | ٣٥٩ |
| مررت بدير حرملة وبه راهب كأن عينيه غرلاً مزادة | ١٨٢٥ |
| **خليفة بن عبدة المنقري** | |
| سألت محمد بن عديّ بن سوأة بن جُشْم بن سعد كيف سمّاك أبوك محمداً؟ | ١٣٠٥ |
| **الخليل بن أحمد** | |
| أبلغ سليمان أنّي في سعة | ٣٢٦٦ |
| اجعل ما في الكتب بيت مال وما في | ١٨٨٣ |
| إذا كنت لا تدري بالذي تساءل من يدري فكيف إذاً تدري | ٢٣١ |
| إذا نُسِخَ الكتاب ثلاث مرّات | ١٨٨٣ |
| أنشد يقول: لئن كنت تعقل ما أقول عذرتني | ٢٣٢ |
| إنّه لا يضيق سُمُّ الخياط على متحابين ولا تتّسع | ٣٢٢٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الرجال أربعة، رجل يدري ولا يدري أنّه يدري فذاك غافلٌ فَنَبّهوه | ٢٣٢ |
| ظهر الفساد والخبث في الناس منذ استأصلوا شعورهم | ٢٥٣١، ١٥٢٥ |
| نطيل الكلام ليفهم. ونوجز ليحفظ | ٥٠١ |
| لا تلد النساء إلى ألف سنة مثله غير أنّ فيه عيباً | ٢١٦٨ |
| **خوات بن جبير** | |
| نوم أول النهار خرق وأوسطه خُلُق وأخره حمق | ٢٠٤٦ |
| **خيثمة** | |
| قرأتُ في الإنجيل أنّ مفاتيح كنوز قارون وقرُ ستّين بغلاً غُرّاً | ٢٨٢١ |
| ما من شيءٍ تقرأون في القرآن | ٢٤٦٣ |
| **الخيزران** | |
| أكافيء ولد سعد عن فعله برسول الله صلى الله عليه وسلم | ٢٢٣٠ |
| **حرف الدال** | |
| **داود عليه الصلاة والسلام** | |
| اللهم وما تلك الحسنة؟ | ١٧٤٩ |
| إلهي ما جزاء من بكى من خشيتك حتى تسيل دموعه على وجهه | ٢٨٧ |
| إن داود عليه السلام أتاه ملك الموت وهو يرقى | ١٨٦ |
| إن داود عليه السلام جعل خطيئته في كفه فكان لا يتناول | ١٢٦٩ |
| إن داود عليه السلام نقش خطيئته في كفه لكي | ١٢٦٨ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى داود عليه السلام: يا داود اتخذ نعلين من حديد | ٣١٣ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى داود صلى الله عليه وسلم: يا داود اسمع مني الحق أقول لك | ١٧٤٩ |
| فدعني أنزل أوصي | ١٨٦٤ |
| قال داود صلى الله عليه وسلم: يا رب دلني على عمل يدخلني الجنة | ١٧٥٢ |
| كان داود صلى الله عليه وسلم يقول في مناجاته: اللهم أتيت أطباء عبادك | ٢٨٨ |
| كان داود صلى الله عليه وسلم يقول في مناجاته: إلهي إذا ذكرت | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| خطيئتي | ٢٨٨ |
| كان داود صلى الله عليه وسلم يقول في مناجاته: طوبى لمن أرضاك | ٣٥٠٥ |
| كان داود عليه السلام ينادي في جوف الليل:أوه | ١٥١٧ |
| كان من تحميد داود صلى الله عليه وسلم: الحمد لله عدد قطر المطر | ١٥٧٠ |
| يا داود مجدني اليوم بذلك الصوت الحسن الرخيم | ٧٠٥ |
| يا داود هل تدري من أغفر له من عبادي | ١٥٥٥ |
| يا رازق النعاب في عشه | ١٣٥٣ |
| **داود بن رشيد** | |
| أكثر الناس لوماً على عطاء بن يزيد يسألونه | ٢٧٩٢ |
| الأدب يذهب عن العقل السكر ويزيد الأحمق | ١٨١٩ |
| بلغني أنّ في التوراة مكتوباً، اشكر لمن أنعم عليك وأنعم على | ١٥٠٦، ٣٠٤٦ |
| سمعت رجلاً بمكة يدعو ربَّه أن يحرسه من أصدقائه | ٢٤٤٠ |
| قال بعض الحكماء: التسليط على المماليك من الدناءة | ٢٠٩٣ |
| قال بعضهم: ما يفقد الحر من الصيانة أكثر من قدر الفائدة | ٣٠٦٥م |
| قال حكماء الهند: لا ظفر مع بغي ولا صحة مع نهم ولا ثناء مع كِبْر | ١٥٣٦ |
| قيل لبعض الحكماء: متى تفحش زوال النعمة | ٢/٣٠٧٦ |
| قيل لحبيب الفارسي في مرضه الذي مات فيه | ١٨٨ |
| كان يقال أربعة يسوِّدن العبدَ: الأدب | ١٢٦٣ |
| كان يقال: شَرُّ خصال الملوك: الجبن عن الأعداء، والقسوة على الضعفاء | ١٩٧٣، ٣٠٦٢ |
| كان يقال: عنوان صحيفة المسلم حسن خلقه | ١٧٩١ |
| كانوا يكرهون أن يزيد منطق الرجل على عقله | ١٣٤٤ |
| يا داود أنمناهم وأقمناك | ٣٥٠٨ |
| **داود بن المحبر** | |
| قال بعض الحكماء: صدرُك أوسع لسرك؛ فإنّ سرَّك | ١٧٩٠ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعضهم: من فاز بالإيمان ربحت تجارته | ١٧١٢ |
| قال حكيم من الحكماء: اعلموا أنّ العاقل يعترف بذنبه | ٢٦٦٢ |
| **داود بن هلال** | |
| قرأت في صحف إبراهيم صلى الله عليه وسلم: طوبى للأبرار الذين أطلعوني | ١١٥٤، ٢١٢٩ |
| مكتوبٌ في صحف إبراهيم صلى الله عليه وسلم: يا دنيا ما أهونك على الأبرار | ١١٥٤ |
| **داود بن أبي هند** | |
| جالست الفقهاء فوجدت ديني عندهم | ٤٥٨، ٢٩١٧ |
| **داود الطائي** | |
| ابن آدم، فرحتَ ببلوغ أملك وإنّما تبلغه | ٢١٩٤ |
| أدعه حتى أشتهيه | ٥٧٨ |
| إذا شربت الماء البارد في هذا الحر الشديد فمتى | ٥٧٨ |
| إلهي هَمُّك خالف عليَّ الهموم وخالف بيني | ٦٧٦ |
| إنّما الزاهد من قَدِرَ فترك | ٢٣٩٧ |
| إنّي عنها لمشغول | ٣١٤٢ |
| إنّي في هذا البيت منذ عشرين سنة ما نظرت إلى السقف | ٥٤ |
| بين مضغ الخبز وشرب الفتيت قراءة خمسين آية | ٥٤ |
| رأيت داود الطائي يصلي كأنّما يطلع في نار جهنم | ١٩٤٠ |
| قد رآني... قال لي: إني أفعل ما أشاء | ٥١ |
| قد مللنا الحياة لكثرة ما نقترف من الذنوب | ١٩٢٦ |
| قدم من السواد ولا نفقة، فلم يزل يتعلّم ويتعبّد حتّى ساد أهل الكوفة | ٥٣ |
| كان بدوّ توبته أنه دخل المقبرة فسمع امرأة عند قبرٍ | ٥١، ٥٥ |
| كان ماؤه في دَنٍّ مُقَيَّر في الصيف والشتاء | ٥٧٨ |
| كان يشرب الفتيت ولا يأكل الخبز... | ٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما سألت اللّهَ الجنة قطّ وإنّي لأستحيي منه | ١٩٢٦ |
| واللّه ما قمت هذا المقام قطّ إلاّ وكأنّي أطّلعُ في نار جهنّم | ٢٨٣٩ |
| ورث عشرين ديناراً فأكلها في عشرين سنة | ٥٢ |
| يا بن آدم فرحت ببلوغ أملك وإنّما بلغته بانقضاء مدّة أجلك | ٢٩٨٧ |
| **داود القصاب** | |
| أبعده اللّه أما علِمَ أنّ من حفر حفرة وقع فيها | ٣٢٦١ |
| من هذا الميّت منك؟ ... وما كان يعمل | ٣٢٦١ |
| **دبرة بن ينبوب** | |
| دعني يا حضري فإنّي أحبُّ أنْ تنشأ | ٢٥٧٣ |
| **دعبل الشاعر (دعبل بن علي الخزاعي)** | |
| أدخلت على المعتصم، فقال لي: يا عدو اللّه | ٣١٢٤ |
| كان للحسن بن هانيء خاتمان، خاتم فضة من عقيق مربّع عليه مكتوب | ٦٠٨ |
| لما يعلم ما بيني وبينه من العداوة فأردت أنْ أشيط بدمه | ٣١٢٤ |
| **دغفل النسابة (دغفل بن حنظلة الشيباني)** | |
| بلسان سؤول، وقلب عقول، فكنت إذا لقيتُ عالماً أخذتُ منه وأعطيته | ٣٠٦ |
| **الدُّفير بن ثابت = أبو الغسان** | |
| **دويك العطاردي** | |
| صلى بنا أبو رجاء العطاردي العتمة ثم أوى إلى فراشه فأتته | ١٩٥٣ |
| **حرف الذال** | |
| **ذر بن عمر** | |
| يا بني ليست النائحة الثكلى مثل النائحة المستأجرة | ٧٣٦ |
| **ذو الرمة (غيلان بن عقبة ـ أبو الحارث)** | |
| لأنّه وطّأ مضجعي، وأكرم مجلسي فحقّ عليّ له | ٢٧٢٠ |
| **ذو القرنين** | |
| علمني علماً لعلي أزداد إيماناً؟ ..لعل اللّه عَزَّ وَجَلَّ يطوقني ذلك | ١٣٤٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **ذو النون المصري (ذو النون بن إبراهيم المصري)** | |
| إنّ أهل الجنة ينظرون إلى اللّه تبارك وتعالى في كُلِّ جمعة فلولا العودة | |
| لانصدعت قلوبهم | ٧٤ |
| إنّ للّه عباداً نصبوا أشجار الخطايا روانق القلوب | ٢٩٦ |
| **حرف الراء** | |
| **رابعة العدوية** | |
| شغلوا قلوبهم عن الله بحب الدنيا ولو تركوها لجالت في الملكوت | ١٤٥٣ |
| والله إنّي لأستحي أن أسأل الدنيا من يملكها | ١٥٦١ |
| يا حماد، أنا والله لم أسأل الدنيا قط من يملكها | ٤٤٩ |
| **رافع بن عميرة الطائي** | |
| إن كان لابد من ذلك فابغ لي عشرين جزوراً سماناً عظاماً | ١٠١٨ |
| خلف الأثقال واسلك هذه المفازة | ١٠١٨ |
| **ربعي بن حراش** | |
| أتيت أهلي فقيل لي مات أخوك، فوجدتُ أخي مسجىً | ٦٣٠ |
| **الربيع بن أبي راشد** | |
| إن ذكر الموت قد شغلني عن الحديث، إن الموت إذا فارق | ٣٠٩٨ |
| **الربيع بن أنس** | |
| مكتوب في الكتاب الأوّل: مَثَلُ أبي بكر مثل القطر حيث وقع نفع | ١٦٧ |
| نظرنا في صحابة الأنبياء فما وجدنا نبيّاً كان له صاحب | ١٠٧٥ |
| **الربيع بن خثيم** | |
| أخاف أن أرى مظلوماً فلا أعينه أو يفتري | ١٩٠٩ |
| انظروني حتّى أتفكّر ..﴿إنّ عاداً وثموداً وأصحاب الرَّس وقروناً بين ذلك كثيراً﴾ | ١٨٩ |
| ألا تعود في الذنب (شفاء الذنوب) | ٢٣١٧، ٢٩٨٤ |
| داء البدن الذنوب وداءها الاستغفار وشفاؤها | ٩٢٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الذنوب (ما داء البدن؟) .. الاستغفار... ألا يعود في الذنب | ٢٣١٧، ٢٩٨٤ |
| راحتها أريد | ١٢٠٤ |
| رأيتُ رجلاً بالأهواز قيل له قل: لا إله إلاّ اللّه | ٣٨٤ |
| سرقت يا يسار ... نعم يا يسار | ٥٧٥ت |
| قيل لآخر بالبصرة: قل لا إله إلاّ اللّه | ٣٨٥ |
| كنتُ بالشام فسمعتُ رجلاً قيل له: قل لا إله إلاّ اللّه عند الموت | ٣٨٣ |
| كنت بين يدي اللّه عَزَّ وَجَلَّ فلم أكن أصرف وجهي عن اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٥٧٥ |
| **الربيع** | |
| بلغني أنّك ختنت أمير المؤمنين | ٢٣٢٩ |
| **الربيع بن زياد الحارثي** | |
| إنّه يسوؤك ما يسرُّ الناس | ٢٢٠٦ |
| يا أمير المؤمنين! إنّ أحقَّ الناس بمطعم طيِّب | ٦٢٣ |
| **الربيع بن صبيح** | |
| شهدت ثابتاً البناني وشهده أهل البصرة، فدخلت قبره | ٨٦٨ |
| **الربيع بن نافع** | |
| قال بعض الحكماء: جلُّ من استغنى عنك، وما سدّ فقرك كذات يدك | ٢٦٤٦ |
| قال بعض الحكماء: من أخطأته سهام المنايا | ٢٦٧٠ |
| **ربيعة بن أبي عبد الرحمن** | |
| أدركت مشيخة أهل المدينةلهم الغدائر وعليهم المورَّد | ٥٣٧ |
| جمع الأشياء بحقِّها ووضعها في حَقِّها | ١٣٩٨ |
| لقد رأيت بالمدينة مشيخة في زي الفتيان | ١٩١٨ |
| للسفر مروءة، وللحضر مروءة، فأمّا مروءة السفر فبذل الزَّاد وقلّة | |
| الخلاف على أصحابك | ٣٢١ |
| **رجاء بن حيوة** | |
| يأتي على الناس زمان لا تحمل فيه النخلة إلاّ تمرة | ١٣٩٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **رفيع أبو العالية الرياحي البصري = أبو العالية** | |
| **رقبة بن مصقلة** | |
| ابن أخي تستكثر منّي ما تستقل من نفسك، هل لقيتني | ١٦١٢ |
| كيف أصبحت يا أبا محمد، هذا صوت من لاعهد ... ما رأيت من | |
| يتقرب إليه بالهوان | ٢٥٣٢ |
| ما صنعت بكم الشجرة؟ ... فما رأيت أحداً كان أسرعَ جواباً منه | ٢٩٠٩ |
| مررت بقصار يلوي ثوباً في يوم شديد البرد | ٢٩٠٩ |
| **روح بن جابر** | |
| بعث إلى كاتب له ثلاثين ألف درهم، وكتب إليه: قد بعثت بها إليك | ٣٢٧٧ |
| **روح بن حاتم** | |
| بعثت بها إليك، ولا أقلّها تكثُّراً ولا أكثرها تمنناً | ١٤٢٧ |
| ليطول مقامي في الظلّ | ٢١٠٤ |
| **روح بن زنباع** | |
| كان إذا دخل الحمام وخرج منه أعتق رقبة | ٣٥٤ |
| لقد ضننت بأيامك يا راعي إذ جاد بها روح بن زنباع | ١٣٤ |
| نزل منزلاً بين مكة والمدينة في يوم صائف وقرب غداه | ١٣٤ |
| يا راعي هلُمَّ إلى الغداء... أو تصوم في هذا الحرّ الشديد؟ | ١٣٤ |
| **روح بن عبادة** | |
| كان هشام الدستوائي لا يطفىء سراجه بالليل | ٣٥٥ |
| **الرياشي (العباس بن الفرج ـ أبو الفضل)** | |
| أخذ بعض الأمراء رجلاً يعاقبه، فقال له: إنْ عاقَبتَ جازيت، وإن | |
| عفوت أحسنت | ٨٣٢، ٣٢٤٩ |
| أنشد لبعض بني العنبر:نهيج منازل الأموات | ٧٤٦ |
| حصنت بيتك جاهداً وعَمَّرْتَه | ٣٢٩٩ |
| سأل أعرابي قوماً فرقَّ له رجلٌ فضمَّه إليه... | ١٤٢٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال أعرابي ومات ابن له: اللهمَّ إنّي قد وهبت له ما قصَّر فيه من | ٢٣٣٢ |
| قال بزرجمهر الحكيم: آخ ذا العقل والكرم واسترسل إليه | ١٧٢٤ |
| قال بعض الحكماء: معالجة الموجود خير من انتظار المفقود | ٢٨٩٧ |
| قال بعض العرب: من اتّخذ الصبر جُنّة وقاه | ١٧١٣ |
| قال بعضهم: غضب العربي في رأسه، فإذا غضب لم يهدأ حتّى يخرجه | |
| بلسانٍ أو يدٍ | ١٦٠٤ |
| قرأت على أسكفة بالكدرة: هذه الدار أواها قبلنا عصبةٌ بادوا وخلوها لنا | ٨١ |
| قيل لأعرابي سمين: ما أسمنك؟ قال: أكلي الحار وشربي | ٢٣٤٦/م |
| قيل لأعرابي: ما تعدّون السيّد فيكم ، قال: من غلب رأيُه هواه | ٢٠٥٠، ٣٠٦٨ |
| قيل لبعض الأعراب: ما آفة التبيان؟ | ١/٣٠٦٩ |
| قيل لرجل من البصريين مالك لاينمى مالك؟ | ٢١٠٧ |
| لقي يحيى بن خالد الجاثليق وهو على بغلة | ٢/٢٤٣٥ |
| وفد أبو زياد الكلابي مع أعراب سنة المجاعة | ١٤٢٥ |
| لا يبعد اللّه إخواناً لنا ذهبوا | ٣١٩٨ |
| **حرف الزاي** | |
| **زاذان** | |
| هذا والله المفلس... المفلس في دينه | ١٥٢٤ |
| **زبيد** | |
| استخير الله | ١١٦٧ |
| واللّه ما رأيت قراء زمان أغلظ رقاباً ولا أدق ثياباً | ٩٦١ |
| يا بني إنو في كل شيء تريده حتى خروجك | ٣٥٣٣ |
| **الزبير بن بكار** | |
| سمعت بعض أهل العلم يقول: خطباء أصحاب رسول اللّه صلى اللّه | |
| عليه وسلم أبو بكر الصديق وعلي بن أبي طالب | ٣٠٥٧ |
| **الزبير بن العوام** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ترك من العروض قيمة خمسين ألف ألف درهم | ٢٢٠٠ |
| فتوسمتُ أن تكون أُمّي صفية، فخرجت أسعى إليها | ٢٧٩٦ |
| فجئنا بالثوبين لنكفّن فيهما حمزة فإذا إلى جنبه رجل من الأنصار قتيل | ٢٧٩٦ |
| كان يضرب في المغنم بأربعة أسهم: سهم له | ٤٥٦ |
| لما كان يوم أحد، أقبلت امرأةٌ تسعى حتّى | ٢٧٩٦ |
| **زرارة بن أوفى** | |
| صلى الغداة فقرأ: ﴿إذا نقر في الناقور﴾ | ١٣٦ |
| **زرعة** | |
| من كان صغير الدنيا أعظم في عينيه من كبير الآخرة | ١٤٠٠ |
| **زكريا عليه السلام** | |
| إن زكريا عليه السلام هرب ودخل جوف شجرة، فوضع على الشجرة المنشار | ٤٠ |
| يا بني ما هذا البكاء كله؟ ... فابك يا بني | ١٥١٨ |
| **الزهري/ محمد بن مسلم بن شهاب** | |
| إذا استشهدت لم أبالي بما تركت من عِذي النخل وسقيه | ٧٦٠ |
| اطلبوا العلم فإن أردتم الدنيا نلتم وإنْ أردتم | ٤٧٠، ٢٩١١ |
| الله أعلم حيث يجعل رسالته | ٢٤٩٩ |
| إنّ رجلاً كان فيمن خلا من الزمان وكان عاقلاً لبيباً | ٤٨٠ |
| إنّ عبد الله بن رواحة خرج غازياً إلى بلد الروم مع جعفر | ٧٦٠ |
| إنّ عمر بن الخطاب رضي الله عنه كان يدعى الفاروق لأنّه فرّق بين الحق والباطل | ١٩٥ |
| إن من ابتغى الخير اتقى الشر | ١٠٣٧ |
| أوصى عبد الرحمن بن عوف لمن بقي ممّن شهد بدراً: أربع مئة دينار لكلٍّ | ٢١٩٩ |
| بلغني أنّه من قال حين يُمسي أو يصبح: أعوذ بك | ١٨٩٩ |
| تُوفّي أبو بكر رضي الله عنه يوم الجمعة لتسع ليالٍ بقين من جمادى الآخرة | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| سنة ثلاث عشرة | ١٦٤ |
| الحديث ذكر يحبّه ذكور الرجال ويكرهه مؤنثوهم | ١٠٣٣ |
| رأيت عروة بن الزبير فرأيته بحراً لا تكدره الدلاء | ١٨٥ |
| سمعتُ رجالاً من أهل العلم يقولون: الاعتصام بالسنة نجاة | ٣٦٣ |
| الطوفان والجراد والقُمَل والضفادع والدم (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿ولقد آتينا موسى تسع آيات بيِّنات﴾) | ٥٠٤ |
| قاموا صفّين فقتل بعضهم بعضاً حتّى قيل كُفّوا | ١٥٤٠ |
| كان يخرج إلى الأعراب يفقههم ويعطيهم | ٣٢٢ |
| الكريم لا تحكمه التجارب | ١٥٩٥ |
| لقد تكلم رجل عند أمير المؤمنين ما سمعت كلاماً | ٢٥٤٦ |
| لما دلي زيد بن ثابت في قبره قال ابن عباس | ٣٣٩ |
| ليس الزهد بتقشف الشعر، وتفل الرّيح، وخشونة الملبس | ٩٢٣، ٢٩٨٣ |
| ما هذا يا أمير المؤمنين؟ | ٥٠٤ |
| وجدنا السخي لاتنفعه التجارب | ١٥٩٥ت |
| هلا أقررْتم الشيخ في بيته حتى كنا نأتيه وأمرهم أن يغيِّروا شعره | ١٦٢ |
| يا عقيل أعطيك خيراً منها | ٣٢٢ |
| **زهير بن نعيم البابي** | |
| اللهم إنّي أعوذ بك من سهوٍ عن حقِّك ومن استخفافٍ | ٢٦٦٣ |
| أوصيك بتقوى الله، والله لأن تتّقي الله أحبُّ إليّ من أن يكون لي وزن | ٤٧٧، ٢٧٦٩ |
| علم القوم بأنّ الله عَزَّ وَجَلَّ يراهم كلٌّ | ٢٦٥٩ |
| كُلُّ مطيع مستأنس وكُلُّ عاصٍ مستوحش | ٢٧٦٥ |
| لا تقل كما تحب فإنّي لا أحبُّ لمن أحبُّ شيئاً من الدنيا | ٤٧٨، ٢٣٧٥ |
| من أعلام الخوف: الورع من غضب الحليم، وثلاثة من أعلام السخاء: | ٢٩٢٠ |
| من ذكر الله عز وجل على دنس عادت عليه عقوبات أدناسه | ١٧٦٣ |
| يا ابن آدم، عليك بنفسك فاحفظها من المعاصي | ٢٨٤٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **زياد** | |
| كلمة عبد صالح وافقت قدراً | ١٨٦٦ |
| **زياد** | |
| تالله ما رأيت كلاماً أبلغ ولا أوجز ولا أنفع في عاجله منه | ٢٢٧٣ |
| **زياد بن مروان** | |
| ما هذا الأثر في وجهك ... أما إنّك لو ركبت الأشهب لم يصبك | ١٦٤٢ |
| **زياد بن أبي سفيان** | |
| ليس العاقل الذي يحتال للأمر إذا وقع فيه، ولكن العاقل | ٦٧٠ |
| من طال عمره ورأى في عدوّه ما يسرّه | ١٨٥٩، ٣٠٦٧ |
| **زياد بن حدير الأسدي** | |
| لما أراد العلاء بن الحضرمي أن يعبر إلى أهل البحر | ٢٠٧ |
| **زياد بن أبي زياد** | |
| أنا من أنْ أمنع الدعاء أخوف | ١٥٦٠ |
| **زياد بن عبيد الله الحارثي** | |
| سبحان اللّه، استشرتك فأشرتَ عليّ ثم أسمعك تنهاه | ٥٩٨ |
| **زياد النميري** | |
| بينما أنا نائم إذ آتاني آتٍ في منامي، فقال: قم يا زياد | ٣٩٧ |
| **زيد بن أبي الزرقاء** | |
| عَثِرت امرأةُ فتح الموصلي فانقطع ظفرها فضحكت | ٣٠٦١ |
| **زيد بن أرقم** | |
| كُنّا عند أبي بكر الصديق رضي اللّه عنه فأتاه غلامه بطعام | ١٣٩١ |
| **زيد بن أسلم** | |
| انظر من كان رضاه عنك في إحسانك إلى نفسك، وكان سخطه عليك في إساءتك | ٢٨١٣ |
| بلغني أن مقاتلة بني إسرائيل يومئذٍ ست مائة ألفٍ | ١٣٣٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| حُبِسَ إليَّ رجل قد ذهبت يمينه من عضده فجعل يبكي ... | |
| وما حالك؟ | ٢٧٨٢ |
| هي أرض مصر إن لم يصبها مطر | ٢٧٧ |
| يا ابن آدم أمرك ربك أن تكون | ١٧٧٧ |
| **زيد بن ثابت** | |
| كان من أفكه الناس في أهله وأزمتهم إذا جلس مع القوم | ١٠٣٨ |
| لا تفعل يا ابن عمّ رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ١٣١٤ |
| هكذا أمرنا أن نفعل بأهل بيت نبينا صلى اللّه عليه وسلم | ١٣١٤ |
| **زيد بن جبلة** | |
| لا فقير أفقر من غني أَمِنَ الفقر | ٢٥١٤، ٣١٩٥ |
| **زيد الحميري** | |
| أخبرني عن لبس الرهبان هذا السواد ما المعنى فيه؟ ... وكلكم معشر | |
| الرهبان قد أصيب بمصيبةٍ | ٧٣٣ |
| فلا أذكر قوله أبداً إلاّ أبكاني | ٧٣٣ |
| **زيد بن علي بن الحسين** | |
| إن الله تبارك وتعالى لم يرضك لي فأوصاك بي | ١٠٩٣ |
| **حرف السين** | |
| **السائب بن الأقرع** | |
| هكذا الدنيا تصبح لك مسرّةً وتمسي لك متنكرة | ١٧٧٤، ٣٤٢٩ |
| **سالم بن عبد اللّه بن عمر بن الخطاب** | |
| أما واللّه ما سألتُ الدنيامن يملكها فكيف أسأل الدنيا من لا يملكها | ٨٠ |
| إنّي استحيي من اللّه تبارك وتعالى أنّ أسأل في بيت اللّه غير اللّه | ٨٠ |
| من حوائج الدنيا أم من حوائج الآخرة | ٨٠ |
| **سالم الأفطس** | |
| الصمد السيّد الذي انتهى سؤدده لأن النّاس يصمدونه | ١٠٤٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **سالم الحاجب** | |
| هاجت ريح سوداء في أيّام المهدي فاسودّت الدنيا وخفنا | ١٠٨٠ |
| **سباع الموصلي** | |
| الأنس بالله | ٢٠٧٩ |
| **سحار** | |
| قلت للحسن: إنّ أخاك جابر بن زيد في الموت، وهو يومئذ متواري | ٢٧٢٤ |
| **السدّي (أبو محمد إسماعيل بن عبد الرحمن)** | |
| تلفحهم لفحةً فلا تدع لحماً على عظم إلاّ ألقته على أعقابهم | ١٤١٦ |
| من خاف سلطاناً عنيداً أو شيطاناً مريداً أو ساحراً | ٢٥٩٢ |
| **سرار بن عبيدة العنزي** | |
| ما رأيت رجلاً أعبد من ثابت البناني إن كان يصلي حتّى يسقط | ٢٥٥٦ |
| **السري بن عبد الله** | |
| لما حضرت عمر بن عبد العزيز الوفاة قال: اجلسوني | ٢٣٦٥ |
| **السري بن يحيى** | |
| مر الحجاج في يوم جمعة، فسمع استغاثة | ١٩٨٤ |
| **السري بن ينعم** | |
| بؤسٌ لحب الدنيا يحبُّ ما يبغضه | ١١٥٢ |
| **سعد بن أبي وقاص** | |
| اللهم اكفنا يده ولسانه | ٣٤٨ |
| اللهم إن كان كاذباً فأعم بصره وعجل فقره وأطل عمره وعرضه للفتن | ١٢٩٤ |
| كان على ظهر بيتٍ وهو شاكٍ من خرّاج كان خرج به | ١٠١٤ |
| كان بين يديه لحم فجاءت حدأة فأخذت بعض اللّحم | ٣٥٠ |
| كتب إلى عمر بن الخطاب رضي الله عنهما وهو على الكوفة يستأذنه في بناء منزل يسكنه | ٥٤٦ |
| لولا أن أبا محجن موثقاً في الحديد لقلت: إنّه أبو محجن وأنها فرسي | ١٠١٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| متواضع في جبايته، عربي في نمرته، أسد في تامورة | ٢٠٢٠ |
| واللّهِ لا حبسته أبداً في الخمر | ١٠١٤ |
| يا أهل الكوفة أيُّ أمير كنت لكم؟ | ١٢٩٤ |
| يا بُنَي إذا طلبت شيئاً فاطلبه بالقناعة | ١١١٠ |
| يابُنَي إذا طلبت الغنى فاطلبه بالقناعة | ١٨٤٣ |
| يا حرقة ما كان شأنكم؟ | ٢٢٢٥ |
| **سعد بن عبادة** | |
| أتبخلوني في ابني والله إني لأحمده على السخاء | ١٤٢١ |
| اللهم ارزقني الكثير فإن القليل لا يكفيني | ١٣٧١ |
| اللهم هب لي حمداً ومجداً | ٢٢١٠ |
| **سعد بن نفير** | |
| أنّ نفراً من الجنّ تذاكروا عيافة بني أسدٍ فأتوهم | ٢٥٦٠، ٣١٩٧ |
| **سعد الطائي** | |
| العرش ياقوته حمراء | ٢٥٧٩ |
| **سعيد بن أبي سعيد المقبري** | |
| جاء رجل إلى عيسى عليه السلام، فقال: يا معلم الخير عَلِّمْني | ٢٢٤٩ |
| لمّا طُعِنَ أبو عبيدة بن الجرّاح رضي اللّه عنه بالأردن وبها قبره | ٣١٤٣ |
| **سعيد بن أبي عروبة** | |
| حَجَّ الحجّاج فنزل بعض المياه بين مكّة والمدينة ودعانا للغداء | ١٣٥ |
| حججت مع قتادة، فعرض له في الطريق رجل من بني تميم فاستفتاه | ٢٨٢٩ |
| **سعيد بن بريد = النّباجيّ** | |
| **سعيد بن جبير** | |
| اذهب فاحرق كُتُبي | ٣٠٣٦ |
| اعلم أنّ كُلَّ يوم يعيش فيه المؤمن فهو غنيمة | ١١٧٠، ٢٣٤٥ |
| بل أنت فاختر لنفسك، فإن القصاص أمامك | ١٢١٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| بيض العيون من العمى قد ذهب السواد والناظر | ١٠٤٩ |
| صفراء الظّلف ... (تفسير قوله تعالى: ﴿بقرة صفراء فاقع لونها﴾) | ١٤٨٩ |
| الصبر اعتراف العبد إلى اللّه بما أصابه وإحسانه | ١٧٠٧ |
| قام بعضهم إلى بعض بالخناجر فقتل بعضهم بعضاً | ١٥٣٩ |
| قرأ القرآن في ركعة في الكعبة، وقرأ في الركعة الثانية: | |
| بـ ﴿قل هو اللّه أحد﴾ | ٣٩٩ |
| قرأت البارحة القرآن مرّتين ونصف، فثقل لساني | ٣٩٨ |
| كان أصحاب عبد اللّه بن مسعود سُرَجَ هذه القرية يعني الكوفة | ٤٣٠ |
| ليس أحد أصبر على أذى يسمعه من ... | ٢٦٣ |
| ما أعطى أحد ما أعطيت هذه الأمة، ولا نبياً مثل محمد صلى اللّه عليه وسلم | ١٣٩٤ |
| **سعيد بن خثيم** | |
| قال بعض الحكماء: من هوان الدنيا على اللّه عزّ وجلّ أن لا يعصى إلاّ فيها | ١٨٠٥ |
| **سعيد بن داود الزنبري** | |
| سمعت بعض أهل العلم يقول: العلم نور لصاحبه ودليل لحظه | ١٦٦٧ |
| **سعيد بن سالم** | |
| نزل روح بن زنباع منزلاً بين مكة والمدينة | ١٣٤ |
| **سعيد بن العاص** | |
| عَجِّلْ عليَّ بصحيفة، فكتب ديناً حالاً بعشرين ألف درهم | ٣٠٨٤ |
| مَنْ رزقه اللّه رزقاً حسناً فليكن أسعد النّاس به | ٢٣٤١/م |
| موطنان لا أستحيي من العي فيهما: عند مخاطبتي جاهلاً | ٣٢٩٢ |
| لا أعتذر من العي إلاّ في حالين إذا خاطبتُ | ١٧٣٤ |
| لا تمازح الشريف فيحقد عليك، ولا الدنيء فتهون عليه | ٨٩٤ |
| يا فتى ألك حاجة؟ | ٣٠٨٤ |
| **سعيد بن عبد الرحمن بن أبزى** | |
| قلت لأبي: ما تقول في رجل سَبَّ أبا بكر؟ قال: يقتل | ٣٥٤٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **سعيد بن عبد الرحمن المخزومي** | |
| قال بعض الحكماء: إنّ من أعجب العجب ترك التعجب من العجب | ١٥٠٤ |
| **سعيد بن عبد العزيز** | |
| ما ضرب الناس بضرب سوط أشد من الفقر | ٢١٨١ |
| **سعيد بن عمرو** | |
| يا أمير المؤمنين لي على يزيد خمسون ألف درهم | ١٦٠٦ |
| **سعيد بن مسلمة** | |
| حتّى يجيء ابني فأسأله | ٢٧٠٢ |
| **سعيد بن المسيب** | |
| اللهم إنك تعلم أني لم أجمعها إلاّ لأصون بها حسبي ودِيني | ٢٢١١ |
| إنّ إحدى عينيه ذهبت وهو يعشو بالأخرى | ٩٣٢ |
| إن كنت لأظنّه أنّ سيصيبه ذلك | ٥١٧ |
| إنّي لفي أغيلمة الذين يجرّون جعدة إلى عمر بن الخطاب | ١٨٥١ |
| أوما تنشدونه عندكم... لقد نسكتم نسكاً أعجمياً | ٢٣١٢ |
| رفع عيسى ابن مريم عليه السلام، وهو ابنُ ثلاث وثلاثين سنة، ومات | ٢٥٩٩، ٢٨٣٣، |
| معاذ بن جبل | ٣٣٨٨ |
| كان ابن عمر لا يرى بها (يعني: المزارعة) بأساً حتى ... | ١٠٢٠ت |
| كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يتجرون في البحر، | |
| منهم سعيد بن زيد | ٧٥٤ت |
| لأنّه دخل المسجد مع أبنه فصلّى فأساء صلاته فحصبتُه | ٢٥٤٢ |
| لن يفوتك أصحابك | ٥١٧ |
| ما أراك إلاّ تسأل عمّا اختلف فيه | ٢٩٠٢ |
| الماء (تفسير قوله تعالى: ﴿يخرج الخبء في السموات﴾) | ٢٦٥٠، ٢٧٦٠ |
| هل قدم فلان | ٥١٧ |
| وكُلّ شيءٍ سألتني تحفظه | ٢٩٠٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ويذهب نحوه المختال عني | ٥٥٨ |
| لا تعجلْ حتَّى تُصَلِّي | ٥١٧ |
| لا خيرَ فيمن لا يجمعُ المال فيقضي دينه ويصل رحمه | ٢٢١١ |
| يُؤْتى بالرجل يوم القيامة فينظر إلى حسناته قد جمعت | ٢٨٩٢ |
| **سعيد الجرمي** | |
| أمّا القبور فإنَّهُنَّ أوانس | ٧٩٤، ٣٢٠٠ |
| **سعيد القرشي** | |
| لما هدم الوليد بن عبد الملك كنيسة دمشق كتب إليه ملك الروم | ٣١٠٥ |
| **سفيان الثوري** | |
| أحبُّ أن يكون صاحبُ العلم في كفاية لأنَّ | ٢٤٢٧ |
| أحسنوا باللّه الظنّ (تفسير قوله تعالى: ﴿وأحسنوا إنّ اللّهَ يحبُّ المحسنين﴾) | ٩٤ |
| أخبر أبو حازم سليمان بن عبد الملك بوعيد اللّه | ١٥٠٧ |
| أخبرني من رأى شيطاناً يفتي الناس في مسجد منى | ٢٨٧٩ |
| إذا أحبَّ الرجلُ الرجلَ في اللّهِ ثُمَّ أحدث حدثاً | ٢١٩ |
| إذا أردت أن تتزوّج المرأة فاهدِ للأمّ | ١٠٦٠ |
| إذا تزوّج الرجل فقد ركب البحر وإذا وُلِدَ له | ٣٦٦ |
| إذا ختمَ الرّجل القرآن قبّل المَلَكُ بين عينيه | ٣٩٥، ٣٣٨٠/م |
| إذا رأيتَ القاريء يلزم باب السلطان | ٤٦٢ |
| إذا عاين المريض الموت ذهب العرفة بينه | ١١٥ |
| إذا كانت لك إلى قارىءٍ حاجة | ٤٦٣ |
| إذا لقيت صاحب هوى في طريق فخذ طريق آخر | ٢٧٢٣ |
| اسمع حديثاً أحدِّثك به ثُمَّ لا أكلِّمك بعد سنة | ٩٧٠ |
| اشتكى بعض ولد محمد بن علي فجزع عليه جزعاً | ١٠٩٩ |
| اشتريه للشتاء | ٢٧٩٩ |
| اللهمَّ هوِّن عليَّ وعلى من معي إنّه ليس نفس | ٢٤٥١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أمّا أنا فلست أحفظه فإن كان أبو معاوية | ٢٦٢٥ |
| إن الثوب يستريح إذا طوي | ٢٠١٥ت |
| إنّ الحمار إذا زيدَ في علفه زيد في عمله | ٣٤٠ |
| إنْ صدقت رؤياك مات الأوزاعي | ١١٨٦ |
| إنّ ملك الموت صلى اللّه عليه وسلم إذا غمز وتين العبد انقطعت معرفته وانقطع كلامه | ٩٤٠ |
| أنا سفيان الثوري ... نعم ونسأل اللّه بركة ما يقولون | ٣٦٨ |
| إنّما سُمِّيت الدنيا الدنيا لأنها دنت، وأنّما سُمِّي المال | ٦٨ |
| إنّما مثل الدنيا مثل رغيف عسل مرّت به | ٦٩ |
| إنّما يتعلّم العلم ليتقى اللّه عَزَّ وَجَلَّ به | ٩٤٣ |
| إنه كان بين أظهركم رجل فرجلكم فَرَحٌلَكُم | ٢١٠١ |
| إنّي لأعلم رجلاً إنْ صلح صلحت الأمّةُ ... أنت | ١٧٤٠ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى بن عمران صلى اللّه عليه وسلم: يا موسى | ٢٠٦٥ |
| أوحى اللّه عَزَّ وَجَلَّ إلى نبيٍّ من الأنبياء: اتّخذ الدنيا | ١٣٢٢ |
| أوحشت البلادُ واستوحشت ولا أراها تزداد إلاّ وحشة | ٤٧٤، ٧٥٦ |
| بتُّ إحدى عشرة ليلة عند الحجّاج بن فرافصة فما أكل ولا شرب ولا نام | ١١٧، ٣٥٠٩ |
| بلغنا عن زيد بن ثابت أنّه كان من أفكَهِ النّاس في أهله | ١٠٣٨ |
| بلغنا في قول اللّه عزّ وَجَلَّ: ﴿وكانوا لنا خاشعين﴾ قال: الخوف الدائم | ١٥١٣ |
| بلغني أن الثوب إذا طوي رجع إليه ماؤه | ٢٠١٥ |
| بلغني أنّ المؤمنَ في الموقف ينظر إلى منازله في الجنّة | ٤٠٦، ١٠٨٣ |
| بلغني أنّه يرى نورٌ في الجنّة، فقيل: ما هذا النور؟ فقيل: حوراء ضحكت | ٩٧٠ |
| بينا أهل الجنّة في الجنة إذ سطع لهم نور في الجنة ،فقيل: | ١٨٢٨ |
| تاب من الذنب وأَمِنَ من الشرك وعَمِلَ | ٢٤٥٢ |
| تلك الأرامل قد قضيت حاجتها | ٣٣٧٨ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| التكبر على الأغنياء | ٤٦٤، ٩٩٢ |
| حضر باب عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه جماعة من مشيخة الفتح وغيرهم | ٦١٧ |
| الحمد للّه الذي صدقنا وعده وأورثنا الأرض | ٢٦٣٧ |
| الخلفاء خمسة | ٣٥٦٢ |
| ذهب من كنت أتعلَّمُ منه ومن كان يتعلَّمُ منّي | ٩٤٢ |
| سمعتُ بعض الصالحين: من أصحابنا يدعو في جوف الليل | ٦٧٥ |
| سُئِلَ لقمان الحكيم: أيُّ عملك أوثق في نفسك؟ قال: تركي ما لا يعنيني | ٨١٩، ٣٣٣٦ |
| صاحب السوء جذوة من النّار | ٥٢٢ |
| صنفان من النّاس إذا صَلَحَا صَلُحَ الناس: القرّاء والأمراء | ٤٦٩ |
| صلاة في الحرم مئة ألف صلاة، قال اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ | ٢٦٦٥ |
| طلبنا العلم وما لنا فيه نية ثم رزق الله | ١٧٢٢، ٢٩٦٩ |
| عليك بالورع يخفِّفُ اللّه عليك الحساب يوم القيامة | ٢٠٧٧ |
| العالم مثل السراج من مَرَّ به | ١٦٩٥ |
| قال أبو البحتري: لوددت أنّ اللّه عزّ وجل يطاع وإنّي عبد مملوك | ٤٨٩ |
| قال اللّهَ تبارك وتعالى في بعض كتبه: ما أحد أطاعني إلاّ استجبت له من قبل أن يدعوني | ٢٩٨٥ |
| قال اللّه عزّ وَجَلَّ في بعض كتبه: ما أحدٌ أطاعني إلاّ استجبت له | ٩٢٤ |
| قال بعض الحكماء: الصديق بالصحة هو الذي يحضك النصح فيما ساءَك وسرّك | ٩٩٢ |
| قال عيسى ابن مريم عليه السلام: لا يستقيم حُبُّ الدنيا | ١١٥٠ |
| قال لقمان الحكيم لابنه: ثلاثة من كن فيه فقد استكمل الإيمان | ١٣١١ |
| قال المسيح عليه السلام: كن وسطاً وامشِ | ١٠٨٦ |
| قال موسى عليه السلام: من أعبدكم يا بني إسرائيل؟ فقيل له: فلان ما يعرف فينا أعبدمنه | ٢٤٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قد بعثت بمائي إلى الطبيب بالحيرة وأنا بالكوفة ينظر إليه | ٢٤٢٦ |
| قرأت في بعض الكتب أنّ الحوت في الماءِ مكتوب على رأسه: من يأكله؟ | ٤٠٧ |
| قِصَر الأمل (الزهد) | ٢٨٤٨ |
| قلت لإسرائيل (أبي موسى): إنّه كان بين أظهرهم رجل | ٢١٠١ |
| قيل لبعض الحكماء: ما لكم أطلب الناس للعلم، قال: لأنّا أعمل النّاس به | ٦٩٤ |
| قيل للربيع بن خثيم: لو أرحت نفسك؟ | ١٢٠٤ |
| كان يقال: إذا فرح القلب ندیت العينان | ٢٧٣٨ |
| كان يقال: من أراد عِزاً بلا عشيرة، وهيبة بلا سلطان | ١٣١٠ |
| كلْ ما شئت ولا تشرب الماء فإنّك إذا لم تشرب لم يجئك النوم | ٤٠١ |
| كنت في حلقة مع مسعر، فجعل مسعر ينظر، فجعل يلتفت إلى حلقة أخرى | ٣٢١٣ |
| لقد بلغني أن الله تبارك وتعالى يأمر الملك من الملائكة بأمر | ١٢٧١ |
| لما انتهى موسى إلى البحر، قال: هُنْ أبا خالد فأخذه أفكل | ١٤٤٠ |
| لمّا جاء البشير إلى يعقوب صلى اللّه عليه وسلم، قال: على أي | ١٢١٣ |
| لو مات أهل الدنيا غيري وغيرك ما اعتبرنا | ٢٤٢٥ |
| ليس شيء من الكلام يضاعف من قول الرجل: الحمد للّه | ٢٠٦ |
| ليس بعاقلٍ من لم يعدَّ البلاء نعمة والرخاء مصيبة | ١١٨ |
| ما أخاف على دمي إلاّ من القرّاء أو العلماء | ٢٨٨١ |
| ما أسر إبليس اللعين من الكذب في السجود | ٢٦٦٢ |
| ما استودعتُ قلبي شيئاً قطّ فخانني | ٣١٦، ٢٩١٤ |
| ما أصاب إبليس من أيوب صلى اللّه عليه وسلم شيئاً إلاّ الأنين في مرضه | ٢٥٢ |
| ما أنفق الرّجل درهماً من نفقةٍ أعظم أجراً | ٢٤٩٥ |
| ما بعث اللّهُ نبياً إلاّ وقَد تَخوّف عليه | ٢٢٥٥ |
| ما شبَّهت القاريء إلاّ بالدِّرهم الزّيف إذا قشرته خرج ما فيه | ٢٨٨٠ |
| ما يجلسكم ... قوموا | ١٠٨٢ |
| من ازداد علماً ازداد وجعاً | ١٢٨٧ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| من طلب الرئاسة بالعلم فاته علم كثير | ١٨٣٠ |
| نقص الناس في حفظهم كما نقصوا في نيّاتهم | ٣٦٢ |
| النظر إلى وجه الظالم خطيئة | ٣٧١ |
| النهار يعمل عمله | ١٠٨٣ت |
| واللّه ما وضع رجل يده قطّ في قصعة رجل إلاّ ذَلّت له رقبته | ٢٧٢٢ |
| ويحك من يسكّن البحر إن انفتق | ٩٤١ |
| ويحك يا عطاء نحن جلوس والنهار يعمل عمله | ١٠٨٣ |
| ويحكم مَنْ يسكّن البحر إذا انبثق | ٢٩٧٠ |
| لا تعبأ بصاحب عيال | ٢٢٦٥ت |
| لا ولكنهم الذين يكثرون أكل لحوم الناس | ١١٧٤ |
| لا يعتدُّ بمن له عيال ...يَؤُمُّ بالرجل | ٢٢٦٥ |
| يا سبحان اللّه أنكروا عليّ غير منكر | ٢٤٧٩ |
| يا شفي كُلِ الحلال، وصل آخر الصفوف تقبل | ١٩٤٤ |
| يا عطاء ويحك قم حتّى نعمل فإنّ النهار يعمل عمله | ٣١٠٠ |
| يا فتى إنّ من كان قبلنا مرّوا على الخيل | ٥٨٦ |
| يا هذا الرجل إنْ كانت هذه السجادة للّه فلا يحلُّ لك | ٣٢٩ |
| يا هذا شكوت من يرحمك إلى من لا يرحمك | ١٣١٨ |
| يكسب الدرهم ويصلّي وحده أفضل لكي لا يضيع عياله | ٢٩٥٢ |
| **سفيان بن عيينة** | |
| أبشروا فإنّه ما استقصا كريم حقّه قطّ | ٣ |
| أخبر أبو حازم سليمان بن عبد الملك بوعيد الله للمذنبين فقال سليمان | ١٥٠٧ |
| أقعد فَحَدِّثْهُ بمئة حديث | ٥٠٩ |
| اللهمّ إنّي هو ذا أستحيي أنّ أسألك أن لا تجعل آخر العهد منّي | ٨٦٢ |
| اللهمّ لا تجعله آخر العهد منّي | ٨٦٢ |
| أما سمعتم قول أميّة بن أبي الصلت حيث أتى ابن جدعان يطلب نائلة | ٤٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّ من فتنة الرجل إذا كان فقيهاً أن يكون الكلام | ٢١٩٥ |
| أول ما كتب في الزبور: ويلٌ للظلمة | ٤٣٩ |
| أي باراً عودني منه الإجابة إذا دعوته | ١١٤٧ |
| أي ذلّت: تفسير قوله تعالى: ﴿وعنت الوجوه﴾ | ١٠٥٣ |
| أي سهلناه للتلاوة ولولا ذاك ما أطاق العباد أن يلفظوا به ولا أن يسمعوه | ١٠٤٢ |
| باع عبيد الله بن عبد الله بن عتبة أرضاً له بثمانين ألفاً | ٧٨٦ |
| بعلامات فيهم: سود الوجوه، زرق العيون ونحو ذلك (تفسير قوله تعالى: ﴿يعرف المجرمون بسيماهم﴾) | ٩٩٩ |
| بلغنا أنّه إذا كان أول الليل نادى منادٍ في السماء: ألا ليقم العابدون | ٤٠٣ |
| بلغني أن أبا بكر الصديق رضي الله عنه صلى على جنازة ثم أخذته العبرة ثم قال: | ٢٥٨ |
| بلغني أنّ ابنَ أمِّ مكتوم رحمه اللّه إذا تَصَدَّق بصدقة قام بنفسه فوضع الصدقة | ٤٩١ |
| بلغني عن حذيفة بن اليمان أنّه قال لرجل: أيسرُّك أن | ١٣٦٨ |
| تبع محمد بن المنكدر جنازة رجلٍ كان تَسَفَّهَ بالمدينة | ١٢٤٧ |
| تلك ضالة لا توجد | ٤٣٨ |
| جاء رجل إلى علي بن عبد الله بن عباس بن عبد المطلب في حاجة فقال: | ١٠٦٣ |
| الجاسوس له ذكر في كتاب اللّه عَزَّ وَجَلَّ ﴿وفيكم سمّاعون لهم﴾ | ٣٣٩٤ |
| حَجَّ ستين حجة | ٨٦٢ |
| حج علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب رضي الله عنهم فلما أحرموا واستوت به راحلته | ٧٨٨ |
| الحسد أول ذنب عُصِيَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ به في السماء يعني حسد إبليس آدم | ٦٥٩ |
| الحواري: الناصر | ٤٥٣/ت |
| دخل هشام بن عبد الملك الكعبة، فإذا هو بسالم بن عبد الله بن عمر | ٨٠ |
| دعا رجل بعرفات إلى جنب عمر بن عبد العزيز، فقال في دعائه: اللهم | ١٨١٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| دعاؤك لنفسك خير لك من دعائي لك، أما سمعتَ | ١٢٤١ |
| رجلٌ واقفٌ على باب داري جاءني في حاجة ليس حاجته عندي | ٨٦٢ |
| سأل رجلٌ رجلاً حاجة، فقال له: صَنَعَ اللّه لك | ٥٥٣ |
| صاد رجل غراباً فأُتِيَ به أبا بكرٍ الصديق رضي اللّه عنه | ٩٨ |
| صوتاً خفياً، فقال: هو صوت الأقدام وقوله عَزَّ وَجَلَّ | ١٠٥٣ |
| طلبت هذا الأمر لغير اللّه فأعقبني إلى ما ترون | ٨١٤ |
| قال أكثم بن صيفي: الانقباض من الناس مكسبة للعداوة، وإفراط الأنس بالناس مكسبة للقرناء السوء | ٦٧١ |
| قال بعض الحكماء: لا تسخر من شيءٍ فَيَحُر بكَ | ٨٩١ |
| قال بعض الحكماء: ينبغي لصاحب الدنيا أن يكون بمنزلة المريض | ٢٧١٧ |
| قال رجل لبعض الحكماء وأراد مفارقته أوصني، قال له: إيَّاك أن تسيءَ إلى مَنْ تُحِب | ٩٢٢ |
| قال سليمان لأبي حازم: سل حوائجك، فقال: قد رفعتها إلى من | ١٣٢٠ |
| قال عيسى ابن مريم صلى اللّه عليه وسلم: بُطِحَت لكم الدنيا وجلستم على ظهرها فلا ينازعكم | ٩٨٤ |
| كان أبو خالد يزيد المؤذن إذا أذّن بكى وصرخ | ٢٦١٣ |
| كان بالكوفة ثلاثة لو قيل لأحدهم إنّك تموت غداً لم يقدر | ٣٢٤ |
| كان سعيد بن العاص إذا سئل سائل ولم يكن عنده شيء | ١٣٠٨ |
| كان عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه يقول لمن ورد عليه هل يثبت | ١٢٦٠ |
| كان محمد بن جحادة من العابدين وكان لا ينام الليل إلا اليسير | ٢٣١٩ |
| كان محمد بن سوقة لا يحسن يعصي اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٣٢٤ |
| كان مورِّق العجليّ من العبّاد المجتهدين | ٧٨٤ |
| كان يقال إذا فرح القلب نديت العينان | ٢٧٣٨ |
| كان يقال إن أفضل ما أُعطي العبد | ٢٦٦٩ |
| كانت غلة طلحة بن عبيد الله | ٤٨٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| كتب سعد بن أبي وقّاص إلى عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه وهو على الكوفة | ٥٤٦ |
| كنت في حلقة مع مسعر فأخذ مسعر ينظر | ٣٢١٣ |
| لمّا احتضر ضيغم قيل له: ألا توصي؟ قال: بلى، أوصيكم بالكتاب والسنة | ٣٨٢ |
| لما أهبط آدم صلى اللّه عليه وسلم قال: يا رَبِّ أطعمني | ٢٩٠٧ |
| لو صليت خلف إنسانٍ يقرأ قراءة حمزه الزيات لأعدت الصلاة | ٣٠١٦ |
| ليس العاقل الذي يعرف الخير من الشر | ٦٧٠ت |
| ما أحب إني ذهبت أتعرض لغضب الله | ٢٦٣٥ت |
| ما أقرب شيءٍ وأبعد شيءٍ، وآنس شيءٍ وأوحش شيءٍ؟ | ٩٩٤ |
| مارأيت سرفاً قطّ إلاّ وإلى جانبه حَقٌّ مُضَيَّعٌ | ٦٧٠ |
| ما سُمعَ من أيّوب مزحة قطّ غيرها | ٢٦٠٠ |
| ما يقول هذا الخراساني؟ ... قولوا له نعم | ٢٢٧٩ |
| معنى الزهد هو ثلاثة أحرف: زاي وهاء ودال، فأما معنى الزاي | ٧٠ |
| معنى قول النبي صلى اللّه عليه وسلم: «من نوقش الحساب عُذِّب» والنقش هو الاستقصاء حتّى لا يترك منه شيء | ٣ |
| ملكان بين نابي الإنسان (تفسير قوله تعالى: ﴿ما يلفظ من قول إلاّ لديه رقيبٌ عتيد﴾) | ٢٦ |
| الملكان لا يعلمان الغيب ولكن إذا هم العبد بحسنة فاح منه رائحة المسك | ٢٨ |
| نشرت رجل عروة بالمنشار | (٢٥) ملحق |
| نَظَرَ بعض الملوك إلى العذرى الناسب في عباءة فازدراه | ٦٠٤ |
| نظر قوم إلى راهب يخرج نحو الجبل، فقالوا له: أين تريد؟ | ٨٥٥، ٢٠١٤ |
| نعم (أليس الحديث صحيحاً الذي حدثتنا به في زمزم أنه لما شرب له). | ٥٠٩ |
| هو مالك بن أنس | (٢٤) ملحق |
| وفي تفسير جاهد: «زهرة الدنيا ولذّتها» (تفسير قوله تعالى: ﴿وحيل بينهم وبين ما يشتهون﴾) | ٤٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ومعنى الستر الجميل أن يستر على عبده في الدنيا ثم يستر عليه في الآخرة | ٢ |
| لا تعفروا الأقدام إلا إلى أقدارها | ١٤٣٠ |
| لا نعلم أربعة أدركوا الرسول صلى اللّه عليه وسلم هم وأبناؤهم | ٢٣٠٢ |
| يا أبا إسماعيل ذهب بهاء العلم | ٣١٢١ |
| يا أبا علي! لا تعتد بصاحب عيال | ٩٩ت |
| يا عبد اللّه إنّهُ لقبيح بالرّجل أن نظن به الخير | ٨٦٢ |
| يستحبُّ للرّجل إذا دعا أن يقول في دعائه: اللهم استرنا بسترك الجميل. | |
| ومعنى الستر الجميل أن يسترَ على عبده في الدنيا | ٢ |
| **السكن بن سليمان** | |
| كتب بعض الزّهاد إلى أخ له: كَثُر تَعَجُّبي من قلب | ٢٤٠٣ |
| **سلام بن أبي مطيع** | |
| كان أيوب السختياني يخفي قيام الليل فيقوم أول الليل | ٢٤٧٧ |
| **سلم بن قتيبة** | |
| الدنيا العافية، والشباب الصحة | ١٧٢٩/م |
| رد المعروف أشدُّ من ابتدائه، لأن الابتداء بالمعروف نافلة | ٦٨٢ |
| عددت أربعاً وثمانين لقمة من خبز الماء | ٢٦٠٥ |
| قال بعض الحكماء: ما أعان على نظم | ١٧٢٩ |
| يا غلام! اسقه الماء | ٣٦٥ |
| **سلم الحاجب** | |
| هاجت ريح سوداء في أيام المهدي فاسودت الدنيا وخفنا الساعة | ١٠٨٠ |
| **سلم الخواص** | |
| بينما أنا ببلدِ الرّوم أسير في جوف الليل فإذا هاتف يهتف وهو يقول: | |
| القوت كثير | ٣٦٤ |
| بينما نحن نسير ليلة في بلاد الرّوم وكنت أمشِ أمام النّاس فإذا | ١٠٤٦ |
| يا أبا إسحاق، نعم الشيء هذا إن لم يكن تكرمة على دين | ٣٦١ |

**سلمان الفارسي**

أصول الشجرة الذهب، والفضة أعلاها، يا جرير تدري ما ظلمة النّار...

فإنّه ظلم الناس بعضهم بعضاً في الأرض ٨٤٧

إن الأرض لا تقدس أحداً وإنما يقدس المرء عمله ١٢٣٨

أوصني يا خليفة رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم ١١٢

تدنو الشمس من رؤوس الخلائق، وليس على أحدٍ يومئذٍ طُحربة ٧٢١

لما رأى إبراهيم عليه السلام ملكوت السموات والأرض أبصر عبداً على سوء ٢٩٢٦

لو حدّثت النّاس بكلّ ما أعلم لقالوا: رحم الله قاتل سلمان ١٧٥٧

ما أبكي جزعاً على الدنيا ولكن عهد إلينا رسول الله صلى اللّه عليه وسلم

أن تكون بلغة أحدنا من الدنيا كزاد الراكب ١١٢٤

ومن أعجب ما رأينا صعود غنيمات العامريّ على سرير كسرى ١٨٢٧

يا جرير، تواضع في الدنيا، فإنّه من تواضع في الدنيا ٨٤٧

يمطرُ النّاس قبل البعث أربعين عاماً مطراً خاثراً ٧٦

**سلمة**

اللهم إني أشكو إليك قلة علمي بك ١٨٧٧

**سلمة بن دينار = أبو حازم**

**سليمان بن بلال**

بعث بعض خلفاء بني أمية إلى أبي حازم بمال فرده فقال له: يا أبا حازم ٢٧٤٣

**سليمان التيمي**

لقن ميتك فإذا قالها فدعه ولا تضجره ٣٨٦

يا ابن آدم إذا رأيت الناس يكرمونك على طاعة الله عز وجل ١٥٤٩

**سليمان بن حرب**

كنا عند حماد بن زيد فحدثنا بأحاديث كثيرة (٢٢) ملحق

**سليمان بن داود**

أوتينا مما أوتي الناس ومما لم يؤتوا ٢٩٢٨

تسبيحة في صحيفة مؤمن خير مما أعطي ابن داود ٢٠٧٤

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| هل تدرون ما قال لها؟ ... قال: ورب السماء والأرض | ١/٢٤٣٥ |
| وأحدكم يسرق إوزة جاره ثم يدخل المسجد والريش على رأسه | ٣١٠٦ |
| **سليمان بن عبد الملك** | |
| أتاني وجوه أهل المدينة كلهم ولم تأتني | ٣٤٥٦ |
| بل أنت شتمت على نفسك، أما علمت أن للجار على الجار حقاً؟ | ٣٤٥٦ |
| زيادة منطق الرجل على عقله خدعة، وزيادة | ٢٣٥٣ |
| سل حاجتك | ١٣٢٠ |
| عفواً، عفواً، من قدر أن يحسن الكلام قدران | ٢٢٣٧، ٣٤٢٢/م |
| العاقل احرص على طلب لسانه منه على معاشه | ١٦٩٧ |
| فأين رحمة اللّه؟... | ١٥٠٧، ٣٤٥٦ |
| قصته مع أبي حازم | ٣٤٥٦ |
| كل من كليتيه فإنها تزيد في الدماغ | ٣٢٦٠ |
| ما أقدمك؟ ... وكيف ذلك؟ | ١١٥٩، ٣٢١٨ |
| ما لنا نكره الموت؟ | ٢٧١، ٣٤٥٦ |
| ما ها هنا رجل ممن أدرك أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم يحدثنا؟ | ٣٤٥٦ |
| هات يا أعرابي ... أما أنت يا أعرابي فقد نصحت وأرجو أن الله | ٦١٣ |
| يا أبا حازم عظني وأوجز | ٣٤٥٦ |
| يا أبا حازم ما لنا نكره الموت؟ | ٢٧١، ٣٤٥٦ |
| يا أبا حازم ما هذا الجفاء؟ | ٣٤٥٦ |
| يا شيخ أيسرك أن تموت؟ ... ولم ولقد بلغت في | ٢٠٢١ |
| **سليمان بن علي (أمير البصرة)** | |
| ما تنكر لله قدرة، إلا إني أنكر أن يكون أحد من أهل زماننا يفعل به هذا | ٨٦٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **سماك بن حرب** | |
| أنّ عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه كان أروح كأنّه راكب والناس يمشون | ١٩٦ |
| هجا النجاشي وهو قيس بن عمرو بن مالك الحارثي الشاعر بني العجلان، | |
| فاستعدوا عليه عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه | ٩٨٨ |
| **سهل بن حاتم** | |
| بتُّ ليلة في مسجد بيت المقدس، فقمت في آخر الليل فقضيت وردي | ١١١ |
| **سهل بن علي** | |
| أنشد: لا أعيرالناس سمعي ليسوا لي حبيبا | ٣٠٧٦ |
| **سهل أخو حزم** | |
| رأيت مالك بن دينار بعد موته في منامي، فقلت: يا أبا يحيى | ١٤١ |
| **سهل بن عمرو** | |
| لم تُمَعَّر وجوهكم؟ دُعُوا فَأتوا، فأسرعوا، وأبطأنا | ٦١٧ |
| **سوار بن عبد اللّه** | |
| إنّ هذه لحِبوة صدق في يزيد | ٢٠٨٦ |
| الحسن وابن سيرين سيدا أهل البصرةعربيّهم ومولاهم | ٢٠٨٧ |
| **سيبويه** | |
| أخيْين كُنّا فرّق الدهرُ بيننا | ٦٢٧، ٣٣٩٥ |
| **حرف الشين** | |
| **شاذ بن فياض** | |
| قال بعض العبّاد: لم أجد طعم العيش حتى استبدلت الخمص | ٢٢١٨ |
| قالت الحكماء: فضل الأدب في غير الدِّين مهلكة وفضل الرأي إذا | ٢١٦٧ |
| قيل لبعض الحكماء: من أحقّ النّاس بالرّحمة؟ | ١٥٦٥ |
| **الشافعي (محمد بن إدريس)** | |
| بقي محمد بن عجلان في بطن أمه أربع سنين | ٣٣٥٣ت |
| ولدتُ في السنة التي مات فيها أبو حنيفة | ٣٥٥٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **شبيب بن شيبة** | |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى لم يرض أن يجعلك دون | ١١٨٢ |
| ذاك رجل ليس له صديق في السر ولا عدو في العلانية | ٣٢٩٦ |
| كان شبيب بن شيبة أبصر الناس بمعاني الكلام | ١٥٠٠ |
| كُنّا في طريق مكة فجاء أعرابي في يوم صائف شديد الحرّ ومعه جارية له سوداء | ٢٧٠ |
| يا أمير المؤمنين ما عند اللّه خير لها ممّا عندك وثواب اللّه | ٧٩٢ |
| **شبيب بن غرقدة** | |
| خرج علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه ومعه صاحب له، فلما انتهى إلى موضع | ١٥٧١ |
| **شبيل بن عوف** | |
| ما اغبّرت نعلي في طلب دنيا قطُّ، وما جلست | ١١٦٩، ٢٣٤٤/م |
| **شريح بن عبيد** | |
| إن بني إسرائيل لم يكن فيهم ملك إلاّ ومعه رجل حكيم | ٤٥٩، ٢٩١٦ |
| كانت تعزية أهل الجاهلية كل مصيبة ما عدا النفس | ٢٤٢٣ |
| **شريح العابد** | |
| كان في همذان رجلٌ له فضل وعبادة | ١٦٢٩ |
| **شريح القاضي** | |
| الثنية لها جمال، والضرس له منفعة | ١٨١٤ |
| تضحك وأنت تراني أتقلب بين الجنة والنّار | ١٧٩٩ |
| أتى شريحاً القاضي قوم برجل فقالوا: إنّ هذا خطب إلينا | ٨٤٠ |
| حاجتك عندنا فائت منزلك فإنّها ستأتيك | ١١١١ |
| **شريك بن عبد الله** | |
| أربعة أشياء من العجب عمياء محيصبة | ١٧٤٢ |
| لو فعلت ذلك لأتاك نصيبك | ٢٣٢٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **شعبة بن الحجاج** | |
| إنّ هذا الحديث يصدُّكم عن ذكر اللّه وعن الصلاة فهل أنتم منتهون | ٨١٢، ٣٢٤٠ |
| حدثنا أيوب سَيِّدُ الفقهاء | ١١٨٥ |
| ليس في بيتي حديث أجود من هذا | ٢٥٩٦ |
| من يتهم بالكذب، ومن يكثر الغلط، ومن يخطىء في حديث مجمع عليه | ١٨٩٠، ٣٠٥٢ |
| **الشعبي (عامر بن شراحيل)** | |
| أحبَّ أهل بيت نبيِّك ولا تكن رافضياً | ٢٤٢٨ |
| اسقني أهون موجود وأعزّ مفقود | ١٩٨٢ |
| أشتهي أعزَّ مفقود وأهون موجود | ٣٦٥ |
| إنّ للّه تبارك وتعالى عباداً وراء الأندلس | ١٢٠٠ |
| إنّ لله تبارك وتعالى ملكاً موكلاً بجمع الأشكال بعضها إلى بعض | ١٢٥٢ |
| إنْ كنت صادقاً فغفر الله لي، وإن كنت كاذباً فغفر اللّه لك | ٨٠٠، ٣٣٢٤ |
| إنّه لنافذ الطعنة ركين العقدة ... ما قلت إلاّ حَقّاً إنّه لخيّاط | ٢٤٣٠ |
| بلغ مسيلمة أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا تفل | ١٩٣٠ت |
| بيان من العمى وهدى من الضلالة وموعظة من الجهل | ٤٩٤ |
| تعاشر النّاس بالدِّين والتقوى ثم رفع ذلك | ٢١١٧ |
| خَصَّ اللّه تبارك وتعالى أبا بكرٍ الصديق رضي اللّه عنه بأربع خصال لم يُخَصِّصْ بها | ٢٨١٥ |
| ذلك نكاح لم نشهدْه | ٢١٤٧ |
| ركب زيد بن ثابت فأخذ ابن عباس بركابه فقال له: لا تفعل يا ابن عم رسول اللّه | ١٣١٤ |
| الرجال والنساء فيه سواء أما سمعت قول | ١٢١٧، ٣٣٧٨ |
| شرارُ كُلِّ دين علماؤهم غير المسلمين | ١١٦٥ |
| علقمة ومسروق والرّبيع، وكان الربيع أشدّ القوم اجتهاداً، وكان عبيدة السَّلْمَاني | ٤٢٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| في رجلٍ أوصى لأرامل بني فلان، قال: الرجال والنساء فيه سواء | ١٢١٧، ٣٣٧٨ |
| كان الأسود صوّاماً قوّاماً كثير الحج وكان علقمة | ٤٢٩ |
| كان فَدْيُ أسارى بدر أربعة آلاف إلى ما دون ذلك فمن لم يكن | ٢١٧٨ |
| كان الناس يجلسون في مسجدهم ولا يجلسون | ١٩١٠ |
| كنت مع قتيبة بن مسلم بخراسان على مائدته | ٣٦٥ت، ١٩٨٢ت |
| لمّا بويع أبو بكر رضي اللّه عنه | ١٢٨٩ |
| لمّا قتل عثمان بن عفان رضي اللّه عنه رثاه كعب بن مالك الأنصاري: | |
| عجبتُ لقوم أسلموا بعد عِزّهم | ٢٦٤، ٢٨٠٧ |
| لمّا كان يوم القادسية طُعِنَ المغيرة بن شعبة في بطنه | ٢٨٣٤ |
| ما أفظع الموت وأبعد السَّبا، وأشدّ منهما فقير يتملّق صاحبَ مال | ٥٠٥، ٢٤٢٠ |
| ما جلس الربيع بن خثيم في مجلسٍ | ١٩٠٩ |
| ما كتب سواداً في بياض قطّ، ولا حدَّثني رجل بحديث إلاّ حفظته | ٣١٧ |
| موسى صلى اللّه عليه وسلم ... محمد صلى اللّه عليه وسلم ...هؤلاء أشراف الرسل (تفسير قوله تعالى: ﴿تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من كَلَّم اللّه﴾) | ١٩٩١ |
| ها هنا قومٌ فرغوا من القضاء!! | ٢٥٠٩ |
| هنيئاً مريئاً غير داءٍ مخامر | ٣٣٢٤ |
| هؤلاء أشراف الرسل يوم القيامة | ١٩٩١ |
| وما يعجبك من هذا، وهل يسفك الدّم | ٦٧٣ |
| يا أبا يزيد أطرفنا ممّا سمعت بمكّة | ٦٧٣ |
| يقال أنّ للّه تبارك وتعالى ملكاً موكلاً | ١٢٥٢ |
| **شعيا النبي** | |
| يا سماء، استمعي ويا أرض أنصتي | ١١١٩ |
| يدوسون الأمم كدياس البيادر | ١٨٦٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **شعيب بن حرب** | |
| لما خرجت إلى يوسف بن أسباط اكتريت حماراً... ما كنت لأحمله أكثر | ٢٧٧٤ |
| **شعيب بن سليمان** | |
| أتى ذو القرنين مغيب الشمس فرأى ملكاً من الملائكة كأنّه | ١٣٤٠ |
| **شقيق بن إبراهيم البلخي** | |
| إدمان البكاء على ما سلف من الذنوب، والخوف | ٢٦٤٥ |
| إذا أبغضت فيه الحبيب وجانبْتَ فيه القريب | ٢٨٠٩ |
| إذا جعلت الآخرة لك قراراً ولم تسم لك | ٢٨٠٩ |
| إذا جعلت أحداث يومك وليلتك | ٢٨٠٩ |
| إذا جعلت الدنيا خلف ظهرك وجعلت الآخرة نصب عينيك | ٢٨٠٩ |
| إذا جوّعت قلبك وأظمأت لسانك من الفحشاء | ٢٨٠٩ |
| إذا رأيت العبد قد منع الطاعة واستوحش | ٣١١٧ |
| إذا سمجت الدنيا في عينيك، وقذفت أملك بين يديك | ٢٨٠٩ |
| إذا عرفت وبال الشهوات غداً وسرعة انقطاع | ٢٨٠٩ |
| إذا كان اللّهُ لك جليساً ولم تر سواه لنفسك أنيساً | ٢٨٠٩ |
| إذا كان ما أسخطه أمرٌ عندك من الصبر وكان | ٢٨٠٩ |
| إذا كنت تقدم على حبيب وتصدر عن أمل قريب | ٢٨٠٩ |
| أصَلَّنَا أصولنا على أنّا إذا رُزِقْنا أكلنا، وإذا مُنِعْنَا | ١٤٤ |
| إنّ اليقين إذا تَمَّ بينك وبين اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٢٨٠٩ |
| أنت أستاذنا يا أبا إسحاق | ٣٣٥٠ |
| تركت خراسان وخرجت من نعمتك | ٢٨٩ |
| سِرْتُ في بعض الفلوات فرأيت طيراً مكسورَ الجناحين في فلاه | ٣٣٥٠ |
| فعلى ماذا أصَّلْتُم أصولكم يا أبا إسحاق؟ | ١٤٤ |
| لقيت إبراهيم بن أدهم في بلاد الشام فقلت له: | ٢٨٩ |
| يا أبا إسحاق أنت أستاذنا (إبراهيم بن أدهم) | ١٤٤ |

يا نفس الذي قيَّضَ هذا الطير الصحيح لهذا الطير المكسور الجناحين في فلاة من الأرض ٣٣٥٠

**شقيق بن سلمة = أبو وائل**

**الشماخ بن ضرار**

أمتار لأهلي طعاماً ٥٥٦

**شيبة بن عقال**

كنت رديف أبي فلقيه جرير على بغل فحياه ١٠٨٨

يا أبة تفعل هذا وقد هجاك ١٠٨٨

**حرف الصاد**

**صالح المري (صالح بن بشير المري)**

إنّ العبدَ إذا كان يدعو اللّه عَزَّ وَجَلَّ في السَّراء فنزلت به ٢٧٣٦

إنْ لم تكن مصيبتك أحدثت في نفسك موعظة ٧٩١، ٣٢٠٣

أنتِ واللهِ كاذبة ... يا دار أين أهلك؟ يا دار أين خدّامك؟ ... بلغني أن أهل النّار ١٥١٦

أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى داود صلى اللّه عليه وسلم: يا داود اسمع منّي ١٧٤٩

بلغني أنّ اللّه تبارك وتعالى يجمع العلماء يوم القيامة فيقول ١٦٧٨

بلغني أنّ أهل النّار يعذّبون بأنواع من العذاب فكلّما ٢٤١١

رحمة اللّه على أديب الملوك وجليس الفقراء وحياة ١٥٠٠

سمعت بعض أصحابنا يقول: رحم اللّه امرءاً كان ذا حسبٍ فصان حسبه ٢٩٧٨

قال بعض الحكماء: إذا غرست من المعروف غرساً، فأحسن ٢٦٤٢

قال بعض الحكماء: من نظر إلى امرأة ثم غض طرفه عنها ٢٨٥٨

قال بعض الزّهاد: رَحِمَ اللّه امرءاً كان ذا حسبٍ فصان ١٧٤٤

قال حكيم لحكيم: أوصني، قال: اجعل اللّه تبارك وتعالى هَمَّكَ ٢٦٥٧

قال داود صلى اللّه عليه وسلم: يا رَبِّ دلّني على عملٍ يدخلني ١٧٥٢

قام رجل من العباد إلى يزيد بن المهلب، فقال: إنّك واللّه يا أيها الأمير ٢٦٨٠

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| كن إلى الاستماع أسرع منك إلى | ١٧١٥ |
| لما مات عطاء السلمي، حزنت عليه حزناً شديداً | ٣٥٧٧ |
| ليس من شهوات الدنيا ولذاتها شيء إلا وهو متحول | ٢/٣٠١١ |
| مر على باب الدار بإزاء باب جعفر بن سليمان الهاشمي فإذا هو بجارية تدخل | ١٥١٦ |
| مؤمل حيناً لتبقى له فمات المؤمل | ١٩١ |
| يا أخي، استقبل اللّه إنْ عافاك أن تتوب | ٢٨٥١ |
| **صالح بن كيسان** | |
| رأى بعض متفرّسي العرب معاوية وهو صبي صغير | ٢٣١١ |
| **صالح بن مسمار** | |
| بما أوصي، لم أدع من الدنيا قليلاً ولا كثيراً إلاّ | ١٦٥٤ |
| ما أدري أيُّ النعمتين أفضل | ٢٦٨٦ |
| **الصالحي** | |
| ومن يأمن الدنيا يكن مثل قابضٍ | ٣٠٢٥ |
| **صحار بن عائذ** | |
| رأيت الحسن في بعض طرقات مكة في جوف الليل وهو يجر رداءه ويقول | ٢٩٣٧ |
| **صرمة بن قيس** | |
| ثوى في قريش بضع عشرة حُجَّة | ٧٧٩ |
| **صعصعة بن صوحان** | |
| إذا لقيت المؤمن فخالطه وإذا لقيت الفاجر | ١٠٨٥ |
| أنا كنت أكرم على أبيك منك | ١٠٨٥ت |
| من الفجِّ العميق ... البيت العتيق ... عفا الأنثى وأنضر الشجر | ١٨٣٥ |
| **صفوان بن محرز** | |
| إذا دخلتُ بيتي وأكلتُ رغيفي وشربتُ من الماء فعلى الدنيا العفاء | ٧٨١ |
| سألت ابن عمر هل سمعت من النبي صلى اللّه عليه وسلم في النجوى شيئاً؟ | ٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان داود عليه السلام ينادي في جوف الليل: أوه من | ١٥١٧ |
| **صلة بن أشيم** | |
| يا فلان إن تنج منها تنج من ذي عظيمة | ١٢٢٩ |
| **حرف الضاد** | |
| **ضبة بن أد** | |
| إن الحديث له شجون | ٥٣٢ |
| سبق السيف العذل | ٥٣٢ |
| **ضبة بن محصن** | |
| كان علينا أبو موسى الأشعري أميراً بالبصرة فوجهني في بعثة إلى عمر | |
| ابن الخطاب | ٢٢٣٨ |
| كتب عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه إلى أبي موسى | ١١٩٨ |
| **الضحاك بن مزاحم** | |
| الأنفاس (تفسير قوله تعالى: ﴿إنّما نعدُّ لهم عَدّاً﴾) | ١٠٥٠ |
| الخائفون الذين صدقوا المخافة من اللهِ، قلوبهم من الخوف قرحة | ٢٢٤٠ |
| دعاء موسى حين وُجِّه إلى فرعون ودعاء رسول الله صلى الله عليه وسلم | |
| عليهم يوم حنين | ٢٨٩٠ |
| ستوره، وأهل اليمن يسمون الستر المعذار | ١٠٧٠ |
| لا أدري ما صعد اليوم من عملي | ٢٩٨٦ |
| يُشَفِّعهم في إخوانهم ويزيد من فضله ... يشفعهم في إخوان إخوانهم | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات﴾) | ٤٩٥ |
| **ضرار بن القعقاع بن معبد بن زرارة** | |
| الحمد للّه حنطة الأهواز، وتمر الفرات وزيت ... إلى ماذا صار أمرهم ... | |
| هي عليّ | ١٩١٣ |
| **ضمرة بن ربيعة** | |
| رأيت عابداً من العُبّاد وقد اجتمع عليه النّاس وهو يقول: عجبت من الناس | ٢١٩٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يقال: ثلاثة من لم يكن فيه لم يجد طعم الإيمان | (٩) ملحق |
| **ضيغم** | |
| بلى أوصيكم بالكتاب والسنة، وبحسن الجوار | ٣٨٢ |
| **حرف الطاء** | |
| **طارق بن شهاب** | |
| أنّ رجلاً ظهرت به خنازير وبلاء في جسده فخرج إلى البادية | ٢٢٢٨ |
| **طاوس بن كيسان** | |
| أردت أن يعلم أنّ في عباد اللّه من يستصغر ما يستعظمه | ١٨٤٢ |
| أنين المريض شكوى اللّه عزّ وَجَلَّ | ٢٥٣ |
| أول من ثوّب بصلاة الصبح على عهد أبي بكرٍ الصديق بلال | ٢٠٤١ |
| رجل صالح من أهل بيت النبوّة لأسمعنّ إلى دعائه الليلة (علي بن الحسين ابن أبي طالب) | ٤١٥ |
| فحفظتهنّ فما دعوت بهنّ في كربٍ إلا فرّج عنّي | ٤١٥ |
| كتب إلى عمر بن عبد العزيز: استعن بأهل الخير يكن عملك خيراً كله ولا تستعن بأهل الشرّ | ٤٦٦ |
| لم تر قاتل عثمان رضي اللّه عنه | ١٧٦١ |
| ما البحر من حاجتي ... ما صنعت بمالنا ... أفسدت علينا مالَنا | ٢٥٨٨ |
| لا صبر له على النساء | ١٠٦٩ |
| يا بني! إذا قدمت مكّة فجالِس عمرو بن دينار فإنّ أُذُنَه | ١٨٤ |
| **طلحة بن عبيد اللّه (طلحة الخير)** | |
| إنّ رجلاً تبيت هذه في بيته لا يدري ما يطرِقُه من اللّهِ لغرير باللّه | ٤٨٤ |
| خذه بارك اللّه لك فيه فإنّي لأستحيي | ١٦٦٨ |
| كان غلة طلحة بن عبيد الله رضي الله عنه كل يوم ألف وافٍ | ٤٨٥ |
| ما سئلت بهذه الرحم قط قبل اليوم، وقد بعت لي حائطاً بسبع مائة ألف درهم | ١٣٠٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا بنية حولِيني من هذا المكان فقدأضرَّ بي الندى | ١٢٥٥ |
| **طلق بن حبيب** | |
| اللهم هب لنا يقيناً يُهَوِّن به علينا مصائب الدنيا | ٢٩٤٠ |
| الغفلة سنة الكريم | (١٠) ملحق |
| **طلق بن معاوية** | |
| قدم رجل منا من سفرٍ يقال له: عبد بن عوف، فلمَّا قدم مهّدت له امرأته فراشاً فنام عليه | ٤٧١، ٢٣٨٥ |
| **ظالم بن عمرو بن ظالم = أبو الأسود الدؤلي** | |
| **حرف العين** | |
| **عاصم** | |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه إذا بعث عاملاً اشترط عليه أربعاً | ١٢٢٠ |
| **عاصم بن ضمرة** | |
| ذمّ رجل الدنيا عند علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه | ١٢١١ |
| **عاصم بن أبي النجود** | |
| كان لأبي وائل شقيق بن سلمة خصٌّ يكون فيه هو وفرسه | ١١٨٣ |
| **عامر بن أجيمر** | |
| العز والعدد من العرب في معد ... أنا أبو عشرة وعم عشرة وخال عشرة | ٢٠٢٦ |
| **عامر بن جَشيب الأحموسي** | |
| إنّ العبد ليعمل سراً ما يطّلعُ عليه أحد | ١٣٤٢ |
| **عامر بن ضبارة** | |
| أنّا نظرنا فوجدنا الصبر على طاعة اللّه أهون من الصبر على | ١٥٥٩ |
| أيّها الناس الصبر على طاعة اللّه | ١٩٧١ |
| **عامر بن الطفيل** | |
| يا جواد اللسان من غير فعل | ٣٠٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عامر بن الظرب العدواني** | |
| يا معشر عدوان، إنّ الخير ألوف | ٢٣٣٩ |
| **عامر بن عبد اللّه بن الزبير** | |
| اللهم إن خوف النار منع النوم مني فاغفر لي | ١٥٤٧ |
| ما أقول فيمن كان أبوه أصله وابنه فرعه | ٢٤٤ |
| مات أبي فما سألت اللّه عز وجل حولاً | ١٧١٤ |
| واللّه ما أجمع عليكم عياً ولؤماً من أخَذَ شاةً | ٢٤٥٨ |
| يا رب غدا الغادون في حوائجهم وغدوت إليك | ٤٠٨ |
| يا نفس بهذا أُمِرْتِ ولهذا خلقت يوشك أن يذهب ... يا نفس | ١٥٤٧ |
| **عامر بن عبد الله بن القيس** | |
| أبكاني الليلة التي صبيحتها يوم القيامة | ٤٠٨ |
| اللهم إن هؤلاء يغدون ويروحون ولكلٍ حاجة | ٤٠٨ت |
| **العباس بن عبد المطلب** | |
| اللهم إنّه لم ينزل بلاء من السماء إلاّ بذنب ولا يُكْشَفُ إلاّ بتوبة | ٧٢٧ |
| هو أكبر منّي وأنا ولدت قبله | ٣٣٩١ |
| **عباس بن مرداس السلمي** | |
| أتجعل نهبي ونهب العبيد بين عينية والأقرع | ٣٣٦٠ |
| يا عبّاس كيف كان إسلامك ... صدقت | ٢٠٤٤ |
| **العباس بن مسلم** | |
| كان يوسف بن أسباط لا يرى أن يأمر السفلة | ٢٥٧٥ |
| **عباية بن رفاعة** | |
| التوبة النصوح تكفّرُ كُلَّ سيئة | ٣١٣٤ |
| عقد التوبة النصوح يكفّرُ كُلَّ سيئة | ٢٨٦٣ |
| **عبد الحميد بن عبد الرحمن** | |
| أما بعد: يا أمير المؤمنين فإنّ الناس قد أصابوا من الخير | ٢٦٨٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد ربه اليشكري** | |
| واللّهِ إنّي لأكون في بيتي فيفتح على لساني | ٢٥٠٣ |
| **عبد الرحمن بن أبي بكر الصديق** | |
| لقد أهدفت لي يوم بدر فصرفت عنك ولم أقتلك | ١٠٧٦ |
| **عبد الرحمن بن حفص القرشي** | |
| كان علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه إذا توضأ اصفر | ٧٨٧ |
| **عبد الرحمن بن زياد الإفريقي** | |
| أنا أول مولود في الإسلام | ١٦٣٣ت |
| **عبد الرحمن بن زيد بن أسلم** | |
| ليس من خلق اللّه تبارك وتعالى شيءٌ أكثرمن الملائكة، وليس أحد من بني آدم | ٢٤ |
| **عبد الرحمن بن سابط** | |
| أربعة وَكّلهم الله تبارك وتعالى بأمر الدنيا جبريل وميكائيل | ٦٦ |
| لا يسكن مكّة سافك دم، ولا آكل رباً، ولا مشّاء بنميمة | ٦٧٣ |
| **عبد الرحمن بن شريح** | |
| استمعوا فإنّ حسنَ الاستماع قوّةٌ للمحدث | ٢٢٨١ |
| **عبد الرحمن بن عائذ** | |
| إنَّ نبيّاً من الأنبياء بُعِثَ إلى قوم، فقال لهم: قوموا من الشمس إلى الظلّ | ٤٣ |
| **عبد الرحمن بن عبد الله الخرفي** | |
| كان بدء الرافضة أن قوماً من الزنادقة اجتمعوا | (٢٦) ملحق |
| **عبد الرحمن بن عبد الله الزهري** | |
| ما زلت أسمع من أشياخ أهل المدينة أنّه لم | ١٢٦٢ |
| **عبد الرحمن بن عبد الله الخزاعي** | |
| إن ذي القرنين أتى على أمة من الأمم | ١٢٠٢ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد الرحمن بن عثمان** | |
| كنا مع طلحة ونحن محرمون فأهدى لنا صيد | ٣٥٢٨ |
| **عبد الرحمن بن عوف** | |
| أتاني ملكان في غشيتي هذه، فقالا: انطلق إلى أن | ٣٧٨ |
| أوصى عبد الرحمن بن عوف لمن بقي ممن شهد بدراً: أربع مائة | |
| دينار لكل رجل | ٢١٩٩ |
| يا أمير المؤمنين: أتسأل هذا ولد أبي بكرٍ | ١٦٤ |
| يا أمير المؤمنين: ما زدت على أن قمشت نفسك | ١٦٨٢ |
| **عبد الرحمن بن العلاء عن أبيه** | |
| يا بني إذا مُتُّ فضعني في اللّحدِ وقل: بسم اللّه وعلى [ملة] نبيِّه رسول | |
| اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ٧٥٧ |
| **عبد الرحمن بن القاسم** | |
| كنت أسمع أن البر شيء هين التحفة والكلام اللين | ١٤٩٥ت |
| **عبد الرحمن بن محمد الحنفي** | |
| أنشدني لغيره: اصبر لكلِّ مصيبةٍ وتجلَّدِ | ٣٢٣٧ |
| **عبد الرحمن بن مصعب** | |
| رأيت الثوري جالساً وقد التحف بردائه فلم يصب الأرض منه شيءٌ | |
| وهو جالس | ٢٨٣٢ |
| **عبد الرحمن بن مهدي** | |
| كما تحبُّ | ٤٧٨ |
| **عبد الرحمن بن يزيد** | |
| كنّا نغزو فكان عطاء الخراساني يحيي الليل كُلَّه ... | ١٥٦٩ |
| **عبد الرحمن بن يزيد بن جابر** | |
| ما لي لا أرى عينيك لا تجفُّ من البكاء ... عسى أن | ١٤١٩ |
| **عبد الرحمن بن يزيد بن معاوية النخعي** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان رجلٌ من أعراب بني عامر له شويهات ترعى، فإذا كان الليل | ١٨٢٧ |
| **عبد الرحمن القرشي** | |
| كتب بعضُ الحكماء إلى ملك من الملوك، أيُّها الملك إنّ أحقّ النّاس | ٢٥٥١ |
| **عبد الرزاق بن همام** | |
| أخذ أهل مكة الصلاة عن ابنِ جريج وأخذها ابن جريج عن عطاء | ١٦١ |
| **عبد العزيز بن أبي رواد** | |
| بلغنا أن قوماً كانوا لا يستنزلون الله إذا نزلوا | ٧٦٣ |
| سلام عليكم: أما بعد: يا أخي لأن أبيت ليلة واحدة مهتماً بأمر عيالي | ٢٧٤٩ |
| ما فعل أخوك إبراهيم بن أدهم ... أما أن عهدي به وأنّه ليركب | ١٩٤٩ |
| **عبد العزيز بن حصين** | |
| بلغني أنّ عيسى ابن مريم عليه السلام قال: من كثر كذبه ذهب جماله | |
| ومن لاَحى الرّجال | ٢٩٩٤ |
| **عبد العزيز بن المبارك** | |
| قال بعض حكماء العرب: اطلبوا الرزق إلى الرّحماء تعيشوا في أكنافهم | ٢٩٢٢ |
| قال بعض النُسّاك: أنا لما أرجو أرجا منّي | ١٥٠٥، ٣٠٤٧ |
| **عبد العزيز بن محمد** | |
| الصلاة تبلغك نصف الطريق، والوضوء يبلغك باب الملك | ٤٤٠، ١١٠٩ |
| **عبد القاهر** | |
| أوصى بعض الحكماء ابنه، فقال له: يا بني إياك والتسويف | ١٩٩٣ |
| **عبد القاهر بن السري عن أبيه عن جده** | |
| كان أبو عثمان النهدي من قضاعة، وأدرك النبي صلى اللّه عليه وسلم ولم | |
| يره واسمه | ١٩٩٤ |
| **عبد الله بن أبي أوفى** | |
| الله مع القاضي ما لم يجر | ٣٤٩٣ |
| إنما يغفر لك بعملك | ١٢٣٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد الله بن أبي عبيدة بن عمار بن ياسر** | |
| خرج حصين بن عمرو بن معاوية بن كلاب وخرج معه رجل من جهينة | ٨٥٨ |
| **عبد الله بن أبي الهذيل** | |
| ما في جهنّم أحدٌ يتنفس لا رجل ولا امرأة حبس | ١٥١٩ |
| **عبد الله بن أم مكتوم** | |
| بلغني أنّ ذلك يدفع ميتة السوء (كان إذا تَصَدَّق بصدقة قام بنفسه فوضع) | ٤٩١ |
| **عبد الله بن أبي مليكة** | |
| لما قدم إبراهيم عليه السلام على ربِّه جَلَّ وعز قال له: يا إبراهيم كيف وجدت الموت؟ | ٣٩ |
| **عبد الله بن أحمد بن حنبل** | |
| لما مرض أبي واشتدَّ مرضه ما أنَّ حتَّى مات | ٢٥٣ |
| **عبد الله بن إدريس الأودي** | |
| عجباً لمن ينقطع إلى رجلٍ من أهل الدنيا | ٢٤٧ |
| فأفزعني واللّه. فأقبلت على القبلة بعد هذه الكلمة سنة | ٢٩٤١ |
| من اليهود ... من النصارى ... من المجوس ...كذبوا ليس هؤلاء | ٢٦٦٦ |
| **عبد اللّه بن الأهتم** | |
| رفع الأولياء وخفض الأعداء وطول البقاء | ٢١١٠ |
| **عبد الله البراتي** | |
| من زهد على حقيقة كانت مؤنته في الدنيا حقيقة | ٢٣٩٦ |
| **عبد اللّه بن بكر** | |
| أفضت مع أبي من عرفة فقال لي: يا بني لولا أني معهم لرجوت أن يغفر لي | ٢٦٩٧ |
| **عبد الله بن بكر السهمي** | |
| قال بعض العُبَّاد: علامة التوبة الخروج من الجهل والندم على | ٣٣٩٩ |
| **عبد الله بن بكر السهمي عن أبيه** | |
| سئلَ رجلٌ عبد الملك بن مروان الخلوة، فقال لأصحابه | ١١٣١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد الله بن بكر المزني** | |
| جاء رجل إلى الأحنف بن قيس فشتمه، فسكت عنه | ٧٩٩، ٣٣٢٣ |
| **عبد الله بن ثعلبة** | |
| يا ابن آدم تضحك ولعل أكفانك قد خرجت | ٥٦٦ |
| **عبد الله بن جعفر الرقي** | |
| وشى واشٍ برجل إلى الإسكندر، فقال له: أتحب أن نقبل فيك | ١١٢٦ |
| **عبد الله بن جعفر** | |
| أشعرت أنّي قد اشتريتك واشتريت الحائط من مواليك | ٣٢٢٩ |
| جئت في حاجة .. تبيعوني الحائط الفلاني ... لست آخذه إلاّ بضعفٍ | |
| وتبيعوني الغلام الأسود | ٣٢٢٩ |
| ذاك مالي جدت به وهذا عقلي بخلت به | ٣/٢٤٣٥ |
| رأيتك تأكل، فكلّما أكلت لقمةً رميت للكلب مثله... فدون هذا يجزئك | ٣٢٢٩ |
| ركوب الهوى وترك الحياء (العيش) | ٣٠٧٨ |
| فأنتَ حرٌّ والحائط لك ... ما رأيت كاليوم! | ٣٢٢٩ |
| يا غلام لمن أنت؟ ... لقد رأيت منك عجباً | ٣٢٢٩ |
| **عبد الله بن الحسن** | |
| يا بني استعن على الكلام بطول الفكر في المواطن التي تدعوك فيها | ١٧٥٨ |
| **عبد الله بن حنظلة الغسيل** | |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى يوقِف عبدَهُ يوم القيامة فيعطيه صحيفة | ١٦١٤ |
| **عبد الله الداري** | |
| إنّ سرك أن تجد حلاوة العبادة وتبلغ ذروة سنامها فاجعل بينك وبين | |
| شهوات الدنيا | ١١٥١ |
| **عبد الله بن داود الخريبي** | |
| كان أحدهم إذا بلغ أربعين سنة طوى فراشه، وكان بعضهم يحيي الليل | ١٣١ |
| ما كذبتُ قطٌّ إلاّ مرة واحدة، فإنّ أبي قال لي | ٢٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد الله بن دينار البصراني** | |
| قال لقمان لابنه: يا بني أنزل نفسك بمنزلة من لا حاجة لك به | ٣١٣٩ |
| **عبد الله بن ذكوان** | |
| دخل على عبد الله بن حازم يعزيه بابنه حين قتل | ١٧٧٥ |
| **عبد الله الزبيري** | |
| حجّ أبو جعفر المنصور فشيعه المهدي. فلما ودعه قال له: | ٢٩٤ |
| **عبد الله بن الزبير** | |
| أنا ابنها حقاً، أنا ابنها حقاً | ٢٣٣٥ |
| كانت قيمة ما ترك الزبير إحدى وخمسين أو | ٢٢٠٠ت |
| لضربةٌ بسيفٍ أهون عليَّ من كلمة | ١٩١٢، ٢١٨٢ |
| لم يدع الزبير ديناراً ولا درهماً إلا أرضين | ٢٢٠٠ت |
| هاجرت وأنا في بطن أمّي فما كان يصيبها | ٢٤٣٤ |
| لا تخفف عنه دعه يلقى الله بدم الزبير | ٢٤٦٠ |
| لا عاش بخيرٍ من لم يرَ برأيه ما لم يَرَه بعينيه | ٦٠٠ |
| يا هؤلاء قد قُتِلَ أصحابكم فإنّا للّه وإنّا إليه راجعون | ١٤٧٥ |
| **عبد الله بن السائب** | |
| فإذا أراد الله بعبدٍ خيراً أبقى له حسنة فيضاعفها | ٢٠٥٩ |
| **عبد الله بن سلمة** | |
| أتيت علياً أنا ورجلان: رجل منّا ورجل من بني | ٢٥٩٥ |
| **عبد الله بن سلام** | |
| أجد في التوراة: يا أيُّها النبي إنّا أرسلناك شاهِداً ومبشِّراً | ١٢٩٧ |
| يؤذن يوم القيامة للبرِّ والفاجر في القيام بين يدي | ٢٦٩٦ |
| **عبد الله بن شبرمة** | |
| ابن طارق! لو كان أحد يكتفي بالتراب لاكتفى به | ١٢٤٤ |
| حتّى متى لا نرى عَدْلاً نُسَرُّ به | ٥٧٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| عجبت لمن تَحمّى من الطعام والشراب مخافة الدّاء كيف لا يحتمي | |
| من الذنوب | ١٧٥ |
| ما رئي قط إلا وهو يطيع الله | ١٢٤٤ |
| نعم، أصلحك اللّه، وإنّ له شرفاً وبيتاً وقدماً... ما رأيته قبل هذا الوقت | ٢٤٢٩ |
| **عبد الله بن طاهر** | |
| احذر أن تخطىء فأعاقبك بكذا وكذا لأمر عظيم | ٢٢٧٦ |
| بادر فقد أسمعك الصوت | ١٧٣، ٣٣٧٧ |
| قد أمرنا لك بشيء هو دون قدرك | ٢٢٨٥ |
| كم ثمن هذين البيتين؟... أرخصت يا غلام، أعطه أربعة آلاف درهم | ٣٢١٧ |
| لا تُسَمِّني أمير وسَمِّني أسيراً | ١٧٣، ٣٣٧٧ |
| يا غلام أعطه أربعة آلاف درهم أخرى | ٣٢١٧ |
| **عبد الله بن عامر بن ربيعة** | |
| خرجنا مع عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه إلى مكّة فما ضربَ فسطاطاً ولا خباءً حتّى رجع | ٤٩٠، ٢٤١٥ |
| والله لا أجمع عليكم عياً ولؤماً، من أخذ شاة من السوق | ٢٤٥٨ |
| **عبد الله بن عبّاس** | |
| أحبّ كلمة إلى اللّه: لا إله إلاّ اللّه، والثانية سبحان اللّه | ٨٣٧ |
| أحل الله الأكل والشرب ما لم يكن سرفاً | ١٦٠١ت |
| إذا أُعْسِرَ على المرأة ولادها فليكتب لها: بسم اللّه | ١٩٩٦ |
| إذا خفت العدوّ وكان في طلبك | ٢٥٠٧ |
| اشترى علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه قميصاً بثلاثة | ٢٦٨ |
| إن الفتى الذي كَلَّم أيوب عليه السلام في بلائه | ١٠٢١ |
| إنّ لكلّ شيءٍ سبباً، وليس كُلُّ أحد يسمع به | ١٦١٠ |
| أن ننظرَ إلى أعلى بناءٍ في القرية فيرمى به | ٢٨٤٢ |
| إنْ يأخذ اللّهُ من عيني نورهما | ٣٢٩٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| انا أوجدكم في القرآن قول الله تبارك وتعالى | ٢٠٥١ |
| أنفاسهم التي يتنفسون في الدنيا | ١٠٥٠ت |
| إيّاكم والزنا فإنّ فيه ست خصال ثلاث في الدنيا وثلاث | ٢٢٢٢ |
| بعث نوح لأربعين سنة، ولبث في قومه ألف سنة إلاّ خمسين عاماً يدعوهم | ٣٣٨٩ |
| تجد فيما يقرأ من الكتب دعاءً... هذا الدعاء علّمتُه | ٢٤٧٠ |
| تكلم ملك من الملوك بكلمة وهو جالس على سريره | ١٢٧٣ |
| ثلاثة لا أكافئهم: رجل بدأني بالسلام، ورجل أوسع لي في المجلس | ٦٨١ |
| ثلاثة لا تنبغي أن تكون في قاضٍ من قضاة المسلمين: الحقد والحسد والحدّة | ٤٦٥، ٢٩١٥ |
| حفظ ذنوبه حتّى رجع عنها (تفسير قوله تعالى: ﴿لكلّ أوّابٍ حفيظ﴾) | ٢٨٦٤ |
| حملة العرش ما بين كعب أحدهم إلى أسفل قدميه مسيرة خمس مئة | ٢٥٨٠ |
| الحدث حدثان: حَدَثٌ من فيك، وحَدَث من فرجك | ٨٨٥ |
| خُذْ مثقال لبان ومثقالاً من سكرٍ فاشربها | ٢٢٣٦ |
| خذها من غير فقيه | ٥٠٧ |
| ذَلَلْتُ طالباً لطلب العلم فعززْتُ مطلوباً | ١٦٣٥ |
| الذنوب ثلاثة: ذنب يغفر (ث) | ٦ت |
| رأيت عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه يطوف بالبيتِ | ١٣٠٩ |
| الرياح ثمان: أربعة رحمة، وأربعة عذاب: الرحمة المبشّرات | ٢٨٧٦ |
| زعمت أنها مكسلة مهرمة منسأة للحاجة | ٢٠٤٧ |
| سأل نبي الله موسى صلى الله عليه وسلم فلقاً من الخبز | ٢٨٤٤ت |
| شكراً للّه عَزَّ وَجَلَّ الذي لم يجعلني مثل هذا | ٢٦٨١ |
| صوموا التاسع والعاشر | ٢٥٩٤ |
| فاتحة الكتاب ثلثا القرآن | ١٤٨١ |
| فإذا عسر على المرأة ولدها فليكتب لها هذا | ١٩٩٥ |
| فتدخلهم دهشة من أهوال يوم القيامة «تفسير قوله تعالى: ﴿يوم يجمع الله الرسل﴾» | ١٠٨١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قالت الصبا للشمال: اذهبي بنا ننصر رسول الله | ١١٤٠ت |
| قم إنّك لنائم الساعة التي يقسم اللّه فيها الرزق لعباده | ٢٠٤٧ |
| كان الرجل يقوت أهله قوتاً دون، وبعضهم | ٢٧٧٨ |
| كان في خدي ابن عباس رضي الله عنه خطان من الدموع | ٧٣١ |
| كان يرتدي رداءً بألف | ٥٣٦، ١/٣٣٤٢ |
| كان يومئذ فقيراً إلى شَقّ تمرة | ٢٨٤٤ |
| كانت الخيل وحوشاً لا تركب فأوّلُ من ركبها | ٢٠٢٩ |
| كُلْ ما شئت، والْبَسْ ما شئْت إذا أخطأتك | ١٦٠١ |
| كُلَّما أحدثوا خطيئة جدَّدنا لهم نعمةً وأنسيناهم الاستغفار | ٣٤٠٨ |
| لقد مكث العرش على الماء قبل خلق السماوات دهوراً | ٧٨ |
| لمّا نزلت: ﴿إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مئتين﴾ فرض عليهم ألاّ يفرَّ منهم | ٢٥٣٧ |
| ليعرفون : (تفسير قوله تعالى: ﴿وما خلقت الجنَّ والإنس إلاّ ليعبدون﴾). | ٢٢٥، ٣٤٤٢ |
| ما احتلم نبيٌّ قطُّ، وإنّما الاحتلام | ٢٥٠٨ |
| ما خلق اللّه تبارك وتعالى أو قال: ما ذرأ اللّهُ أو قال: ما برأ الله من نفسٍ أكرم | ٢٥٢٧ |
| ما زال يتقلّب في أصلاب الأنبياء | ٣٤٨٩ |
| ما سمعت قول حسان بن ثابت رضي اللّه عنه: | |
| إذا تذكرت شجواً من أخي ثقةٍ فاذكر أخاك أبا بكر | ٦٢٥ |
| ما من عامٍ إلا تظهر بدعة وتموت سنّة | ٨١٣ |
| ما من يوم إلاّ وليلته قبله إلاّ يوم عرفة | ٥٤٠ |
| مَرَّ عيسى ابن مريم صلى اللّه عليه وسلم ببقرة قد اعترض ولدها في بطنها | ١٩٩٥ |
| مَرَّعيسى ابن مريم عليه السلام بخراب، فقال: يا خرب الخربين أين أهلك الأوّلون؟ | ٧٩٧ |
| من سرَّه أن يرى كيف يذهب العلم | ٣٣٩ |
| من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له | ٣٣٦٩، ٣٣٧٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| المتاع: (تفسير قوله تعالى: ﴿ويمنعون الماعون﴾) | ٣٥٥١ |
| النسخ قال: ألستم بقوم عرب | ١٢٥٠ت |
| هكذا أمرنا أن نفعل بعلمائنا | ١٣١٤ |
| هكذا هذا العلم يزيد الشريف شرفاً ويجلس الملوك على الأسرّة | ٣٠٣ |
| هل جزاء من قال: لا إله إلاّ اللّه إلاّ الجنّة | ٣٥٧٩ |
| هو اليوم التاسع... نعم | ١٨٦٣، ٢٥٩٣ |
| لا خير ولا شرٌّ | ٩٣٧ |
| لا يَتِمُّ المعروف إلاّ بثلاثة: تعجيله وتصغيره عنده | ٦٨٥ |
| لقد دفن اليوم علم كثير | ٣٣٩ت |
| يقال يوم القيامة لآكل الربا خُذْ | ٢٧٦٧ |
| يكبُّ على وجهه، ولا تستقبل بفرجه القبلة | ٩٥٣ |
| **عبد الله بن عروة بن الزبير** | |
| إلى الله أشكو حمد ما لا أوتى وذم ما لا أترك | ٢١١٣ |
| وأين الناس، إنما الناس رجلان شامت بنكبة أو حاسد لنعمة | ٢٠٠٤ |
| **عبد الله بن عكيم** | |
| لما بويع أبو بكر رضي اللّه عنه صعد المنبر | ١٢٩٠ |
| **عبد الله بن عمر** | |
| إذا سكن أهل النار في النار فشربوا من | ١٥٢٠ |
| إذا كان يوم القيامة دعا اللّه تبارك وتعالى بعبدٍ | ١١ |
| أمّا هذه النّعال فإنّي رأيت رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يلبسها ويتوضّأ فيها | ٣٤٦٢ |
| إنّ حَقّاً أو سُنّةً إذا جلس الرجل إلى الرجل وهو يصلي | ١٠٠٧، ٣٣٩٢ |
| البرُّ شيءٌ هيِّن وجه طليق وكلام لين | ١٤٩٥ |
| رُدَّ عليَّ السلام... أكثر الله مالك وولدك... هذا أكثر | ٢٥٢٥ |
| شهد عرفة وأتى جمعاً،... انطلقوا بنا نُصَلِّي على من لم يصب | ١٨٨٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان ابن عمر لا يذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم إلا بكى | ٢٥٢٢ |
| ما رأيت أحداً أشجع | ٣٤٦١ |
| من أراد أن يذكر هذين فليذكرهما هكذا أو فليدع | ٥٠٢ |
| هذا حقك وهذا معروف منّا لك | ٢٩٥٥ |
| وما أصنع بالجوارش وأنا لم أشبع منذ كذا وكذا | ٩٢١ |
| **عبد الله بن عمرو بن العاص** | |
| أربع خلال إذا أعطيتهنّ فلا يضرّك ما عدل | ١٠٨٤ |
| أنّ إدريس أقدم من نوح بعثه اللّهُ إلى قومه فأمرهم أن يقولوا: | |
| لا إله إلاّ اللّه | ٣٣٦١ |
| إنّ أهل النار ليدعون مالك أربعين عاماً ثم يرد عليهم: إنّكم ماكثون | ٢٢٩٣ |
| إنّ العرش يطوّقُ بحية وإنّ الوحي لينزل | ٢٥٧٨ |
| إن للمؤمنين كراسي من لؤلؤ يجلسون عليها | ٢٠٣٧ت |
| ثلاثة إذا كن فيك (ث) | ١٠٨٤ت |
| ثلاثة من قريش أحسنُ قريش أخلاقاً | ١٠٧٤ |
| جف القلم بما هو كائن | ٢٢٢٠ |
| يجمع فقراء هذه الأمة ومساكينها فيبرزون فيقال لهم | ٢٠٣٧ |
| يشتد كرب ذلك اليوم حتى يلجم الكافر العرق | ٢٠٣٧ت |
| يؤتى برجل يوم القيامة ويخرج له تسعة وتسعون | ٢٢٩٥ |
| **عبد الله بن عوف** | |
| باب مضر كنانة، وفرسان مضر قيس، ورجال مضر تميم | ٢٢٨٣ |
| **عبد الله بن عون** | |
| اخفتِ منّي.... فأنت حُرَّة، فأنت حُرَّة | ٢٤٨٠ |
| كان بَصَرُ محمد بن سيرين بالعلم كبصر التّاجر الأريب | ١١٧٦ |
| كان يقال: يأتي على الناس زمان يرضى فيه بالعلم من العمل ويرضى بالقول من الفعل | ١٣٢٧ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| كتب الحسن إلى الحسين رضي اللّه عنهما يعيب عليه إعطاء | ١١٧١ |
| **عبد الله بن فرّوخ** | |
| كان محمد ابن سيرين يذكر أوزانه لكي لا | ٢٧٦٨ |
| **عبد الله بن المبارك** | |
| أتيته بسنّين قد رمتا | ٨٤١ |
| أجعل رأسي على التراب... ما يبكيك؟ | ٣٨٧ |
| إذا ابتليت بالقضاء فعليك بالأثر | ٣٢٦ |
| اسكتْ فإنّي سألتُ اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ أن يحييني حياة الأغنياء | ٣٨٧ |
| الذي يأكل بدينه | ٣٠٠ |
| الذي يذكر غلاءَ السّعر عند الضيف | ٣٠٠ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى صلى اللّه عليه وسلم: تدري لِمَ | ١٥٥٠ |
| أوحى اللّه عَزَّ وَجَلَّ إلى نبيٍّ من الأنبياء: أمّا زهدك في الدنيا | ٣٠٤٤ |
| بلغني أن عيسى ابن مريم عليه السلام مَرَّ بقوم فشتموه، فقال خيراً | ١٤٩٤ |
| بلغني أنّ ما أحد من بني آدم إلاّ ومعه خمسة من الملائكة | ٢٥ |
| الجنون لهم قليل | ٤٤٥/م |
| خزيمة بن خازم وأصحابه | ٣٠٠ |
| دخلت على الثوري بمكة وقد شرب دواءً | ١٢/٢٤٣٥ |
| الروم يحاربون على الدّين والترك | ٢٤٨٨ |
| الزهاد | ٣٠٠ |
| سبقنا إليه غيرنا فتولاه دوننا | ٢٢٩٢ |
| سمعت النضر بن الحارث يقول ثلاث كلمات نفعني الله بهن | ٣٢٣ |
| عجبْتُ لمن يطلب العلم كيف تدعوه نفسُه إلى مكرمة | ٣٠٧ |
| عز الشريف أدبه | ١٠/٢٤٣٥ |
| العلماء | ٣٠٠ |
| فلم يزل يقول: الساعة، الساعة، حتى استوت بالغمام | ٢٢٩٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعض الحكماء: من كان منطقه في غير ذكر الله تعالى فقد لغا | ٣٣٧ |
| قدمت مكّة وإذا الناس قد قحطوا من المطر وهم يستسقون في المسجد الحرام | ٢٢٩٢ |
| كنت أقعدُ إلى سفيان الثوري فيحدث فأقول ما بقي | ٢٧٨٠ |
| لقنّي ولا تَعِدْ عليَّ إلاّ أنْ أتكلَّمَ بكلام ثانٍ | ٣٨٧ |
| لكني أعرف رجلاً لم يزل البارحة يقرأ «ألهاكم التكاثر» إلى الصبح | |
| ما قدر أن يجاوزها | ١٢٣٢ |
| ما أحسن حال من انقطع إلى ربِّه | ٣٥٠٦ |
| من انقطع إلى ربِّه | ٢٥٥٣، ٢٧٠٧ |
| من الدناءَة أن يقول الرجل لصديقه: ادخل معي الحمّام | ٢١١٢ |
| لا يزال المرء عالماً ما طلبَ العلمَ، فإذا ظنَّ أنّه قد علم فقد جهل | ٣٠٨ |
| يا ابن المبارك إذا عرفت نفسك لم يضرُّك ما قيل فيك | ٢٨٧٨ |
| **عبد الله بن محمد** | |
| قرأت على ركن دار مشيّدة: لو كنت تعقل يا مغرور ما راقت | ٣٢٢٨ |
| **عبد الله بن محمد البغدادي** | |
| إذا لم يكن صدر المجالس سيداً | ٨٦١/م |
| **عبد الله بن مروان** | |
| وددت أنّي كنت أكْسِبُ يوماً بيوم ما يقوتني | ١٨٠٧ |
| **عبد الله بن مسعود** | |
| أديموا النظر في المصحف، وإذا اختلفتم في ياء وتاء | ١٠٣٢ت |
| إذا اختلفتم في الياء والتاء فاجعلوها ياءً | ١٠٣٢ |
| إذا جثت الأمم للحساب، وكل الله ملكاً للذي كان ظلم الناس في الدنيا | ٢٠٥٩ |
| اقرأ فداك أبي وأمّي | ٢٩٥٨ |
| اللهم إني أسألك بنعمتك السابغة التي أنعمت علي | ٢٥٥٠ |
| أن أولى الناس بي أكثرهم عليَّ صلاة | ١٢٨ |
| إن الله تبارك وتعالى يبسط كَفَّه للمؤمن فيقول: يا ابن آدم | ٢٧٧٩ |
| إن البلاء موكل بالقول | ٧٧٥ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إن أول ما خلق الله سبحانه وتعالى القلم والنون | ١٢٥٠ |
| إن أول شيء خلقه الله عز وجل من خلقه القلم | ١٢٥٠ت |
| إن الرجل ليسبح في عرقه حتى يبلغ أنفه | ٢٠٣٧ت |
| إنّ القتل في سبيل الله يكفّرُ الذنوبَ كلَّها غير الأمانة | ١٧٠١ |
| إن عمر بن الخطاب رضي الله عنه كانت خلافته فتحاً، وأمارته رحمة | ١٠٢٥ |
| إنّ معاذاً كان أمّةً قانتاً | ١٦٧٦ |
| إن الملك إذا أنزل من السماء على بني آدم فيكتب عمله أجمع | ١٢٥٠ |
| إنّ الميت إذا مات أُوقدت حوله نارٌ فتأكل | ٩٩٧ |
| إن النسخة لا تكون إلا من أصلٍ ثابت | ١٢٥٠ |
| إنّي لأكره أنْ أرى الرجل فارغاً ليس في أمر الدنيا | ١٣٢٦ |
| بين سماء الدنيا والتي تليها مسيرة خمس مئة عام | ٢٨٣٠ |
| الدنيا كلُّها غموم فما كان فيها من سرور فهو ربح | ٣٣٩٦ |
| شرُّ الأيام والسنين والشهور والأزمنة أقربها إلى الساعة | ٤٢٤، ٢٩٢٤ |
| عَلِّم الناس فإنَّه ليس عليك فيما أخذ | ٢٢٢٨ |
| القرآن ذكر فذكروه | ١٠٣٢، ١٠٣٢ت |
| كان إذا خرج من المسجد عَرَف جيرانه ذلك بطيب ريحه | ٣٣٤٨ |
| لقي رجل من أصحاب محمد صلى الله عليه وسلم رجلاً من الجنّ فصارعه | ٢٤٧٥ |
| ما زلنا أعزّةً منذ أسلم عمر بن الخطاب رضي الله عنه | ١٩٣ |
| ما في السموات سماء منها موضع إلاّ وعليها جبهة ملك | ٢٢ |
| ما من حاكم يحكم بين الناس إلاّ حُشِرَ، وملك آخذ بقفاه | ٣٢٥ |
| من أراد أن يكرم دينه | ١١١٦ت |
| من السنة الغسل يوم الجمعة | ٣٥٥٩ |
| والله ما منكم من أحدٍ إلاّ سيخلو به ربُّه | ٨ |
| ينبغي لقارىء القرآن أن يُعْرَفَ بليله إذ الناس نائمون | ٢٣٠٠ |
| يؤتى بالقاضي يوم القيامة فيوقف على شفير جهنم | ٣٢٥ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يؤتى بالناس يوم القيامة إلى الميزان ... فيتجادلون عنده أشدّ الجدل | ١٠ |
| **عبد الله بن مسلم بن قتيبة** | |
| ابتهر الشاعر الجارية، إذا ذكر في شعره أنّه قد | ٣٠٧٣ |
| اجتمع جماعة من أهل العلم عند المنصور | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| أراد النبيّ صلى اللّه عليه وسلم أي: اجمع أهلك ولا | ١٥٥٢ |
| إن بعض العمال من أهل البصرة قدم من عمل ومعه مال كثير كان خان فيه | ١٤٧٢ |
| أنشد: إذا تضايق أمرٌ فالتمس فرجاً | ٩٨٩ |
| أنشد: وما العيش إلا في خمول مع الغنا وعافية تغدو بها وتروح | ١٥٥/ب |
| أنشد لإبراهيم بن هرمة: قد يدرك الشرف الفتى ورداؤه خلق | ٣١٨٢ |
| أنشد لبعض الشعراء في النبي صلى اللّه عليه وسلم: | |
| لو لم تكن فيه آيات مبيّنة | ٧٥٨/م |
| أنشد لبعض الشعراء: للناس مال ولي مالان | ٣٢٧٢ |
| أنشد لبعض الشعراء: وكم من ماجدٍ أضحى | ٣٤٢٥ |
| أنشد لبعض الشعراء: ولقد غدوت وكنت لا أغدو على واقٍ | ٩٣٧ |
| أنشد لبعضهم: فلا تنكحي إنْ فرَّق الدهر بيننا | ٣٢٩٠ |
| أنشد لبعضهم: وإنّي لأرجو اللّه والأمر ضيِّق | ٣٣٠٢ |
| أنشد لعروة بن أذينة: نراع إذا الجنائز قابلتنا | ٩١٦ |
| أنشد لغيره: أمالك إن الحزن أحلامُ نائم | ٧٧٢ |
| أنشدنا للعباس بن الأحنف: وما مَرَّ يوم أرتجي فيه راحة | ٦٥٣ |
| أنشد لمروان بن أبي حفصة في بني مطر: هُمُ القوم إنْ قالوا أصابوا | ٣١٨٤ |
| أنشد لنهار بن توسعة: وعتبت على سَلمٍ فلما فقدته | ٦٥٣ |
| أنشدنا لبعض الشعراء: إذا كان لي شيئان | ٥٢٨ |
| أنشدنا لبعض الشعراء: وأنفع من شاورت من كان ناصحاً | ٦٠١ |
| أنشدنا للنمر بن تولب: ومتى تصبك خصاصة | ٥٩١ |
| بسم الله ﴿إنّي أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقياً﴾ ﴿اخسئوا فيها ولا تكلّمون﴾ أخذت قوتك بقوة الله عز وجل | ٦٠٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| بلغني أنّ الصالحين كانوا يستنجحون حوائجهم بركعتين | ١٠٦٤ |
| الجيد من هذا قول أبي الطفيل عامر بن واثلة الكناني وكان من آخر من | |
| رأى النبي صلى اللّه عليه وسلم موتاً | ١٠١٣ |
| حَدَّثني بعض أصحابنا أنّ بعض العمّال من أهل البصرة قدم من عملٍ معه | ١٤٧٢ |
| حَدَّثني من رأى على فَصِّ ملك الهند مكتوب: من وَدَّك لأمرٍ ولّى | ٥٢٥ |
| الحمّة: السُّم يريدُ الحية والعقرب وأشباهها. والنفس: العين، ويقال للعائن: | |
| النافس | ٧١٨ |
| ذكروا امرأةً في البادية بالحجاز أنها ترقى برقية عجيبة شافية | ٧١٨ |
| الرّتع: الدناءة، يعني الذي يميل إلى الدّون من العطية | ٣٠٧١ |
| السّامة الخاصة يقال: كيف السّامة والعامة وقول | ١٩٠٠ |
| السندرة: شجرة يعمل منها القسي والنبل | ٩٠٤ |
| الضرو: الحبة الخضراء | ١٧٦٠ |
| في الدّنيا لأنّه احتجب عَزَّ وَجَلَّ عن جميع خلقه في الدنيا (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿لا تدركه الأبصار﴾) | ٩٢٩ |
| في كتاب الهند ثلاثة أشياء لا تنال إلاّ بارتفاع همّة | ٣٠٠٨ |
| الفروج: الثغور، وإحداها فرج، قال ... وقوله رسولاً أي رسالة ... وقوله | |
| فدى لك إزاري | ١٨٥٠ |
| قال ابن أبجر: إذا خرج الطعام قبل ست ساعات فهو مكروه | ٢٣٤٨ |
| قال اللّهَ تبارك وتعالى: ﴿وعد اللّه الذين آمنوا منكم...﴾ والمراد بهذا القول | |
| صحابة رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ١٥٧٤ |
| قال بعض الحكماء: أكرم الصفايا أشدّها ولهاً إلى أولادها | ٢١٠٣ |
| قال بعض الحكماء: سَلِ الأرض فقل لها من شقَّ أنهارك | ١٧٥٩ |
| قال بعض حكماء الفرس: العبادة سلطان على كُلِّ شيءٍ وما استنبط الصواب | ٢١٢٠ |
| قال بعض العمال لأعرابي: ما أحسبك تدري كم تُصَلِّي في كُلِّ يوم وليلة | ٢١٣٦ |
| قال بعض الملوك لمؤدب ولده: لا تخرجهم من علمٍ إلى علمٍ حتّى | ١٦٣٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| قالت الحكماء: الإنسان يعيش حيث تجيء النّار ويتلف حيث | ٢١٣٤ |
| قالت الحكماء: ثلاثة أشياء تورث الهزال | ٢٣٤٩ |
| قرأت في الإنجيل إنّ المسيح صلى اللّه عليه وسلم لما فتح فاه بالوحي | |
| قال: طوبى للذين يرحمون | ٩٢٩ |
| قرأت في سير العجم أنّ أربعة من الملوك اجتمعوا | ٢٤٤٢ |
| قرأت في سير العجم أن إردشير بن بابك بن ساسان كتب إلى الرعية: | |
| بسم اللّه الرحمن الرحيم | ١٩٦٨ |
| قرأت في سير العجم أن إردشير حين استوثق أمره وأقر له بالطاعة ملوك | |
| الطوائف | ١٩٩٧ |
| قرأت في سير العجم أنّ إردشير قال يوماً لوزرائه وخاصته بحسبكم | ١٦٨٥، ١٧٨٨ |
| قرأت في بعض سير العجم أنّ بعض ملوك الفرس قال لحاجبه: إنّي جعلتك | |
| عيني فانظر بها | ٢٢١٤ |
| قرأت في سير العجم علامة الأحرار أن يلقوا ما يحبّون ويحرموا | ٢١٢٣ |
| قرأت في كتاب الهند: من التمس من الإخوان الرخصة عند المشورة | |
| ومن الأطباء | ٥٩٢ |
| قرأت في كتاب الهند من الحمق التماس الرجل الإخوان بغير | ١١٣٢ |
| قرأت في كتب الهند: إذا كانت الموجدة من غير علّة كان | ٢٢٧٤ |
| قرأت في كتب الهند: ذو المروءة يكرم | ٢١٠٨ |
| قول علي عليه السلام: مجفرة أي تذهب شهوة | ١٩٨١ |
| قوله أهدفت لي معناه: أشرفت لي ومنه قيل للبناء | ١٠٧٧ |
| قوله: فما ينبسون، أي: ينطقون بعدها | ٢٢٩٤ |
| قوم هم: بنو حنيفة، والدّاعي إلى قتالهم أبو بكر الصديق رضي الله عنه | ١٥٧٣ |
| قيل لبعض الحكماء: متى يكون الأدب شراً لمن عدمه | ١١٣٢ |
| قيل لمدني: كيف حالك؟ فقال: كيف يكون | ٢١٠٨ |
| قول النبي صلى اللّه عليه وسلم: «أنا ابن العواتك من سليم» العواتك | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| ثلاث نسوة | ٢٣٩٠ |
| القول قول أبي عبيدة، ولم نرَ أحداً يجيز عشوت عن الشيء: أعرضت عنه، إنّما يقال: تعاشيت عن كذا | ٩٣٢ |
| كتب بعض العلماء إلى سلطان: أعيذك باللّه أن تكون لاهياً عن الشكر محجوباً | ٢٠٥٢ |
| كتب رجل إلى صديق له: قد أفردتك برجائي بعد الله | ١/٣٠٧١ |
| كتب رجل إلى صديق له: وجدت المودّة منقطعة ما كانت الحشمة مُتَبسّطة | ٣٢٩٥ |
| ما نعلم في أهل لبدع والأهواء أقواماً أضعف عقولاً ولا أكثر اختلافاً وتخليطاً من الرّافضة | ١٠٦٥ |
| مَرَّ رجلٌ بصديق له ومعه رجل ثقيل | ٢١٤٦ |
| معنى قول النبي صلى اللّه عليه وسلم: ...«اكتفوا من الأعمال» | ١٣٥٨ |
| معنى قوله: أنا الذي سمتني أمّي حيدرة. ذكروا أنّ علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه ولد وأبوه طالب غائب فسمّته أمه فاطمة بنت أسد | ٩٠٤ |
| المتماحلة: الطول، يقال: فتن يطول أمرها وتعظم، ويقال رجل متماحل | ٩٠٣/م |
| المغفلة: العنفقة سُمِّيت بذلك لأنّ كثيراً من الناس | ٩٣٣ |
| مواعيد عرقوب أخاه بيَثرب بنصب الياء وفتح الراء | ٨٦٠ |
| نحن نؤمن بجميع ما جاء في مثل هذا القرآن وعن الرسول صلى اللّه عليه وسلم | ٩٢٩ |
| هو أن يقول الرجل: زنيتُ ولم يَزِنْ، وقتلت ولم يقتل | ٣٠٧٣ |
| هو المرباع وهو ربع (تفسير قول النبيّ صلى اللّه عليه وسلم «تربع») | ٢١٩٠ |
| إلهانية الرّب: مأخوذ من إله. كأن القلوب تأله عند التفكر في عظمته... | |
| إذا وقع العبد في عظمة اللّه وجلاله | ٣٠٧٢ |
| الواق والصرد والحاتم: الغراب. وسّمته العرب الحاتم لأنّه يحتِّمُ بالفراق عندهم | ٩٣٧ |
| لا تضامون في رؤيته؛ والتضام من الناس يكون في أوّل الشهر عند طلبهم | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الهلال | ٩٢٩ |
| يريد أنّا ليس بالمجوس، وذلك أنّهم كانوا يقولون إنّ ولد الرجل من أخته... | ٧١٨ |
| يعني لولا إني لقيتُ ربّاً رحيماً فتجاوز عنّي | ١٤٤٣ |
| يقال الغنى في الغربة وطن، والفقر في الوطن غربة | ٢١٠٨ |
| **عبد الله بن مسلم عن أبيه** | |
| إذا لبستَ ثوباً فظننْت أنك في ذلك الثوب أفضل منك في غيره | ٣٠٢٨ |
| **عبد الله بن معاوية بن عبد الله بن جعفر بن أبي طالب** | |
| أرى نفسي تتوّق إلى أمورٍ | ٥٢٦ |
| **عبد الله بن المغيرة** | |
| كتب إليَّ الفضل بن عيسى، أما بعد فإنّ الدّار التي أصبحنا فيها | ١٠٥٥ |
| **عبد الله بن المقفع** | |
| إذا أكرمك النّاس لمالٍ أو سلطان فلا يعجبك ذلك | ١٦٣٤ |
| هو نهاية في العلم. لا تلد النساء مثله أبداً في زماننا | ٢١٦٨ |
| يا بنيَّ لا تَعُدَّ المَلِكَ الكذوب ملكاً، ولا النّاسك المخادع | ٢٤٨٢ |
| **عبد الله بن مولة** | |
| وأنا معك رحمك اللّه | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| **عبد الله بن نيار الأسلمي** | |
| أن سلمان بن ربيعة الباهلي غزا بلاد الشرك في خلافة عثمان بن عفان | ١٢٥٨ |
| **عبد الله بن هبيرة** | |
| كتب أبو الدرداء إلى سلمان أن هَلُمَّ إلى الأرض المقدّسة | ١٢٣٨ |
| **عبد الله بن واصل** | |
| جاء رجل إلى شريح يستقرض منه دراهم، فقال له | ١١١١ |
| **عبد الله** | |
| أن بني إسرائيل كانوا يقتلون في اليوم ثلاث مئة نبي | ٢٦٩٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| من أكبر الذنوب أن يقول الرجل لأخيه | ٢٦١٩ |
| **عبد المجيد بن أبي عبس** | |
| سمعت قريش صائحاً يصيح على أبي قبيس | ١٢٦٦ |
| **عبد المجيد بن يزيد = أبو وهب العقيلي** | |
| **عبد الملك بن أبجر** | |
| إذا خرج الطعام قبل ست ساعات فهومكروه | ٢٣٤٨ |
| دع الدواء ما احتمل بدنك الداء | ١٩٨٧ |
| سمعت بعض الحكماء يقول: الرجال أربعة، جواد وبخيل ومسرف | |
| ومقتصد، فالجواد الذي يجود بنصب دنياه | ٢٧٨٤ |
| الشبع داعية إلى البشم، والبشم داعية إلى السقم | ٢٢٤٨ |
| من لم يكن به داء فلا يتعالج لأن الدواء | ٢٠٢٧ |
| **عبد الملك بن حبيب = أبو عمران الجوني** | |
| **عبد الملك بن صالح** | |
| إن ملكاً أتى يعقوب | ١٢٢ت |
| أنت تاجر اللّه لعباده فكن كالمضارب الكيس الذي إنْ | ١١٣٦ |
| سرك الله فيما ساءك ولا ساءك فيما سرك | ٧٦٨ت |
| **عبد الملك بن عمير** | |
| أتيت الحارث بن كندة في يوم شديد البرد وهو جالس بين حائطين | |
| في للظل | ١٩٨٣ |
| دخل عمرو بن سعيد على معاوية في مرضه الذي مات فيه | ١٣٧٧ |
| فاتحة الكتاب شفاء من كُلِّ داء | ١٤٨٢ |
| قدم علينا الأحنف الكوفة مع مصعب | ٢٥٠٢ |
| قيل للربيع بن خثيم في مرضه الذي مات فيه: ألاّ ندعو لك طبيباً | ١٨٩ |
| **عبد الملك بن مروان** | |
| إذا قضى صلاته فأئتني به أختبرُ عقله | ٢٩٧٥ |
| اعْرف حاجبك وكاتبك وجليسك فإنّ | ٢٢٥٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| اقضِ حاجته وأخرجه الساعة من الشام فإنّ هذا يفسد عليّ النّاس | ٦٢٠ |
| أما علمت أنها من العرب مذلة ومن العجم خدعة | ٢/٣٠٦٧ |
| إنْ أخبرتني ما قرابة ما بين أولادهما إذا وُلِدَ لكما | ٢٣٣٨ |
| إنه ليس من واحد إلا وهو يعرف عيب نفسه | ٦٥٦ |
| إياك أن تمدحني فإنّي أعلم بنفسي منك، أو تكذبني فإنّه لا رأي لكذوب | ١١٣١ |
| ثلاثة من أحسن شيء جودٌ لغير ثواب ونَصَبٌ لغير | ٢١١٥ |
| رأيت منك منظراً الجنة تُدرك بدونه | ٢٩٧٥ |
| زينة الكهل العلم وحسبه الحلم | ١٦٧٧ |
| عَرَّض بنا النصراني الخبيث | ٤٩٩ |
| عَلِّمْهُم الصِّدْقَ كما تعلمهم القرآن وجنّبهم السفل | ١٧٦٦ |
| ليس فيه حميً فكل حيث شئت | ٣١٢٧ |
| ما أقبح بالرجل أن يأكل حتى لا يكون فيه فضل | ٦٤٣ |
| ما في الشيطان شَرٌّ مما ذكرت | ٦٥٦ |
| ما يسرُّني أنّ أحداً من العرب | ٢٢٣٤ |
| مه: أما علمت أنّها من العرب مَذَلّة ومن العجم خدعة | ٢٠٤٩ |
| هذا وأبيك الشرف، هذا وأبيك السؤدُد | ٣٠٥ |
| هَلُمَّ إلى الغداء ...ما أُقبح بالرجل يأكل حتّى أن لا يكون فيه فضل | ٦٤٣ |
| وددت إنّي كنت أكسب يوماً بيوم ما يقوتني وأشتغل بطاعة الله عز وجل | ١٨٠٧ |
| وكيف لا يعجِّل عليَّ وأنا أعرض عقلي على | ٢٤٥٩ |
| وما الدّهر والأيامُ إلاّ كما أرى | ٧٧٣ |
| يا أبا محمد إنما سألت حوائج غيرك وقد قضيناها. فما حاجتك؟ | ٣٠٥ |
| يا أبا محمد حاجتك؟ | ٣٠٥ |
| يا أعرابي كل مما يليك | ٣١٢٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبد الواحد بن الخطاب** | |
| أقبلنا قافلين من بلدِ الروم نريد البصرة حتّى إذا كُنّا بين الرصافة وحمص | ٣٧٥ |
| **عبد الواحد بن زياد** | |
| قال لقمان الحكيم لابنه: يا بني لا تأكل إلا أطيب الطعام ولا تنم إلا على لين الفراش | ٨٢٢ |
| **عبد الواحد بن زيد** | |
| إنسيٌّ أو جنيٌّ؟ ... مُذْ كم أنت ها هنا؟ من أنيسك؟ ... فما طعامك؟ | ٨٥٧ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى صلى اللّه عليه وسلم: يا موسى إذا رأيت الغنى | ١٦٦١ |
| الحزن مَلَكُ البدن، والملك لا يسكن إلاّ في موضع | ١٢١، ١٢٣٦ |
| في بعض الكتب: إنّ اللّه تبارك وتعالى يقول: إنّ أغبط أوليائي عندي يوم القيامة | ١٧٥٦ |
| قال بعض العبّاد: لحق على العاقل أن يدوم ذكره لما بعد هذه | ١٧٢٧ |
| قُرِء على قبر مكتوب عليه باليمن بالحميرية فترجمها بالعربيّة، أنا عمرو بن شمر الملك الجرهمي | ٧٠٠ |
| قيل لراهب: ما لكم يا معشر الرهبان، تدمنون إمساك العصا، فقال: نذكر إننا مسافرون | ٧٣٤ |
| ما أطول خجلة المرء غداً إذا خرج اسمه مع اسم أهل العار | ١٧٥٥ |
| ما تشتاق إلى الناس؟... فعلى الإسلام أنت؟ ...فحسدته والله على مكانه ذلك | ٨٥٧ |
| ما كان أحدٌ يطيق ينظر إلى الحسن البصري إلاّ بكى | ٢١٥١ |
| هبطت مرّة وادياً في بعض أسفاري فإذا براهب قد حبس نفسه في بعض | ٨٥٧ |
| هذا عَبَدَ اللّهَ ستين سنة مشتغلاً به ولم يشتغل | ١٥٩٤ |
| **عبد الوهاب بن عطاء** | |
| حدثني مشيخة أهل المدينة أن فروخاً والد ربيعة خرج | (٢) ملحق |
| قال بعض الحكماء: إصلاح المعيشة الاجتهاد | ٢٧٤٨ |

**عبد الوهاب المكّي**

كان فتى بمكة لا ينام الليل كُلَّه فقيل له ١٩٤٥، ٢٨٤٠

**عبدة بن هلال**

واللّه لا تشهدُ عليَّ شمس بأكلٍ أبداً ولا يشهدُ عليَّ ليلٌ بنوم ١٧٢

**العبسي**

استعمل أبو بكر الصديق رضي اللّه عنه يزيد بن أبي سفيان على أربعٍ من ١٠٢٤

**عبيداللّه بن أبي بكرة**

اجلسي، وكل ذلك لك عندي ١٩٧٩

اشترى يوماً جارية نفيسة بمال عظيم فطلب دابة تحمل عليها ١٩٠٥

ملك حادث... قص الجناح... عرس جديد ١٣٨٠

يا ثابت ما وجدت لغرمائك محبساً إلاّ داري ١٩٠٥

**عبيداللّه بن أبي الحلال عن أمِّه عن عَمَّتها**

كان لأبي الحلال غرفة لها أربعة أبواب فكان يقوم على كُلِّ ١١٧٣

**عبيداللّه بن الحسن العنبري**

أتروني كنت أجيز شهادة مثل هذا ٦٢٢

لا، سأوريكم ادْعوا لي أبا مورد حاجبي.... اخرج حتّى تنظر ما الريح ٦٢٢

**عبيداللّه بن زياد التميمي**

إذا لم يكن للحيِّ إلا وصية الميت فالحيُّ هو الميت ٢١٠٥

**عبيد الله بن أبي صالح**

دخل علي طاوس يعودني (ث) ١٤٢١ت

**عبيداللّه بن عبداللّه بن عتبة**

أنا أجعل اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ ذخراً لولدي من بعدي وأجعل هذا المال ذخراً لي ٧٨٦

**عبيداللّه بن عمر**

استشرتني فأجهدت الرأي ونصحتك، واستشارني فأجهدت الرأي ونصحته ٥٩٨

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عبيدالله بن عمر عن عَمِّه** | |
| أتينا منزل عطاء السليمي، فدخلنا منزله فرأينا باب منزله مفتوحاً | ١٣٢٤ |
| **عبيدالله بن محمد = الكسائي** | |
| **عبيدالله بن الوليد الوصَّافي** | |
| أكرم ما يكون عليٌّ صاحبي إذا كثرت أيادي عنده | ٤٩٨ |
| **عبيد الله بن جريج** | |
| يا أبا عبد الرحمن رأيتك تصنع أربعاً | ٣٤٦٢ت |
| **عبيد بن سرية الجُرهُمي أو عبيد بن شرية** | |
| إن البلاء موكل بالمنطق | ٧٧٥ |
| إنّي نزلت لحيٍّ من قضاعة فخرجوا بجنازةِ رجل من بني عذرة يقال له: حُرَيث | ٧٧٥ |
| عين خرارة في أرضٍ خوّارة تعول ولا تعال.. فرس في بطنها... | |
| حجران يحتكان بعضهما ببعض.. هي لمن يباشرها | ٢٧٤٧ |
| لا، واللّه إلاّ أنّي أرويها منذ زمان | ٧٧٥ |
| **عُبَيْد بن عمير** | |
| أهل القبور يتوكفون الأخبار فإذا أتاهم ميت سألوه: ما فعل فلان؟ | ٨٦٧ |
| الأوّاب الحفيظ: الرّجل يكون في المجلس فإذا أراد أن يقوم | ١٣٥٩ |
| غزا نبيٌّ من الأنبياء، فقال: لا يغزوَنَّ معي رجل | ١١٣٧ |
| قال آدم عليه السلام: يا ربّ، ذنبي الذي كتبته عليَّ | ٢٦٢٨ |
| كانت تعزية أهل الجاهلية: كلُّ مصيبةٍ ما عدا النفس | ٢٤٢٣ |
| كُنَّا نعدُّ الأوّاب الحفيظ الذي قام من مجلسه | ٢٣٠٣ |
| من يرد الله به خيراً يفقهه في الدين ويلهمه رشده | ٦٦٣ت |
| **عبيد بن يعيش** | |
| دعا أعرابي لمسروق، فقال: وَقاكَ اللّه خشية | ٢٣٤٢ |
| **عَبيدة السَّلْماني** | |
| الحدث وأذى المسلم | ٩١١ |

لـمّـا كَلّم اللّهُ عز وَجلّ موسى صلى اللّه عليه وسلم يوم الطور
كان على موسى جُبّة من صوف ٢٣٦٢

**عتيق بن يعقوب الزبيري**

كان مسلم بن أبي مريم شديداً على القدرية عيّاباً لهم ١٦٠٩

**العتابي (كلثوم بن عمرو)**

قدمت على أبي دُلف فأقمتُ عنده ثلاثاً ثم كتبتُ إليه حاجةً ٨٠٦
كُنّا على باب أبي دلف خلق كثير من الشعراء يعدنا بأمواله ٨٣٩
لو قسمت هذه الكلمة على أهل الأرض لوسعتهم، وذلك أنّه لا دين إلاّ بك ٣٣٠٦
ما منعك أن تجيبني؟... وما اسمك؟ ٤٣٤
مررت بدير فإذا راهبٌ ينادي فرفعت رأسي إليه، فقال لي: ويحك هبْ أنّ المسيءَ ٤٣٣
مررت بدير فصحت يا راهب:... يا صاحب الدير ٤٣٤
مكابدة العفة عنهنّ أيسر من الاهتمام بمصلحتهن ٢٧٥٣

**عتبة بن الوليد**

كانت امرأةٌ من التّابعين تقول في سجودها: سبحانك ما أضيق الطريق على من لم تكن أنت دليله ١٧٩، ١٦٤٣، ٣٣٧٤

**عتبة الغلام**

كنت عصيت اللّه في هذا الموضع ١٦١٨

**العتبي (محمد بن عُبيدالله القرشي الأموي)**

سبحان من شمل فضله، ودعّم بالإحسان شكره، وعلا في القِدَم ذكره ٣٠١٩
سمعت أعرابياً وأعطاه رجل أثواباً فقال: أحسن الله جزاك فقد أغنتني ٢٦٨٩
فأخبرني رجل من منبج قال: قدم علينا الحكم وهو مملق لا شيء معه فأغنانا ٣٠٨٠، ١٩٢٣
قيل لنصيب: هَرِم شعرك ٣٠٨٠، ١٩٢٣
كان أهل الجاهلية لا يسوّدون إلاّ من كانت فيه ١٧٠٦
كان يقال: السؤدد الصبر على الذل ١٩٧٧، ٣٠٦٥

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لا يكون البكاء إلاّ من فضل وإذا اشتدَّ الحزن ذهب البكاء | ٣٣٧٥ |
| **عثمان بن سليمان** | |
| خرجت في نفر من هذيل من أهل البصرة | ١٩٥٤ت |
| **عتيق بن يعقوب الزبيري** | |
| قَدِمَ هارون الرشيد إلى المدينة، وكان قد بلغهُ أن مالك بن أنس رحمه الله عنده الموطأ | (٣) ملحق |
| **عثمان بن أبي العاتكة** | |
| كان داود صلى اللّه عليه وسلم يقول في مناجاته: اللهمَّ أتيتُ أطبّاء عبادك | ٢٨٨ |
| **عثمان بن أبي العاص** | |
| كنت عند عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه وأتاه رجل يتوكّأ على | ١٢٦٤ |
| **عثمان بن عبد الرحمن** | |
| كانوا هؤلاء هربوا حين قُتل الحسن بن محمد بفخّ في أيام موسى | ٢٨٩٩ |
| **عثمان بن عطاء عن أبيه** | |
| أخلصناهم بذكر الآخرة:( تفسير قوله تعالى: ﴿إنا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدار﴾) | ٩٩٨ |
| **عثمان بن عفان** | |
| ابن آدم، اعلم أنّ ملك الموت الذي وُكّل بك | ٢٠٧ |
| اشترى داراً من صهيب وشرط له أن يسكنها هو وولده ما بقي | ٢٦٢٣ |
| انصرف مأذوناً لك مأجوراً غير مأزور، جزاكم اللّه | ٢٨٣ |
| أيسرُّك أن تقتل الناسَ كُلّهم؟... فإنّك إن قتلت نفساً واحدةً | ٢٨٣ |
| أيّها الناس اتّقوا اللّه، فإنّ تقوى اللّه غُنْم | ١٢٩٢ |
| قُتل يوم الأربعاء ودفن بالبقيع وصلّى عليه جبير بن مطعم | ٢٤٠/م |
| القبر أول منازل الآخرة | ١٣٠٣ت |
| كان عثمان رضي الله عنه إذا اطلع في القبر بكىَ وقال: هذا أول منازل الآخرة | ١٣٠٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان أصلع أقنى له جمّة أسفل من أذنيه | ٢٤٠ |
| كان عثمان بن عفان كنيته أبا عمرو | ٢٣٧، ٢٣٨ |
| كنّيتُ أبا عثمان وأبا ليلى، وكان أبو عثمان بن عفّان خرج في تجارة | |
| إلى الشام فهلك هناك | ٢٣٨ |
| لقد كان من خيرنا وأوصلنا للرحم ـ أي عثمان ـ | ٢٨٤ |
| لم يكن عثمان بالطويل ولا بالقصير، وكان حسن الوجه | ٢٣٩ |
| لما قبض النبيّ صلى الله عليه وسلّم وُسْوِسَ ناسٌ من أصحابه فكنت... | |
| ما علمت بتسليمه... قبض رسول | ١٨٢٢ |
| ما تغنيت ولا تمنّيت ولا شربت خمراً في جاهلية ولا إسلام | ٢٨٥ |
| من لم يزدد يوماً بيوم خيراً فذاك رجل | ١٥٤٦ |
| **عثمان بن الهيثم المؤذن** | |
| فلم يزل عطاء كمداً من قول مالك بن دينار أربعين سنة حتى مات | ١٧٧٣ |
| قيل لحبيب أبي محمد: يا أبا محمد: مالك لا تضحك | ٣٥ |
| كان عطاء السلمي يوماً جالساً في حدائته مع مالك بن دينار | ١٧٧٣ |
| عثمان بن الهيثم عن أبيه:قال بزرجمهر الحكيم: ارهب تحذر، وانعم تشكر | |
| ولاتمازح فتحقر | ٣٤٨٠ |
| **عثمان بن واقد** | |
| قيل لنافع بن جبير بن مطعم: ألا تشهد الجنازة؟ | ٣٥٣٢ |
| **العجاج** | |
| إن لنا أحلاماً تمنعنا من أن نَظْلِم، وأحساباً تمنعنا من أن نُظْلَم | ٥٣٤ |
| **عدي بن حاتم** | |
| قم بالباب فامنع من لا تعرف وائذن لمن تعرف | ٢١٦٩/م |
| لسان المرء ترجمان عقله | ١٧١٩ |
| **عدي بن زيد** | |
| أتدري ما تقول هذه الشجرة... تقول: رُبَّ قومٍ قد أناخوا عندنا | ٧٣٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| عن المرءِ لا تسأل وسَلْ عن قرينه | ٥٢٣ |
| **العذري الناسب** | |
| إن العباءة لا تكلمك، وإنما يكلمك من فيها | ٦٠٤ |
| **عرابة الأوسيّ** | |
| أعفو عن جاهلهم وأعطي سائلهم وأسعى في | ١٧٣٢ |
| **عراك بن مالك** | |
| بلغني أنّه من غَسَلَ يده قبل الطعام كان في سعة من رزقه | ٦٣٩ |
| **عروة بن الزبير** | |
| اقتُسِمَ مال الزبير على أربعين ألف ألف | ٤٥٦ |
| إن أبا بكر الصديق رضي اللّه عنه صلى عليه في المسجد | ٢١٧٩ |
| إن الزبير بن العوام ترك من العروض قيمة خمسين ألف ألف درهم | ٢٢٠٠ |
| أنا ابنها حَقّاً أنا ابنها حقّاً، وجعل.. | ٢٣٣٥ |
| أوصى إلى الزبير سبعة من أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم: | |
| منهم عثمان وعبد الرحمن بن عوف | ٤٥٤ |
| رأيت عروة بن الزبير فرأيته بحراً لا تكدره الدلاء | ١٨٥ |
| كنت جالساً في مسجد الرسول عليه السلام ضحوة وحدي... إذ أتاني | ١٦٦٩ |
| قال الثوب: أكرمني داخلاً أكرمك خارجاً | ٢/٣٣٤٢ |
| لما قتل عمر رضي اللّه عنه محى الزبير اسمه من الديوان | ٤٥٥ |
| ما من رجل ينتقص من أمانته إلا انتقص من إيمانه | ١٧٠٢، ١٩٤٨ |
| ما يصنع هؤلاء؟ ما صلي على أبي بكر إلا في المسجد | ٢١٧٩ ت |
| يقول المال: أرني صاحبي أعمر ويقول الثوب: أكرمني | ٢/٣٣٤٢ ت |
| **عروة بن عامر** | |
| إنّ الرجل لتعرض عليه ذنوبه يوم القيامة فيمرُّ بالذنب | ٢٤٦٤ |
| **عُزير** | |
| اللهم إنك اخترت من الأنعام الضانية ومن الطير الحمامة | ٢٠٨٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عطاء بن أبي رباح** | |
| صلاته سبُّوح قدّوس سبقت رحمتي | ١١٦٨ |
| ما أكثر الأسماء على اسمك وما أكثر الأسماء على اسمي | ١٦١٦، ١/٣٠٣٨ |
| ما لي إلى مخلوق حاجة | ٣٠٥ |
| ما رأيت مجلساً أكرم من مجلس ابن عبّاس أكثر فقهاً ولا | ١٢٢٧ |
| من الإثم (تفسير قوله تعالى: ﴿وثيابك فطهِّر﴾) | ١٥٢٩، ٣٠٤٣ |
| يا أمير المؤمنين، اتّقِ اللّه في حرم اللّه وحرم رسوله | ٣٠٥ |
| **عطاء بن السائب** | |
| غضب معاوية رضي الله عنه على ابنه فهجره فقال له الأحنف بن قيس | ١٠٩٤ |
| كان عمر بن عبد العزيز في سفرٍ مع سليمان بن عبد الملك فأصابتهم السماء برعد وبرق | ١١٠١ |
| **عطاء بن مسلم الخفّاف** | |
| كنت بمكّة مع الثوري رحمه الله في المسجد الحرام، فقال: ويحك | ١٠٨٣ |
| نفدت نفقة إبراهيم بن أدهم بمكّة فبقي خمسة عشر يوماً يستفُّ الرمل | ٢٩١ |
| **عطاء بن يزيد** | |
| اسمعوا منّي ما أقول، لا تعملون لغير اللّه، وترجون الثواب من اللّه، ولا يعجبَنّ أحدكم بعمله | ٢٧٩٢ |
| **عطاء الخراساني** | |
| أنّ داود عليه السلام نقش خطيئة في كَفِّه لكي لا | ١٢٦٨ |
| ما استقصى حكيم قط | ٣ت |
| **عطاء السليمي** | |
| أنّ رجلاً مَرَّ بقوم فأثنوا عليه فلما خلا به | ٢٠٧٣ |
| **عطية العوفي (عطية بن سعد بن جنادة الكوفي)** | |
| كانت السماء لا تمطر والأرض لا تنبت فقتق (تفسير قوله تعالى: | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ﴿ففتقناهما﴾) | ٢١٥٨ |
| لا يموت أحدٌ أبداً حتّى يرى في الجنّة هو أم في النار | ٢٢٤٥ |
| **عفّان بن مسلم الصفّار** | |
| رأى رجل ليحيى بن سعيد القطّان قبل موته بعشرين سنة: بَشَّرْ يحيى بأمانٍ من اللّهِ | ١١٧٥، ٣٤٠٠ |
| **عقبة بن أبي زينب** | |
| في التوراة مكتوب: مات موسى كليم اللّه | ٢٣٢٣ |
| **عقبة بن عامر** | |
| لعلّك أن ترى عبد بني فلان فتندم من ألاّ يكون | ٢٨٨٣ |
| لئن دخلت الجنّة لتندمنّ | ٢٨٨٣ |
| **عقبة بن عبد الغافر** | |
| دعوة سر أفضل من سبعين دعوة علانية | ٢٧٣٥ |
| **عقيل بن أبي طالب** | |
| المواتية لما نهوى... المتجانبة لما نرضى... بالميزان العادل | ١٧٣٦ |
| **عقيل بن عبد الرحمن عن عَمَّته** | |
| دخلت على علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه [وهوخليفة] وهو على برذعة حمار | ٤١٩، ٣٠٣٣ |
| **عكرمة** | |
| إذا كَثُرَ أولاد الزنا قلَّ المطر | ١٠٤٤ |
| أن علياً أحرق ناساً ارتدوا عن الإسلام | ١٠٦٥ت |
| ذاك يوم القيامة | ١٠٧١ |
| كان يحلف ألا أحدّثكم ثم يحدثهم ويقول | ٢٣٤١ |
| كفرهم بعيسى وكفرهم بمحمد صلى اللّه عليه وسلم (تفسير قوله تعالى: ﴿فباؤوا بغضب﴾) | ٢٦٩٨ |
| لما كانت ليلة الأحزاب، قالت الجنوب للشمال: انطلقي بنا | ١١٤٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما خيرٌ لك بعتَ عِلْمَ أبيك بأربعة آلاف دينار | ٧٨٣ |
| نجاة (تفسير قوله تعالى: إنْ تتّقوا اللّه يجعل لكم فرقاناً﴾) | ٢٨٧٣ |
| لا تلبسها على غدرة ولا فجرة | ١٨٢٥، ٣٠٤٢ |
| لا محظور عليها كما يحظر على بساتين الدنيا (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿وفاكهة كثيرة لا مقطوعة ولا ممنوعة﴾) | ١٠٠٣ |
| **عكرمة بن أبي جهل** | |
| لا والذي نجّاني يوم بدر (كان إذا اجتهد في اليمين) | ٢٩٥٤ |
| **العلاء بن الحضرمي** | |
| لـمّـا أراد أن يعبر على أهل دارين البحر عبر بهذه الكلمات: | |
| يا حليم، يا حكيم | ٢٠٨، ٣٣٧٣ |
| **العلاء بن زياد** | |
| لينزل أحدكم نفسه أن قد حضره الموت | ٤٨٧، ٢٠٩٨ |
| **العلاء بن اللجلاج** | |
| يا بني إذا مت فضعني في اللحد وقل: بسم الله، وعلى [ملة] نبيه | |
| رسول الله صلى الله عليه وسلم | ٧٥٧ |
| **علقمة** | |
| إذا حلق المحرم رأسَه حَلَّ له كُلُّ شيء إلاّ النساء | ٣٥٢٢ |
| **علي بن أبي الحسن** | |
| شبع يحيى بن زكريا عليه السلام ليلةً شبعة من خبز الشعير فنام عن جزئه | ٢٩٥٩ |
| **علي بن أبي حملة** | |
| كان علي بن عبدالله بن عباس يصلي كل يوم ألف سجدة | ٥٤٤ |
| **علي بن أصمع** | |
| قال أكثم بن صيفي التّميمي: مقتل الرجل بين فكّيه يعني لسانه | ٨٧٩، ٣٤٣٧ |
| يا بني، عاشروا الناس معاشرة: إن غبتم حنوا إليكم، وإن متم بكوا عليكم | ٢٩٣ |
| **علي بن بكّار** | |
| لا تخبره فتُعْرِي قلبه، ولكن ادع له وأثنى عليه | ٣٥٣٨ |

## علي بن أبي طالب


أخبرهم أن عثمان كان من الذين آمنوا وعملوا الصالحات ٢٤٢
إذا أكلتم الرّمان فكلوه بشحمه فإنّه دباغ ٦٣٤، ٢/٣٣٩٩
ارتحلت الدنيا مدبرة وارتحلت الآخرة مقبلة ١٢٩٣ت
ارم أيها الغلام الحزَوَّر ٣٤٩ت
أسلم وهو ابن سبع سنين ومات ابن سبع وخمسين ٣٣٨٧
اشترى علي بن أبي طالب رضي الله عنه قميصاً بثلاثة دراهم ٢٦٨
اشدُدْ حيازيمك للموت إنَّ الموت آتيكا ١٠٤١
أشدُّ خلق ربِّك الجبال الرواسي والحديد تنخب به ٢٥٩١
أطيل أم أقْصِر (سُئِل عن الدنيا؟) ٤٢١
اعْرِف الحقَّ لمن عرفه لك شريفاً أو وضيعاً ١٧٠٨
اغفر لي الذنوب التي تحل القسم، واغفر لي الذنوب التي تهتك العصم ٤٣٧
أفضل هذه الأمّة بعد نبيّها صلى اللّه عليه وسلم أبو بكر وعمر ١٤٩
اللهمَّ إنّ ذنوبي لا تضرّك وإنَّ رحمتك ٢٤١٤
أمّا بعد، فإنّ الدنيا قد أدبرت وآذنت بوداع ١٢٩٣
أمّا بعد: فلا تطولَنَّ حجابك عن رعيتك فإنّ احتجاب الولاة عن الرعية ٩٨٧
إن أخوف ما أخاف عليكم اثنتين ١٢٩٣ت
إن أمكنت عدوي من ظهري فلا أبقى الله عليه أن أبقى علي ١٢٦١
إنّ الدنيا قد ارتحلت مدبرة، وإنَّ الآخرة مقبلة وكل ٢٧٧
إنّ لكلِّ نبي سبعة نجباء من أمّته، وإنّ لنبيّنا ٣٥١٢
إنّ من أعظم الذنب أن يستخِفّ الرجل بذنبه ١٣٥٦
إنّ من ورائكم أموراً متماحلة رُدّحاً وبلاءً مكلحاً مبلحاً ٩٠٣
أنا الذي سَمَّتْني أُمّي حيدره ٩٠٤
إنّا لقائمون وما يُصلّى عليه إلاّ عمله ١١٦٤
أنا والزبير بن العوام وأبو بكر وعمر وعثمان وحمزة ٣٥١٤

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنكما علجان فعالجا عن دينكما | ٢٥٩٥ |
| إنّه لينظر إلى الغيب من سترٍ رقيقٍ لعقله وفطنته | ٥٩٩ |
| إنّهم قد تحاكموا إليك فاعدل بينهم | ١٥٧١ |
| إنهما لفي الوفد السبعين إلى اللّه عَزَّ وَجَلَّ يوم القيامة | ٣٥١٣ |
| إنّي واللّه لا أرزأ من أموالكم شيئاً وهذه | ٢٣٩٥ |
| أهديت إلي ابنة رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم ليلةً وما لنا فراش | ١٣٦٠، ٣٣٦٣ |
| أيها الناس إن أخوف ما أخاف عليكم طول الأمل | ١٢٩٣ت |
| ألا إنَّ خيرَ هذه الأمّة بعد نبيّها صلى اللّه عليه وسلم أبو بكر وعمر رضي اللّه عنهما | ١٥٠ |
| ألا ترجوا إلاّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ ولا تخاف إلاّ ذنبك | ٢٩٣٠ |
| بينما يطوف بالكعبة إذا هو برجل متعلّق بأستار الكعبة | ١٠٢ |
| تَعَلَّموا العِلْمَ تعرفُوا به، واعملوا به تكونوا من أهله | ٢٧٧ |
| ثلاثة من كُنَّ فيه من الأئمة اضطلع بأمانتهِ | ٢٢٦٢ |
| حلالها حساب، وحرامها عذاب فدعوا الحلال لطول الحساب | ٤٢١ |
| الحمد للّه الذي هذا من رياشه | ٢٦٨ |
| خمص البطون من الطّوى، يُبس الشّفاه (سيمى الشيعة!!) | ١٢٤٩ |
| دعوة مستجابة... مسيرة يوم للشمس من قال غير | ٢٤٦٥ |
| الدنيا دارُ صدق لمن صدقها ودارُ نجاةٍ لمن فهم عنها | ١٢١١ |
| رأيت عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه يطوف بالكعبة وعليه إزار فيه إحدى وعشرون رقعة | ٦٠٥ |
| رويداً فكأن قد بلغت المدى وعُرِضت أعمالك بالمحلِّ الذي ينادي | ١٤٧٠ |
| سيأتي على النّاس زمان لا يبقى من الإسلام إلاّ اسمه ومن القرآن إلاّ رسمه | ٥١٩ |
| شطره فينا قبلة (تفسير قوله تعالى: ﴿فولّوا وجوهكم شطره﴾) | ١٤٦١ |
| طوبى لكل عبد نؤمَةٍ، عرف الناس، ولم يعرفه الناس | ٢٧٧ (ت) |
| عباد اللّه لا تغرنّكم الحياة الدنيا فإنّها دار بالبلاء محفوفة | ٢١٣٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| عجبْتُ لمن يهلك والنّجاة معه، قيل له: ما هي | ١٢٠٧ |
| عضُّوا على النّواجذ من الأضراس فإنّه | ١١٤٢ |
| علّمه القرآن فهو خير له من الشعر | ١٥٣٢ |
| فإن الله الكريم يسأل الرجل عن جاهه | ١١ت |
| قراءتك على العالم وقراءته عليك سواء | ٢٣٦ |
| قم عنها فإنّها مبخرة مجفرة تتفلُ الرِّيح | ١٩٨٠ |
| القلوب أوعية، فخيرها أوعاها | ١٨٢٥ |
| كان آدم شديد الأدمة | ٢٦٤، ٣٤٠٦ |
| كان خاتمه من ورق نقشه «نعم القادر الله» | ٦٠٦، ٣٣٤٥ |
| كان علي رضي الله عنه حذراً في الحرب جداً شديد الروغان | ١٢٦١ |
| كان علي يقرأ ﴿والعصر ونوائب الدهر﴾ | ٢٥٤٦ |
| كلمات لو رحّلتم فيهن المطيّ لانضيتموهن قبل أن تدركوا مثلهنّ | ٣٠٩ |
| كلوا، فواللّه ما اضطرب الغاربان | ٢٤٦٢ |
| كن لربّك كالحمام الألوف لأهله | ١٧٥٠ |
| الكريم يلين إذا استعطف واللئيم يقسو إذا أُلْطِفَ | ١٦٥٨، ٢٨٩٥ |
| لقد تزوّجت فاطمة بنت محمد صلى اللّه عليه وسلم وما لي فراش غير جلد كبش | ١٣٦١، ٣٣٦٤ |
| لقد رأيتني أربط الحجر على بطني من شدّة الجوع في عهد النبيّ صلى اللّه عليه وسلم | ٢٠٣٨، ٢٩٦٢ |
| لقد سبق إلى جنّات عدن أقوام ما كانوا بأكثر صلاة ولا صيام ولا حَجٍّ | ٧٢ |
| لقد كان من خيرنا وأوصلنا للرحم | ٢٨٤ |
| لما دخل علي بن أبي طالب الكوفة، دخل عليه رجل من حكماء العرب | ١٨٣٦ |
| لما رأيت الأمر أمراً منكرا اجّجت ناري ودعوت قنبرا | ١٦٥ |
| ليدخل قاتل ابن صفية النار | ٤٥٢ |
| ليس شيء تغيب أذناه إلاّ وهو يبيض وليس شيء | ١٣٥٢ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| من استشار رجلاً فأشار عليه بما رأى | ٢٣٩٩ |
| من أنت؟... ذو الإبل الكثيرة... فما صنعت إبلك؟... ذلك خير سبيلها... | ١٥٣٢ |
| من ضمن لي واحداً ضمنت له أربعة: من وَصَلَ رحمه | ٢١٨٠ |
| نوم على يقين خير من صلاة على شك | ٢٩٤٤ |
| نظر إلى قوم ببابه، فقال: يا قنبر من | ١٢٤٩ |
| هجم بهم العلم على حقائق الأمور فباشروا روح | ١٨٢٤ |
| واللّه لقد رأيت أصحاب محمد صلى اللّه عليه وسلم فما أرى اليوم شيئاً | ١٤٦٦ |
| وما أصف لك مِن دارٍ من صَحَّ فيها | ٥٣٩ |
| لا تغتسلي في الحشّ ولا في مكان يبال فيه | ٢٩٥ |
| لا تؤاخ الفاجر فإنّه لك فعله | ١٣٧٩ |
| لا. حتّى تدفىء الضجيع وتروي الرَّضيع | ١٩٦٧ |
| لا يكون الرجل قيِّمٌ لأهله حتى لا يبالي أيّ | ١٦٦٦ |
| يا ابن آدم لا تحمل هَمَّ يومك الذي يأتي على يومك الذي أنت فيه | ١٢٠٥ |
| يا أهل القبور، يا أهل البلاء، يا أهل الوحشة ما الخبر عندكم؟ | ٢٧٨ |
| يا عبداللّه دعاؤك هذا... فادع اللّه به دبر كُلِّ صلاة | ١٠٢ |
| يا قنبر من هؤلاء؟ | ١٢٤٩ |
| يا كميل القبر صندوق العمل، وعند الموت يأتيك الخبر | ٢٧٨ |
| يا كميل، لو أُذِنَ لهم في الجواب لقالوا: ﴿إن خير الزاد التَّقْوى﴾ | ٢٧٨ |
| يا كهيعص، يا نور النور، يا قدوس، يا الله، يا رحمن | ٤٣٧ |
| **علي بن الجعد** | |
| لـمّـا مرّوا بجنازة داود الطائي، قالت امرأةٌ: من هذا؟... هذا عابد... | |
| هنيئاً لك يا عابد | ٣١٤١ |
| **علي بن حجر** | |
| قال بعض الحكماء: من طاب ريحه زاد عقله | ٣٤١٤ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **علي بن الحسن عن أبيه** | |
| قال بعض الحكماء: إن لكل شيء صدأ وصدأ القلوب شبع البطون | ١٦٢٨ |
| قال بعض الحكماء: التواضع مع البخل خير من السخاء مع الكبر | ١٦٢٨ |
| **علي بن الحسين عن أبيه (ليس هو علي بن أبي طالب)** | |
| جاء أعرابي إلى ابن طاهر وهو راكب فأنشده: | |
| سألت عن المكارم أين صارت | ٣٢١٧ |
| **علي بن الحسين بن شقيق** | |
| ما الأثر؟ | ٣٢٦ |
| **علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب** | |
| أخشى أن أقول لبيّك فيقول لي: لا لبيك | ٧٨٨ |
| إذا جمع اللّه الأوّلين والآخرين نادى المنادي | ٨٤٤ |
| تدرون بين يدي من أريد أنْ أقوم؟ | ٧٨٧ |
| جاءني رجل من أهل البصرة، فقال: جئت في حاجة من البصرة | ١٢٤٨ |
| عبدك يا ربّ نزل بفنائك. مسكينك يا رب بفنائك. فقيرك يا ربُّ بفنائك | ٤١٥ |
| من ضحك ضحكة مَجَّ مَجَّةً من العلم | ٣١٤ |
| من لم يرضَ الدنيا خطراً لنفسه | ١٣٧ |
| منزلتهما منه منزلتهما منه اليوم | ١٤١١ |
| لا تلوموني فإنّ يعقوب عليه السلام فَقَدَ سبطاً من ولده فبكى حتّى ابيضّت عيناه | ٦٩٢ |
| لا يقول رجلٌ في رجلٍ من الخير ما لا يعلم إلاّ أوشك | ٢١١٨ |
| يا زهري قنوطك من رحمة اللّه التي وسعت كُلَّ شيءٍ | ٢٤٩٩ |
| يبعث والله عليّ يوم القيامة ثم تهمه نفسه | ١٢٤٨ |
| **علي بن زيد** | |
| كانت خيرة أم الحسن مولاةَ أمِّ سلمة زوج النبيّ صلى الله عليه وسلم | ١١٩٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **علي بن عبدالله بن عبّاس بن عبد المطلب** | |
| إذاً لا نقضي لك حاجة، أمثلي يسأل حاجة أو يؤتى في حاجة لا تنكيء | ١٠٦٣ |
| كان جميلاً ويَعْجِبُ النّاس في طوله | ٣٤١٦ |
| كان يُصَلّي كُلَّ يوم ألف سجدة | ٥٤٤ |
| كنت إلى منكب أبي وكان أبي إلى منكب جدّي | ٣٤١٦ |
| **علي بن الفضيل** | |
| رأيت سفيان الثوري سجد سجدة فطفت سبعة أسابيع | ٢٧٩٧ |
| كان لا يستطيع أن يقرأ القارعة | ١٢٣٤، ٢٢٦٩ |
| يا أبة سَلْ لي ربَّك الحزن فلعلّي أنجو بطول | ١٢٣٣ |
| **علي بن المديني** | |
| ذكر لسفيان بن عيينة حديث رسول الله صلى الله عليه وسلم | (٢٤) ملحق |
| **عليان المجنون** | |
| من أراد سرور الدنيا وخزي الآخرة فليتمن ما هذا فيه | ٩٨١ |
| **عمار بن أبي الحسن** | |
| كان من البكّائين | ٢٧٢٨ |
| **عمار بن الراهب** | |
| رأيت مسكينة الطفاوية في منامي | ٣٥٣٠ |
| **عمار بن ياسر** | |
| إذا كنت كذبت عليَّ فاسأل اللّهَ أن لا يميتك | ٢٠٣٤ |
| **عمارة بن ثابت** | |
| جاء رجل من بني حاطب إلى علي بن أبي طالب رضي الله عنه فقال: | ٢٤٢ |
| **عمر بن أبي عمار** | |
| كان سعد بن أبي وقاص بين يديه لحم فجاءت حدأة | ٣٥٠ |
| **عمر بن أبي قيس** | |
| خرج عبد الله بن جعفر إلى حيطان المدينة فبينا هو كذلك | ٣٢٢٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عمر بن الخطاب** | |
| أأنت قاتلُ زيد بن الخطاب؟ ...وارِ وجهك عنّي | ٦٨٨ |
| أبت الدراهم إلا أن تخرج أعناقها | ١٢٢٠ |
| ابنِ ما يسترك من الشمس، ويكنّك من الغيث | ٥٤٦ |
| احبسوا، احبسوا، ما كنت أظن الناس يركبون الشيطان | ٩٨٦ |
| أحرز القوم موتاهم ولم يضيّعوهم | ٩٨٨ |
| ادْعُوا لي رأس القرية | ٩٨٦ |
| إذا أخذ أحدكُم من رأس أخيه شيئاً فليرده إياه | ١٨٦٨ |
| إذا اشتريت بعيراً فاشتره عظيم الخلقِ | ٢٥١٣، ٣٠٠٩ |
| إذا أعطيتم فأغنوا | ٢٠٩٠ |
| إذا نمت بالنّهار ضيّعت رعيتي، وإذا نمت بالليلِ | ٣٥٨٦ |
| أسافرت معه ... أخالطته... | ٧٠٨ت |
| استغزروا الدّموع بالتذكر | ٧٣٦/م |
| أعلمتم أنَّ الطمع فقرٌ وأنّ الإياسَ | ٥٥١ |
| أعوذ باللّهِ أن يبقيني بين أظهرهم حتّى تدركني | ١٥٣١ |
| اغْسلوا قميصي وخيّطوه وأعيراني قميصاً أو ثوباً | ٩٨٦ |
| أقتلت أخاً في السِّلم تظلمه | ٣٤٢٢ |
| اقرأوا القرآن تعرفوا به، واعملوا به تكونوا من أهله | ١٢٩١ |
| أمّا بعد: فإنّ للنّاس نفرة عن سلطانهم فأعوذ باللّه | ١١٩٨ |
| أمر عمر بن الخطاب رضي الله عنه خالداً بالمسير إلى الشام والياً | ١٠١٨ |
| امْسَحْ يدك بإستك أوذَرْ | ٥٨٥ |
| إنّ الحكمة ليست عن كبر السنِّ ولكنه عطاء | ٢٠٨٩ |
| ﴿إنّ الذين قالوا ربنا اللّه ثم استقاموا﴾ ولم يروغوا روغان الثعلب | ١٠٢٣ |
| إن عمر بن الخطاب استعمل عبد الله بن مسعود رحمه الله على القضاء | ٩٣٥ |
| إنْ كان مظلوماً استجبت له وإنْ كان ظالماً | ٩٨٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّ مالاً يؤخذ منه كل يوم شاة، إن ذلك لسريع الفناء | ٩٣٥ |
| إنّ من النّاس ناساً يلبسون الصوف إرادة | ٢٦٧٦ |
| إنّ نفسي أعجبتني فأردت أنْ أُذلّها | ٤١٧، ٢٤١٦ |
| إن الوالي لا يصلح إلاّ بأربع إنْ نقصَ واحدة | ٣٠٣٤ |
| إن يكن لك دين فلك كرم وإن يكن لك | ٢٠٨٨ |
| إنّا قوم أعزّنا اللّه بالإسلام فلن نلتمس | ٤١٨ |
| أنبئت إنك تفتي الناس ولست بأمير | ٢٥٢٤ |
| إنّك لجزل فأين كان أخوك منك؟ | ٣١٣٦ |
| إني أنزلت نفسي من مال الله منزلة والي مال اليتيم | ١٢٩١ت |
| إنّي لأرى الرجل فيعجبني فأقول: له حرفة؟ | ٢٥١٧، ٣٠٠٥ |
| إني وإياكم في مال الله... | ١٢٩١ت |
| أهل الشكر مع مزيدٍ من اللّهِ فالتمسوا الزيادة | ٢٦٨٧ |
| أيُّ الطعام أحبُّ إليك؟ | ٦٣٨ |
| أيها الناس لقد رأيتني أرعى على شاهاتٍ لي من بني مخزوم | ١٦٨٢ |
| بر أبويك وكن معهما حتى يموتا | ١٢٦٤ |
| بع الحيوان أحسن ما يكون في عَيْنِكَ | ٣٠٠٩ |
| بعث الأحنف بن قيس على جيشٍ قبلَ خراسان | ١٠١٥ |
| تعلموا العلم، وتعلّموا للعلم السكينةَ والحلمَ. وتَواضعوا لمن تعلّموا | ١١٩٧ |
| ثكلتك أمك عمر، وبلغت ما أرى | ٢٠٠١ |
| خالق هذا وخالق عمرو بن العاص واحد | ٣٣٤ |
| خرجت مع ناس من قريش في تجارة إلى الشام في الجاهلية فلمّا خرجنا | ٢٠٠١ |
| رحمة اللّه عليه ذاك أقلُّ للزحام | ٩٨٨ |
| الرأي المفرد كالخيط السحيل، والرأيان كالخيطين المبرمين | ٥٩٣ |
| ثمكٌ في العتاق والهجن من الخيل فدعا سليمان بن ربيعة الباهلي | |
| بطستٍ من ماءٍ | ٩٣٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| طاف ليلةً فإذا هو بامرأةٍ في جوف دارٍ لها وحولها صبيان يبكون | ٢١٦ |
| غَلَّةُ شهرٍ بشهرٍ (تفسير قوله تعالى: ﴿وجعلتُ له مالاً ممدوداً﴾) | ٣٤٢٣ |
| فأنت الذي لا علم لك به، أراك رأيته يرفع رأسه ويخفضه في المسجد | ٧٠٨ |
| فما ذنبي إنْ كان قد نزع من قلبك الرحمة | ٢٧٠٩ |
| فما هذا القدور التي على النّار | ٢١٦ |
| فيم كنتم ... فتمنوا وإنّا نتمنّا معكم | ٢٤٩٦ |
| قدم بريد ملك الروم على عمر بن الخطاب رضي الله عنه | ٢١٥ |
| قدم الجابية على جمل أورق تلوح صلعته بالشمس ليس عليه قلنسوة ولا عمامة | ٩٨٦ |
| قدم رجل من بعض الفروج على عمر بن الخطاب رحمه الله فنثر كنانته فسقطت صحيفة | ١٨٥٠ |
| كان أبيض أمهق تعلوه حمرة وكان يُصَفِّر لحيته | ١٩٤ |
| كان إذا قدم عليه الوفد سألهم عن حالهم وأسفارهم | ٣٤٣ |
| كان إذا نزل يلقى له كساء أو نطع على الشجرة فيستظل به | ٤٩٠، ٢٤١٥ |
| كان أروح كأنه راكب والناس يمشون | ١٩٦ |
| كأنّ راكبها غصن بمروحة إذا تدلّت به أو شاربٌ ثمل | ٢٨٥٢ |
| كان عالماً برعيته عادلاً في نفسه قليل الكبر، قبولاً للعذر، سهل الحجاب | ١٣٠٠، ٣٣٨٥ |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه يقول لمن ورد عليه: هل يثبت لكم العدو؟ | ١٢٦٠ |
| كان والله عمر أعقل من أن يَخْدع وأفطن من أن يُخْدع | ٤٤٣ |
| كان يأخذ بيده اليمنى أذنه اليسرى ويجمع | ٨٣٤ |
| كان يدعى الفاروق لأنه فرق بين الحق والباطل | ١٩٥ |
| [كان] يطوف بالكعبة وعليه إزار فيه إحدى وعشرين رقعة فيها أدم | ٦٠٥ |
| كان يلبس وهو أمير المؤمنين جُبَّةً من صوفٍ مرقوعة | ٢١٤ |
| كان يمرُّ بالآية من ورده بالليل فيسقط حتّى يعاد منها أيّاماً | ٥٤٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كانت خلافته فتحاً، وإمارته رحمة، والله إني لأظن الشيطان يفرق أن يحدث حدثاً | ١٠٢٥ |
| كتب إلى أبي موسى الأشعري أنه بلغني أنك تأذن للناس جمعاً غفيراً | ٤٤٢ |
| كتب إلى أبي موسى الأشعري أنّه لم يزل للناس وجوه يرفعون حوائج الناس إليهم | ٤٣١ |
| كتب إلى أهل البصرة والكوفة ومصر والشام أن ابعثوا إلي من كل بلد أفضله | ٢٣٩٠ |
| كتب إلى عمرو بن العاص رحمة اللّه عليه وهو على مصر: كن لرعيتك كما تحب أن يكون لك أميرُك | ٥٤٦، ٣٣٨٦، ٣٥٨٦ |
| كذبتك الظهائر (إنّ رجلا أتاه يشكو إليه النقرس) | ٦٣٢ |
| كلا وربِّ الكعبة لا يتأثَّمُ بها أبو بكر في حياته وأتحمّلُها بعد موته | ١٦٤ |
| كن لرعيتك كما تحب أن يكون لك أميرك | ٥٤٦، ٣٣٨٦، ٣٥٨٦ |
| لقد شكوت في كل شيء حتى في الصلاة | ١٢٩٤ت |
| لم أرك رثيت زيداً كما رثيتَ أخاك مالكاً | ٣١٣٦ |
| لو أن الصبر والشكر بعيران ما باليت أيهما أركب | ١٥٥٨ |
| لو كان لي ملء الأرض ذهباً لافتديت به من هول المطلع | ١٠٨١ |
| لو كنت قدمت الإسلام على الشيب لأجزتك | ١٣٦٥ت |
| لولا أنّي صادفتُ ربّاً رحيماً لكان عرشي يُثلّ | ١٤٤٣ |
| لوددتُ أنّك رثيتَ أخي بما رثيت أخاك | ٣١٣٦ |
| لو ضاعت سخلة على شاطيء الفرات لخاف عمر أن يسأله اللّه عَزَّ وَجَلَّ عنها | ٩٧٥ |
| لي على كل خائن أمينان الماء والطين | ١٢٢٢ |
| ليت آل الخطاب هكذا | ٩٨٨ |
| ليس من عبدٍ إلاّ بينه وبين رزقه حجاب فإن اقتصد أتاه رزقه | ١١١٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما أبالي على أي حال أصبحت | ١٥٥٨ت |
| ما أرى أخذت شيئاً ... انظروا إلى هذا | ١٨٦٨ |
| ما تصعدتني خطبة ما تصعدتني خطبة النكاح | ١٤٩٩ت |
| ما تصعّدني كلام كما تصعّدني خطب النكاح | ١٤٩٩ |
| ما شيء أقعد بامرىءٍ عن مكرمة من صغر همة | ١٩٦٤ |
| ما ظنكم بمكر العربي ودهاء الأعجمي إذا اجتمعا في رجل | ١٥٣١ |
| ما عزّاني أحدٌ بمثل تعزيتك | ٣١٣٦ |
| ما قال فيكم؟ | ٩٨٨ |
| ما كان اللّه عز وجل ليراني أنْ أرى نفسي أهلاً لمجلس أبي بكر | ١٢٩١ |
| ما كنت أرى هذا يكون، وقد علمت أن الكلبة تسند ما يسفدها الكلاب | ٢٠٨٥ |
| ما النّار في يبس العرفج بأسرع من الكذب في فساد مروءة | ١٧٤٤ |
| ما هَبَّت الصبا إلاّ بكيت على أخي زيد، وكان إذا لقي متمم بن نويرة | ٦٨٧، ٢٠١٦ |
| ما هذا؟ ... ومَاالكتّان؟ | ٩٨٦ |
| ما هما بأحبّ الطعام إليه، ولكنّه يحبُّ خصب المسلمين | ٦٣٨ |
| ما وجدتُ لئيماً قطُّ إلاّ وجدته رقيق المروءة | ١٦٥٩، ٢٨٩٨ |
| من اتّجر في شيء ثلاث مرّات فلم يُصب منه فليتحول إلى غيره | ٢٥١٣، ٣٠٠٩ |
| من اتقى اللّه لم يشفِ غيظه ومن خاف اللّه | ٢٣٦٤ |
| من الذي يقول؟ ...فمن الذي يقول؟ ...النابغة أشعر شعرائكم | ١٤٠٢، ١٤٠٣، ١٤٠٤ |
| من أنت؟ ...واللّه لليلةٌ من أبي بكر ويوم خير من عمر وآل عمر | ٢٢٣٨ |
| من أنتم ... أنتم المتوكّلون، إنّما المتوكّل الذي | ٣٠٢٧ |
| من خلصت نيّته ولو على نفسه كفاه اللّه ما بينه وبين الناس | ٣٥٣٤ |
| نهى أمير المؤمنين عن الملق | ١٨٦٨ |
| هل سافرت معه؟ ... فهل كانت بينك وبينه معاملة؟ فهل أئتمنته على شيء؟ | ٧٠٨ |
| واللّهِ إنّ هذا الذي أدّى هذا لأمين | ٣٧٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| والله لو أن لي طلاع الأرض ذهباً | ١٠٨١ت |
| واللّه ما أردت بهذا إلا مقاربتي وإن كنت لأحسب أن فيك خيراً | ٦٢٣ |
| واللّهِ لآكلهما حتّى تخصبَ النّاس | ١٩٤ |
| والله لليلة من أبي بكر ويوم خير من عمر وآل عمر | ٢٢٣٨ |
| وأنا أقول كما قال العبد الصالح يا غدّار | ٣٤٢٢ |
| وعندي يومئذٍ مال كثير ... واللّه لأفضُلَنَّ أبا بكر | ٢٢٣٩ |
| وكيف أمنتك؟ ...قاتله الله أخذ أماناً | ٣١٠٤ |
| ويحك ياابن عوف إنّي خلوتُ فحدّثتني نفسي | ١٦٨٢ |
| ويلك، وما قاتل الثلاثة | ١٦٩٠ت |
| لا أدركت أنا ولا أنت زماناً يتغاير الناس فيه على العلم | ١٥٦٤ |
| لا بأس عليك إنّي غيرُ قاتلك حتّى تشربه | ٣١٠٤ |
| لا تطيلوا الجلوس في الشمس | ١٩٨٠ت |
| لا تغرنكم صلاة امرىء ولا صيامه | ٧٠٨ت |
| لا مرحباً بهذه الوجوه التي لا ترى إلا في الشر | ٦٥٢ |
| لا يَحِلُّ لعمر من مال اللّه إلاّ حلّتين: حُلّةً للشتاء | ٢٣٩٤ |
| لا يلهك النّاس عن نفسك فإنّ الأمرَ يصير إليك دونهم | ١٨٩٥ |
| يا أبا ثور حدّثنا بعجيبة بسم الله الرحمن الرحيم | ٣٤٢٢ |
| يا أبا ذر مَن أنعم الناس بلاءً؟ ...صدقت يا أبا ذَرٍّ | ١٧٨٦ |
| يا أسلم احمل عليَّ ... لا أمَّ لك يا أسلم بل أنا أحمله لأنّي أنا | ٢١٦ |
| يا أسلم تدري لم ربضت بحذاهم ... رأيتهم يبكون | ٢١٦ |
| يا أمة اللّه، إيش بكاء هؤلاء الصبيان؟ | ٢١٦ |
| يا بني السائب إنّكم قد أضويتم فانكحوا في النزائع | ١٤٣٧، ٣٣٥٤ |
| يا سارية، الجبل | ٥٨٤ |
| يا عبد الرحمن إنّي لا أجد لهم إلاّ ذلك، والله لو أنهم يعلمون ما لهم عندي | ١١٩٩ |
| يا غلام احملني معك | ١٤٠١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا هذا ارْفع رأسك فإنّ الخشوع لا يزيد على ما في القلب | ١٦٩١، ٣١٩١ |
| يأكلُها داجنهم | ٣٠٠٤ |
| يرحم اللّهُ أبا بكر لقد أتعبَ من بعده | ٢٣٩٣ |
| ينبغي للرّجل أن يكون في أهله مثل الصبي فإذا التمس ما عنده | ١٠٣٨، ٣١٨٨ |
| **عمر بن ذر** | |
| اللهم إنّي أعوذ بك أن تحسنَ برامقة العيون علانيتي | ١٤٣٥ |
| اللهم أني قد وهبت حقي بيني وبينه فاغفر له من الذنوب ما بينك وبينه | ٣٨٠ |
| قرأت كتاب سعيد بن جبير إلى أبي | ٢٣٤٥ |
| لو كان لقلبي حياة ما نطق لساني بذكر الموت أبداً | ٣٠٩٧ |
| يا أبة مالَكَ إذا تكلّمْتَ أبكيْتَ الناسَ وإذا تكلّمَ غيرُك لم يبكهم | ٧٣٦ |
| يا هذا لا تغرق في شتمنا، ودَع للصلح موضعاً فإنّي | ١٦٠٢ |
| يرحمك الله يا ذر ما علينا بعدك من خصاصة | ٣٨٠ |
| **عمر بن عبد العزيز** | |
| آتيني بالخريطة، فأتي بخريطة مختومة | ٥٠٤ |
| ابنها بالعدل ونَقِّ طرقها من الأذى | ٣٥٨٥ |
| أجلسوني ... اللهمّ أنا الذي أمرتني فقصرت | ٢٣٦٥ |
| أخبرني ببعض ما رأيت من عجائب الحجّاج | ١٩٩٩ |
| إذا كان يوم القيامة ووافت الروم بقياصرها | ١٨١٧ت |
| أردت أن تَحجَّ علينا الأمم أنّا غيّرنا توحيد ربِّناعزّ وجل | ٣٠٢٣ |
| أردت أن يستفزّني الشيطان فأنال منك اليوم | ٢٨٠٠، ٣٣٣٠ |
| أردت ضربَ غلام لي، فقال لي: يا عمر اذكر ليلة | ٤٠٩ |
| أفضل العبادة أداء الفرائض واجتناب المحارم | ٢٥٨٦ |
| الله أكبر سبقنا واللّه رجل كان أبوه سباقاً إلى الخير | ٢٠٠٠ |
| اللهم أنا الذي أمرتني فقصرت ونهيتني فعصيت، ولكن | ٢٣٦٥ |
| اللهمَّ زِدْ في إحسان محسنهم وارجع | ٧٢٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أما بعد، فإنَّ الدنيا عدوة أولياء الله وعدوة أعداء الله | ٦٨٠، ٣٠٩٠ |
| أما بعد، فإنّ اللّه تبارك وتعالى لمّا أدخل | ٢٦٨٨ |
| أمّا بعد فإنّكم لم تخلقوا عبثاً ولن تتركوا سدىً | ٩٧٢ |
| أما بعد، فإنّه من أكثر ذكر الموت رضي من الدنيا باليسير | ١٧١٧ت |
| أمّا بعد فحصنها بالعدل ونقِّ طرقها من الظلم | ٢٢٨٧ |
| إنّ خصلتين خيرها الكذب لخصلتي سوء | ٢٣٠٧ |
| إنّ الولاةَ جعلوا العيون على العوام وأنا | ٦٧٢ |
| إنكم أنضيتم الظَّهر وأرملتم النسوان | ١٦٨ |
| إنّما أردت أن يستفزني الشيطان فأنال منك اليوم | ٢٨٠٠، ٣٣٣٠ |
| إنّي لأجمع أن أخرج للناس أمراً من أمرِ العدل فأخاف | ٢٢٠٤ |
| إنّي لأرى حضرة ما هي بإنس ولا جن | ٢٣٦٥ |
| تذاكروا النعم فإنّ من ذكرها شكرها | ٢٣٦٣ |
| تلك دماء طَهَّر اللّه يدي منها فما لي أخضب لساني فيها | ١٩٦٥ |
| جهاد الهوى | ١٩٦٣ |
| رأيت الخضر عليه السلام وهو يمشي مشياً سريعاً | ١٨٨٦ |
| غَرَّني منك مجالستك القرّاء وعمامتك السوداء وخشوعك | ١٤٧١ |
| كان إذا أراد معاقبة رجلاً حبسه ثلاثة أيام ثم عاقبه | ٢٨٠٠، ٣٣٣٠ |
| كان يقول: نُسَرُّ بما يبلى ونفرح بالمنى | ٦٠٩ |
| كانت الغنم والأُسد والوحش ترعى في خلافة عمربن عبد العزيز | ٢٠٤ |
| كتب إلى بعض عمّاله: أما بعد، فإذا دعتك قدرتك على الناس | ٥٨٩ |
| كتب إلى بعض عُمّاله: حسبي بقاء اللّه من كُلِّ ميِّت | ٧٩٠، ٣٢٠٢ |
| كتب إلى الحسن البصري رحمهما اللّه تعالى: عظني وأوجز | ٢٧٩٥ |
| كتب إلى عامله عدي بن أرطاة: أمّا بعد: فإنّ الدنيا عدوةُ أولياء اللّه وعدوّة أعداء اللّه | ٦٨٠، ٣٠٩٠ |
| كتب بعض العباد إلى عمر بن عبد العزيز أما بعد: فإن الدنيا ليست دار | ٢٠٥٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كلْ يا ابن شهاب | ٥٠٤ |
| كم من عامر موثق عمّا قليلٍ يخرب وكم من مقيمٍ مغتبط | ٢١٩٣، ٢٩٨٩ |
| كيف تجدك؟ ...لأنْ تكون في ميزاني أحبُّ إليَّ أن أكون في ميزانك | ٣٨١ |
| لمّا بنى بفاطمة بنت عبد الملك بن مروان أسرج في مسارجه تلك الليلة الغالية | ٢٥١٨، ٣٠٠٦ |
| لو تخابثت الأمم، وجئنا بالحجّاج لغلبناهم | ١٨١٧، ٣٤٦٧ |
| لو كان الصبر والشكر بعيرين ما باليت أيهما أركب | ٢٥٤٤ |
| ما أردنا المشقة عليك، ولكني بلغني عنك حديث ثوبان | ٢٠٣٣ |
| ما هذا الدعاء؟ ...عليك من الدعاء بما يُعْرف .... صدقت | ١٨١٣ |
| ما وعظني أحدٌ أحسنَ ممّا وعظني طاوس، كتب إليَّ: استَعنْ بأهلِ الخير | ٤٦٦ |
| من عَلِمَ أنّ للكلام ثواباً وعقاباً قلَّ | ١٧١٧ |
| نهى عن ركض الفرس إلاّ في حَقٍّ | ٩٤٦ |
| هذا ممّا أصاب عبد العزيز بن مروان في مصر إذ كان والياً | ٥٠٤ |
| هكذا يكون العلم يا ابن شهاب | ٥٠٤ |
| والله لقد نكحت المتنعمات، فاطمة بنت عبد الملك | ٢٠٣٣ |
| لا تأذن لعنبسة علينا ألاّ تكون له حاجة | ١٩٩٩ |
| لا تقف على بابي ساعةً واحدةً إلاّ ساعة تعلمُ أنّي جالسٌ | ٢٦٠، ٣٣٨٠ |
| لا تودنّ عاقاً، كيف يودنّك وقد عَقَّ أباه | ١٠٩١ |
| لا ينبغي أن يكون الرجل قاضياً حتّى تكون فيه خصال | ٣٠٧١ |
| يا ابن شهاب أخبرني عن قول اللّهِ عزّ وجلَّ: ﴿ولقد آتينا موسى تسع آياتٍ بيِّنات﴾ ما هُنَّ؟ | ٥٠٤ |
| يا أمير المؤمنين، هذا آثار رحمته فيه شدائد كما ترى، فكيف بآثار سخطه وغضبه | ١١٠١ |
| يا فتى ما الذي بلغ فيك ما أرى ... سألتك باللّه ألاّ صدقتني | ٣٨٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عمر بن محمد بن المنكدر** | |
| رأيت لو أنّ رجلاً صام الدهر كله لا يفطر وقام الليل | ٢١٩٦، ٢٩٨٨ |
| **عمر المخزومي** | |
| نادى عمر بن الخطاب رضي الله عنه بالصلاة جامعة، فلما اجتمع الناس وكثروا ... | ١٦٨٢ |
| **عمر بن هبيرة الفزاري** | |
| اللهمّ إنّي أعوذ بك من طول الغفلة وإفراط | ١٩٣٢ |
| وكيف ذلك .... أمّا الحدّة فإنّ السَّوطَ يقوّمك، وأمّا الدمامة | ١٨٤٧ |
| **عمر بن يونس اليمامي** | |
| بلغني أن يعقوب | ١٢٢ت |
| **عمران بن حصين** | |
| ألا وأن من المثلة أن ينذر الرجل أن يحج ماشياً | ٥١٥ |
| **عمران الخواص** | |
| سلم، سلم يا مالك لا أعود | ١٥٩٣ |
| **عمران بن سليمان** | |
| بلغني أنّ عيسى عليه السلام قال لأصحابه: إنْ كُنْتم إخواني وأصحابي فوطِّنوا أنفسكم | ٩٠١ |
| **عمران بن مسلم الباهلي** | |
| أحوجتُه إلى مسألتي | ٤٦٧ |
| **عمران بن موسى الجزري** | |
| قدم العهد أسلاني | ٧٤٣ |
| كُلَّما أبلى الثرى وجههم | ٧٤٤ |
| **عمرو بن أوس** | |
| الذين لا يظلمون وإذا ظلموا لا ينتصرون | ٤١٦ |
| **عمرو بن بكر** | |
| أنشدني رجلٌ من ثقيف: تقولُ سُلَيْمى ما لرأسك شايباً | ٥٧١ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عمرو بن جرير** | |
| لمّا مات ذر بن عمر بن ذر وقف على قبره، فقال: يرحمك اللّه يا ذر | ٣٨٠ |
| **عمرو بن الحارث** | |
| كنت متى شئت أن أجد من يَعِدُ وينجز وجدْته | ١١٦٠ |
| **عمرو بن حفص** | |
| كان عند أبي وجدّي ورقة يتوارثونها قبل الإسلام بزمان فيها | ١٢٩٨ |
| **عمرو بن خارجة** | |
| إن لهذا الشيخ ابناً يعني أبا طالب | ٢٥٣٤ |
| **عمرو بن دينار** | |
| كان غَلَّةُ طلحة بن عبيد اللّه رضي اللّه عنه كُلَّ يوم ألف واف | ٤٨٥ |
| **عمرو بن سعيد بن العاص** | |
| إذاً واللّه لا يأخذها إلاّ معجلة منتقدة | ٣٠٨٤ |
| إنّي أعرف الخط وإنّي أنكر أن يكون لمثلك مثل هذا المال ... أتعرف هذا ما سببه؟ | ٣٠٨٤ |
| والله يا أمير المؤمنين ما رأيت أحداً من أهل بيتك في مثل حالك إلاّ مات | ١٣٧٧ |
| والله يا أمير المؤمنين لقد ابخرماء أنفك | ١٣٧٧ت |
| **عمرو بن شرحبيل** | |
| لو عَيَّرْتَ رجلاً برضاع الغنم لخشيت أن أرضعها | ٨٩٠ |
| **عمرو بن شمر** | |
| كانت سودة بنت عمارة تبكي علياً رضي اللّه عنه قالت | ١٠٧٩ |
| **عمرو بن العاص** | |
| أدب بارع ولسان قاطع (المروءة) | ٣٠٩٥ |
| أربعة لا أمَلُّهم أبداً، جليسي ما فهم عنّي، وثوبي ما سترني | ١/٣٠٠٤، ٣١٩٣ |
| الغمرات ثم ينجلين | ١٨٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لسان المرء قطعة من عقله | ٥٩٩/م |
| ليس العاقل الذي يعرف الخيرَ من الشرِّ، ولكن العاقل الذي يعرف خير الشرَّين | ٦٧٠ |
| ما بُطِنَ قوم قَطُّ إلاّ فقدوا عقولهم وما مضت عزيمةٌ | ٦٤٧ |
| ما المروءة؟ | ٨٢٣ |
| من ترك الفضول، واقتصر على ... من كان رأيه ... من بَذَلَ دنياه في ... | |
| من رَدَّ جهله علمه | ١٧١٨ |
| واللّه إنّك لتعلم أنّي أعلم أنّك كذّاب | ٢٥٤٣ |
| يا أمير المؤمنين لا يكوننّ شيءٌ من أمور رعيتك | ١٩٧٢ |
| **عمرو بن عتبة بن أبي سفيان** | |
| كان أبونا لا يرفع المواعظ عن أسماعنا أبداً إذا أراد | ١٤٩٣ |
| يا أبا زيد .... إيّاك أعنّي إنّا معاشر قريش لا ندعو موالينا | ٢٢٣٥ |
| **عمرو بن عمرو التميمي** | |
| في الصيف ضيعت اللبن | ١٠٢٨ |
| **عمرو بن مرة** | |
| كان عليّ رحمه اللّه يقرأ : والعَصْرِ ونوائب الدهر | ٢٥٤٦ |
| **عمرو بن مسعدة** | |
| أما بعد، فإنه لم يعدمك من معروفك عندنا أمران... | ٧١٢ |
| **عمرو بن معاوية العقيلي** | |
| اللهمّ قني عثرات الكرام | ٢٤٠٥ |
| **عمرو بن معدي كرب الزبيدي** | |
| رويدك لا تعجل بليت بصارم | ٣٤٢٢ |
| متواضع في جبايته، عربي في نمرته، أسدٌ في تاموره | ٢٠٢٠ |
| يا أمير المؤمنين إنّه أصابنا في الجاهلية مجاعة شديدة | ٣٤٢٢ |
| يا أمير المؤمنين فأين أنتم عن عجيبة | ٣٤٢٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عمرو بن ميمون الأودي** | |
| مثل النخلة لا يتحرَّك، فسار موسى عليه السلام ومن معه | ١٣٣٨ |
| مسيرة سبعين ألف سنة (تفسير قوله تعالى: ﴿وظلٍّ ممدود﴾) | ٤٧ |
| **العمري الزاهد** | |
| لم أر واعظاً أوعظ من قبرٍ ولا ممتعاً أمتع | ١٨٨٧ |
| **عمير بن ضبيعة** | |
| بينما أنا أسير في فلاةٍ وابن ظبيان معنا | ٢٠٨٢ |
| **عنبسة بن سعيد** | |
| يا أمير المؤمنين كنا جلوساً عنده ذات ليلة، قال: فأتي برجل | ١٩٩٩ |
| **العوام بن حوشب** | |
| الابتهار بالذنب أعظم من ركوبه | ٣٠٧٣ |
| **عوانة بن الحكم** | |
| أن الحبشة لما قدمت مكة أخذت في طريقها | ١٢٥٣ |
| يعرض أهل الأهواء على إبليس اللعين يوم القيامة | ١٨٠١ |
| **عوسجة بن مغيث القائف** | |
| كُنَّا يسرق نخلنا فعرفنا آثارهم فركبوا | ٢٥٥٨ |
| **عوف بن أبي جميلة** | |
| قام أعرابي إلى سليمان بن عبد الملك، فقال: يا أمير المؤمنين إنّي مكلِّمك بكلام فاحتمله | ٦١٣ |
| **عوف بن النعمان الشيباني** | |
| لأن أموت عطشاً أحبُّ إليّ من أن أكون مخلافاً للوعد | ١٨٧٢ |
| **عون بن عبد الله بن عتبة بن مسعود** | |
| الخير الذي لا شرَّ فيه: الشكر مع | ٢٦٨٥ |
| ظَلَّ رجل صائماً في عام سَنَة فابتُلِيَ بسائل عند فطره | ٦٥٠ |
| قد ورد الأول والآخر متعب منتظر، فأصلحوا ما تقدمون عليه بما | ١٤٧٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان يقال: يأتي على النّاس زمان نرضى فيه من العلم بالعمل | ١٣٢٧ |
| **العيزار بن جرول** | |
| خرجتُ مع زاذان إلى الجبان يوم العيد ...تقول عن هذا وله مثل هذا ... | ١٥٢٤ |
| **عيسى ابن مريم صلى اللّه عليه وسلم** | |
| اتركوها يغفر لكم | ٢٤٩٨ |
| أخوك أعبد منك | ٧٥٣ |
| اللهم أنت إله من في السموات وإله من في الأرض | ١٢٠٣ |
| اللهم أنت القريب في علوك المتعال في دنوك الرفيع على كل شيء | ٧٢٨ |
| إن كنتم إخواني وأصحابي فوطنوا أنفسكم على العداوة والبغضاء من الناس | ٩٠١ |
| أنا أكرم على اللّه من أن يجعل لي شيئاً يشغلني عنه | ٢٠٧٦ |
| أنا الذي أنزلت الدنيا منزلتها بإذن اللّه ولا عجب ولا فخر | ٩٠٢ |
| أنا الذي كفأت الدنيا فليس لي زوجة تموت ولا بيت يخرب | ٢٧٥ |
| إني كيفت لكم الدنيا فلا تتغشوها | ٩٨٥ |
| بطحت لكم الدنيا وجلستم على ظهرها فلا ينازعكم | ٩٨٤ |
| بيتي المساجد، وطيبي الماء، وإدامي الجوع | ٩٠٢ |
| تدعوا اللّه ييسر لك من الأمر ما لا يجب مع اللّه غير اللّه | ٢٢٤٩ |
| تعملون للدنيا وأنتم ترزقون فيها بغير عمل | ١٨٠٤ |
| السلام عليكم يا بني إسرائيل | ٩٠٢ |
| طالب الدنيا مثل شارب ماء البحر | ١٤١٨ |
| طوبى للذين يرحمون فعليهم تكون الرحمة | ٩٢٩ |
| طوبى لمن سمعت أذناه ما يقول لسانه | ١٢٢٤ |
| طوبى لمن علمه اللّه كتابه ثم لم يمت جباراً | ١١٩٦ |
| فكرت في الخلق فوجدت من لم يخلق أغبط عندي | ٤٨٦ |
| كل إنسان يعطي ما عنده | ١٤٩٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كن وسطاً وامشِ جانباً | ١٠٨٦ |
| كونوا حلماء كالحيات، وبلهاً كالحمام | ٢٠٨٤ |
| ليس أنت الذي أقمتني، إنما أقامني الذي لم يرد أن أصيب من الدنيا شيئاً | ١٠١٧ |
| من الغنى أتيتم | ١٥٨٠ |
| من كثر كذبه ذهب جماله | ٢٩٩٤ |
| لا تلقوا اللؤلؤ إلى الخنازير | ٣١١ |
| لا يستقيم حب الدنيا وحب الآخرة في قلب مؤمن | ١١٥٠ |
| لا ينبغي للإمام أن يكون سفيهاً | ١٥٢٣ |
| يا خالق النفس من النفس | ١٩٩٥ |
| يا خرب الخربين أين أهلك الأولون | ٧٩٧ |
| يا معشر الحواريين اجعلوا كنوزكم في السماء | ٤٦ |
| **عيسى بن عبيد عن عمه** | |
| الذي قتل عثمان بن عفان رضي اللّه عنه رجل من مراد | ٣٠٠١ |
| **عيسى بن عُقبة** | |
| كان يسجد حتّى إنّ العصافير لتقَعنّ على ظهره | ٥٨٠ |
| **عيسى بن علي** | |
| إنّ في قصري الساعة لألف محمومة | ٢٩٠٠ |
| **عيسى بن عمرو النحوي** | |
| قيل لحكيم من حكماء العرب: تمنَّ، فقال: مخادمة الإخوان وكفاف من عَيْشٍ | ٢٩٤٦ |
| **عيسى بن المبارك** | |
| إنّ شاعراً امتدح ابن شهاب الزهري فأعطاه وأجزل | ١٠٣٧ |
| **عيسى بن يزيد** | |
| خرج رجل من أصحابنا في طلب ضالة له | ١٩٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **عيسى بن يونس** | |
| قيل للأعمش: ما بَالُ أصحاب الحديث لا يشبعون من الحديث | ١٨٣ |
| **حرف الغين** | |
| **غالب بن صعصعة** | |
| أنا غالب بن صعصعة ... نعم ... ذعذعتها الحقوق وأذابتها النّوائب | ١٥٣٢ |
| **غزوان الرقاشي العابد** | |
| عليٌّ ألا أضحك أبداً حتّى ألقاه | ٢٧١١ |
| **الغضبان بن القبعثري** | |
| أصلح اللّهُ الأمير، لقد كان لي جَدٌّ يُسَمّى الغضبان فَسُمّيْتُ باسمه.... | ٢٠٧٠ |
| العاقل الذي لا يتكلم هدراً ولا ينظر شزراً | ٢٠٧٠ |
| القيد والرقعة ومن كان في ضيافة الأمير سمن | ٢٣٤٧/م |
| هن بمنزلة الأضلاع إن سويته انكسر | ٢٠٧٠ |
| **غندر** | |
| لا أُحَدِّثكم بشيءٍ حتّى تجيئون معي إلى السوق ... هؤلاء أصحاب الحديث | ٢٦٣٣ |
| **غيلان بن جرير القدري** | |
| إنْ يكن يوم أظفرُ به فاليوم .... فَبهتٌ فلم أدرِ ما أردُّ عليه | ٣٠٢٣ |
| كان ابن أخي مطرِّف قد حبسه السلطانُ في شيءٍ فكان يخاف عليه | ١٦٨١ |
| كان أشدُّ الناس عليّ كلاماً عمر بن عبد العزيز رضي اللّه عنه، كان يُلَقَّنُ من السماء | ٣٠٢٣ |
| **حرف الفاء** | |
| **الفرّاء (النحوي) أبو زكريا، يحيى بن زياد** | |
| اللّه تبارك وتعالى لا يحاسب أحداً على العطاء | ٣٥٨٠ |
| إن عيسى صلى اللّه عليه وسلم غاب عن خالته زماناً | ٣٥٨١ |
| طيّبها لهم، تقولُ العرب: هذا طعام معروف | ٣٥٨٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ناعمون (تفسير قوله تعالى: ﴿إنّ أصحاب الجنّة اليوم في شغل فاكهون﴾) | ١٠٠٢ |
| ومن يعش عن ذكر الرحمن: يعرض عنه. ومن قرأ بنصب الشين أراد يعمى عنه | ٩٣٢ |
| **الفرزدق (همام بن غالب)** | |
| ابغ لي كتاباً أكتب وصيتي، وأوصى لأقاربه ومواليه | ١٤٧٤ |
| إنّ الرزية لا رزية مثلها | ٣٠٨٨ |
| إن المهالبة الكرام تحملوا | ٥٣٠ |
| دخلتُ مع أبي على علي بن أبي طالب رضي الله عنه فسلَّم عليه | ١٥٣٢ |
| شهادة أن لا إله إلا الله منذ ثمانين سنة | ٥٥٩ |
| لئن جزع الحجّاج من مصيبة | ٣٠٨٨ |
| ما مر بي مثلها | ٣٤٧٦ |
| يا أبا سعيد تدري ما يقول النّاس ... يقولون إنّك خيرٌ ... شهادة أن لا إله إلاّ اللّه | ١٦٨٩، ١٨٧٤ |
| يا أبا فراس ما أعددت لهذا اليوم؟ ... نِعمَّا فَأَبْشِرْ | ٥٥٩ |
| **فرغان** | |
| لا والله ولكنه جذبني جذبة محق | ٢٠٦٤ |
| **فرقد السبخي** | |
| إنما كان يولد لبني إسرائيل لأنهم كانوا | ٢/٣٠٥٨ |
| بلغنا أنّ الأعمال كلُّها توزن إلاّ دمعة تخرج من عين العبد من خشية اللّه تعالى | ٢٠٠ |
| يا أبا سعيد أخاف أن لا أؤدّي شكره | ٦٤١ |
| يا أبا سعيد على وُدِّي. إنّ الدجال قد خرج وبيدي رأية وأنا بين | ٦٤٢ |
| **فضالة بن شريك** | |
| رمى الحدثان نسوة آل حرب | ٧٧٥، ٣١٩٩ |
| **الفضل بن دكين = أبو نعيم** | |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **الفضل الرَّقَاشي** | |
| اللهمّ لا تدخلنا النّار بعد أنْ أسكنْتَ قلوبنا توحيدَك | ٥٤٢ |
| وجدتُ علمَ النّاس في أربع؛ أوّله أن تعرفَ ربَّك | ٢٢٧ |
| **الفضل بن العبّاس** | |
| دلوني على رجل أسكن إليه في الرخاء والشدة | ٤٣٨ت |
| لعلّك ترى أنّك إذا قضيتَ حاجةً | ٢٦٤١ |
| **الفضل بن عيسى** | |
| أما بعد فإن الدار التي أصبحنا فيها دار بلاء محفوفة بالفناء | ١٠٥٥ |
| **الفضل بن يحيى** | |
| بأي وجه تلقاني | ١١٢٩ |
| **فضيل الرقاشي** | |
| ما زال لقمان الحكيم يعظ ابنه حتى انشقت مرارته من خوف الله عز وجل | ١٣٤١ |
| **الفضيل بن عياض** | |
| أجعتني وأجعت عيالي وأعريتني وأعريت | ٢٢٩٨ |
| اجعل أوثق عملك عند الله حبك أصحاب نبيه | ٢٢٨٨ |
| أصل الزهد الرِّضى عن اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٩٦٠، ٣٠٤٥ |
| أمُدَبِّرٌ غير اللّه تريدون؟! | ٥٨١ |
| إنَّ اللّهَ تبارك وتعالى يزوي الدنيا عن وليّه | ٢٣٥١ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى نبيٍّ من الأنبياء: أمّا زهدك في الدنيا فقد تعجّلْتَ | ٩٦٢ |
| ألا تراه كيف نزويها عنه مرّةً ونمرِّرُها عليه | ٣٠٤٥ |
| بلغني أنّ اللّه تبارك وتعالى قد حجز التوبة عن كُلِّ صاحب بدعة | ٢٢٨٨ |
| بئس الزاد إلى المعاد العدوان على العباد | ٢٣٦٠ |
| حسناتك من عدوِّك أكثر منها من صديقك | ١٣٤٦، ٣٣٥١ |
| درجة الرِّضى عند اللّه درجة المقرّبين وهم أكثر | ٢٥٥٤ |
| رأيت سفيان الثوري سجد سجدة فطفت سبعة أسابيع وهو ساجد | ٢٧٩٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| رُبَّما قال الرجل: لا إله إلاّ اللّه فأخشى عليه النّار | ٦٦٣ |
| رحم الله ابني علياً قرأ آية من كتاب الله فخرَّ في محرابه ميتاً | ١٦٢٧ت |
| عن فهم القرآن (تفسير قوله تعالى: ﴿سأصرف عن آياتي﴾) | ٨٤ |
| قال بعض الحكماء: شَرُّ الزّاد إلى المعاد الذنب بعد الذنب | ٢٨٢٣ |
| قال بعض الحكماء: مدار صالح الأمور في أربع في الطعام لا يؤكل إلاّ | |
| على شهوة | ٦٤٦ |
| قال عيسى ابن مريم صلى اللّه عليه وسلم: بُطِحَتْ لكم الدنيا وجلستم على | |
| ظهرها فلا ينازعكم | ٩٨٤ |
| قد علمت أني أشقى من ذلك أن أكون عند اللّه بمنزلة أولياءه | ٢٢٩٨ |
| كان يقال: لأنْ تطلب الدنيا بأقبح ما تطلب به الدنيا | ٣٣٩٨ |
| ما أحدٌ من أهل العلم إلاّ وفي وجهه نضرة | ١١٤ |
| ما بقي شيء أتمنّاه على اللّه قبل أن أموت إلاّ نظرة | ٢٩٦٣ |
| ما لي أراك كئيباً ... وما ذاك ... ويحك يا ابن المبارك | ٢٢٩٢ |
| من رأى من أخٍ له منكراً فضحك | ١٩٢٧ |
| من جلس مع صاحب بدعة | ١١٣ت |
| من وقَّر صاحب بدعة أورثه اللّهَ تبارك وتعالى العمى قبل موته | ١١٣ |
| المخلوق يرزق فإذا سخط قطع رزقه | ١٣٢١ |
| واللّه ما فاضت عينا عبدٍ قطُّ حتّى يضع اللّه يده على قلبه | ٢٩٨١، ٣١٣٥ |
| وسئل أعرابي وأنا أسمع كيف برّك | ٢٥٧٢ |
| وَفَدَ الأحنف والمنذر بن الجارود على معاوية رضي اللّه عنهم فتهيّأ المنذر | ١٥٧٦ |
| ويحك وهل أحد يسمع بذكر النّار تطيب نفسهُ أن ينام | ٧٢٣ |
| لا تغفلوها عن ذكر اللّه فإنّ من أغفلها فقد قتلها (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿ولا تقتلوا أنفسكم﴾) | ٨٥ |
| يا حسين: يقول اللّه تبارك وتعالى في بعض كتبه: كذب من ادّعى | ١٣٢ |
| يا رَبِّ، أعريتني وأعريت عيالي | ٣٥٧٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا فضيل خلقك وأفرغ نعمه ظاهرةً وباطنة وحرسك بعينه | ١٥٠٩ |
| يغتاب بين يديه رجل فيعجبه فيقول: لا إله إلاّ اللّه، وليس هذا موضعها، إنّما هذا موضع | ٦٦٣ |
| ينادي منادٍ يوم القيامة: إين الذين أكلت عيالاتهم أماناتهم | ٩٩ |
| ينبغي للقاضي إذا ابتلي بالقضاء | ٣٢٨ |
| **فضيل بن مرزوق** | |
| دخلت على زبيد وهو عليل، فقلت له: شفاك اللّه | ١١٦٧ |
| **حرف القاف** | |
| **القاسم بن سلاّم أبو عُبَيْد** | |
| عاشرت النّاس وكَلَّمْتُ أهل الكلام، فما رأيتُ قوماً أوسخ وسخاً ولا أضعف حجة ولا أحمق من الرّافضة | ٨٦٥ |
| قول العرب: لقد ذَلَّ من بالت عليه الثعالب. قيل هذا فيما بلغنا: | |
| أنّ رجالاً من العرب كانوا يعبدون صنماً | ١٠١٠ |
| قيل لبعض الحكماء، لوزدْتنا من فضل لسانك لعلّنا ننتفع به بعدك | ٢٧٩٣ |
| ما أتيت عالماً قط فاستأذنت عليه ولكن صبرت حتّى يخرج إلي | ١٧٢٠ |
| مثلكم لا يساكن أهل الثغر | ٨٦٥ |
| **القاسم بن عبد الرحمن** | |
| أول من رُمِيَ بسهم في سبيل اللّه عَزَّ وجل سعد بن أبي وقّاص | ٣٤٩ |
| **القاسم بن محمد بن أبي بكر الصديق** | |
| ابن آدم أهون وأضعف من أن يكون جريئاً على اللّهِ | ٩٢٧ |
| أعظم النّاسِ ذنباً أن يستخفّ الرجل بذنبه | ٢٩٧٣ |
| إنّ من أعظم الذنوب أن يستخفّ | ٢٣١٨ |
| دخلت على عائشة، فقلت: يا أمّاه، اكشفي لي عن قبر رسول الله | ٢٢٢٩ |
| **القاسم بن مخيمرة** | |
| ما أصاب مالاً من مأثم فوصل به رحماً أو تصدق به | ١٤٩١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **قبيصة** | |
| كان سفيان الثوري إذ أمر بشيء | ٢٤٩٤ |
| كان الفقراء في مجلس سفيان هم الأمراء | ٢٩٥٧ |
| **قتادة بن دعامة السدوسي** | |
| إذا حدثت بالليل فاخفض من صوتك وإذا | ٤٦٨ |
| إذا حدّثت في مجلس مراراً ذهب ضوءه | ٤٦٨ |
| إذا راءى العبد يقول اللّه تبارك وتعالى للملائكة: انظروا | ١٦٩٢، ٣٤٣٤ |
| أرواح الشهداء في صور طير بيض | ١٣٩٢ت |
| استقبال الشمس داء واستدبارها دواء | ٤٢٠ |
| أسرّوا بينهم، فقالوا: يخلق اللّهَ ما يشاء | ٢٦٦٠ |
| أمطر قبر هرم | ٣٤٦ت |
| إن أحببْتَ أعدته لك | ٢٩٠٢ |
| إنّ أرواح الشهداء في طيرٍ بيضٍ يأكلن من ثمر الجنة | ١٣٩٢ |
| إنّ أمّ الحسن البصري كانت مولاة لأم سلمة | ٢٤٣٥ |
| إن اليهود تصبغ أبناءَها يهوداً وإنّ النصارى تصبغ | ١٤٦٤ |
| انظر أتراه أعور ...وبينك وبين عرّاف اليمامة نسبٌ | ٢٩٠١ |
| إنّما كان عهدهم بآل فرعون امسِ فصار البحر طريقاً يبساً | ١٣٣٥ |
| جلست إلى سعيد بن المسيب سنتين | ٢٩٠٢ |
| خرج على ألف بغلة شهباء عليها ميائر | ٢٧٢٦ |
| صدقت هو أخبرني أنّ له ابناً اسمه عمر فلمّا سمعتُ كلامك | ٢٩٠١ |
| صِفْ لي عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه؟ فقال: كان عالماً برعيّته عادلاً في نفسه | ١٩٨٥ |
| فكانت شهادة للمقتول وتوبة للحي | ١٥٤٠ |
| قال موسى عليه السلام: يا رَبِّ أنت في السماء ونحن في الأرض فما علامة غضبك | ٤٢٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قاموا صفّين، فقتل بعضهم بعضاً حتّى قيل كُفُّوا | ١٥٤٠ |
| كان عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه يلبس وهو أمير المؤمنين جُبَّةً من | |
| صوف مرقوعة من أدم | ٢١٤ |
| كان مع موسى صلى اللّه عليه وسلم ست مئة ألف وأتبعهم | ١٣٣٧ |
| كان يستحبُّ أن لا تقرأ الأحاديث التي عن | ٢٦٥٣ |
| لليدين والرجلين قوله تعالى: ﴿نزاعة للشوى﴾ | ٢٠٦٩ |
| لم ينزل عذاب قطُّ من السماء على قوم إلاّ عند انسلاخ الشتاء | ٤٢٦، ٢٩٢٥ |
| لمّا أهبط آدم إلى الأرض قيل له: لن تأكل الخبزَ بالزّيتِ | ٥١٣، ٢٩٠٨ |
| لما دفن هرم بن حيّان مُطِرَ من يومه وأنبت | ٢٣٢١ |
| لن تخلو الأرض من أربعين بهم يغاث الناس | ١٥٩١ |
| ما نسيتُ شيئاً قطُّ | ٢٦٠٢ |
| ممن الرجل؟ ... ولد تميم فلاناً وفلاناً | ٢٨٢٩ |
| المشركون لا يسألون عن ذنوبهم | ١٠٠٠ت |
| هذا صاحب القدح فسألوه فأقرَّ | ٢٨٢٨ |
| همزه بعينه، وإغماضه فيما لا يحبُّ اللّهُ عز وجل | ٩٣٠ |
| واللّه إني لأرجو أن يكون الحسن منهم | ١٥٩١ |
| ومن يعقل يسأل عمّا لا يختلف فيه | ٢٩٠٢ |
| يدخلون النار بغير حساب | ١٠٠٠ |
| يقول ابن آدم حفظة يحفظون رزقكَ وأجلك وعملك | ١٤٥٠ |
| **قتيبة بن مسلم** | |
| أرسلني أبي إلى ضرار بن القعقاع بن معبد بن زرارة، فقال: قل له ... | |
| فدخلت عليه منزله ... فجعل شأنه يصغر في عيني | ١٩١٣ |
| أمسك أيّها الرجل فواللّه لقد تلمظت بمضغة طالما | ٢١٧٢ |
| انظروا ما يصنع ... تلك الأصبع الفاردة أحبّ إليّ من | ١٨١١ |

**قيس**

رأيت أصبع طلحة بن عبيد الله رضي الله عنه التي وقى بها رسول الله صلى الله عليه وسلم شلاّء ٤٨٣

**قيس بن الربيع**

قد كنت حذرتك آل المصطلق ٣٠٧٥

**قيس بن زهير**

يا أخي إنّك لا تدري إنّ مع الثروة والنعمة ٢٢٠٦

**قيس بن سعد بن عبادة**

اللهمَّ هبْ لي حمداً ومجداً، لا مجد إلاّ بفعال ٢٢١٠

كنت في الجيش فجاعوا.....، نحرت ١٤٢١ت

ما أحسن هذه الكناية، املؤوا بيتها خبزاً ولحماً ١٤٢١

**قيس بن عاصم المنقري**

إنّي امرؤٌ لا شائن حسبي ٣٣٢٨

قُمْ فأطلِقْ عن ابن عَمِّكَ، ووَارِ أخاك واحملْ إلى أُمِّه مئة من الأبل فإنَّها غريبة ٨٠٤، ٣٣٢٨

**قيس بن عمرو بن مالك الحارثي**

إذا اللّه عادى أهل لؤم ورِقَّةٍ ٩٨٨

تعاف الكلاب الضاريات لحومهم ٩٨٨

قبيلة لا يغدرون بذمَّةٍ ولا يظلمون ٩٨٨

ولا يردون الماء إلاّ عشية إذا صدر الورّاد ٩٨٨

**حرف الكاف**

**كُثَيِّر**

لولا أن سرورك لا يتِمُّ بأنْ تسلمَ وتسقمَ لدعوت ربِّي ٨٧٥

**كثير بن زياد**

أوصيكم تبيعوا دنياكم بآخرتكم تربحونهما والله جميعاً ١٣٩٥

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **كثير بن سعد** | |
| من جلس إلى صاحب بدعة نزعت | ١١٢ت |
| **كرز** | |
| أفيعجز أحدكم أن يعمل سبع يوم حتّى يأمنَ من ذلك اليوم | ٩١٧ |
| العبد فيما تكرهون إذا أحبَّ اللّه وترك ما تحبُّون | ٢٠٥٧ |
| كم بلغكم عن الدنيا ... فكم بلغكم مقدار يوم القيامة | ٩١٧ |
| **الكسائي/ عبيد اللّه بن محمد** | |
| إنَّ المرء ليكذب حتى يصدق فما يقبل منه | ٨٨٧/م |
| أنشد لبعضهم: كفى حزناً ألا أمُرَّ | ٧٤٢ |
| الرجل الرّاتع الذي يرضى بالقليل من العطاء، ويخادِنُ أخدانَ السوء | ٣٠٧١ |
| **كسرى** | |
| لا تعنا فقد أخذه من لا يرده ورآه من لا يفشي عليه | ١٩٠٢ |
| لا تنزلن في بلد ليس فيه خمسة أشياء: سلطان قاهر، وقاضٍ عادل | ١١٨٨ |
| **كعب** | |
| لتحبنّ إليكم الدنيا حتّى تتعبّدون لها | ١١٤٩ |
| **كعب بن الأشعري**(١) | |
| لا يدرك الناس ما قدّمت من حسن | ٣٣٩٣ |
| **كعب بن زهير** | |
| لو كنت أعجب من شيءٍ لأعجبني | ٥٣٥ |
| **كعب بن عجرة** | |
| يؤتى برجل يوم القيامة فيوزن بحبّة حنطة فلا يزن | ١٢ |
| **كعب الأحبار** | |
| أجد في التوراة: أحمد عبدي المختار لا فَظٌّ ولا غَليظَ ولا صخّاب | ١٢٩٥ |
| إذا كان الحديث حُلفاً والميعاد خلفاً والمقيت ألفاً | ٢٣٨٦ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى أسَّسَ الأرضين على : ﴿قل هو اللّه أحد﴾ | ١٣ |


(١) لعل الصواب: (ابن الأشرف)!

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إن الله يبغض أهل البيت اللحميين والحبر السمين | ١١٧٤ت |
| إنّ بين يدي منكبي الخازن من خزنة جهنّم مسيرة سنة | ٣١٤٥ |
| إنّ الرجل ليؤمر به إلى النّار فيبتدره مئة ألف ملك | ١٦١٥ |
| إنّي أجد في كتاب اللّه المنزّل أنّ الظلم يخرب الديار | ٢٠٥١ |
| تمسك النار يوم القيامة حتّى تبُصّ كأنها متن أهالةٍ | ٧٠٢ |
| لو برز رجل من أهل النار إلى الدنيا لأظلمت الدنيا | ١٥٢١ |
| لو حبس اللّه عزّ وجل الريح ثلاثاً لأنتن | ٢٦٥٢ |
| لولا كلمات أقولهنّ إذا أصبحت وإذا أمسيت | ١٦٧٠ |
| لا يعلو طيرٌ في السماء أكثر من اثني عشر ميلاً | ٨٤٢ |
| من صلى أربعاً بعد العشاء الآخرة يحسن فيهن الركوع | ٢٨٨٨ |
| **الكلبي** | |
| كان سالم بن نوفل الديلي سيد بني كنانة فخرج عليه ذات يوم | ١٧٣٥ |
| **كُلَيب بن وائل** | |
| إنّ رجلاً من المطوعة قال: رأيت ببلاد الهند شجراً له ورد أحمر فيه ببياض: | |
| لا إله إلاّ اللّه محمد رسول اللّه | ٣٢٣١ |
| **كميل بن زياد** | |
| خرجت مع علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه فلما أشرف على الجبان | ٢٧٨ |
| **الكميت** | |
| أما أبي فلا أريد به بديلاً | ٣٤٧٧ |
| **حرف اللّام** | |
| **لبيد بن ربيعة** | |
| إنّ تقوى ربّنا خيرُ نفلٍ | ٣٤١٩ |
| بلينا وما تبلى النجوم الطوالع | ٥٥٥ |
| كان يثبت القدر في الجاهلية | ٣٤١٩ |
| ما عاتب المرء الكريم كنفسه | ٥٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **لقمان الحكيم (لقمان بن عنقاء بن بيرون) وابنه ثاران** | |
| إن العبد السيء لا يعرف ربه عز وجل | ٢٢٨ |
| تركي ما لا يعنيني | ٨١٩، ٣٣٣٦ |
| ثلاثة من كن فيه فقد استكمل الإيمان | ١٣١١ |
| ثلاثة لا يعرفون إلا في ثلاثة مواطن | ٥٢٠ |
| ما زال لقمان الحكيم يعظ ابنه حتّى انشقت مرارته من خوف اللّه عز وجل | ١٣٤١ |
| يا بني إن الكبر رداء اللّه فلا تنازعن اللّه ردائه | ١٨٤٦ |
| يا بني انزل نفسك بمنزلة من لا حاجة لك به | ٣١٣٩ |
| يا بني لا تأكل إلا أطيب الطعام، ولا تنم إلا على لين الفراش | ٨٢٢ |
| **لقيط بن زرارة** | |
| أضاءت لهم أحسابهم ووجوههم | ٣٢٨٦ |
| **ليث** | |
| أنّ رجلاً وقف على قوم، فقال: من عنده ضيافة هذه الليلة، قال: | |
| فسكت القوم | ١٦٤٨ |
| **الليث بن سعد** | |
| حملت مولاة أحمد بن عبد اللّه ثلاث سنين حتّى خافت أن يكون في | |
| جوفها داء ثم ولدت غلاماً ... ورأيت أنا ذلك الغلام | ٣٣٥٣ |
| صن بهذه (الألف دينار) الحكمة التي آتاك الله عز وجل | ١١٧٩ |
| **حرف الميم** | |
| **الماجشون/ (عبد العزيز بن محمد)** | |
| حَجَّ المهدي ومعه الكسائي فقدَّمه بالمدينة يُصَلِّي بالنّاس | ٧١٥ |
| **المازني (بكر بن محمد بن بقية)** | |
| أنشد لأعرابي: أيّها الدائب الحريص المعنّى | ٣٢٦٧ |
| أنشد لبعضهم: لئن كنت محتاجاً إلى الحلم | ٨٠٥، ٣٣٢٩ |
| قال بعض الأشراف: الصبر على حقوق المروءة أشدّ من الصبر على | ٢١٠٩ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعض الحكماء: أبين الناس فضلاً من سبقك | ٢٦٤٣ |
| قال بعض الشعراء: احذر مغايظ أقوامٍ ذوي أنف | ٣٣٣١ |
| قالت لي ما قالت بنت الأعشى للأعشى فيا أب لا تنسنا | ٣٤٢٠ |
| قرأت في حكم الهند: ليس من خلة يمدح بها الغني إلاّ ذُمَّ بها | ١٥٩٦ |
| قلت لها ما قال جرير:ثقي بالله ليس له شريك | ٣٤٢٠ |
| لّما دخل علي بن أبي طالب الكوفة دخل عليه رجل من حكماء | ١٨٣٦ |
| لّما مات شبيب بن شيبة أتاهم صالح المري للتعزية ... وكان شبيب بن شيبة أبصر الناس بمعاني الكلام | ١٥٠٠ |
| لا ولكن لي أخت بمنزلة الولد | ٣٤٢٠ |
| **مالك بن إسماعيل** | |
| كان الأسود بن شيبان إذا حَجَّ لا يتزوّد شيئاً من الطعام ولا يشتري | ١٤٦٨ |
| **مالك بن أنس** | |
| أحدهما أوسع حديثاً والآخر يَصْلُحُ للأمانة | ٢٧٧٣ |
| من أراد صلاح دينه فعليه بترك مخالطة الناس | (٤) ملحق |
| لا يؤخذُ العلم من أربعة:سفيه معلن بالسفه، وصاحب هوى | ١٨٩١، ٣٠٥٣ |
| **مالك بن أوس بن الحدثان/ مالك الدار** | |
| قدم بريدُ ملك الروم على عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه فاستقرضت امرأةُ عمر ديناراً اشترت به عطراً | ٢١٥ |
| **مالك بن الحارث** | |
| قال اللّه تبارك وتعالى: من أشغله الثناء عليَّ عن مسألتي أعطيتُه أفضل ما أُعطي السائلين | ٤٩ |
| **مالك بن دينار (أبو يحيى)** | |
| أتيت القبور فناديتها: أين المعظم والمحتقر | ٥٨٨ |
| أقبل شهادة القرّاء في كُلِّ شيءٍ إلاّ بعضهم | ٢٩٤٧ |
| إنَّ اللّه تبارك وتعالى يوقف داود عليه السلام عند ساق العرش | ٧٠٥ |
| إنّ قوماً من أهل البصرة اشتروا جارية قرب شهر رمضان | ١٩٥٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّما طلب العابدون بطول النَّصب دوام الراحة | ٢٠٢ |
| أي فلان، عاهد اللّه أن تتوب عسى أن يشفيك اللّه عز وجل | ٢٠١ |
| بلغني أنّ في بعض السموات ملكاً له من العيون مثل عدد الحصباء | ٢٠ |
| بينما حبر من أحبار بني إسرائيل مُتكِيء على سريره | ١٢٧٠ |
| تلقى المؤمن شاحباً وتلقى المنافق وباصاً | ٩١٣ت |
| خرج أهل الدنيا من الدنيا ولم يذوقوا أطيب شيءٍ فيها ...معرفة اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٢٢٢، ١٨٧٩ |
| دخلت على جارٍ لي أعوده، فقلت له: أيّ فلان، عاهدِ اللّه أن تتوبَ | ٢٠١ |
| دخلت مكَّة فإذا أنا بجويرية متعبّدة الليل | ١٥١٥، ٣١٣٨ |
| رأيتُ الحسن في المنام مسروراً شديد البياض تتبرَّقُ مجاري دموعه | ١٤٣ |
| رأيت مسلم بن يسار في النوم بعد موته بسنةٍ فسلّمْتُ عليه | ١٤٠ |
| في التوراة طوبى لمن أكل من ثمرةِ يده | ١٦٥٠ |
| قال عيسى ابن مريم صلى اللّه عليه وسلم: طوبى لمن سمعت أذناه ما يقول لسانه | ١٢٢٤ |
| قال لي راهب: يا مالك، إن استطعت أن تجعل بينك وبين النار | ١٥٤٨ |
| قرأت في بعض الكتب: يا معشر الظَّلَّم لا تجالسوا أهل الذكر حتَّى | ١٠٧٣ |
| قرأت في التوارة: إن الذي يعمل | ١٦٥٠ت |
| القلب إذا لم يكن فيه حزن خرب | ٢٦٥٨ |
| كان عثمان رضي اللّه عنه إذا اطلع في القبر بكى | ١٣٠٣ |
| كأنكم تعادون إلى الثّريد | ٢٥١٢ |
| الكرسي تحت العرش | ٢١ت |
| لأن يترك الرجل درهماً حراماً خيرله من أن يتصدق بمئة ألف درهم | ١٩٤١ |
| لو كانت الصحف من عندنا لأقللنا الكلام | ٣٥٧ |
| ما أبكي على ما فاته في الدنيا غير أنّي أتخوّف أن لا ألقاه في الآخرة | ٦٩٣ |
| ما أشدّ فطام الكبير! | ١١٨٩ |
| ما نشق القبر عن عبدٍ ولا أمة إلاّ وملكان قائمان | ١٥٤٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| من طلب العلم لنفسه فالقليل منه يكفي | ١٨٨١ |
| المؤمن مثل الشاة المأبورة يريدُ التي أكلت في العلف إبرة | ٩٢٠ |
| هم يستبطئون المطر ... لكنّي واللّهِ أستبطىء الحجارة | ٧٢٩ |
| وددتُ أنّ رزقي في حصاةٍ أمصُّها حتّى أموت | ٩٧٨ |
| يا أبا يحيى ادع اللّه لي | ١١١٥ |
| يا عطاء إنّ في الجنّة حوراء | ١٧٧٣ |
| يا نفس لو كان فيك خير ما أساء الحسن بك الظن | ٢٠٩٦ |
| **مالك بن ضيغم** | |
| كان بشر بن المنصور عند الحجام وقد وضع المحاجم | ٤١٣ |
| **مالك بن عبيد اللّه الخثعمي** | |
| إيش تنظر، أما إنّه لم يكتبه كاتب | ٢٢٩٧ |
| **مالك بن مغول** | |
| بلغ عُمر أن العدو سايفوا أو قاموا للمسلمين فقال: غل القوم | ١٢٦٠ت |
| **مالك بن المنذر** | |
| يا بني، الزموا الأناة، واغتنموا الفرصة | ٢٦٧٣ |
| **المأمون العباسي** | |
| اطلبوا إلى اللّه حوائجكم واستغفروا لتفريطكم فإنّه يقال: لا كبيرة مع الاستغفار | ٢٩٩٣ |
| أوصيكم عباد اللّه بتقوى اللّه وحده والعمل لما عنده | ٢٩٩٢ |
| أول العدل أن يعدل الرّجلُ على بطانته ثم على الذين يلونهم حتّى يبلغَ العدلُ | ٨٧٠ |
| أول من تدعا المرأة المظلومة ... أين خصمك ... دعها يا أحمد فإنّ الحقّ | ٢٠٢٨ |
| حتى متى وأنا في حط وترحال وطول سعي وإدبار وإقبال | ٢١٨٤ |
| خُبِّرْتُ بوفاتك فغمّتني ثم جاءتني وفادتك فسرّتني | ٣٣٠٦ |
| عباد اللّه عَظُمَ قدر الدارين وارتفع جزاء العاملين وطالت مُدَّة الفريقين | ٢٣٥٢، ٢٩٩٣ |
| لم أرَ ابناً قطُّ أبرَّ بأبيه من الفضل بن يحيى بلغ من برِّه أنّ يحيى لا يتوضأ | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إلاّ بماءٍ سُخْنٍ | ١٠٩٨، ٣٢٢٣ |
| الملوك لا تتحمل ثلاثة أشياء، إفشاء السرِّ والتعرُّض للحرمة | ٨٧١ |
| وقع المأمون في رقعة متظلم | ٢٢٨٦ |
| **المبرّد = أبو العبّاس المبرّد محمد بن يزيد** | |
| **مبشر بن بشير** | |
| إن رجلاً هرب من الحجّاج فمرَّ بساباط فيه كلب بين خبيق يقطر عليه | ٢١١١ |
| **متمم بن نويرة** | |
| إنّه واللّه يحرِّكني لمالك ما لا يحرِّكني لزيد | ٣١٣٦ |
| كان واللّه أخي في الليلة ذا الأزيز والصراد يركب الجمل الثفال | ٣١٣٦ |
| نعم القتيل إذا الرياحُ تناوحت | ٣١٣٦ |
| ولا بُدَّ من تَلفٍ يصيبك فاصبر | ٦٨٩ |
| يا عمر لو أعلم أنّ أخي صار حيث صار أخوك ما رثيته | ٣١٣٦ |
| **المتوكل** | |
| إنّ هذا الرجل لا يرى بيعتنا | ٣٤٢ |
| **المثنى بن سعيد** | |
| لما قدمت عائشة بنت طلحة البصرة أتاها رجل | ١٢٥٦ت |
| **مجاهد بن جبر** | |
| اجعل مالك جنة دون دينك | ١١٧١ت |
| إنّ أدنى أهل الجنّة منزلة لمن يسير في مكة ألف | ٧٧ |
| إنَّ بني غِفارقربوا عجلاً ليذبحوه فنادى العجل | ٢٢٤٤ |
| إن داود عليه السلام جعل خطيئته في كَفِّه | ١٢٦٩ |
| إنّ قوماً خرجوا في سفر حين حضرت الجمعة | ٧٦٤ |
| بدء الخلق والعرش والهواء وخلقت | ٢٥٨٢ |
| بلغني أنّ المؤمن إذا مات بكت عليه الأرض | ١٢٢٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| تدور دوراً (تفسير قوله تعالى: ﴿يوم تمور السماء موراً﴾) | ٢٦٢٥ |
| ترحّم عليه وليس على دينك | ٢٠٤٣ |
| الحاج بيت اللّه أفضل وأعظم أجراً من جمع | ٢٤٩٢ |
| خرج غلام في بني إسرائيل بفخٍّ له فنصبه | ٢٢٤٦ |
| خرجت من واسط فسألت ربّي أن يرزقني صحبة ولم أشترط في دعائي | ٤٩٧ |
| خطب عثمان بن عفان رضي اللّه عنه فقال في خطبته | ٢٠٧ |
| دعا بإسحاق فاستجيب له، وزيد يعقوب نافلة كأنّه | ١١٤٨ |
| زهرة الدنيا ولذتها. (تفسير قوله تعالى: ﴿وحيل بينهم وبين ما يشتهون﴾) | ٤٤ |
| طاعة اللّه (تفسير قوله تعالى: ﴿بقيّة اللّه خير لكم﴾) | ٨٣٨ |
| غير محسوب (تفسير قوله تعالى: ﴿فلهم أجر غير ممنون﴾) | ٢٥٢٦ |
| قام بعضهم إلى بعض بالخناجر فقتل بعضهم بعضاً لا يحمي الرجل على | ١٥٣٩ |
| كان أشراف قريش يأتون النبي صلى الله عليه وسلم وعنده بلال، وصهيب | ١٤٤٩ |
| كانت تأكل مسامير رتجهم. والرّتج الأبواب (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿فأرسلنا عليهم والطوفان والجراد﴾) | ٧٢٠ |
| الكتاب هو الفرقان سُمِّيَ فرقاناً لأنّه فَرَّق بين الحقّ والباطل (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿وإذْ آتينا موسى الكتاب والفرقان﴾) | ١٣٣٦، ٣٣٥٥ |
| ليس الندب ولكن صفوة الوجه | ١٨٩٨ |
| ما أرى مجلساً مثل مجلس ابن عبّاس ولقد مات | ١٢٢٥ |
| ما مضى في خطاياهم، وما خلفها من خطاياهم(تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿فجعلناها نكالاً﴾) | ١٤٤٨ |
| ما من أهل بيت إلاّ وملك الموت يطوف بهم | ١٤٥١، ٢٠٣٠ |
| من مال أو ولد أو زهرة أو أهل | ٤٤ت |
| نحوه ... نحوه (تفسير قوله تعالى: ﴿فولّوا وجوهكم شطره﴾) | ١٤٦٢ |
| وعداً من له بالعمل الصالح والإيمان | ١٠٥٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لا حساب عليهم (تفسير قوله تعالى: ﴿وكُلا منها رغداً حيث شئتما﴾) | ٢٧٠٦ |
| يدخلونها ولكن لا يأكلون فيها ولا يشربون | ١٢١٢ |
| يعلم أنّ المصيبة من اللّه فرضي بها (تفسير قوله تعالى: | |
| ﴿ومن يؤمن باللّه يهد قلبه﴾) | ١٤٨٥ |
| ينادي منادٍ يوم القيامة: أين الذين | ٣٥٥٢ |
| يهمُّ بالمعصية ثم يتركها من مخافة اللّه | ١٣٣١ |
| يؤتى بمعلِّم الكتاب يوم القيامة فإنْ كان عدل بين الغلمان | ٦١٩ |
| **محارب بن دثار** | |
| إنّما سموا الأبرار لأنّهم بَرُّوا الآباء والأبناء كما أنّ لوالدك عليك حَقاً | ٨٩٦ |
| قيل من أظلم الناس، ...من ظلم لغيره | ٣٥٤٠ |
| **محبوب بن موسى الفرّاء (أبو صالح الأنطاكي)** | |
| سألت الفزاري عن رجل اغتبته | ٣٥٣٧ |
| **المحلِّم** | |
| ترنم الحزين مشفاة لكمده | ٢٧٦٤ |
| **محمد بن أحمد عن أبيه** | |
| جاء رجل إلى بعض العباد، فقال له: بم أستعين على كثرة البكاء؟ | ٢١٧٤ |
| **محمد بن إسحاق** | |
| كُلُّ نخلة على وجه الإرض فمنقولة من الحجاز نقلها النماردة | ١٦١١ |
| النسناس خلقٌ باليمن لأحدهم عين ويد ورجل | ١٧٦٠ |
| **محمد بن إسحاق الثقفي** | |
| قال بعض الحكماء: عجبت ممن يحزن على نقصان ماله ولا يحزن على فناء عمره | ١١٢٠ |
| **محمد بن أعين** | |
| حمل أبو جميل سنّين من خارج حصن مَرو إلى عبد اللّه بن المبارك | ٨٤١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **محمد بن بشر المرثدي** | |
| أنشد لبعض الشعراء: من كان مصروعاً بمصرع | ٧٤٠ |
| قُرِيء على قبر: هذا منازل أقوام عهدتهم | ٩١٦ |
| **محمد بن جحادة** | |
| هذه لك بطول السهر | ٢٣١٩ |
| **محمد بن الحارث** | |
| أنشد: | |
| رأيت رفيع الناس من كان عالماً وإن لم يكن في قومه بحسيب | ٣٠٣ |
| لمّا قتل الزبير وَجَدَ الحجّاج صندوقاً في خزانته عليه أقفال | ٢٣٨٦ |
| **محمد بن الحسين البرجلاني** | |
| أراد قوم سفراً فضلُّوا عن الطريق فانتهوا إلى راهبٍ منفرد في ناحية | ٧٣٥ |
| أنشد لبعض الشعراء:فكتب عليه احذر الموت وجده | ٣٢٠١ |
| أنشدني بعض أصحابنا: أضحت تشجعني وقد علمت أنّ الشجاعة | ١٠١٢ |
| تبع رجلٌ حكيماً سبع مئة فرسخ في كلماتٍ، فقال له: إنّي أتيتك لتعلمني | ٢٧٨٥ |
| سمعت بعض العباد يقول: من ذكر اللّه على حقيقة | ٢٦١٧ |
| سُئِل بعض الحكماء عن أفضل العبادة، قال: بذل الحيلة عن طلب الحلال | ٢٨٤٩ |
| قال بعض الحكماء: أفضل العقل معرفة الرجل نفسه | ١٧٢٥ |
| قال بعض الحكماء: من لم ينشط لحديثك فارفع عنه مؤنة الاستماع إليك | ١٥٠١ |
| قال بعض الصالحين: لئن أعربنا في كلامنا حتى ما نلحن لقد كُنّا | ١٦٣٨ |
| قال بعض العبّاد: لا تغضبه فيعادك وينتصب لك فلا تقوم لمكره | ١٧٥٤ |
| قال حكيم لحكيم: أوصني، قال: اجعل اللّه همّك واجعل الحزن | ١٧٧١، ٣٤٢٨ |
| قال حكيم لحكيم: لا تَظهِرَنَّ خوفك فيجترىء عليك عدّوك، | |
| ولا تكابِرَنَّ من الأُمور | ٢٧٩٤ |
| قدمت مكّة فبينا أنا أطوف في السحر إذ الناس يقولون قد جاء العنبري | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| الزاهد | ٢٦١٤ |
| قيل لأعرابية مات ابنها: ما أحسنَ عزاك! فقالت: إنّ فقدي إيّاه | |
| أمَّنني من المصيبة بعده | ٧٨٩، ٣٢٠١ |
| قيل لبعض الحكماء: لو زدتنا من فضل لسانك | ٢٧١٦ |
| قيل لبعض الحكماء: متى يدرك العبد أمله من اللّه؟ قال: إذا لم تنظر عينه | ١٦٣٢ |
| كان أبو عبد اللّه البراثي يتمثل بهذين البيتين: | ٢٩٣٨ |
| كتب رجل إلى بعض الزهّاد: أنا ـ أكرمك اللّه ـ رجل من إخوانك قد | |
| أوبقتني ذنوبي وكثرت عيوبي | ٢٨٢٢ |
| **محمد بن زيد بن عبد اللّه بن عمرو** | |
| إني لفوق أبي قبيس حين وضع المنجنيق على ابن الزبير | ٢٨٦٦ |
| **محمد بن سعد** | |
| أتى سعد بأبي محجن يوم القادسية وقد شرب الخمر | ١٠١٤ت |
| **محمد بن سعيد الأصبهاني** | |
| قال بعض الحكماء: يحسب الجاهل الشيء الذي هو لا شيء | ٢٥٥٢ |
| **محمد بن سوقة** | |
| كان رجلان متواخيان، فطلب أحدهما من الآخر شيئاً فمنعه | ٢٥٧٠ |
| **محمد بن سلام الجمحي** | |
| اجتمع جماعة من أهل العلم عند المنصور | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| احتضر سيبويه النحوي فوضع رأسه في حجر أخيه | ٦٢٧، ٣٣٩٥ |
| إذا أنت لم تَسَلْ اصطباراً وحسبةً | ٧٧٢ |
| إذا رأيت العراقي فاستعذ باللّه من الشيطان | ٢٧٨٠ |
| استعمل عمر بن الخطاب رضي الله عنه رجلاً على عمل فرأى عمر | |
| رضي اللّه عنه | ٢٧٠٩ |
| اشتكى يزيد بن عبد الملك شكاةً شديدة وبلغه | ٣٣٠١ |
| أنشد: رُبَّ قوم غبروا من عيشهم في نعيمٍ وسرور | ٢٣٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أنشد لأعرابي: وما هذه الأيام إلاّ معارة | ٣٢٧٣ |
| أنشد لبعضهم:نعى نفسي إليَّ من الليالي | ٣٢٩٧ |
| أنشدنا أبو عبيدة لعبد الحميد الكاتب: ترحَلَ ما ليس بالقافلِ | ٦٢٨ |
| أنشدنا لنابغة الجعدي: الحمد للّه لا شريك له | ٥٦٩ |
| أوصى عبد الملك بن صالح أمير السرية ببلاد الروم قال: | ١١٣٦ |
| خَوَّف رَجَلٌ رجلاً جواداً بالفقرِ فكتب | ٢١٣٩ |
| دعت أعرابية لرجل، فقالت: كَبَتَ اللّهُ كُلَّ عَدُوٍّ لك | ١٩٣٣ |
| ذكر أعرابي رجلاً فقال: لا تراه الدهر إلا وكأنه | ٨/٢٤٣٥ |
| ذكر جعفر بن محمد رضي اللّه عنه عن أبيه أنّه كره الهمزَ في القراءة وأراد أن تكون القراءة | ٧١٦ |
| ذمَّ رَجُلٌ رجلاً، فقال: اجتمع فيه ثلاث أشياء: طبيعة | ٢١٧١ |
| سُئِلَ الحجَّاج بن القرّية عن الصبر | ١٧٠٩ |
| سئل بزرجمهر الحكيم: من أولى الناس بالسعادة؟ | ٢٦٣٨ |
| سُئل بعض أهل اللغة عن قولِ عمر بن الخطاب | ١٤٩٩ |
| سُئِل بعض الحكماء عن الإخوان في الدنيا، فقال الإخوان | ١٦٥٥ |
| قال أعرابي: إنّ للموت تقحماً على الشيب كتقحّم | ١٦١٩ |
| قال بزرجمهر: لا ينبغي أن يكون الفاضل من الرجال إلا مع الملوك مكرماً | ١٥٧٩ |
| قال بعض أهل العلم: دع الكذب حيث ترى أنّه ينفعك فإنّه يضرّك وعليك بالصدق | ٨٨٤ |
| قال بعض بني ضبّة: أقول وقد فاضت بعينيّ عَبرة | ٧٠١ |
| قال بعض الحكماء: أحسنُ الدنيا أقبحُها عند من يبصرها وذلك أنها تُشْغِلُ | ٣٤٣٢ |
| قال بعض الحكماء: اصحب الناس بثلاثة بالحذر ورفض | ١٨٥٥ |
| قال بعض الحكماء: أقل الاعتذار موجب للقبول وكثرته ريبة | ٢٧٩١ |
| قال بعض الحكماء: إنّ للّه عباداً يستقبلون المصائب | ٢٦٧٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| قال بعض الحكماء: إنّ من سعادة المرءِ أنْ يضع معروفه عند من يشكره | ٢٨١٧ |
| قال بعض الحكماء: البخيل خازن أعدائه، والحليم | ٢٧٥٢ |
| قال بعض الحكماء: بذل الحيلة في طلب الحلال | ١٧٨٤ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة أشياء تميت القلب: مجالسة الأنذال | ١١١٦، ١/٣٣٩٩ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة يخلقن العقل وفيهنّ دليل على الضعف | ١٨٥٣ |
| قال بعض الحكماء: ليس غنىً أغنى من سكون القلب | ١٧٦٤ |
| قال بعض الحكماء: ليس من الحيوان شيء يستطيع أن ينظر | ٢١٣٣ |
| قال بعض الحكماء: من أبطره الغنى أذلّه الفقر | ١٦٦٢ |
| قال بعض الحكماء: من التوقّي ترك الإفراط في التوقي | ٢٢٠٧ |
| قال بعضهم: من عاب سفلةً فقد رفعه ومن عاب شريفاً | ٢١٨٨ |
| قال رجل لرجل من حكماء العرب: أشِرْ عليَّ | ٢٢٥٠ |
| قال رجل من قريش لرجل من حكماء العرب: يا عَمّ، علّمني الحلم، فقال: يا ابن أخي، إنّ الحلم هو الذّل فاصبر عليه | ٣١٩٤ |
| قال شبيب بن شيبة للمهدي: إن اللّه تبارك وتعالى لم يَرْضَ أن يجعلكم... | ١١٨٢ |
| قام رجل إلى هارون الرّشيد وقد أسدى إليه معروفاً، فقال: مثلك أوجب حقّاً لا يجب عليه | ٧١٠ |
| قدم رجل على سليمان بن عبد الملك في خلافته | ١١٥٩، ٣٢١٨ |
| قرأ الأصمعي ﴿لا يأكله إلاّ الخاطئون﴾ ثم أنشد قول الشاعر | ١٢١٩ |
| قيل لأعرابي أنّ فلاناً أفاد مالاً عظيماً، قال فهل أفاد معه | ١٥٨١ |
| قيل لأعرابي فلان يخطب ابنتك، فقال: أهوَ موسر من عقلٍ ودين | ٣٢٨٢ |
| قيل لرجل من قريش وكان من حكمائهم: يا عَمّ علّمنا | ٢٥١٥ |
| كان أنو شروان يكتب إلى مرزبانه عليكم بأهل | ١٣٥٥ |
| كان في البصرة قاضي ظريف يقال له أبو الربيع | ٢٣٣٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه إذا رأى الرجل يتلجلج في كلامه قال: | ٣٣٤ |
| كان عمرو بن مسعدة في ديوان خالد القسري، وكان موجزاً في كتابه | |
| فكتب إلى صديقٍ له | ٧١٢ |
| كان مّما حفظ عن أردشير من حكمته | ١٦٨٥، ١٧٨٨ |
| كان يقال من أخطأ وجه الطلب | ٢٤٦٨ |
| كان يقال: لا تؤاخين من مودّته لك على قدر حاجته | ٥٢٤ |
| كان يقال لا يزال الناس بخيرٍ ما تباينوا فإذا تساووا فقد هلكوا | ٢١٧٥ |
| كتب الحجّاج إلى المهلب يستعجله في حرب الأزارقة | ٢٣٤٣ |
| كتب رجل إلى السلطان: مثلك أوجب حقاً لا يجب عليه | ٣٢١٩ |
| ودع رجل صديقاً له فقال | ١٤٣٢ |
| وَدَّعت أعرابية رجلاً فقالت: كبت اللّهُ لك كُلَّ عدو | ٢٤٠٤ |
| يقال: الحرُّ من أعتقته المحاسنُ والعبدُ من استعبدته | ١٦٥٧، ٢٨٩٦ |
| **محمد بن سيرين** | |
| إذا رابني شيءٌ تركته للّه عزّ وَجَلَّ | ٤٥٧ |
| إذا عرض لي شيء من ذلك سألتُ ربّي | ٤٥٧ |
| أكثر الناس خطايا أكثرهم ذكراً لخطايا | ٢٤٠٦ |
| إنّ أمّ المؤمنين عائشة رضي اللّه عنها كانت عند أبي بكر رضي اللّه عنه | ١٣٧٥ |
| أنّ نساء عبد الرحمن بن عوف اقتسمن ثُمُنَهُنَّ | ٣٧٩ |
| إنّي لا أُحِلُّ ما حَرَّم اللّهُ فأمّا ما كان إليّ | ٦٦٢ |
| بعث عمر بن الخطاب رضي الله عنه الأحنف بن قيس على جيش قبل خراسان | ١٠١٥ |
| التّقيُّ مشغول عن الخطّائين وإنّ أكثر الناس خطايا | ١٩٩٢ |
| دخل السوق فكبر الناس | ٢١٥٧ |
| ذهب بعمل يدي، فلم يقم من مجلسه حتى جاءه رجل | ٤٢٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قدم رجل من بعض الفروج على عمر بن الخطاب رحمة اللّه عليه | ١٨٥٠ |
| قولي له: ليس ما ها هنا وأعني موضع قدمي | ٢٣١٠ |
| كان أبو محجن الثقفي لا يزال يجلد | ١٠١٤ت |
| كان بصره بالعلم كبصر التاجر الأريب | ١١٧٦ |
| كان محمد بن سيرين يذكر أوزانه لكي لا تنقص | ٢٧٦٨ |
| كره الترياق إذا كان فيه الحمّة يعني: لحوم الحيّات لأنّها شرٌّ | ٧١٧ |
| ليلة سبع يغيب القمر نصف الليل | ٨١٥، ٢٤٦٧ |
| ما أهون الورع! | ٤٥٧ |
| ما تمنّيتُ شيئاً قطُّ | ٤٥٧ |
| ما حسدت أحداً قطُّ على شيء إنْ كان من أهل النار فكيف أحسده | ٢٩٣١ |
| ما رأيت من الناس رجلاً لا يتكلم ببعض ما لا يريد غير عاصم بن عمر ابن الخطاب | ٢٠٩٤ |
| ما لك جالست أقواماً يريدون أن يدفنوا ما جاء به محمد صلى اللّه عليه وسلم | ٥٦٣ |
| نهى عن الرُّقى إلاّ في ثلاثٍ: رقية النملة | ٧١٨ |
| هؤلاء الذين يصعقون إذا قرىء عليهم | ١٩٢٩ |
| لا، إني لا أحل ما حرم الله عليك فأما ما كان إليَّ | ٦٦٢ |
| يا أبا عطارد إنّ سويق العدس بارد وهو يدفع الدم | ٦٣٥ |
| **محمد بن عبد الرحمن البزّاز** | |
| قال رجل ليوسف بن أسباط: رأيتك البارحة في المنام كأنّ آتٍ | ١٧٠٣ |
| **محمد بن عبد الرحمن القرشي** | |
| قرأت في بعض الكتب: عجباً لمن قيل فيه | ٦/٢٤٣٥ |
| **محمد بن عبد الرحمن مولى بني هاشم** | |
| أنشد ابن أبي المغيرة: وكم نائم نام غبطة | ٣٩٢ |
| **محمد بن عبد العزيز عن أبيه** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعض النسّاك: أنا لما لا أرجو أرجا منّي لما أرجو | ٣٠٤٧ |
| **محمد بن عبد اللّه بن طاهر** | |
| يا أمير المؤمنين، منع الجودُ سوء ظن باللّهِ عَزَّ وَجَلَّ | ٢٦٤٧ |
| **محمد بن عبد اللّه بن عروة بن الزبير** | |
| ويلك لا تفعل فإنَّ علياً رحمه اللّه يُشْتم | ٢٥٠٥ |
| **محمد بن عبد اللّه الحضرمي** | |
| عاشر الناس بالجميل وسَدِّد وقارب | ٢٩٩٦ |
| **محمد بن عبد اللّه القرشي** | |
| قال بعض ولد طلحة بن عبيد اللّه: لبس طلحة بن عبيد اللّه رضي اللّه عنه رداءً | ١٦٦٨ |
| كان وهيب بن ورد ساجداً في المسجد الحرام فأطال السجود | ١٤٦٧ |
| **محمد بن علي (محمد بن الحنفية)** | |
| أنّ خاتم علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه من وَرَقٍ نقشه: «نعم القادرُ اللّه» | ٦٠٦، ٣٣٤٥ |
| كان على خاتم علي بن الحسين رضي اللّه عنه «غفلت فاعمل» | ٦٠٦، ٣٣٤٥ |
| الكمال في ثلاث، الفقه في الدِّين | ١٩٧٠، ٢/٣٠٧٩ |
| اليوم مات رباني هذه الأمة | ١٢٢٦ |
| **محمد بن صالح الأنماطي** | |
| أنشد لبعض الشعراء: لاتضرّعنّ لمخلوقٍ على طمع | ٣٢٧٠ |
| أنشد لبعض الشعراء: يخيب الفتى من حيث يرزق غيره | ٣٢٦٩ |
| **محمد بن الضحاك بن قيس الفهري** | |
| والله ما أبكي من العزل، ولا ضناً بالولاية | ٤٤١ |
| يا أيُّها النّاس: لن تعدموا منّي ثلاث خلال: أن لا أحقِّرُ لكم جيشاً | ٤٤١ |
| **محمد بن عُبَيْد** | |
| قرأتُ على حجرٍ منذ أربعين سنة: إنّ البلية أنْ تحبَّ | ٣٠٧٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كنّا عند سفيان الثوري فأتاه رجل، فقال: يا أبا عبد اللّه رأيتُ في المنام | ١١٨٦ |
| **محمد بن عبيد والد ابن أبي الدنيا** | |
| ينال بكل شيء حليه وحلة المنطق الصدق | ١٧٤٣ |
| **محمد بن علي بن الحسين/ أبو جعفر** | |
| أبكي لعلَّ الله ينظر إليَّ منه برحمةٍ فأفوز بها غداً | ٢١٣٧ |
| اذكروا من عظمة اللّه ما شئتم، ولا تذكروا منه شيئاً إلاّ وهو أعظم منه | ٨٥٣ |
| أسلم عليٌّ رضي اللّه عنه وهو ابن سبع سنين وقبض وهو ابن سبع وخمسين | ٣٣٨٧ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى جعل الروح والفرج في اليقين والرّضى | ٢٩٣٦ |
| ثلاث وستّون (سنّ عليّ رضي اللّه عنه يوم قتل) | ٢٦٤، ٣٤٠٦ |
| حدّثني من قرأ على قبرٍ: أتعمى عن الدنيا وأنت بصير | ٤٤٧ |
| قل له: يحشرون على مثل قرصة النَّقي فيها أنهار تفجر ... ارجع إليه، فقل له ما أشغلهم يومئذٍ عن الأكل | ٢٢٥٦ |
| كان آدم شديد الأدمة عظيم البطن والعينين | ٢٦٤، ٣٤٠٦ |
| كفاك من علم الدين أن تعرف ما لا يسع | ١٧٢٣ |
| كفاك ناصراً أن ترى عدوّك يعصي اللّه عزّ وجل | ١٤١٠ |
| ما كنت لأعبدَ شيئاً لم أره ... لم تره الأبصار بمشاهدة العيان ولكن رأته القلوب | ٢٢٥٧ |
| ندعوا اللّه تبارك وتعالى فيما نحب فإذا وقع ما نكره لم نخالف الله عز وجل فيما أحب | ١٠٩٩ |
| **محمد بن عمران** | |
| لا تعمل شيئاً في السِّرِّ تستحي منه في العلانية | ٨٢٦، ٤/٢٤٣٥، ٣٣٤٠ |
| **محمد بن عيسى البغدادي** | |
| كان يقال: إنّ مالَك من عمرك ما أطعْتَ اللّهَ فيه | ٣٤٤٣ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **محمد بن فضالة النحوي** | |
| أنشد: أيرضى كريم بالعفاف وعوده | ٣٠٧٧ |
| أنشد لرجل: سألت الندى والجود حران أنتما | ٢٢٣٢/م |
| أنشد لبعضهم: قل للذي يرجو البقاء | ٧٣٩ |
| أنشد لغيره فيمن انقطع إلى اللّهِ عَزَّ وَجَلَّ:إنّ أهل الأرض في الأرض قد آووا | ٣٤٢ |
| **محمد بن الفضل الهاشمي** | |
| قلت لأبي: لِمَ تجلس إلى فلان وقد عرفت عداوته | ٢٧٠٨ |
| وضع أحمد بن حنبل عندي نفقته فكان يجيء في كُلِّ يوم | ١١٤٣ |
| **محمد بن فضيل عن أبيه** | |
| دخلت على كرز بن وبرة بيته فإذا عند | ١٢٤٢ |
| رأيت ابن طارق في الطواف وعليه نعلان مخصوفتان | ١٢٤٣ |
| **محمد بن كثير بن الأزهر** | |
| قال بعض زهّاد البصرة والناس عنده: يا ابن آدم عجباً لك كيف تقرُّ عينُك؟ | ٣٠٥٨ |
| **محمد بن كعب القرظي** | |
| إذا أراد اللّه عَزَّ وَجَلَّ بعبدٍ خيراً زهّده في الدنيا وفقّهه في الدِّين وبصّره | ٦٦٣، ١٣٤٨ |
| عيوبه | ١٤٢٩ |
| إنّ شاباً كان يخدم موسى النبي صلى اللّه عليه وسلم، ويكتب عنه العلم | ٢٣٨٧ |
| جاء رجل إلى سليمان النبي صلى الله عليه وسلم فقال: يا نبي الله إن | |
| لي جيراناً يسرقون إوزي | ٣١٠٦ |
| الذنب الذي لا يترك مظالم العباد بعضهم من بعض | ٢٨٩٣ |
| لما قال فرعون لقومه: ﴿ما علمت لكم من إله غيري﴾ نشر جبريل | ١٢٧٤ |
| يا أمير المؤمنين، إنّما الدنيا سوق من الأسواق فمنها خرج الناس | ٦١٥ |
| **محمد بن كناسة** | |
| إذا اشتريت بغلة فاشترها طويلة العنق | ٣٠٤١ م |
| **محمد بن مالك الجوزجاني** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| رأيت على البراء خاتماً من ذهب | ٣٦٧ت |
| **محمد بن مسلم** | |
| إذا رأيت العراقي فاستعذ باللّه من الشيطان الرجيم | ٢٧٨٠ |
| إذا رأيت سفيان الثوري فسل الله عز وجل الجنة | ٢٧٨٠ |
| **محمد بن المغيرة** | |
| أخوك الذي إنْ سؤته قال | ٣٠٥٩ |
| قال الحكماء: العقل رائد الروح، والعلم رائد العقل وحياة المرء | ١٤٩٦ |
| **محمد بن المنذر** | |
| ما قل سفهاء قوم قط إلا ذلوا | ١٣٦٩ |
| **محمد بن منصور البغدادي** | |
| أنشد لبعضهم: المرء يطلب والمنية تطلبه | ٧٣٨ |
| رأت جاريةٌ المنصورَ وعليه قميص | ٢٣١٤ |
| السلام عليك أيُّها الأمير | ١٧٣ |
| صعدت حائط عكا فإذا حميد بن موسى في برج | ٢٢٧١ |
| قام بعض الزهاد بين يدي المنصور، فقال: إنّ اللّه تبارك وتعالى أعطاك الدنيا بأسرِها فاشترِ نفسك | ٦١٢ |
| كان على خاتم طاهر: «وضعُ الخدِّ للحقِّ عِزٌّ» | ٦٠٧ |
| كتب بعضهم إلى أمير: من أخطأ في ظاهرِ دنياه | ٢٤٥٦ |
| لم يكن لخالد بن برمك أخ إلاّ بنى له داراً | ٢٣٤٦ |
| لما حبس أمير المؤمنين الرشيد أبا العتاهية جعل له عيناً يأتيه بما يقول | ٢٢٣٢ |
| وقّع المأمون في رقعة متظلم: من علي بن هشام علامة الشريف | ٢٢٨٦ |
| وكان يقال: حدّث عن البحر ولا حرج وحدث عن | ١٩٠٣ |
| ولو خذلت أموالَه جود كفه | ٥٢٩ |
| **محمد بن المنكدر** | |
| إدخال السرور على المؤمن | ١١٨٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّي لأستحيي من اللّه أن أرى رحمته | ٢٥٤٥ |
| بلغني أنّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ يقول يوم القيامة: أين عبادي الذين كانوا ...؟ | ١٣٣٠، ٢٨٦٧ |
| بلغني أنّ النّار لا تأكل موضعاً مسّته الدّموع | ٤١٠ |
| قال اللّه تبارك وتعالى: ﴿نار الله الموقدة. التي تطلع على الأفئدة﴾ فلا تأكله النّار حتّى تبلغ فؤاده وهو حيٌّ | ٤١١ |
| قال عمر بن الخطاب رضي الله عنه وهو على المنبر: إنّ الذين | ١٠٢٣ |
| كان إذا بكى مسح وجهه ولحيته من دموعه | ٤١٠ |
| والله إني لأستحيي من الله أن يراني أرى أن رحمته عجزت عن أحد من خلقه | ١٢٤٧ |
| وما لأهل النّار راحة غير العويل والبكاء | ٤١٢ |
| يقول اللّه تبارك وتعالى: انتصر لمن أبغض ممن أبغض ثم أصير كلاً إلى النار | ٢٠٦١ |
| **محمد بن موسى البصري** | |
| أنشد: أراك تؤَمِّلُ حسن الثناء | ٣٢٥٦ |
| قال بعض الزّهاد: يا ابن آدم ما أقلَّ وفائك | ٧٤٥ |
| كان أحمد بن المعذل إذا حج لا يستظل | ٤٢٢ |
| **محمد بن يزيد = أبو العباس المبرّد** | |
| **محمد بن المهاجر** | |
| كنّا مع الأسود بن شيبان بباب الأبواب فأصاب النّاس | ٢٢٧٠ |
| **محمد بن نجيح** | |
| كنت أماشي بعض عبّاد أهل البصرة، فقال لي: من أين | ٢٢٦٦ |
| **محمد بن النضر الحارثي** | |
| إذا ذُكِرَ الصالحون كنت منهم بمعزلٍ | ٣٢٣ |
| إنّما تنتظرون ثلاثاً فما يجلسكم عن العمل: إمّا نعمة تزول | ٣٢٣ |
| أول المروءة طلاقة الوجه والثاني التودُّد إلى النّاس | ٨٢٨، ٣٣٤١ |
| من أصغى بسمعه إلى صاحب بدعة نزعت منه العصمة | ٣٣٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لا تفعل لأن تلقى الله عز وجل وعليك دَيْنٌ ولك دِيْنٌ خير | |
| من أن تلقاه وقد | ١٣١٥ |
| لا يستقيم طالب الآخرة إلاّ بالمبادرة إليها | ٣٢٣ |
| **محمد بن واسع** | |
| أتيتك في حاجةٍ رفعتهاإلى اللّهِ قبلك فإن | ٣٣٠٧ |
| أخوك من وعظك برؤيته قبل أن يعظك | ١٧٨ |
| أصبحت مَوفُوراً بالنِّعَم، ورَبٌّ يتحببُ إلينا بالنعم | ٢١٩٧، ٣٤١٢ |
| أكره أن أقول زاهداً فأزكيَّ نفسي | ١٦٠٨ |
| إنما رضي بالدون من رضي بالدنيا | ١١٧٧ |
| إنّي أتيتك في حاجةٍ فإن شئتَ قضيتها وكُنَّا | ٣٣٠٩ |
| أيا فلان، أيا فلان ... ماتوا واللّه وبادوا إنّ نعلاً | ٢٦٩١ |
| بلغني أن أول من يدعى للحساب يوم القيامة القضاة | ٣٢٧، ٣٠٤١/م |
| تلك جلسة الآمنين | ١١٧٧ |
| كتب أبو الدرداء إلى سلمان، «من أبي الدرداء إلى سلمان» أما بعد | ٤٨٢، ٢٤٠٨ |
| لو كان يوجد للذنوب ريح ما قدرتم | ١٥٧ت |
| وما قدر الدنيا حتى يحمد من زهد فيها | ١/٣٠١١ |
| يا بني: ليس أحدٌ أفضل من أحدٍ إلاّ بالعافية ولو كانت للذنوب ريح | ١٥٧ |
| **محمد بن يحيى** | |
| قال بعض الحكماء: سَلِ الأرضَ، فقل لها: من شقَّ أنهارك | ١٧٥٩ |
| بينما علي بن أبي طالب رضي الله عنه يطوف بالكعبة إذا هو برجل متعلق بأستار الكعبة | ١٠٢ |
| **محمد بن يعقوب القاضي** | |
| إن كنت تفهم ما أقول وتعقل ... فارحل بنفسك | ٢٢٩ |
| رأيت بشر بن ميمون وهو عند الحجّام وقد | ٢٤٩٣ |
| **محمد بن يوسف (قاضي صنعاء)** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كتب إلى ملك الزنج فكان في آخر كتابه | ٢٥٠٤ |
| **محمد الكلبي** | |
| إنّه كان رجلاً من العماليق، يقال له: عرقوب أتاه أخ له يسأله شيئاً | ٨٥٩ |
| **مخلد بن الحسين** | |
| إنّ ذاك من أحسن ما تعمل أن تحلّله | ٣٥٣٩ |
| **مدلج بن عبد العزيز عن شيخ من قريش** | |
| إنّ جبريل عليه السلام هبط على يعقوب عليه السلام، فقال: يا يعقوب! تملّقْ ربك | ٢٨٩١ |
| **مرّة بن شراحيل أو مرّة الطيّب** | |
| إنّ عثمان بن عفان رحمه اللّه اشترى داراً من صُهَيْبٍ | ٢٦٢٣ |
| فنظرت أنا ومسروق في المصحف فلم نجدْ سورة ثلاثين إلاّ تبارك | ٩٩٧ |
| **المدائني (أبو الحسن)** | |
| أُتي الحجاجَ برجل من الخوارج وهو في خضراء واسط | ٢٠٤٥ |
| أخبرني رجل من قريش من أهل المدينة | ٢٦٧٨ |
| أُدْخِلَ على عيسى بن موسى رجل يعاقبه وعنده | ٢٤٢٩ |
| أول ما عُرِفَ سؤدد خالد بن عبد اللّه القسري أنّه مَرَّ في سوق | ٢١٦٩ |
| بلغني أنّه أصيب ببلاد الروم على ركن من كنائسها | ١٣٧٩ |
| دعا رجلٌ رجلاً إلى الغداء، فقال له: هذا بُكراً | ١٧٦٥ |
| ذهب أبو فلان الأعرابي في حاجة له فدعته امرأة بغي | ٥٦٤ |
| رأيت فلاناً مولى باهِلَةَ يطوف بين الصفا والمروة | ٢١٢١ |
| سمعتُ أبي يقول: سُئل رجل: هل كتبت الحديث؟ | ٢٧٠١ |
| شيخها الحسن وفتاها إياس بن معاوية | ١٨٤٨ |
| قال آدم بن عبد العزيز بن عمر بن عبد العزيز: | |
| فإنْ قالت رجالاً قد تولى زمانكم وذا زمن جديد | ١٨٠٨ |
| قال أكثم بن صيفي: الصمتُ يكسب أهلَه المحبَّة | ٨٨٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| قال بعض الحكماء: قد تقطع الشجرة بالفؤوس فتثبت، وتقطع اللحم بالسيف فيندمل | ٦٧٤ |
| قال بعض حكماء العرب: إنّه ليس من شيء أدعى إلى تغير نعمة أو تعجيل نقمة | ٢٨٥٧ |
| قال بعض الحكماء لابنه: يا بني احتفظ مِنْ | ١٦٩٨ |
| قال بعض ملوك فارس لحكيم من حكمائهم: أي الملوك أحزم؟ | ٤/٣٠١١ |
| قال الحكماء: الندم على السكوت خير من الندم على القول | ٨٨٢ |
| قال رجل لأبيه: يا أبتِ، إنّ عظم حقك عليّ لا يذهب صغير حقّي عليك | ١٠٩٢، ٣٢٢٠ |
| قال رجل لرقبة بن مصقلة: ما أكثرك في كُلِّ طريق | ١٦١٢ |
| قال صالح بن كيسان: خرج علينا الزهري من عند هشام بن عبد الملك .. | ٢٤٣٦ |
| كان رجل من الصالحين قد احتاج،، فقالت له امرأته | ٢٠٤٢ |
| كان عظماء الترك يقولون: القائد العظيم ينبغي أن يكون | ١١٣٨ |
| كان معاوية رضي الله عنه يستعمل سنة مروان بن الحكم ثم يعزله ويولي سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| كان يقال: ظنّ الرجل قطعة من عقله | ٥٩٩ |
| لما دخل علي بن أبي طالب الكوفة دخل عليه رجل من حكماء العرب | ١٨٣٦ |
| لما قتل أهل الحرة هتف هاتف بمكة على أبي قبيس | ١٤٧٥ |
| لما مات أبو بكر الصديق رضي الله عنه أمرَ عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه خالداً | ١٠١٨ |
| لّما مات عمر بن عبد العزيز خرجت جارية وهي تقول: | |
| ألا هلك الجود والنائل | ٣٠٦٦ |
| مات يتيم لعائشة أمّ المؤمنين رحمة اللّه ورضوانه عليها فجزعت عليه | ١٣٥٠ |
| نزل ببعض علماء البصرة الموت وهو في طريق مكّة | ١٨٨٤ |
| نزل النعمان بن المنذر ومعه عدي بن زيد في ظل شجرة عظيمة | ٧٣٧ |
| وما رمي إياس بالعيّ قطّ وإنما عابوه بالإكثار | ١٨٤٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يقال الظنون مفاتيح العقول | ٥٩٩ |
| يقال من لم ينفعك ظنّه لم ينفعك يقينه | ٥٩٩ |
| **مرداس بن عامر** | |
| عبّاس إنّ الجهل مزر بأهله | ٣٤٦٩ |
| **مروان بن أبي حفصة (أبو السمط)** | |
| ألِمّا على معن فقولا لقبر | ٣٤١٨ |
| أنشدت معن بن زائدة أربعة أبيات فأعطاني بها أربعة ألف دينار | ٣٤١٨ |
| يا أمير المؤمنين إنما أعطيته على جودك | ٣٤١٨ |
| **مروان بن عبد الملك** | |
| من الفاضح أثتوني به | ١٠١١ |
| **المستوغر بن ربيعة** | |
| أو تدري من هو؟ ... هو والله ابن ابني | ٦٩٧ |
| **مسروق** | |
| أنهار الجنة تجري في غير أخدود وشجرها نضيد | ٧٠٣ |
| أوثق ما أكون بالرزق حين مجيء الخادم | ٢٧٤٤ |
| لما حضر أبو بكر رضي الله عنه الوفاة أرسل إلى عائشة رضي اللّه عنها | ١٣٧٦ |
| **مسعر بن كدام** | |
| أناة اللّه حيّرت قلوب المظلومين | ٢٧٤٢ |
| أما من صديق فلا أكره ذلك وأما | ٢٤٨١ |
| أمّا من ناصح فنعم | ٢٥٤٧ |
| يا عطاء هذه خامسة زادنا اللّه | ١٨٩٣ |
| ولقدحبوتك يا كدام نصيحتي | ٨٩٥ |
| **مسكين الدارمي** | |
| وإذا الفاحش لاقى فاحشاً | ٢٩٩٩ |
| **مسلم** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| رأيت أربع ضرائر في غارٍ ما لهنَّ بيت ... | ٢٢٧٨ |
| **مسلم بن إبراهيم** | |
| ما سمعنا شيئاً أحسن من هذا في كلام ابن سيرين | ٢٩٣١ |
| **مسلم بن أبي مريم** | |
| يكسرها، وأجبرها | ١٦٠٩ |
| **مسلم بن قتيبة** | |
| إذا لبست ثوباً فظننت أنك في ذلك الثوب أفضل منك | ٣٠٢٨ |
| **مسلم بن يسار** | |
| إنّي لأكره أن أمس فرجي بيميني وأنا أرجو | ٢٠٠٥ |
| لقيت أهوالاً وزلازل عظاماً | ١٤٠ |
| ما أدري ما إيمان رجلٍ كره شيئاً لم يدعه لله | ٨٧٧ |
| **مسلمة بن عبد الملك** | |
| اللهم اجعلني مع صاحب النقب | ١٣٥٤ |
| **المسور بن مخرمة** | |
| لقد وارت الأرض أقواماً لو رأوني | ٣٧٣ |
| **مصعب بن الزبير** | |
| أخذ رجلاً من أصحاب المختار فأمر بضرب عنقه | ٨٣٣، ٣٢٥٠ |
| أطلقوه وأعطوه مئة ألف | ٨٣٣، ٣٢٥٠ |
| إنّي قد أخذت قاتل الزبير بن العوّام | ٢٤٦٠ |
| سمعت أبي يقول: حضر رجلاً من أهل المدينة الوفاة وكان خيِّراً فاضلاً | ٣١٢٠ |
| **مصعب بن عبد الله** | |
| لقي حكيم حكيماً فقال له: من أدبك؟ | ٢٦٣٩ |
| قال بعض أهل المدينة من ثَقُل على صديقه خَفَّ على عدوه | ١١٣٠ |
| **مصعب بن عبد الله الزبيري عن أبيه عن جَدِّه** | |
| كان علي بن أبي طالب رضي الله عنه حذراً في الحرب جداً شديد الروغان | ١٢٦١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **المضاء بن الجارود** | |
| قال بعض الحكماء: فضل الأدب في غير الدِّين مهلكة | ٢٣٢٥ |
| قال بعض الحكماء: من طاب ريحه زاد عقله ومن نظّف | ٢٢٢٧ |
| **مضر بن عبد اللّه القاري** | |
| كان رجل من العبّاد قلَّ ما ينام من الليل فغلبته عينُه | ١١٠ |
| **مطرِّف بن طريف** | |
| ما يسرني أنّي كذبت كذبة | ٢٦٣٥ |
| **مُطَرِّف بن عبد اللّه الشِّخّير** | |
| أستكين لربي عسى أن يشفعني في ابن أختي | ١٦٨١ |
| انظروا إلى أقوام إذا ذُكِّروا بالقرآن فلا تكونوا منهم | ٢١٦٦ |
| إنّك لتلقى الرّجلين أحدهما أكثر صوماً وصلاة | ٢٥٨٥ |
| عقولُ كُلِّ قوم على قدر زمانهم | ١٧٢٦ |
| فإنْ كنتَ كاذباً فأماتك اللّه | ٢٨٦٦ |
| كأنَّ القلوب ليست منّا وكأنّ هذا الحديث يُعنى به غيرنا | ٧٩٦ |
| كان ينزل بماءٍ يقال له: الشجري على ثلاث ليالٍ من البصرة ويأتي يوم الجمعة | ٣٤٠٣ |
| لأن أبيت نائماً وأصبح نادماً أحبُّ إليّ من أن | ٢١٦١، ٢٧١٤ |
| لعلّك لا تفعل من وَعَدَ فقد أوجب | ١٩٣٤ |
| لو كان الخير في كفي ما نلته إلا بمشيئة الله | ٢٣٩٨ |
| نظرتُ في بدء هذا الأمر ممّن هو فإذا هو من اللّه تبارك وتعالى | ٤٢ |
| هم الناس وهم النسناس وأناس غمسوا في ماء الناس | ٦١٦ت |
| لا تنظروا إلى خفض عيشهم ولين | ٢٢٩٩ |
| **مطرِّف أبو سعيد المازني** | |
| ما تلذذت لذاذةً قطّ ولا تنعّمت نعيماً | ١٧٧٠، ٢٧٣٧ |
| **المطلب بن عبد الله بن حنطب** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| أن أبا بكر وعمر صلي عليهما في المسجد تجاه القبر | ٢١٧٩ت |
| **معاذ بن جبل** | |
| أعوذ بالله من صباح إلى النار ... مرحباً بالحفظة ... اللّهم إنّك تعلم أني | |
| لم أكُن أحبُّ البقاء في الدنيا | ١٨٧ |
| يا أيها الناس، توبوا إلى اللّه عَزَّ وَجَلَّ من ذنوبكم توبةً نصوحاً | ٣١٤٣ |
| يكون في آخر الزمان قوم إخوان العلانية | ٣/٣٠٥٨ |
| **معاذ بن رفاعة** | |
| مر يحيى بن زكريا بقبر دانيال النبي صلى اللّه عليه وسلم على نبينا وعليه | |
| فسمع | ١٦٤٧ |
| **معاذ بن زياد التميمي** | |
| إن فتى من الأزد بكى حتى أظلم بصره فعوتب في ذلك | ٣٩٠ |
| **معاوية بن أبي سفيان** | |
| أبوك الذي يقول: إذا مت فادفني إلى أصل كرمة | ٦٠٢ |
| أخبرني بأعجب شيءٍ رأيته؟ | ٧٧٥ |
| إذا سار من خلف امرءٍ وأمامه | ٧٧٢/ م |
| إنّ فيكم خلالاً لا تخطيكم ... الجود والحدّة وكثرة الأولاد ... صدقت | |
| لا يفضض اللّهُ فاك | ١٧٣٣ |
| إنّي لأرفع نفسي أن يكون ذنب أوزن من حلمي | ٨٠١ |
| أيفسد أدبك بأدبه | ٢١٤٠ |
| أيّ النساء أشهى إليك؟ ... أيّ النساء أسوأ إليك؟ ...هذا النقد العاجل | ١٧٣٦ |
| بئس التجارة، ضمانُ نَفْسٍ ومؤنة ضرس | ٢٥١٠، ٣١٩٦ |
| ترك اللّذَةِ | ٨٢٣، ٣٣٣٧ |
| توفي رسول اللّه وهو ابن ثلاث وستّين سنة | ٣٥٦٥ |
| جمع أبو عثمان طرف الكلام | ٢٣٤١/م |
| صدق واللّهِ ثم صدق ثم صدق فيما اعتبر به | ٦٨٩ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان يستعمل سنةً مروان بن الحكم ويولي سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| كُلُّ الناس أستطيع أنْ أرضيه إلاّ حاسد نعمة، فإنّه لا يرضيه إلاّ زوالها | ٦٥٧/م |
| كيف لا يسرع إليَّ الشيْب، ولا أعدم رجلاً من العرب؟ قائماً | ٢٠٢٢، ٢٢٢٦ |
| لعنة اللّه عليه ما أدري ما هذا، ما له إلاّ ابن عبّاس | ٨٣٧ |
| لقد غيرك الدهر؟! | ٢٠٦٨ |
| ما أقعص ما يَكره | ١٨٥٩ |
| ما بقي من الدنيا تلذ به؟ | ١٣٨٢ |
| ما السرور يا أبا عبد اللّه؟ | ١٨٦ |
| ما العيش يا أبا جعفر؟ | ٣٠٧٨ |
| ما المروءة يا أبا محمد؟ ...فما النجدة؟ ... فما الجود؟ | ١٧٠٤ |
| يا أبا الجهم، إيّاك والسلطان فإنّه يغضب غضب الصبيان | ١٦٠٣ |
| **معاوية بن بُجَيْر** | |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى داود عليه السلام: | |
| يا داود اتّخذ نعلين من حديد وعصاً من حديد | ٣١٣ |
| **معاوية بن صالح** | |
| يخطر على قلب الولي الشيء في الجنة فيأتي به الوصفاء | ٧٣ |
| **معاوية بن عمرو** | |
| رأيت داود الطائي يُصلّي كأنّما يطّلع في النّار | ١٩٤٠، ٢٩٦٧ |
| **معاوية بن قُرّة** | |
| إنّ أبا الدرداء اشتكى، فدخل عليه أصحابه | ٥٠ |
| إنّ أكثر الناس حساباً يوم القيامة الصحيح الفارغ | ١٣٢٥ |
| لأن أغدو فيما غدوت فيه كلَّ يوم أحبُّ إليَّ من أن أقوم الليل وأصوم النهار | ٢٥٨٧ |
| **معبد بن خالد الجهني** | |
| قال لقمان لابنه: يا بني إنّ الكبر رداء اللّه فلا تنازعن اللّه رداءه | ١٨٤٦ |
| **معبد بن طوق العنبري** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يلقى الفتى حذر المنية هارباً منها وقد حدقت به لو يشعر | ٤٢٣ |
| **المعتصم** | |
| سألتك باللّه أنت قلته ...فما الذي أردت بهذا | ٣١٢٤ |
| وما أردت بهذا؟ أطلقوه | ٣١٢٤ |
| يا عدو الله! أنت الذي يقول بني العباس أنهم في الكتب | ٣١٢٤ |
| **المعتمر** | |
| سمعت بعض أهل العلم يقول: كم يعالج جهد البلاء | ١٣٤٩ |
| **معتمر بن سليمان التيمي** | |
| أُثِرَ عن رجلٍ قال: كان في خديّ ابن عبّاس رضي اللّه عنه خطّان من الدموع | ٧٣١ |
| إنا لا نتكلم عن كبراءنا | (١٢) ملحق |
| خرج عيسى صلى اللّه عليه وسلم على أصحابه وعليه جُبَّةٌ من صوف | |
| وكساء وتبان | ٩٠٢ |
| رد رجل من رجل جارية اشتراها منه | ٦١٤ت |
| قلت لجارٍ عطاء السُّلمي: من كان يخدم عطاء | ٢١١٤ |
| قيل لبعض الحكماء أيُّ الطعام أحبُّ إليك؟ | ٦٤٨ |
| **المعتمر عن أبيه** | |
| كان يقال: يأتي على الناس زمان لا يفهمون فيه الكلام | ٤٩٣ |
| **معروف الكرخي** | |
| اذكر القطن إذا وضعوه على عينك | (٥) ملحق |
| بل ادع أنت حتى نؤمن | (١٩) ملحق |
| قل يا ملين القلوب لين قلبي قبل أن تلينه عند الموت | (١٩) ملحق |
| كلام الرجل فيما لا يعنيه مَقْتٌ من اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٢٥٦ |
| لا تفرح بها إذا أتتك، ولا تأس عليها إذا فاتتك | (٦) ملحق |
| **المُعلى بن أيوب** | |
| إنّ المنصور خطب بمكة فحمد اللّه وأثنى عليه | ١٩٣٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| دخل رجل على المنصور، فقال له: ما مالك؟ فقال: ما يكف وجهي ويعجز عن برّ الصديق | ١٤٢٣ |
| دخل صديق لعبد اللّه بن طاهر عليه كان قديماً فأجلسه على السرير ثم أنشد: | |
| أميلُ مع الزمام على ابن عَمّي | ٨٩٧ |
| عَزّى رجل هارون الرشيد، فقال: يا أمير المؤمنين كان لك الأجر لا بك | ٧٦٨ |
| كتب بعض إخواننا من الكتاب إلى عامل وكان سعى به | ١١٢٧ |
| هجا الحميدي الشاعر الفضل بن يَحيى ثم أتاه راغباً معتذراً | ١١٢٩ |
| وقف المأمون في بعض أسفاره وهو قافل إلى | ٢١٨٤ |
| **معلى بن عبد الرحمن** | |
| وعظ بعض الزهاد أصحابه بالبصرة، فقال في كلامه: إنّ التراجع في المواعظ يوشك | ٥٨٧ |
| **معمر بن راشد** | |
| دخلت مسجد حمص فإذا أنا بقوم لهم رواء، فظننت بهم الخير | ٣٢٠٨ |
| سَمَّاهم لي رجل عالم بأمرهم | ٣٥١٧ |
| كتب بعض العبّاد إلى عمر بن عبد العزيز أمّا بعد: فإنّ الدنيا ليست دار إقامة | ٢٠٥٥ |
| النقباء كلُّهم من الأنصار | ٣٥١٦ |
| ومن أبو محمد؟ ...لا أستحلُّ أن أبيت بها | ٣٢٠٨ |
| يا عبد اللّه ما ترى هؤلاء القوم يشتمون علي بن أبي طالب | ٣٢٠٨ |
| **معن بن زائدة** | |
| إنْ كنت صدقت في وصفك إيّاه فقد كذبت في ادّعائك مودّتنا | ٦٦٥ |
| في طاعة الأمير ... هي لك يا أمير المؤمنين | ١٩٥١ |
| ما سألني أحدٌ قطٌّ حاجة فرددته إلاّ رأيت الغنى في قفاه | ٥٥٠ |
| يا غلام اعطه بعيراً، وبغلاً، وبرذوناً، وفرساً | ١٩٠٣ |
| **المغيرة بن حكيم** | |
| اعمل لهذا المضجع | ٤٥١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **المغيرة بن شعبة** | |
| اشكر لمن أنعم عليك وأنعم على من شكرك | ٢٥٤٤ |
| ألكِ زوج؟ | ٢٨٣٤ |
| كان واللّه عمر أعقل من أنْ يخدع وأفطن من أن يخدع | ٤٤٣ |
| ما خدعني أحد قط إلا غلام من بني الحارث بن كعب | ٩/٢٤٣٥ |
| **المغيرة بن مقسم** | |
| كان إبراهيم إذا طلبه إنسان لا يحبُّ أن يلقاه خرجت الجارية، فقالت: | |
| اطلبوه في المسجد | ٣٠٥٦ |
| **المفضل بن محمد الضبّي** | |
| معنى قول العرب: ذكَّرْتني الطعن وكنت ناسياً سببه | ٣٣٥ |
| معنى قول الناس: الحديث ذو شجون، قال: هو ضبَّةُ بن أُدّ، وكان له | |
| ابنان سعد وسعيد | ٥٣٣ |
| معنى قول الناس في الصيف ضيعت اللبن: فقال: إن صاحب هذا الكلام | |
| عمرو بن عمرو | ١٠٢٨ |
| نزل المنذر في كتيبته موضعاً فقال له رجل | ٢٣٥٤ |
| **مقاتل بن حيّان** | |
| صليت خلف عمر بن عبد العزيز فقرأ: ﴿وقفوهم ...﴾ | ٢٢٦٧ |
| **المقريء** | |
| أبيع اللحم مع العظم | ٣٤٧٨ |
| **مكحول** | |
| أرقُّ النّاس قلوباً أقلُّهم ذنوباً | ٢٩٨٢ |
| أوحى اللّهُ عزّ وجل إلى موسى صلّى اللّه عليه وسلم: اغْسِل قلبك، قال: | |
| يا ربّ بأيِّ شيءٍ؟ | ٣٥٧٦ |
| الجنين في بطن أُمِّه لا يطلب ولا يحزن فيأتيه اللّه عَزّ وجلَّ برزقه | ٥٦٨ |
| كُنا أجنّة في بطون أُمّهاتنا فسقط منّا من سقط، وكنا فيمن بقي | ٩٩٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **مكرم بن يوسف** | |
| أُوحيَ إلى نبيٍّ من الأنبياء ببني إسرائيل أنْ تقف على المدائن | ٤٨١ |
| **المنذر بن أبي ثور** | |
| أصبنا في خزائن هشام بن عبد الملك اثني عشر ألف قميص | ٣١٠٩ |
| **المنذر بن الجارود** | |
| أراني إنّما تزينت لهذا الشيخ | ١٥٧٦ |
| **المنذر بن ماء السماء** | |
| آمرك بما أمرني به أبي وأنهاك عمّا نهاني عنه آمرك... | ٢٣٢٦ |
| **المنذر** | |
| المذبوح والله أنت | ٢٣٥٤ |
| **منصور** | |
| أوحى اللّه إلى موسى صلى اللّه عليه وسلم اتّخذ | ٢٤٩٤ |
| **منصور بن عمار** | |
| أتيت الليث بن سعد فأعطاني ألف دينار وقال لي: صُنْ بهذا | ١١٧٩ |
| خرجت ليلةً لبعض حاجتي وأنا بالكوفة وأنا أظنُّ أني قد أصبحت | ٦٧٧ |
| ماأرى إساءة تكبر عند عفو اللّه فلا تيأس | ١٢٢٣ |
| **منصور بن المعتمر** | |
| ما هلك جيل قط حتى تخلف فيه المنانية | ٢٦٠٣ |
| **منقذ** | |
| حدّثتني أنت عنّي عن أيوب عن الحسن | ١٤٣٤ |
| **المهدي** | |
| اللهم لا تشمت بنا أعدائنا من الأمم، ولا تفجع بنا نبينا صلى الله عليه وسلم | ١٠٨٠ |
| مَهْ، خلافة الله عنده أجلّ من أن يجعلها | ٢٢٧٧ |
| يا أمير المؤمنين، أستهديك رجلاً عالماً | ٢٩٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **مهدي بن ميمون** | |
| كان أبو صادق لا يتطوّع من السنة ولا يُصَلّي غير الفريضة | ٢١٦٥ |
| **المُهَلَّب** | |
| إن من البلاء أن يكون الرأي لمن يملكه دون من يبصره | ٢٣٤٣ |
| ذاك علم صفة، وهذا علم وُضِعَ مواضعة | ١٦٧٧/م |
| لأن يطيعني سفهاء قومي أحبُّ إليَّ من أن يطيعني حكماؤهم | ١٣٧٠، ٢٩٩٥/م |
| ما السيف الصارم في كَفِّ الرجل | ٢٦٠١ |
| **مؤرج** | |
| أغلظ عبدٌ لسيده فسكت عنه، فقيل له في ذلك | ١٨٢٠ |
| أهدى رَجُلٌ إلى صديقٍ له عبداً أسود فكتب إليه: لو علمتُ عدداً | ٢٩٧٧ |
| دعا أعرابي بعرفة فسمعته يقول: اللهمّ إنّي أعوذ بك من الفقر إلاّ إليك | ١٦٦٣ |
| قال بزرجمهر الحكيم: كل عزيز دخل تحت القدرة فهو ذليل | ٢١٧٦ |
| قال رجل لخالد بن صفوان إنّي إذا رأيتكم تتذاكرون | ١٧٣٨ |
| قال رجل للمهلب: بم بلغت؟ قال: بالعلم، قال: قد رأينا | ١٦٧٧/م |
| كان عبيد الله بن أبي بكرة من الأجواد فاشترى يوماً | ١٩٠٥ |
| كنت في باديةبني حنيفة فحدثني في رجل منهم | ٢٧١٨ |
| **مورِّق العجلي** | |
| اللهم إنّي أعوذ بك أنْ أغضب كما أعوذ بك أن تغضب | ١٤٤٤ |
| أنتم منها في حل | ٧٨٤ |
| بئس ما أثنيت على نفسك، أما إذ ضعفت عن الخير فاضعف عن الشرّ | ٧٨٤ |
| ما نظمت في الغضب بكلمة ندمت عليه في الرِّضا | ١٦٩٩ |
| وددت أن العشرَ منها كان صالحاً | ٧٨٤ |
| **موسى بن أعين الراعي** | |
| كانت الغنم والأسد والوحش ترعى في خلافة عمر بن عبد العزيز | ٢٠٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **موسى بن عمران «النبي صلى الله عليه وسلم»** | |
| إن الله تبارك وتعالى قال لموسى صلى اللّه عليه وسلم: ذكّر بني إسرائيل أيام اللّه | ٢٠٦٢ |
| ادع لي (قاله للخضر) | ٢٠٠٧ |
| اطلع الله تبارك وتعالى على قلوب الآدميين فلم يجد قلباً أشد تواضعاً من قلب موسى عليه السلام | ١٧٤ |
| اللهم أقريب فأناجيك أم بعيد فأناديك | ٢٣٦٢، ٣١٢٢ |
| إن شاباً كان يخدم موسى النبي صلى اللّه عليه وسلم ويكتب عنه | ٢٣٨٧ |
| أوحى الله إلى موسى صلى الله عليه وسلم اتخذ طاعتي تجارة | ٢٤٩٤ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام إني رزقت الأحمق ليعلم العاقل | ١٦٥٣ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه وسلم : يا موسى إذا رأيت الغنى مقبلاً | ١٦٦١ |
| لبيك ...لبيك ...إلهي إني سمعت صوتك ولا أرى مكانك | ١٤٥٢ |
| من أعبدكم يا بني إسرائيل | ٢٤٨ |
| هن أبا خالد | ١٤٤٠ |
| يارب أنت في السماء ونحن في الأرض فما علامة غضبك من رضاك | ٤٢٥ |
| يا رب من هذا؟ | ١٧٤٦ |
| **موسى الرفاء «أبو عمران»** | |
| سألت أحمد بن حنبل عن إسحاق بن أبي إسرائيل وضربائه، فقال: يهجرون | ٢٧٤٥ |
| **موسى بن عقبة** | |
| خرج قيس بن سعد في جيش فيهم عمر بن الخطاب فجعل قيس ينفق على الجيش | ١٤٢١ |
| **موسى بن عيينة** | |
| لا نعلم أربعة أدركوا النبي صلى الله عليه وسلم هم وأبناؤهم | ٢٣٠٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **موسى بن مسعود أبو حذيفة** | |
| قال ابن أبجر في بعض الكتب: يقول اللّه تبارك وتعالى: الحاسد عدوٌ نعمتي متسخّط لقضائي | ٦٥٨ |
| كُنا إذا جلسنا إلى الثوري كأنَّ النّار قد أحاطت بنا لما نرى من خوفه وجزعه للموت | ٨١٦ |
| **ميسرة** | |
| خلق الله تبارك وتعالى الخلق نصب عينيه لم يخلق شيئاً من خلقه | ٢٩٥٦ |
| **ميسرة الأكول** | |
| من مالي أو من مال غيري .... رغيفين | ٢٦٠٤ |
| **ميمون بن مهران** | |
| أتي أبو بكر بغراب وافر الجناحين | ٩٨ت |
| إني لا أماريه ولا أشاريه | ٢٤٨٧ |
| لقد أدركت من كنت أستحي أن أتكلم عنده | ٢٠٣٩ |
| ما رأيت رجلاً أورع من ابن عمر ولا أفقه من ابن عباس | ٢٥٨٤ |
| من أحب أن يعلم ما له عند الله عز وجل فليعلم | ١٥٥١ |
| نزل سلمان وحذيفة على نبطية فلما حضرت | ٢٥٩٠ |
| لا خير في الدنيا إلاّ لرجلين، رجل تائب أو رجل يعمل في الدرجات | ٨٤٩ |
| **حرف النون** | |
| **نافع بن جبير بن مطعم** | |
| كما أنت حتى أنوي ... إمض | ٣٥٣٢ |
| **نافع مولى ابن عمر** | |
| دخلت مع ابن عمر على عبد اللّه بن جعفر بن أبي طالب رضي اللّه عنهما فأعطاه فيّ اثنى عشر ألف درهم | ٧٨٢ |
| **النباجي (سعيد بن بريد)** | |
| بينما أنا أطوف إذ سمعت قائلاً وهو يقول: يا من آنسني بذكره | ١٦٢٠، ٣٠١٠ |
| سمعت بعض العباد يقول: إنّ مثل الرجل لولده وعياله مثل | ٣٠١١، ٣٤٣٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قلت لراهب؛ يا راهب! متى عيد هذا الدِّين؟ | ١٦٩ |
| قال سليمان بن داود صلَّى اللّه عليهما: أوتينا وممّا أوتيَ الناس ، ومما لم يؤْتوا | ٢٩٢٨ |
| لا شيء معه | ١٠٥١ |
| ليس إلى ناقتي سبيل | (٢٧) ملحق |
| يعرفون بسيماهم (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا يُسئَل عن ذنوبهم المجرمون﴾) | ١٠٠١ |
| **نصر بن علي** | |
| عصمة بن سالم أبو أمي | ٢٧٢٥ |
| **نُصَيْب بن رباح (الشاعر)** | |
| لا... لأن كفّك بالجزيل أكثر من مسألتي باللسان | ٢٧٥٥ |
| لا، ولكن هرم الجود والمعروف، لقد مدحت الحكم بن عبد المطلب بقصيدة | ١٩٢٣، ٣٠٨٠ |
| **النضر بن إسماعيل** | |
| عملتم بأعمالهم (تفسير قوله تعالى: ﴿وسكنتم في مساكن الذين ظلموا﴾) | ٤٤٤ |
| **النضر بن شميل** | |
| كنت عند الخليل بن أحمد إذ دخل عليه شيخ من أهله | ٢٣٢ |
| قلت لبعض الصوفيَّة: تبع جبتك الصوف؟ فقال: إذا باع الصياد شبكته فبأي شيء يصطاد | ١٨٥٦ |
| لزمت الخليل بن أحمد عشرين سنة، فكان ينشدني | ٢٣١ |
| **النّظام** | |
| ثلاثة أشياء تخلق العقل وتفسد الذهن | ١٨٥٣ |
| **النعمان بن أمرىء القيس** | |
| أيها الحكيم فكل ما أرى إلى فناء وزوال | ١٢٢٢ |
| فأين المهرب؟ .... فإذا فعلت ذلك فما لي؟ | ١٢٢٢ |
| هل علمتم أحد أُتي مثل ما أُتيت؟ ...مالك لا تتكلم؟ | ١٢٢٢ |
| لا بل كان لمن قبلي فزال عنه وصار إلي وكذلك يزول عني | ١٢٢٢ |
| **النعمان بن بشير** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إن الهلكة كل الهلكة أن يعمل | ٢٢٤٣ |
| **النعمان بن مقرن** | |
| إنّي لقيت مع رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم العدوّ فكان أحبّ الأوقات إليه أن | ١١٣٩ |
| **النعمان بن المنذر** | |
| أتعرف النعمان بن المنذر؟ .... نعم | ٢٢١٣ |
| أبيت اللعن. أنا غلام حدث السن يخف علي بعضه ويثقل علي بعضه | ٢٣٢٦ |
| بما أنت أعز العرب ... هذه عشيرتك كما تزعم فكيف أنت في أهل بيتك | ٢٠٢٦ |
| **نعيم بن حماد** | |
| سألت عبد الرحمن بن مهدي قلت: أين ابن المبارك من الثوري | ٣٠١٩/م |
| قال رجل لابن المبارك: قرأت البارحة القرآن في ركعة | ١٢٣٢ |
| **نمر بن هلال الحبطي** | |
| قال بزرجمهر الحكيم: إرهب تحذر، وأنعم تشكر، ولا تمزح فتحقر | ٩٣٦ |
| **نوح** | |
| هذا لمن يموت كثير | ٢٤٥٠ |
| **حرف الهاء** | |
| **هارون بن رئاب** | |
| بلغني أن في السماء ملكين يناديان في كل يوم يا ليت الخلق لم يخلقوا أو يا ليتهم | ١٩٥٨ |
| حملة العرش ثمانية أربعة يقولون: سبحانك وبحمدك | ٢٤٤٩ |
| **هارون بن معروف** | |
| قال بعض العباد من الحكماء: الجوع فيه ثلاث خلال: | ١٥١٠ |
| كتب حكيم إلى حكيم: أما بعد فقد أصبحنا | ٣٤٠٩ |
| **هارون بن نقية** | |
| كنت مع إبراهيم بن أدهم بصور فصلى | ١٢٤٠ |
| **هارون الرشيد** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أخذ الأظفار يوم الخميس من السنة، وبلغني أن يوم الجمعة ينفي الفقر ... | ١٥٩ |
| إدفعوها إلى أبي نصرٍ (صرّةٌ فيها مئة دينار) | ٩٧٥ |
| املأ لها القصعة دنانير | ٢٦٠٦ |
| صف لنا ما نحن فيه من نعيم هذه الدنيا ... دعه فإنّه رآنا في عمى فكره | ١٦٢١ |
| عظني، ... نعم ... نعم ... | ٧٧٦ |
| عظني وأوجز (قاله لابن السمّاك) | ١٤٥٤، ٣٣٦٦ |
| فيك ثلاث خلال؛ لك شرف والشرف يمنع صاحبه من الدناءة، ولك حلم | |
| والحلم يمنع صاحبه من العجلة | ٨٦٩ |
| قِفوا لي على أهل الصفة حتّى أنظر إليه يعني أبا نصر | ٩٧٥ |
| لا ولا نعمة عين ولا كرامة، قد بعث اللّه من هو خيرٌ منك إلى من هو شرٌّ منّي | ٩٩٣ |
| يا أبا نصر، رعيتي ودهري غير رعية عمر ودهره | ٩٧٥ |
| يا أصمعي، وهل أحدٌ أخشى الفقر مني | ١٥٩ |
| يا جارية خذي بيده | ٣١٣٠ |
| يا ربيع: أحين دنا ما كنت أرجو دنوه رمتني عيون النّاس من كل جانب | ٢١٨٣ |
| **هارون أبو الطيب** | |
| أوحى الله إلى بعض أنبياء بني إسرائيل | ١٢٠٢ت |
| **هانيء مولى عثمان** | |
| كان عثمان إذا وقف على قبر بكى | ١٣٠٣ت |
| **الهذيل بن زفر** | |
| إنه قد عظم شأنك من أن يستعان بك ويستعان عليك ولست تصنع شيئاً | |
| من المعروف إلا وأنت أكبر منه | ١١٦١ |
| **هرقل** | |
| أخبروني ويلكم عن هؤلاء القوم الذين يقاتلونكم أليسوا هم بشر مثلكم؟ | ١٢٥٩ |
| **هرم بن حيّان** | |
| اللهمّ إني أعوذ بك من شَرّ زمان يتمرّد فيه صغيرهم | ٣٤٥ |
| قد صدقتني نفسي في الحياة ما لي شيءٌ أوصي فيه | ٣٤٤ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما رأيت مثل الجنة نام طالبها، وما رأيت مثل النار نام هاربها | ٨٤٨ |
| ما عصى اللّه عزّ وَجَلَّ كريم ولا آثر الدنيا على الآخرة حكيم | ٣٠١٣ |
| مات في يوم صائف فلمّا أن دُفِنَ جاءت سحابة قدر قبره | ٣٤٦ |
| **هرمز بن كسرى** | |
| كُلُّ شيءٍ وكُلُّ إنسانٍ في طلب شيءٍ وهذا | ١٧٥١ |
| **هشام** | |
| ما نهاني الأطباء عن شيء ما نهوني عن الشرب متكئاً | ١٩٨٦ |
| **هشام بن أبي عبد اللّه** | |
| من سرَّه أن ينظر إلى قوم يرون أنّهم يغفلون وهم لا يغفلون | ٣٥٢ |
| **هشام بن إسماعيل** | |
| كان ملك من الملوك لا يأخذ أحداً من أهل الإيمان إلاّ أمر بصلبه | ١١٢١ |
| **هشام بن حسان** | |
| بينما نحن عند الحسن إذا أقبل رجل من الأزارقة، فقال له: | ١٢٦٧ |
| سيئة تسوءك خير من حسنة | ٢١٦٠ |
| **هشام بن عبد الملك** | |
| جاد هشام عليكم بالدنيا وجُدْتم عليه بالبكاء فترك عليكم ما خلف | ٣٠٨٧ |
| سلني حاجة .. الآن قد خرجت فسلني حاجة ... من حوائج الدنيا | ٨٠ |
| ما أشغلهم يومئذ عن الأكل والشراب | ٢٢٥٦ |
| ما بقي عليَّ شيء من لَذَّة الدنيا إلاّ وقد نلته وما أتمنى | ٢٧٤١ |
| من هذا ... أخبرني عن يوم القيامة ما يأكل النّاسُ فيه | ٢٢٥٦ |
| هاتِ يا ابن الأهتم | ٢٩٠٣ |
| **هشام بن عروة** | |
| جاء رجل إلى عروة بن الزبير فعزّاه | (٢٥) ملحق |
| **هشام بن عمار** | |
| ما اسمك؟ ... بل أنت هشام | ٢٤٩٧ |
| **هشام بن محمد عن أبيه** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّ أسماء كنائن نوح إذا كتبنَ في زوايا بيت حمام نمت الفراخ | ٢١٣٥ |
| **هشام الدستوائي** | |
| كم ممّن كان يحدّث بهذا الحديث قد أكل الترابُ لسانَه | ٣٥٦ |
| ويحك إنّك إذا أطفئته ذكرت ظلمة القبرِ | ٣٥٥ |
| **هلال** | |
| ربّما أمر منصور بن المعتمر للسائل بالدّرهم أو بشيءٍ ونحن في الحلقة | ٤٩٢ |
| **هلال بن يساف** | |
| كان في بني إسرائيل متعبّد في صومعته فأراده الشيطان فلم | ٢٥٦٩ |
| ما من مولود يولد إلاّ وفي سُرَّته من تربة الأرض التي يموت فيها | ١٩٠ |
| **همّام بن مُرَّة الشيباني** | |
| كل ذات صدار خالة | ١٠٦٦ت |
| ما فجر غبون قطُّ يقول: إنّ الغبون هو الذي | ١٠٦٦ |
| **هند بن أبي هالة ربيب النبي صلى الله عليه وسلم** | |
| أنا أكرم أربعة أباً وأماً وأخاً وأختاً، أبي رسول اللّه صلى الله عليه وسلم | ٢٠٢٦/م |
| **الهيثم بن الأسود** | |
| القوام من العيش والغنى عن الناس... لو قلت له: قليل | ٢٧٥٠ |
| **الهيثم بن جميل** | |
| اغمزيني يا سليمة فإنّهما ما مشتا إلى حرام قطُّ | ٢٦٩، ٢٠٣٥ |
| **الهيثم بن عدي** | |
| الأذن عذراء تقترع كُلَّ يومٍ بحديث لم تَسْمَعْه | ٣٠١٧ |
| لما حضرت هارون الرشيد الوفاة، فكان ربما غشي عليه فيفتح عينيه | ٢١٨٣ |
| لما خرج هارون الرشيد في طلب سيار | ٢١٨٣ت |
| لما مات أبو بكر الصدّيق رضي اللّه عنه أمر عمر بن الخطاب | |
| رضي اللّه عنه خالداً | ١٠١٨ |
| **الهيثم بن فراس الساقي** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أنشدت لعثمان بن ثمامة المزنيّ: ينادي الجار خادمه | ٢٩٩٥ |
| **حرف الواو** | |
| **الواثق** | |
| فما قلت لها... أحسنت يا غلام أعطه خمس مئة دينار | ٣٤٢٠ |
| يا مازني أُلك ولد... فما قالت لك | ٣٤٢٠ |
| **الواقدي** | |
| إن أبا بكر الصديق رضي الله عنه وصفته عائشة | ١٦٣ |
| كان عثمان بن عفان كنيته أبا عمرو | ٢٣٧ |
| كان عمر بن الخطاب أبيض أمهق تعلوه حمرة | ١٩٤ |
| **الواقدي عن عمه** | |
| كان يقال بالمدينة من أراد العلم والسخاء والجمال فليأت دار | ١٣٠٦ |
| **وكيع** | |
| التمكن على المائدة خير من زيادة أربعة ألوان | ٢٥٧٤ |
| **وكيع بن أبي أسود** | |
| إنّ اللّه خلق السماوات والأرض في ستة أشهر... واللّه لقد قلتها وأنا أستقلها | ٣٢٥٩ |
| **وكيع بن الجرّاح** | |
| ويْلٌ للمحدِّث إذا استضعفه أصحاب الحديث | ٢٩١٣ |
| **الوليد بن أبي عون** | |
| كان روح بن زنباع إذا دخل الحمام فخرج منه اعتق رقبة | ٣٥٤ |
| **الوليد بن عبد الملك** | |
| كتب إليه: ﴿وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث...﴾ إلى آخر الآية | ٣١٠٥ |
| **وهب الذماري** | |
| قرأتُ في الزبور أنّ اللّه تبارك وتعالى يقول: مَنْ | ٢٤٧٨ |
| **وهب بن منبّه** | |
| إذا قال الرجل فيك من الخيرِ ما ليس فيك، فلا تأمنه | ٨٨٣ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| إذا كان الرجل لا ينكر عمل السوء على أهله جاء | ٢٦٠٧، ٣٠٢٠ |
| أصيبَ على عمدان قصر سيف بن يزن سطران مكتوبان | ٨٨ |
| أصيب على قبر إبراهيم الخليل صلى اللّه عليه وسلم مكتوباً خلفه في | ٨٣ |
| اطّلَعَ اللّه تبارك وتعالى على قلوب الآدميين فلم يجد | ١٧٤ |
| إنّ أحسن الناس عيشاً من حسن عيش الناس في عيشه | ١١١٣ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى قال لشعيا: قم في قومك | ١١١٩ |
| إنّ الخضر عليه السلام قال لموسى صلى اللّه عليه وسلم: يا موسى، إنّ الناسَ مُعَذَّبون | ١٧٨٣ |
| إنّ ذا القرنين أتى مغرب الشمس فرأى قوماً | ١٢٠١ |
| إنّ زكريا عليه السلام هَرَبَ ودخل جوف شجرة فوضع المنشار | ٤٠ |
| إنّ موسى صلى اللّه عليه وسلم لـمّـا أتى النّار لم يرَ عندها | ١٤٥٢ |
| إنّ موسى صلى اللّه عليه وسلم لـمّـا قرّبه اللّه نجيّاً | ١٧٤٦ |
| إنّ يحيى بن زكريا عليه السلام لما قُتِلَ رَدَّ اللّهُ إليه روحه | ٢٢٩١ |
| أوحى اللّهَ تبارك وتعالى إلى إبراهيم صلى الله عليه وسلم أتدري | ٢٧٥٤ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى بن منشا بن يوسف: أنْ قُل | ٢٢٧٢ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى صلى اللّه عليه وسلم: يا موسى بن عمران إنّ الذي | ١٧٧٦ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام إنّي رزقت الأحمق | ١٦٥٣ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام: يا موسى لو شئتَ | ١٨٩٤ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى نبيٍّ من أنبياء بني إسرائيل يقال له: أرميا حين ظهرت فيهم المعاصي | ٩٠٠ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى نبي من أنبيائه: هب لي من قلبكَ الخشوع | ١٧١ |
| أوحى اللّه عَزَّ وَجَلَّ إلى آدم صلى اللّه عليه وسلم: أنا اللّه ذو | ١٢٩٦ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من أنبياء بني إسرائيل أن أردت أن | ١٢٠٢ |
| بلغ ابن عباس عن مجلس كان فيه ناحية باب بني سهم | ١٠٢١ت |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| بلغني أنّ اللّه تبارك وتعالى، قال للعزير: «برَّ والديك فإنَّ ...» | ١٦٨٧ |
| بينما ركب يسيرون إذ هتفَ بهم هاتف: | |
| ألا إنّما الدنيا مقيلٌ | ٣٩١ |
| دعاء عيسى صلى اللّه عليه وسلم وقت رفعه اللّهُ عَزَّ وجل وهو دعاء | |
| مستجاب: اللهمّ أنت القريب في عُلُوِّكَ | ٧٢٨ |
| الداء الذي لا دواء له إلاّ رضوان اللّه عزَّ وَجَلَّ | ٢٠٩٧ |
| شكى نبي من الأنبياء إلى اللّهِ الفقر فأوحى اللّه إليه | ١٥٨٤ |
| ظَفِرَ الإسكندر ببعض الملوك: فسأله ما تشاء أن أفعل بك؟ | ٩٩١ |
| عجبت للعالم كيف تجيبه دواعي قلبه إلى الضحك، وقد علم أنّ له | ٨٧٨ |
| قال أكثم بن صيفي: إذا اتّخذتم عند رجلٍ يداً فانسوها، ولا تمتنّوا | ٦٨٤ |
| قال حبر من أحبار بني إسرائيل وكان حكيماً: عجبت | ٢٦٧١ |
| قال شعيا النبي عليه السلام وذكر أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ١٨٦٩ |
| قال لقمان الحكيم: ثلاثة لا يعرفون إلاّ في ثلاثة مواطن | ٥٢٠ |
| قال المسيح عليه السلام: أنا الذي كفأت الدنيا على وجهها فليس لي زوجة | |
| تموت | ٢٧٥ |
| قال المسيح عليه السلام: لا تلقوا اللؤلؤ إلى الخنازير فإنها لا تصنع به شيئاً | ٣١١ |
| قال يونس النبي صلى اللّه عليه وسلم لجبريل عليه السلام: دلّني على أعبد | |
| أهل الأرض | ١٨٠ |
| قرأتُ في اثنين وسبعين كتاباً من كتب اللّه، كَتَبَ اللّهُ | ١٠٣١ |
| قرأتُ في الإنجيل إنّ المسيح صلى اللّه عليه وسلم قال للحواريين | ٢٠٨٤ |
| قرأتُ في بعض الكتب، يقولُ اللّه تبارك وتعالى: عبدي لا يزال ملكٌ كريم | |
| يصعد إليَّ | ١٨١ |
| قرأت في زبور داود عليه السلام ذكر نبينا صلى اللّه عليه وسلم أنّه يجوز من | |
| البحر إلى البحر | ٧٥٩ |
| قرأت في كتاب شيعا، قيل لي: قم نظاراً فانظر ما ترى حتّى تخبرَ به | ٧٧٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
| --- | --- |
| قرأت في كتاب شيعا، وقد أقسمت بنفسي كقسمي أيام الطوفان | ١٨٦٩ |
| قرأتُ في مزامير داود صلى اللّه عليه وسلم: يا داود، هل تدري من أغفر له من عبادي | ١٥٥٥ |
| قرأت في مناجاة عُزَير: اللهمّ إنّك اخترت من الأنعام الضانية | ٢٠٨٣ |
| قرأت في واحدٍ وسبعين كتاباً فوجدتُ في جميعها | ١٦٢٤ |
| قرأت نيفاً وسبعين كتاباً من كتب الله عز وجل | ١٠٣١ت |
| قرَّب رجل من بني إسرائيل قرباناً فلم يُتَقَبَّل منه فرجع، وهو يقول لنفسه: من قبلك أُتيتُ؟ | ٣٠١٤ |
| قيل ليوسف عليه السلام: ما لك تجوع وأنت على خزائن الأرض؟ | ١٩٢ |
| كان داود يقول في مناجاته: طوبى لمن أرضاك في دار الفناء | ٣٥٠٥ |
| كان دعاء عيسى صلوات اللّه عليه الذي يدعو به للمرضى | ١٢٠٣ |
| كان غاب يحيى بن زكريا ـ عليه السلام وعلى أبيه ـ يعني غاب | ١٥١٨ |
| كان من تحميد داود صلى اللّه عليه وسلم: الحمد للّه عدد قطر المطر وورق الشجر وتسبيح الملائكة | ١٥٧٠ |
| كان النّاس يدعون بهذا الدعاء وكان يدعو به بَكّاءُ بني إسرائيل | ١٦٤٤ |
| كان يهوذا بن يعقوب عليه السلام صيّتاً، فقال ليوسف عليه السلام | ١٠٤٥ |
| لقي رجل ممّن كان قبلكم رجلاً هو أعلم منه | ١٦٦٥ |
| لم يسمع السامعون بمصيبة قَطُّ أعظم بمصيبةٍ من دخل النّار | ١٧ |
| لمّا اتّخذ اللّه عَزَّ وَجَلَّ إبراهيم خليلاً كان يسمع خفقان قلبه من بعد | ٣٨ |
| لمّا أرسل اللّه تبارك وتعالى من الرِّيح على عاد اعتزل هود ومن معه | ٢٨٧١ |
| لمّا التقم الحوت يونس عليه السلام فبلغه إلى التخوم السفلى | ١٢٤ |
| لمّا ضربت الدراهم والدنانير حَمَلَها إبليس | ٣٥٨٣ |
| لمّا كَلَّم اللّهُ عزّ وَجَلَّ موسى صلى اللّه عليه وسلم يوم الطور كان على موسى جبّةٌ من صوف | ٣١٢٢ |
| لمّا مات ذو القرنين وحُمِل عل النّعش اجتمعت الحكماء إليه | ٤٦٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لن يبرح المتهجدون عن عرصة القيامة حتّى يُؤْتى | ١٠٩ |
| ما من شعرة تبيّض إلاّ وتقول للسوداء: يا أختاه | ٢١٩٨، ٣٤١٣ |
| مثل الذي يدعوا بغير عمل مثل الذي | ٢٣٠٤ |
| مَرَّ رجلٌ على راهب فقال له: يا راهب كيف رأيت نشاطك | ٢٠١٢ |
| نحن في طرف من عذاب اللّه | ٢٤٠٠ |
| نعم ... اللهم إني أسألك يا مَنْ يملك الحوائج | ٢٤٧٠ |
| وجدتُ في التوراة إنّه قال: حين خلقت آدم ركّبت جسده من أربعة أشياء | ١٤٣٦ |
| **وهيب بن الورد المكّي** | |
| اتّخذ نوح صلى اللّه عليه وسلم بيتاً من خُصٍّ، فقيل | ٢٤٥٠ |
| إذا وقع العبد في الهانية الرب، ومهيمنيّة الصِّدّيقين | ٣٠٧٢ |
| اعلم أنّ من صلاح نفسك علمك بفسادها | ١٤٦٧ |
| أفضل الزهد إخفاء الزهد | ٧١ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى إذا أراد ذِكْرَ كرامة عبدٍ أصابه بضيقٍ في معاشه | ٢٨٦٥ |
| إنّ من صلاح نفسي معرفتي بفسادها وكفى بالمرءِ شراً | ١٩٦٠ |
| بلغنا أنّ الضيف لمّا جاؤوا إلى إبراهيم عليه السلام قَدَّمَ إليهم العجل | ٣٧ |
| بلغني أنّ عيسى صلى اللّه عليه وسلم قال: يا معشر الحواريين إنّي كيّفت لكم الدنيا | ٩٨٥ |
| جرّبتُ الدنيا منذ خمسين سنة فما وجدت أحداً غفر لي | ١٧٧٩ |
| قال بعض الحكماء: كنتُ في بلدِ الروم إذْ سمعتُ صوتاً من الهواء | ١٥٤٥ |
| كان ساجداً في المسجد الحرام فأطال السجود | ١٤٦٦ |
| من أراد الدنيا فليتهيّأ للذلّ | ٣٣٩٧ |
| يا ابن آدم، كُلْ في ثلث بطنك واشرب في ثلث | ٢٢١٧ |
| يقول اللّه عَزَّ وجل: وعِزّتي وعظمتي وجلالي ما من عبدٍ آثر هواي على هواه | ١٤٨٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **حرف الياء** | |
| **ياسين الزيّات** | |
| لو أنّ ألم شعرة من ألم الموت وُضِعَ على أهل السموات والأرض | ١٤٨٤ |
| يغفر للحاج ولمن استغفر له | ٢٤٧٦ |
| **يحيى بن أبي كثير** | |
| إنّ الملك ليصعد بعمل العبد مبتهجاً به إلى ربّه | ١٤٧٩ |
| فواللّه ما خرجت من نفسي (أي العجب) | ٢٧٤٠ |
| من كتب ولم يعارض كان كمن دخل الخلاء ولم يستنج | ٢٢٧٥ |
| **يحيى بن أكثم** | |
| أراد هارون الرشيد أن يولي رجلاً القضاء فقال له: إني لا أحسن القضاء | ٨٦٩ |
| خطب المأمون يوم الجمعة فقال بعد الثناء على اللّه عز وجل | ٢٩٩٢ |
| كل واحدٍ منهما عمٌّ الآخرلأمه | ٢٤٠٩ |
| **يحيى بن أيوب** | |
| إنّ رجلين تواخيا فتعاهدا إن مات أحدهما قبل صاحبه أن يخبره بما رأى | ٣٠٢٤ |
| **يحيى بن جعدة** | |
| إنّ أول خلق اللّه عَزَّ وَجَلَّ يحاسب يوم القيامة الدّواب والهوام حتّى يقضى بينهما | ٣١٠٣ |
| **يحيى بن خالد** | |
| إنّ الرجل ليأتيني بكتاب من الأدب وما فيه شيء ويدعى | ١٠٥٩ |
| ثلاثة أشياء تدل على عقول أربابها | ٢٣٢٤ |
| شيئان يورثان العقل: التين اليابس | ٢٣٤٨/م |
| الشريف إذا ترقى تواضع، والوضيع إذا ترقى | ١٦٠٥ |
| لست ترى أحداً تكبّر في الإمارة إلاّ وهو يعلم أن | ٢١٤٤ |
| ما أبعد مركبك من مركب المسيح | ٢/٢٤٣٥ |
| ما رأينا العقل قط إلا خادماً للجهل | ١٠٥٨/ م |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما سقط غبار موكبي على أحدٍ قط إلاّ | ١٠٥٨ |
| الناس يكتبون أحسن ما يسمعون ويحفظون أحسن | ١٨٨٨ |
| هم أمناؤنا على أنفسنا فإذا نحن أخفناهم | ٢١٤١ |
| يا أبا علي أخزى اللّه أمريءً رضي أن يرفعه هيناه | ١٩٢١ |
| **يحيى بن زكريا عليهما الصلاة والسلام** | |
| إلهي ما هذه النعمة الجليلة العظيمة التي قد استوعبت عملي | ٢٢٩١ |
| يا أبة، أنت حدثتني عن جبريل عليه السلام أنه أخبرك أن بين الجنة والنارمفازة | ١٥١٨ |
| **يحيى بن سعيد** | |
| سمعت عجوزاً من عجائز الأنصار تقول: رأيت ابن عباس يختلف إلى | |
| صرمة بن قيس | ٧٧٩ |
| يا أبا عبد اللّه إنّك لو حدّثتَ النّاس بهذا لاتّسعت واتّسع أهلك | ٩٧٠ |
| **يحيى بن سليم** | |
| بلغه إنّ ملك الموت عليه السلام استأذن ربَّه تبارك وتعالى أنْ يسلم | ١٢٢ |
| **يحيى بن قريش** | |
| وقال بعض الحكماء: إنّ الناس سمعوا باللّه ولم يعرفوه ... كان يُقال إنّها | |
| لك في عمرك | ٢٢٥/م |
| **يحيى بن المختار** | |
| رأيت بشر الحافي يبكي | ٣٥٧٥ |
| **يحيى بن معين** | |
| اذكرني أنّك سألتني أن أُحَدِّثك فلم أفعل | ٥١٠ |
| أقرئه منّي السلام وقل له: قد قبلنا منك يا مُعَلِّمَ الخير | ٣٢٣٢ |
| إنّما سُمِّي مُرَّةُ الطيِّبَ لحسن عبادته | ٢٨٤١ |
| ذاك يزيد في الرقم | ٢٧٠١ |
| رأيت أبا معاوية الأسود وهو يلتقط الخرق من المزابل ويغسلها | ٩٧ |
| كان جرير بن يزيد في دار المطلب فجاء إنسان يسأله، فقال لغلامه | ١١٨٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان سعيد بن مسلمة أخو القعنبي عنده كتاب عن منصور | ٢٧٠٢ |
| لما ثقل الحسن بن علي رضي اللّه عنه دخل عليه الحسين بن علي | ٤٧٦ |
| من لم يخطىء عندنا في الحديث فهو كذّاب | ١١٨٧ |
| هؤلاء الذين يقولون؛ فلان في الجنة | ٢٥٠٩ |
| لا، أبو سهل الخراساني رجل آخر ولم يسمع نصر بن ثابت من هشام بن عروة | ٨٩٨ |
| **يحيى بن واسع** | |
| بلغني أنّ أوّل من يدعى للحساب يوم القيامة القضاة | ٣٢٧ |
| **يحيى بن يحيى** | |
| قال بعض العبّاد: أشرف العلماء من هرب بدينه من | ١٦٨٤ |
| **يحيى بن اليمان** | |
| كان سفيان الثوري رحمه اللّه إذا جلسنا معه كان على | ١٠٨١ |
| كان سفيان الثوري إذا ذكرالنار وَلَهَ لذكرِها فكُنّا نخرجه من منزله نديره في الأسواق | ٢٧٩٨ |
| كان الفقراء في مجلس سفيان هم الأمراء | ٢٩٥١ |
| **يحيى بن يوسف الزَّمي** | |
| حضرت عبد اللّه بن إدريس الأودي، فقال له رجل | ٢٦٦٦ |
| **يزيد بن أبي حبيب** | |
| بلغني أنّ عامة النفر الذي ساروا إلى عثمان بن عفّان رضي اللّه عنه جُنُّوا كُلُّهم | ٤٤٥ |
| **يزيد بن أبي سفيان** | |
| يا أهل الشام عسى اللّه أن يجعل بعد عسر يسراً وبعد عي بياناً | ١٠٢٤ |
| **يزيد بن أبي مسلم** | |
| ليس هذا من الحوائج التي ترفع إلى الأمير | ١٥٥٤، ٣٢٧٤ |
| **يزيد بن الأسود** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| وجعل الناس يقبّلون يد رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم ... فجئت فأخذت بيده فإذا هي أبرد من الثلج | ٢٧٧٧ |
| **يزيد بن الأصمّ** | |
| لقيت طبيب كسرى شيخاً قد أوثق حاجباه فسألته عن دواء المشي | ٢٩١٨ |
| **يزيد بن حوشب** | |
| اعفني يا أمير المؤمنين ... بسم اللّه الرحمن الرحيم هذا ما أوصى به الحجّاج ابن يوسف | ٢٠١٨ |
| **يزيد بن عبد الملك** | |
| تمنّى رجال أن أموت | ٣٣٠١ |
| **يزيد بن مذكور** | |
| رأيت الأوزاعي في المنام، فقلت له | ٣٥٧٨ |
| **يزيد بن مرثد** | |
| وما مسألتك عن هذا؟ ... والله يا أخي لو يتواعدني الله تبارك وتعالى | ١٤١٩ |
| **يزيد بن المهلب** | |
| إذا كتبت كتاباً فأطل النظر فيه، فإنّ كتاب الرجل | ١٥٢٦ |
| استطرف كتابك واستعطر حاجبك | ٢٢٥٩ |
| إيّاك وأعراض الرّجال فإنّ الحرّ لا يرضيه من عرضه شيء | ٨٩٢ |
| كيف وصلت إليّ؟ ... والله لا تخرج إلاّ وهي معك | ١٦٠٦ |
| **يزيد بن هارون** | |
| أهل العلم (من الأبدال) | ٣٠٢ |
| وقت كان لي سن لم يكن لي خبز والساعة التي قد رزقت خبزاً | ١٩٠٧ |
| **يزيد الرّقاشي** | |
| إذا أنا نمت ثم استيقظت [ثم نمت] فلا نامت عيناي | ١٥٤ |
| دخلنا على عامر بن عبد الله وهو يبكي بكاءً شديداً | ٤٠٨ |
| ويحك يا زيد، من يصوم عنك، من يُصَلّي عنك بعد الموت | ٧٣٠، ٢٨٠٤ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا معشر الناس ألا تبكون وتنوّحون على أنفسكم باقي حياتكم من الموت | ٧٣٠، ٢٨٠٤ |
| **يعلى بن حكيم** | |
| دخل فرقد على الحسن فقال: السلام عليك يا أبا سعيد | ٦٤١ت |
| **يعلى بن عبيد** | |
| كُنّا عند سفيان الثوري فأتاه رجل يقال له: أبو عبد اللّه | ١١٧٤ |
| **يعلى بن مُنَيَة** | |
| ينشىء اللّه لأهل النّار سحابة سوداء مظلمة فإذا أشرفت | ٣٤١٠ |
| **يوسف عليه السلام** | |
| أخاف أن أشبع فأنسى الجائع | ١٩٢ |
| **يوسف** | |
| أنشد لبعض الشعراء: وليس عتاب الناس للمرء نافعاً | ٣١٨٩ |
| **يوسف بن أسباط** | |
| اجتنبوا النّاس وسلوا ربّكم العافية من أمورٍ تحدث في القراء | ٢٧٢١ |
| أقول خمسين مرّةً: اللهمّ لا تمقتني | ٢٠٠٩ |
| اللهم رب هذه الدعوة المستمعة المستجاب لها | ٢٥٠ |
| إنّ داود عليه السلام أتاه ملك الموت عليه السلام | ١٨٦٤ |
| إنّ للّه تبارك وتعالى ملائكة يترجحون من خوف اللّه | ٢٤٩ |
| إن نفسي نفس كريمة | ٢٧٧٥ |
| أنا أُريد الغزو ومنذ ثلاثين سنة فما يمنعني | ٢١٤٩ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى نبيٍّ من الأنبياء: قل لهم يخفون لي أعمالهم | ٨٩ |
| أوصيك أن لا تعصي اللّه وأنت تعلم | ٢٣٨٢ |
| أيّ شيءٍ تعطونه؟ | ٣٠٩٣ |
| بادروا يا معشر الشباب بالصّحةِ قبل المرض | ٣٣١ |
| بلغنا أنّ دعاء العبد يحبُس عن السماء | ٢٣٨٣ |
| بلغني أنّ الخضر عليه السلام قال لموسى عليه السلام لمّا أراد أن يفارقه: | |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا موسى تعلَّمْ العلمَ | ٢٨١٩ |
| بلغني أنّ الرجل المسلم إذا أُقيمت الصلاة فلم يَقُلْ: اللهمّ رَبَّ | ٢٥٠، ٢٤٣٩ |
| بلغني أنّ موسى صلى اللّه عليه وسلم قال للخضر: ادعُ لي | ٢٠٠٧ |
| تخليص النية من فسادها أشد على العاملين من طول الاجتهاد | ١٩٤٦، ٣٤٢٤ |
| ترك أبي مئة ألف بالعراقِ، فلم آخذ منها شيئاً | ٣٠٩١ |
| حَجَّ حذيفة بن قتادة المرعشي من مرعش بعشرة دراهم | ٢٢٠ |
| الحميم أشبه (في تفسير حلم) | ١٧٠٣ |
| خذ هذا فادفعه إليه واعلمه أنّي لا أملك غيره لئلاّ يَتوَهَّم | ٣٠٩٣ |
| دخلت الحمّام فخدمني ولم أكافئه وأنا أعلم | ٢٨٩٤ |
| ذهب بهاء العلم، ذهب بهاء العلم | ٣١٢١ |
| رأيتُ حمزة الزيّات في النوم وفي يده سكرجة فيها خردل | ٢٥١ |
| الزهد في الرئاسة أشدّ من الزهد في الدنيا | ٩٥ |
| عافاه اللّه ... له عندي يد ليس يعرفها أحد | ٢٣٠١ |
| عجباً كيف تنام عين مع المخافة أو يغفل قلبٌ بعد | ٢٠٠٦ |
| العلم الأكبر مخافة اللّه عز وجل | ١٤٤٦ |
| فأيُّ شيءٍ كنت ترى إذا وصلت إلى اللحد ... إلاّ قليل | ٣٠٩٣ |
| ففاتني يوماً، فحبست أياماً | ٢٠٣ |
| الفاسق أرى أنّه خيرٌ منّي، وذلك أنّي لو قلت | ٢٣٧٤ |
| قال بعض الزهاد من لم يستحي من طلب الحلال خفّت | ١٦٤٩ |
| قال بعض الزهاد من الناس: ليس الزهد بترك الدنيا، ولكن الزهد التهاون بها | ٩٥٦/م |
| قد كان الإخوان يتفقد بعضهم بعضاً فإذا أراد أن | ٢٧٥٧ |
| كان في قرية من قرى أنطاكية لا يخالط أحداً ولا يخرج إلاّ في مواقيت الصلاة | ٢٩٩٠ |
| كان لا يرى أن يأمر السفلة بمعروف مَخافة أن يسبه ويؤذيه | ٢٥٧٥ |
| كان يطحن الشعير بيده ويأكل ويغزو ولا يأخذ سهمه ولا يأكل منه | ٣٠٩١ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كانوا يستحبّون أن يختموا القرآن أوّل الليل وأوّل النهار | ٢٣٨٤ |
| لو أنّ رجلاً ترك الدنيا ما قلنا له إنّك زاهد، لأنّ الزهد لا يكون إلاّ بترك الحلال المحض | ٩٥٦ |
| لوأتتمنني رجل على بيت مالٍ لظننْتُ أنّي أؤدّي | ٢٢٥٥ |
| لوددت أنّ الذي يخاف عليّ كان الساعة | ٢٢١٩ |
| ما أرى يُعَذب اللّهُ الخلق إلاّ بذنوب العلماء | ٩١ |
| ما ذاك ـ يرحمك الله ـ الذي كتبت إليّ ... فآلى يوسف على نفسه لا يأكل لبناً أبداً | ٢٠٢٤ |
| ما الصوم والصلاة والجهاد عند الأمر بالمعروف | ٢٣٤٥/م |
| ما عالج المتعبّدون شيئاً أشدَّ عليهم من اتّقاء حُبِّ الثناء | ٢٨٦٢ |
| ما كان عملك فإنّي لأراك لا تهدأ من البكاء | ٣٠٩٣ |
| من أحب اكتساب محمود الذكر | ١٦٥١ |
| من أحب أن يعصي الله لم يزل له عمل ومن دعا | ٢٠٠٨ |
| من دعا لظالم بطول البقاء | ٢٣٧٣ |
| من قال إذا أصبح بسم اللّه العليّ الأعلى الذي لا ولدَ له ولا والد ولا صاحبة ولا شريك | ٢٠٣ |
| من قَرأ القرآن زوّجه اللّه بكلِّ حرف زوجتين | ١٤٧٨ |
| النَّحل أحبُّ إليَّ من الحمام. الحمام يدخل الغريب | ٢١٤٨ |
| واللّه ما بعث اللّهُ هذا الكلب يبحث في هذا الزِّبل | ٢٤٦١ |
| ورثت عن أبي ضياعاً بخمس مئة ألف بالكوفة فجرى | ٢٠٣٦ |
| ورثت عن أبي نحومئة ألف درهم فلم أرزأ منها درهماً إلاّ هذا المصحف | ٣٠٩٢ |
| ورث داود الطائي عشرين ديناراً فأكلها في عشرين سنة | ٥٢ |
| لا ... إن أمنت النعال فافعل | ١٦٣١ |
| لا إلا أن يتوبوا | ٣٣٠ |
| لا تفرح بما أقبل، ولا تحزن على ما أدبر ...تخرج من بيتك فلا تلقى أحداً | ١٤٥٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا سبحان الله، جئتم بطبيب الملوك ولا أعطيه شيئاً | ٣٠٩٣ |
| يا عبد الله إذا أنا متُّ فخبّر إسماعيل بن داية | ٢٨٩٤ |
| يرزق الصادق ثلاث خصال الحلاوة والملاحة والمهابة | ١٨٦٥ |
| يقول الناس يوسف بن أسباط لا يقبل شيئاً ما أعطاني | ٢٨٨٥ |
| **يونس عليه الصلاة والسلام** | |
| لما التقم الحوت يونس عليه السلام فبلغه إلى التخوم السفلى | ١٢٤ |
| **يونس بن حبيب** | |
| اثنان ما في الأرض أقل منهما، ولا يزداد إلا قلة درهم | ٧٠٦ |
| أهل العالية يقولون: إن عذابك بالكافرين | ١٢١٤ |
| علمك من روحك وفعالك من بدنك | ١٩٠١ |
| قال بعض الحكماء: عادة السوء شر من المغرم، ومن عودته | ٢٩٤٥ |
| قال بعض حكماء العرب: كل أناء يفرغ فيه يضيق ويمتلىء إلاّ | ١٦٩٦ |
| قرأت في بعض كتب الله عزّ وجل: يا ابن آدم أطعني فيما أمرتك | ١٥٨٦ |
| وصف رجل رجلاً فقال: كان يغلط في عمله من وجوه | ١٨٨٩، ٣٠٥٠ |
| لا يأمن من قطع في خمسة دراهم خير أعضائك | ٢٤١٢ |
| **يونس بن عبيد** | |
| إنّما هي الجنّة أو النّار | ٣٥٧٠ |
| بع لي هذه الشاة واشترط في بيعها | ٣٥٧٠ |
| تذاكرنا التواضع أنا وأيوب عند الحسن | ١٦٨٠ |
| لقد حملت خبيصة في جام فقصدت إلى دار | ٢٣١٠ |
| لا يزال الناس بخير ما كانوا يختلج في صدور | ١٨٠٩، ٣٤٣٦ |
| ما أعرف أحداً يقول بقوله، فكيف يعمل بعمله | ١١٩٢ |
| ما رأيت أحداً أنصح للعامة | ٤/٣٠٥٨ |
| **يونس بن ميسرة** | |
| الزهد أن يكون حالك في المصيبة وحالك إذا لم تصب | ٢٠٨٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **ابن أبجر** | |
| إذا خرج الطعام قبل ست ساعات فهو مكروه | ٢٣٤٨ |
| دع الدواء ما احتمل بدنك الداء | ١٩٨٧ |
| سمعت بعض الحكماء يقول: الرجال أربعة: جواد وبخيل ومسرف ومقتصد | ٢٧٨٤ |
| الشبع داعية إلى البشم، والبشم داعية إلى السقم | ٢٢٤٨ |
| في بعض الكتب يقول اللّه تبارك وتعالى: الحاسد عدو نعمتي | ٦٥٨ |
| من لم يكن به داء فلا يتعالج | ٢٠٢٧ |
| **ابن أبي أوفى** | |
| نعم يا أمير المؤمنين، ضعضع قناتي وشيب شواتي | ٢٠٦٨ |
| **ابن أبي بزة** | |
| ازدحم الناس على سفيان بن عيينة أيام الموسم وبالقرب | ٢٢٧٩ |
| **ابن أبي الدنيا = محمد بن عبيد** | |
| **ابن أبي رواد** | |
| دخلت على المغيرة ابن أبي حكيم في مرضه | ٤٥١ |
| **ابن أبي الزناد** | |
| ضرب الزبير بن العوام رضي اللّه عنه يوم الخندق عثمان بن عبد الله بن المغيرة بالسيف | ١١٤١ |
| كان أهل المدينة يكرهون اتخاذ أمهات الأولاد | ١٩٣٥ |
| **ابن أبي سبرة** | |
| كان سعد بن عبادة يبسط ردائه ويقول: اللهم ارزقني | ١٣٧١ |
| **ابن أبي فديك** | |
| بلغني عن سليمان النبي صلى الله عليه وسلم أنه كان جالساً فرأى عصفوراً | ١/٢٤٣٥ |
| كان ها هنا بالمدينة سنة سبع وثمانين رجل يكنى أبا نصر من جهينة ذاهب العقل | ٩٧٥ |
| وقدم هارون أمير المؤمنين وأحب أن ينظر إليه | ٩٧٥ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا أبا نصر ما الشرف؟ | ٩٧٥ |
| **ابن أبي محجن** | |
| لو شئت ذكرت أحسن من هذا يا أمير المؤمنين من شعره | ٦٠٢ |
| **ابن أبي المغيرة** | |
| وكم من نائم نام غبطة أتته المنية في نومته | ٣٩٢ |
| **ابن أبي نجيح** | |
| قال سليمان بن داود صلى اللّه عليهما: أوتينا ممّا أُتي الناس | ٢٩٢٨ |
| لمّا أتي عمر بن الخطاب رضي الله بتاج كسرى وسواريه | ٣٧٤ |
| لا شيء معه (في قول الله عزّ وجلّ: ﴿ويأتينا فرداً﴾) | ١٠٥١ |
| يعرفون بسيماهم | ١٠٠١ |
| **ابن أم مكتوم** | |
| بلغني أن ذلك يدفع ميتة السوء | ٤٩١ |
| خذ هذا فأنفقه فقال لي | ٩٨٢ |
| **ابن إدريس** | |
| فوالله لتمنيت إنّي كنت مت قبل أن ألي القضاء | ٩٨١ |
| قدم علينا هارون الرشيد أمير المؤمنين يريد الحج فنزل الحيرة | ٩٨٢ |
| كان ابن أبي مالك في الكوفة وكان معتوهاً ذاهباً | ٢٩٤١ |
| يا بهلول إنّي طالب حاجة فادع الله لي | ٩٨٢ |
| **ابن إسحاق** | |
| النسناس خلق باليمن لأحدهم عين ويد ورجل يقفز بها | ١٧٦٠ |
| **ابن الأعرابي** | |
| إذا كنت تبغي أيَّما بجهالة | ٣٢٨١ |
| سمعت رجل من العرب يقول لرجل من الحضر | ٢٧١٠ |
| قال بعض الأعراب: إياك وصدر المجلس فإنّه | ٢١٤٥ |
| قال بعض الحكماء: وعائب يعيب بفضل عيبه | ٢٢٤٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال بعض الحكماء: لا يغلبنّ جهل غيرك علمك بنفسك | ١٨٠٦ |
| لعمرك ما قال الفتى بذخيرة | ٣٢٢٥ |
| **ابن جريج** | |
| من أُصاب من الإيمان ما يعرف به ربه فهو مهتد القلب | ٢٢٣، ٣٤٤١ |
| **ابن جناح السلمي** | |
| لما حضرت مرداس بن عامر الوفاة قال لابنه عباس | ٣٤٦٩ |
| **ابن الجهم الكاتب** | |
| أعاذل ليس البخيل منه شجية | ٣٢٥٥ |
| **ابن حليم** | |
| امش بداءك ما حملك، فإنّه رب دواء يورث الداء | ٦٣٦ |
| **ابن حميد عن أبيه** | |
| كان يقال: من قلم أظفاره يوم الجمعة أخرج اللّه تعالى منه | ١٥٨ |
| **ابن خبيق** | |
| سمعت بعض أصحاب يوسف بن أسباط يقول ليوسف | ١٦٥١ |
| سمعت هذا الرجل يقول ليوسف بن أسباط : من ملك المال | ١٦٥٢ |
| كان يوسف بن أسباط في قرية من قرى أنطاكية لا يخالط أحداً | ٣٩٩٠ |
| كتب حذيفة المرعشي إلى يوسف بن أسباط: أما بعد | ١٣٨٧ |
| **ابن السكيت** | |
| كتب رجل إلى صديق له: قد عرضت لي قبلك حاجة | ١٠٦٢ |
| **ابن السّماك** | |
| ألسن تصف وقلوب تعرف وأعمال تخالف | ١٨٤١، ٣٠٦٦/م |
| إنّ الذي يخاف من شرٍّ الدنيا أعظم من الذي | ١٣٦٦ |
| إنّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ ملأ الدنيا باللّذات وحشاها بالآفات | ٣/٣٠١١، ٣٤٣١ |
| إن داود نظر بقلبه إلى ما بين يديه من آخرته | ٥٤٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إنّ رجلاً من قريش عظيم القدر في سالفِ الدهر طالب | ١٠٣٦، ٣١٨٧ |
| إنّما الدنيا أولها إلى آخرها قليل | ١٣٦٦/م |
| قال إبليس: من كانت فيه واحدة من ثلاث، فقد استمكنت منه | ٩٢٦ |
| قال بعض الحكماء: إذا قَصُرت يدك عن المكافأة فليطل لسانك بالشكر | ٧٠٩ |
| كتب رجل إلى أخ له: يا أخي إنّك قد أوتيت علماً فلا تطفئن نور علمك بظلمة الذنوب | ٣١٢ |
| كيف رأيت كلامي ... أنا أكرِّرُ وأردِّدُ حتّى يفهمَ من لا | ١٤٢٠ |
| ما أشدّ الوصفَ إذا لم يكن معه الموصوف | ٢٧٦٢ |
| ما أعجب ـ يا أمير المؤمنين ـ ما نحن فيه، كيف غلبت علينا | ١٤٥٤، ٣٣٦٦ |
| من سبب عداوته النعمة يعني الحاسد | ٦٥٧ |
| واللّهِ لئن كان لباسكم وفقاً لسرائركم | ٥٣٨ |
| يا أمير المؤمنين فما تصنع بدنيا لا تشتري بولة | ٧٧٦ |
| يا أمير المؤمنين لو منع عنك البول ساعة واحدة | ٧٧٦ |
| يا أمير المؤمنين لو منع الماء عنك ساعة واحدة | ٧٧٦ |
| يا داود ما أعجب بشأنك من أهل زمانك، أهنت نفسك | ٥٤٧ |
| **ابن شوذب** | |
| مر عيسى صلى اللّه عليه وسلم بقوم يبكون على ذنوبهم فقال لهم: | |
| اتركوها | ٢٤٩٨ |
| **ابن شكلة** | |
| علمت أنّ ما له في المجلس عدوّ أعدى مني فنظر إليّ بعين العداوة | ٣١٢٤ |
| لا واللّه يا أمير المؤمنين، وما نظرةٌ | ٣١٢٤ |
| يا أمير المؤمنين، أنا الذي قلت هذا ونميّته إلى دعبل | ٣١٢٤ |
| **ابن صبارة = عامر بن صبارة** | |
| **ابن عائشة (عبيد الله بن محمد بن حفص التيمي)** | |
| أُخِذَ لرجل من العرب مالٌ فكتب إلى آخذه | ١٨٢٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أوصى حكيم من الحكماء ابنه، فقال له: يا بني | ٢٧١٥ |
| حُدِّثت عن المحلِّم أنّه كان يقول | ٢٧٦٤ |
| حدثني من رأى على قبة فاطمة ابنه عبد الملك بن مروان | ٢٠١١ |
| خطب الحجاج يوماً ثم أنشد قول سويد بن أبي كاهل | ٢٢٠٩ |
| دخل بعض الحكماء إلى بعض الملوك، وقد غضب على رجلٍ يريدُ | ١٤٤٥ |
| ذَكَرَ أعرابي رجلاً، فقال: كان أحلم من فرخ طائرٍ | ٨٠٢، ٣٣٢٦ |
| سمعتُ أعرابياً يقول: لو صُوِّر العقل لأظلمت معه | ١٨١٨ |
| قال بزرجمهر الحكيم لبعض ملوك الفرس: ... | ٢١٤٢ |
| قال بعض الحكماء: إذا استكمل العبد العمل والعقل في القلب | ١٦٢٦ |
| قال بعض الحكماء: ارغبْ إلى من شئت فإنّك أسيره | ٢٦٤٠ |
| قال بعض الحكماء: اطلبوا الرزق عند الرحماء تعيشوا | ١٩٧٤ |
| قال بعض الحكماء: الدنيا وقتك الذي يرجع إليك فيه | ٢١٣١ |
| قال بعض الحكماء: من استطال عليك بمسألته وبخل عليك | ٢٧٥١ |
| قال بعض الحكماء: من ذكر اللّه عَزَّ وَجَلَّ على حقيقة | ٢٦٥٦ |
| قال بعض الحكماء: من لم يداوِ نفسه من سقم الأيام أيام حياته | ٢٩٣٣ |
| قال بعض الحكماء: لا تضع معروفك عند فاحش ولا أحمق ولا لئيم | ٢٨١٨ |
| قال بعض حكماء العرب: إني امتحنت خصال الناس فوجدت أشرفها | ٢٦٨٣ |
| قال بعض حكماء العرب: الصدق يزيِّن صاحبه في | ١٧١٩ |
| قال بعض حكماء العرب: من أحبَّك نهاك ومن أبغضك أغراك | ٢٣٨٩ |
| قال بعض السَّلف: يكون في آخر الزمان غِلمان يزهدون في الدنيا، ولا يزهدون | ٣٠٥١ |
| قال بعض العلماء: لولا العلم لم يطلب العمل ولولا العمل | ١٨٣١ |
| قال بعضهم: أقلّ ما لتارك الحسدِ في تركه أن يصرف عن نفسه | ٢٢٠٨ |
| قال بعضهم: لا تشغلك ذنوب الناس عن ذنبك | ١٧٨٧ |
| قال بعضهم لا تهاونّ بإرسال الكذبة في الهزل فإنّها | ٢١٧٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال حكيم لابنه: يا بنيّ! اغتنم مسالمة من لا بُدَّ لك، بعيداً أو حبيباً حتّى | ٢٧٨٣ |
| قال حكيم من الحكماء: أشكر الناس للّه عَزّ وَجَلَّ أشكرهم لعباده، ومن | |
| لم يشكر القليل | ٣١٠٨ |
| قال رجل لحكيم من الحكماء: عظني فقال له: اعلم | ٢٦٦٨ |
| قال عيسى عليه السلام: تعملون للدنيا وأنتم ترزقون فيها | ١٨٠٤ |
| قالت الحكماء: الناس حازمان وعاجز، فأحد الحازمين الذي إذا نزل به البلاء | ١٤٠٥ |
| قرأت في سير العجم، حسن الجوار خير قرين والأدب | ١٠٨٩ |
| قيل لأعرابي: مات فلان أصحّ ما كان، فقال: أو صحيح | ١٥٣ |
| قيل لبعض الحكماء: ما البلاغة؟ قال: ما بلغك الجنة وعدل بك عن النّار؟ | ٣٣٨ |
| قيل لبعض الحكماء: ما المروءة؟ قال إنصاف من هو دونك | ٣٠٩٥ |
| قيل لبعض الحكماء: ما كمال الحمق؟ قال: طلب منازل الأخيار بأعمال | |
| الأشرار وبغض | ١٦٣٠ |
| كان أبو عوانة واسمه الوضّاح مولى يزيد بن عطاء البزّاز من أهل واسط | ١٥٧٧ |
| كان الرجل إذا أراد أن يشين أخاه طلب الحاجة | ١٦٠٠ |
| كان يقال: العلماء إذا علموا عملوا فإذا عملوا شغلوا | ٣٥٣ |
| كانت دعوة بكر بن عبداللّه المزني لإخوانه: زهّدنا اللّه وإيّاكم | ٢٠٧٨ |
| كفى بالموتِ واعظاً، وكفى باليقين غِنىً | ١٩٢٥ |
| لقي حكيم حكيماً فقال له: أوصني. فقال: اجهل من كنت تعرفه | ٢٨٥٠ |
| نظر شريح إلى رجل يقوم على رأسه وهو يضحك | ١٧٩٩ |
| وجد في بعض خزائن ملوك فارس لوح | ١٥٠٥ت |
| **ابن عائشة عن أبيه** | |
| احتضر رجل من عُبّاد البصرةفاشتدَّ به سكرات الموت فجعلوا يدعون | ٢٨٥٦ |
| أُخِذ لرجل من العرب مال فكتب إلى آخذه: يا هذا | ١٨٢٦، ٢٣٤٢/م |
| مَرَّ رجل من الصالحين بأرض فيها فتىً جميل فرجع إليه بعد شهر | ٢٨٨٤ |
| **ابن العجاج** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إن المستوغر بن ربيعة بن كعب بن سعد مَرَّ بعكاظ وهو يقود ابن ابنه حَرْباً | ٦٩٧ |
| **ابن عجلان** | |
| إن امرأة حملت له مَرَّة فأقامت خمس سنين حاملاً ثم ولدت له | ٣٣٥٣ |
| **ابن عمران** | |
| إن طلحة بن عبيدالله فدى عشرةً من أسارى بدرٍ بماله | ١٣٠٧ |
| **ابن عون** | |
| كتب الحسن إلى الحسين رضي الله عنهما يعيب عليه إعطاء الشعراء قال: فكتب إليه | ١١٧١ |
| كان بصر محمد بن سيرين في العلم كبصر التاجر الأريب بتجارته | ١١٧٦ |
| **ابن كثير** | |
| دين الله، ومن أحسن من الله ديناً... هي فطرة الإسلام (تفسير قوله تعالى: ﴿صبغة الله ومن أحسن من الله صبغة﴾) | ١٤٦٥ |
| **ابن كعب** | |
| إن موسى صلى الله عليه وسلم قال: يا رب دلني على عمل إذا قلته | ٢٥٤٠ |
| **ابن كناسة الأسدي** | |
| قدم رصافة هشام رجل من بني أسد | ٦١٤ت |
| **ابن كيسان** | |
| أنشد بعضهم: تَحيّر من حُسْنِهِ فَهْمُهُ | ٣٢٩١ |
| **ابن محيريز** | |
| إن استطعت أن تَعرِف ولا تُعرَف وتسأل ولا تسأل، وتمشي ولا يمشى إليك فافعل | ٩٥٧ |
| **ابن المقفع** | |
| إذا أكرمك الناس لمال أو سلطان فلا يعجبنك ذلك | ١٦٣٤ |
| هو نهاية في العلم، لا تلد النساء مثله أبداً في زماننا هذا | ٢١٦٨ |
| يا بني لا تعد الملك الكذوب ملكاً | ٢٤٨٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو الأحوص** | |
| لا تسبُّوا أصحاب النبي صلى اللّه عليه وسلّم فإنّهم أسلموا خوفاً من اللّه | ٢٣٣ |
| **أبو إدريس الخولاني** | |
| أمّا ما ذكرت من الجود فذلك لمعرفتنا من اللّه تبارك وتعالى بحسن الخلق | ١٧٣٣ |
| **أبو أسامة** | |
| كان الثوري إذا جلسنا إنما نسمع منه الموت الموت | ٨١٧ |
| **أبو إسحاق السَّبيعي** | |
| إنّ عمرو بن ميمون الأزدي حَجَّ مئة حجة وعمرة وأنّ الأسود | ١٣٢٣ |
| حج عمرو بن ميمون ستين ما بين حجة وعمرة | ١٣٢٣ت |
| رأيتُ علياً عليه السلام أبيض الرأس واللحية | ٢٦٦ |
| **أبو إسحاق** | |
| كان أصحاب رسول اللّه صلى الله عليه وسلم لا يَثْبُتُ لهم العدو فواقاً عند | ١٢٥٩ |
| كان الحسن البصري يُشبّه بأصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | ٢٧٦٦ |
| ما رأيت أميراً قطُّ أفضل من المهلّب بن أبي صفرة | ١٥٣ |
| مات سهيل بن عمر بن عبد العزيز بن مروان فكتب إلى عمر بن عبد العزيز بعض عماله يعزيه | ٧٩٠، ٣٢٠٢ |
| **أبو إسحاق بن أبي الشيوخ** | |
| قال بعض القائلين: الدنيا أُسِّسَت على الفناء فمن طلبها للبقاء | ٢٥١١ |
| **أبو إسماعيل الترمذي** | |
| أنشدني بعض أصحابنا: وإذا قيل مات فلان | ٧٧٤ |
| **أبو الأسود** | |
| صدقت، ولكن الركوب أتفرجُ فيه، وأستمعُ من الخير ما لا أسمعه في منزلي | ٣١٢٥ |
| العمامة جُنَّةٌ في الحرب ومكنَّةٌ في الحَرِّ والقَرِّ وزيادة في القامة | ٣٣٤٤ |
| **أبو أسيد** | |
| نمت عن جزئي الليلة، وكان وردي البقرة فرأيتُ بقرةً تنطحني | ٢٩٦٠ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو الأشهب** | |
| لزم بعض الحكماء باب كسرى في حاجةٍ له دهراً فلم يَصِلْ إليه | ٣٣٠٨ |
| **أبو إياس** | |
| لو مر بك رجل أقطع فقلت بيدك وأشرت إليه: هذا أقطع كانت غيبة | ٢٧٣٩ |
| **أبو أيوب السختياني** | |
| إنّ الملائكة لتعجب من خفة ذكر الموت على ألسنة بني آدم | ٣٠٩٦ |
| **أبو البحتري** | |
| لوددت أن الله عز وجل يطاع، وأني عبد مملوك | ٤٨٩ |
| **أبورَزين** | |
| عملك فأصلحه، (تفسير قوله تعالى: ﴿وثيابك فَطَهِّرْ﴾) | ٢٨٧٢ |
| كان يقال للرجل إذا كان خبيث العمل قالوا: | ٢٨٧٢ |
| **أبو البدّاح** | |
| أنشدني لأخته الشموس: كنا عبرات للغريب عن أهله | ٥٧٢ |
| **أبو بكر بن أبي الدنيا** | |
| إنّ لله تبارك وتعالى من العلوم ما لا يُحْصى. يُعْطي كُلَّ واحدٍ من ذلك ما لا يُعْطي | ٢٠٢٣ |
| أنشد لبعض الحكماء: إنما الدنيا جدود فعزيز وذليل | ٨٦٠ |
| أنشدني شيخ من الأزد من أهل البصرة | ٣٤٧٠ |
| أنشدونا لبعض الشعراء: يا ساكن الدنيا أتعمّرُ مسكناً | ٨٦٠ |
| عسرت عليّ حاجةٌ زماناً فكتبتُ هذا | ٢٤٧٠ |
| قال بعض الزهّاد: إنّ للّه تبارك تعالى عباداً لم توسِّخ الدنيا قلوبهم، ولم تغلل بالجهل صدورهم | ٢٨٣٥ |
| لا تبك للدنيا ولا أهلها وابك ليوم تسكن الحافره | ٢٧٥/م |
| **أبو بكر بن أبي سبرة** | |
| باع علي بن عبدالله بن عباس عكرمة من خالد بن يزيد | ٧٨٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو بكر الصديق** | |
| احْرِص على الموتِ توهب لك الحياة | ٦٧١ |
| أعتق سبعة كُلُّهم يعذب في اللّه عزّ وَجَلَّ | ١٦٦ |
| اعْلموا أيّها الناس أنّ أكيس الكيس التّقي | ١٢٨٩، ١٢٩٠ |
| أفضل هذه الأمة بعد نبيها صلى الله عليه وسلم أبو بكر | ١٤٩ |
| اللهمَّ، إنّ أهله وولده وعشيرته قد تبرؤوا منه | ٢٥٨ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى فاتحٌ عليكم الدنيا فلا تأخذنّ | ١١٢٣، ٢١٩١ |
| انظري يا بنيّة! فما زاد من مال أبي بكر الصِّديق مذ ولينا هذا الأمر | ١٦٤ |
| ألا تقولين كما قال اللّه عزَّ وَجَلَّ | ١٣٧٦ |
| سَلَّم عليك أخوك فلم تُسَلِّمْ عليه... ولِمَ؟... قد سألته | ١٨٢٢ |
| صَلّى صلاة الصبح يوماً فلمّا انفتل قام مُتَمِّم بن نويرة | ٣١٣٦ |
| عليك بالمغفلة والمنشلة | ٩٣٣ |
| كان أبيض نحيفاً خفيف العارضين | ١٦٣ |
| لكنك لو أهدفت لي لم أنصرف عنك | ١٠٧٦ |
| لما مات حمل على السرير الذي كان ينام عليه النبي صلى الله عليه وسلم | ١٤٨ |
| ليس مع العزاءِ مصيبة ولا مع الجزع فائدة، الموت أهون ما قبله | ٧٧٠ |
| ما صيد من صَيد ولا عوضد من شجرةٍ إلاّ لما ضيّعت من التسبيح | ٩٨ |
| من صلى الصبح فقد أخفره الله عز وجل | ١٤٤١ |
| من ظلمَ منهم أحداً فقد أخفر ذِمّة اللّه | ١٤٤١ |
| هذا الذي أوردني الموارد | ١٠٨١ |
| والذي نفسي بيده لأن اتقيتم وأحسنتم ليوشكن | ١٠٥٧ |
| واللّه لقد كنت حريصاً على أن أوفيَ فيء المسلمين | ٢٣٩٣ |
| واللّه ما دعوته ولا غدرتُ به | ٣١٣٦ |
| يا يزيد سِرْ على بركة اللّه، فإذا دخلتَ بلاد العدوِّ فكن بعيداً من الحملة | ١٥٣٥ |
| **أبو بكر العابد** | |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| خرج الثوري إلى البادية إلى حبيب البدوي مسلماً عليه | ٣٦٨ |
| **أبو بكر النهشلي** | |
| لا وَكَلَهُ اللّه إلى عبادته | ٣١٤١ |
| **أبو بكر بن أبي موسى** | |
| جنّتان من ذهب للسابقين وجنّتان من وَرِق (تفسير قوله تعالى: ﴿ولمن خاف مقام ربّه جنّتان﴾) | ١٤١٤ |
| **أبو بكر بن عيّاش** | |
| قراءة حمزة بدعة | ٣٠١٥ |
| كتب بعض الزّهاد إلى أخ له: كَثُرَ تَعجبي من قلبٍ يألف الذنبَ | ٩٠٩ |
| نعم كما تعود اليهودي والنصراني على رجليك | ٨٦٦ |
| **أبو بكر(أخو زياد بن عبيداللّه الحارثي)** | |
| أُنْشِدك اللّه أترى لي أن أَلِيَ القضاء | ٥٩٨ |
| **أبو تراب النخشبي** | |
| حتى يفنى الطعام | (١٣) ملحق |
| يأكل الرجل حتى ينس متى بدأ بالأكل | (١٤) ملحق |
| **أبو جعفر السقّا (رفيق بشر بن الحارث)** | |
| رأيت بشر بن الحارث ومعروفاً الكرخي في النوم كأنّهما | ٣٦٩ |
| **أبو جعفر المنصور** | |
| إذا مَدَّ إليك عدوّك يده فإنْ قدرت على | ٢٤٦٦ |
| استشارك أبو مسلم في القدوم عليَّ | ٥٩٧ |
| اللهمَّ إنّك تعلم أنّي قد ارتكبت من الأمور | ٢١٠ |
| إنّي أُعِدُّك لأمرٍ كبير | ٢٩٦٤ |
| حدّثني بوصية الحجّاج بن يوسف... حدّثني بها | ٢٠١٨ |
| خذها بحقّها، إنّما قيل ذلك لأنّه ينبح الضيف | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| سَلْ حاجتك ... سلْ فليس يمكنك ذلك في كُلِّ وقت | ١٤٢٢ |
| سمعاً لمن فهم عن اللّه وذكر به وأعوذ باللّه | ١٩٣٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ما مالك؟ لقد تلطفت للسؤال | ١٤٢٣ |
| واللّه ينبغي أن تكون نساء قومي | ٢٨٩٩ |
| هذه الشيعة، لا شيعتكم | ٢٠١٨ |
| هكذا والله ينبغي أن تكون نساء قومي | ٢٨٩٩ |
| ويلي على الأعرابي الجلف (يعني مروان بن أبي حفصة لما أنشدَ معن بن زائدة) | ٣٤١٨ |
| يا أبا عبد اللّه إنّ الخليفة لا يصلحه إلاّ التقوى والسلطان | ٢٢٥٢ |
| يا أبا عبد اللّه لا تُبْرِمَنَّ أمراً حتّى تفكّر فيه | ٢١٥١ |
| يا أبا عبد الله لا ينبغي أن يكون الحاجب جهولاً ولا عيياً | ٢٢٦١ |
| يا أيُّها الناس أنا سلطان اللّه في أرضه أسوسكم بتوفيقه | ٢٣٦٧ |
| يا بني استهدني | ٢٩٤ |
| يا ربِّ، إنْ كنت عصيتك في أمور كثيرة | ٣٤٧٦ |
| يا ربيع من هذه؟ | ٢٨٩٩ |
| يا معن شاب رأسك ... إنّ فيك لبقية ... بلغني أنك أعطيت | ١٩٥١ |
| **أبو الجلد** | |
| الدنيا كُلُّها أربعة وعشرون ألف فرسخ، فملك السودان اثنا عشر ألف فرسخ | ٨٣٥ |
| قال عيسى ابن مريم عليه السلام: فكرت في الخلق فوجدت من لم يُخْلق | ٤٨٦ |
| قرأت في مناجاة داود عليه السلام: إلهي ما جزاء من بكى من خشيتك | ٢٨٧ |
| كان رجل من إخواننا إذا جَلَسَ جلس على رجليه فقيل | ١٣٤٣ |
| **أبو الجوزاء** | |
| شهادة أن لا إله إلاّ اللّه | ١٢٥١، ٢٣٧٢ |
| **أبو حازم الأعرج المديني الزاهد (سلمة بن دينار)** | |
| إذا كنت في زمان يرضى فيه من العمل بالقول | ١٥٠٨ |
| اضمنوا لي اثنين أضمن لكم على اللّه | ٢٠٥٨ |
| أعيذك باللّه أن تقول ما لم يكن | ٣٤٥٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| اللهمّ إن كان سلمان وليّك فبشّره بخير الدنيا والآخرة | ٣٤٥٦ |
| أما المحسن فكالغائب يقدم على أهله | ٣٤٥٦ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى أخذ على العلماء ليبيّننه | ٣٤٥٦ |
| إنّ الرجل ليعملُ السيئة ما عمل حسنةً قطّ أنفع | ٢١٦٢ |
| إن عوفينا من شرٍّ ما أُعطينا لم يَضُرُّنا فقد ما | ١٥٥٧ |
| إنّ ناساً أخذوا هذا الأمر من غير مشاورة من | ٣٤٥٦ |
| إنّه ليس شيء من أمر الدنيا إلاّ وقد كان له أهل قبلكم | ٩٦٤ |
| تنظر ما عندك فلا تضعه إلا في حقه وما ليس عندك فلا تأخذه إلا بحقه | ١٨١٠ |
| الثقة بما في يد اللّه عزّ وجل، والإياس عمّا في أيدي النّاس | ٩٦٣ |
| الحمد للّه الذي جعلهم يتمنّون عند الموت ما نحن | ١٨٠٧ |
| الدنيا طالبة ومطلوبة، فمن طلب الدنيا طلبه الموت | ٣٠١٢ |
| رضي الناس من العمل بالعلم | ١٣٢٧ت |
| الرضا عن الله، والغنى عن الناس | ٣٢٧١ |
| قد رفعتها إلى من لا تختزل دونه الحوائج | ١٣٢٠ |
| قريبٌ من المحسنين | ١٥٠٧ |
| كُلُّ نعمة لا تقرِّبُ من اللَّهَ عَزّ وَجَلَّ | ١١٦٣ |
| كيف أكون مسكيناً ومولاي له ما في السموات | ٢٧٤٣ |
| لأنّكم عَمَّرتم الدنيا وخرّبتّم الاخرة فإنكم تكرهون | ٢٧١، ٣٤٥٦ |
| ما عندي ثمنه ... أنا أنظر نفسي إلى الآخرة | ٩٦٦ |
| ما في الدنيا شيءٌ يسرُّك إلاّ قد أُلْزِق به | ١٣٩٩ |
| من اعتدل يوماه فهو مغبون ومن كان غده شر | ١٨٦١ |
| من هذا كُلّه بُدٌّ، ولكن لا بُدَّ لنا من الموت ثم البعث ثم الوقوف بين يدي اللّه عزّ وجلّ | ٢٧٤ |
| موعدكِ الجنَّةُ | ٩٦٥ |
| نحن لا نحبُّ أن نموت حتّى نتوبَ | ١٢٦٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| نعمة اللّه عليَّ فيما زوى عنّي من الدنيا أعظم ممّا أعطاني | ٢٥٤٩ |
| الناس عاملان: عامل في الدنيا للدنيا قد شغلته | ٢٣٦١ |
| لا تعادينّ رجلاً ولا تناصبه حتّى تنظر إلى سريرته بينه وبين اللّه | ١١٠٠ |
| **أبو حبيب البدوي** | |
| من أنت؟ .. أنت الذي يقول في هذه القرية: إنّك خيرهم | ٣٦٨ |
| يا سفيان إنّ حديثك لطيِّبٌ، وإنّ في الصلاة لشغلاً عن حديثك | ٣٦٨ |
| يا سفيان إنّ منعَ اللّه كلَّه عطاء لأنّه لا يمنع من بخلٍ | ٣٦٨ |
| **أبو حذيفة** | |
| رأى الثوري رجلاً عند قوم يشكو ضيقة | ١٣١٨ |
| كنا عند سفيان الثوري فدخل إليه رجل من عند شريك القاضي | ٣٢٩ |
| **أبو الحصين** | |
| تمثّل بهذين البيتين وهما لعبد بني الحسحاس: | |
| هريرة ودِّع إن تجهزت غادياً | ٣٣٥٧ |
| عاد رجلاً عليلاً فعزَّاهم به فقالوا: إنّه لم يمت، فقال: يموت إنْ شاء اللّه | ٣٢٦٤ |
| كان بين اثنين عبد، فقام أحدهما فجعل يضربه | ٣٢٦٣ |
| نزل يهودي بأعرابي فمات عنده، فقام الأعرابي فَصَلَّى عليه، فقال: اللهمّ | |
| ضيف | ٣٢٦٢ |
| **أبو الحلال** | |
| أيا فلان، أيا فلان، حتى يأتي على الأربعة الأبواب | ١١٧٣ |
| **أبو حمزة السكري** | |
| إنْ تأتيني أحدِّثك عن إبراهيم عن علقمة عن عبد اللّه بن مسعود عن النبي | |
| صلى اللّه عليه وسلم | ٣٢٦ |
| تدرون ما الأثر | ٣٢٦ت |
| **أبو حنيفة** | |
| لا يزال الناس بخيرٍ ما أبقى اللّه عز وجل سفيان الثوري | ٢٦٢٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو خالد الأحمر** | |
| رأيت سفيان الثوري في المنام بعد ما مات، فقلت: يا أبا عبد الله كيف حالك؟ | ١٤٢ |
| **أبو خالد/يزيد** | |
| إلهي انقطعت الرغائب دونك وكلّت الألسن | ٢٦١٣ |
| **أبو الدرداء (عويمر بن زيد)** | |
| أشتكي ذنوبي ... أشتهي الجنّة | ٥٠ |
| أضحكني ثلاث وأبكينني ثلاث، أضحكني مؤمل الدنيا | ٥٦٥ |
| أمّا بعد يا أخي إنّي أُنبئتُ أنّك اشتريْتَ خادماً | ٢٤٠٨ |
| إنّ أبغض النّاس إليّ أنْ أظلمه رجل | ١٠٠٨ |
| إنّ أُمّ الدرداء سألتني أن أشتري لها خادماً وكنت | ٤٨٢ |
| إنّ النّاس ليبعثون في قبورهم على ماماتوا عليه | ١٦٩٤ |
| إنّا لنكْشُرُ في وجوه قومٍ، وإنّ قلوبنا لتلعنهم | ١٠٨٧ |
| أيُّما رجل أشار على أمرىءٍ مسلم كلمةً هو | ٢٢٩٦ |
| أيها الناس عمل صالح قبل الغزو فإنما تقاتلون | ١١٣٥ |
| رُبَّ قائمٍ مشكور له ورُبّ نائمٍ مغفورٍ له ... فالقائم المشكور المجتهد بالليل | ٧٢٢ |
| عمل صالح قبل الغزو فإنكم إنما تقاتلون بأعمالكم | ١١٣٥ت |
| قال بعض العلماء: ليس من فضيلة العلم | ١٨٨٠ |
| كتب أبو الدرداء إلى سلمان: من أبي الدرداء إلى سلمان أمّا بعد: | |
| يا أخي إنّي أُنبئت أنّك اشتريت خادماً | ٤٨٢ |
| لو أنّ الوحش طعمت طعم الإسلام | ١٨٤٥ |
| ما من رجلٍ من المسلمين إذا أصبح إلاّ اجتمع هواه وعمله | ١٧٩٨ |
| والله لو أنّ الوحش طعمت طعْم الإسلام ما تركته أبداً | ٧٩٥ |
| **أبو دلامة** | |
| كنت في عسكر مروان أيام زحف إلى شيبان الخارجي فلما التقى الزحفان | ١٠١١ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو دلف** | |
| ألا أيّها الزوّار لا يدعنّكم | ٨٣٩ |
| **أبو الدّيك** | |
| كذب؛ لا يكون المعروف معروفاً حتىّ يُصْرَفَ في أهله وفي غير أهله | ٩٨٠ |
| **أبو ذَرٍّ الغفاري** | |
| أمّا ثوابك فعلى اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ٢٨٥٩ |
| إنّ صاحب المنزل لا يدعنا فيه | ٩٠٦ |
| إنّ لنا بيتاً نوجّه إليه صالح متاعنا | ٩٠٦ |
| إنّك إن توسّد العلمَ خير من أن توسّد الجهل | ١٦٩٤ |
| بدنٌ في التراب فداءٌ من العقاب ينتظر الثواب | ١٧٨٦ |
| بِمَ تُخَوِّفني واللّه لَلْفَقْرُ أحبُّ إليّ من الغنى ولبطن الأرض | ٢٨٧٥ |
| لك في مالك شريكان أيُّهما جاء أخذ ولم يؤامرك | ٦٨٦ |
| ما لي وللدنيا، يكفيني صاع من طعام في كُلِّ جمعة | ٩٠٧ |
| والذي بعثك بالحقّ لا لقيتك إلاّ على الذي أفارقك عليه | ٢٨٧٤ |
| وما أصنع بأن أكون أسيراً | ٩٠٧ت |
| يكفي من الدعاء مع البرّ ما يكفي من الطعام | ٢٣٠٥ |
| **أبو الربيع** | |
| استكثروا من يالكع فإن الحسن كان يعجبه | ٢٣٣٧ |
| **أبو رجاء العطاردي** | |
| إذا وُقِيَ الرجل شَرَّ لقلقه وقبقبه وذيذبه فقد وُقِيَ، فاللقلق اللسان | ٨٨٠ |
| **أبو الزناد (عبد اللّه بن ذكوان)** | |
| إنّها وإن أدنتني منها صانتني عنها | ٢٢١٢ |
| كنّا ونحن فتيان نريد أن نخرج لحاجة، فنقول: موعدكم قيام القرّاء | ٢٣٨٣ |
| كنت مُناثاً، فقلت ذلك لبعض إخواني، فقال لي: إذا جامعتَ | ١٩٩٨ |
| لا يزال النّاس بخيرٍ ما تعجبَ من العجب | ٦٥٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لا يزال في الناس بقية ما تعجب من العجب | ٦٥٤ت |
| **أبو زيد النحوي** | |
| ثمانية من النّاس إن أهينوا فاللّوم عليهم من أتى مائدة | ١٨٥٤ |
| سأل رجل أسد بن عبد اللّه فاعتل عليه فقال له الرجل: إني سألت الأمير | |
| عن غير حاجة | ١٤٠٩ |
| طير الماء وحيتان البحر لا ألسنة لها | ١٣٥١ |
| الفرس لا طحال له، والبعير لا مرارة له، والظليم لامُخَّ له | ١٣٥١ |
| للإنسان أربع ثنايا وأربع رباعيات والواحدة رباعية | ١٨١٥، ٣٠٦٠ |
| مَرَّ رجل بامرأةٍ من العرب في بادية، فقال لها: هل من | ٢٣٨٨ |
| **أبو زيد النمري** | |
| أنشد لسابق: وكم من صحيح بات للموت آمناً | ٩٣٩م |
| **أبو سعيد** | |
| نزلت ﴿إنّما يريد اللّه ليذهب عنكم الرجس أهل البيت﴾ في خمسة | ٣٥٥٤ |
| **أبو سعيد الخياط** | |
| قلت ليوسف بن أسباط: أقعد إلى القاصّ، ... فأقيمه | ١٦٣١ |
| **أبو سعيد المدني** | |
| قال بعض الحكماء وقيل له: ما العقل؟ قال: الإصابة بالظنّ | ٦٠٠ |
| كَتَبَ رجل إلى صديق له يحني عليه: عتبت عليَّ ولا ذنب لي | ٣٣٠٣ |
| **أبو سفيان بن الحارث** | |
| لا تبكوا عليَّ فإنّي لم أتنطف خطيئة منذ أسلَمتُ | ١٦٨٨، ٢٥٦٢ |
| **أبو سفيان الحميري** | |
| ثلاث مئة ألف وخمسون ألفاً من أهل الشام، ومئة وخمسون ألفاً من أهل العراق | ١٨١٦، ٣٠٥٩/م |
| **أبو سفيان بن العلاء** | |
| إني لأرفع نفسي أن يكون ذنب أوزن من حلمي | ٣٣٢٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| أتى شريحاً القاضي قوم برجل، فقالوا: هذا خطب إلينا فسألناه عن حرفته، | |
| فقال: أبيع الدَّواب، فزوّجناه ... وأجاز نكاحه | ٨٤٠ |
| **أبو سليمان الداراني (عبد الرحمن بن أحمد بن عطية)** | |
| اجتمع رأي أكثر من اثنين وسبعين صديقاً أن كثرة النوم | ٤٠٢ |
| إذا كانت الآخرة في القلب جاءت الدنيا تزحمها، وإذا كانت الدنيا في القلب | ٢٠٧٥، ٣٢٣٠ |
| أما يستحي أحدهم أن يلبس عباءة أسقاطها فيها الدراهم | ١١٢٢ت |
| أما يستحي أحدهم أن يلبس عباءَةً بثلاثة دراهم | ١١٢٢ |
| إنما رجع القوم من الطريق قبل الوصول، ولو وصلوا | ٢٢٦ |
| إنه حين ذكرهم عاينهم | ٢٢٧١ |
| أهل الطاعة بليلهم ألذُّ من أهل اللهو بلهوهم | ٥٤٣ |
| أهل الليل في ليلهم ألَذُّ من أهل اللهو في لهوهم | ١٥٥، ١٥٦٨ |
| بكوْا الذنوب قبل بكائها وفرغوا القلوب | ٢٦١٦ |
| بلغني أنّ إبليس اللعين إذا لم يقدر على ابن آدم أن يغويه | ٩٧٩ |
| بينما عيسى صلوات اللّه عليه يمشي في يومٍ صائفٍ وقد مَسَّه حَرُّ الشَّمْس | ١٠١٧ |
| سمعت راهباً يدعو في صومعة له: سبحان من لم يأنس بمن بقي | ٦٤ |
| قلت لراهب: أيُّ يوم أسرُّ إليك؟ | ٣٥٣١ |
| كان علي بن الفُضَيْل بن عياض لا يستطيع أن يقرأ القارعة | ١٢٣٤، ٢٢٦٩ |
| لقي رجل راهباً، فقال: يا راهب! كيف ترى الدهر؟ قال: | |
| يخلق الأبدان، ويجدد الآمال | ٤٣٢ |
| لو لم يبكِ العاقل فيما بقي من عمره حتَّى يخرج من الدنيا ... صدقت | ٥٤٣ |
| ما رأيتُ أحداً الخوف أظهر على وجهه والخشوع | ٢٢٦٩ |
| من المعدة إلى العينين عرقان فإذا ثقلت المعدة | ٤٠٢ت |
| ويحك يا أحمد، بلغني أنه من حج من غير حله | ٩٦٨ |
| ينبغي للخوف أن يكون أغلب على الرجاء فإذا غلب الرجاء على الخوف | |
| فسد القلب | ٩٠٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا أحمد! إنّ اللّه تبارك وتعالى أوحى إلى موسى: مُرْ ظلمةَ بني إسرائيل | ٩٦٨ |
| يا أحمد! إنّه إذا جنَّ الليل وهدأت العيون وأنِسَ كُلُّ خليل بخليله | ١٧٠ |
| **أبو السليل** | |
| كان في بني إسرائيل ملكة يقال لها: روزبة هكذا قال | ٢٧٠٠ |
| لما انتهى موسى إلى البحر قال: هن أبا خالد. فأخذه أفكل يعني رعدة | ١٤٤٠ |
| **أبو سنان** | |
| قال راهب لسعيد بن جُبَيْر: يا سعيد عند الفتنة تعلم مِن | ٢٤٣٧ |
| **أبو سنان بن العلاء** | |
| عن بعض مشايخه أنه قال: يا دنيا مُرِّي على المؤمن | ٢٩٤٢ |
| **أبو سهل** | |
| خلقك فحسَّنه (تفسير قوله تعالى: ﴿وثيابك فَطَهِّرْ﴾) | ١٥٢٧، ٣٠٤١ |
| **أبو صالح** | |
| كانت السماء مخلوقة وحدها، والأرض مخلوقة وحدها | ٢١٥٩ |
| هو أشرف شراب أهل الجنّة وهو للمقرّبين صرف | ١٠٠٥ |
| **أبو صالح الهمداني** | |
| خُذْ من الدهر ما كفى | ٣٣٠٤ |
| **أبو صفية** | |
| كان بالبصرة حارسان من بني عدي زمن زياد يحرسان أعرابيّان | ٥٠٦ |
| **أبو الضحى** | |
| رأيت على رأس ابن الزبير من المسك ما لو كان لي كان رأس مالٍ | ٣٣٤٧ |
| **أبو طالب** | |
| هو قول الرجل لأخيه ما ليس فيه، فيقول له: إن كنت كاذباً | ١٤٨٣ |
| **أبو طرفة الهذلي** | |
| رأى قائفان وهما منصرفان من عرفة بعد النّاس بيوم | ٢٥٥٩ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو الطفيل عامر بن واثلة الكناني** | |
| أتدعونني شيخاً وقد عشت حقبةً | ١٠١٣ |
| دعا عليٌّ الناس إلى البيعة فجاء عبد الرحمن بن ملجم المرادي فرده مرتين | ١٠٤٢ت |
| وبقيتُ سهماً في الكنانة واحداً | ١٠١٣ |
| **أبو طلحة** | |
| رفعت رأسي يوم أحدٍ فما منهم من أحدٍ إلاّ وهو | ٢٧٧٩ |
| **أبو العاليه (رفيع)** | |
| سيأتي على النّاس زمان تخرب قلوبهم من القرآن، وتبلى كما تبلى ثيابهم | ٢٨١١ |
| الشطر النصف وهي بلغة تغلب ولكنّه فولٌ وجهك تلقاء المسجد الحرام | ١٤٦٣ |
| كنت آتي ابن عبّاس وقريش حوله فيأخذ بيدي فيجلسني معه | ٣٠٣ |
| **أبو العباس الكندي** | |
| أهديت إلى صديقٍ لي من العُبَّاد سكراً فكتب إليَّ يا أخي | ١٠٥٤ |
| **أبو العباس الخليفة** | |
| يا أبا مسلم، هذا أبو جعفر | ٢٣٣٤ |
| **أبو العبّاس المبرّد (محمد بن يزيد)** | |
| أنشد: أروح لتسلم عليك واغتدي | ٣٣١٩ |
| أنشد لإبراهيم بن هرمة: قد يدرك الشرفُ الفتى ورداؤه خَلِقِ | ٣١٨٣ |
| أنشد لبعض الأعراب: كدحت بأظفاري وأعملت معولي | ٣٣٢١ |
| أنشد لبعض الشعراء: لن يدرك المجدَ أقوام ذوو كرم | ٨١٨، ٣٢٤١، ٣٣٣٣ |
| أنشد لشاعر: حوائج الناس كلُّها قضيت | ٣٣١٧ |
| أنشد للصلتان: نروح ونغدو لحاجاتنا | ٣٣١١ |
| أنشد للنابغة: حسب الخليلين أنّ الأرض بينهما | ٧٧٤ |
| قيل لأعرابية مات ابنها: ما أحسنَ عزاك | ٣٤٧٥ |
| هذان بيتان قديمان لا يعرف قائلهما، ويروى أنّ أبا بكر الصديق رضي الله | |

عنه ورحمه كان ينشدهما ٣٠٨٥
هلك أخ لبعض الأعراب، فأظهر له الشماتةَ بعض بني عَمِّه، فأنشأ الأعرابي يقول:
ولقد أقولُ لذي الشماتة إذ رأى فجعي ٣١٣٢
ومن عجيب ما قيل قول النابغة في حصن بن حذيفة إكباراً لشأنه:
يقولون حصن ثم تأبى نفوسهم ٣١٣١

**أبو عبد الرحمن الزاهد (رفيق بشر بن الحارث)**

رأى صاحبٌ لنا رَبَّ العزّة عَزّ وجل في النوم قبل موت بشر بن الحارث ٤٤٨

**أبو عبد الرحمن السلمي**

ما رأيت قرشياً قطُّ أقرأ من علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه صلّى بنا الفجر ١٠٧٨

**أبو عبداللّه البراثي**

بالمعرفة هانت على العاملين العبادة والرضا عن اللّه ٣٤٤٠
كان يتمثل بهذين البيتين: تيقَّن فإنّ الرزق غادٍ ورائح ٢٩٣٨
من زهد على حقيقة كانت مؤنته في الدنيا خفيفة ٢٣٩٦
يا أخي إنّ العبادة لا تكون بالشركة إنّه من لم ١٧٨٢

**أبو عبداللّه البصري**

أنشد لمعبد بن طوق العنبري: يلقى الفتى حذر المنية هارباً ٤٢٣

**أبو عبداللّه السلال**

يا أبا عبداللّه الحديث الذي روي أن اللّه تبارك وتعالى يبغض أهل البيت اللحميين ١١٧٤

**أبو عبداللّه الصوفي**

تكلّم بعض الزهّاد يوماً، فقال: لا تغتروا بطول السلامة ١٤٩٢
قال عيسى ابن مريم: طالب الدنيا مثل شارب ماء البحر كُلَّما ازداد شرباً ازداد عطشاً ١٤١٨

**أبو عبداللّه القلانسي**

سمعت إبراهيم بن أدهم يتمثل بأبيات من الشعر:رأيت الذنوب تميت القلوب ١٧٧

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو عبس عن أبيه عن جدّه** | |
| سمعت قريش صائحاً يصيح على أبي قبيس | ١٢٦٦ |
| **أبو عبيدة** | |
| إنّ رجلين خرجا في سفرٍ فوقع عليهما اللصوص فقاتل أحدهما حتى | ٩٣٨ |
| إن وفود العرب اجتمعت عند النعمان بن المنذر | ٢٠٢٦ |
| أنشد لبعض الشعراء: وليس الرزق عن طلب حثيث | ٨٠٧، ٣٣٣٥ |
| أي يظلم بصره (تفسير قوله تعالى: ﴿ومن يعشُ عن ذكر الرحمن﴾) | ٩٣٢ |
| بذى رجل على آخر من العرب فتغافل عنه فقال: إني أسكت كالغافل | |
| الذي لم يسمع | ١٠٣٥ |
| تظلم عينه كأن عليها غشاوة | ٩٣٢ت |
| ستة لا يخلونّ من الكآبة: رجل افتقر بعد غنى | ٦٦١ |
| السد: الحبل، وجمعها أسداء (تفسير قوله تعالى: ﴿وجعلنا من بين | |
| أيديهم سَدّاً...﴾) | ٩٣١ |
| طيّبها لهم، قال: والعرب تقول | ١٣٦٣ |
| الفرس لا طحال له، والبعير لا مرارة له، والظليم لا مُخّ له | ١٣٥١ |
| قال أكثم بن صيفي: الشر بدؤه صغار فاصفح عنه لكي لا يخرجك | |
| إلى أكبر منه | ١٠٣٥ |
| قال بعض الحكماء: لولا أنّ في قولي أنّي لا أعلم | ١٨٣٣ |
| قيل لأعرابي: كيف بِرُّك بأمّك؟ قال: لم أضربْها قطُّ | ٣٢٢١ |
| قيل لأعرابي: كيف لك ولدك وكان عاقاً، فقال: عذاب | ١٠٩٥ |
| قيل لشيخ: كم بقي منك؟ يسبقني مَنْ بين يديّ ويدركني مَنْ خلفي | ١٢٧٩ |
| القمح الذي يرفع رأسه ويضع بصره (تفسير قوله تعالى: ﴿فهم مقمحون﴾) | ٩٣١ |
| كان في بني إسرائيل رجل له ملك عظيم، فقال: ما أعلم أحداً | ١٦٤٦، ١٢٧٢ |
| كان لعبدالله بن جدعان جفنة يطعم الناسَ فيها في الجاهلية، كان يأكلُ | |
| منها الراكب | ٣٠٠٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| لما رأت امرأة ما يصنع عيسى ابن مريم عليه السلام | ١١٩٦ت |
| ما اجتمعت العرب اجتماعها على السؤدد والإفْضَال في | ١٧١٦ |
| وإنما سميت هنيد بنت صعصعة عمة الفرزدق ذات الخمار لأنها | ٢٠٢٦/م |
| **أبو عبيدة بن الجرّاح** | |
| إنّي موصيكم بوصية إن قبلتموها لن تزالوا بخير: أقيموا الصلاة | ٣١٤٣ |
| **أبو عبيدة بن عبدالله** | |
| إنّ الإمامَ العادل ليسكت الأصوات عن | ٢٣٢٨ |
| **أبو عبيدة الخزّاز** | |
| أنشد لبعضهم: الخال يقبَحُ بالفتى في خَدِّه | ٣٢٨٣ |
| **أبو العتاهية** | |
| ألا إنّ خير الذخر خير تُنيله | ٣٢٥٢ |
| إذا أنا لم أشكر على الخير أهله | ٣٢٧٨ |
| أما واللّه إن الظلم لؤمٌ | ٢٢٣٢ |
| عيب ابن آدم ما علمت كثير | ٣٢٥٣ |
| ما أنا إلاّ لمن بغاني | ٣١٨٥ |
| **أبو عثمان الأسود** | |
| حججت فلقيت عبد العزيز بن أبي رواد | ١٩٤٩ |
| **أبو عثمان النهدي** | |
| أتت علي ثلاثون ومئة سنة، وما مني شيء إلا وقد أنكرته خلا أملي | ١٩٩٤ |
| كُنّا في الجاهلية نعبدُ حجراً فسمعنا منادياً ينادي إنّ ربكم قد هلك | |
| فالتمسوا رَبّاً غيرَه | ١٠٠٩ |
| نعم ما جزاك على الذنب | ١٣٢٨ |
| لا أسكن بلداً قتل فيه ابن بنت رسول اللّه صلى الله عليه وسلم | ١٩٩٤ |
| **أبو علي الهروي** | |
| شارط إبراهيم بن أدهم رجلاً على شيء يعمله في الكرم | ١٩٥٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو عمران الجَوْنيّ (عبد الملك بن حبيب البصري)** | |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام: يا موسى اذكرني | ٢٢٢٤ |
| بلغنا أنّ الملائكة تلقِ بكتبها في سماء الدنيا | ٣٥٣٥ |
| بلغنا والله أعلم أن دون العرش بحار من نار | ٢٦٥١ |
| قرأت في مناجاة داود عليه السلام: اللهم ما جزاء من بكى من خشيتك | ٢٨٧ |
| قيوداً لا تنحل واللّه أبداً (تفسير قوله تعالى: ﴿إنّ لدينا أنكالاً وجحيماً﴾) | ١٠٤ |
| كتب عمر بن الخطاب رضي الله عنه إلى أبي موسى الأشعري إنه لم يزل | ٤٣١ |
| لو أن للمرء عمل سبعين نبياً إلى عمله | ٢٥٩٨ |
| مَرَّ سليمان بن داود صلى اللّه عليه وسلم والطير تظلّه والجنّ والإنس | ٢٠٧٤ |
| **أبو عمران التَّمَّار** | |
| رأيت عجباً اليوم... جئت قبل الفجر وأنت تدعو وقوم يؤمّنون على دعائك | ٣٩٦ |
| غدوت يوماً قبل الفجر إلى مجلس الحسن الجعدي | ٣٩٦ |
| **أبو عمرو بن العلاء** | |
| أصيب في خزائن بزرجمهر الحكيم مخدة من أدم | ٩٣ |
| إنّ المستوغر بن ربيعة بن كعب بن سعد مرّ بعكاظ | ٦٩٧ |
| أنت معافى وأنا مبتلى، فالعافية لا تدعك تسهر | ٨٧٤ |
| أنشد لعامر بن الطفيل - وهو من جيِّد شعره: | |
| وإني وإنْ كنت ابن سيِّد عامرٍ وفارسها المشهور | ٩٨٩ |
| أول شعر قيل في ذَمِّ الدنيا قول يزيد بن خذّاق من عبد القيس | ٥٩٠ |
| سمعتُ رجلاً من حكماء العرب يقول: لا أتزوّج امرأة حتى أنظرَ | ٣٢٨٠ |
| عاش المستوغر بن ربيعة ثلاث مئة وعشرين سنة | ٦٩٧ |
| فلأيِّ شيءٍ تشتم الناسَ؟ | ٦٩٦ |
| قال أكثم بن صيفي: المزاح يذهب المهابة | ٨٩٣ |
| قيل لبزرجمهر الحكيم: هل من أحدٍ ليس فيه عيب، قال: لا، إنَّ الذي لا عيبَ فيه | ٦٦٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| كان رجل من العربِ في الجاهلية إذا رأى رجلاً يظلم، قال: إنّ هذا | |
| لا يموت | ٦١٨، ٢٠٦٣ |
| كان يقال: أشعر الناس الزرق العيون في أصول ،فضاء يعني بني | |
| قيس بن ثعلبة | ٣١٠٧ |
| **أبو عمرو الشيباني** | |
| لقي عالم من العلماء راهباً من الرهبان | ٤٣٢ت |
| **أبو عوانة** | |
| رأيت محمد بن سيرين دخل السوق فكبّر النّاس | ٢١٥٧ |
| **أبو عياض القاضي** | |
| صخرة في النار إذا وضع عليها يده ذابت | ١٨ |
| ويحك، البارحة تنوّرت، اذهبي ليس عليه شيء | ٣٢١٥ |
| **أبو الغادية الشامي** | |
| قدم عمر بن الخطاب رضي الله عنه الجابية على جمل أورق تلوح | |
| صلعته بالشمس | ٩٨٦ |
| **أبو الغسّان الدُّفير بن ثابت** | |
| قال لي هشام بن عروة: تشرب النبيذ؟... قلت: نعم، أي واللّه | ١١٠٣ |
| **أبو الغصن الأعرابي** | |
| خرجت حاجاً فلمّا مررْتُ بقباء تداعى أهلها، وقالوا: الصقـ صقيل | ٣٢٨٤ |
| **أبو فلان الأعرابي** | |
| قومي يا فاعلة إنّ رجلاً يبيع جنّةً عرضها السماوات والأ ض بمقياس فتر | ٥٦٤ |
| **أبو قبيل** | |
| أسرت ببلاد الروم فأصبت على ركن | ١/١٣٧٩ ت |
| **أبو قحذم** | |
| قال أكثم بن صيفي: أملك الناس لنفسه من كتم سِرَّه من صديقه وخليله | |
| كيلا يتغيَّرَ الذي بينهما يوماً فيفشي سِرَّه | ٨٨٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| قال أكثم بن صيفي: السِّرُّ فيه ضرب العنق | ٨٨٨ |
| قال أكثم بن صيفي: سرُّك من دمك، فربُّما أفشيتَه فيكون فيه سببُ حتفِك | ٨٨٨ |
| لـمّـا كان زمن زياد أو ابن زياد أُصيبَ في بعض بيوت آل كسرى | ٩٢ |
| ليست خُلَّةٌ من خلال الخير يكون فيها الرجل أحرى أن يكون جامعه فيه | ٨٨١ |
| وقف عبد الملك بن مروان على قبر معاوية فتمثل | ٧٧٣ |
| **أبو قدامة (شيخ لليث بن سعد)** | |
| لا تُحَقِّروا حملةَ العلم، فإنّ اللّه عَزَّ وجلَّ لم يحقِّرْهم حيث وضع علمه | ٣٠١ |
| **أبو قلابة** | |
| أرجو أن يكون ذلك خيرةً... ما ستر اللّه عليك | ٥١٨ |
| أنشد لبعض الشعراء: وإنْ يكن ما به أُصِبْتُ جليلاً | ٧٩١، ٣٢٠٣ |
| كان رجل يقول: اللهمَّ صلِّ على ملك الشمس فيكثر ذلك | ٨٧ |
| ما وجدت مثل القاضي العالم إلاّ مثل رجل وقع في بحر | ١٨٦٧ |
| مكتوبٌ في التوراة: ابنَ آدم انظرْ ما نحلْتَ | ٢٥٧ |
| **أبو قيس الأودي** | |
| وقيل لملك الموت صلى اللّه عليه وسلّم: كيف تقبض الأرواح؟ قال: أدعوها فتجيبني | ٧٠٤ |
| **أبو كعب القاضي** | |
| كان اسم الذئب الذي أكل يوسف كذا وكذا، فقالوا له: فإنَّ يوسفَ لم يأكله الذئب | ٣٢٥٧ |
| **أبو مالك** | |
| إنّ الصخرة التي تحت الأرض السابعة على أرجائها أربعة من الملائكة | ٢١ |
| **أبو محجن الثقفي** | |
| كفى جرماً أن تطعنَ الخيلَ | ١٠١٤ |
| وأنا واللّه لا أشربها أبداً | ١٠١٤ |
| لا تسأل القوم ما مالي وما حسبي وسائل القوم ما حزمي وما خلقي | ٦٠٢ |

**أبو محذورة**

كان لا يُؤَذِّن لرسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم إلاّ في الفجر، وكان لا يؤذن حتّى يطلع الفجر ٩٤٧

**أبو محرز الطفاوي**

لما بَان للأكياس أعلا الدّارين منزلة طلبوا العلو ١١٥٣

**أبو محمد بن إسماعيل الضرّاب**

لا ينال الحريص شيئاً يكتفيه ولكن ١٤٠٨

**أبو محمد بن عمرو الثقفي**

إذا غسلتموه فآذنوني ٣٠٨٨

إنّا للّه وإنا إليه راجعون، وقرأ: ﴿الذين إذا إصابتهم مصيبة﴾ ٣٠٨٨

حسبي حياة اللّه عن كُلِّ مَيِّت ٣٠٨٨

كتب إليّ أمير المؤمنين يُعَزِّيني عن محمد بن يوسف ويذكر رضاه عنه ويأمرني بالصبر ٣٠٨٨

**أبو مسعود القتات**

قال بعض حكماء العرب: أحمدُ البلاغات الصمت حيث لا يحسن ١٩١١

**أبومسلم**

كان ستة رجال يحملون عنقوداً من العنب (تفسير قوله تعالى: ﴿ادخلوا الأرض المقدّسة﴾) ٢٧٧٢

**أبو مسلم الخراساني**

يا أمير المؤمنين! هذا موضع لا يؤدّى ٢٣٣٤

**أبومسلم بن كعب**

إنّ أهل النار ليأكلون أيديهم إلى المناكب من ١٥٤٢

**أبو مسلم الخولاني**

أربع لا يقبلن في أربع، السرقة والخيانة والغلول ومال ١٤٩٠

**أبو مسهر**

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| هبك عَمَّرْتَ مثل ما عاش نوح | ٣٠٣٨ |
| **أبو معاذ** | |
| بلغني أنّ أوّل ما عرف من حكمة لقمان الحكيم أنّه لمّا سُبِيَ خرج من السفينة | ٢٢٨ |
| **أبو معاوية الأسود** | |
| أستغفر اللّه من ذنب سلّطك به عليَّ | ٩٧ |
| إن لكل شيء باباً، وباب العبادة الحزن، وأن المحزون | ١٢٣٥ |
| إن لكل شيء نتاجاً | ١٢٣٥ت |
| رأيت سفيان الثوري في النوم وهو في بستان وهو يقول: | ٢٦٣٧ |
| القلب المعني بأمر الله في علو من الله | ١٢٣٥ت |
| كان إذا قام من الليل يسقي الماء | ٩٧ت |
| ما ضرّهم ما أصابهم في الدنيا جبر اللّه لهم بالجنّة | ٩٧ |
| **أبو المعتصم الأنطاكي** | |
| أنشد لبعض الشعراء: أقبلن في وقت الضُّحى بها | ٣٢٨٧ |
| **أبو موسى الأشعري** | |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى حين أهبط آدم صلى اللّه عليه وسلم من الجنّة إلى الأرض عَلَّمه صنعة كلّ شيءٍ | ٢٨٠٨ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى يبعث يوم القيامة ملكاً إلى | ٢٥٢٣ |
| أي بني، اذكروا صاحب الرّغيف... كان رجلٌ في صومعة له يتعبَّد | |
| أراه ذَكَرَ | ٢٢١٦ |
| ليس أحد أصبر على أذى يسمعه من الله عز وجل | ٢٦٣٦ |
| **أبو ميسرة** | |
| أُتِيَ رجلٌ في قبره، فقيل له: إنّا ضاربوك مئة ضربة | ٩٣٤ |
| اذكروا اللّه عَزَّ وجلَّ في كُلِّ مكان طيّب | ٢٦٢٤ |
| غمضت جعفراً المعلم، وكان رجلاً عابداً | ٢٦٢٤ت |
| مات رجل فأتي في قبره، فقيل له: أنا جالدوك مئة | ٢٦١٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو نصر الجهني** | |
| إطعام الطعام وإفشاء السلام وتوقّي الأدناس | ٩٧٥ |
| اعتذر رجلٌ إلى جعفر بن يحيى، فقال له: قد أغناك | ١٠٩٧ |
| أنشد لبعض أشراف أهل البصرة: ولا أقول نعم | ٥٢٧ |
| أيّها الرجل إنّه ليس بين اللّه عزّ وَجَلَّ وبين أمّةِ نبيّه صلى اللّه عليه وسلّم | |
| ورعيتك | ٩٧٥ |
| جهد المقلّ (السَّخاء) | ٩٧٥ |
| حضر أعرابي يشهد عند بعض القضاة لرجل | ٢٧٠٤ |
| حمل ما ناب العشيرة أدناها وأقصاها والقبول من محسنها (الشرف) | ٩٧٥ |
| ذكر أعرابي أميراً، فقال: كان إذا وليَ لم يطابق بين جفونه | ٢٢٠٣ |
| قد صادف منّا حاجة | ٩٧٥ |
| كان عمران الخوّاص إذا مرَّ على الجسر، فيقول: سَلِّم سَلِّم ويظنُّ أنّه | ١٥٩٣ |
| مَرَّ رجل في بادية بني عذرة فإذا فتاة كأحسن ما يكون فنظر إليها | ٣٢٨٥ |
| هذا واللّه غير مغنٍ عنك، فانظر لنفسك فإنّكَ وعمر تسألان | ٩٧٥ |
| وهل أنا إلاّ رجل من أَهْلَ الصُّفَّةِ، ادفعوها إلى فلان | ٩٧٥ |
| **أبو نعيم** | |
| لما اعتلّ داود الطائي قيل له: ألا ندعوا لك الطبيب | ٥١ |
| كان داود الطائي يشرب الفتيت ولا يأكل الخبز | ٥٤ |
| **أبو نعيم الفضل بن دكين** | |
| بلغني عن داود الطائي أنّه ما تكلّم في شيءٍ عشرين سنة إلاّ كلمتين | ٢٥٥ |
| مَرَّ أبو الدِّيك، وكان معتوهاً على معلم كتاب في جبانة كندة | ٩٨٠ |
| **أبو نوّاس** | |
| أضمر في القلب عتاباً له | ٣٠٠٧ |
| أوجده اللّه فما مثله لطالب ذاك ولا ناشد | ٣٤٤٦ |
| يا أبا محمد! الملكان يعلمان الغيب؟ | ٢٨ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو الهذيل** | |
| إذا أُدني الإناء إلى فيه ففتح فاه سقط لحم | ١٤١٧ |
| **أبو هريرة** | |
| احتجت الجنة والنار، فقالت النار: يدخلني الجبارون | |
| والمتكبرون | ٢٣٤٠/م |
| إذا أراد أحدكم السلام فليقل: السلام عليكم فإنّ اللّهَ | ٢٧٨١ |
| إن الله تعالى يقول: يا أيها الناس إني جعلت نسباً | ١٦١٦ت |
| أنّه أقام على أُمّه ولم يحجّ حتّى ماتت | ٣١١٩ |
| أَلَحّ رجل في الدّعاء: يا أرحم الرّاحمين نودي أن | ٣١٠١ |
| اللّه أطعمك فَتِمَّ صومك ... اللّه سقاك | ٣١٩ |
| أنّ عمرو بن أقيش كان له رباً في الجاهلية فكان | ٢٤٢٤ |
| بينما يحيى بن زكريا وعيسى ابن مريم في البرية | ١٩٩٥ت |
| سَجَد أبو بكر وعمر رضي اللّه عنهما في ﴿اقرأ باسم ربّك الذي خلق﴾ | |
| و﴿وإذا السماء انشقّت﴾ | ٣١٦٢ |
| جئت أقاتِلُ معك ... | ٢٨٣ |
| فلقد رأيتنا يكثر مراؤنا ولَغَطُنا | ٦١١ت |
| القلب ملك البدن، وللملك جنود فرجلاه بريداه، ويداه جناحاه | ٥٧٠ |
| ما أنت بواجدٍ شيئاً أضيع لك من تركه | ١٦٩٤ |
| ما من قوم يجتمعون في بيت من بيوت اللّه | ٢٣٤٤ |
| من روى عن أمتي أربعين حديثاً | ٣٠٧٠ت |
| يا ابن أخي أنت لم تتعوّد الصيام | ٣١٩ |
| يا غلام، اكتب تبنون ما لا تسكنون وتجمعون ما لا | ٨٠٨ |
| يقتصُّ اللّه عزّ وَجَلَّ يوم القيامة لبعضهم من بعض حتّى الجلحاء من | |
| القرناء | ٣١٠٢ |
| **أبو الهيثم الحدّاد** | |
| ضربت ثمانية عشر ألف سوط بالتفاريق | ٧٥٥ت |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **أبو وائل شقيق بن سلمة** | |
| استعملني زياد على بيت المال فأتاني رجل بصك أعطي صاحب المطبخ ثمان مئة درهم....مكانك | ٩٣٥ |
| إنّ عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه استعمل عبد اللّه بن مسعود رحمه اللّه على القضاء وبيت المال | ٩٣٥ |
| بعث إليّ الحجّاج فأتيت ... ما بعث إليّ الأمير | ٢٧٣٠ |
| التقرّب بالأعمال (تفسير قوله تعالى: ﴿واتقوا اللّه وابتغوا إليه الوسيلة﴾) | ١٣٣٢ |
| كان له خص يكون فيه هو وفرسه فإذا غزا نقضه | ١١٨٣ |
| **أبو الوليد الطيالسي** | |
| ما جاءني أحدٌ من بغداد يطلبُ هذا الأمر للّه يعني الحديث إلاّ رجل واحد وهو بشر بن الحارث | ٨١١ |
| **أبو وهب العقيلي** | |
| انطلقنا حجاجاً ليالي خرج يزيد بن المهلب | ٢٦٢١ت |
| **أبو اليقظان** | |
| اختلف في قتل علي بالكوفة وصلّى عليه الحسن بن علي ودفن عند مسجد الجامع | ٢٦٥ |
| لم يكن عثمان (يعني ابن عفان) بالطويل ولا بالقصير، وكان حسن الوجه رقيق البشرة | ٢٣٩ |
| **أبو يوسف القاضي** | |
| جزاك اللّه خيراً، ما أحبَّ إليَّ أن يجلسَ إليّ عاقل مثلك | ٣٠٤ |
| ما أنكرت من زمانك فإنّما أفسده عليك عملك | ٣٥١٠ |
| **الأعلام من النساء** | |
| **أسماء بنت أبي بكر** | |
| رأيتك أفسدت عليه دنياه وأفسد عليك آخرتك | ٣٣١٦ |
| وقد بلغني أنّك كنت تعيّره بابن ذات النطاقين، وقد واللّه كنت ذات | |

النطاقين ٣٣١٦

**حبّى المدنيّة**[1]

**الخنساء**

كنت أبكي صخراً من الحياة فأنا اليوم أبكي له من النّار ٦٩٠

من طول البكاء على سادات مضر ... فذاك واللّه أطول لعويلي عليهم ٦٩٠

**رابعة العدوية العابدة**

أنا واللّه لم أسأل الدنيا قطّ من يملكها فكيف آخذها ممّن لا يملكها ٤٤٩

شغلوا قلوبهم عن اللّه بحبّ الدنيا، ولو تركوها لجالت في الملكوت ١٤٥٣

واللّه إنّي لا أستحق أنّ أسأل الدنيا من يملك الدنيا، فكيف أسألها ١٥٦١

**زينب بنت الزبير**

إن الحرة لا تضاجع زوجها بملء بطنها ٢٢٨٤

**سلامة بنت الحر**

إن من أشراط الساعة أن يتدافع ١١٠٦ت

**صفية بنت عبد المطلب**

ألا يا رسول اللّه كنت رجاءنا ٧٥٨، ٣٢٣٣

هذان ثوبان جئت بهما لأخي حمزة قد بلغني قتله ٢٧٩٦

**عاتكة بنت زيد بنت عمرو (زوجة الزبير)**

قد علمت حبسي نفسي بعد أبيك فإن كان لي عندك شيء ٢٠٩٢

**عاتكة بنت عبد الملك المخزومية**

يا أمير المؤمنين احمل عني كَلَّكَ أو أعنّي على حمله ٢٨٩٩

**عائشة بنت طلحة بن عبيد اللّه**

رأت أباها طلحة بن عبيد الله في المنام ١٢٥٥

**عائشة أم المؤمنين رضي اللّه عنها**

خلال المكارم عشرة، تكون في الرجل ولا تكون في أبيه، وتكون في العبد ١٨٧٣، ٣٣٦٥

رأيت قائد الفيل وسائسه بمكة أعميين ١٢٥٤

(١) انظر آثارها صفحة رقم ١١٥.

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| رحم اللّه لبيداً حيث قال: | ٣٤٥٣ |
| رحمك اللّه يا أبة، لقد قمت بالدين حين وهى شعبه | ٢٤٢٢ |
| قلت لأبي إني أراك تطيل النظر إلى وجه علي بن أبي طالب | ٣٥٠٣ |
| كان أبيض نحيفاً خفيف العارضين أجنأ | ١٦٣ |
| كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم عمال أنفسهم | ٧٥٤ت |
| كان الناس أهل عمل ولم يكن لهم كفاة | ٧٥٤ت |
| كنت أغتسل أنا ورسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم من تور | ٣٤٨٤ |
| لما أرادوا غسل النبي صلى اللّه عليه وسلم قالوا: واللّه ما ندري | ١٦٠ |
| لو استقبلت من أمري ما استدبرت ما غسله إلاّ نساءه | ١٦٠ |
| ما حاضت امرأة بعد خمسين سنة | ١١٣٤ |
| ما شرب أبو بكر رضي اللّه عنه خمراً في الجاهلية ولا في الإسلام | ١٥٢ |
| ما لكم لا آب غائبكم، ولا زالت نساؤكم في رنة | ٣٠٨٣ |
| هذا كما قال الشاعر: إذا حشرجت يوماً | ١٣٧٥، ١٣٧٦ |
| والله ما قال أبو بكر بيت شعر في جاهلية ولا في إسلام | ٢٨٥١ت |
| يا بني لا تطلبن ما عند اللّه من غير اللّه | ١٨١٢، ٢٤١٣ |
| **عفيرة العابدة** | |
| كيف يسأم ذو داء يرجو أن يكون له من داءه شفاء | ٧٣٢ |
| **مرجانة** | |
| رأيت علياً رضي الله عنه يلتقط حب الرمان يأكله | ٦٣٥ت |
| **هند بنت أسماء** | |
| قل له: كنا فماحمدنا، وبنّا فما ندمنا وهذه | ٢٣٣١ |
| **هند بنت عتبة** | |
| ثكلته إن كان لا يسود الاّ قومه | ٢٣١١ |
| **أخت بلال بن مرداس بن أدية** | |
| رأيت بلال في النوم كلباً تذرف عيناه | ٢٧٢ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **امرأة هشام الدستوائي** | |
| إن هذا السراج يَضُرُّ بنا إلى الصبح | ٣٥٥ |
| **جويريّة المتعبّدة** | |
| يا رَبّ كم من شهوة قد ذهبت لذّتها وبقيت تبعتها | ١٥١٥، ٣١٣٨ |
| **● الكنى من النساء ●** | |
| **أم البنين** | |
| أُفٌّ للبخل، لوكان ثوباً ما لبسته، لو | ٢٤٥٣ |
| **أم الدرداء** | |
| أفضل العلم المعرفة | ٢٢١، ١٨٧٨، ٣٤٣٩ |
| **أم طلق** | |
| دخلت على أبي ذر فرأيته شعثاً شاحباً | ٢٨٥٩ |
| **أمّ كلثوم بنت عقبة (كانت من المهاجرات الأُول)** | |
| غُشِيَ على عبد الرحمن بن عوف غشيةً ظَنُّوا أن نفسه قد خرجت | ٣٧٨ |
| **● المبهمون ●** | |
| **أعرابي** | |
| أحسن اللّه جزاءك فقد أعنتني على دهري، وأتعب معروفك شكري | ٢٦٨٩ |
| إذا أردت أن تعرف الرجل فانظر كيف تحننه إلى أوطانه | ٣٣٢ |
| اشتهي ضرساً طحوناً ومعدة هضوماً | ٣١٢٨ |
| أصلح اللّه الأمير، لم أصن وجهي عن مسألتك | ٢٣٢٧ |
| أصلح اللّه الأمير، تأمر لي بملء جرابي دقيقاً | ٢٣٢٧ |
| أكل المسلمين له مثل هذا؟ | ٦١٤ |
| أكلي الحار وشربي القار | ٢٣٤٦/م |
| اللهم أعنّي على الموت وكربته وعلى القبر وغمته | ٣٤٥٠ |
| الله إني أعوذ بك من الفقر إلا إليك، ومن الذل إلاّ إليك | ١٦٦٣، ٣٢١٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| اللهم إني قد وهبت له ما قصر فيه من بري | ٢٣٣٢ |
| اللهم ضيف وحق الضيف ما قد علمت | ٣٢٦٢ |
| إن عظماً فيه السمع والبصر لحري أن يُكَنَّ من الحر والقر | ٣٣٤٣ |
| إن للموت تقحماً على الشيب كتقحم | ١٦١٩ |
| أن يعتزل الرجل في المكان الذي لا يراه أحد إلاّ اللّه | ١٤٥٧ |
| أهو موسر من عقل ودين ... فزوجوه | ٣٢٨٢ |
| أولا أدلك على من هو أزهد مني؟ ...أنت | ١١٢٥ |
| إياك وصدر المجلس فإنه مجلس قلعة | ٢١٤٥ |
| أيها الناس إن الدنيا دار بلاغ والآخرة دار قرار | ١٠٣٤، ٢٥٣٨ |
| بكل ما استخرج اللّه به حق صاحبي | ٢٧٠٤ |
| تركت الحسد فبقيت | ٦٦٠ |
| ذاك واللّه الكامل | ٢١٠٦ |
| سأتخطىّ ذنبك إلى عذرك، وإن كنت من أحدهما على يقين | ٢٧١٢ |
| على طعامكم هذا حمى | ٣١٢٧ |
| فوت الحاجة خير من طلبها من غير أهلها | ١٣٨٥ت |
| قلة الفكر، وطول الدعة، والنوم على الكظة | ٢٣٤٧ |
| كان أحلم من فرخ طائر | ٨٠٢، ٣٣٢٦ |
| كان إذا ولي لم يطابق بين جفونه، وأرسل العيون على عيونه | ٢٢٠٣ |
| لقد جعت حتّى أكلت النوى المحرق | ١٣٨٦ |
| لو صور العقل لأظلمت معه الشمس، ولو صور الحمق | ١٨١٨ |
| لو كان هذا هكذا، لكان رأس الأمير مثل رأس البغل | ٣٢٦٠ |
| ما أدري أي الصبرين أشد، صبر على | ١٧١٠ |
| ما تاه عليٌّ أحد | ١٥٨٣، ٢١٢٢ |
| ما ترك حب الغداء والعشاء لنا حزناً | ١٩٠٨ |
| ما غبنت قط حتى يغبن قومي | ١٤٠٧ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| من اتخذ الصبر جنة وقاه الله عز وجل عظيمات الزلل | ١٧١٣ |
| والله ما عندي نقد، وإني لأكره أن يكون علي دين | ١٦٤١ |
| واللّه ما نالوا بأطراف أناملهم شيئاً إلاّ وقد وطئناه | ٢١١٩ |
| وقاك الله خشية الفقر وطول الأمل | ٢٣٤٢ |
| لا تغتروا بطول السلامة مع تضييع الشكر واستدعوا شارد النعم | ١٤٩٢ |
| يا أمير المؤمنين أتت على الناس سنون أما الأولى | ٦١٤ |
| يا أمير المؤمنين إني مكلمك بكلام فاحتمله | ٦١٣ |
| **بعض الحكماء** | |
| أبين الناس فضلاً من سبقك إلى حاجتك قبل السؤال | ٢٦٤٣ |
| اتقوا الله حق تقاته وإياكم والغرة بتواتر النعم | ٢٧١٨ |
| اجعل الله همتك، واجعل الحزن على قدر ذنبك | ١٧٧١، ٣٢٢٨ |
| اجهل من كنت تعرفه، ولا تتعرف إلى من لا تعرف | ٢٨٥٠ |
| أحسن الدنيا أقبحها عند من ينصرها | ٣٤٣٢ |
| إذا استكمل العبد العمل والعقل في القلب | ١٦٢٦، ٢/٣٠٣٨ |
| إذا زال معها حسن التجمل | ٢/٣٠٧٦ |
| إذا غرست من المعروف غرساً، فأحسن تربية غرسك | ٢٦٤٢ |
| إذا قصرت يدك عن المكافأة فليطل لسانك بالشكر | ٧٠٩ |
| إذا كثر أدب الرجل ونقص عقله | ١١٣٢ |
| إذا لم تنظر عينه في النوائب والنوازل إلا إليه | ١٦٣٢ |
| اذكر أني مسافر | ١١٥٨ |
| ارغب إلى من شئت فإنك أسيره، واستغن عمن شئت | ٢٦٤٠ |
| أشد الأعمال ثلاث: إنصاف الناس من نفسك | ١٦٠٤ |
| أشكر الناس لله عز وجل أشكرهم لعباده | ٣١٠٨ |
| اصحب الناس بثلاثة: بالحذر ورفض الدالة والاجتهاد في النصيحة | ١٨٥٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إصلاح المعيشة الاجتهاد، وأعونهاعلى الأمر ترك الذنوب | ٢٧٤٨ |
| أعظم الناس خطيئة يوم القيامة عند الله المثلث | ١٦٩٠ |
| إعلم أن أجور العاملين على من عملوا له، فاعمل لمن شئت | ٢٦٦٨ |
| اعلموا أن العاقل يعترف بذنبه ويخش ذنب غيره | ٢٦٦٢ |
| أقل الاعتذار موجب للقبول، وكثرته ريبة | ٢٧٩١ |
| أفضل العقل معرفة الرجل نفسه وأفضل العلم وقوف الرجل عند علمه | ١٧٢٥ |
| أكرم الصفايا أشدها ولهاً إلى أولادها | ٢١٠٣ |
| إن لله عباداً يستقبلون المصائب بالبشر | ٢٦٧٩ |
| إن لكل شيء صدأ، وصدأ القلوب شبع البطون | ١٦٢٨ |
| إن من أعجب العجب، ترك التعجب من العجب | ١٥٠٤ |
| إن من سعادة المرء أن يضع معروفه عند من يشكره | ٢٨١٧ |
| إن الناس ليأكلون أماناتهم لقماً، وإن فلاناً | ٢٣٣٦ |
| إنصاف من هو دونك، والسمو إلى من هو فوقك | ١٧٠٥، ٣٠٩٥ |
| إني أكره أن يكون قولي أكثر من فعلي | ٢٧١٦، ٢٧٩٣ |
| إياك أن تسيء إلى من تحب | ٩٢٢ |
| أيها الملك: إن أحق الناس بذم الدنيا وقلاها من بسط له فيها | ٢٥٥١ |
| الأحزان ثلاثة: خليل فارق خليلهُ أو والد ثكل ولده أو رجل | ١٦٥٥ |
| الإصابة بالظن ومعرفة ما كان بما لم يكن | ٦٦٠ |
| بذل الحيلةفي طلب الحلال وقلة الحوائج إلى الناس أفضل العبادة | ١٧٨٤ |
| بلغ من كرمه إنه كان لا يسأل أحداً عن عذره مخافة أن لا يكون له | ١٨٠٠ |
| البخيل خازن أعداءه، والحليم مرغوب في إخاءه | ٢٧٥٢ |
| البهتان على البريء أثقل من السموات السبع | ٤٧٨٥ |
| التسليط على المماليك من الدناءة | ٢٠٩٣ |
| التواضع مع البخل خير من السخاء مع الكبر | ١٦٢٨، ٢٥٥٧ |
| ثلاثة أشياء تميت القلب، مجالسة الأنذال | ١١١٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ثلاثة يحكم لهم بالمروءة حتى يتكلموا | ٨٢٧ |
| ثلاثة يخلقن العقل وفيهن دليل على الضعف | ١٨٥٣ |
| جل من استغنى عنك | ٢٦٤٦ |
| الجوع أعلم ... نعم الأدام الجوع ما لقيتُ ألذَّ من شيء قبله | ٦٤٨ |
| حب الغنى، وطول الأمل، وشدة الحرص ... (علامة الجهل) | ١٦٣٠ |
| خمسة أشياء ضائعة: سراج يوقد في الشمس | ٧١٣ |
| الدنيا وقتك الذي يرجع إليك فيه طرفك | ٢١٣١ |
| الرجال أربعة: جواد وبخيل ومسرف ومقتصد | ٢٧٨٤ |
| الركون إلى من لا تأمن غشه والمن مع الصدقة (علامة العمى) | ١٦٣٠ |
| سل الأرض فقل لها من شق أنهارك | ١٧٥٩ |
| شر الزاد إلى المعاد الذنب بعد الذنب | ٢٨٢٣ |
| الشكر ثلاثة منازل: لمن فوقك بالطاعة، ولنظيرك بالمكافئة | ١١٥٨ |
| صدرك أوسع لسرك، فإن سرك من دمك | ١٧٩٠ |
| الصدق عز والكذب خضوع | ٨٨٧ |
| الصديق بالصحة هو الذي يحضك النصح فيما سأل | ٩٩٢ |
| الضرورة والأمل أقدماني عليك | ٣٣٠٨ |
| طلب منازل الأخيار بأعمال الأشرار (كمال الحمق) | ١٦٣٠ |
| عادة السوء شر من المغرم، ومن عودته شيء | ٢٩٤٥ |
| عالم يجوز عليه حكم جاهل | ١٥٦٥ |
| عجبت ممن يحزن على نقصان ماله، ولا يحزن على فناء عمره | ١١٢٠ |
| فضل الأدب في غير الدين مهلكة | ٢٣٢٥ |
| قد تقطع الشجرة بالفؤوس فتثبت، ونقطع اللحم بالسيف فيندمل | ٦٧٤ |
| كل عدو أحب أن يعود لي صديقاً إلا من كان | ٢١٨٧ |
| كنت في بلاد الروم إذ سمعت صوتاً من الهواء | ١٥٤٥ |
| لولا أن في قولي أني لا أعلم شيئاً لأني أعلم | ١٨٣٣ |
| ليس غنىً أغنى من سكون القلب، وليس فقراً أفقر من اضطراب القلب | ١٧٦٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| ليس من الحيوان شيء يستطيع أن ينظر إلى أديم السماء غير الإنسان | ٢١٣٣ |
| ليس يرضيهم شيء إلا زوالها، وما أحب | ٢٩٣٤ |
| ما أعان على نظم شيء | ١٧٢٩ |
| معالجة الموجود خير من انتظار المفقود | ٢٨٩٧ |
| من أبطره الغنى أذله الفقر، ومن أمرحته العافية هدّه السقم | ١٦٦٢ |
| من أحبك نهاك، ومن أبغضك أغراك | ٢٣٨٩ |
| من أخطأته سهام المنايا، قيدته الليالي والسنون | ٢٦٧٠ |
| من استطال عليك بمسألته، وبخل عليك بما له | ٢٧٥١ |
| من التوقي ترك الإفراط في التوقي | ٢٢٠٧ |
| من حدث نفسه بطول البقاء فليوطن نفسه على المصائب | ٢٧٤٦ |
| من ذكر الله على حقيقة نسي في جنبه كل شيء | ٢٦٥٦ |
| من طاب ريحه زاد عقله | ٢٢٢٧، ٣٤١٤ |
| من كان صبره على حادثات الرزية كشكره على متداوم العطية | ١٧١١ |
| من لم يداو نفسه من سقم الأيام أيام حياته | ٢٩٣٣ |
| من لم ينشط لحديثك،فارفع عنه مؤنة الاستماع إليك | ١٥٠٢ |
| من نظر إلى امرأة ثم غض طرفه عنها | ٢٨٥٨ |
| من هوان الدنيا على الله عز وجل أن لا يعصى إلا فيها | ١٨٠٥ |
| الندم على السكوت خير من الندم على القول | ٨٨٢ |
| وعائب تعيب بفضل عيبه، ويبغضهم بحسب بغضه | ٢٢٤٧ |
| لا تسخر من شيء فيحر بك | ٨٩١ |
| لا تضع معروفك عند فاحش ولا أحمق ولا لئيم | ٢٨١٨ |
| لا تظهرن خوفك، فيجتريء عليك عدوك | ٢٧٩٤ |
| لا يغلبن جهل غيرك علمك بنفسك | ١٨٠٦ |
| لا تقل فيما لا تعلم فتتهم فيما تعلم | ١٧٥٧/م |
| يا بني احتفظ من النزق عند سورة الغضب | ١٦٩٨ |
| يا بني اغتنم مسالمة من لا بد لك، بعيداً أو حبيباً حتى تأمن من سعاية الساعي | ٢٧٨٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا بني إياك والتسويف، ولا تدفع الواجب بالباطل | ١٩٩٣ |
| يا بني إياك وصحبة المدبر فإنك إن صحبته | ٢٧١٥ |
| يا ذا القرنين كنا نفخر بالنظر إلى وجهك، فقد صرنا الساعة نتقزز من النظر | ٤٦٠ |
| يحسب الجاهل الشيء الذي هو لا شيء شيئاً، والشيء الذي هو شيء لا شيء | ٢٥٥٢ |
| **بعض حكماء العرب** | |
| ابن أخي إن الحلم هو الذل | ٣١٩٤ |
| أحمد البلاغات الصمت حيث لا يحسن الكلام | ١٩١١ |
| اطلبوا الرزق إلى الرحماء تعيشوا في أكنافهم | ٢٩٢٢ |
| إن مما تعجل عقوبته ولا تؤخر: الأمانة تخان والإحسان | ٢٦٧٧ |
| إنه ليس شيء أدعى إلى تغيير نعمة أو تعجيل نقمة | ٢٨٥٧ |
| إني امتحنت خصال الناس فوجدت أشرفها صدق اللسان | ٢٦٨٣ |
| إياك والمرأة الرائعة الجمال أن تزوجها، فإن عاقبة أمرها ندامة | ٢٢٥٠ |
| الصدق يزين صاحبه في كل موطن إلا في موطنين | ١٧١٩ |
| كل إناء يفرغ فيه يضيق ويمتليء إلا القلب | ١٦٩٦ |
| ما تاه علي أحد قط مرتين | ٢١٢٢ |
| مخادمة الإخوان وكفاف من عيش يسدخلتي | ٢٩٤٦ |
| والله يا أمير المؤمنين لقد زِنْتَ الخلافة وما زانتك | ١٨٣٦ |
| لا أتزوج امرأة حتى أنظر إلى ولدي منها | ٣٢٨٠ |
| لا يحتجب الوالي إلا عن ثلاث: عن عيٍّ | ٢٢٦٠ |
| ينبغي أن يكون للأمير ستة أشياء | ١٦٦٤ |
| **بعض حكماء الفرس** | |
| العبادة سلطان على كل شيء | ٢١٢٠ |
| **بعض الصوفيين** | |
| إذا باع الصياد شبكته فبأي شيء يصطاد | ١٨٥٦ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **بعض الزهاد** | |
| إن الله تبارك وتعالى أعطاك الدنيا بأسرها فاشتر نفسك ببعضها | ٦١٢ |
| إن للّه تبارك وتعالى عباداً لم توسخ الدنيا قلوبهم | ٢٨٣٥ |
| إن لي نفساً تحب الدعة، وقلباً يألف اللذات | ٩٠٩ت |
| رحم اللّه امريء كان ذا حسب فصان حسبه عن الكذب | ١٧٤٤ |
| ليس الزهد بترك الدنيا، ولكن الزهد التهاون بها وأخذ البلاغ منها | ٩٥٦/م |
| من لم يستح من طلب الحلال خفت مؤنته وقلت كبرياءه | ١٦٤٩ |
| يا ابن آدم عجباً لك كيف تقر عينيك أو يزايل الوجل | ٣٠٥٨ |
| يا ابن آدم ما أقل وفائك! أبلى مايكون حبيبك في قبره | ٧٤٥ |
| **حكماء الهند** | |
| ما أقل منفعة كثرة المعرفة مع سرف الطبيعة وغلبة الشهوة | ١٦٧٣ |
| لا ظفر مع بغي ولا صحة مع نهم | ١٥٣٦ |
| **الأحاديث القدسية** | |
| إذا أخذت من عبدي كريمتيه فصبر واحتسب | ١٧٨٠ |
| إذا هم عبدي بحسنة فاكتبوها واحدة | ٢٨ |
| إني قد سترتها عليك في الدنيا | ٤ |
| **ما أوحى الله عز وجل إلى أنبيائه عليهم السلام** | |
| آثر هواي على هواك | ١٧٥٢ |
| ابن آدم ما غرك بي ماذا عملت فيما علمت | ٨ |
| اتخذ الدنيا ظئراً والآخرة أُمّاً | ١٣٢٢ |
| اتخذ طاعتي تجارة يأتيك الربح من غير بضاعة | ٢٤٩٤ |
| أتدري لم اتخذتك خليلاً؟ ... لأني اطلعت على قلبك فوجدتك | ٢٧٥٤ |
| إذا وجهت إلى عبد من عبادي مصيبة في بدنه | ١٠١ |
| إذا استعملت عليكم خياركم فهو علامة رضاي | ٤٢٥ |
| اذهب فإن لك بكل سيئة حسنة | ٢٦٣ |
| أما زهدك في الدنيا فقد تعجلت الراحة | ٩٦٢، ٣٠٤٤ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| إن أردت أن تسكن غداً معي في حظيرة القدس فكن في الدنيا وحيداً | ١٢٠٢ |
| إن أغبط أوليائي عندي يوم القيامة مؤمن تقي خفي | ١٧٥٦ |
| إن الله تبارك وتعالى أسس الأرضين على ﴿قل هو الله أحد﴾ | ١٣ |
| إنا الله ذو بكة | ١٢٩٦ |
| أنتصر لمن أبغض ممن أبغض ثم أصير كلاً إلى النار | ٢٠٦١ |
| إني استقبلت بني إسرائيل بالكرامة، وهم كالغنم الضائعة | ١١١٩ |
| إني رزقت الأحمق ليعلم العاقل أن الرزق ليس باحتيال | ١٦٥٣ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من أنبيائه | ١٧١ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه وسلم | ١٥٥٠ |
| بر والديك فإن من بر والديه رضيت عنه | ١٦٨٧ |
| جزاءه أن حرم وجهه على النار وأئمنه من الفزع الأكبر | ٢٨٧ |
| الحاسد عدو لنعمتي فيسخط لقضائي | ٦٥٨ |
| سلهم لم ذلك، وما منعني أن أجيبهم، ألست أسمع السامعين | ١١١٩ |
| ضعفت حسناتك وتجاوزت عن سيئاتك | ٥ |
| عبدي ما يزال ملك كريم يصعد إلي بعمل قبيح | ١٨١ |
| عبدي مالك لم تحج | ٢٨٩ |
| قل لبشر بن الحارث لو سجدت لي على الجمر ما كنت تكافئني | ٤٤٨ |
| قل لقومك إني بريء ممن سحر أو سحر له | ٢٢٧٢ |
| قل لهم إن السياج ذمتي وإن القصر شريعتي | ١١١٩ |
| قل لهم كيف ترون في أرض كانت زماناً من زمانها خربة | ١١١٩ |
| قل لهم يخفون لي أعمالهم وعلي أن أظهرها لهم | ٨٩ |
| كذب من ادعى مودتي فإذا جن الليل نام عني | ١٣٢ |
| لقد دعوتني بدعاء لو كان ابناك ميتين لنشرتهما لك | ٢٨٩١ |
| لك ما سألت ومثله معه | ٧٩ |
| ما أصيب ابن آدم بعد ذهاب دينه أشر من ذهاب عينيه | ١٧٨١ |
| ما من أحد أطاعني إلا أستجيب له من قبل أن يدعوني | ٩٢٤، ٢٩٨٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| مر ظلمة بني إسرائيل أن يقلوا من ذكري فإني | ٩٦٨ |
| من أشغله الثناء عن مسألتي | ٤٩ |
| من اغتسل من الجنابة فإنه عبدي حقاً | ٢٤٧٨ |
| هب لي من قلبك الخشوع | ١٧١ |
| هذا نبيي، هذا خيرتي من خلقي فتأسوا به | ٢٦٣١ |
| هكذا جرى أمرك عندي، أفترى من أجلك أعيد الدنيا | ١٥٨٤ |
| هو خليلي، ليس لي خليل غيره في الأرض | ٦٣ |
| وإن من علامة رضاي رضا المساكين | ١١١٩ |
| وعزتي وعظمتي وجلالي ما من عبد آثر هواي | ١٤٨ |
| يا إبراهيم كيف وجدت الموت؟ | ٣٩ |
| يا آدم أنت اليوم عدل بيني وبين ذريتك | ١٠٧٢ |
| يا ابن آدم أطعني فيما أمرتك ولا تعلمني بما يصلحك | ١٥٨٦ |
| يا ابن آدم هذه حسنة قد عملتها في مكان كذا وكذا | ٢٧٧٩ |
| يا أيوب أما علمت أن لي عباداً علماء حكماء | ١٠٢١ت |
| يا داود اسمع مني والحق أقول لك | ١٧٤٩ |
| يا داود مجدني بذلك الصوت الحسن الرخيم | ٧٠٥ |
| يا داود هل تدري من أغفر له من عبادي | ١٥٥٥ |
| يا زكريا إما أن تكف عن أنينك أو أقلب الأرض ومن عليها | ٤٠ |
| يا موسى إذا رأيت الغنى مقبلاً فقل، ذنب عجلت عقوبته | ١٦٦١ |
| يا موسى إني أقمتك مقاماً | ٢٣٦٢، ٣١٢٢ |
| يا موسى أنا جليس من ذكرني | ٢٣٦٢، ٣١٢٢ |
| يا موسى أنا فوقك وأمامك وخلفك ومحيطاً بك | ١٤٥٢ |
| يا موسى إني أنا الله رب العالمين | ١٤٥٢ |
| يا موسى لو شئت أن أزينكما بزينة يعلم فرعون حين ينظر إليها | ١٨٩٤ |
| يا موسى إن الذي لك عندي على قدر ما لي عندك | ١٧٧٦ |
| يا موسى بن عمران لأن تجعل يدك في فم تنين إلى المرفق | ٢٠٦٥ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا يحيى هذا عملك الذي عملته وقد أعطيتك ثواب عملك | ٢٢٩١ |
| يدعو الله تبارك وتعالى المؤمن يوم القيامة | ١٢٦ |
| يقول الله تبارك وتعالى للمؤمن يوم القيامة ما دعوتني بشيء إلا استجبت لك | ١٢٥ |
| **امرأة** | |
| سبحانك ما أضيق الطريق على من لم تكن دليله | ١٧٩، ١٦٤٣، ٣٣٧٤ |
| ما أُصبتُ بمصيبة فاذكر معها النار إلا صارت في عيني أصغر من التراب | ٦٩٥ |
| **بعض أهل العلم** | |
| أعيذك بالله أن تكون لاهياً عن الشكر محجوباً بالنعم | ٢٠٥٢ |
| أقيمت الصلاة فجعل القوم يتدافعون فهذا يقدم | ١١٠٦ |
| اللهم إنك تعلم أنه لم يسنح لي أمران لك في أحدهما رضاً | ١٨٨٤ |
| د ع الكذب حيث ترى أنه ينفعك فإنه يضرك | ٨٨٤ |
| العلم نور لصاحبه ودليل لحظه ووسيلة تنبري إلى درجات السعداء | ١٦٦٧ |
| لم يعالج جهد البلاء من لم يعالج الأيتام | ١٣٤٩ |
| لولا العلم لم يطلب العمل ولولا العمل لم يطلب العلم | ١٨٣١ |
| ليس من فضيلة العلم إلا علمي أني لست أعلم | ١٨٨٠ |
| **بعض العباد** | |
| أبكي على ما فرطت من عمري | ١٨٢، ٣٣٧٦ |
| أبلغ عباد أهل الشام مني السلام وقل لهم: إن عمال الرحمن | ٢٢٦٦ |
| إذا كان بدو البكاء تنفساً وزفيراً وآخره شهيقاً فذاك بكاء موجع قلق | ٢٧٦٣ |
| أشرف العلماء من هرب بدينه من الدنيا | ١٦٨٤ |
| الجوع فيه ثلاثة خلال: حياة القلب ومذلة النفس | ١٥١٠ |
| عجبت من الناس أنهم ينظرون إلى الموت في كل يوم وهم في الدنيا في غفلة يلعبون | ٢١٩٢ |
| علامة التوبة الخروج من الجهل والندم على الذنب | ٣٣٩٩ |

| طرف الأثر او الخبر | الرقم |
|---|---|
| لحقٌ على العاقل أن يدوم ذكره بعد هذه الدار | ١٧٢٧ |
| لم أجد طعم العيش حتى استبدلت الخمص بالكظة | ٢٢١٨ |
| من ذكر الله على حقيقة نسي في جنبه كل شيء | ٢٦١٧ |
| لا تغضبه فيعاديك، وينتصب لك فلا تقوم بمكره | ١٧٥٤ |
| **أسقف نجران** | |
| إن شاء الأمير أخبرته بما أنزل الله عز وجل على عيسى عليه السلام | ١٥٢٣ |
| لا ينبغي للملك أن يغضب لأنه لا يخاف الفقر | ٢٨٠١ |
| يا أمير المؤمنين احذر قاتل الثلاثة... الرجل يأتي إلى الإمام بالكذب | ١٦٩٠ت |
| **راهب** | |
| ازهد في الدنيا ولا تنازعها أهلها | ٢٠١٢ |
| اطلب العيش ... وما تعدون العيش فيكم | ٨٥٥، ٢٠١٤ |
| إنك إن تضحك وأنت معترف بذنبك خير من أن تبكي وأنت | ٢٠١٢ |
| بطول الغربة، وما رأيت شيئاً أجلب لذوي الأحزان من الوحشة والوحدة | ٢٠١٣ |
| سبحان من لم يأنس بمن بقي ولم يستوحش ممن مضى | ٦٤ |
| سلوا ولا تكثروا، فإن النهار لن يرجع | ٧٣٥ |
| على قدر نياتهم وعلى ما قدموا من أعمالهم | ٧٣٥ |
| كن كالنحلة، إن أكلت أكلت طيباً، وإن وضعت وضعت طيباً | ٢٠١٢ |
| لأنك سميتني بغير اسمي ...اسمي الكلب العقور | ٤٣٤ |
| ما أرفع قدماً، ولا أضع قدماً إلا رأيت أن الموت خلفي | ٢٠١٢ |
| ما كنت أرى أحداً يسمع بذكر الجنة والنار تأتي عليه ساعة | ٢٠١٢ |
| ويحك، هب أن المسيء قد عفي عنه، أليس | ٤٣٣ |
| يا سعيد عند الفتنة تعلم من يعبد الله | ٢٤٣٧ |
| يا مالك إن استطعت أن تجعل بينك وبين النار سوراً | ١٥٤٨ |
| يخلق الأبدان، ويجدد الآمال، ويباعد الأمنية | ٤٣٢ |
| يوم يغفر لأهله | ١٦٩ |

رجل


إذا ولي الرجل ولاية يرى أنها أكبر منه فقد تغير ٢١٤٤
إن أكيس الكيس التقى، وإن أعجز العجز الفجور ٤٨٠
إن عاقبت جازيت وإن عفوت أحسنت ٨٣٢، ٣٢٤٩
إني أقدر على أن أحترس من أعدائي ولا أقدر ٢٤٤٠
إني قلت فيك بيتين (قاله لخالد بن يزيد) ٢٢٣٢/م
إني كنت صائماً فدخلت بيت أبي فأكلت وأنا ناسٍ ٣١٩
إن الناس قد أقبلوا على جيفة ينهشون منها ٢٠٤٢
أيها الأمير من كانت هذه عقوبته على الخطأ فما ثوابه على الإصابة ٢٢٧٦
رأيتك البارحة في المنام كأن آت أتاك ومعه إبريق فقال: اشرب ١٧٠٣
رب كلمة تقول دعني ٢٣٥٤
الشحيح أعذر من الظالم ٣٢٠
قرأت البارحة القرآن في ركعة ١٢٣٢
لو أنزل الله تبارك وتعالى كتاباً إنه يعذب رجلاً واحداً من هذا الخلق ٩٧١
لو دعوت مخلوقاً لدعوته بما يعرف ولكني أدعومن يعلم ما في القلب ١٨١٣
ما رأيت أجراً على الله من فلان ١٧٦١
ما رأيت ذا كبر إلا تحول داؤه فيَّ ١٥٨٣
مثلك أوجب حقاً لا يجب عليه ٧١٠، ٣٢١٩
من أجل أنهم يقومون الليل ويصومون النهار ١٢٥٩
وعزتك وجلالك ما أردت بمعصيتك مخالفتك ٦٧٧
يا أبا بحر، أتقدر أن تمشي على شرف المسجد ٥٣١
يا أبا زكريا حدثني بشيء أذكرك به ٥١٠
يا أمير المؤمنين، أنت أمين الله عز وجل، يؤدون إليك ٣٧٤
يا أمير المؤمنين، إنك أعز ما تكون أحوج ما تكون إلى الله ٨٣١، ٣١١٢، ٣٢٤٨

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| يا أمير المؤمنين كان لك الأجر لا بك، وكان لك العزاء لا عنك | ٧٦٨ |
| **رجل من آل عاصم الجحدري** | |
| رأيت عاصماً الجحدري بعد موته بسنتين في منامي فقلت: أليس قَدْ مِتَ | ١٤٢ |
| **جار مالك بن دينار** | |
| هيهات يا أبا يحيى أنا ميت | ٢٠١ |
| **قائد من قواد عبيد الله بن زياد** | |
| رحم الله أبا قلابة، لقد صدق أنه كان خيرة لي | ٥١٨ |
| يا أبا قلابة وأي خير في كسر رجلي | ٥١٨ |
| **بعض الصالحين** | |
| اللهم إني أستغفرك من كل ذنب قويٍ بدني بعافيتك | ٦٧٥ |
| لئن أعربنا في كلامنا حتى ما نلحَن، لقد لحنا في أعمالنا حتى ما نعرب | ١٦٣٨ |
| **بعض أشراف أهل البصرة** | |
| يا أمير المؤمنين، ما انتهى إلى غاية من شكرك إلا وجدت وراءها | ٧١١ |
| **بعض أهل المدينة** | |
| من ثقل على صديقه خف على عدوه | ١١٣٠ |
| **شيخ من قضاعة** | |
| ضللنا مرة الطريق فاسترشدنا عجوزاً فقالت: استبطن الوادي وكن سيلاً | ٢٢٣٠ |
| **شيخ من العجم** | |
| كان أنو شروان إذا ولى رجلاً أمر الكاتب أن يدع في العهد موضع أربعة أسطر | ٢٢٠١ |
| **الملائكة** | |
| سبحان الله لو كان ينبغي لله عز وجل أن يتخذ خليلاً من خلقه | ٣٧ |
| طوبى لأمة ينزل هذا عليها | ١٤ |
| **ملك القطر** | |
| يا رب خليلك يلقى في النار، فأذن لي فأطفيء عنه | ٦٣ |

| طرف الأثر أو الخبر | الرقم |
|---|---|
| **ملك الشمس** | |
| إني سألت الله النزول إلى الأرض من أجلك، فما حاجتك؟ | ٨٧ |
| **ملك** | |
| إرجعا فإن هذا ممن كتب له السعادة وهو في بطن أمه | ٣٧٨ |
| **ملك الموت** | |
| أدعوها فتجيبني | ٧٠٤ |
| إن ملك الموت عليه السلام استأذن ربه تبارك وتعالى أن يسلم على يعقوب | ١٢٢ |
| إن هذا لا يموت حتى يقعد مقعدك من الشمس | ٨٧ |
| قل يا ذا المعروف الذي لا ينقطع معروفه أبداً | ١٢٢ |
| يا داود ما فعل فلان؟ ... يا داود فما كان فيهم عبرة | ١٨٦٤ |
| **بكّاء بني إسرائيل** | |
| اللهم لا تؤاخذني بتقصيري عن عظيم خطيئتي فاغفر لي | ١٦٤٤ |
| **بعض الملوك** | |
| لا تخرجهم من علم إلى علم حتى يحكموه | ١٦٣٩ |
| **بعض النساك** | |
| أنا لما لا أرجو أرجى مني لما أرجو | ١٥٠٥ |
| ما أخاف على شيء إلا على بناتي فإني أخاف الضيعة لهم بعدي | ٩٢٨ |
| **بعضهم** | |
| خرجنا مرة في سفر، وكنا ثلاثة نفر فنام أحدنا | (١) ملحق |
| **الفتى الذي كلم أيوب في بلائه** | |
| يا أيوب أما علمت إن لله عز وجل عباداً اسكتتهم خشيته من غير عي و لا بكم | ١٠٢١ |
| **صاحب أذرعات** | |
| قدم علينا عمر بن الخطاب فدفع إليَّ قميصاً | ٩٨٦ت |


* * *

# فهرس الأحاديث المرفوعة والآثار والأخبار
## مرتبة على الحروف*


| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| آتيني بالخريطة، فأُتي بخريطة مختومة (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٥٠٤ |
| آثر هواي على هواك (ث) | أثر إلهي | ١٧٥٢ |
| آخ ذا العقل والكرم، واسترسل إليه (ث) | بزرجمهر | ١٧٢٤ |
| الآيات خرزات منظومات في سلك | عبد الله بن عمرو | ٢١٥٦ت |
| أأذكر الضر والبلوى التي نزلت (ث) | جرير بن عبد الله البجلي | ٣٣١٨ |
| أئمتنا أربعة: سفيان الثوري ويوسف بن أسباط (ث) | بشر بن الحارث | ٢٨٦١ |
| أأنت قاتل زيد بن الخطاب ... وار وجهك عني (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٨٨ |
| أبت الدراهم إلا أن تخرج أعناقها (ث) | عمر بن الخطاب | ١٢٢٠ |
| ابتهر الشاعر الجارية إذا ذكر في شعره أنه (ث) | عبد الله بن مسلم | ٣٠٧٣ |
| أبدع بيت قالته العرب بيت أبي ذؤيب (ث) | الأصمعي | ٢٧٦، ٢١٥٣ |
| أبردوا بالظهر فإن شدة الحر | أبو سعيد الخدري | ٣٥٥٠ |
| أبردوا بالظهر فإن شدة الحر | أبو هريرة | ٣٥٥٥ |
| أبشروا فإنّه مااستقصاكريم حقّه قطُّ (ث) | سفيان بن عيينة | ٣ |
| أبعده اللّهُ أما عَلِمَ أنّ من حفر حفرةً وقع (ث) | داود القصّار | ٣٢٦١ |


* ميزنا غير الحديث المرفوع إلى النبي صلى الله عليه وسلم، بوضع (ث) بعده، وأما رمز (ت) بعد الرقم، فهو في التعليق والهامش، فاقتضى التنويه، والله الموفق للخيرات.

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إبغ لي كتاباً أكتب وصيتي وأوصى لأقاربه (ث) | الفرزدق | ١٤٧٤ |
| أبكاني الليلة التي صبيحتُها يوم القيامة، فقلت ..(ث) | عامر بن عبد الله | ٤٠٨ |
| أبكي على ما فرطت من عمري | رجل من العباد | ١٨٢، ٣٣٧٦ |
| أبكي لعبدٍ يستحي الله منه ولا يستحي من الله عزّ وَجَلَّ (ث) | أنس بن مالك | ٣٤١١ |
| أبكي لَعَلّ الله ينظر إليَّ برحمة منه فأفوز بها (ث) | محمد بن علي | ٢١٣٧ |
| أبلغ سليمان أني عنه في سعة (ث) | الخليل بن أحمد | ٣٢٦٦ |
| أبلغ عباد أهل الشام مني السلام وقل لهم (ث) | بعض عباد أهل البصرة | ٢٢٦٦ |
| ابن آدم أسير الجوع صريع الشبَع ... (ث) | الحسن البصري | ٦٤٥ |
| ابن آدم، اعلم أنّ ملك الموت الذي وكّل بك ... (ث) | عثمان بن عفّان | ٢٠٧ |
| ابن آدم إنّما أنت عَدد أيام إن مضى منك ... (ث) | الحسن البصري | ٥٨٢ |
| ابن آدم أهون وأضعف من أن يكون جريئاً على الله ... (ث) | القاسم بن محمد بن أبي بكر الصّديق | ٩٢٧ |
| ابن آدم فرحت ببلوغ أملك، وإنما تبلغه...(ث) | داود الطائي | ٢١٩٤ |
| ابن آدم ما غرك بي؟ ماذا عملت فيما علمت | أثر إلهي | ٨ |
| ابن أخي تستكثر مني ما تستقل من نفسك (ث) | رقبة بن مصقلة | ١٦١٢ |
| ابن أخي إن الحلم هو الذل (ث) | بعض حكماء العرب | ٣١٩٤ |
| ابن طارق لو كان أحدٌ يكتفي بالتراب لاكتفى به (ث) | ابن شبرمة | ١٢٤٤ |
| ابنِ ما يسترك من الشمس ويُكنّك من الغيث (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٤٦ |
| ابنها بالعدل ونقِّ طرقها من الأذى ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٥٨٥ |
| أبوك الذي يقول إذا مُتُّ فادفني إلى أصل كرمةٍ (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٦٠٢ |
| أبيت اللعن أنا غلام حدث السن يخف عليَّ بعضه ويثقل عليَّ بعضه (ث) | النعمان بن المنذر | ٢٣٢٦ |
| أبيع اللّحم مع العظم ... (ث) | المقرىء | ٣٤٧٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أبين الناس فضلاً من سبقك إلى حاجتك قبل السؤال (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٤٣ |
| أتاني ملكان في غشيتي هذه، فقالا: انطلقت ..(ث) | عبد الرحمن بن عوف | ٣٧٨ |
| أتاني وجوه أهل المدينة كلهم، ولم تأتني؟ (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| أتى ذو القرنين مغيب الشمس فرأى ملكاً .. (ث) | شعيب بن سليمان | ١٣٤٠ |
| أتى سائلٌ امرأة وفي فمها لقمة ... | ابن عباس | ٣٥٢٩ |
| أتى شريحاً القاضي قوم برجل فقالوا: هذا خطب إلينا فسألناه ... (ث) | أبو سفيان بن العلاء | ٨٤٠، ٣٢٥١ |
| أتبخلوني في ابني واللّه إني لأحمده على السخاء (ث) | سعد بن عبادة | ١٤٢١ |
| أتت علي ثلاثون ومائة سنة وما من شيء إلا وقد أنكرته خلا أملي (ث) | أبو عثمان النهدي | ١٩٩٤ |
| أتجعل نهبي ونهب العبيد بين عيينة والأقرع .. (ث) | العبّاس بن مرداس | ٣٣٦٠ |
| أتحبُّ أن تخبر بعيوبك (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٥٤٧ |
| أتخذ الدنيا ظئراً والآخرة أماً (ث) | الثوري | ١٣٢٢ |
| اتخذ طاعتي تجارة يأتيك الربح من غير بضاعة | أثر إلهي | ٢٤٩٤ |
| اتخذ نوح صلى الله عليه وسلم بيتاً من خُصّ فقيل ... (ث) | وهيب بن الورد | ٢٤٥٠ |
| أتخوف الساعة | أنس بن مالك | ٩٥٤ |
| أتدري لم اتخذتك خليلاً ... لأني اطلعت على قلبك | أثر إلهي | ٢٧٥٤ |
| أتدري ما تقول هذه الشجرة ...تقول: رُبَّ ..(ث) | عدي بن زيد | ٧٣٧ |
| أتدعونني شيخاً وقد عشت حقبة (ث) | أبو الطفيل عامر بن واثلة الكناني | ١٠١٣ |
| أتذكرين ليلة ولدت؟ ...ردَّ ردَّ ... (ث) | إياس بن معاوية | ٦٢١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أترى هذا الموضع، فإني لقيت فتى (ث) | الحارث بن كعب | ٥٣٢ |
| اتركوها يغفر لكم (ث) | عيسى عليه السلام | ٢٤٩٨ |
| أتروني كنت أجيز شهادة مثل هذا (ث) | عبيد الله بن الحسن العنبري | ٦٢٢ |
| أتضحك وقد هلك المحمّدان ... (ث) | الحجّاج | ٣٠٨٨ |
| أتعرف النّعمان بن المنذر ... نعم (ث) | النعمان بن المنذر | ٢٢١٣ |
| أتعرف هذه الجلسة ... هذه جلسة رسول الله (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٤٧ |
| اتقوا اللعانين | أبو هريرة | ١٦٦٠ت |
| اتقوا الله حقّ تقاته وإياكم الغرة بتواتر النعم (ث) | بعض الحكماء | ٢٧١٨ |
| اتقوا الله فإن عند الله حجاجين كثر(ث) | الحسن | ٢٤٣٣ |
| اتقوا دعوات سعد | قيس بن أبي حازم | ٣٤٨ت |
| اتّقوا دعوة المظلوم فإنّها تُحْمَل في الغمام ... | خزيمة بن ثابت | ٣١٧٣ |
| أتمّ اللّه عليك يا أمير المؤمنين نعمة ... (ث) | خالد بن صفوان | ٢٩٠٣ |
| أتهددني ويد اللّه فوقك مانعة وتمنعني ... (ث) | خالد بن يزيد بن معاوية | ١٩٧٨ |
| أُتي أبو بكر بغراب وافر الجناحين | ميمون بن مهران | ٩٨ت |
| أُتي الحجّاج برجلٍ من الخوارج وهو في خضراء واسط ... (ث) | المدائني | ٢٠٤٥ |
| أُتي رجلٌ في قبره فقيل له: إنّا ضاربوك مئة (ث) | أبو ميسرة | ٩٣٤ |
| أُتي المنصور برجلٍ فعاقبه على شيءٍ بلغه عنه (ث) | الأصمعي | ٨٢٩، ٣١١١، ٣٢٤٧ |
| أتي النبي صلى الله عليه وسلم بجنازة رجل فلم يصل عليه | جابر | ٢٤١ |
| أتى يزيد بن أبي مسلم رجل برقعة وسأله | الأصمعي | ١٥٥٤ |
| أتيت الحارث بن كندة في يوم شديد البرد وهو | عبد الملك بن عمير | ١٩٨٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أتيت أهلي فقيل لي مات أخوك فوجدت أخي (ث) | ربعي بن خِراش | ٦٣٠ |
| أتيت علياً أنا ورجلان رجلٌ مِنّا ورجلٌ من (ث) | عبد الله بن سلمة | ٢٥٩٥ |
| أتيت القبور فناديتها: أين المعظّم وأين المحتقر ... (ث) | مالك بن دينار | ٥٨٨ |
| أتيت اللّيث بن سعد فأعطاني ألف دينار وقال ..(ث) | منصور بن عمّار | ١١٧٩ |
| أتيتك في حاجةٍ رفعتها إلى الله قبلك فإن ... (ث) | محمد بن واسع | ٣٣٠٧ |
| أتيت بسنين قد رمتا .... (ث) | عبد الله بن المبارك | ٨٤١ |
| أتينا منزل عطاء السلمي، فدخلنا منزله فرأينا باب (ث) | عم عبيد الله بن عمر | ١٣٢٤ |
| أُتي سعد بأبي محجن يوم القادسية | محمد بن سعد | ١٠١٤ت |
| إثبت على ما أنت عليه وإيّاك أن تجزع من | | |
| الضرب فإنّي (ث) | خالد الحذّاد | ٧٥٥ |
| أُثِرَ عن رجلٍ قال: كان في خدّيّ ابن عباس (ث) | مغنم بن سليمان التيمي | ٧٣١ |
| اثنان ما في الأرض أقلّ منهما ولا يزداد إلاّ قِلّة (ث) | يونس بن عبيد | ٧٠٦ |
| اجتمع جماعة من أصحاب ابن المبارك مثل الفضل | | |
| ابن موسى ومخلد ... (ث) | الحسن بن عيسى | ٢٨٣٧ |
| جتمع جماعةٌ من أهل العلم عند المنصور ... (ث) | ابن قتيبة، الزيادي، | |
| | محمد بن سلاّم | ٢٥٠٠، |
| | | ٢٥٠١ |
| اجتمع رأي أكثر من اثنين وسبعين صديقاً (ث) | أبو سليمان الداراني | ٤٠٢ |
| اجتمعوا ولا يكن فيكم من غيركم | رافع بن خديج | ٣٣٦٠ |
| اجتنبوا الناس وسلوا ربكم العافية من أمور (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٧٢١ |
| اجتهدوا في العمل فإن قصرتم ... (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ١١٩٠ |
| أجد في التوراة: أحمد عبدي المختار لافَظٌّ ولا | | |
| غليظ (ث) | كعب الأحبار | ١٢٩٥ |
| أجد في التوراة: يا أيّها النبي إنّا أرسلناك شاهِداً (ث) | عبد الله بن سلاّم | ١٢٩٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أجعتني وأجعت عيالي وأعريتني وأعريت (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٢٩٨ |
| اجعل الله همك واجعل الحزن على قدر ذنبك (ث) | بعض الحكماء | ١٧٧١، ٢٦٥٧، ٣٤٢٨ |
| اجعل أوثق عملك عند الله حبك أصحاب نبيه (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٢٨٨ |
| اجعل رأسي على التراب ... ما يبكيك؟ ... (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٨٧ |
| اجعل ما في الكتاب بيتُ مالٍ وما في ... (ث) | الخليل بن أحمد | ١٨٨٣ |
| اجعل مالك جنة دون دينك (ث) | مجاهد | ١١٧١ت |
| أجل إنّه أتاني ملك فقال: يا محمد إنّ ربك ... | أبو طلحة | ٩٩٥ |
| اجلس وسمِّ اللّه وكُل بيمينك مما يليك .. | جابر بن عبد الله | ٣١٥٥ |
| أجلسوني ... اللّهم أنا الذي أمرتني فقصرت (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٣٦٥ |
| اجلسي، وكل ذلك لك عندي (ث) | عبيد الله بن أبي بكرة | ١٩٧٩ |
| أجمع الخير كله في كلمتين الخبز من حِله ... (ث) | حذّيفة المرعشي | ١٧٤٨ |
| اجهل من كنت تعرفه، ولا تتعرف إلى من لا تعرف (ث) | حكيم | ٢٨٥٠ |
| أحبُّ أن يكون صاحبِ العلم في كفاية لأن (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٢٧ |
| أحب أهل بيت نبيك ولا تكن رافضياً (ث) | الشعبي | ٢٤٢٨ |
| أحبّ كلمةٍ إلى اللّه: لا إله إلا اللّه والثانية سبحان اللّه(ث) | ابن عباس | ٨٣٧ |
| احسبوا، احسبوا، ما كنت أظن الناس يركبون الشيطان (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٦ |
| احتجت الجنّة والنّار فقالت النّار يدخلني الجبّارون | أبو هريرة | ٢٣٤٠/م |
| احتضر رجلٌ من عُبّاد البصرة فاشتدَّ به .. (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ٢٨٥٦ |
| احتضر سيبويه النحوي فوضع رأسه في حجر | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أخيه (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٦٢٧، ٣٣٩٥ |
| احتضر فتىً من الحي كان فيه زهوٌ فرفع رأسه (ث) | الأصمعي | ٣٨٨ |
| إحتكموا ... ذاك لكم ... أنا أعطيكم ما سألتم غير أنّي (ث) | الأحنف بن قيس | ٢٥٦٦ |
| أحدث رجلٌ من أهل الشام على قبر الحسين بن علي (ث) | الأعمش (سليمان بن مهران) | ٤٤٦ |
| أُحْدِثْ لذلك وضوءاً | سلمان الفارسي | ٢٢٩٠ |
| أحدهم يحقر الشيء فيأتي ما هو شر منه (ث) | سلم بن قتيبة | ١٣٨٤ |
| أحدهما أوسع حديثاً والآخر يصلح للأمانة (ث) | مالك بن أنس | ٢٧٧٣ |
| إحذر أن تمر في حاجتك فيأخذك وأنت (ث) | بِشر الحافي | ٣٥٧٣ |
| إحذر أن تُخطيء فأعاقبك بكذا وكذا لأمر (ث) | عبد الله بن طاهر | ٢٢٧٦ |
| إحذروا صولة اللئيم إذا شبع وصولة الكريم إذا جاع (ث) | بزرجمهر | ٢٤٥، ٣٤٨٠ |
| أحرز القوم موتاهم ولم يُضيّعوهم ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٨ |
| إحرص على الموت توهب لك الحياة (ث) | أبو بكر الصدّيق | ٦٧١ |
| أحزنّي شيئان ... وقت أُوضع في لحدي فينصرف (ث) | حبيب أبو محمد | ٣٥ |
| أحسن العلماء علماً من أحسن تقدير معاشه (ث) | الحسن البصري | ١٦٧٢ |
| أحسن الله جزاك فقد أعنتني على دهري وأتعب معروفك شكري (ث) | أعرابي | ٢٦٨٩ |
| أحسنوا بالله الظن (تفسير قوله تعالى: ﴿وأحسنوا إن الله يحب المحسنين﴾)(ث) | سفيان الثوري | ٩٤ |
| أحيسوا أحيسوا ما كنت أظنُّ الناس يركبون .. (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٦ |
| احفظ عني خلالاً، لا تشربن دواء من غير وجع (ث) | تياذوق | ١٩٨٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أحل الله الأكل والشرب ما لم يكن سرفاً | ابن عباس | ١٦٠١ت |
| أحمد البلاغات الصمت حيث لا يحسن الكلام (ث) | بعض حكماء العرب | ١٩١١ |
| احمل فداك أبي وأمي | الزبير بن العوام | ٣٤٩ت |
| إحملوني على حمار فإنّه لم يمت عليه كريم...(ث) | الحُطيئة | ٢١٣٨ |
| أحوجته إلى مسألتي .. (لما سأله رجل..) (ث) | عمران بن مسلم الباهلي | ٤٦٧ |
| أُحيّةٌ والدتك؟ ...هذا ابنك | عبد الله بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| أخٌ لك كُلَّما لقيك أخبرك بعيبٍ فيك ... (ث) | بلال بن سعدٍ | ١٤٢٨ |
| أخاف أن أرى مظلوماً فلا أعينه أو ... (ث) | الرّبيع بن خثيم | ١٩٠٩ |
| أخاف أن أشبع فأنسى الجائع (ث) | يوسف عليه السلام | ١٩٢ |
| أخبر أبو حازم سليمان بن عبد الملك بوعيد الله(ث) | سفيان الثوري | ١٥٠٧ |
| أخبرنا شيخٌ من قضاعة قال: ضللنا مرةً ..(ث) | الأصمعي | ٢٣٣٠ |
| أخبرني بأعجب شيءٍ رأيته؟ (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٧٧٥ |
| أخبرني ببعض ما رأيت من عجائب الحجّاج (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٩٩٩ |
| أخبرني جبريل آنفاً | أنس بن مالك | ٧٢٤ |
| أخبرني رجلٌ من قريش من أهل المدينة ...(ث) | المدائني | ٢٦٧٨ |
| أخبرني عن أمهات الأولاد؟ ... فأخبرني عن العاقل والجاهل؟ ... (ث) | الحجّاج بن يوسف | ٢٠٧٠ |
| أخبرني عن لبس الرّهبان هذا السواد ما المعنى .. (ث) | زيد الحميري | ٧٣٣ |
| أخبرني من رأى شيطاناً يُفتي النّاس في ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٨٧٩ |
| أخبرهم أن عثمان كان من الذين آمنوا وعملوا الصالحات (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٤٢ |
| اختر أي قتلة (قاله لسعيد بن جبير) ... (ث) | الحجّاج بن يوسف | ١٢١٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اختصم رجلان إلى عمر بن الخطاب في غلام (ث) | الأصمعي | ٢٠٨٥ |
| اختطف صاحِبنا (يعني حميداً الطويل لما وضع في) (ث) | حميد الطويل | ٨٦٨ |
| اختلف في قتل علي بالكوفة وصلى عليه الحسن بن علي، ودفن عند مسجد الكوفة (ث) | أبو اليقظان | ٢٦٥ |
| أخذ الأظفار يوم الخميس من السنة وبلغني أن (ث) | هارون الرشيد | ١٥٩ |
| أخذ أهل مكة الصلاة عن ابن جريح وأخذها ابن جريح ... (ث) | عبد الرزاق بن همام | ١٦١ |
| أخذ بعض الأمراء رَجُلاً يعاقبه فقال له: (ث) | الرّياشي | ٨٣٢، ٣٢٤٩ |
| أخذ رجلاً من أصحاب المختار فأمر بضرب عنقه (ث) | مصعب بن الزبير | ٨٣٣، ٣٢٥٠ |
| أخذ بعبد الملك بن مروان رَجُلاً وأراد قتله (ث) | الأصمعي | ٨٣١، ٣٢٤٨ |
| أخِذَ لرجلٍ من العرب مالٌ فكتب إلى آخذه ..(ث) | ابن عائشة عن أبيه | ١٨٢٦، ٢٣٤٢/م |
| أُخِّر كلام في القدر لشرار هذه الأمة | أبو هريرة | ٣٤٩٧ت |
| أُخْرِجَ إلى بعض ولد سليمان بن علي بن عبد الله بن العباس (ث) | الحسن بن جهور مولى المنصور | ٦٦٦ |
| أخرجوه إلى السوق فاضربوا عنقه (ث) | الحجّاج بن يوسف | ٣١٢٣ |
| أخشى أن أقول لبيّك فيقول لي: لا لبيك (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ٧٨٨ |
| أخطب لي على عبد الملك بن الحجّاج أمةً جميلة من بعيد (ث) | الحجّاج بن يوسف | ١٩٦٦ |
| أخفْتي مِني ... فأنت حُرَّة فأنت حُرَّة (ث) | ابن عون | ٢٤٨٠ |
| أخلصناهم بذكر الآخرة (تفسير قوله تعالى: ﴿إنّا أخلصناهم بخالصةٍ ذكرى الدّار﴾)(ث) | عثمان بن عطاء عن أبيه | ٩٩٨ |
| أخوك أعبد منك (ث) | عيسى عليه السلام | ٧٥٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أخوك الذي إن سؤته قال ... (ث) | محمد بن المغيرة | ٣٠٥٩ |
| أخوك من وَعَظك برؤيته قبل أن يعظك (ث) | محمد بن واسع | ١٧٨ |
| أخيين كُنّا فرّق الدهر بيننا .. (ث) | سيبويه | ٣٣٩٥ |
| أدبٌ بارع ولسانٌ قاطع ... (المروءة) (ث) | عمرو بن العاص | ٣٠٩٥ |
| إدخال السرور على المؤمن (ث) | محمد بن المنكدر | ١١٨٠ |
| أُدْخِلَ على عيسى بن موسى رجلٌ يعاقبه (ث) | المدائني | ٢٤٢٩ |
| أُدخلت على المعتصم، فقال لي: يا عَدُوَّ الله (ث) | دعبل | ٣١٢٤ |
| أدركت جارة لناجدة إحدى وعشرين سنة (ث) | الحسن بن صالح | ١١٣٣ت |
| أدركت وجوه أهل البصرة شقيق بن ثور (ث) | حفص بن الفراقصة | ٣٣٤٢ |
| أدركت مشيخة أهل المدينة لهم الغدائر وعليهم (ث) | ربيعة بن أبي عبد الرحمن | ٥٣٧ |
| أدع الله في الرّخاء يستجيب لك في البلاء (ث) | الحسن البصري | ١٧٨٥ |
| ادع لي (قاله للخضر) (ث) | موسى عليه السلام | ٢٠٠٧ |
| أدعه حتّى أشتهيه .. (ث) | داود الطائي | ٥٧٨ |
| أدعُو لي رأس القرية (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٦ |
| ادفعوها إلى أبي نصر (صرّةٌ فيها مئة دينار) (ث) | هارون الرشيد | ٩٧٥ |
| أدنى أهل الجنّة منزلة عند الله تبارك وتعالى من يتمنّى على اللّه ... | أبو هريرة | ٧٩ |
| إدمان البكاء على ما سلف من الذنوب والخوف (ث) | شقيق البلخي | ٢٦٤٥ |
| أدنى القنوع التمتع بالعِز(ث) | بشر بن الحارث | ٢٠٢٥ |
| أديموا النظر في المصحف، وإذا اختلفتم في ياء وتاء | عبد الله بن مسعود | ١٠٣٢ت |
| إذا ابتليت بالقضاء فعليك بالأثر (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٢٦ |
| إذا أبغضت فيه الحبيب وجانبت فيه القريب (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا أبِق العبد فلا ذمة له ... | جرير بن عبد الله | ٣١٦٣ |
| إذا أتى أحدكم فراشه، فلينفضه بصنَفةِ ثوبه ... | أبو هريرة | ٣١٥٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا أتى الخلاء أو قضى حاجته، لم يرفع ... | أنس بن مالك | ٢٨٤٣ |
| إذا اتخذتم عند رجلٍ يداً فانسوها ولا تتمنوا فإن | | |
| المنة تهدم الصنيعة ... (ث) | أكثم بن صيفي | ٦٨٤ |
| إذا أتيتم الجمعة فاغتسلوا | ابن عمر | ٣٥٦٠ت |
| إذا أحبَّ الرجلُ الرجلَ في اللّه ثم أحدث حدثاً (ث) | سفيان الثوري | ٢١٩ |
| إذا اختلفتم في الياء والتاء فاجعلوها ياءً (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٠٣٢ |
| إذا أخذ أحدكم من رأس أخيه شيء فليره إياه (ث) | عمر بن الخطاب | ١٨٦٨ |
| إذا أخذ الرجل اللقمة فرمى بها خلف (ث) | الأعمش | ١٨٣ |
| إذا أخذت من عبدي كريمتيه وهو بهما ضنين | حديث قدسي | ١٧٨٠ |
| إذاأُدني الإناء إلى فيه ففتح فاه سقط (ث) | أبو الهذيل | ١٤١٧ |
| إذا أراد أحدكم السلام فليقل: السلام عليكم | | |
| فإنّ الله ... (ث) | أبو هريرة | ٢٧٨١ |
| إذا أراد اللّه عزّ وجل بعبدٍ خيراً أعطاه .... (ث) | الحسن البصري | ١٣٩٦ |
| إذا أراد اللّه عزّ وجل بعبدٍ خيراً زهّده في الدّنيا | | |
| وفقهه في (ث) | محمد بن كعب القرظي | ٦٦٣، ١٣٤٨ |
| | | ١٤٢٩ |
| إذا أردت أن تَسْلَمَ من الحاسد فَعمٌ ... (ث) | الأصمعي | ٦٥٦/م |
| إذا أردت أن تتزوج المرأة فاهد للأم (ث) | سفيان الثوري | ١٠٦٠ |
| إذا أردت أن تعرف الرجل فانظر كيف تحننه (ث) | أعرابي | ٣٣٢ |
| إذا استشهدت لم أبالي بما تركت من بعدي | | |
| النخل (ث) | الزّهري | ٧٦٠ |
| إذا استعملت عليكم علامة خياركم فهو علامة | | |
| رضاي | أثر إلهي | ٤٢٥ |
| إذا استكمل العبد العمل والعقل في القلب | بعض الحكماء | ١٦٢٦، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ظهرت (ث) | | ٢/٣٠٣٨ |
| إذا اشتبه عليك أمران فلم تدر في أيّهما الصواب | | |
| فانظر أقربهما (ث) | بزرجمهر | ١٤٠٦ |
| إذا اشتريت بعيراً فاشتره عظيم الخلق (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٥١٣، ٣٠٠٩ |
| إذا اشتريت بغلة فاشترها طويلة العنق | ابن كناسة | ٣٠٤١م |
| إذا أشكلت عليك آية من القرآن تؤنثها | بشير بن الحارث | ١٠٣٢ت |
| إذا أعسر على المرأة ولادها فليكتب لها: | | |
| بسم الله ... (ث) | ابن عباس | ١٩٩٦ |
| إذا أعطيتم فأغنوا (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٩٠ |
| إذا أقبلت عليك الدنيا فانفق فإنها لا تفنى، وإذا | | |
| أدبرت عنك فانفق (ث) | بزرجمهر الحكيم | ١٣٨٣ |
| إذا أقيمت الصلاة فلا صلاة إلا المكتوبة | أبو هريرة | ٢٣٥٩ |
| إذا أكرمك الناس لمال و سلطان فلا يُعجبك ذلك (ث) | ابن المقفع | ١٦٣٤ |
| إذا أكلت فاتكيء على يسارك فإن الكبد يقع على | | |
| المعدة | إياس بن معاوية | ٥/٢٤٣٥ |
| إذا أكلتم الرمان فكلوه بشحمه فإنه دباغ (ث) | علي بن أبي طالب | ٦٣٤، ٢/٣٣٩٩ |
| إذا اللّه عادى أهل لومٍ ورِقَّة (ث) | قيس بن عمر بن مالك الحارثي | ٩٨٨ |
| إذا أنا نمت ثم استيقظت ثم نمت فلا نامت عيناي(ث) | يزيد الرّقاشي | ١٥٤ |
| إذا أنت لم تسل اصطباراً وحسبه ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٧٧٢ |
| إذا انتصف شعبان فلا صوم ... | أبو هريرة | ٢٦٥٤ |
| إذا انقطع شِسعُ نعلِ صاحبك فلم تنتظره .. (ث) | بكر بن عبد اللّه المزني | ٢٧٠٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا باع الصياد شبكته فبأي شيء يصطاد (ث) | بعض الصوفيين | ١٨٥٦ |
| إذا تبينت لقيته ابيض بضاً حديد النظر ميت القلب (ث) | الحسن البصري | ٩٥٥ |
| إذا تزوّج البكر أُقام عندها سبعاً | أنس | ٦١٠ |
| إذا تزوج البكر على الثيب أقام | أنس | ٦١٠ت |
| إذا تزوّج الرّجل فقد ركب البحر وإذا وُلِدَ له (ث) | سفيان الثوري | ٣٦٦ |
| إذا تكلمت بكلمة تملكني ولا أملكها (ث) | ملك | ٢٤٤٢ |
| إذا جاءك ما تُحب فأكثر من الحمد لله وإذا (ث) | جعفر بن محمد | ١٧٩٧ |
| إذا جثت الأمم للحساب، وكل الله ملكاً للذي كان يظلم الناس في الدنيا (ث) | عبد الله بن مسعود | ٢٠٥٩ |
| إذا جُعلت الآخرةُ لك قراراً ولم تسم لك (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا جعلت أحداث يومك وليلتك (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا جعلت الدّنيا خلف ظهرك وجعلت الآخرة نصب عينيك (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا جمع اللّه الأولين والآخرين نادى المنادي (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ٨٤٤ |
| إذا جمع اللّه الأولين والآخرين نادى منادٍ | أسماء بنت يزيد | ١٠٨ |
| إذا جمع الله الخلائق، أذن لأمة محمد بالسجود | أبو موسى الأشعري | ٢٤٧٣ت |
| إذا جوّعت قلبك وأظمأت لسانك من الفحشاء (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا حكم الحاكم فاجتهد فأصاب فله ... | أبو هريرة | ٣٤٩٢ |
| إذا حدثت بالليل فاخفض من صوتك وإذا (ث) | قتادة | ٤٦٨ |
| إذا حدّثت في مجلسٍ مراراً ذهب ضوءه (ث) | قتادة | ٤٦٨ |
| إذا حلف الرّجل فقال: إن شاء الله فقد استثنى ... | ابن عمر | ٣١٣٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا حلق المحرم رأسه حلّ له كل شيء إلا ...(ث) | علقمة | ٣٥٢٢ |
| إذا ختم الرّجل القرآن قبل الملك بين عينيه (ث) | سفيان الثوري | ٣٩٥ |
| إذا خرج أحدكم إلى الجمعة فليغتسل ... | أبو هريرة | ٣١٧٢ |
| إذا خرج الرجل منزله فقال: بسم الله | أنس بن مالك | ٢٦٦٤، ٣٥٨٢ |
| إذا خرج الطعام قبل سِت ساعات فهو مكروه (ث) | ابن أبجر | ٢٣٤٨ |
| إذا خفت العدوّ وكان في طلبك ... (ث) | ابن عباس | ٢٥٠٧ |
| إذا خلص المسلمون من النار احتسبوا .... | أبو سعيد الخدري | ٢٧٣٤ |
| إذا دخل أهل الجنة الجنة، يشتاق بعضهم ... | أنس بن مالك | ٢٤٧٣ |
| إذا دخل عليك صبي جارك ضعي في يده شيئاً ... | عائشة | ٢٩٥٣ |
| إذا دخلتُ بيتي وأكلتُ رغيفي وشربتُ ... (ث) | صفوان بن محرز | ٧٨١ |
| إذا ذُكِر الصالحون كنت منهم بمعزل ... (ث) | محمد بن النضر الحارثي | ٣٢٣ |
| إذا رآءى العبد يقول الله تبارك وتعالى للملائكة: انظروا ... (ث) | قتادة | ١٦٩٢، ٣٤٣٤ |
| إذا رابني شيء تركته للّه عز وجل ... (ث) | محمد بن سيرين | ٤٥٧ |
| إذا رأيت أكبر منك، فقل: سبقني بالإسلام والعمل الصالح ... (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢١١٦ |
| إذا رأيت جنازة فقم حتّى تجاوزك ... | عامر بن ربيعة | ٣٤٦٥ |
| إذا رأيت سفيان الثوري فسأل الله عز وجل الجنة | محمد بن مسلم | ٢٧٨٠ |
| إذا رأيت العبد قد مُنِعَ الطاعة واستوحش .. (ث) | شقيق البلخي | ٣١١٧ |
| إذا رأيت العراقي فاستعذ بالله من الشيطان (ث) | محمد بن مسلم | ٢٧٨٠ |
| إذا رأيت القاريء يلزم باب السلطان ... (ث) | سفيان الثوري | ٤٦٢ |
| إذا زال معها حسن التجمل | بعض الحكماء | ٢/٣٠٧٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا سار من خلف امرءٍ وأمامه (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٧٧٢/م |
| إذا سكن أهل النار في النار فشربوا من (ث) | ابن عمر | ١٥٢٠ |
| إذا سُئِلَ عمّن يقول: كم ممّن كان يُحدِّث ... (ث) | هشام الدستوائي | ٣٥٦ |
| إذا سمجت الدنيا في عينيك، وقذفت أملك بين يديك ... (ث) | شقيق البلخي | ٢٨٠٩ |
| إذا شربت الماء البرود في هذا الحرِّ الشديد فمتى (ث) | داود الطائي | ٥٧٨ |
| إذا ظهر السوء في الأرض أنزل الله بأسه بأهل الأرض | أم سلمة، عائشة | ٢١٢٧ت |
| إذا ظهرت المعاصي في أُمّتي أصابهم اللّه ... | أُم سلمة | ٢١٢٧ |
| إذا عاين المريض الموت ذهب المعرفة بينه (ث) | سفيان الثوري | ١١٥ |
| إذا عرض لي شيء من ذلك سألت ربّي ... (ث) | محمد بن سيرين | ٤٥٧ |
| إذا عرفت وَبَال الشهوات غداً وسرعة انقطاع .. (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا غرست من المعروف غرساً فأحسن تربية غرسك ... (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٤٢ |
| إذا غسّلتموه فآذنوني (ث) | أبو محمد بن عمرو الثقفي | ٣٠٨٨ |
| إذا قال الرجل فيك من الخير ما ليس فيك، فلا تأمنه ... (ث) | وهب بن منبه | ٨٨٣ |
| إذا قاتل أحدكم فليتجنب الوجه ... | أبو هريرة | ٣١٤٧ |
| إذا قرأ ابن آدم السجدة اعتزل الشيطان ... | أبو هريرة | ٢٧٠٥ |
| إذا قصّر العبد عن طاعة الله عز وجل سلبه (ث) | بشر بن الحارث | ٨٦ |
| إذا قصرت يدك عن المكافأة، فليطل لسانك بالشكر ... (ث) | بعض الحكماء | ٧٠٩ |
| إذا قضى صلاته فأتني به أختبر عقله (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٩٧٥ |
| إذا قعد بين شعبها الأربع وأجهد نفسه ... | أبو هريرة | ٢٣٧٩، ٣٢٠٧ |
| إذا كان الحديث حُلْفاً والميعاد خُلْفاً والمقيت ألفاً (ث) | كعب الأحبار | ٢٣٨٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا كان الله لك جليساً ولم تر سواه لنفسك (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا كان بدو البكاء تنفساً وزفيراً وأخره شهيقاً | | |
| فذاك بكاء موجع قلق ... (ث) | رجل من العباد | ٢٧٦٣ |
| إذا كان الرجل لا ينكر عمل السوء على | | |
| أهله جاء ... (ث) | وهب بن منبه | ٢٦٠٧، ٣٠٢٠ |
| إذا كان ليلة النصف من شعبان يغفر الله لعباده | أبو هريرة | ٩٤٤ت |
| إذا كان ما أسخطه أمرٌ عندك من الصبر | | |
| وكان (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا كان يوم القيامة دعا اللّه تبارك وتعالى | | |
| بعبدٍ ... (ث) | ابن عمر | ١١ |
| إذا كان يوم القيامة نادى منادٍ ... | علي بن أبي طالب | ٣٤٨٧ |
| إذا كان يوم القيامة ووافت الروم بقياصرها (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٨١٧ت |
| إذا كانت الآخرة في القلب جاءت الدّنيا | | |
| ترحمها ... (ث) | أبو سليمان الداراني | ٢٠٧٥، ٣٢٣٠ |
| إذا كانت لك إلى قارىء حاجة ... (ث) | سفيان الثوري | ٤٦٣ |
| إذا كتبتَ كتاباً فأطل النّظر فيه، فإنّ كتاب .. (ث) | يزيد بن المهلب | ١٥٢٦ |
| إذا كثر أدب الرجل ونقص عقله (ث) | بعض الحكماء | ١١٣٢ |
| إذا كثر أولاد الزنا قلَّ المطر ... (ث) | عِكرمة | ١٠٤٤ |
| إذا كنت تبغي أيّماً بجهالة ... (ث) | ابن الأعرابي | ٣٢٨١ |
| إذا كنت تقدم على حبيب وتصدر عن أمل قريب (ث) | شقيق | ٢٨٠٩ |
| إذا كنت في زمانٍ يرضى فيه من العمل بالقول (ث) | أبو حازم | ١٥٠٨ |
| إذا كنت كذبت عليَّ فاسأل الله أن لا يميتك (ث) | عمار بن ياسر | ٢٠٣٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا لبست ثوباً فظننت إنك في ذلك الثوب (ث) | مسلم بن قتيبة | ٣٠٢٨ |
| إذا لبستم أو توضأتم فابدؤوا بميامنكم | أبو هريرة | ٢٣٥٠ |
| إذا لبستم وإذا توضأ أحدكم فابدؤوا | أبو هريرة | ٢٠٥٤ |
| إذا لقيت صاحب هوى في طريق فخذ في | | |
| طريق آخر ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٧٢٣ |
| إذا لقيت المؤمن فخالطه وإذا لقيت الفاجر .. (ث) | صعصعة بن صوحان | ١٠٨٥ |
| إذا لم ينظر عينه في النوائب والنوازل إلا إليه (ث) | بعض الحكماء | ١٦٣٢ |
| إذا لم يكن صدر المجالس سيداً ... (ث) | عبد الله بن محمد | |
| | البغدادي | ٨٦١/م |
| إذا لم يكن للحي إلاّ وصية الميت فالحي هو الميت (ث) | عبيد الله بن زياد التميمي | ٢١٠٥ |
| إذا مات ابن آدم انقطع عمله إلا من | أبو هريرة | ٣٥٠٠ت |
| إذا مدَّ إليك عدوّك يده فإن قدرت على ... (ث) | المنصور (أمير المؤمنين) | ٢٤٦٦ |
| إذا نزل الرجل على قوم فلا يصُم إلا بأذنهم ... | عائشة | ٣١٦١ |
| إذا نُسخَ الكتابُ ثلاث مرات (ث) | الخليل بن أحمد | ١٨٨٣ |
| إذا نصحت الرّجل فلم يقبل منك فتقرب إلى (ث) | خاقان | ٢٧٥٢ |
| إذا نكح العبد بغير إذن سيده | عبد الله بن عمر | ١٢٩ت |
| إذا نمت بالنهار ضيعت رعيتي، وإذا نمت بالليل (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٥٨٦ |
| إذاً والله لا يأخذها إلا معجلة منتقدة ... (ث) | عمرو بن سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| إذا هم عبدي بحسنة فاكتبوها واحدة | أبو هريرة | ٢٨ |
| إذا وجهت إلى عبدٍ من عبيدي مصيبة في بدنه | حديث قدسي | ١٠١ |
| إذا وقع العبد في الهانيّة الرب، ومهيمنة الصديقين(ث) | وهيب بن الورد | ٣٠٧٢ |
| إذا وقعت الفتنة فاتخذ سيفاً من خشب | أهبان بن صيفي | ٢٤٠١ |
| إذا وُقي الرجل شرَّ لقلقة وقبقبه وذبذبة (ث) | أبو رجاء العطاردي | ٨٨٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إذا ولي الرجل ولاية يرى أنها أكبر منه فقد تغير (ث) | رجل | ٢١٤٤ |
| إذاً لا نَقْضي لك حاجة، أمثِلي يُسأل حاجة أو | | |
| يؤتى في حاجة (ث) | علي بن عبد الله | ١٠٦٣ |
| أذكر إني مسافر (ث) | أحمد بن علي | ١٢٨٤ |
| أذكر القطن إذا وضعوه على عينك | معروف الكرخي | (٦) ملحق |
| أذكرني إنّك سألتني أن أحدّثك فلم (ث) | يحيى بن معين | ٥١٠ |
| اذكروا الله عز وجل في كل مكان طيب ولا (ث) | أبو ميسرة | ٢٦٢٤ |
| اذكروا من عظمة اللّه ما شئتم ولا تذكروا (ث) | محمد بن علي | ٨٥٣ |
| أذّن في أذن الحسن بن علي رضي اللّه عنه حين ... | أبو رافع | ٣٢١٢ |
| إذهب إليه فأعلمه أنّه ليس من أهل النار ولكنه من .. | أنس بن مالك | ١٠٥ |
| اذهب فأحرق كُتُبي (ث) | سعيد بن جبير | ٣٠٣٦ |
| اذهب فإن لك بكل سيئة حسنة | حديث قدسي | ٢٦٣ |
| اذهبوا عنّي فإنّي رُبّما أُريد أن أشتري لحماً | | |
| بنصف ... (ث) | جعفر بن عون | ٢٨٢٦ |
| أرى أعيناً ولا أرى أنيساً (ث) | الحسن | ٩٥٥ت |
| أرى رجالاً ولا أرى عقولاً، أسمع أصواتاً (ث) | الحسن | ٩٥٥ت |
| أرى نفسي تتوق إلى أمور ... (ث) | عبد الله بن معاوية | ٥٢٦ |
| أراد عبد الملك قتل رجل، فقال له: يا أمير المؤمنين | | |
| إنّك أعز ... (ث) | الأصمعي | ٣١١٢ |
| أراد قومٌ سفراً فضلُّوا عن الطريق فانتهوا (ث) | محمد بن الحسين | ٧٣٥ |
| أراد النبي صلى الله عليه وسلم أي: إجمع أهلك | | |
| ولا ... (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ١٥٥٢ |
| أراد هارون الرشيد أن يولي رجلاً القضاء فقال له(ث) | يحيى بن أكثم | ٨٦٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أرانا عفّان، وأدخل أصابع كفه مبسوطة في | | |
| فيه (ث) | جعفر بن محمد لاصائغ | ٣٠٢٦ |
| أراني إنّما تزينت لهذ الشيخ ... (ث) | المنذر بن الجارود | ١٥٧٦ |
| أرأيت أن أججت نارٌ ضخمة فقيل لك ... | عبد الله بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| أرأيت لو أنّ رجلاً صام الدهر لا يفطر وقام .. (ث) | عمر بن محمد بن المنكدر | ٢٩٨٨ |
| أرأيتم إن أسلم عبد اللّه ... | أنس بن مالك | ٧٢٤ |
| أرى في هذا شيئاً (ث) | الحجاج | ٢٣٨٦ |
| إرتحلت الدنيا مدبرة، وارتحلت الأخرة مقبلة (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٩٣ت |
| أربع خصالٍ من سعادة العبد أن تكون زوجته | علي بن أبي طالب | ٥٤١، ٢٣٨١ |
| أربع خِلال إذا أُعطيتهنّ فلا يضرك ما عدل ..(ث) | عبد الله بن عمرو | ١٠٨٤ |
| أربع لا طمع فيهنّ أحد عندي القرض والفرض | | |
| والهريس ... (ث) | خالد بن صفوان | ٢٠٤٨ |
| أربع لا يقبلنَ في أربع، السرقة والخيانة، والغلول (ث) | أبو مسلم الخولاني | ١٤٩٠ |
| أربع من كن فيه عَصَمَهُ الله من الشيطان وحرَّمه(ث) | الحسن البصري | ٣٠٩٤ |
| أربعة أشياء من العجب عمياء مُحيصبة.. (ث) | شريك بن عبد الله | ١٧٤٢ |
| أربعة: أزهدهم سليمان التيمي وأفقههم أيوب | | |
| السختياني (ث) | الأصمعي | ٣٤٠١ |
| أربعة وكّلهم الله تبارك وتعالى بأمر الدّنيا جبريل (ث) | عبد الرحمن بن سابط | ٦٦ |
| أربعة لا أمَلُّهُم أبداً جليسي ما فهم عني وثوبي (ث) | عمرو بن العاص | ١/٣٠٠٤، ٣١٩٣ |
| إرجعا فإن هذا ممن كتب له السعادة وهو في بطن | | |
| أمّه (ث) | مَلَكٌ | ٣٧٨ |
| أرجو أن يكون ذلك خيرةً ... ما ستر الله عليك(ث) | أبو قلابة | ٥١٨ |
| أرجى آية في كتاب الله عز وجل: | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ﴿ولسوف يعطيك ربك﴾ (ث) | جعفر بن محمد | ٣٠١٠، ٣٤٣٣ |
| أردت أن تحجّ علينا الأمم أنّا غيرنا توحيد ربّنا عز وجل (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٠٢٣ |
| أردت أن يستفزني الشيطان فأنال منك اليوم (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٨٠٠، ٣٣٣٠ |
| أردت أن يعلم أن في عباد الله من يستصغر ما يستعظمه ... (ث) | طاووس | ١٨٤٢ |
| أردت ضرب غلام لي فقال لي: يا عمر اذكر ليلة ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٤٠٩ |
| أرسل رَجُلاً من أصحابه إلى رأس من رؤوس | أنس بن مالك | ١١٤٥ |
| أرسلني أبي إلى ضرار بن القعقاع بن معبد بن زرارة فقال: قل له: ...فدخلت عليه منزله (ث) | قتيبة بن مسلم | ١٩١٣ |
| ارغب إلى من شئت فإنك أسيره، واستغن عمن شئت (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٤٠ |
| أرقُّ النّاس قلوباً أقلّهم ذنوباً ... (ث) | مكحول | ٢٩٨٢ |
| إرم أيها الغلام الحزَّور | عليّ | ٣٤٩ت |
| إرم فداك أبي وأمي | سعد بن أبي وقاص | ٣٤٩ |
| أرهب تُحذر، وأنعم تُشكر، ولا تمازح فتُحقر (ث) | بزرجمهر | ٩٣٦، ٣٤٨٠ |
| أرواح الشهداء في صور طير بيض (ث) | قتادة | ١٣٩٢ت |
| أريد أن أسافر سفراً ما سافرته قط أريد أن (ث) | أبو محمد حبيب | ١٥٩٤ |
| إزدحم النّاس على سفيان بن عيينة أيام الموسم وبالقرب(ث) | ابن أبي بزّة | ٢٢٧٩ |
| أزفت والله عقولهم وطارت قلوبهم فشردت في | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أجوافهم ﴿تفسير قوله تعالى: ﴿وأنذرهم يوم | | |
| الآزفة ...﴾ (ث) | الحسن البصري | ١٥١٤ |
| إزهد في الدنيا ولا تنازعها أهلها (ث) | راهب | ٢٠١٢ |
| أزيدك، أزيدك | عبد الله بن جعفر | ٢٠٧٢ت |
| أساء أذني وباعد مجلسي ... (ث) | أبان بن عثمان | ٢٥٣٣ |
| أسافرت معه ... أخالطته (ث) | عمر بن الخطاب | ٧٠٨ت |
| أستخير الله (ث) | زبيد | ١١٦٧ |
| إستشار قوم أكثم بن صيفي في حرب قوم أرادوهم | | |
| وسألوا أن يوصيهم (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ١٥٣٣ |
| إستشارك أبو مسلم في القدوم عليَّ (ث) | أبو جعفر المنصور | ٥٩٧ |
| إستطرف كاتبك واستعطر حاجبك .. (ث) | يزيد بن المهلب | ٢٢٥٩ |
| إستعمل أبو بكر الصّديق رضي اللّه عنه يزيد بن أبي | | |
| سفيان على ... (ث) | العبسي | ١٠٢٤ |
| إستعمل عمر بن الخطاب رضي الله عنه رجلاً | | |
| على عمل (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٢٧٠٩ |
| إستعملني زياد على بيت المال فأتاني رجلٌ | | |
| بصكٍ (ث) | شقيق بن سلمة (أبو وائل) | ٩٣٥ |
| إستغزروا الدموع بالتذكر (ث) | عمر بن الخطاب | ٧٣٦/م |
| أستغفر اللّه في ذنبٍ سلطك به عليَّ (ث) | أبو معاوية الأسود | ٩٧ |
| إستغنى به عن علم غيره (سئل عن علم الحسن )(ث) | خالد بن صفوان | ١٧٨٨، |
| | | ١٧٨٩ |
| إستقبال الشمس داء واستدبارها دواء (ث) | قتادة | ٤٢٠ |
| إستكثروا من يالكع فإنّ الحسن كان يُعجبه (ث) | أبو الرّبيع | ٢٣٣٧ |
| أستكين لربي عسى أن يشفعني في (ث) | مطرف | ١٦٨١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إستمعوا فإنّ حُسن الاستماع قوّةٌ للمحدث (ث) | عبد الرحمن بن شريح | ٢٢٨١ |
| أسدُّ الأعمال ثلاثة | محمد بن علي بن الحسين | ١٠٢٦ت |
| أسرت ببلاد لاروم فأصبت على ركن (ث) | أبو قبيل | ١/١٣٧٩ت |
| أسرّوا بينهم فقالوا: يخلق اللّه ما يشاء (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿وأعلم ما تبدون وما كنتم تكتمون﴾) (ث) | قتادة | ٢٦٦٠ |
| أُسست السموات السبع والأرضون السبع على | | |
| ﴿قل هو اللّه أحد﴾ | أنس بن مالك | ٣٤٥٨ |
| إسقني أهون موجود وأعز مفقود (ث) | الشعبي | ١٩٨٢ |
| اسكت فإنّي سألت اللّه عزّ وجل أن يحييني حياة | | |
| الأغنياء ... (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٨٧ |
| اسكن، عليك نبي وصديق وشهيدان | أنس | ٢٦٩٤ت |
| أسلم أهل بدرٍ من خشية اللّه وأسلم (ث) | الحسن البصري | ٢٦٩٣ |
| أسلم سالمها الله | أبو هريرة | ٣١٥٣ت |
| أسلم عليٌّ رضي الله عنه وهو ابن سبع سنين | | |
| وقبض وهو ابن سبع (ث) | جعفر بن محمدعن أبيه | ٣٣٨٧ |
| اسم الله الأعظم في هاتين الآيتين: | | |
| ﴿اللّه لا إله إلا هو الحيّ القيُّوم﴾ و﴿إلهكم إله واحد﴾ | أسماء بنت يزيد | ١٥ |
| إسمع حديثاً أحدثك به ثم لا أكلمك بعد سنة (ث) | سفيان الثوري | ٩٧٠ |
| اسمعوا مني ما أقول، لا تعملون لغير اللّه وترجون | | |
| الثواب من اللّه (ث) | عطاء بن يزيد | ٢٧٩٢ |
| اشتكى بعض ولد محمد بن علي فجزع عليه | | |
| جزعاً (ث) | سفيان الثوري | ١٠٩٩ |
| اشتكى رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم فرقاه جبريل | | |
| فقال بسم اللّه | أبو سعيد | ٢٤١٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أستر الناس عذاباً يوم القيامة من | أبو هريرة | ٩٠ت |
| اشترى يوماً جارية نفيسة بمال عظيم، فطلب دابة | | |
| تحمل عليها (ث) | عبيد اللّه بن أبي بكرة | ١٩٠٥ |
| اشترى حُلّةً بألفٍ فكان يقوم فيها بالليل (ث) | تميم الدّاري | ٧٦١، ٣٣٨٢ |
| اشترى داراً من صهيب وشرط له أن يسكنها (ث) | عثمان بن عفان | ٢٦٢٣ |
| اشترى علي بن أبي طالب رضي الله عنه قميصاً | | |
| بثلاثة (ث) | ابن عباس | ٢٦٨ |
| أشتريه للشتاء (ث) | سفيان الثوري | ٢٧٩٩ |
| أشتكي ذنوبي ... أشتهي الجنّة ... (ث) | أبو الدرداء | ٥٠ |
| اشتكى يزيد بن عبد الملك شكاة شديدة وبلغه (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣٣٠١ |
| أشتهي أعزّ مفقود وأهون موجود (ث) | الشعبي | ٣٦٥ |
| أشتهي ضرساً طحوناً ومعدة هضوماً (ث) | أعرابي | ٣١٢٨ |
| أشد الأعمال ثلاثة إنصاف الناس من ... (ث) | بعض الحكماء | ١٠٢٦ |
| أشدد حيازيمك للموت إن الموت آتيكا (ث) | علي بن أبي طالب | ١٠٤١ |
| أشدُّ خلق ربك الجبال الرواسي والحديد تنخب به (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٥٩١ |
| أشدُّ الناس صُرَاخاً يوم القيامة رجلٌ سنَّ ضلالاً (ث) | الحسن البصري | ٣٣١٥ |
| أشد الناس عذاباً يوم القيامة من | أبو هريرة | ٩٠ت |
| أشد الناس عليك فقد أخوك الذي إن شاورته ..(ث) | الحسن البصري | ١٠٣٩ |
| أشد ما يمرُّ بالضيف إذا كان صاحب (ث) | بُنان الطفيلي | ١٧٤١ |
| أشرف العلماء من هرب بدينه من الدنيا واستصعب | | |
| قياده على الهوى (ث) | بعض العباد | ١٦٨٤ |
| أشعرت أنّي قد اشتريتك واشتريت الحائط (ث) | عبد الله بن جعفر | ٣٢٢٩ |
| أشكر الناس للّه عزّ وجل أشكرهم لعباده (ث) | حكيم من الحكماء | ٣١٠٨ |
| أشكر لمن أنعم عليك وأنعم على من شكرك (ث) | المغيرة بن شعبة | ٢٥٤٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أشكو إليك حوادثا أقلقنني (ث) | أحمد بن معدّل | ٣٠٥٥ |
| أشهد أن لا إله إلا الله ... (ث) | إياس بن معاوية | ٦٢٠ |
| أشهد أنك رسول الله، ما علمك الشعر وما ينبغي لك (ث) | أبو بكر الصديق | ١٣٧٣ |
| أشهد على خمسةٍ من أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم منهم معقل (ث) | الحسن البصري | ١٥١١ |
| أصاب أشعب الطمع ديناراً بمكة فاشترى به منه قطيفة (ث) | الأصمعي | ٢٤٨٥ |
| أصبحت موفوراً بالنعم، ورب يتحبب إلينا بالنعم (ث) | محمد بن واسع | ٢١٩٧، ٣٤١٢ |
| أصبروا فإنّه لا يأتيكم زمان إلا وما بعده أشدّ | أنس بن مالك | ٣٣٠ |
| أصبنا في خزائن هشام بن عبد الملك اثني عشر ألف (ث) | منذر بن أبي ثور | ٣١٠٩ |
| اصحب الناس بثلاثة، بالحذر ورفض الدالة والاجتهاد في النصيحة (ث) | بعض الحكماء | ١٨٥٥ |
| اصرف بصرك «لما سُئِل عن نظر الفجأة» ... | جرير بن عبد الله البجلي | ١٧٤٧ |
| اصلاح المعيشة الاجتهاد، وأعونها على الأمر ترك الذنوب (ث) | بعض الحكماء | ٢٧٤٨ |
| أصلح اللّه الأمير إنّه كانوا حبسوا في باطل فالحقُّ يسعهم (ث) | الأحنف بن قيس | ٨٣٠ |
| أصلح الله الأمير أنّه لم يبق إلاّ من لا حاجة لَه (ث) | الحسن البصري | ٣٠٣٩ |
| أصلح الله الأمير، يأمر لي بملء جرابي دقيقاً (ث) | أعرابي | ٢٣٢٧ |
| أصلح الله الأمير ركبت فرساً أشقر فحملني حتى (ث) | حارثة بن بدر | ١٦٤٢ |
| أصلح الله الأمير، لقد كان لي جدٌّ يُسمى الغضبان | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فسميت (ث) | الغضبان بن القبعثري | ٢٠٧٠ |
| أصلح الله الأمير لم أصن وجهي عن مسألتك فصن وجهك عن ردي (ث) | أعرابي | ٢٣٢٧ |
| أصل الزّهد الرِّضى عن الله عز وجل (ث) | الفضيل بن عياض | ٩٦٠، ٣٠٤٥ |
| أصّلنا أصولَنا على أنّا إذا رُزقنا آثرنا وإذا منعنا (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٤٤ |
| أصّلنا أصولنا على إنّا إذا رُزِقنا أكلنا وإذا مُنعنا (ث) | شقيق البلخي | ١٤٤ |
| أصول الشجرة الذهب والفضة وأعلاها، يا جرير (ث) | سلمان الفارسي | ٨٤٧ |
| أصيب على عمدان قصر سيف بن ذي يزن سطران مكتوبان (ث) | وهب بن منبّه | ٨٨ |
| أُصيب في خزائن بزرجمهر الحكيم مخدة من أدم (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٩٣ |
| أصيب على قبر إبراهيم الخليل صلى الله عليه وسلم مكتوباً خلفه في (ث) | وهب بن منبّه | ٨٣ |
| أضاءت لهم أحسابهم ووجوههم (ث) | لقيط بن زرارة | ٣٢٨٦ |
| أضحكني ثلاث وأبكيتني ثلاث، أضحكني مؤمل الدنيا (ث) | أبو الدرداء | ٥٦٥ |
| أضمر في القلب عتاباً له (ث) | أبو نوّاس | ٣٠٠٧ |
| اضمنوا لي اثنين أضمن لكم على الله الجنة | أبو حازم | ٢٠٥٨ |
| إطعام الطعام وإفشاء السلام وتوقّي الأدناس (ث) | أبو نصر الجهني | ٩٧٥ |
| أطلب العيش ... وما تعدون العيش فيكم (ث) | راهب | ٨٥٥، ٢٠١٤ |
| اطلبوا الرزق إلى الرحماء تعيشوا في أكنافهم (ث) | ابن عائشة، بعض الحكماء | ١٩٧٤، ٢٩٢٢ |
| اطلبوا العلم فإن أردتم الدنيا نلتم وإن أردتم (ث) | الزهري (ابن شهاب) | ٤٧٠، ٢٩١١ |
| أطلبني أول ما تطلبني عند الصراط فإن وجدتني وإلا | أنس بن مالك | ٣٠ |
| أطلبوا إلى اللّه حوائجكم واستغفروه لتفريطكم | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فإنّه (ث) | المأمون | ٢٩٩٣ |
| إطّلع اللّه تبارك وتعالى على قلوب الآدميين | | |
| فلم يجدْ (ث) | وهب بن منبه | ١٧٤ |
| اطلقوه واعطوه مئة ألف (ث) | مصعب بن الزبير | ٨٣٣، ٣٢٥٠ |
| أُطيل أم قصر (سُئِل عن الدنيا) (ث) | علي بن أبي طالب | ٤٢١ |
| أعاذل ليس البخل منه شجيّةً (ث) | ابن الجهم الكاتب | ٣٢٥٥ |
| أعبدّ الأربعة سليمان التيمي وأفقههم أيوب (ث) | الأصمعي | ١١٧٨ |
| اعتذر رجلٌ إلى أعرابي فقال له الأعرابي: | | |
| تخطّى (ث) | الأصمعي | ٢٧١٢ |
| اعتذر رجل إلى جعفر بن يحيى فقال له: قد أغناك(ث) | أبو نصر | ١٠٩٧ |
| اعتقاد المنن في رقاب الرّجال (ث) | حبى المدنية | ٥٤٩ |
| أعتق سبعة كُلُّهم يعذب في الله عز وجل (ث) | أبو بكر الصّديق | ١٦٦ |
| اعتمر علي فبينما هو يطوف | بعض أشياخنا | ١٠٢ت |
| اعتمر النبي صلى الله عليه وسلم أربع عُمَر، عُمرةً | ابن عباس | ١٧٥٣ |
| أعربنا في الكلام فلم نلحن ولحنّا في الأعمال .. (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٨٥١، ١٩٢٨ |
| إعرف حاجبك وكاتبك وجليسك فإنّ (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٢٥٨ |
| إعرف الحق لمن عرفه لك شريفاً أو وضيعاً (ث) | علي بن أبي طالب | ١٧٠٨ |
| أعِزَّ أمْرَ الله أين ما كنت يُعزك الله (ث) | الحسن البصري | ٢٥٨٩ |
| أعطى رسول الله صلى الله عليه وسلم أبا سفيان | رافع بن خديج | ٣٣٦٠ت |
| أعطى المؤلفة قلوبهم يوم حنين مئة مئة ... | رافع بن خديج | ٣٣٦٠ |
| أعطى الربيع فرساً ـ أو اشترى ـ فرساً بثلاثين ألفاً | بكر بن ماعز | ٥٧٥ت |
| أُعطيت أمتي خمس خصال في رمضان لم تعطه .. | أبو هريرة | ٢٩٩١ |
| أعطيت السورة التي ذكرت فيها | أنس | ١٤ت |
| أعظم النّساء بركة أيسرهنّ مؤنة ... | عائشة | ١٨٠٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أعظم الناس خطيئة يوم القيامة عند الله المثلث (ث) | بعض الحكماء | ١٦٩٠ |
| أعظم النّاس ذنباً أن يستخف الرّجل بذنبه (ث) | القاسم بن محمد بن أبي بكر الصديق | ٢٩٧٣ |
| اعفني يا أمير المؤمنين ... أنا لجوج حقودٌ حسود (ث) | الحجّاج بن يوسف | ٦٥٦ |
| اعفني يا أمير المؤمنين ... بسم الله الرحمن الرحيم هذا ما أوصى (ث) | يزيد بن حوشب | ٢٠١٨ |
| أعفو عن جاهلهم وأُعطي سائلهم وأسعى في (ث) | غُرابة الأوسي | ١٧٣٢ |
| اعلم إن أجور العاملين على من عملوا له فاعمل لمن شئت (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٦٨ |
| اعلم أن كُلُّ يومٍ يعيش فيه المؤمن فهو غنيمة (ث) | سعيد بن جبير | ٣٤٥ |
| اعلم أن من صلاح نفسك علمك بفسادها (ث) | وهيب بن الورد | ١٤٦٧ |
| أعلمتم أن الطمع فقرٌ وأنّ الإياس (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٥١ |
| اعلموا إيّها النّاس إن أكيس الكيْس التقي (ث) | أبو بكر الصديق | ١٢٩٠ |
| اعلموا إن العاقل يعترف بذنبه (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٦٢ |
| اعمل لا يأتيك الموت إلاّ ولسانك رطب ... | الأسود بلاغاً | ٣٩٤ |
| اعمل لهذا المضجع (قاله لابن أبي رواد) (ث) | المغيرةُ بن حكيم | ٤٥١ |
| أعوذ بالله أن يبقيني بين أظهركم حتى تدركني (ث) | عمر بن الخطاب | ١٥٣١ |
| أعوذ بالله من صباح إلى النار ... مرحباً بالحفظة(ث) | معاذ بن جبل | ١٨٧ |
| أعيدوا الوضوء فإنّ بعض ما تذكرون شرٌّ من الحدث (ث) | بشر بن الحارث | ٨٨٦ |
| أعيذك باللّه أن تقول ما لم يكن (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |
| أعيذك بالله أن تكون لاهياً عن الشكر محجوباً بالنعم صارفاً لما أوتيت (ث) | بعض العلماء | ٢٠٥٢ |
| اغد عالماً أو متعلماً أو مستمعاً أو محباً ... | أبو بكرة | ١٨٩٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إغسل يدك وتغدى معي (ث) | الحجّاج بن يوسف | ١٣٥ |
| أغسلوا قميصي وخيّطوه وأعيراني قميصاً أو ثوباً (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٦ |
| اغفر لي الذنوب التي تحل القسم، واغفر الذنوب التي تهتك العصم (ث) | علي بن أبي طالب | ٤٣٧ |
| أغلظ عبدٌ لسيّده فسكت عنه فقيل له في ذلك (ث) | مؤرج | ١٨٢٠ |
| اغمزيني يا سليمة فإنهما ما مشتا إلى الحرام (ث) | الهيثم بن جميل | ٢٦٩، ٢٠٣٥ |
| أفٌّ للبخل ولو كان ثوباً ما لبسته (ث) | أُم البنين | ٢٤٥٣ |
| أفأعجبكم قولي؟ فأنا أحق أن أعجب (ث) | إياس بن معاوية | ١٨٤٩ |
| أفتسمعون صواباً أو خطأً .. فالزيادة من الخير (ث) | إياس بن معاوية | ١٨٤٨ |
| اقضت مع أبي من عرفة فقال لي: يا بني لولا أني معهم، لرجوت أن يغفر لهم (ث) | عبد الله بن بكر | ٢٦٩٧ |
| أفضل الدعاء دعاء يوم عرفة | المطلب | ٤٩ت |
| أفضل الزهد إخفاء الزهد (ث) | وهيب بن الورد | ٧١ |
| أفضل العبادة أداء الفرائض واجتناب المحارم (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٥٨٦ |
| أفضل العقل معرفة الرجل نفسه وأفضل العلم وقوف الرجل عند علمه (ث) | بعض الحكماء | ١٧٢٥ |
| أفضل العِلم المعرفة (ث) | أُم الدرداء | ٢٢١، ١٨٧٨ ٣٤٣٩ |
| أفضل ما قلت أنا والنبيّون من قبلي يوم عرفة | علي بن أبي طالب | ٤٨، ٤٨ت |
| أفضل هذه الأُمّةِ بعد نبيِّها صلى اللّه عليه وسلم أبو بكر ... (ث) | علي بن أبي طالب | ١٤٩ |
| أفيعجز أحدكم أن يعمل سُبَعَ يومٍ حتى (ث) | كِرز | ٩١٧ |
| أقام على أُمِّهِ ولم يحجّ حتى ماتت (ث) | أبو هريرة | ٣١١٩ |
| أقبل شهادة القُرّاء في كل شيء إلاّ بعضهم ... (ث) | مالك بن دينار | ٢٩٤٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أقبلت فاطمة رضي الله عنها تمشي كأن مشيتها مشية رسول اللّه صلى الله عليه وسلم | عائشة | ١٣٦٢ |
| أقبلنا قافلين من بلد الروم نريد البصرة حتّى إذا كُنّا (ث) | عبد الواحد بن الخطاب | ٣٧٥ |
| إقتدوا بالّذين مِن بعدي أبي بكرٍ وعمر ... | عبد الله بن مسعود | ٣٥٢٨ |
| اقتُسِمَ مالُ الزّبير على أربعين ألف ألف (ث) | عروة بن الزبير | ٤٥٦ |
| أقتلت أخاً في السِّلم تظلمه (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٤٢٢ |
| إقرأ فِداك أبي وأُمي (قاله لعلقمة) ... (ث) | عبد الله بن مسعود | ٢٩٥٨ |
| اقرأوا القرآن تعرفوا به، واعملوا به تكونوا من أهله (ث) | عمر بن الخطاب | ١٢٩١ |
| إقرار الرجل بجودة عقله وإقراره بوفور عقله دليل على جهله (ث) | أنو شروان | ١٨٥٨ |
| أقرِئهُ منّي السلام وقل له: قد قبلنا منك (ث) | يحيى بن معين | ٣٢٣٢ |
| أقرب شيء الأجل وأبعد شيء الأمل وآنس شيء الصّاحب (ث) | خالد بن يزيد | ٩٩٤ |
| أقعد. فَحَدَّثَهُ بمئة حديث (ث) | سفيان بن عيينة | ٥٠٩ |
| اقض حاجته وأخرجه الساعة من الشام فإنّه (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٢٠ |
| أقل الاعتذار موجب للقبول وكثرته ريبة (ث) | بعض الحكماء | ٢٧٩١ |
| أقِلوا الخلاف على أمرائكم واعلموا أنّ كثرة (ث) | أكثم بن صيفي | ١٥٣٣ |
| أقول خمسين مرّة: اللّهم لا تمقتني | يوسف بن أسباط | ٢٠٠٩ |
| أقيمت الصلاةفجعل قوم يتدافعون، هذا يقدم هذا وهذا يقدم هذا (ث) | بعض أهل العلم | ١١٠٦ |
| أكافيء ولد سعد عن فعله برسول الله صلى الله عليه وسلم | الخيزران | ٢٢٣٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أحب الفتى ينفي الفواحش سمعه (ث) | إسماعيل بن زيد | ٣٠٤٠ |
| أكتب كيف شئت ... أكتب كيف شئت ... | أنس بن مالك | ٢٣٩٢ |
| أكثر عذاب القبر في البول | أبو هريرة | ٣١ت |
| أكثر ما دعا به رسول الله صلى الله عليه وسلم | علي بن أبي طالب | ٤٩ت |
| أكثر النّاس خطايا أكثرهم ذكراً لخطايا ... (ث) | محمد بن سيرين | ٢٤٠٦ |
| أكثر الناس لوماً على عطاء بن يزيد يسألونه (ث) | داود بن رشيد | ٢٧٩٢ |
| أكرم الصفايا أشدها ولهاً إلى أولادها (ث) | بعض الحكماء | ٢١٠٣ |
| أكرم ما يكون عليَّ صاحبي إذا كثرث أيادي عنده (ث) | عبيد الله بن الوليد الوصّافي | ٤٩٨ |
| أكره أن أقول رغداً زاهِداً فأُزكي نفسي ... (ث) | محمد بن واسع | ١٦٠٨ |
| أكره أن يأتيني أمر الله وأنا نائم (ث) | بشر الحافي | ٣٥٧٢ |
| أكلُّ المسلمين له مثل هذا (ث) | أعرابي | ٦١٤ |
| أكلفوا من الأعمال ما تطيقون (ث) | ( ) | ١٣٥٨ |
| أكلوا صفوها وتركوا كدرها (يعني أصحاب محمد صلى اللّه عليه وسلم ) (ث) | الحسن البصري | ٣٥١ |
| أكلي الحار وشربي القار، والإتكاء على شمالي (ث) | أعرابي | ٢٣٤٦/م |
| أكون في زمانٍ فأبكي منه فيأتي زمان فأبكي عليه (ث) | الحسن البصري | ٥٠٠ |
| الأن قد خرجت فسلني حاجة (ث) | هشام بن عبد الملك | ٨٠ |
| إلى الله أشكو حمد مالا أوتى وذم (ث) | عبد الله بن عروة بن الزبير | ٢١١٣ |
| إلى مئة سنة يبعث الله ريحاً باردة طيبة | بريدة | ١٩٨٩ت |
| [ألا أخبركم] يومين وليلتين لم تسمع الخلائق بمثلهما (ث) | أنس بن مالك | ١٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ألا أنبأكم بخير النّاس منزلة | ابن عباس | ٢١٥٥ |
| ألا ترجوا إلا الله (ث) | علي | ٢٩٣٠ |
| ألا ترونهم ـ يعني أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ـ قد جثوا على الركب (ث) | عتبة بن ربيعة | ١٥٣٤ |
| ألا تعود في الذنب (شفاء الذنوب) (ث) | الربيع بن خثيم | ٢٣١٧، ٢٩٨٤ |
| ألا تقولين كما قال الله عز وجل (ث) | أبو بكر الصديق | ١٣٧٦ |
| ألا وإن من المثلة أن ينذر الرجل أن يحجّ ماشياً (ث) | عمران بن حصين | ٥١٥ |
| ألا يا رسول الله كتب رجاءنا وكنت بنا براً ولم تكن جافياً (ث) | صفية بنت عبد المطلب | ٧٥٨، ٣٢٣٣ |
| البسوا ثياب الملوك وأميتوا قلوبكم بالخفية (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٣٠٢٩ |
| الحّ رجلٌ في الدّعاء: يا أرحم الرّاحمين نودى أن (ث) | أبو هريرة | ٣١٠١ |
| الذي قتل البَريّة وأهلك السباع في البّرية (ث) | الحارث بن كلدة | ٣١٢٩ت |
| الذي قتل عثمان بن عفّان رضي الله عنه رجل من مراد من أهل مصر (ث) | عيسى بن عبيد عن عَمّه | ٣٠٠١ |
| الذي يأكل بدينه (ث) | عبد اللّه بن المبارك | ٣٠٠ |
| الذي يذكر غلاء السعر عند الضيف (ث) | عبد اللّه بن المبارك | ٣٠٠ |
| الذي يغفر زللي، ويسدُّ خللي ويقبل ... (ث) | خالد بن صفوان | ٣٢٩٤ |
| الذين لا يظلمون وإذا ظُلموا لا ينتَصرون (تفسير قوله تعالى: ﴿وَبَشِّرِ المحسنين﴾ (ث) | عمرو بن أوس | ٤١٦، ٣٠٣١ |
| ألسُن تصف وقلوبٌ تعرف وأعمال تخالف (ث) | ابن السماك | ١٨٤١، ٣٠٦٦/م |
| ألقِيَ يوسف صلى اللّه عليه وسلم في الجُبِّ وهو ابن سبعة عشر سنة (ث) | الحسن البصري | ٢٨٠٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أَلَكِ زوج؟ (ث) | المغيرة بن شعبة | ٢٨٣٤ |
| اللّه أطعمك فَتِمَّ صومك .. اللّه سقاك (ث) | أبو هريرة | ٣١٩ |
| اللّه أعلم حيث يجعل رسالته (ث) | الزهري | ٢٤٩٩ |
| اللّه أكبر سبقنا والله رجلٌ كان أبوه (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٠٠٠ |
| اللّه اللّه ربي لا أشرك به شيئاً | أسماء بنت عميس | ٦٠ |
| اللّه تبارك وتعالى لا يُحاسِبُ أحداً على العطاء .. (ث) | الفرّاء | ٣٥٨٠ |
| اللّه مع القاضي ما لم يَجُرْ ... | عبد اللّه بن أبي أوفى | ٣٤٩٣ |
| اللّهم أجب دعوته وسدِّد رميته (لسعد بن أبي وقاص) | قيس بن أبي حازم | ٣٤٨ |
| اللهم اجعل أبا بكر معي في درجتي يوم القيامة | أنس بن مالك | ٢٢٣٨ت |
| اللّهم اجعلني مع صاحب النقب (ث) | مسلمة بن عبد الملك | ١٣٥٤ |
| اللهم ارزقني الكثير فإن القليل لا يكفيني (ث) | سعد بن عبادة | ١٣٧١ |
| اللهم استجب لسعد إذا دعاك | قيس بن أبي حازم | ٣٤٨ت |
| الله استجب لسعد | سعد بن أبي وقاص | ٣٤٨ت |
| اللّهم اشدد وطئتك على مضر اللّهم اجعلها | أبو هريرة | ٣١٥٢ |
| اللّهم اغفر لي خطاياي وذنوبي كُلّها اللّهم | أبو أيوب الأنصاري | ١٤٤٧ |
| اللّهم أقريب فأناجيك أم بعيد فأناديك (ث) | موسى عليه السلام | ٢٣٦٢ |
| اللّهم أقسم لنا من خشيتك ما يحول بيننا وبين معاصيك | عبد اللّه بن عمر | ٧٢٥ |
| اللّهم أكثر مال فلان وولده ... اللّهم اجعل رزق فلان | قتادة الأسدي | ٢٩٧٢ |
| اللّهم أكفِنا يده ولسانه (ث) | سعد بن أبي وقّاص | ٣٤٨ |
| اللّهم إنّ أهله وولده وعشيرته قد تبرّؤوا منه (ث) | أبو بكر الصديق | ٢٥٨ |
| اللّهم إنّ خوف النار منع النوم منّي فاغفر لي (ث) | عامر بن عبد الله | ١٥٤٧ |
| اللّهم إن فرقداً يسألك البلاء ونحن نسألك (ث) | الحسن البصري | ٦٤٢ |
| اللّهم إن كان سليمان وليك فبشره بخير (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّهم إن كان كاذباً فاعم بصره، وعجل فقره، | | |
| وأطل عمره وعرضه للفتن (ث) | سعد بن أبي وقّاص | ١٢٩٤ |
| اللهم إن كنت شهرتني في الدنيا | بشر بن الحارث | ٤٤٨ت |
| اللّهم إنّ ذنوبي لا تضرك وإن رحمتك (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٤١٤ |
| اللهم إن هؤلاء يغدون ويروحون | عامر بن عبد القيس | ٤٠٨ت |
| اللّهم أنت إله من في السماء وإله من في الأرض | | |
| لا إله فيهما غيرك (ث) | عيسى عليه السلام | ١٢٠٣ |
| اللّهم أنت القريب في علوك، المتعال في دنوك (ث) | عيسى عليه السلام | ٧٢٨ |
| اللّهم أنج عيّاش بن أبي ربيعة اللّهم أنج | أبو هريرة | ٣١٥٢ |
| اللّهم إنك اخترت من الأنعام الضانيةومن الطير | | |
| الحمامة (ث) | عزير | ٢٠٨٣ |
| اللّهم إنك تعلم إنّه لم يسنح لي أمران لك في | | |
| أحدهما رضاً ولي في الآخرة هوىً | بعض علماء البصرة | ١٨٨٤ |
| اللّهم إنك تعلم أنّي قد ارتكبت من الأمور (ث) | أبو جعفر المنصور أمير | |
| | المؤمنين | ٢١٠ |
| اللّهم إنك تعلم أني لم أجمعها إلا لأُصون بها | | |
| حسبي وديني (ث) | سعيد بن المسيب | ٢٢١١ |
| اللّهم إنه لم ينزل بلاءٌ من السماء إلا بذنب (ث) | العباس بن عبد المطلب | ٧٢٧ |
| اللّهم إنّي أستغفرك لما تبت إليك منه ثم (ث) | الأوزاعي | ٢٤١٧ |
| اللّهم إني أستغفرك من كل ذنب قوى بدني | | |
| بعافيتك (ث) | بعض الصالحين | ٦٧٥ |
| اللّهم إنّي أسألك بنعمتك السابغة (ث) | عبد الله بن مسعود | ٢٥٥٠ |
| اللّهم إنّي أسألك من فضلك الواسع رزقاً ... (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ١٦٨٣ |
| اللّهم إنّي أشكو إليك قِلَّةُ علمي بك (ث) | سلمة (؟) | ١٨٧٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّهم إنّي أعوذ بك أن أغضب كما ... (ث) | مؤرق العجلي | ١٤٤٤ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك أن تحسن برامقة ...(ث) | عمر بن ذّر | ١٤٣٥ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك من سهو عن حقك ... (ث) | زهير الباني | ٢٦٦٣ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك من شرّ زمانٍ ... (ث) | هرم بن حيّان | ٣٤٥ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك من طول الغفلة و ... (ث) | عمر بن هبيرة | ١٩٣٢ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك من الفقر إلاّ إليك (ث) | أعرابي | ١٦٦٣، ٣٢١٦ |
| اللّهم إنّي أعوذ بك من الفقر والقلّة والذلّة... | أبو هريرة | ٢٨٥٣ |
| اللّهم إنّي قد وهبت حقي فيما بيني وبينه فاغفر له من (ث) | عمر بن ذر | ٣٨٠ |
| اللّهم إنّي قد وهبت له ما قصر من بري (ث) | أعرابي | ٢٣٣٢ |
| اللّهم إنّي هو ذا أستحيي أن أسألك أن لا تجعله آخر العهد منّي (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٦٢ |
| اللّهم بارك فيها وفيمن أرسل بها ... | نقادة الأسدي | ٢٩٧٢ |
| اللهم بارك له في بيعه | عبد الله بن جعفر | ٢٠٧٢ت |
| اللّهم رب هذه الدعوة المستمعة المستجاب لها صل على محمد (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٥٠ |
| اللّهم ذهب قرني من هذه الأمة الحقني بهم ... (ث) | بريدة الأسلمي | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| اللّهم زِدْ في إحسان محسنهم وارجع (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٧٢٦ |
| اللهم سدد سهمه وأجب دعوته وحببه | أبو بكر الصديق | ٣٤٨ت |
| اللهم ضيف وحق لاضيف ما قد علمت | أعرابي | ٣٢٦٢ |
| اللّهم قد أمته فأمت عنّا سنّته ... | الحسن البصري | ٢٠٦٢ |
| اللّهم قِني عثرات الكرام (ث) | عمرو بن معاوية العقيلي | ٢٤٠٥ |
| اللّهم هب لنا يقيناً يهون به علينا مصائب ... (ث) | طلق بن حبيب | ٢٩٤٠ |
| اللّهم هب لي حمداً ومجداً لا مجد إلا بفعال (ث) | قيس بن سعد بن عبادة | ٢٢١٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّهم هون عليّ وعلى من معي إنه ليس نفس (ث) | سفان الثوري | ٢٤٥١ |
| اللّهم وما تلك الحسنة؟ (ث) | داود عليه السلام | ١٧٤٩ |
| اللّهم لا تجعله آخر العهد منّي (كلّما رفع من موقع) (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٦٢ |
| اللّهم لا تدخلنا النّار بعد أن أسكنت قلوبنا توحيدك (ث) | الفضل الرّقاشي | ٥٤٢ |
| اللّهم لا تشمت بنا أعدائنا من الأمم (ث) | المهدي | ١٠٨٠ |
| اللّهم لا تؤاخذني بتقصيري عن عظيم خطيئتي فاغفر لي (ث) | بكّاء بني إسرائيل | ١٦٤٤ |
| ألم تر أن اللّه أظهر دينه وسعد بباب القادسية معصم (ث) | رجل من بجيلة | ٣٤٨ |
| ألّا على معن فقولا لقبر... (في رثاء معن ابن زائدة) (ث) | مروان بن أبي حفصة | ٣٤١٨ |
| إلهي إذا ذكرت خطيئتي ضاقت علي الأرض برحبها | داود عليه السلام | ٢٨٨ |
| إلهي انقطعت الرغائب دونك وكلّت الألسن (ث) | أبو خالد (يزيد) | ٢٦١٣ |
| إلهي ما جزاء من بكى من خشيتك حتّى تسيل دموعه على وجهه (ث) | داود عليه السلام | ٢٨٧ |
| إلهي ما هذه النعمة الجليلة العظيمة التي قد استوعبت عملي (ث) | داود عليه السلام | ٢٢٩١ |
| إلهي همّك خالف عليّ الهموم وخالف بيني (ث) | داود الطائي | ٦٧٦ |
| إليكم عنّي فإنّي عاهدت اللّه ألا أخلو بملكٍ (ث) | خالد بن صفوان | ٢٩٠٣ |
| أمّا أبي فلا أُريد به بديلاً (ث) | الكُميت | ٣٤٧٧ |
| أمّا أنا فلست أحفظه فإن كان أبو معاوية (ث) | سفيان الثوري | ٢٦٢٥ |
| أمّا أنت فقد أبقيت شيئاً وما يعلم اللّه أكثر (ث) | الحسن البصري | ٣٣٣٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أمّا أنت يا أعرابي فقد نصحت وأرجو أن اللّه (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٦٦٣ |
| أمّا أوّل أشراط الساعة فنارٌ تحشرهم من ... | أنس بن مالك | ٧٢٤ |
| أمّا بعد فإن اللّه تبارك وتعالى لما أدخل (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٦٨٨ |
| أمّا بعد، فإن الدار التي أصبحنا فيها دار بلاء محفوفة بالفناء (ث) | الفضل بن عباس | ١٠٥٥ |
| أمّا بعد فإنّ الدنيا عدوة أولياء اللّه، وعدوة أعداء اللّه (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٦٨٠، ٣٠٩٠ |
| أمّا بعد فإنّ الدّنيا قد أدبرت وآذنت بوداع ... (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٩٣ |
| أمّا بعد فإنّ للنّاس نفرة عن سلطانهم فأعوذ بالله (ث) | عمر بن الخطاب | ١١٩٨ |
| أمّا بعد فإنّكم لم تخلقوا عبثاً ولن تتركوا سدىً (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٩٧٢ |
| أمّا بعد، فإنّه لم يعدمك من معروفك عندنا أمران (ث) | عمرو بن مسعدة | ٧١٢ |
| أما بعد فإنه من أكثر ذكر الموت (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٧١٧ت |
| أمّا بعد فإنّي أوصيك بتقوى اللّه والعمل بما أعلمك (ث) | حذيفة المرعشي | ١٣٨٧ |
| أمّا بعد فحصّنها بالعدل ونقّ طرقها من الظلم (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٢٨٧ |
| أمّا بعد فلا يطولنّ حجابك عن رعيتك فإنّ احتجاب الولاة عن الرعية (ث) | علي بن أبي طالب | ٩٨٧ |
| أمّا بعد يا أخي إنّي أُنبئت أنّك اشتريت خادماً (ث) | أبو الدّرداء | ٢٤٠٨ |
| أمّا بعد يا أخي لأن أبيت ليلة على ساحل البحر (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٧٤٩ |
| أمّا بعد يا أمير المؤمنين: فإنّ النّاس قد أصابوا من الخير (ث) | عبد الحميد بن عبد الرحمن | ٢٦٨٨ |
| أمّا ثوابك فعلى اللّه عزّ وجل (ث) | أبو ذرٍّ | ٢٨٥٩ |
| أمّا زهدك في الدنيا فقد تعجلت الراحة | أثر إلهي | ٩٦٢، ٣٠٤٤ |
| أمّا سمعتم قول أميّة بن أبي الصّلت حيث أتى ابن | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| جدعان يطلبُ نائلة (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٩ |
| أما علمت أنها من العرب مذلة (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢/٣٠٦٧ |
| أمّا القبور فإنّهنّ أوانس (ث) | سعيد الجرمي | ٣٢٠٠، ٧٩٤ |
| أمّا قولك ما رأيت النّاس هابوا أميراً هيبتهم لك (ث) | الحجّاج بن يوسف | ٢٧٣٠ |
| أمّا ما ذكرت من أن يكون العبد عارفاً باللّه عارفاً بنفسه (ث) | حذيفة المرعشي | ١٤٥٦ |
| أمّا ما ذكرت من الجود فذلك لمعرفتنا من الله (ث) | أبو إدريس الخولاني | ١٧٣٣ |
| أمّا المحسن فكالغائب يقدم على أهله (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |
| أمّا من صديقٍ فلا أكره ذلك وأمّا (ث) | مسعر بن كدام | ٢٤٨١ |
| أمّا من ناصح فنعم (ث) | مسعر بن كدام | ٢٥٤٧ |
| أمّا هذه النّعال فإنّي رأيت رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يلبسها ويتوضأ فيها | ابن عمر | ٣٤٦٢ |
| أما والله ما سألتُ الدنيا من يملكها فكيف أسأل الدنيا (ث) | سالم بن عبد الله بن عمر بن الخطاب | ٨٠ |
| أما يستحي أحدهم أن يلبس عباءة بثلاثة دراهم (ث) | أبو سليمان الداراني | ١١٢٢ |
| أما يستحي أحدهم أن يلبس عباءة أسقاطها فيها الدراهم (ث) | أبو سليمان الداراني | ١١٢٢ت |
| أمتار لأهلي طعاماً (ث) | الشماخ بن ضرار | ٥٥٦ |
| أُمتي أمتي ... | سفيان الثوري | ١٠٨١ |
| أمُدَبِّرٌ غير الله تريدون؟ ... (ث) | الفضيل بن عياض | ٥٨١ |
| أمر بقتل الكلاب إلا كلب ماشية أوصيد | ابن عمر | ٣١٧٥ |
| أمر الحجّاجُ ابن القرّية أن يأتي هند بنت أسماء (ث) | الأصمعي | ٢٣٣١ |
| آمرك بما أمرني به أبي وأنهاك عما نهاني (ث) | المنذر بن ماء السماء | ٢٣٢٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أمرنا رسول اللّه أن نغتسل يوم الجمعة ... | ابن عمر | ٣٥٦٠ |
| امرىء القيس قائد الشعراء إلى النار | أبو هريرة | ١٠١٦ت |
| امسح يدك بإستك أو ذرْ (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٨٥ |
| أمسك أيّها الرّجل فوالله لقد تلمظت بمضغةٍ (ث) | قتيبة بن مسلم | ٢١٧٢ |
| أمشِ بداءك ما حملك فإنّه رُبّ دواءٍ يورث الداء (ث) | ابن حذيم | ٦٣٦ |
| أمطر قبر هرم | قتادة | ٣٤٦ت |
| أمعك شيء ... يا بقية ما أغفل النّاس عمّا أنا فيه (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٢٤٢ |
| إملأ لها القصعة دنانير (ث) | هارون الرشيد | ٢٦٠٦ |
| أملك الناس لنفسه من كتم سره من صديقه وخليله كيلا يتغير الذي بينهما (ث) | أكثم بن صيفي | ٨٨٨ |
| إن أبا أيوب الأنصاري وهو خالد بن زيد غزا (ث) | علي بن أصمع | ١٢٥٧ |
| إن أبا بكر الصديق رضي اللّه عنه أعتق سبعة (ث) | الأصمعي | ١٦٦ |
| أن أبا بكر الصّديق رضي الله عنه صُلّي عليه (ث) | عروة بن الزبير | ٢١٧٩ |
| إن أبا بكر الصديق رضي الله عنه كان كثيراً ما يتمثل بهذا البيت (ث) | ثابت البناني | ١٣٧٢ |
| أن أبا بكر الصّديق رضي اللّه عنه لما مات حُمِل على السرير (ث) | البجلي | ١٤٨ |
| أن أبا بكر وعمر صلي عليهما في المسجد تجاه القبر | المطلب بن عبد الله بن حنطب | ٢١٧٩ت |
| إن أبا الدرداء اشتكى، فدخل عليه أصحابه (ث) | معاوية بن قرة | ٥٠ |
| إنّ أبغض النّاس إليّ أن أظلمه رجل لا ... (ث) | أبو الدرداء | ١٠٠٨ |
| إن أحببت أعدته عليك (ث) | قتادة بن دعامة | ٢٩٠٢ |
| إنّ إحدى عينيه ذهبت وهو يعشو بالأخرى أي (ث) | سعيد بن المسيب | ٩٣٢ |
| إن أحسن النّاس عيشاً من حَسُنَ عيش النّاس (ث) | وهب بن منبه | ١١١٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن الأحنف بن قيس كان يجالسه رجل يطيل الصمت (ث) | الأصمعي | ٥٣١ |
| إن أخبرتني ما قرابة ما بين أولادهما إذا وُلِدَ (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٣٣٨ |
| إن أخوف ما أخاف عليكم اثنتين (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٩٣ |
| إن إدريس أقدم من نوح بعثه الله إلى قومه (ث) | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٣٣٦١ |
| إنّ أدنى أهل الجنة منزلةً لمن يسير في ملكه ألف (ث) | مجاهد | ٧٧ |
| إن أدنى مقعد أحدكم من الجنة | أبو هريرة | ٧٩ت |
| إن أردت أن تسكن غداً معي في حظيرة القدس فكن في الدنيا وحيداً | أثر إلهي | ١٢٠٢ |
| إن أرواح الشهداء في طير بيض يأكلن من ثمر الجنة (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا تقولوا لمن يقتل في سبيل الله أموات بل أحياء﴾) (ث) | قتادة | ١٣٩٢ |
| إن الأرض لا تقدس أحداً، إنما يقدس المرء عمله (ث) | سلمان الفارسي | ١٢٣٩ |
| إن استطعت أن تعرف ولا تعرف وتسأل (ث) | ابن محيريز | ٩٥٧ |
| إن أسماء كنائن نوح إذا كُتِبت في زاويا البيت (ث) | هشام بن محمد عن أبيه | ٢١٣٥ |
| إن أشد ما أتخوف عليكم خصلتين | علي بن أبي طالب | ١٢٩٣ت |
| إن أشدّ النّاس عذاباً يوم القيامة عالم لم ينفعه .. | أبو هريرة | ٩٠ |
| إن أصدق بيتٍ قالته العرب قول ... | أبو هريرة | ١٣٧٨ |
| إن أعرابياً ذكر رجلاً خائناً فقال: إنّ الناس ليأكلون أماناتهم (ث) | الأصمعي | ٢٣٣٦ |
| إن أعرابياً رأى أخاً له في أمرٍ فقال له (ث) | الأصمعي | ٣٥٠٧ |
| إن أعرابياً لقي رؤبة بن العجّاج فقال له: ما اسمك؟ (ث) | الأصمعي | ٢٣٠٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن أعمالكم تعرض على أقاربكم وعشائركم | أنس بن مالك | ٢٠٩٥ت |
| إن العرش ثقيل على حمله العرش من أول النهار (ث) | خالد بن معدان | ٢٣ |
| إنّ أغبط أوليائي عندي يوم القيامة مؤمن تقي خفي | أثر إلهي | ١٧٥٦ |
| إنّ أفواهكم طرق للقرآن فطهّروها بالسواك | علي بن أبي طالب | ٦٧٩ |
| إن أقواماً جعلوا خشوعهم في لباسهم وكبرهم في صدورهم (ث) | الحسن البصري | ٣٠٣٠ |
| إنّ أقواماً لبسوا هذه المطارف الخزّ والعمائم الرِّقاق (ث) | الحسن البصري | ٦٤٥ |
| إن أكثر الناس حساباً يوم القيامة الصحيح الفارغ (ث) | معاوية بن قرة | ١٣٢٥ |
| إن أكثم بن صيفي قال: ما يسرّني أنّي أنزل دار معجزة (ث) | أيوب السختياني | ٥٠٣ |
| إنّ أكيس الكيّس التقي وإن أعجز العجز الفجور (ث) | رجل | ٤٨٠ |
| إن الذي يخاف من شرّ الدنيا أعظم من الذي (ث) | ابن السماك | ١٣٦٦ |
| إن الله احتجب التوبة عن كل صاحب بدعة | أنس | ٢٨١٦/م |
| إن الله أعطاني ثواب من آمن به من يوم خلق الله | علي بن أبي طالب | ٣٥٦٣ |
| إن الله تبارك وتعالى أخذ على العلماء ليبيننه... (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |
| إن الله تبارك وتعالى إذا أراد ذكر كرامة عبد أصابه ...(ث) | وهيب بن الورد | ٢٨٦٥ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى أسس الأرضين على ﴿قل هو الله أحد﴾ (ث) | كعب الأحبار | ١٣ |
| إن الله تبارك وتعالى أطلع إلى عباده ليلة النصف | راشد بن سعد | ٩٤٤ |
| إن الله تبارك وتعالى أعطاك الدنيا بأسرها (ث) | بعض الزهاد | ٦١٢ |
| إن الله تبارك وتعالى أغضب ما يكون (ث) | إبراهيم التيمي | ٤٢٤/م، ٢٩٢٤/م |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن الله تبارك وتعالى جعل الروح والفرج في اليقين (ث) | محمد بن علي | ٢٩٣٦ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى حين أهبط آدم صلى اللّه عليه وسلم من الجنة (ث) | أبو موسى الأشعري | ٢٨٠٨ |
| إنّ اللّه تبارك وتعالى خلق الخلق ثم جعلهم في ... | عبد الله بن عمرو | ٢٢٢٠ |
| إنّ الله تبارك وتعالى خلق الخلق فلم يستعن على ذلك أحداً ... | جابر بن عبد الله | ٨٤٥ |
| إن الله تبارك وتعالى خلق خلقاً لحوائج الناس | أبو هريرة | ٣٤٨٢ |
| إنّ الله تبارك وتعالى خلق العينين لينظر بهما العبد إلى (ث) | أحمد بن رزين الزاهد | ١٠٠ |
| إن الله تبارك وتعالى رفع بهذا القرآن أقواماً، وأنا ممّن (ث) | الأعمش | ٥٠٨ |
| إن الله تبارك وتعالى فاتح عليكم الدّنيا فلا تأخذنّ (ث) | أبو بكر الصديق | ١١٢٣ ٢١٩١ |
| إن الله تبارك وتعالى قال وجّهت إلى عبدٍ من عبيدي | أنس بن مالك | ١٠١ |
| إن الله تبارك وتعالى قال لشعيا: قم في قومك أوحى (ث) | وهب بن منبه | ١١١٩ |
| إن الله تبارك وتعالى قرأ طه ويس قبل أن يخلق ... | أبو هريرة | ١٤ |
| إن الله تبارك وتعالى لم يرض أن يجعلك .. (ث) | شبيب بن شيبة | ١١٨٢ |
| إن الله تبارك وتعالى لم يرضك لي فأوصاك بي (ث) | زيد بن علي بن الحسين | ١٠٩٣ |
| إن الله تبارك وتعالى ليرضى عن العبد ... | أنس بن مالك | ٣٤٩٠ |
| إن الله تبارك وتعالى ليمتحن قلب العبد (ث) | أنس بن مالك | ١٧٩٥ |
| إن الله تبارك وتعالى يبسط كفّه للمؤمن فيقول: يا ابن آدم (ث) | ابن مسعود | ٢٧٧٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن الله تبارك وتعالى يبعث يوم القيامة ملكاً إلى (ث) | أبو موسى الأشعري | ١٥٢٣ |
| إن اللّه تبارك وتعالى يتحنّن على الموحدين فيبعث ملكاً | جابر بن عبد الله | ٨٤٥ |
| إن الله تبارك وتعالى يزوي الدنيا عن وليّه (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٣٥١ |
| إن الله تبارك وتعالى يوقف داود عليه السلام عند ساق العرش (ث) | مالك بن دينار | ٧٠٥ |
| إن اللّه تبارك وتعالى يوقف عبده يوم القيامة فيعطيه صحيفته (ث) | عبد اللّه بن حنظلة الغسيل | ١٦١٤ |
| إن الله تعالى هو السلام | أبو هريرة | ٢٧٨١ت |
| إن الله تعالى يقول: يا أيها الناس (ث) | أبو هريرة | ١٦١٦ت |
| إن الله تعالى ينزل ليلة النصف من شعبان | عائشة | ٩٤٤ت |
| إنّ الله خلق السموات والأرض في ستة أشهر (ث) | وكيع بن أبي الأسود | ٣٢٥٩ |
| إنّ الله سبحانه جعل الحقّ على لسان عمر وقلبه... | أبو هريرة | ١٩٨ |
| إن الله عز وجل أعد لعباده | أبو سعيد الخدري | ١١٠٢ت |
| إنّ اللّه عزّ وجلّ أمرني أن أقرأ عليك القرآن.... | أنس بن مالك | ٣٥٥٣ |
| إن الله عز وجل ليؤيد الدين بالرجل الفاجر ... | عبد الله بن مسعود | ٣٤٩٦ |
| إنّ الله عزّ وجلّ مقمصك قميصاً أو مسربلك سربالاً.. | عائشة | ٢٨٠٥، ٢٨٢ |
| إنّ الله عزّ وجل ملأ الدنيا باللّذات وحشاها بالآفات (ث) | ابن السماك | ٣/٣٠١١، ٣٤٣١ |
| إن الله عز وجل يريد أن يقيم الساعة أغضب | إبراهيم التيمي | ٤٢٤/م ت |
| إن الله عز وجل يقول إذا ابتليت عبدي | أنس | ١٧٨٠ت |
| إن الله عز وجل يقول: وعزّتي وجودي وارتفاعي في علو مكاني (ث) | أنس بن مالك | ٣٤١١ |
| إن الله وملائكته يصلون على الصّف الأول... | البراء بن عازب | ١٨٧٦ |
| إن الله يبغض أهل البيت اللحميين والحبر السمين (ث) | كعب | ١١٧٤ت |
| إن الله يطلع إلى خلقه في النصف من شعبان | معاذ بن جبل | ٩٤٤ت |
| إن أمّ الحسن البصري كانت مولاة لأم سلمة (ث) | قتادة | ٢٤٣٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن أمّ الدرداء سألتني أن اشتري لها خادماً وكنت (ث) | أبو الدرداء | ٤٨٢ |
| إن أمّ المؤمنين عائشة رضي الله عنها كانت عند أبي بكر رضي الله عنه (ث) | محمد بن سيرين | ١٣٧٥ |
| إن الإمام العادل ليسكِتَ الأصوات عن ... (ث) | أبو عبيدة بن عبد الله | ٢٣٢٨ |
| إن امرىء ذهبت ساعة من عمره لغير ما خلق له لحريٌّ أن يطول عليها حسرةً يوم القيامة (ث) | الحجّاج بن يوسف | ١٨٤٠ |
| إنّ امرأة حملت له مرّةً فأقامت خمس سنين (ث) | ابن عجلان | ٣٣٥٣ |
| إن أمكنت عدوي من ظهري فلا أبقى الله عليه إن أبقى علي (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٦١ |
| إن الملائكة لتعجب من خفة ذكر الموت على ألسنة بني آدم (ث) | أيوب السختياني | ٣٠٩٦ |
| إن الميت ليسمع خفق نعالهم إذا ولوا عنه | عبد الله بن عباس | ٣٣ |
| إن أمير المؤمنين قد خلا في بيتٍ يدعو إذا حَزَبَهُ (ث) | الحسن بن علي بن أبي طالب | ٤٣٧ |
| إن أهل الجنة ليتراءون أصحاب الغُرف من فوقهم ... | أبو سعيد الخدري | ٣١٥٨، ٣١٥٩ |
| إن أهل الجنة ينظرون إلى الله تبارك وتعالى في (ث) | ذو النون المصري | ٧٤ |
| إن أهل الدرجات العُلى ليتراءون من أسفل منهم ... | أبو سعيد الخدري | ٣٤٨٦ |
| إن أهل النار ليأكلون أيديهم إلى المناكب من (ث) | أبو مسلم بن كعب | ١٥٤٢ |
| إن أهل النار ليدعون مالك أربعين عاماً، ثم يرد عليهم (ث) | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٢٢٩٣ |
| إن أول الآيات خروجاً طلوع الشمس من مغربها | عبد الله بن عمرو | ٢١٥٦ت |
| إن أول خلق الله عزّ وجل يحاسب يوم القيامة | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الدّواب (ث) | يحيى بن جعدة | ٣١٠٣ |
| إن أول ما خلق الله عز وجلّ القلم والنون .. (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٢٥٠ |
| إن أول شيء خلقه الله عز وجل من خلقه القلم | عبد الله بن مسعود | ١٢٥٠ت |
| إن أول شيء خلقه الله عز وجل القلم | عبد الله بن عباس | ١٢٥٠ت |
| إن أول ما يُسأل العبد يوم القيامة أن يقال له ... | أبو هريرة | ٧٥ |
| إن أولى النّاس بي أكثرهم عليَّ صلاة ... | عبد الله بن مسعود | ١٢٨ |
| إن البخيل الذي ذكرت عنده فلم ... | الحسين بن علي | ١٠٤٨ |
| إن بعض العمال من أهل البصرة قدم من عمل ومعه | عبد الله بن مسلم عن | |
| مال كثير خان فيه السلطان | بعض أصحابه | ١٤٧٢ |
| إن البغلة بنت الحمار وأنت تركب الفرس ونبيك | | |
| صلى اللّه عليه وسلم كان يركب الجمل | الجاثليق | ٢/٢٤٣٥ |
| إن البلاء موكل بالقول (ث) | عبد الله بن مسعود | ٧٧٥/ت |
| إن البلاء موكل بالمنطق (ث) | عبيد بن سرية الجرهمي | ٧٧٥ |
| إن بني إسرائيل كانوا يقتلون في اليوم ثلاث (ث) | عبد الله | ٢٦٩٩ |
| إن بني إسرائيل لم يكن فيهم مَلكٌ إلا ومعه رجل (ث) | شُريح بن عُبيد | ٤٥٩، ٢٩١٦ |
| إن بني غِفار قربوا عجلاً ليذبحوه فنادى العجل (ث) | مجاهد | ٢٢٤٤ |
| إن بين يدي منكبي الخازن من خزنة جهنم مسيرة | | |
| سنة (ث) | كعب الأحبار | ٣١٤٥ |
| إن بيني وبين العرش سبعين حجاباً، لو دنوت منه | | |
| لاحترقت (ث) | جبريل | ٦٥ |
| أن تأتيني أحدثك عن إبراهيم عن علقمة عن ... (ث) | أبو حمزة السكري | ٣٢٦ |
| إن تقوى ربّنا خير نفلٍ (ث) | لبيد بن ربيعة | ٣٤١٩ |
| إن تميم الداري اشترى حلة بألف درهم | ثابت | ٧٦١ت |
| إن الثوب يستريح إذا طوي | سفيان الثوري | ٢٠١٥ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن جبريل عليه السلام أتاني فقال: إن عفريتاً من الجن.. | الحسن البصري | ٢٨٧٠ |
| إن جبريل عليه السلام هبط على يعقوب عليه | مدلج بن عبد العزيز | |
| السلام ... (ث) | عن شيخ من قريش | ٢٨٩١ |
| إنّ الجمّاء لتقتصُّ من القرناء يوم القيامة | عثمان بن عفان | ١٠٦٧ |
| إن الحاجة لتعرض للرجل قبلي فأبادر إلى (ث) | جعفر بن محمد | ٦٩٩ |
| إن الحبشة لما قدمت مكة أخذت في طريقها ... (ث) | عوانة بن الحكم | ١٢٥٣ |
| إن حدث بهذا الغلام حدث فأنا صاحِبه أوطأته (ث) | خالد بن عبد القسري | ٢١٦٩ |
| إن الحديث له شجون (ث) | ضبّة بن أُد | ٥٣٢ |
| إن الحرّة لا تضاجع زوجها بملىء بطنها ... (ث) | زينب بنت الزبير | ٢٢٨٤ |
| إن حسن الصوت يزين القرآن ... | عبد الله بن مسعود | ٢٩٥٨ |
| إنّ حقّاً أوسنةً إذا جلس الرجل إلى الرجل وهو | عبد الله بن عمر | ٣٣٩٢ |
| يصلي (ث) | | ١٠٠٧ |
| إن الحكماء ضربوا التذكر بالتفكر والتفكر ..(ث) | الحسن البصري | ٢٦٧٢ |
| إن الحِكمة ليست عن كبر السِنّ ولكنه عطاء ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٨٩ |
| إن الحمار إذا زيد في علفه زيد في عمله (ث) | سفيان الثوري | ٣٤٠ |
| إن حوضي ما بين عدن إلى عمان البلقاء، ماؤه ... | ثوبان مولى رسول الله | ٢٠٣٣ |
| أنّ خاتم علي بن أبي طالب رضي الله عنه كان من | | |
| وَرِقٍ ... (ث) | محمد ابن الحنيفة | ٦٠٦، ٣٣٤٥ |
| إن خصلتين خيرهما الكذب لخصلتي سوء ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٣٠٧ |
| إن الخضر عليه السلام قال لموسى صلى الله عليه | | |
| وسلم: يا موسى؛ إنّ الناسَ معذّبون (ث) | وهب بن منبه | ١٧٨٣ |
| إن خير أكحالكم الإثمد فإنّه يجلوا البصر | ابن عباس | ١٥١٢ |
| إن خير المال ما وقى العرض (ث) | الحسين بن علي | ١١٧١ |
| إنّ خير هذه الأمة بعد نبيّها صلى الله عليه وسلم | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أبو بكر وعمر رضي الله عنهما (ث) | علي بن أبي طالب | ١٥٠ |
| إن الخيمة دُرَّةٌ مجوفة طولها في السماء | عبد الله بن قيس | ١٤١٣، ٢٧٨٦ |
| إن داود عليه السلام أتاه ملك الموت ... (ث) | يوسف بن أسباط | ١٨٦٤ |
| إن داود عليه السلام جعل خطيئته في كفّه (ث) | مجاهد | ١٢٦٩ |
| إن داود عليه السلام نقش خطيئته في كفّه لكي (ث) | عطاء الخراساني | ١٢٦٨ |
| إن داود نظر بقلبه إلى ما بين يديه في آخرته (ث) | ابن السماك | ٥٤٧ |
| إن الدّنيا قد ارتحلت مدبرةً وإن الآخرة مقبلة ولكل (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٧٧ |
| إن الدنيا كانت ولم أكن فيها، وتكون ولا أكون فيها (ث) | عبد الله بن عتيق الكلابي | ٢٧٠ |
| إنّ الدّين بدأ غريباً وسيعود غريباً كما بدأ ... | أبو هريرة | ٨٦٤ |
| إن ذا القرنين أتى مغرب الشمس فرأى قوماً (ث) | وهب بن منبه | ١٢٠١ |
| إنّ ذاك من أحسن ما تعمل أن تحلله (ث) | مخلد بن الحسين | ٣٥٣٩ |
| إن ذكر الموت قد شغلني عن الحديث، إن الموت (ث) | الرّبيع بن أبي راشد | ٣٠٩٨ |
| إن ذا القرنين أتى على أمة من الأمم | عبد الرحمن بن عبد الله الخزاعي | ١٢٠١ت |
| إنّ الرّجل لتعرض عليه ذنوبه يوم القيامة فيمر (ث) | عروة بن عامر | ٢٤٦٤ |
| إنّ الرّجل ليأتيني بكتب من الأدب مما (ث) | يحيى بن خالد | ١٠٥٩ |
| إنّ الرّجل ليذنب الذنبَ فيحرم به قيام الليل (ث) | الحسن البصري | ٤٠٠، ٣٣٨١ |
| إن الرجل ليسبَح في عرقه حتى يبلغ أنفه (ث) | عبد الله بن مسعود | ٢٠٣٧ت |
| إن الرجل ليعمل السيئة ما عمل حسنةً قط أنفع (ث) | أبو حازم | ٢١٦٢ |
| إن الرجل ليؤمر إلى النار فيبتدره مئة ألف (ث) | كعب الأحبار | ١٦١٥ |
| إن رجلاً أتى بعض الزّهاد وقال له الزاهد ... (ث) | خزيمة أبو محمد | ١١٢٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إنّ رجلاً أُخِذَ أسيراً فأُلقي في جبٍ (ث) | الحكم بن هشام | ٢٤١٩ |
| إنّ رجلاً أُسِرَ وكان فيه تقىً وورع فألقي (ث) | الحكم بن هشام عن أبيه | ٢٨١٤ |
| إنّ رجلاً تبيتُ هذه في بيته لا يدري ما يُطرقه (ث) | طلحة بن عبيد اللّه | ٤٨٤ |
| إنّ رجلاً ظهرت به خنازير وبلاء في جسده فخرج | | |
| إلى البادية (ث) | طارق بن شهاب | ٢٢٢٨ |
| إنّ رجلاً كان فيمن خلا من الزمان وكان عاقلاً | | |
| لبيباً (ث) | الزُّهري | ٤٨٠ |
| إنّ رجلاً كان يكتب للنبي صلى اللّه عليه وسلم وكان | | |
| قد قرأ البقرة | أنس بن مالك | ٢٣٩٢ |
| إنّ رجلاً مرَّ بقومٍ فأثنوا عليه فلما خلا به (ث) | عطاء السليمي | ٢٠٧٣ |
| إنّ رجلاً من قريش عظيم القدْر في سالف الدهر | ابن السماك | ١٠٣٦، |
| طالب (ث) | | ٣١٨٧ |
| إن رجلاً من المطوّعةِ قال: رأيتُ ببلاد الهند | | |
| شجراً (ث) | كليب بن وائل | ٣٢٣١ |
| إن رجلاً هرب من الحجاج فمر بساباط فيه كلب | | |
| بين (ث) | مبشر بن بشير | ٢١١١ |
| إن رجلاً وقف على قومٍ فقال: من عنده ضيافة (ث) | ليث (؟) | ١٦٤٨ |
| إن رجلين تواخيا فتعاهدا إن مات أحدُهما قبل (ث) | يحيى بن أيوب | ٣٠٢٤ |
| إن رجلين خرجا في سفرٍ فوقع عليهما اللصوص | | |
| فقاتل (ث) | أبو عبيدة | ٩٣٨ |
| إنّ الرّحم معلقة بالعرش وليس الواصل ... | عبد اللّه بن عمرو | ٢٠٠٣ |
| إن الرزية لا رزية مثلها (ث) | الفرزدق | ٣٠٨٨ |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم أمر بالصدقة | عبد الله بن عمر | ٢٢٣٩ |
| أن رسول الله صلى اللّه عليه وسلم وأبا بكر وعمر | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وعثمان كانوا ... | أنس بن مالك | ٣٢١١ |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم عهد إلينا فتركنا | | |
| ما عهد إلينا | سلمان الفارسي | ١١٢٤ت |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا لبس قميصاًأبو هريرة | | ٢٠٥٤ت |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يجمع | | |
| بين الرجلين | جابر بن عبد الله | ٣٣٦٧ت |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يوتر بثلاث | | |
| ركعات | ابن عباس | ٩٥٢ت |
| إن رسول الله صلى الله عليه وسلم عهد إلينا عهداً | | |
| فتركنا ما عهد إلينا | سلمان الفارسي | ١١٢٤ت |
| إن رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم ليلة أُسري به مرَّ | | |
| على إبراهيم | أبو أيوب الأنصاري | ١٧٦٩ |
| إن الزبير بن العوام ترك من العروض قيمة خمسين | | |
| ألف (ث) | عروة بن الزبير | ٢٢٠٠ |
| أن زكريا عليه السلام هرب ودخل جوف شجرة | | |
| فوضع المنشار (ث) | وهب بن منبه | ٤٠ |
| إن سرّك أن تجد حلاوة العبادة وتبلغ ذروة (ث) | عبد الله الداري | ١١٥١ |
| إن سلمان بن ربيعة الباهلي غزا بلاد الشرك في (ث) | عبد الله بن نيار الأسلمي | ١٢٥٨ |
| إن سورة من القرآن ثلاثون آية شفعت لرجل | | |
| حتّى (ث) | أبو هريرة | ٩٩٦ |
| إن شاء الأمير أخبرته بما أنزل اللّه عز وجل (ث) | أُسقف نجران | ١٥٢٣ |
| إن شاباً كان يخدم موسى النبي صلى الله عليه وسلم | | |
| ويكتب عنه (ث) | محمد بن كعب القرظي | ٢٣٨٧ |
| إن شاعراً امتدح ابن شهاب الزّهري فأعطاه | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وأجزل (ث) | عيسى بن المبارك | ١٠٣٧ |
| إن شئت يا أمير المؤمنين أخبرتك عنه في ثلاث (ث) | خالد بن صفوان | ١٧٢٨ |
| إن الشر إذا فشا في الأرض | أم سلمة | ٢١٢٧ت |
| إن الشهرة فيما مضى كانت في تذييل ... (ث) | أيوب السختياني | ١٩١٩ |
| إن صاحب المنزل لا يدعنا فيه (ث) | أبو ذرٍّ الغفاري | ٩٠٦ |
| إن صاحب هذا الكلام عمرو بن عمرو التميمي وكانت | | |
| عنده بنت زرارة بن لقيط (ث) | المفضل الضبي | ١٠٢٨ |
| إن صدقت رؤياك مات الأوزاعي (ث) | سفيان الثوري | ١١٨٦ |
| إن الصخرة التي تحت الأرض السابعة على أرجائها | | |
| أربعةٌ من (ث) | أبو مالك | ٢١ |
| أن الضحاك بن مزاحم ولد وهو ابن ستة عشر شهراً | | ٥/٣٣٥٢ |
| إن الضحاك ولد لسنتين وشعبة ولد لسنتين (ث) | جويبر | ١٤٣٦/م، ٦/٣٣٥٢ |
| إن طائفة من أهل العراق وأهل الشقاق والنفاق (ث) | الحجّاج بن يوسف | ٢٤٣١ |
| إن طلحة بن عبيد اللّه فدى عشرة من أسارى بدر(ث) | ابن عمران | ١٣٠٧ |
| إن الطير ليلقى الطير بعضها بعضاً ليلة الجمعة (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٤٣٢ |
| أن عائشة ابنة طلحة بن عبيد الله رأت أن أباها طلحة بن | | |
| عبيد اللّه في المنام (ث) | المسعودي | ١٢٥٥ |
| إن عاقبت جازيت وإن عفوت أحسنت (ث) | رجل | ٨٣٢، ٣٢٤٩ |
| إن العباءة لا تكلمك وإنّما يكلمك من فيها (ث) | العذري الناسب | ٦٠٤ |
| إن العبد إذا كان يدعو اللّه عزّ وجل في السّراء | | |
| فنزلت به (ث) | صالح المرّي | ٢٧٣٦ |
| إن العبد السيء لا يعرف ربّه عزّ وجل (ث) | لقمان الحكيم | ٢٨٢ |
| إن العبد ليعمل العمل سِرّاً ما يطلع عليه أحد (ث) | عامر بن جشيب الأحموسي | ١٣٤٢ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن عبد الله بن رواحة خرج غازياً إلى بلد الروم | | |
| مع جعفر (ث) | الزهري | ٧٦٠ |
| إن عثمان بن عفان رحمه الله اشترى داراً من | | |
| صهيب (ث) | مُرَّة (؟) | ٢٦٢٣ |
| إن العرش ثقيل على حملة العرش من أول النهار(ث) | خالد بن معدان | ٢٣، ٢٨١٢ |
| إن العرش يُطوّق بحيّة وإنّ الوحي لينزل (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٥٧٨ |
| أن عظماً فيه السمع والبصر لحري أن يكنّ من | | |
| الحر والقر (ث) | أعرابي | ٣٣٤٣ |
| إن على كل رئيس حقاً (ث) | الأحنف بن قيس | ١٠١٥ |
| أن علياً أحرق ناساً ارتدوا عن الإسلام (ث) | عكرمة | ١٠٦٥ت |
| أن عمر حين صلى على أبي بكر في المسجد ربع | بعض ولد سعد | ٢١٧٩ت |
| أن عمر بن الخطاب خرج إلى الشام فلقيه (ث) | تميم بن سلمة | ٢٦٥٥ |
| إن عمر بن الخطاب رضي الله عنه استعمل | | |
| عبد الله( ث) | شقيق بن سلمة أبو وائل | ٩٣٥ |
| إن عمر بن الخطاب رضي الله عنه كان أروح كأنه | | |
| راكب (ث) | سماك بن حرب | ١٩٦ |
| أن عمر بن الخطاب رضي الله عنه كان يدعى | | |
| الفاروق لأنه (ث) | الزهري | ١٩٥ |
| إنّ عمر بن الخطاب رض اللّه عنه كانت خلافته فتحاً | | |
| وإمارته رحمة، واللّه إني لأظنّ الشيطان (ث) | عبد اللّه بن مسعود | ١٠٢٥ |
| أن عمرو بن أقيش كان له رباً في الجاهلية فكان (ث) | أبو هريرة | ٢٤٢٤ |
| أن عمرو بن ميمون الأودي حج مئة حجة وعمرة | | |
| وأن (ث) | أبو إسحاق | ١٣٢٣ |
| إن عوفينا من شرّ ما أعطينا لم يضرنا فقد ما (ث) | أبو حازم | ١٥٥٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن عيسى صلى اللّه عليه وسلم غاب عن خالته | | |
| زماناً (ث) | الفراء | ٣٥٨١ |
| إن العبد إذا وضع في قبره | أنس | ٣٣ت |
| إن الغارم إذا غرم حدث فكذب ووعد فأخلف | عائشة | ١٦٤٥ |
| إن الفتى الذي كلم أيوب عليه السلام في بلائه (ث) | ابن عباس | ١٠٢١ |
| أن فتى من الأزد بكى حتى أظلم بصره فعوتب (ث) | معاذ بن زياد التميمي | ٣٩٠ |
| إن الفجر ليطلع ليلاً، إلا أن أشجار جنات عدن | أبو هريرة | ٣٥٠٤ |
| إن فقراء المهاجرين يسبقون الأغنياء يوم القيامة | عبد الله بن عمرو | ٢٠٣٧ |
| إن فوت الحاجة خير من طلبها إلى غير أهلها، | | |
| وأشد (ث) | خالد بن صفوان | ١٤٢٤ |
| إن في الجنّة شجرة يسير الراكب في ظلها مئة عام | سهل بن سعد | ٣٥٤٥ |
| إن في جهنم وادياً يقال له جَبُّ الحزن | أبو هريرة | ١٩٣٩ |
| | | ٢٩٦٥ |
| إن في قَصري الساعة لألف محمومة (ث) | عيسى بن علي | ٢٩٠٠ |
| إن فيكم خلالاً لا تخطيكم... الجود والحدة | | |
| وكثرة (ث) | معاوية | ١٧٣٣ |
| إن فيما قصّ اللّه عز وجل عليك من نبأ داود | | |
| وسليمان (ث) | الحسن | ١٥٩٧ |
| إن القتل في سبيل اللّه يكفر الذنوب كلها غير | | |
| الأمانة (ث) | ابن مسعود | ١٧٠١ |
| إن القرآن يأتي أهله يوم القيامة | أبو أُمامة | ٢١٨٩ت |
| إن القلب لا يزال جائلاً حتى يسكن ولن يسكن (ث) | جعفر بن محمد | ٢٩٤٣ |
| أن قوماً خرجوا في سفر حين حضرت الجمعة (ث) | مجاهد | ٧٦٤ |
| إن قوماً كانوا في سفر وكان فيهم رجل (ث) | بكر السهمي | ٢٠٢٣ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أن قوماً من أهل البصرة اشتروا جارية قرب شهر رمضان (ث) | مالك بن دينار | ١٩٥٩ |
| إن كان لابد من ذلك فابغ لي عشرين جزوراً سماناً (ث) | رافع بن عميرة الطائي | ١٠١٨ |
| إن كان مظلوماً استجبت له وإن كان ظالماً (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٨ |
| إن كلمة منك تسفك دماً وأخرى تحقن دماً | أبرويز | ٢١٤٣ |
| إن كنت تفهم ما أقول وتعقل ... (ث) | محمد بن يعقوب القاضي | ٢٢٩ |
| إن كنت صادقاً فغفر الله لي وإن كنت كاذباً فغفر الله لك (ث) | الشعبي | ٨٠٠، ٣٣٢٤ |
| إن كنت صدقت في وصفك إيّاه فقد كذبت ..(ث) | معن بن زائدة | ٦٦٥ |
| إن كنتَ غنياً قبلتها منك وإن كنت فقيراً ... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٥٧٦ |
| إن كنت لأظنّه أن سيصيبه ذلك ... (ث) | سعيد بن المسيب | ٥١٧ |
| إن كنتم إخواني وأصحابي فوطنوا أنفسكم على العداوة والبغضاء من الناس (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٠١ |
| إن لصاحب الحق مقالاً ... | إبراهيم بن هشام | ٢٦٧٨ |
| إن لكلّ أُمّةٍ حكيماً. وحكيم هذه الأُمة أبو الدرداء | جُبير بن نفير | ٤٠٥ |
| إن لكلّ شيءٍ باباً، وباب العبادة الحزن ... (ث) | أبو معاوية الأسود | ١٢٣٥ |
| إن لكل شيءٍ سبباً، وليس كُلُّ أحدٍ يسمع به .. (ث) | ابن عباس | ١٦١٠ |
| إن لكل شيءٍ صدأ، وصدأ القلوب شبع البطون (ث) | بعض الحكماء | ١٦٢٩ |
| إن لكل شيء نتاجاً (ث) | أبو معاوية الأسود | ١٢٣٥ت |
| إن لكل نبي سبعة نجباء من أمته وإنّ لنبيّنا(ث) | علي بن أبي طالب | ٣٥١٢ |
| إن لكلّ نبي حواري وحواريّ الزبير | علي بن أبي طالب، جابر بن عبد الله | ٤٥٢، ٤٥٣ |
| إنّ لكل نبيٍّ نزلة وضيعةً، وإن الأنصار | أنس بن مالك الأنصاري | ٤٠٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن للموت تقحماً على الشيب كتقحم | أعرابي | ١٦١٩ |
| إن للمؤمنين كراسي من لؤلؤ يجلسون (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٠٣٧ت |
| إن لله تبارك وتعالى عباداً لم توسخ الدنيا قلوبهم(ث) | بعض الزهاد | ٢٨٣٥ |
| إن لله تبارك وتعالى عباداً وراء الأندلس .. (ث) | الشعبي | ١٢٠٠ |
| إن لله تبارك وتعالى عباداً هم خاصته من بين عباده(ث) | الحارث المحاسبي | ١٠٥٦ |
| إنّ لله تبارك وتعالى من العلوم ما لا يحصى (ث) | ابن أبي الدنيا | ٢٠٢٣ |
| إن لله تبارك وتعالى ملك موكلاً بجمع الأشكال بعضها إلى بعض (ث) | الشعبي | ١٢٥٢ |
| إنّ لله تبارك وتعالى ملائكة يترجحون من خوف الله (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٤٩ |
| إن لله تسعة وتسعين اسماً من أحصاها دخل الجنة | أبو هريرة | ٩١٨ |
| إن لله ريحاً يبعثها عند رأس مئة سنة | بريدة | ١٩٨٩ت |
| إن لله عباداً نصبوا أشجار الخطايا روانق القلوب(ث) | ذو النون المصري | ٢٩٦ |
| إن لله عباداً يستقبلون المصائب بالبشر (ث) | بعض الحكماء | ٢٦٧٩ |
| إن لله ملائكة سياحين | ابن مسعود | ١٧٠١ |
| إن لله عز وجل ملكاً موكلاً بتأليف الأشكال | أنس | ١٢٥٢ت |
| إن للمؤمن في الجنة لخيمة من لؤلؤ | عبد الله بن قيس | ١٤١٣ت |
| إن لم تكن مصيبتك أحدثت في نفسك موعظة .(ث) | صالح المرّي | ٧٩١، ٣٢٠٣ |
| إن لنا أحلاماً تمنعنا من أن نظلم وأحساباً تمنعنا من أن نظلم (ث) | العجّاج | ٥٣٤ |
| إن لنا بيتاً نوجه إليه صالح متاعنا (ث) | أبو ذر الغفاري | ٩٠٦ |
| إن لي نفساً تحب الدعة وقلباً | بعض الزهاد | ٩٠٩ت |
| إن اللحم على اللحم يقتل السباع في البرية فكيف(ث) | تياذوق | ٣١٢٩ |
| إن ما لك من عمرك ما أطعت الله فيه (ث) | (  ) | ٣٤٤٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن مثل الرجل لولده وعياله، مثل الدخنة الطيبة (ث) | بعض العباد | ٣٠١١، ٣٤٣٠ |
| إن المرء ليكذب حتى يصدق فما يقبل منه (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٨٧ |
| إن المريض يُعاد والصحيح يُزار (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٨٧٢ |
| أن المستوغِر بن ربيعة بن كعب بن سعدمرٌ (ث) | ابن العجاج | ٦٩٧ |
| إن المستوغر بن ربيعة بن كعب بن سعد مرٌ بعكاظ(ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٦٩٧ |
| إن معاذاً كان أمة قانتاً (ث) | ابن مسعود | ١٦٧٦ |
| إن ملك الموت صلى الله عليه وسلم إذا غمز وتين العبد انقطعت معرفته وانقطع كلامه (ث) | سفيان الثوري | ٩٤٠ |
| إن ملك الموت عليه السلام استأذن ربه تبارك وتعالى أن يسلم (ث) | يحيى بن سليم | ١٢٢ |
| إن ملكاً أتى يعقوب... (ث) | عبد الملك بن صالح | ١٢٢ت |
| إن الملك ليصعد بعمل العبد مبتهجاً به إلى ربه (ث) | يحيى بن أبي كثير | ١٤٧٩ |
| إن الملك إذا نزل من السماء على بني آدم فيكتب عمله أجمع (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٢٥٠ |
| إن من ابتغى الخير اتقى الشر (ث) | الزهري | ١٠٣٧ |
| إن من أشراط الساعة أن يتدافع أهل المساجد | سلامة بنت الحر | ١١٠٦ت |
| إن من أعجب العجب ترك التعجب من العجب (ث) | بعض الحكماء | ١٥٠٤ |
| إن من أعظم الذنب أن يستخف الرجل بذنبه (ث) | علي بن أبي طالب | ١٣٥٦ |
| إن من أعظم الذنوب أن يستخف (ث) | القاسم بن محمد بن أبي بكر | ٢٣١٨ |
| إن من أعظم النساء بركة أيسرهن صداقاً | عائشة | ١٨٠٢ت |
| إن من البلاء أن يكون الرأي لمن (ث) | الحجاج | ٥٩٤، ٢٣٤٣ |
| إن من سعادة المرء أن يضع معروفه عند من | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يشكره (ث) | بعض الحكماء | ٢٨١٧، ٢٣١٣ |
| إن من الشعر حكمة | عروة بن الزبير بن العوام | ٣٤٥٤ |
| إن من الشعر حكمة | عائشة | ٢٣١٣، ٣٤٥٥ |
| إن من صلاح نفسي معرفتي بفسادها وكفى بالمرء شراً (ث) | وُهَيْب بن الورد | ١٩٦٠ |
| إن من فتنة الرجل إذا كان فقيهاً أن يكون الكلام(ث) | سفيان بن عيينة | ٢١٩٥ |
| إن من كفارة الغيبة أن | أنس بن مالك | ٣٥٤٢ت |
| إن من الناس ناساً يلبسون الصوف إرادة (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٦٧٦ |
| إن من ورائكم أموراً متماحلة رُدَّحاً وبلاءً مكلحاً مبلحاً (ث) | علي بن أبي طالب | ٩٠٣ |
| إن من اليقين أن لا ترضي الناس فيما يسخط الله (ث) | جعفر بن محمد | ٢٩٣٥ |
| إن من يمن المرأة | عائشة | ١٨٠٢ت |
| إن المنصور خطب بمكة فحمد اللّه وأثنى عليه (ث) | المعلى بن أيوب | ١٩٣٧ |
| إن المهالبة الكرام تحملوا (ث) | الفرزدق | ٥٣٠ |
| إن موسى أجر نفسه ثمان سنين أو قال عشر سنين (ث) | عتبة بن المنذر | ٩٤٨ |
| إن موسى صلى الله عليه وسلم قال يا رب دلني على عمل إذا قلته (ث) | أبي بن كعب | ٢٥٤٠ |
| إن موسى صلى اللّه عليه وسلم لما أتى النار لم ير عندها (ث) | وهب بن منبه | ١٤٥٢ |
| إن موسى صلى الله عليه وسلم لما قربه الله نجياً(ث) | وهب بن منبه | ١٧٤٦ |
| إن المؤمن إذا حضره الموت حضره ملائكة الرحمة | أبو هريرة | ٢٣٤٩/م |
| إن المؤمن يلقاه الزمان بعد الزمان (ث) | الحسن البصري | ١٩٣٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن الملائكة تضع أجنحتها لطالب العلم | (  ) | ٢١٥٤ |
| إن الملائكة لتعجب من خفة ذكر الموت على (ث) | أبو أيوب السختياني | ٣٠٩٦ |
| إن الميت إذا مات أوقدت حوله نار فتأكل (ث) | عبد اللّه بن مسعود | ٩٩٧ |
| إن الميت ليسمع خفق نعالهم إذا ولوا | ابن عباس | ٣٣ |
| إن الناس أقبلوا على جيفة ينهشون منها، ولأن أموت مؤمناً مهزولاً أحب إلى | رجل من الصالحين | ٢٠٤٢ |
| إن النّاس ليأكلون أماناتهم لقماً وإن فلاناً يحسوها حسواً (ث) | أعرابي | ٢٣٣٦ |
| إن الناس معذبون في الدنيا على قدر همومهم بها (ث) | الخضر عليه السلام | ١٧٨٣ |
| إن الناس يُبعثون من قبورهم على ما ماتوا (ث) | أبو الدرداء | ١٦٩٤ |
| إن ناساً أخذوا هذا الأمر من غير مشاورة من (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |
| إن نفس المؤمن إذا قبضت تلقاها أهل الرحمة | أبو أيوب الأنصاري | ٢٠٩٥ت |
| أن النبي صلى الله عليه وسلم أعطى المؤلفة قلوبهم يوم حنين | رافع بن خديج | ٣٣٦٠ |
| إن النبي صلى الله عليه وسلم توضأ فمضمض ثلاثاً | أبو هريرة | ١٤٥٨ |
| أن النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن القزع | ابن عمر | ١٣٨٩ت |
| إن النبي صلى اللّه عليه وسلم صلى خلف أبي بكر رضي اللّه عنه | عائشة | ٢١٢٨ |
| إن النبي صلى اللّه عليه وسلم ليلة أُسري به مر على إبراهيم عليه السلام | أبو أيوب الأنصاري | ٣٦ |
| إن نبياً من الأنبياء بُعث إلى قوم فقال لهم (ث) | عبد الرحمن بن عائذ | ٤٣ |
| إن نساء عبد الرحمن بن عوف اقتسمن ثُمنهن (ث) | محمد بن سيرين | ٣٧٩ |
| إن النسخة لا تكون إلا من أصل ثابت (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٢٥٠ |
| إن النعمان بن امرؤ القيس الأكبر وهو الذي (ث) | الأصمعي | ١٢٢٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن نفراً من الجن تذاكروا قبائلة بني أسد (ث) | سعد بن نفير | ٢٥٦٠، ٣١٩٧ |
| إن نفسي أعجبتني فأردت أن أذلها (ث) | عمر بن الخطاب | ٤١٧، ٢٤١٦ |
| إن نفسي نفس كريمة (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٧٧٥ |
| إن تنظر إلى أعلى بناء في القرية فيرمى به (ث) | ابن عباس | ٢٨٤٢ |
| إن هذا الحديث يصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة (ث) | شعبة بن الحجاج | ٨١٢، ٣٢٤٠ |
| إن هذا الرجل لا يرى بيعتنا (أحمد بن المعدل) (ث) | المتوكل | ٣٤٢ |
| إن هذا السراج يضر بنا إلى الصبح (ث) | امرأة هشام الدستوائي | ٣٥٥ |
| إن هذا لا يموت حتى يقعد مقعدك من الشمس (ث) | ملك الموت | ٨٧ |
| إن هذه لجنوة صدق في يزيد (ث) | سواد بن عبد الله | ٢٠٨٦ |
| إن هذه الحشوش محتضرة | زيد بن أرقم | ٣٤٨٨ |
| إن الهلكة كل الهلكة أن يعمل (ث) | النعمان بن بشر | ٢٢٤٣ |
| إن وفود العرب اجتمعت عند النعمان بن المنذر (ث) | أبو عبيدة | ٢٠٢٦ |
| إن الوالي لا يصلح إلا بأربع إن نقص واحدة (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٠٣٤ |
| إن الولاة جعلوا العيون على العوام وأنا (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٦٧٢ |
| إن يأخذ الله من عيني نورهما (ث) | ابن عباس | ٣٢٩٨ |
| إن يحيى بن زكريا عليه السلام لما قتل رد الله إليه روحه (ث) | وهب بن منبه | ٢٢٩١ |
| إن يطع الناس أبا بكر وعمر يرشدوا | أبو قتادة | ١٦٥ |
| إن يعتزل الرجل في المكان الذي لا يراه أحد إلا الله (ث) | بعض الزهاد | ١٤٥٧ |
| إن اليقين إذا تم بينك وبين الله عزَّ وَجَلَّ (ث) | شقيق البلخي | ٢٨٠٩ |
| إن يكن لك دين فلك كرم وإن يكن لك ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٨٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن يكن يومٌ أظفرُ به فاليوم ... فبهت ... (ث) | غيلان القدري | ٣٠٢٣ |
| إنّ اليهود قوم بُهْتٌ | أنس بن مالك | ٧٢٤ |
| إنّ اليهود تصبغ أبناءها يهوداً وإن النصارى تصبغ | | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿صبغة الله ومن أحسن من الله صبغة﴾) | قتادة | ١٤٦٤ |
| أنا ابن العواتك من سليم | ( ) | ٢٣٩٠ |
| أنا ابنها حقاً أنا ابنها حقاً وجعل (ث) | عبد الله بن الزبير | ٢٣٣٥ |
| أنا أجعل الله عز وجل ذخراً لولدي من بعدي (ث) | عبيد الله بن عبد الله | |
| | ابن عتبة | ٧٨٦ |
| أنا أريد الغزو منذ ثلاثين سنة فما يمنعني فيه (ث) | يوسف بن أسباط | ٢١٤٩ |
| أنا أطمعُ وأُمي تيقَنُ فقلّ ما يفوتنا (ث) | أشعب | ٣٢٦٨ |
| أنا أكرم على الله من أن يجعل لي شيئاً يشغلني عنه (ث) | عيسى عليه السلام | ٢٠٧٦ |
| أنا الذي أنزلت الدنيا منزلتها بإذن الله ولا عجب ولا فخر (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٠٢ |
| أنا الذي سمّتْني أُمّي حيدره... (ث) | علي بن أبي طالب | ٩٠٤ |
| أنا الذي كفأت الدنيا على وجهها فليس لي زوجةٌ تموت ولا بيت يخرب (ث) | عيسى عليه السلام | ٢٧٥ |
| أنا الله ذو بكة | أثر إلهي | ١٢٩٦ |
| إنا ألهمنا أن نأتي إلى الولي بشهوته (ث) | ( ) | ٧٣ |
| أنا أوجدكم في القرآن قول الله تبارك وتعالى (ث) | ابن عباس | ٢٠٥١ |
| أنا أول مولود في الإسلام (ث) | عبد الرحمن بن زياد الإفريقي | ١٦٣٣ت |
| أنا سفيان الثوري ... نعم ونسأل الله بركة ما | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يقولون (ث) | سفيان الثوري | ٣٦٨ |
| أنا شهيد على هؤلاء | جابر بن عبد الله | ٣٣٦٧ت |
| أنا على رد ما لم أقل أقدر مني على رد ما قلت (ث) | مَلِك | ٢٤٤٢ |
| أنا فاعل ... (خويدمك أنس أشفع له يوم القيامة؟) | أنس بن مالك | ٣٠ |
| أنا غالب بن صعصعة ... نعم ...ذعذعتها | | |
| الحقوق (ث) | غالب بن صعصعة | ١٥٣٢ |
| إنّا قوم أعزّنا اللّه بالإسلام فلن نلتمس (ث) | عمر بن الخطاب | ٤١٨ |
| أنا كنت أكرم على أبيك منك (ث) | صعصعة بن صوحان | ١٠٨٥ت |
| إنا لقائمون وما يصلّي عليه إلا عمله (ث) | علي بن أبي طالب | ١١٦٤ |
| إنا لله وإنا إليه راجعون، وقرأ | أبو محمد بن عمرو الثقفي | ٣٠٨٨ |
| أنا لما لا أرجو أرجى مني لما أرجو (ث) | بعض النساك | ١٥٠٥ |
| إنا لنَكُشر في وجوه قومٍ وإن لقلوبنا (ث) | أبو الدرداء | ١٠٨٧ |
| أنا من أن أُمنَع الدعاء أخوف (ث) | زياد بن أبي زياد | ١٥٦٠ |
| إنا نظرنا فوجدنا الصبر على طاعة اللّه أهون (ث) | عامر بن ضبارة | ١٥٥٩ |
| أنا والزبير بن العوام وأبو بكر وعمر(ث) | علي بن أبي طالب | ٣٥١٤ |
| إنا لا نتكلم عند كبرائنا | معتمر بن سليمان | (١٢) ملحق |
| أناة الله حيّرت قلوب المظلومين وحلم الله (ث) | مسعر بن كدام | ٢٧٤٢ |
| أُنبئت أن بين دعائهم وبين إجابته إياهم (ث) | الأعمش | ٨٤٦ |
| أُنبئت أنك تفتي الناس ولست بأمير (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٥٢٤ |
| أنت أستاذ يا أبا إسحاق (إبراهيم بن أدهم )(ث) | شقيق | ٣٣٥٠ |
| أنت تاجرُ الله لعباده فكن كالمضارب (ث) | عبد الملك بن صالح | ١١٣٦ |
| أنت رفيق والله الطبيب | أبو رمثة | ٢٧٧٦ |
| أنت شررة من شرره وهو أعظم جُرماً منك (ث) | حُطَيْط | ٣١٢٣ |
| أنت معافى وأنا مُبْتلى، فالعافيةُ لا تدعك (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٨٧٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أنت منّي بمنزلة هارون من موسى | أبو سعيد الخدري | ٣١٧٧ |
| أنتِ واللّه كاذبة ... يا دار أين أهلك (ث) | صالح المري | ١٥١٦ |
| أنت يا سفيان طويل الأمل قد أوهمت نفسك (ث) | حسّان الرّاهب | ٢٧٩٩ |
| أنتصر لمن أبغض ممن أبغض ثم أصير كلاً إلى النار | أثر إلهي | ٢٠٦١ |
| أُنْزِلَ القرآن على ثلاثة أحرف | أُبي بن كعب | ١٤٥٩ |
| إنسيٌّ أو جنيٌّ؟ ... مذ كم أنت ها هنا؟ (ث) | عبد الواحد بن زيد | ٨٥٧ |
| أنشد ابن أبي المغيرة: وكم من نائمٍ غبطة (ث) | محمد بن عبد الرحمن (مولى بني هاشم) | ٣٩٢ |
| أنشد: إذا تضايق أمرٌ فالتمس فرجاً (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٩٨٩ |
| أنشد: أراك تؤمِّلُ حسن الثناء (ث) | محمد بن موسى | ٣٢٥٦ |
| أنشد: أروح لتسلم عليك واغتدى (ث) | المبرد محمد بن يزيد | ٣٣١٩ |
| أنشد أيرضى كريم بالعفاف وعوده (ث) | محمد بن فضالة | ٣٠٧٧ |
| أنشد: رُبَّ قومٍ غبروا من عيشهم في نعيم وسرور(ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٢٣٠ |
| أنشد لإبراهيم بن هرمة: قد يدرك الشرف الفتى ورداؤه خلق (ث) | المبرّد | ٣١٨٣ |
| أنشد لإبراهيم بن هرمة: قد يدرك الشرف الفتى ورداؤه خلق (ث) | عبد اللّه بن مسلم بن قتيبة | ٣١٨٢ |
| أنشد لأعرابي: أخاً لك ما تراه الدهر إلاّ (ث) | إسماعيل بن يونس | ٣٢٢٦ |
| أنشد لأعرابي: أيها الدائبُ الحريص المعنّى (ث) | المازني | ٣٢٦٧ |
| أنشد لأعرابي: وما هذه الأيام إلاّ معارة (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣٢٧٣ |
| أنشد لامرأة من ولد حسان بن ثابت رضي الله عنه سل الخير أهل (ث) | الحسن بن علي | ٣٢٧٦ |
| أنشد لبعض أشراف أهل البصرة: ولا أقول نعم (ث) | أبو نصر | ٥٢٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أنشد لبعض الأعراب: كدحتَ بأظفاري | | |
| واعملت (ث) | المبرّد | ٣٣٢١ |
| أنشد لبعض بني العنبر: نهيج منازل الأموات (ث) | الرِّياشي | ٧٤٦ |
| أنشد لبعض الحكماء: إنما الدنيا جدود فعزيز | | |
| وذليل (ث) | أبو بكر بن أبي الدنيا | ٨٦١ |
| أنشد لبعض الشعراء: أقبلن في وقت الضُّحى بها (ث) | أبو المعتصم الأنطاكي | ٣٢٨٧ |
| أنشد لبعض الشعراء في النبي صلى اللّه عليه وسلم: | عبد اللّه بن مسلم | |
| لو لم يكن | بن قتيبة | ٣٢٣٤ |
| أنشد لبعض الشعراء: فكتب عليه إحذر الموت | محمد بن حسين | |
| وحده (ث) | البرجلاني | ٣٢٠١ |
| أنشد لصفية بنت عبد المطلب في النبي صلى اللّه عليه | | |
| وسلم (ث) | هشام بن عروة | ٧٥٨، ٣٢٣٣ |
| أنشد لبعض الشعراء: قوم إذا أكلوا أخفوا | | |
| كلامهم (ث) | أحمد بن محمد الأزدي | ٣٢٥٤ |
| أنشد لبعض الشعراء: لا تَضَرَّعَنَّ لمخلوقٍ على | | |
| طمع (ث) | محمد صالح الأنماطي | ٣٢٧٠ |
| أنشد لبعض الشعراء: للناس مالٌ ولي مالان (ث) | عبد الله بن مسلم | |
| | بن قتيبة | ٣٢٧٢ |
| أنشد لبعض الشعراء: لن يدرك المجد أقوام ذوو | المبرد | ٨١٨، |
| | | ٣٢٤١، |
| | | ٣٣٣٣ |
| أنشد لبعض الشعراء: من كان مصروعاً بمصرع (ث) | محمد بن بشر المرثدي | ٧٤٠ |
| أنشد لبعض الشعراء:نعى لك ظِلّ الشباب المشيب (ث) | إبراهيم الحربي | ٦٢٩ |
| أنشد لبعض الشعراء: وليس الرزق عن طلب (ث) | أبو عبيدة | ٣٣٣٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أنشد لبعض الشعراء: وإنّ الله ذو حلم (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٣٢٧ |
| أنشد لبعض الشعراء: وإن يكن ما به أُصِبْتُ (ث) | أبو قلابة | ٧٩١ |
| أنشد لبعض الشعراء: وكم من ماجدٍ أضحى (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٣٤٢٥ |
| أنشد لبعض الشعراء: ولقد غدوت وكنت لا أغدوا على واقٍ (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٩٣٧ |
| أنشد لبعض الشعراء: وليس الرزق عن طلب (ث) | أبو عبيدة | ٨٠٧ |
| أنشد لبعض الشعراء: وليس عتاب الناس (ث) | يوسف | ٣١٨٩ |
| أنشد لبعض الشعراء: يخيب الفتى من حيث (ث) | محمد بن صالح الأثماطي | ٣٢٦٩ |
| أنشد لبعضهم: تحيّر من حسنه فهمه (ث) | ابن كيسان | ٣٢٩٢ |
| أنشد لبعضهم: الخال يَقْبَحُ بالفتى (ث) | أبو عبيدة الخزّاز | ٣٢٨٣ |
| أنشد لبعض الشعراء: فلا تنكحي إن فرّق (ث) | عبد اللّه بن مسلم بن قتيبة | ٣٢٩٠ |
| أنشد لبعضهم: قل للذي يرجو البقاء (ث) | محمد بن فضالة النحوي | ٧٣٩ |
| أنشد لبعضهم: كفى حزناً إلاّ (ث) | عبيد اللّه بن محمد الكسائي | ٧٤٢ |
| أنشد لبعضهم : لئن كنت محتاجاً إلى الحلم (ث) | المازني | ٨٠٥، ٣٣٢٩ |
| أنشد لبعضهم: نعى نفسي إلي من الليالي (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٣٢٩٧ |
| أنشد لبعضهم: وإنّى لأرجو اللّه والأمر ضيّق (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٣٣٠٢ |
| أنشد لبعضهم: يا ميّتاً في كل (ث) | أحمد بن عباد | ٧٤١ |
| أنشد لزهير: تراه إذا ما جئته متهللا | المبرد | ٣٣٢٠ |
| أنشد الشاعر: حوائج الناس كلها (ث) | محمد بن يزيد المبّرد | ٣٣١٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أنشد لعامر بن الطفيل - وهو من جيِّد شعره (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٩٨٩ |
| أنشد لعروة بن أذينة: نراع إذا الجنائز قابلتنا (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٢/٩١٦ |
| أنشد لغيره: أصبر لكل مصيبة (ث) | عبد الرحمن بن محمد | ٧٧١، ٣٢٣٧ |
| أنشد لغيره: أمالك إن الحزن أحلامُ نائم (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٧٧٢/م |
| أنشد لغيره: وما نحن مثلهم غير أنّنا (ث) | إبراهيم بن إسحاق الحربي | ٧٧٣/م، ٣٢٣٨ |
| أنشد لغيره : ومن يأمن الدنيا يكن مثل (ث) | الصالحي | ٣٠٢٥ |
| أنشد: لقد ينعش اللّه الفتى بعد عثرة (ث) | أحمد بن يحيى بن ثعلب | ٣٤١٥ |
| أنشد للزبير بن عبد المطلب: وأجتنب المقاذع حيث كانت (ث) | إبراهيم بن إسحاق الحربي | ١٤٠٦ |
| أنشد للسلطان: نروح ونغدو لحاجاتنا (ث) | محمد بن يزيد المبرّد | ٣٣١١ |
| أنشدنا للعبّاس بن الأحنف: وما مَرَّ يوم أرتجي فيه راحة (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٦٥٣ |
| أنشد للنابغة: حسب الخليلين أن (ث) | المبرّد أبو العباس | ٧٧٤/م |
| أنشد لمروان بن أبي حفصة في بني مطر : هم القوم إن قالوا أصابوا (ث) | ابن قتيبة | ٣١٨٤ |
| أنشد لمعبد بن طوق العنبري: يلقى الفتى حذر (ث) | أبو عبد اللّه البصري | ٢٤٣ |
| أنشد لنهار بن توسعة: وعتبت على سَلْم (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٦٥٣ |
| أنشد لسابق: وكم من صحيح بات للموت آمناً (ث) | أبو زيد النمري | ٩٣٩/م |
| أنشد: لا أعيرُ النّاس سمعي ليسوا لي (ث) | سهل بن علي | ٣٠٧٦ |
| أنشدنا إبراهيم الحربي لأبي طالب في رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم: وأبيض يستسقى الغمام بوجهه | أحمد بن مروان الدينوري | ٥٧٤ |
| أنشدنا إبراهيم المهدي: باللّه ربِّك كم بيتٍ (ث) | أحمد بن داود النيسابوري | ٢٣٠/ م |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أنشدنا أبو عبيدة لعبد الحميد الكاتب: ترحل ما ليس | | |
| بالقاقل (ث) | محمد بن سلاّم | ٦٢٨ |
| أنشدنا لبعض الشعراء: إذا كان لي شيئان (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٥٢٨ |
| أنشدنا لبعض الشعراء: وأنفع من شاورت(ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٦٠١ |
| أنشدنا ابن قتيبة لرجل من الحجاج | أحمد بن مروان الدينوري | ١٨٩٧ |
| أنشدنا لبعضهم: أنت ما استغنيت عن صاحبك(ث) | أحمد بن مروان الدينوري | ٥٢١ |
| أنشدنا للنّمر بن تولب: ومتى تصيبك خصاصة (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٥٩١ |
| أنشدنا لنابغة الجعدي: الحمد لله لا شريك له (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٥٦٩ |
| أنشدنا المبرِّد: ـ | | |
| إذا اعتذر الصديق إليك يوماً | | |
| من التقصير عذار أخ مقر (ث) | أحمد الدينوري | ٣٤٧٤ |
| أنشدنا المبرّد للنابغة: ـ | | |
| حسب الخليلين إن الأرض بينهما | | |
| هذا عليها وهذا تحتها بالي | أحمد الدينوري | ٣٤٧٤ |
| أنشدت لعثمان بن ثمامة المزني: ينادي الجار (ث) | الهيثم بن فراس الساقي | ٢٩٩٥ |
| أنشدت لمعن بن زائدة أربعة أبيات فأعطاني (ث) | مروان بن أبي حفصة | ٣٤١٨ |
| أنشدك اللّه أترى لي أن ألي القضاء (ث) | أبو بكر (أخو زياد بن عبيد اللّه) | ٥٩٨ |
| أنشدونا لبعض: يا ساكِن الدّنيا أتعمّر مسكناً (ث) | أبو بكر بن أبي الدّنيا | ٨٦١ |
| أنشدونا لبعض الشعراء: رأيت اللسان على أهله (ث) | أحمد بن علي المقري | ٨٧٩ |
| أنشدني إسماعيل بن يزيد (ث) | أحمد بن محمد | ٣٤٧١ |
| أنشدني بعض أصحابنا: وإذا قيل مات فلان ... (ث) | أبو إسماعيل الترمذي | ٧٧٤ |
| أنشدني بعض أصحابنا: أضحت تشجعني وقد علمت | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أن ...(ث) | محمد بن الحسين | ١٠١٢ |
| أنشدني شيخٌ من الأزد من أهل البصرة: (ث) | ابن أبي الدّنيا | ٣٤٧٠ |
| أنشدني لأخته الشموس: كنا عبرات للغريب عن أهله (ث) | أبو البدّاح | ٥٧٢ |
| أنشدني لرجلٍ من ثقيف: تقول لسليمى ما لرأسك (ث) | عمرو بن بكر | ٥٧١ |
| أنشد يقول: لئِن كنت تعقل ما أقول عذرتني (ث) | الخليل بن أحمد | ٢٣٢ |
| انشق القمر على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم | جبير بن مطعم | ٢٦٢٠ |
| إنصاف من هو دونك، والسمو إلى من هو فوقك (ث) | بعض الحكماء | ١٧٠٥، ٣٠٩٥ |
| انصرف مأذوناً لك مأجوراً غير مأزور، جزاكم الله ...(ث) | عثمان بن عفان | ٢٨٣ |
| انطلقنا حجاجاً ليالي خرج يزيد بن المهلب | أبو وهب العقيلي | ٢٦٢١ت |
| أنظر أتراه أعور ... وبينك وبين عرّاف اليمامة (ث) | قتادة | ٢٩٠١ |
| انظر من كان رضاه عنك في إحسانك إلى نفسك ...(ث) | زيد بن أسلم | ٢٨١٣ |
| انظر من يتغدى معي (ث) | الحجاج بن يوسف | ١٣٥ |
| انظر لا تطفيء المصباح في بيتك فيدخل اللصوص (ث) | حسّان الرّاهب | ٨٥٦ |
| انظر لا يأخذك وأنت ذاهب في حاجة (ث) | بشر | ٣٥٧٣ ت |
| انظروا إلى أقوامٍ إذا ذُكِّروا بالقرآن فلا تكونوا (ث) | مطرّف بن عبد الله | ٢١٦٦ |
| انظروا ما يصنع ... تلك الأصابع الفاردة أحبّ إليّ (ث) | قتيبة بن مسلم | ١٨١١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| انظروني حتى أتفكر ... إنَّ عاداً وثموداً | | |
| وأصحاب (ث) | الرّبيع بن خثيم | ١٨٩ |
| انظري يا بنيّة فما زاد من مالِ أبي بكر الصديق | | |
| مُذ (ث) | أبو بكر الصديق | ١٦٤ |
| أنفاسهم التي يتنفسون في الدنيا (ث) | ابن عباس | ١٠٤٩ت |
| أنفعهم للناس | ابن عباس | ٣٥٤٣ |
| إنك إن تضحك وأنت معترف بذنبك خير لك من | | |
| أن تبكي (ث) | راهب | ٢٠١٢ |
| إنك إن توسّد العلم خيرٌ من أن توسّد الجهل (ث) | أبو ذر | ١٦٩٤ |
| إنك لتلقى الرّجلين أحدهما أكثر صوماً وصلاة (ث) | مطرّف بن عبد اللّه | ٢٥٨٥ |
| إنّك لجزلٌ فأين كان أخوك منك؟ (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٣٦ |
| إنكم أنضيتم الظّهر وأرملتم النسوان وليس السابق | | |
| من ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٦٨ |
| إنّكم لا تدعون أصماً ولا غائباً | أبو موسى الأشعري | ٢٣٦٨ |
| إنكما علجان فعالجا عن أمر دينكما (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٥٩٥ |
| إنّما أُبكي من العطش الأكبر يوم القيامة (ث) | بشر بن منصور | ٤١٣ |
| إنّما أردت أن أنظر كيف تواضعه للفقراء (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٧١ |
| إنّما أردت أن يستفزني الشيطان فأنال منك (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٨٠٠، ٣٣٣٠ |
| إنّما تنتظرون ثلاثاً فما يجلسكم عن العمل إمّا (ث) | محمد بن النضر الحارثي | ٣٢٣ |
| إنّما الدنيا أولها إلى أخرها قليل (ث) | ابن السماك | ١٣٦٦/م |
| إنّما رجع القومُ من الطريق قبل الوصول | أبو سليمان الداراني | ٢٢٦ |
| إنّما رضي بالدون من رضي بالدنيا (ث) | محمد بن واسع | ١١٧٧ |
| إنّما الزاهد من قَدِرَ فترك (ث) | داود الطائي | ٢٣٩٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إنّما السرف ما ينفقه الرّجل في معصية اللّه | | |
| فأمّا إذا أنفقه على إخوانه فهو من الدِّين | إبراهيم بن أدهم | ٨٧٦ |
| إنّما سُمّوا الأبرار لأنّهم بَرُّوا الآباء والأبناء (ث) | محارب بن دثار | ٨٩٦ |
| إنّما سُمّي مرَّة الطيب لحسن عبادته (ث) | يحيى بن معين | ٢٨٤١ |
| إنّما سُمِّيت الدنيا الدّنيا لأنّها دنت وإنّما | | |
| سُمِّي المال (ث) | سفيان الثوري | ٦٨ |
| إنّما طلب العابدون بطول النّصب دوام (ث) | مالك بن دينار | ٢٠٢ |
| إنّما قلّ لأنّه كان لغير اللّه (ث) | الحسن البصري | ١١٠٥ |
| إنّما كان عهدهم، قال فرعون: امْضِ فصار البحر(ث) | قتادة | ١٣٣٥ |
| إنما كان يولد لبني إسرائيل الأنبياء لأنهم | فرقد السبخي | ٢/٣٠٥٨ |
| إنّما كنت أبكي صَخراً من الحياة فأنا اليوم أبكي | | |
| له (ث) | الخنساء | ٦٩٠ |
| إنّما مثل الدنيا مثل رَغيف عليه عسل مرّت به (ث) | سفيان الثوري | ٦٩ |
| إنما النساء شقائق الرجال | | ١٢٩ت |
| إنّما هي الجنّة أو النّار (ث) | يونس بن عُبيد | ٣٥٧٠ |
| إنّما هي في المصحف مرّةً واحدة، وأنزلت على (ث) | بشر الحافي | ١٠٠٤ |
| إنّمايتعلم العلم ليتقى اللّه عز وجل به (ث) | سفيان الثوري | ٩٤٣ |
| إنّما يغفر لك بعملك (ث) | عبد اللّه بن أبي أوفى | ١٢٣٩ |
| إنّه حين ذكرهم عاينهم (ث) | أبو سليمان الداراني | ٢٢٧١ |
| إنّه سابق بين الخيل من الغابة إلى ثنية الوداع (ث) | ابن عمر | ٣٠٤ |
| إنّه قد عظم شأنك من أن يستعان بك ويستعان | | |
| عليك (ث) | الهذيل بن زفر | ١١٦١ |
| إنّه كان بين أظهرهم رجل (ث) | سفيان الثوري | ٢١٠١ |
| إنّه قام على أمه ولم يحج حتى ماتت (ث) | أبو هريرة | ٣١١٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إنّه كان رجلاً من العماليق يقال له عرقوب أتاه(ث) | محمد الكلبي | ٨٥٩ |
| إنّه كان يبغض عثمان فأبغضه اللّه ... | جابر بن عبد اللّه | ٢٤١ |
| إنّه لنافذ الطعنة ركين القعدة ... ما قلت إلاّ | | |
| حقاً إنّه لخياط (ث) | الشعبي | ٢٤٣٠ |
| إنّه ليس شيء أدعى إلى تغيير نعمة أو تعجيل نقمة من | | |
| إقامة ظالم على ظلمه (ث) | بعض حكماء العرب | ٢٨٥٧ |
| إنه ليس شيء من أمر الدنيا إلاّ وقد كان له أهل (ث) | أبو حازم | ٩٦٤ |
| إنّه ليس من واحد إلاّ وهو يعرف عيب نفسه (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٥٦ |
| إنّه لينظر إلى الغيب في سترٍ رقيق لعقله وفطنته (ث) | علي بن أبي طالب | ٥٩٩ |
| إنّه ما تكلم في شيء عشرين سنة إلاّ كلمتين (ث) | داود الطائي | ٢٥٥ |
| إنّه والله يحركني لمالك ما لا يحركني لزيد (ث) | مُتمِّم بن نويرة | ٣١٣٦ |
| إنه لا يضيق سم الخياط على متحابين ولا تتسع (ث) | الخليل بن أحمد | ٣٢٢٧ |
| إنّ ليسؤك ما يسرُّ الناس (ث) | الربيع بن زياد | ٢٢٠٦ |
| إنّا وإن أدنتي منها صانتني عنها (ث) | أبو الزناد | ٢٢١٢ |
| أنهار الجنة تجري في غير أخدود وشجرها نضيد (ث) | مسروق | ٧٠٣ |
| إنهم خَلَوا بالرحمن تبارك وتعالى فألبسهم | | |
| اللّه عزّ وجلّ (ث) | الحسن البصري | ١٣٣ |
| إنهم قد تحاكموا إليك فاعدل بينهم (ث) | علي بن أبي طالب | ١٥٧١ |
| إنهما لأول من هاجر إلى اللّه بعد إبراهيم ولوط ... | أبو اليقظان | ٢٤٠ |
| إنهما لفي الوفد السبعين إلى الله عز وجل يوم | | |
| القيامة (ث) | علي بن أبي طالب | ٣٥١٣ |
| إنّي أتيتك في حاجة فإن شئت قضيتها وكنّا (ث) | محمد بن واسع | ٣٣٠٩ |
| إني أجد في كتاب اللّه المنزّل أن الظلم (ث) | كعب الأحبار | ٢٠٥١ |
| إني أخاف الله فيما دخلت فيه (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٥٠٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إني أخاف أن أتخذ العجز عادة (ث) | أكثم بن صيفي | ٥٠٣ |
| إنّي أرى الفتن تخلّلُ بيوتكم كما تخللّها المطر، | | |
| إن الله.. | أبو هريرة | ٢٦٠٦ |
| إنّي استحيي من اللّه تبارك وتعالى أن أسأل في بيت | سالم بن عبد الله بن | |
| الله غير الله (ث) | عمر بن الخطاب | ٨٠ |
| إني استقبلت بني إسرائيل بالكرامة وهم كالغنم | | |
| الضائعة (ث) | أثر إلهي | ١١١٩ |
| إنّي أُعِدُّكَ لأمرٍ كبير (ث) | أبو جعفر المنصور | ٢٩٦٤ |
| إنّي أعدّه لسفرٍ طويل (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٣٠٠ |
| إني أعرف الخَط وإنّي أنكر أن يكون لمثلك مثل هذا | | |
| المال (ث) | عمرو بن سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| أني أقدر على أن أحترس من أعدائي ولا أقدر على | | |
| أن أحترس من أصدقائي (ث) | رجل | ٢٤٤٠ |
| إني أكره أن يكون قولي أكثر من فعلي (ث) | بعض الحكماء | ٢٧١٦، |
| | | ٢٧٩٣ |
| إنّي أكره زيد المشركين | الصّلت بن عبد الرحمن | ٣٥٤٦ |
| إني أكره منها خصالاً، تبلى الثياب (ث) | الحارث بن كندة | ١٩٨٣ |
| إني امتحنت خصال النّاس فوجدت أشرفها صدق | | |
| اللسان (ث) | بعض حكماء العرب | ٢٦٨٣ |
| إنّي امرءٌ لا شائن حسبي (ث) | قيس بن عاصم المنقري | ٣٣٢٨ |
| إني أنزلت نفسي من مال الله منزلةوالي مال اليتيم | عمر بن الخطاب | ١٢٩١ت |
| إنّي رزقت الأحمق ليعلم العاقل إن الرزق ليس | | |
| باحتيال | أثر إلهي | ١٦٥٣ |
| إني رفعت إلى الجنة فإذا | أبو سعيد الخدري | ١١٠٢ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إني سألتك عن ثلاث لا يعلمهن إلا نبيٌّ | عبد الله بن سلام | ٧٢٤ |
| إنّي عنها لمشغولٌ (ألا تسرح لحيتك) (ث) | داود الطائي | ٣١٤٢ |
| إني في هذا البيت منذ عشرين سنة ما نظرت | | |
| إلى السقف (ث) | داود الطائي | ٥٤/م |
| إنّي قد أخذت قاتل الزّبير بن العوام (ث) | مصعب | ٢٤٦٠ |
| إني قد سترتها عليك في الدنيا | حديث قدسي | ٤ |
| إني قلت فيك بيتين ولست أنشدهما إلا | | |
| بحكمي (ث) | رجل | ٢٢٣٢/م |
| إني كنت صائماً فدخلت بيت أبي فأكلت وأنا | | |
| ناسٍ (ث) | رجل | ٣١٩ |
| إنّي لأجمع أن أخرج للناس أمراً من أمر العدل (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٢٠٤ |
| إنّي لأرى حضرة ما هي بإنس ولا جن (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٣٦٥ |
| إنّي لأرى الرجل فيعجبني فأقول له حرفة (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٥١٧، |
| | | ٣٠٠٥ |
| إنّي لأرى الشيء مما يُعاب فما يمنعني من أن أتكلم (ث) | إبراهيم النخعي | ٨٨٩ |
| إنّي لأرحمه، نحن نفارقه ويبقى معه خلقه (ث) | أيوب السختياني | ٩١٠ |
| إني لأرفع نفسي أن يكون ذنب أوزن من حلمي (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٨٠١، ٣٣٢٥ |
| إنّي لأستحيي من الله أن أرى أن رحمته (ث) | محمد بن المنكدر | ٢٥٤٥ |
| إني لأعلم رجلاً إن صلح صلحت الأمّة ... أنت (ث) | سفيان الثوري | ١٧٤٠ |
| إني لأكره أن أرى الرجل فارغاً ليس في | | |
| أمر الدنيا (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٣٢٦ |
| إنّي لأكره أن أمس فرجي بيميني وأنا أرجو (ث) | مسلم بن يسار | ٢٠٠٥ |
| إنّي لبالقاع من نَمِرةٍ إذ أقبلت عيرٌ من أعلا نجد | | |
| فلما (ث) | جلهمة بن عُرفطة | ٢٥٣٤ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إنّي لفوق أبي قبيس حين وضع المنجنيق على ابن | محمد بن زيد بن | |
| الزبير (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٨٦٦ |
| أني لفي أُغيلمة الذين يجرون جعدة إلى عمر بن | | |
| الخطاب (ث) | سعيد بن المسيب | ١٨٥١ |
| إنّي لقيت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم العدو | | |
| فكان أحب الأوقات (ث) | النعمان بن مقرن | ١١٣٩ |
| إنّي ما أظنك إلا ضعيفاً فيما تحاول ... لأمرٍ ما قيل (ث) | الأحنف بن قيس | ٢١٢٤ |
| إنّي موصيكم بوصية إن قبلتموها لن تزالوا (ث) | أبو عبيدة بن الجراح | ٣١٤٣ |
| إني نزلت بحي من قضاعة فخرجوا بجنازة رجل | | |
| من بني (ث) | عبيد بن شرية | ٧٧٥ |
| إني لا أُحِلُّ ما حرّم الله عليك فأمّا ما كان إليّ (ث) | ابن سيرين | ٦٦٢ |
| إني لا أصلح ... لأنّي عَيِيٌّ وإني دميم (ث) | إياس بن معاوية | ١٨٤٧ |
| إنّي لا أُماريه ولا أشاريه (ث) | ميمون بن مهران | ٢٤٨٧ |
| إنّي والله لا أرزأ من أموالكم شيئاً وهذه (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٣٩٥ |
| إني وإياكم في مال الله | عمر بن الخطاب | ١٢٩١ت |
| أنين المريض شكوى اللّه عز وجل (ث) | طاوس | ٢٥٣ |
| أهجهم أو هاجهم وجبريل معك ... | البراء بن عازب | ٢٣١٥ |
| اهدئي، فما عليك إلا نبي أو صديق أو شهيد | أبو هريرة | ٢٦٩٤ت |
| أهدى رجلٌ إلى إبراهيم بن أدهم عنباً وتيناً في | | |
| طبق (ث) | الحسن بن محمد المروزي | ٢٩٢ |
| أهدى رجل إلى صديقٍ له عبداً أسود فكتب إليه (ث) | مؤرج | ٢٩٧٧ |
| أهديت إليّ ابنة رسول الله صلى اللّه عليه وسلم ليلة | علي بن أبي طالب | ١٣٦٠، |
| أهديت ومالنا فراش (ث) | | ٣٣٦٣ |
| أهديت إلى صديق لي من العُبّاد سُكّراً فكتب إليّ (ث) | أبو العباس الكندي | ١٠٥٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أهديةٌ أم صدقة؟ ... (إذا أتي بشيء سأل عنه) ... | بهز بن حكيم عن أبيه عن جدّه | ١١٦٢ |
| أهل الشكر مع مزيد من الله فالتمسوا الزيادة (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٦٨٧ |
| أهل الطاعة بليلهم ألذ من أهل اللهو بلهوهم (ث) | أبو سليمان الداراني | ٥٤٣ |
| أهل العالية يقولون إن عذابك بالكافرين (ث) | يونس | ١٢١٤ |
| أهل العلم (ث) | يزيد بن هارون | ٣٠٢ |
| أهل القبور يتوكفون الأخبار فإذا أتاهم (ث) | عبيد بن عمير | ٨٦٧ |
| أهل الليل في ليلهم ألذ من أهل اللهو في (ث) | أبو سليمان الداراني | ١٥٥، ١٥٦٨ |
| أهو موسر من عقل ودين ... فزوجوه (ث) | أعرابي | ٣٢٨٢ |
| أو تدري من هو؟ .. هو والله ابن ابني | المستوغر بن ربيعة | ٦٩٧ |
| أوتينا مما أوتي الناس ومما لم يؤتوا (ث) | سليمان بن داود عليه السلام | ٢٩٢٨ |
| أوثق ما أكون بالرزق حين مجيء الخادم (ث) | مسروق | ٢٧٤٤ |
| أوجده الله فما مثله لطالب ذاك ولا ناشد (ث) | أبو نواس | ٣٤٤٦ |
| أوحى الله إلى داود أن العبد ليأتي بالحسنة يوم القيامة | علي | ١٧٤٩ت |
| أوحى الله إلى بعض أنبياء بني إسرائيل | هارون أبو الطيب | ١٢٠٢ت |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى إبراهيم صلى الله عليه وسلم أتدري (ث) | وهب بن منبه | ٢٧٥٤ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى داود صلى الله عليه وسلم: يا داود: يا داود اسمع مني (ث) | صالح المرّي | ١٧٤٩ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى داود عليه السلام (ث) | معاوية بن بجير | ٣١٣ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى بن عمران (ث) | سفيان الثوري | ٢٠٦٥ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى بن ميشا بن يوسف: أن قُلْ | وهب بن منبه | ٢٢٧٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه | | |
| وسلم اتخذ (ث) | منصور | ٢٤٩٤ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه | | |
| وسلم: يا موسى بن عمران إنّ الذي (ث) | وهب بن منبه | ١٧٧٦ |
| أوحى اللّه تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه | | |
| وسلم: تدري لِمَ (ث) | عبد الله بن المبارك | ١٥٥٠ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى صلى الله عليه | | |
| وسلم (ث) | عبد الواحد | ١٦٦١ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام: | | |
| إنّي رزقت الأحمق (ث) | وهب بن منبه | ١٦٥٣ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام (ث) | أبو عمران الجويني | ٢٢٢٤ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى موسى عليه السلام: | | |
| يا موسى لو شئت أن (ث) | وهب بن منبه | ١٨٩٤ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من أنبياء بني إسرائيل | | |
| إن أردت (ث) | وهب بن منبه | ١٢٠٢ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من أنبياء بني إسرائيل | | |
| يقال له أرميا حين ظهرت فيهم المعاصي (ث) | وهب بن منبه | ٩٠٠ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من أنبيائه: هب لي | | |
| من قلبك الخشوع (ث) | وهب بن منبه | ١٧١ |
| أوحى الله عز وجل إلى نبي من الأنبياء: اتخذ | | |
| الدنيا (ث) | سفيان الثوري | ١٣٢٢ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من الأنبياء أما | | |
| زهدك (ث) | الفُضيل بن عياض | ٩٦٢ |
| أوحى الله تبارك وتعالى إلى نبي من الأنبياء (ث) | يوسف بن أسباط | ٨٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أوحى إلى نبي من أنبياء بني إسرائيل (ث) | مكرم بن يوسف | ٤٨١ |
| أوحى الله عز وجل إلى آدم صلى الله عليه وسلم: | | |
| أنا اللّه ذو (ث) | وهب | ١٢٩٦ |
| أوحى الله عز وجل إلى موسى صلى اللّه عليه | | |
| وسلم: (ث) | مكحول | ٣٥٧٦ |
| أوحى الله عز وجل إلى نبي من الأنبياء أما زهدك | | |
| في الدنيا (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٤٤ |
| أوحشت البلاد واستوحشت ولا أراها (ث) | سفيان الثوري | ٤٧٤، ٧٥٦ |
| أوصى إلى الزبير سبعة من أصحاب رسول الله صلى | | |
| الله عليه وسلم (ث) | عروة بن الزبير | ٤٥٤ |
| أوصى بعض أهل العلم ابنه وكان له حظوة من (ث) | إبراهيم الحربي | ٣٤١٧ |
| أوصى بعض الحكماء ابنه فقال له: يا بني إياك (ث) | عبد القاهر | ١٩٩٣ |
| أوصى حكيم من الحكماء ابنه فقال له: يا بني .. (ث) | ابن عائشة | ٢٧١٥ |
| أوصى عبد الرحمن بن عوف لمن بقي ممن شهد (ث) | الزهري | ٢١٩٩ |
| أوصى عبد الملك بن صالح أمير السرية ببلاد | | |
| الروم قال | محمد بن سلام الجمحي | ١١٣٦ |
| أوصيني يا خليفة رسول الله صلى الله عليه | سلمان الفارسي | ١١٢٣، |
| وسلم (ث) | | ٢١٩١ |
| أوصيك أن لا تعصي الله وأنت تعلم (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٨٢ |
| أوصيك بتقوى الله، والله لإن تتقي الله أحب (ث) | زهير بن نعيم الباني | ٤٧٧، ٢٧٦٩ |
| أوصيكم تبيعوا دنياكم بأخرتكم تربحونهما (ث) | كثير بن زناد | ١٣٩٥ |
| أوصيكم عباد الله بتقوى الله وحده والعمل لما | | |
| عنده(ث) | المأمون | ٢٩٩٢ |
| أوقد على النار ألف عام حتى احمرت | أبو هريرة | ١٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أولى رجل أعرابياً معروفاً فقال له الأعرابي (ث) | الأصمعي | ٢٦٩٠ |
| أول شعر قيل في ذم الدنيا قول يزيد بن حذاق (ث) | أبو عمر بن العلاء | ٥٩٠ |
| أول شيء خلق الله تعالى القلم | ابن عباس | ١٢٥٠ت |
| أول العدل أن يعدل الرجل على بطانته ثم على (ث) | المأمون | ٨٧٠ |
| أول الفتن قتل عثمان بن عفان رحمه الله (ث) | حذيفة بن اليمان | ٢٨٦ |
| أول ما عُرف سؤدد خالد بن عبد الله القسري أنه(ث) | المدائني | ٢١٦٩ |
| أول ما كتب في الزبور ويل للظلمة (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٣٩ |
| أول ما يحاسب به العبد صلاته فإن أكملها | تميم الداري | ٢٧٥٨ |
| أول ما يسأل عنه العبد يوم القيامة أن يقال له | أبو هريرة | ٣٠١٨ |
| أول من رُميَ بسهم في سبيل الله عز وجل سعد بن أبي وقاص (ث) | القاسم بن عبد الرحمن | ٣٤٩ |
| أول المروءة طلاقة الوجه والثاني التودد إلى الناس (ث) | محمد بن النضر الحارثي | ٨٢٨، ٣٣٤١ |
| أول من تدعى المرأة المظلومة ...أين خصمك .. دعها يا(ث) | المأمون | ٢٠٢٨ |
| أول من ثوَّب بصلاة الصبح على عهد أبي بكر بلال وكان (ث) | طاووس | ٢٠٤١ |
| أول من يدخل الجنة عبد فقير وشهيد | أبي هريرة | ١٥٨٧، ٢٦٩٤ |
| أوّل الوقت رضوان الله | | ١٢٩ت |
| أولئك جن من أهل نصيبين يشهدون معي ختمة القرآن (ث) | الحسن الجعدي | ٣٩٦ |
| أوما أهديته إلينا يا نعيمان؟ | ( ) | ٧٤٩ |
| أوما تنشدونه عندكم ... لقد نسكتم نسكاً | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أعجمياً ... (ث) | سعيد بن المسيب | ٢٣١٢ |
| ألا أن خير الذخر خير تنيله (ث) | أبو العتاهية | ٣٢٥٢ |
| ألا أنبئكم بخير الناس منزلة؟ رجل يمسك بعنان (ث) | ابن عباس | ٢١٥٥ |
| ألا أيها الزوار لا يدعنكم (ث) | أبو دلف | ٨٣٩ |
| ألا تراه كيف يزويها عنه مرة ويُمرِّرَها عليه (ث) | الفضيل بن عياض | ٣٠٤٥ |
| ألاّ ترجوا إلا الله عز وجل ولا تخاف إلا ذنبك (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٩٣٠ |
| ألا ترونهم يعني أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم قد جثوا (ث) | عتبة بن ربيعة | ١٥٣٤ |
| ألاّ تعود في الذنب (شفاء الذنوب) (ث) | الربيع بن خثيم | ٢٩٨٤ |
| ألا تقولين كما قال الله عز وجل (ث) | أبو بكر الصديق | ١٣٧٦ |
| ألا قد أرى ألاّ خلود وإنه سينعق (ث) | السائب بن الأقرع | ١٧٧٤، ٣٤٢٩ |
| ألا يا رسول الله كنت رجاءنا (في رسول الله صلى الله عليه وسلم (ث) | صفية بنت عبد المطلب | ٣٢٣٣,٧٥٨ |
| ألا يا ليل أن حُيِّرت فينا (ث) | أبو المعتصم الأعرابي | ٣٢٨٩ |
| أي أخوتي تعني؟ (ث) | الحجاج بن يوسف | ٢٠٤٥ |
| أي باراً عودني منه الإجابة إذا دعوته (ث) | سفيان بن عيينة | ١١٤٧ |
| أي بني اذكروا صاحب الرغيف .. كان رجل في صومعة (ث) | أبو موسى الأشعري | ٢٢١٦ |
| أي دين، أي دين لو كان له رجال (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٨٥٢ |
| أي رجل عبد الله فيكم؟ | أنس بن مالك | ٧٢٤ |
| أي سهلناه للتلاوة ولولا ذاك ما طاق العباد أن يلفظوا به ولا أن يسمعوه (تفسير قوله تعالى: ﴿ولقد يسّرنا القرآن للذكر﴾ | سفيان بن عيينة | ١٠٤٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أيسُرك أن تغلب شرّ الناس ... إنّك إنْ فعلته تكنْ | | |
| شراً منه | حذيفة | ١٣٦٨ |
| أيسرك أن تقتل الناس كلهم؟ فإنك إن قتلت (ث) | عثمان بن عفان | ٢٨٣ |
| أيش تنظر، أما أنه لم يكتبه كاتب (ث) | مالك بن عبد الله الخثعمي | ٢٢٩٧ |
| أي شيء تعطونه؟ (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٣ |
| أي الطعام أحب إليك (قاله للأحنف بن قيس) (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٣٨ |
| أي العباد أحب إلى الله؟ قال صلى الله عليه وسلم: | | |
| أنفعهم للناس | ابن عباس | ٣٥٤٣ |
| أي عشيرتك أفضل؟ .. فأيهم أسود... | | |
| فأيهم أدهر (ث) | الحجاج | ١٨٧٠ |
| أيا فلان، أيا فلان، حتى يأتي على الأربعة الأبواب | | |
| ثم يقول (ث) | أبو الحلال | ١١٧٣ |
| أيا فلان، أيا فلان ... ماتوا والله وبادوا إن نعلا (ث) | محمد بن واسع | ٢٦٩١ |
| أي فلان، عاهد الله أن تتوب (ث) | مالك بن دينار | ٢٠١ |
| إياك فورة الغضب فإنها مصيرتك إلى ذل الاعتذار(ث) | بزرجمهر الحكيم | ٢١٤٢ |
| إياك والمرأة الرائعة الجمال (ث) | بعض حكماء العرب | ٢٢٥٠ |
| إياك وصدر المجلس فإنه مجلس قلعة (ث) | أعرابي | ٢١٤٥ |
| إياكم والزنا فإن فيه ست خصال ثلاث في الدنيا (ث) | ابن عباس | ٢٢٢٢ |
| إياكم والغيبة فإن الغيبة أشد من الزنا | جابر | ٣٥٤١ |
| إياكم والغيبة فإن الغيبة أشد من الزنا | أبو سعيد الخدري | ٣٥٤١ |
| إياكم والملعنة، قالوا يا رسول الله! وما الملعنة؟ | أبو هريرة | ١٦٦٠ |
| إياك أن تسيء إلى من تحب (ث) | بعض الحكماء | ٩٢٢ |
| إياك أن تمدحني فأنا أعلم بنفسي منك (ث) | عبد الملك بن مروان | ١١٣١ |
| إياك وأعراض الرجال فإن الحر لايرضيه من عرضه (ث) | يزيد بن المهلب | ٨٩٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أيفسد أدبك بأدبه (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٢١٤٠ |
| أي لساني (تفسير قول الأعمش: على شاهدي) (ث) | أحمد بن داود الدينوري | ٦٦٧ |
| أيكم أحسن عقلاً، وأروح عن محارم الله (ث) | ابن عمر | ٢٦٢ |
| أيما أكثر كراي أو ما أفسدت عليك.. فأطرح لك من الكرى بقدر ... المؤمنون عند شروطهم (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٥٥ |
| أيما رجل أشاد على امرىءٍ مسلم كلمة هو ... (ث) | أبو الدرداء | ٢٢٩٦ |
| أيما عبد أبق من مواليه | جرير بن عبد الله | ٣١٦٣ت |
| أيما لحم نبت من حرام أو جسد غذي بحرام | أبو بكر الصديق | ١٣٩١ |
| أين تريدون؟ أي جيراني .... أما إذ جعلتموه جاراً فوالله لا تصلون إليه أبداً | جارية بن مر (أبوحنبل) | ٢٢٣٣ |
| أين جذيم وهو طبيب كان في الجاهلية (ث) | بكر بن عبد المزني | ٦٣٦ |
| أي النساء أشهى إليك ... أي النساء أسوأ إليك؟ هذا النقد العاجل (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ١٧٣٦ |
| أيها الأمير من كانت هذه عقوبته على الخطأ فما ثوابه على الإصابة (ث) | رجل | ٢٢٧٦ |
| أيها الحكيم فكل ما أرى إلى فناء وزوال | النعمان بن امريء القيس | ١٢٢٢ |
| أيها الرجل إنه ليس بين الله عز وجل وأمة نبيه (ث) | أبو نصرالجهني | ٩٧٥ |
| أيها العالم صُم قبل أن لا تقدر على صوم يوم (ث) | الحسن | ٢١٠٠ |
| أيها الملك إن أحق الناس بذم الدنيا وقلاها من بسط له فيها (ث) | بعض الحكماء | ٢٥٥١ |
| أيها الملك إن الدنيا حديث حسن وقبيح (ث) | بزرجمهر | ٢٥٣٦ |
| أيها الناس اتقوا الله فإن تقوى الله غُنْمٌ (ث) | عثمان بن عفان | ١٢٩٢ |
| أيها الناس إن أخوف ما أخاف عليكم طول الأمل (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٩٣ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أيها الناس إنما الدنيا دار بلاغ والآخرة دار قرار (ث) | أعرابي | ١٠٣٤، ٢٥٣٨ |
| أيها الناس الصبر على محارم الله أيسر... لقد | | |
| أجترأت عليّ (ث) | الحجاج بن يوسف | ٢٦٣٢ |
| أيها الناس الصبر على طاعة الله (ث) | عامر بن ضبارة | ١٩٧١ |
| أيها الناس عمل صالح قبل الغزو فإنما تقاتلون (ث) | أبو الدرداء | ١١٣٥ |
| أيها الناس كأن الموت فيها على غيرنا كتب (ث) | عائشة | ١٢٨٨ |
| أي يظلم بصره (تفسير قوله تعالى: ﴿ومن يعش عن ذكر الرحمن﴾) (ث) | أبو عبيدة | ٩٣٢ |
| الآن لما كنت أكمل من مشى (ث) | أبو محمد بن عمرو الثقفي | ٣٠٨٨ |
| الآية التي مات منها علي بن الفضيل هي في:(ث) | إبراهيم بن يسار | ١٦٢٧ |
| الابتهار بالذنب أعظم من ركوبه (ث) | العوام بن حوشب | ٣٠٧٣ |
| الأحزان ثلاثة: خليل فارق خليله أو والد ثكل ولده أو رجل افتقر بعد غنى (ث) | بعض الحكماء | ١٦٥٥ |
| الأدب يذهب عن العقل السكر ويزيد الأحمق (ث) | داود بن رشيد | ١٨١٩ |
| الأذن عذراء تقترع كل يوم بحديث لم تسمعه (ث) | الهيثم بن عدي | ٣٠١٧ |
| الإزار إلى نصف الساق | أنس | ٣١٧٤ت |
| الاستغفار (دواء الذنوب) (ث) | الربيع بن خثيم | ٢٩٨٤ |
| الأسواق موائد الله في الأرض فمن أتاها أصاب (ث) | الحسن البصري | ٢٥٢٩، ٣٠٣٥ |
| الأسير لا يكتب عليه ذنب مادام في أيدي العدو (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٢٥٤ |
| الإصابة بالظن ومعرفة ما كان بما لم يكن (ث) | بعض الحكماء | ٦٠٠ |
| الإضرار في الوصية من الكبائر (ث) | ابن عباس | ٣٤٦٠ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الاعتصام بالسنة نجاة (ث) | (  ) | ٣٦٣ |
| الأعمال عند الله عزّ وجلّ سبعة، عملان موجبان .... | عبد الله بن عمر | ٢٥٤٨، ٣٠٢١ |
| الإفراط في الأنس يكسب قرناء السوء (ث) | أكثم بن صيفي | ٣٤٧٩ |
| الأمر أسرع من ذلك (لم لا تغسل قميصك)؟ (ث) | الحسن البصري | ٤٧٣ |
| الأنس باللّه (ث) | سباع الموصلي | ٢٠٧٩ |
| الإنسان يعيش حيث تحيا النار (ث) | بعض الحكماء | ٢١٣٤ |
| الأنفاس(تفسير قوله تعالى: ﴿إنّما نعد لهم عداً﴾)(ث) | الضحاك | ١٠٥٠ |
| الانقباض من الناس مكسبة للعداوة، وإفراط الأنس بالناس مكسبة (ث) | أكثم بن صيفي | ٦٧١ |
| الأوّاب الحفيظ الرجل يكون في المجلس فإذا أراد (ث) | عبيد بن عمير | ١٣٥٩ |
| الإياس من روح اللّه (سئل ما أكبر الكبائر)؟(ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٢٧ |
| الأيام والسنين والشهور والأزمنة شرّها أقربُها إلى الساعة(ث) | عبد الله بن مسعود | ٤٢٤ |
| بادر فقد أسمعك الصوت (ث) | عبد اللّه بن طاهرٍ | ١٧٣، ٣٣٧٧ |
| بادروا يا معشر الشباب بالصّحة قبل المرض .. (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٣١ |
| باب مضر كنانة، وفرسان مضر قيس، ورجال (ث) | عبد اللّه بن عوف | ٢٢٨٣ |
| باع عبيد الله بن عبد الله بن عتبة أرضاً له بثمانين ألفاً (ث) | سفيان بن عيينة | ٧٨٦ |
| باع علي بن عبد الله بن عباس عكرمة من خالد بن يزيد (ث) | أبو بكر بن أبي سبرة | ٧٨٣ |
| بالمعرفة هانت على العاملين العبادة والرّضا عن (ث) | أبو عبد اللّه البرّاثي | ٣٤٤٠ |
| بأي وجه تلقاني (ث) | الفضل بن يحيى | ١١٢٩ |
| بالوجه الذي ألقى به ربي وذنوبي إليه أكثر من ذنوبي | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إليك (ث) | الحميدي الشاعر | ١١٢٩ |
| ببكور كبكور الغراب وحرص كحرص الخنزير، | | |
| وصبر كصبر الحمار (ث) | بزرجمهر | ٣١٠ |
| بِتُّ إحدى عشرة ليلة عند الحجّاج بن قرافصة فما (ث) | سفيان الثوري | ١١٧، ٣٥٠٩ |
| بِتُّ ليلةً أتمنى ليلتي كلُها حتى كسوت البحر الأخضر | | |
| بالذهب (ث) | خالد بن صفوان | ١٨٢٩ |
| بِتُّ ليلةً في مسجد بيت المقدس فقمت في آخر | | |
| الليل (ث) | سهل بن حاتم | ١١١ |
| بتركي من أمرك ما لا يعنيني كما عناك من أمري (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٢٤٢ |
| بحسبٍ لا يُطعن فيه ورأيٍ لا يستغنى عنه (ث) | حصين بن المنذر الرقاشي | ١٧٣١ |
| بحسبكم دلالة على فضيلة العمل إنه ممدوح بكل لسان | | |
| يتزين به غير أهله | محمد بن سلام | ١٦٨٥ |
| بحسبكم دلالة على فضيلة العمل إنه ممدوح بكل | عبد الله بن مسلم | |
| لسان يتزين به غير أهله | بن قتيبة | ١٧٨٨ |
| بحق أقول لكم إنه من طلب الفردوس فخبز الشعير | | |
| له (ث) | عيسى عليه السلام | ٥٧٧ |
| بدء الخلق العرش والهواء وخلقت ... (ث) | مجاهد | ٢٥٨٢ |
| بَدَنٌ في التراب فداء من العقاب ينتظر الثواب (ث) | أبو ذر | ١٧٨٦ |
| بذل الحيلة في طلب الحلال وقلة الحوائج إلى الناس | | ١٧٨٤، |
| أفضل العبادة (ث) | بعض الحكماء | ٣٤٢٩/ م |
| بذيء رجل على آخر من العرب فتغافل عنه فقال: | | |
| إني لسكتٌ كالغافل (ث) | أبو عبيدة | ١٠٣٥ |
| بر أبويك وكن معهما حتى يموتا | عمر بن الخطاب | ١٢٦٤ |
| بر والديك فإن من بر والديه رضيت عنه | أثر إلهي | ١٦٨٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| برز عليك الأسود يا إبراهيم ....(ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٩٤ |
| بسم الله ﴿إني أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقياً﴾ | | |
| ﴿إخسؤوا فيها ولا تكلمون﴾ أخذت قوتك ما | عبد الله بن مسلم | |
| يدعو(ث) | بن قتيبة | ٦٠٣ |
| بسم الله الرحمن الرحيم من أردشير بن بابك المستأثر | | |
| دونه بحقه المغلوب ... (ث) | أردشير بن بابك | ١٩٦٨ |
| بشر قاتل ابن صفية بالنار | علي بن أبي طالب | ٤٥٢ت |
| بَشِر هذه الأمة بالسناء والنّصر والتمكين | أُبي بن كعب | ٢٢٢١ |
| بطحت لكم الدنيا وجلستم على ظهرها فلا ينازعكم | | |
| فيها إلا الملوك والنساء (ث) | عيسى بن مريم | ٩٨٤ |
| بطول الغربة، ما رأيت شيئاً أجلب لذوي الأحزان | | |
| من الوحشة والوحدة (ث) | راهب | ٢٠١٣ |
| بع الحيوان أحسن ما يكون في عينيك ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٠٠٩ |
| بع لي هذه الشاة واشترط في بيعها قلع الوتد | يونس بن عبيد | ٣٥٧٠ |
| بعث الأحنف بن قيس على جيشٍ قِبل خراسان (ث) | عمر بن الخطاب | ١٠١٥ |
| بعث إلى كاتبٍ له ثلاثين ألف درهم وكتب (ث) | روح بن حاتم | ١٤٢٧، ٣٢٧٧ |
| بعث إليَّ الحجّاج فأتيت فقال: ما اسمك فقلت (ث) | أبو وائل | ٢٧٣٠ |
| بعث إليَّ هارون الرشيد وقد زخرفت مجالسه (ث) | الأصمعي | ١٦٢١ |
| بعث بعض خلفاء بني أمية إلى أبي حازم بمال | | |
| فرده (ث) | سليمان بن بلال | ٢٧٤٣ |
| بعثت بها إليك ولا أقلّلها تكثّرا ولا (ث) | روح بن حاتم | ١٤٢٧، ٣٢٧٧ |
| بعثت بيت يدي الساعة حتى يُعبد الله ... | إبن عمر | ١٤٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بعثت على أثر ثمانيةآلاف نبي منهم أربعة | أنس بن مالك | ٣٢٠٥ |
| بعلامات فيهم، سود الوجوه زرق العيون ونحو ذلك(تفسير | | |
| قوله تعالى: ﴿يعرف المجرمون بسيماهم﴾).(ث) | سفيان بن عيينة | ٩٩٩ |
| بُعث نوح لأربعين سنة ولبث في قومه ...(ث) | ابن عباس | ٣٣٨٩ |
| بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ثلاث مئة راكب | جابر بن عبد الله | ١٤٢١ت |
| بقي محمد بن عجلان في بطن أمه أربع سنين (ث) | الشافعي | ٣٣٥٣ت |
| بكار بن سحيم هذا شيخٌ مدني، وبكّار هم عشرة | إبراهيم بن إسحاق | |
| أنفس (ث) | الحربي | ٢٧٨٢ |
| بكل ما استخرج الله به حق صاحبي (ث) | أعرابي | ٢٧٠٤ |
| بكوا الذنوب قبل بكائها وفرّغوا القلوب (ث) | أبو سليمان الداراني | ٢٦١٦ |
| بل ادع أنت حتى نؤمن | معروف الكرخي | (١٩) ملحق |
| بل أنت شتمت نفسك، أما علمت أن للجار على الجار | | |
| حقاً (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| بل أنت فاختر لنفسك، فإن القصاص أمامك (ث) | سعيد بن جبير | ١٢١٥ |
| بلسانٍ سؤول وقلبٍ عقول فكنت إذا لقيت عالماً | | |
| أخذت ... (ث) | دغفل النسابة | ٣٠٦ |
| بلى أوصيكم بالكتاب والسنة وبحسن الجوار (ث) | ضيغم | ٣٨٢ |
| بلى والذي نفسي بيده، ورجالٌ آمنوا باللّه وصدّقوا | أبو سعيد الخدري | ٣١٥٨ |
| المرسلين ... | | ٣١٥٩ |
| بلغ ابن عباس عن مجلس كان في ناحية باب بني سهم وهب بن منبه | | ١٠٢١ت |
| بلغ عمر أن العدو سايفوا أو قاموا للمسلمين | مالك بن مغول | ١٢٦٠ت |
| بلغ مسيلمة أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا تفل | الشعبي | ١٩٣٠ت |
| بلغ من كرمه أنه لا يسأل أحداً عن عذره مخافة أن | | |
| لا يكون له مخرج من ذنبه (ث) | بعض الحكماء | ١٨٠٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بلغنا أنّ الأعمال كُلَّها توزن إلاّ دمعة تخرج من عين | | |
| العبد ... (ث) | فرقد السبخي | ٢٠٠ |
| بلغنا أن دعاء العبد يُحبس عن السماء .. (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٨٣ |
| بلغنا أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعد ذلك | | |
| كان يأمر بالصدقة | قتادة | ٥١٥ت |
| بلغنا أنّ الضّيف لما جاؤوا إلى إبراهيم عليه السلام | | |
| قُدِّم ... (ث) | وُهَيب بن الورد | ٣٧ |
| بلغنا أنّ قوماً كانوا في سفرٍ لا يستنزلون (ث) | عبد العزيز بن أبي رواد | ٧٦٣ |
| بلغنا أن موضع هذا الحرف موضع ألف آية ﴿وإن من | | |
| شيء ... )﴾(ث) | الحسن البصري | ١٠٣ |
| بلغنا أن الملائكة تُلق بكتبها في سماء الدنيا (ث) | أبو عمران الجوني | ٣٥٣٥ |
| بلغنا إنّه إذا كان أول اللّيل نادى منادٍ من السماء (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٠٣ |
| بلغنا عن زيد بن ثابت أنه كان من أفْكه الناس (ث) | سفيان الثوري | ١٠٣٨ |
| بلغنا في قول اللّه عزّ وجلّ ﴿وكانوا لنا خاشعين﴾ | | |
| قال الخوف الدائم (ث) | سفيان الثوري | ١٥١٣ |
| بلغنا والله أعلم أن دون العرش بحارمن نار(ث) | أبو عمران الجوني | ٢٦٥١ |
| بلغني أن أبا بكر الصديق رضي الله عنه صلى | | |
| على جنازة (ث) | سفيان الثوري | ٢٥٨ |
| بلغني أن أباك كان ذا منزلة من ابن سيرين فما (ث) | الأصمعي | ٦٣٥ |
| بلغني أن إبليس اللّعين إذا لم يقدر على ابن آدم (ث) | أبو سليمان الدّاراني | ٩٧٩ |
| بلغني أنّ إبليس اللّعين قال: ثلاثة إذا ... (ث) | بكر بن خنيس | ٢٦٧٤ |
| بلغني أن ابن أمّ مكتوم رحمه الله إذا تصدق (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٩١ |
| بلغني أن الله تبارك وتعالى قال للعزيز (ث) | وهب بن منبّه | ١٦٨٧ |
| بلغني أن الله تبارك وتعالى قد حجز التوبة عن كل | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| صاحب بدعة (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٢٨٨ |
| بلغني أن الله تبارك وتعالى يجمع العلماء يوم القيامة فيقول ... (ث) | صالح المرّي | ١٦٧٨ |
| بلغني أن اللّه عزّ وجلّ يقول يوم القيامة أين عبادي (ث) | محمد بن المنكدر | ٢٨٦٧، ١٣٣٠ |
| بلغني أنّ أهل النّار يُعذّبون بأنواع من (ث) | صالح المرّي | ٢٤١١ |
| بلغني أن أول ما عرف من حكمة لقمان الحكيم ... (ث) | أبو معاذ | ٢٢٨ |
| بلغني أن أول من يدعى للحساب يوم القيامة (ث) | يحيى بن واسع | ٣٢٧ |
| بلغني إن الثوب إذا طوي رجع إليه ماؤه (ث) | سفيان الثوري | ٢٠١٥ |
| بلغني أن الخِضر عليه السلام قال لموسى عليه السلام (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٨١٩ |
| بلغني أن ذلك يدفع ميتةَ السوء (كان إذا تصدّق بصدقة قام بنفسه فوضع الصدقة ... )(ث) | ابن أم مكتوم | ٤٩١ |
| بلغني أنّ الرّجل المسلم إذا أُقيمت الصلاة فلم يقل اللّهم (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٥٠، ٢٤٣٩ |
| بلغني أنّ رجلاً قال لآخر: واللّه لئن قلت واحدة لتسمعن عشراً (ث) | الأصمعي | ٨٠٣، ٣٣٢٧ |
| بلغني أنّ الصالحين كانوا يستنجحون حوائجهم (ث) | عبد اللّه بن مسلم بن قتيبة | ١٠٦٤ |
| بلغني أنّ عامة النفر الذين ساروا إلى عثمان بن عفان (ث) | يزيد بن أبي حبيب | ٤٤٥ |
| بلغني أن عيسى ابن مريم عليه السلام قال: من كَثُرَ كَذِبه (ث) | عبد العزيز بن حصين | ٢٩٩٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بلغني أن عيسى ابن مريم عليه السلام مرّ بقوم فشتموه | | |
| فقال خيراً (ث) | عبد الله بن المبارك | ١٤٩٤ |
| بلغني أن عيسى صلى الله عليه وسلم قال: | | |
| يا معشر الحواريين إنّي كفت لكم الدنيا ... (ث) | وهيب المكّي | ٩٨٥ |
| بلغني أن عيسى عليه السلام قال لأصحابه: إن | | |
| كنتم (ث) | عمران بن سليمان | ٩٠١ |
| بلغني أن في بعض السموات ملكاً له من العيون (ث) | مالك بن دينار | ٢٠ |
| بلغني أن في التوراة مكتوباً: اشكُر لمن أنعم عليك (ث) | داود بن رُشيد | ١٥٠٦، ٣٠٤٦ |
| بلغني أن في الزبور مكتوباً من بلغ (ث) | الأصمعي | ١٢٧٨ |
| بلغني أن في السماء ملكين يناديان في كل يوم: | | |
| يا ليت الخلق (ث) | هارون بن رئاب | ١٩٥٨ |
| بلغني أنّ ما أحدٌ من بني آدم إلا ومعه خمسة من (ث) | عبد الله بن المبارك | ٢٥ |
| بلغني أن مقاتلة بني إسرائيل يومئذ ست مئة (ث) | زيد بن أسلم | ١٣٣٩ |
| بلغني أن ملك الموت صديق لك (ث) | رجل | ٨٧ |
| بلغني أن المؤمن إذا مات بكت عليه الأرض (ث) | مجاهد | ١٢٢٨ |
| بلغني أن المؤمن في الموقف ينظر إلى منازله (ث) | سفيان الثوري | ٤٠٦، ١٠٨٣ |
| بلغني أنّ النّار لا تأكل موضعاً مستّه الدموع ... (ث) | محمد بن المنكدر | ٤١٠ |
| بلغني أن موسى صلى الله عليه وسلم قال للخضر: | | |
| ادع لي (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٠٧ |
| بلغني أن يعقوب... | عمر بن يونس اليمامي | ١٢٢ت |
| بلغني أنك بعت دينك بفلسين ... بلغني أنك وقفت | | |
| على رجل ... (ث) | حذيفة بن قتادة المرعشي | ٢٠٢٤ |
| بلغني أنّك تقول: إسماعيل ابن عُليَّة، وكان يكره أن | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يقال ... (ث) | أحمد بن حنبل | ٣٢٣٢ |
| بلغني أنك خنت أمير المؤمنين (ث) | الربيع | ٢٣٢٩ |
| بلغني أنك متلاف؟ (ث) | المأمون | ٢٦٤٧ |
| بلغني أنّ أصيب ببلاد الروم على ركن من كنائسها (ث) | المدائني | ١٣٧٩ |
| بلغني أنه من غسل يده قبل الطعام كان في (ث) | عراك بن مالك | ٦٣٩ |
| بلغني أنّه من قال حين يُمسي أو يصبح أعوذ بك (ث) | الزّهري | ١٨٩٩ |
| بلغني أنّه يُرى نورٌ في الجنة فقيل ما هذا النور؟ (ث) | سفيان الثوري | ٩٧٠ |
| بلغني أنّه ينزل مع القطر من الملائكة أكثر من (ث) | الحكم | ٢٦٤٩ |
| بلغني أنّه يؤتى بالفقير يوم القيامة فيوقف بين (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٩ |
| بلغني أنهم وجدوا في مقام إبراهيم ثلاثة أصفح (ث) | الزهري | ١٢٩٦ت |
| بلغني عن حذيفة بن اليمان أنّه قال لرجلٍ أيسرُّك (ث) | سفيان بن عيينة | ١٣٦٨ |
| بلغني عن داود الطائي أنّه ما تكلم في شيءٍ عشرين (ث) | أبو نعيم الفضل بن دكين | ٢٥٥ |
| بلغني عن سليمان النبي صلى الله عليه وسلم إنه كان جالساً فرأى عصفوراً | ابن أبي فديك | ١/٢٤٣٥ |
| بلغهُ أنّ ملك الموت عليه السلام استأذن ربَّه ... (ث) | يحيى بن سليم | ١٢٢ |
| بُلينا وما تبلى النّجوم الطوالع (ث) | لبيد بن ربيعة | ٥٥٥ |
| بِمَ تُخوِّفني و اللّه لَلْفَقر أحبُّ إليّ من الغنى (ث) | أبو ذر الغفاري | ٢٨٧٥ |
| بما أنت أعز العرب ... هذه عشيرتك كما تزعم (ث) | النعمان بن المنذر | ٢٠٢٦ |
| بما أوصي، لم أدع من الدّنيا قليلاً ولا كثيراً... (ث) | صالح بن مسمار | ١٦٥٤ |
| بناتُ العمِّ أصبر والغرائب أنجب وما ضرب رؤوس (ث) | بعض الحكماء | ١٤٣٨، ١/٣٣٥٤ |
| بنعم الله عز وجل (تفسير قوله تعالى ﴿وذكرهم | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بأيام الله﴾) ... (ث) | ابن عبّاس | ١ |
| بُؤسٌ لمحب الدّنيا يُحب ما يبغضه ... (ث) | السّري بن يَنْعُم | ١١٥٢ |
| بيض العيون مِن العمى قد ذهب السواد والناظرُ (ث) | سعيد بن جبير | ١٠٤٩ |
| بين سماء الدنيا والتي تليها مسيرة خمس مئة عام | عبد الله بن مسعود | ٢٨٣٠ |
| بين مضغ الخبز وشرب الفتيت قراءة خمسين آية (ث) | داود الطائي | ٥٤ |
| بئس التجارة، ضمانُ نفسٍ ومؤنة ضرس ... (ث) | معاوية | ٢٥١٠، ٣١٩٦ |
| بئس الزّاد إلى المعاد العدوان على العباد (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٣٦٠ |
| بئس الشّعْبُ جياد، قال ولم ذلك يا رسول الله | أبو هريرة | ١٤٨٦ |
| بئس ما أثنيت على نفسك، أمّا إذا ضعفت (ث) | مؤرق العجلي | ٧٨٤ |
| بيان من العمى وهدى من الضلالة وموعظة من الجهل (تفسير قوله تعالى: ﴿هذا بيان للناس وهدى﴾) (ث) | عامر الشعبي | ٤٩٤ |
| بيتي المساجد، وطيبي الماء، وإدامي الجوع، وسراجي القمر بالليل (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٠٢ |
| بينا إبراهيم بن هشام يخطب على المنبر بالمدينة إذ سقطت عصاً (ث) | إبراهيم بن الفضل | ٢٢٣١ |
| بينا أنا أطوف ليلةً: إذ سمعت قائلاً ... (ث) | النباجي | ١٦٢٠، ٣٠١٠ |
| بينا أهل الجنة في الجنة إذ سطع لهم نورٌ ... (ث) | سفيان الثوري | ١٨٢٨ |
| بينا نحن عند الحسن إذ أقبل رجل من الأزارقة فقال له: (ث) | هشام بن حسان | ١٢٦٧ |
| بينما أنا أسير في فلاة وابن ظبيان معنا (ث) | عمير بن ضبيعة | ٢٠٨٢ |
| بينما أنا ببلد الرّوم أسير في جوف اللّيل فإذا هاتف (ث) | سَلْم الخوّاص | ٣٦٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بينما أنا نائم إذ أتاني آتٍ في منامي فقال: قم (ث) | زياد النميري | ٣٩٧ |
| بينما أنا واقِفٌ بجبلِ عرفات في ناحيةٍ من النّاس إذ..(ث) | ثابت البناني | ١٢٣٧ |
| بينما أهل الجنة في نعيمهم إذ سطع لهم نورٌ فرفعوا | جابر بن عبد الله | ٢٢٢٣ |
| بينما حَبْرٌ من أحبار بني إسرائيل متكىء (ث) | مالك بن دينار | ١٢٧٠ |
| بينما رسول الله صلى الله عليه وسلم يدعو على مضر | خالد بن أبي عمران | ١٢١٤ت |
| بينما ركبٌ يسيرون إذ هتف بهم هاتف ألا إنّما الدّنيا ...(ث) | وهب بن منبّه | ٣٩١ |
| بينما عيسى صلوات اللّه عليه يمشي في يومٍ صائفٍ وقد ... (ث) | أبو سليمان الداراني | ١٠١٧ |
| بينما نحن قعود عند رسول الله صلى الله عليه وسلم إذ أتاه آتٍ | عبد الله بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| بينما نحن نسيرُ ليلةً في بلاد الرّوم وكنت أمشي أمام ... (ث) | سليم الخوّاص | ١٠٤٦ |
| بينما يحيى بن زكريا وعيسى ابن مريم في البرية (ث) | أبو هريرة | ١٩٩٥ت |
| بينما يطوف بالكعبة إذا هو برجلٍ متعلقٌ بأستار ..(ث) | علي بن أبي طالب | ١٠٢ |
| البخيل خازن أعداءه والحليم مرغوب في إخاءه | بعض الحكماء | ٢٧٥٢ |
| البِرُّ شيءٌ هيّنٌ وجهٌ طليقٌ وكلامٌ لين ... (ث) | ابن عمر | ١٤٩٥ |
| البهتان على البريء أثقل من السموات السبع، والحق أوسع من الأرض | بعض الحكماء | ٢٧٨٥ |
| تابَ من الذنب وأمِنَ من الشرك وعمل (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٥٢ |
| تَبِعَ رجل حكيماً سبع مئة فرسخ في كلماتٍ فقال (ث) | محمد بن الحسين | ٢٧٨٥ |
| تبع محمد بن المنكدر جنازة رجلٍ كان تسفّه بالمدينة (ث) | سفيان بن عيينة | ١٢٤٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تبعث الخلائق يوم القيامة وإن السماء لتطش (ث) | أنس بن مالك | ٢٧٥٩ |
| تجد فيما يقرأ من الكتب دعاءً ... هذا الدعاء (ث) | ابن عباس | ٢٤٧٠ |
| تجد الناس معادن خيارهم في الإسلام... | أبو هريرة | ٣١٥٠ |
| تخرج دابة الأرض من جياد فيبلغ صدرها الركن | أبو هريرة | ١٤٨٦ت |
| تخطى ذنبك إلى عذرك وإن كنت من أحدهما على يقين من الآخر على شك (ث) | أعرابي | ٢٧١٢ |
| تخليص النيّة من فسادها أشدُّ على العاملين...(ث) | يوسف بن أسباط | ١٩٤٦، ٣٤٢٤ |
| تخوّفت أن أكون قد روّعته فقد بلغني أنّه لا (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٥٨ |
| تدعو الله أن ييسر عليك من الأمر ما (ث) | عيسى عليه السلام | ٢٢٤٩ |
| تدور دوراً (تفسير قوله تعالى: ﴿يوم تمور السماء موراً﴾) | مجاهد | ٢٦٢٥ |
| تدرون بين يدي من أريد أن أقوم؟ (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ٧٨٧ |
| تدرون ما الأثر؟ (ث) | أبو حمزة السكري | ٣٢٦ت |
| تدنو الشمس من رؤوس الخلائق وليس على أحدٍ يومئذٍ (ث) | سلمان الفارسي | ٧٢١ |
| تذاكرنا التواضع أنا وأيوب عند الحسن (ث) | يونس بن عبيد | ١٦٨٠ |
| تذاكروا النعم فإن ذكرها شكرها (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٣٦٣ |
| تراني أحمل هذا الحطب من الجبل فأبيعه (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٣٨ |
| ترحم عليه وليس على دينك (ث) | مجاهد | ٢٠٤٣ |
| ترك أبي مئة ألف بالعراق فلم آخذ (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩١ |
| ترك اللّذة (ماالمرؤة؟) (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٨٢٣، ٣٣٣٧ |
| تركت الحسد فبقيت (ث) | أعرابي | ٦٦٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تركي ما لا يعنيني (ث) | لقمان الحكيم | ٨١٩، ٣٣٣٦ |
| ترنم الحزين مشفاة لكمده (ث) | المحلِّم | ٢٧٦٤ |
| تزوّجي عبد الرحمن بن عوف فإنّه سيّدِ المسلمين | عمر بن الخطاب | ٣٧٧ |
| تستأمر البكر في نفسها فإن سكتت فقد رضيت ... | أبو موسى (؟) | ٣١٦٦ |
| تسحّروا فإنّ في السَّحور بركة ... | أنس بن مالك | ٢٩٩ |
| تسمون الله تبارك وتعالى إذا أكلتم وتحمدوه إذا (ث) | إبراهيم عليه السلام | ٣٧ |
| تضحك وأنت تراني أتقلب بين الجنة والنّار (ث) | شريح القاضي | ١٧٩٩ |
| تضمن الله عز وجل لمن خرج في سبيله | أبو هريرة | ١٣٩٢ت |
| تظلم عينه كأن عليها غشاوة | أبو عبيدة | ٩٣٢ت |
| تعاشر الناس زماناً بالدين والتقوى ثم رفع ذلك(ث) | الشعبي | ٢١١٧ |
| تعاف الكلاب الضاريات لحومها (ث) | قيس بن عمرو بن مالك | ٩٨٨ |
| تعال فحدّثنا ... إنّما أردت أن أنظر كيف (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٧١ |
| تعبّد النبي صلى الله عليه وسلم واعتزل الفساد حتى صار... | سفينة | ١٩٣٨ |
| تعرض على الأموات أعمالكم فإن رأوا حسنة استبشروا | أبو أيوب الأنصاري | ٢٠٩٥ |
| تعلّمت الحلم من قيس بن عاصم المنقري لقد اختلفت (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٣٢٨ |
| تعلّموا العلم تعرفوا به واعملوا به تكونوا (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٧٧ |
| تعلّموا العلم وتعلّموا للعلم السكينة والحلم وتواضعوا (ث) | عمر بن الخطاب | ١١٩٧ |
| تعلموا العلم وتعلموا للعلم السكينة | أبو هريرة | ١١٩٧ت |
| تعلموا العلم وتعلموا للعلم الوقار | علي بن أبي طالب | ١١٩٧ت |
| تعملون للدنيا وأنتم ترزقون فيها بغير العمل ولا تعملون | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| للآخرة وأنتم (ث) | عيسى عليه السلام | ١٨٠٤ |
| تغدوا خماصاً وتروح بطاناً (الطير) .... | عمر بن الخطاب | ٧٥٤ |
| تعوذوا بالله من الفقر والقلة والذلة | أبو هريرة | ٢٨٥٣ت |
| تغذى مع عبد الملك بن مروان أعرابي (ث) | الأصمعي | ٣١٢٧ |
| تقطع الآجال من شعبان إلى شعبان حتى أن | عثمان بن محمد | ٩٤٤ت |
| الرجل لينكح | بن المغيرة | |
| تكلّم بعض الزّهاد يوماً فقال لا تغتروا بطول (ث) | أبو عبد الله الصوفي | ١٤٩٢ |
| تكلّم ... بل بهيبة الأمل (أتكلم بجرأة اليأس..) (ث) | خالد بن عبد الله | ٣٣١٠ |
| تكلّم ملك من الملوك بكلمة وهو جالسٌ على | | |
| سريره (ث) | ابن عباس | ١٢٧٣ |
| تلفحهم لفحةً فلا تدع لحماً على عظم إلاّ ألقته على | | |
| أعقابهم (ث) | السُّدّي | ١٤١٦ |
| تلقى المؤمن شاحباً، وتلقى المنافق وباصاً | مالك بن دينار | ٩١٣ت |
| تلك الأرامل قد قضيت حاجتها (ث) | سفيان الثوري | ٣٣٧٨ |
| تلك الأصبع الفاردة أحب إليَّ من مائة ألف سيف شهير | | |
| وسنان طرير (ث) | قتيبة بن مسلم | ١٨١١ |
| تلك جلسة الآمنين (ث) | محمد بن واسع | ١١٧٧ |
| تلك دماءٌ طهّر الله يدي منها فما لي أخضب لساني | | |
| فيها (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٩٦٥ |
| تلك ضالّة لا توجد (دلّني على جليسٍ أجلس | | |
| إليه)؟ (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٣٨ |
| تمثل بهذين البيتين وهما العبد بني الحسحاس: | | |
| هريرة ودع (ث) | أبو حصين | ٣٣٥٧ |
| تُمسك النار يوم القيامة حتّى تبصّ كأنها ... (ث) | كعب الأحبار | ٧٠٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تمنّى رجالٌ أن أموت (ث) | يزيد بن عبد الملك | ٣٣٠١ |
| تنادي النار يوم القيامة يا نار آسفي يا نار (ث) | بلال بن سعد | ١٥٤١ |
| تنزّهوا من البول فإنّ عامّة عذاب القبرمن البول ... | أبو هريرة | ٣١ |
| تنظر ما عندك فلا تضعه إلا في حقه، وما ليس عندك | | |
| فلا تأخذه إلاّ بحقه (ث) | أبو حازم | ١٨١٠ |
| توفي أبو بكر رضي الله عنه يوم الجمعة لتسع ليالٍ | | |
| يقين من .... (ث) | الزّهري | ١٦٤ |
| توضأ فتمضمض ثلاثاً واستنشق ... | أبو هريرة | ١٤٥٨ |
| توفي رسول الله وهوابن ثلاث وستين سنة (ث) | معاوية | ٣٥٦٥ |
| تلا ﴿تبارك الذي بيده الملك﴾ حتى بلغ ﴿أيكم﴾ | ابن عمر | ٢٦٢ |
| التسليط على المماليك من الدناءة (ث) | بعض الحكماء | ٢٠٩٣ |
| التقرّب بالأعمال ... (ث) | أبو وائل | ١٣٣٢ |
| التقيُّ مشغولٌ عن الخطائين وإن أكثر (ث) | محمد بن سيرين | ١٩٩٢ |
| التكبّر على الأغنياء (في التواضع) (ث) | سفيان الثوري | ٤٦٤، ٩٩٢ |
| التلبينة مجمة لفؤاد المريض | عائشة | ٢٨٨٧ت |
| التمكن على المائدة خيرٌ من زيادة أربعة (ث) | وكيع | ٢٥٧٤ |
| التواضع مع البخل خير من السخاء مع الكبر (ث) | بعض الحكماء | ١٦٢٨، ٢٥٥٧ |
| التوبة | بعض العلماء | ٤٤ت |
| التوبة النّصوح تكفّر كُلَّ سيئة (ث) | عباية بن رفاعة | ٣١٣٤ |
| ثقة الرجل بجودة عقله وإقراره بوفوره (ث) | أنو شروان | ١٨٥٨ |
| ثكلتك أمك عمر، وبلغت ما أرى (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٠١ |
| ثكلته إن كان لا يسود إلا قومه (ث) | هند بنت عتبة | ٢٣١١ |
| ثلثمائة ألف وخمسون ألفاً من أهل الشام ومائة | أبو سفيان الحميري | ١٨١٦، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وخمسون ألفاً من أهل العراق (ث) | | ٣٠٥٩/م |
| ثلاث إذا كن فيك | عبد الله بن عمرو | ١٠٨٤ت |
| ثلاث كفارات وثلاث مهلكات | أنس بن مالك | ٨٩٩ت |
| ثلاثٌ في المنافق إذا وعد أخلف | جابر بن عبد الله | ٣٤٦٤ |
| ثلاثٌ من لم يكن فيه فإن الله تبارك وتعالى يغفر ما سوى ... | ابن عباس | ١٥٣٨ |
| ثلاث من كُنّ فيه فقد استكمل الإيمان من إذا (ث) | لقمان الحكيم | ١٣١١ |
| ثلاثٌ مهلكات وثلاث منجيات ... شيخ مطاع ... | أنس بن مالك | ٨٩٩ |
| ثلاث وستون (كم كان سن علي رضي الله عنه يوم قتل) (ث) | أبو جعفر محمد بن علي | ٢٦٤، ٣٤٠٦ |
| ثلاثة أشياء تخلق العقل (ت) | النّظام | ١٨٥٣ |
| ثلاثة أشياء تدلُّ على عقول أربابها (ث) | يحيى بن خالد | ٢٣٢٤ |
| ثلاثة أشياء تميت القلب، مجالسة الأنذال، ومجالسة الأغنياء، ومجالسة النساء (ث) | بعض الحكماء | ١١١٦، ١/٣٣٩٩ |
| ثلاثة أشياء يورثن النسيان أكل التفاح (ث) | ( ) | ٢٣٤٩ |
| ثلاثة أشياء ربّما صرعن أهل البيت عن (ث) | الأصمعي | ٢٤٥٤ |
| ثلاثة أشياء لا تنال إلاّ بارتفاع همة (ث) | بزرجمهر | ١٥٧٩ |
| ثلاثة أعين لا تمسّها النار عينٌ حرست في سبيل (ث) | ثابت بن معبد | ٢٥٩ |
| ثلاثةٌ غرباء، قرآن في قلب رجل فاجر، ومصحف في ... (ث) | شداد بن أوس | ٢٥٦٨ |
| ثلاثةٌ لا يعرفون إلا في ثلاثة مواطن (ث) | لقمان الحكيم | ٥٢٠ |
| ثلاثة ما أقولهنّ إلا ليعتبر بهنّ معتبر لا أحلف (ث) | الأحنف بن قيس | ١٨٣٤، ٣٠٨١ |
| ثلاثة من أحسن شيء جودٌ لغير ثواب ونصبٌ لغير(ث) | عبد الملك بن مروان | ٢١١٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ثلاثةٌ مِن قريش أحسن قريش أخلاقاً (ث) | عبد الله بن عمرو بن العاص | ١٠٧٤ |
| ثلاثةٌ من كنّ فيه من الأئمة اضطلع بأمانته (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٢٦٢ |
| ثلاثةٌ لاتنبغي أن يكون في قاضي من قضاة المسلمين الحقد والحسد والحِدّة (ث) | ابن عبّاس | ٤٦٥، ٢٩١٥ |
| ثلاثةٌ نفرٍ لا يكلمهم الله يوم القيامة ... | أبو ذر | ٣٤٩٩ |
| ثلاثة يحكم لهم بالمروءة حتى يتكلموا (ث) | بعض الحكماء | ٨٢٧ |
| ثلاثة يخلقن العقل وفيهن دليل على الضعف (ث) | بعض الحكماء | ١٨٥٣ |
| ثمانية من الناس إن أُهينوا فاللوم عليهم (ث) | أبو زيد النحوي | ١٨٥٤ |
| الثقة بما في يد اللّه عزّ وجل والإياس عمّا في أيدي الناس (ث) | أبو حازم | ٩٦٣ |
| ثمر القناعة الراحة وثمر التواضع المحبة (ث) | بزرجمهر الحكيم | ٢٤٤١ |
| ثوي في قريش بضعة عشر حجة (ث) | ضرمة بن قيس | ٧٧٩ |
| الثنية لها جمال والضرس له منفعة (ث) | شريح القاضي | ١٨١٤ |
| جاء أعرابي إلى ابن طاهر وهو راكبٌ فأنشده (ث) | الحسين والد علي | ٣٢١٧ |
| جاء أهل اليمن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم | عائشة | ١١٠٣ت |
| جاء دهقان فسأله عن المسكر أحرام هو أم حلال؟ (ث) | إياس بن معاوية | ٢٥٣٥ |
| جاء رجلٌ إلى الأحنف بن قيس فشتمه فسكت (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٧٩٩ |
| جاء رجلٌ إلى بعض العبّاد فقال له بم أستعين (ث) | محمد بن أحمد عن أبيه | ٢١٧٤ |
| جاء رجلٌ إلى سليمان النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا نبيّ الله (ث) | محمد بن كعب القرظي | ٣١٠٦ |
| جاء رجلٌ إلى شريح يستقرض منه دراهم فقال له (ث) | عبد الله بن واصل | ١١١١ |
| جاء رجل إلى عروة بن الزبير فعزاه (ث) | هشام بن عروة | (٢٥) ملحق |
| جاء رجل إلى علي بن عبد الله بن عباس بن عبد المطلب في حاجة (ث) | سفيان بن عيينة | ١٠٣٤ |
| جاء رجلٌ إلى عيسى ابن مريم عليه السلام فقال: | سعيد بن أبي سعيد | |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا معلم (ث) | المقبري | ٢٢٤٩ |
| جاء رجل فشتم الأحنف بن قيس فسكت عنه | | |
| فأعاد عليه (ث) | عبد الله بن بكر المزني | ٣٣٢٣،٧٩٩ |
| جاء رجلٌ من آل حاطب إلى علي بن أبي طالب | | |
| رضي الله عنه أخبرهم (ث) | ثابت البناني | ٢٤٢ |
| جاء ضمام بن ثعلبة السعدي قال: أيكم ابن | | |
| عبد المطلب | أبو هريرة | ٢٤٤٧ |
| جاد هشام عليكم بالدنيا وجدتم عليه بالبكاء | | |
| فترك (ث) | هشام بن عبد الملك | ٣٠٨٧ |
| جاءني رجلٌ من أهل البصرة فقال: جئت في | علي بن الحسين علي | |
| حاجةٍ (ث) | بن أبي طالب | ١٢٤٨ |
| جرى بين رجلين كلام فقال أحدهما لصاحبه | | |
| لمثل (ث) | الأصمعي | ١٥٩٩ |
| جالست الفقهاء فوجدت ديني عندهم | | |
| وجالست (ث) | داود بن أبي هند | ٢٩١٧،٤٥٨ |
| جاهِدوا المشركين بأنفسكم وأموالكم ... | أنس بن مالك | ١١٤٤ |
| جرّبت الدّنيا منذ خمسين سنة فما وجدت أحداً (ث) | وهيب بن الورد | ١٧٧٩ |
| جزاءه أن أحرم وجهه عن النار وائمّنه من الفزع | | |
| الأكبر.... | أثر إلهي | ٢٨٧ |
| جزاك الله خيراً ما أحبّ إليّ أن يجلس إليّ (ث) | أبو يوسف القاضي | ٣٠٤ |
| جزاك الله من أمٍّ خيراً فقد كنت خير أمٍ | أبو اليقظان | ٢٦٥ |
| جعل بعض الخلفاء يُقرّع رجلاً بذنبٍ وأراد (ث) | الأصمعي | ١١٨١، ٣٤٠٢ |
| جعل رزقي تحت ظل رمحي | ابن عمر | ٧٥٤ت |
| جف القلم بما هو كائن (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٢٢٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| جل من استغنى عنك(ث) | بعض الحكماء | ٢٦٤٦ |
| جلس قوم إلى بعض أهل العلم بالبصرة فقال لهم: (ث) | إبراهيم الحربي | ٢٠٦٧ |
| جلست إلى سعيد بن المسيب سنتين (ث) | قتادة | ٢٩٠٢ |
| جمع أبو عثمان طرف الكلام (ث) | معاوية (؟) | ٢٣٤١/م |
| جمع الأشياء بحقّها ووضعها في حقها (ث) | ربيعة بن أبي عبد الرحمن | ١٣٩٨ |
| جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه يوم أحد | سعد بن أبي وقاص | ٣٤٩ت |
| جنّتان من ذهبٍ للسابقين وجنتان من (ث) | أبو بكر بن أبي موسى | ١٤١٤ |
| جنّتان من ذهبٍ للسابقين وجنتان من (ث) | حماد بن سلمة | ٢٧٨٧ |
| جنّتان من ذهبٍ للسابقين وجنّتان من | أبو موسى الأشعري | ١٤١٥ |
| جنتان من فضة آنيتهما وما فيهما | عبد الله بن قيس | ١٤١٥ت |
| جنبوا مجالسنا ذكر النساء والطعام فإني أبغض (ث) | الأحنف بن قيس | ٦٤٤ |
| جهاد الهوى (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٩٦٣ |
| جهد المقلّ (السخاء) (ث) | أبو نصر الجهمي | ٩٧٥ |
| جئت أقاتل معك (ث) | أبو هريرة | ٢٨٣ |
| جئت في حاجة ... تبيعوني الحائط الفلاني ... (ث) | عبد الله بن جعفر | ٣٢٢٩ |
| جئت يا أمير المؤمنين أقاتل معك فأْمرني بأمرك(ث) | الحسن بن علي بن أبي طالب | ٢٨٣ |
| الجاسوس له ذِكرٌ في كتاب الله ﴿وفيكم سمّاعون﴾(ث) | سفيان بن عيينة | ٣٣٩٤ |
| الجزع شر الحالين، يباعد المظلوم، يورث الحسرة ويبقي على صاحبه الندم (ث) | الأحنف بن قيس | ١٩٢٤ |
| الجنةُ تشتاق إلى ثلاثة عليٍّ وعمار وسلمان ... | أنس بن مالك | ٢٦٧ |
| الجنون لهم قليل (في النفر الذين ساروا إلى عثمان (ث) | ابن المبارك | ٤٤٥/م |
| الجنين في بطن أمه لا يطلب ولا يحزن فيأتيه الله (ث) | مكحول | ٥٦٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الجوع أعلم | أعرابي | ٦٤٨ |
| الجيد من هذا قول أبي الطفيل عامر بن واثلة الكناني وكان من آخر من رأى النبي صلى اللّه عليه وسلم موتاً (ث) | ابن قتيبة | ١٠١٣ |
| حاجتك عندنا فائت منزلك فإنها ستأتيك (ث) | شريح القاضي | ١١١١ |
| حاجة الكريم إلى اللئيم ثم يردّه (الجرح الذي لا يندمل) (ث) | حبيٌ المدنية | ٥٤٩ |
| حاصر مسلمة بن عبد الملك حصناً وأصابهم فيه جهدٌ (ث) | الأصمعي | ١٣٥٤ |
| حب الغنى وطول الأمل وشدة الحرص... (كمال الحمق) (ث) | بعض الحكماء | ١٦٣٠ |
| حُبس إليّ رجل قد ذهبت يمينه من عضده فجعل (ث) | زيد بن أسلم | ٢٧٨٢ |
| حتى تتكامل العدتان: عدة أهل النار (ث) | إياس بن معاوية | ٢٦٢٩ |
| حتى متى أنا في حط وترحال وطول سعي وإدبار وإقبال (ث) | المأمون | ٢١٨٤ |
| حتى متى لا نرى عدلاً نسرّبه (ث) | عبد الله بن شبرمة | ٥٧٣ |
| حتى يجيء ابني فأسأله (ث) | سعد بن مسلمة | ٢٧٠٢ |
| حتى يفنى الطعام (ث) | أبو تراب النخشبي | (١٣) ملحق |
| حجّت أعرابية على ناقةٍ لها فقيل لها: أين زادك؟ (ث) | الأصمعي | ١٤٦٩ |
| | | ٣٢٦٥ |
| حججت فلقيت عبد العزيز بن أبي رواد فقال لي: (ث) | أبو عثمان الأسود | ١٩٤٩ |
| حججت مع قتادة فعرض له في الطريق رجل من بني تميم (ث) | سعيد بن أبي عروبة | ٢٨٢٩ |
| حججت مع هارون الرشيد سنة من السنين (ث) | الأصمعي | ٢٦٠٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| حججت مع هارون الرشيد ومعه بعض ولد قتيبة (ث) | الأصمعي | ٢٦١٠ |
| حج أبو جعفر المنصور فشيعه المهدي (ث) | عبد الله الزبيري | ٢٩٤ |
| حجّ حذيفة بن قتادة المرعشي من مرعش بعشرة دراهم (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٢٠ |
| حجّ ستين حجّة (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٦٢ |
| حجّ الحجّاج فنزل بعض المياه بين مكة والمدينة (ث) | سعيد بن أبي عروبة | ١٣٥ |
| حج علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب رضي الله عنهم فلما أحرموا (ث) | سفيان بن عيينة | ٧٨٨ |
| حج عمرو بن ميمون ستين ما بين حجة وعمرة | أبو إسحاق | ١٣٢٣ت |
| حجّ المهدي ومعه الكسائي فقدّمه بالمدينة يصلي (ث) | الماجشون (عبد العزيز بن محمد) | ٧١٥ |
| حدّثت بهذا الرشيد فأمر أن يشتري له ألف (ث) | الأصمعي | ٢٧٠ |
| حدّثت عن المُحلِّم أنّه كان يقول (ث) | ابن عائشة | ٢٧٦٤ |
| حدثنا أيوب سيد الفقهاء | شعبة | ١١٨٥ |
| حدثتني أنت عني عن أيوب عن الحسن قال (ث) | منقذ | ١٤٣٤ |
| حدثني أشياخ من أهل أيله من أهل العلم (ث) | إبراهيم الأشعث | ٥١١ |
| حدثني بعض أصحابنا أن بعض العمال من أهل البصرة (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ١٤٧٢ |
| حدثني بعض أصحابنا أنّه قرأ على قبر: تناجيك (ث) | أحمد بن عبدان الأزدي | ٩١٤ |
| حدثني بوصية الحجّاج بن يوسف ... حدثني بها ...(ث) | المنصور (أبو جعفر) | ٢٠١٨ |
| حدثني مشيخة أهل المدينة أن فروخاً والد ربيعة | عبد الوهاب بن عطاء | (٢) ملحق |
| حدثني من رأى على فصّ ملك الهند مكتوب (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٥٢٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| حدثني من رأى على قبة فاطمة ابنة عبد الملك بن مروان (ث) | والد بن عائشة | ٢٠١١ |
| حدّثني من قرأ على قبر: أتعمى عن الدنيا وأنت (ث) | محمد بن علي | ٧٤٧ |
| حديث أم زرع «عكومها رداح» | ( ) | ٩٠٣ |
| حديث أن الله تبارك وتعالى يرى في القيامة | ( ) | ٩٢٩ |
| حديث من اقتنى كلباً لغير زرع ولا حراسة أنه ينقص كل يوم | ( ) | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| حسبكم دلالة على علو منزلة العلم أنّه (ث) | أردشير | ١٦٨٥، ١٧٨٨ |
| حسبي حياة اللّه على كل ميّت (ث) | أبو محمد بن عمرو الثقفي | ٣٠٨٨ |
| حسن الجوار عِمارةُ الرِّياد وصدقة البشر مثواه (ث) | جعفر بن محمد | ١٠٩٠ |
| حسن الظن من حسن العبادة ... | أبو هريرة | ٥٩ |
| حسناتك من عدوك أكثر منها من صديقك (ث) | الفضيل بن عياض | ١٣٤٦، ٣٣٥١ |
| حصنت بيتك جاهِداً وعمّرته (ث) | الرياشي | ٣٢٩٩ |
| حضر أعرابيٌّ يشهد عند بعض القضاة (ث) | أبو نصر | ٢٧٠٤ |
| حضرت أعرابياً وفاة فقيل له: أوصي فقال: (ث) | الأصمعي | ٣١١٠ |
| حضرت أعرابياً الوفاة فقيل له: قل لا إله إلا الله (ث) | الأصمعي | ٣١١٠ |
| حضرت بعض نُسّاك البصرة الوفاة وعنده أخٌ له (ث) | أيوب السختياني | ٩٢٨ |
| حضرت عبد الله بن إدريس الأودي فقال له رجل (ث) | يحيى بن يوسف الزّمّي | ٢٦٦٦ |
| حضر باب عمر جماعة من مشيخة الفتح وغيرهم | سفيان الثوري | ٦١٧ |
| حضر جدي علي بن أصمغ الوفاة فجمع بنيه | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فقال: (ث) | الأصمعي | ٢٩٣ |
| حضر رجلاً من أهل المدينة الوفاة وكان خيّراً فاضلاً | مصعب عن أبيه | ٣١٢٠ |
| حفظ ذنوبه حتى رجع عنها (تفسير قوله تعالى : | | |
| ﴿لكل أواب حفيظ﴾) (ث) | ابن عباس | ٢٨٦٤ |
| حلالها حساب وحرامها عذاب فدعوا الحلال (ث) | علي بن أبي طالب | ٤٢١، ٩٥٥ت |
| حمزة بن عبد المطلب رحمه الله (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿يا أيتها النفس المطمئنة﴾) (ث) | بريدة | ٤٧٥ |
| حمل أبو جميل سنين من خارج حصن مرد (ث) | محمد بن أعين | ٨٤١ |
| حملة العرش ثمانية أربعة يقولون (ث) | هارون بن رئاب | ٢٤٤٩ |
| حملة العرش ما بين كعب أحدهم إلى أسفل قدميه(ث) | ابن عباس | ٢٥٨٠ |
| حملت مولاة أحمد بن عبد الله ثلاث سنين حتى | | |
| خافت (ث) | الليث؟ | ٣٣٥٣ |
| حمل ما ناب العشيرة أدناها وأقصاها والقبول (ث) | أبو نصر الجهني | ٩٧٥ |
| حيل بينهم وبين الإيمان | الحسن البصري | ٤٤ت |
| الحاج بيت الله أفضل وأعظم أجراً من (ث) | مجاهد | ٢٤٩٢ |
| الحاذق الذي ضغطه الحنف والحاقب الذي يجد (ث) | إبراهيم الحربي | ٥٩٦ |
| الحاسد عدوٌّ مهين لا يدرك وتره إلا (ث) | خالد بن يحيى | ٢١٨٦ |
| الحاسد عدو نعمتي متسخط لقضائي | قول الله تعالى | ٦٥٨ |
| الحجامة على الرّيق فيها شفاء وبركة وتزيد... | عبد الله بن عمر | ٦٣١ |
| الحجامة في النقرة تورث النسيان | أنس بن مالك | ٢٣٤٩ |
| الحجر الأسود من حجارة الجنة وزمزم خطفه... | عائشة | ٢٩٧ |
| الحدث حدثان حدثٌ من فيك وحدث من | | |
| فرجك (ث) | ابن عباس | ٨٨٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الحدث وأذى المسلم (ما يوجب الوضوء)؟ (ث) | عبيدة السَّلماني | ٩١١ |
| الحديث ذكرٌ يحبه ذكور الرجال ويكرهه (ث) | ابن شهاب الزهري | ١٠٣٣ |
| الحزم في الأمور حفظ ما كلفت وترك ما كفيت (ث) | أكثم بن صيفي | ٨٢٠ |
| الحزن ملك البدن والملك لا يسكن إلا في (ث) | عبد الواحد بن زيد | ١٢٣٦، ١٢١ |
| الحزن ملك لا يسكن إلا قلباً مطهراً (ث) | بشر بن الحارث | ١٧٧٨ت |
| الحزن هو الملك، والملك لا يحل بدارٍ (ث) | بشر بن الحارث | ١٧٧٨ |
| الحسد أوّل ذنبٍ عُصي الله عز وجلّ به في (ث) | سفيان بن عيينة | ٦٥٩ |
| الحسد أول ذنب كان في السماء | الحسن | ٦٥٩ت |
| الحسن وابن سيرين سيدا أهل البصرة عربيهم (ث) | سوار بن عبد الله | ٢٠٨٧ |
| الحسن مني والحسين من علي .... | المقدام بن معدي كرب | ٣٤٤٤ |
| الحق أكبر منه ... فمن ينطق بحجّتي إذا (ث) | إياس بن معاوية | ٦٢٠ |
| الحمد لله بالإسلام والحمد لله بالقرآن والحمد لله (ث) | الحسن البصري | ٣١٤٠ |
| الحمد لله حنطة الأهواز وتمر الفرات وزيت (ث) | ضرار بن القعقاع بن معبد بن زرارة | ١٩١٣ |
| الحمد لله الذي أنقذك [بي] من النار ثلاث مرّات (ث) | عبد الله بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| الحمد لله الذي جعلهم يتمنّون عند الموت ما نحن (ث) | أبو حازم | ١٨٠٧ |
| الحمد لله الذي صدقنا وعده وأورثنا الأرض (ث) | سفيان الثوري | ٢٦٣٧ |
| الحمد لله الذي لم يجعل بكاء يعقوب صلى اللّه عليه وسلم على ابنه (ث) | الحسن البصري | ٦٩١ |
| الحمد لله الذي هذا من رياشه (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٦٨ |
| الحمّة السُّم يريد الحيّة والعقرب وأشباهها (ث) | ابن قتيبة | ٧١٨ |
| الحميم أشبه (في تفسير حلم)؟ (ث) | يوسف بن أسباط | ١٧٠٣ |
| الحواري: الناصر | | ٤٥٣/م |
| الحيّات ما سالمناهن منذ حاربناهن... | عبد الله بن مسعود | ١٧٦٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خالق هذا وخالق عمرو بن العاص واحد... (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٣٤ |
| خُبِّرت بوفاتك فغمتني ثم جاءتني وفادتك (ث) | المأمون | ٣٣٠٦ |
| خدمت رسول الله صلى الله عليه وسلم تسع سنين | أنس | ٣٤٩١ |
| خُذ مثقال لُبان ومثقالاً من سكر فاشربهما (ث) | ابن عباس | ٢٢٣٦ |
| خذ من الدهر ما كفى (ث) | أبو صالح الهمداني | ٣٣٠٤ |
| خذ هذا فادفعه إليه واعلمه أنّي لا أملك (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٣ |
| خذه بارك الله لك فيه فإنّي لأستحيي (ث) | طلحة بن عبيد الله | ١٦٦٨ |
| خذها بحقها إنّما قيل ذلك لأنّه ينبح الضيف (ث) | المنصور | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ |
| خذها من غير فقيه (قاله لأعرابي قال: والله..) (ث) | ابن عباس | ٥٠٧ |
| خرج أهل الدنيا من الدنيا ولم يذوقوا أطيب شيءٍ منها.... معرفة اللّه عَزّ وَجَلَّ (ث) | مالك بن دينار (أبو يحيى) | ٢٢٢، ١٨٧٩ |
| خرجت امرأة ومعها صبي لها، فجاء الذئب | ابن عباس | ٣٥٢٩ت |
| خرجت حاجاً فلما مَرَرْت بقباء تداعي أهلها... (ث) | أبو الغصن الأعرابي | ٣٢٨٤ |
| خرجت ليلةً لبعض حاجتي وأنا بالكوفة وأنا أظن (ث) | منصور بن عمار | ٦٧٧ |
| خرجت مع زادان إلى الجبّان يوم العيد فرأى ستور (ث) | العيزار بن جرول | ١٥٢٤ |
| خرجت مع علي بن أبي طالب رضي الله عنه، فلما أشرف على الجبان (ث) | كميل بن زياد | ٢٧٨ |
| خرجتُ مع ناسٍ من قريش في تجارةٍ إلى الشام في (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٠١ |
| خرجت من واسط فسألت ربّي أن يرزقني صحابه (ث) | مجاهد | ٤٩٧ |
| خرج حصين بن عمرو بن معاوية بن كلاب وخرج | عبد الله بن أبي | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| معه (ث) | عبيدة بن عمار بن ياسر | ٨٥٨ |
| خرج رجلٌ من أصحابنا في طلب ضالةٍ له قال: | | |
| فسرت (ث) | عيسى بن يزيد | ١٩٥٤ |
| خرج عبد الله بن جعفر إلى حيطان المدينة، فبينا هو | | |
| كذلك (ث) | عمر بن أبي قيس | ٣٢٢٩ |
| خرج على ألف بغلةٍ شهباء عليها مياثر (ث) | قتادة | ٢٧٢٦ |
| خرج علي بن أبي طالب رضي الله عنه ومعه صاحب | | |
| له (ث) | شبيب بن غرقدة | ١٥٧١ |
| خرج عمر بن الخطاب رضي الله عنه في يوم حار | | |
| واضعاً رداءه على رأسه (ث) | الحسن البصري | ١٤٠١ |
| خرج عيسى صلى الله عليه وسلم على أصحابه وعليه | | |
| جُبّة (ث) | المغنم بن سليمان التيمي | ٩٠٢ |
| خرج غُلام في بني إسرائيل بفخٍ له فنصبه (ث) | مجاهد | ٢٢٤٦ |
| خرج قيس بن سعد في جيشٍ فيهم عمر بن الخطاب | | |
| فجعل قيسٌ (ث) | موسى بن عقبة | ١٤٢١ |
| خرجت في نفر من هذيل من أهل البصرة (ث) | عثمان بن سليمان | ١٩٥٤ت |
| خرجنا في جنازةِ النوار بنت أعين وكانت تحت | | |
| الفرزدق (ث) | أبان | ١٦٨٩ |
| خرجنا مرة في سفر وكنا ثلاثة نفر فنام أحدنا | بعضهم | (١) ملحق |
| خرجنا مع عمر بن الخطاب رضي الله عنه إلى مكة | | |
| فما ضرب (ث) | عبد الله بن عامر بن ربيعة | ٤٩٠، ٢٤١٥ |
| خروج الآيات بعضها على أثر بعضٍ يتتابعن... | أبو هريرة | ٢١٥٦ |
| خزاعية الأطراف مُرِّية الحشا (ث) | أبو المعتصم الأعرابي | ٣٢٨٨ |
| خزيمة بن خازم وأصحابه (فمن الغوغاء) (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خَصَّ الله تبارك وتعالى أبا بكرٍ الصِّدّيق رضي الله | | |
| عنه بأربع (ث) | الشعبي | ٢٨١٥ |
| خطب أعرابيٌّ إلى قومٍ فقيل له: ما تبذل من (ث) | الأصمعي | ١٦٤١ |
| خطب الحجّاج يوماً ثم أنشد قول سويد بن | | |
| كاهل (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ٢٢٠٩ |
| خطب الحسن بن علي بن أبي طالب رضوان الله | | |
| عليهما بعد (ث) | إسحاق بن هبيرة | ١٠٣٠ |
| خطب عبد الله بن مسعود رضي الله عنه فقال: | | |
| إن عمر بن الخطاب (ث) | محمد بن حبيش | ١٠٢٥ |
| خطب عبد الملك بن مروان بمكة لما حج يوماً (ث) | الأصمعي | (٢٠) ملحق |
| خطب عثمان بن عفان رضي الله عنه فقال في خطبته: | | |
| ابن آدم إعلم (ث) | مجاهد | ٢٠٧ |
| خطب المأمون يوم الجمعة فقال بعد الثناء على الله | | |
| عز وجل (ث) | يحيى بن أكثم | ٢٩٩٢ |
| خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم على ناقته الجدعاء | | |
| وليست العضباء | عائشة | ١٢٨٨ |
| خِفتُ أن أُقبض في الخطوة الثانية فأسأل فيما (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٤٥ |
| خلال المكارم عشرة تكون في الرجل ولا تكون (ث) | عائشة | ١٨٧٣، ٣٣٦٥ |
| خلف الأثقال واسلك هذه المفازة وحدك (ث) | رافع بن عميرة الطائي | ١٠١٨ |
| خُلُقُكَ فحسِّنه (تفسير قوله تعالى: | أبو سهل (كثير بن زياد) | ١٥٢٧، |
| ﴿وثيابك فطهر﴾) (ث) | | ٣٠٤١ |
| خلق الله سبحانه وتعالى الخلق نصب عينيه لم | | |
| يخلق (ث) | ميسرة | ٢٩٥٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خلق الله تبارك وتعالى كل داية وكتب أجلها... | أبو هريرة | ٩ |
| خلّوا لهم دنياهم فخلّوا بينكم وبين (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٦٢ |
| خمسة أشياء ضائعة، سراج يوقد في الشمس (ث) | بعض الحكماء | ٧١٣ |
| خمص البطون من الطوى، يبس الشفاه من الظمأ | | |
| عمش العيون من البكاء (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٤٩ |
| خوّف رجلٌ رجلاً جواداً بالفقر فكتب (ث) | محمد بن سلاّم | ٢١٣٩ |
| خويدمك أنس أشفع له يوم القيامة | أنس بن مالك | ٣٠ |
| خياركم الذين يأخذون من دنياهم لآخرتهم ومن ... | حذيفة بن اليمان | ٧٥٢ |
| خير أُمتي قرناً بُعثت فيهم ثم الذين يلونهم ثم يظهر فيهم السِّمن... | بريدة الأسلمي | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| خير الإخوان من إن استغنيت عنه لم .... (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٢٢٤ |
| خير شبابكم من تشبه بكهولكم وشرّ ... | واثلة بن الأسقع | ١١١٨ |
| خيرما يخلف من بعده ثلاث ... | أبو قتادة | ٣٥٠٠ |
| خير الناس قرني ثم الذين يلونهم | | ٢٠٠٢ |
| خير نساءٍ ركبن الإبل صالح نساء قريش ... | أبو هريرة | ٣١٥١ |
| الخائفون الذين صدقوا المخافة من الله (ث) | الضحّاك | ٢٢٤٠ |
| الخلفاء خمسة ... | سفيان الثوري | ٣٥٦٢ |
| الخير الذي لا شرّ فيه الشكر مع ... (ث) | عون بن عبد الله بن عتبة بن مسعود | ٢٦٨٥ |
| الخيمة درة مجوفة طولها في السماء ستون ميلاً في كل زاوية (ث) | عبد الله بن قيس | ١٤١٣ |
| داء البدن الذنوب ودوائها الاستغفار (ث) | الرّبيع بن خثيم | ٩٢٥ |
| دخل إبراهيم بن أدهم الجبل ومعه فأسٌ رومي | خلف بن تميم | ٣٦٠ |
| دخل أسقف نجران على مصعب بن الزبير فضرب | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وجهه بالقضيب (ث) | الحكم بن هشام الثقفي | ١٥٢٣ |
| دخل بعض الحكماء إلى بعض الملوك وقد غضب | | |
| على (ث) | إبن عائشة | ١٤٤٥ |
| دخل هشام بن عبد الملك الكعبة، فإذا بسالم بن | | |
| عبد الله | سفيان بن عيينة | ٨٠ |
| دخل الهذيل بن زفر على يزيد بن المهلب في (ث) | الأصمعي | ١١٦١ |
| دخلت الحمّام فخدمني ولم أكافئه وأنا أعلم إنّه (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٨٩٤ |
| دخلت بعض الخيام فإذا أنا بجارية واللّه ما | | |
| أحسبها (ث) | الأصمعي | ٣٤٤٨ |
| دخلت الجنّة فرأيت قصراً من ذهب فقلت: لمن ... | أنس بن مالك | ١٩٧ |
| دخلت حِصناً من حصون الساحِل من قرى الشام | | |
| وأنا (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٩٤ |
| دخلت على أبي ذر فرأيته شعثاً شاحباً بيد | | |
| صوف (ث) | أم طلق | ٢٨٥٩ |
| دخلت على الثوري بمكة وقد شرب دواءً | عبد الله بن المبارك | ١٢/٢٤٣٥ |
| دخلت على جارٍ لي أعوده فقلت له: أي فلان (ث) | مالك بن دينار | ٢٠١ |
| دخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي | | |
| عضدي حلقة صفر | عمران بن حصين | ١٨٣٨ |
| دخلت على زبيد وهو عليل فقلت له:شفاك (ث) | فضيل بن مرزوق | ١١٦٧ |
| دخلت على عائشة فقلت يا أماه اكشفي لي عن (ث) | القاسم بن محمد بن | |
| | أبي بكر | ٢٢٢٩ |
| دخلت على عليّ بن أبي طالب رضي الله عنه وهو | عقيل بن عبد الرحمن | |
| خليفة وهو على (ث) | عن عمته | ٤١٩، ٣٠٣٣ |
| دخلت على عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه فقال | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لي ... (ث) | الزهري | ٥٠٤ |
| دخلت على كرز بن وبرة بيته فإذا عند (ث) | محمد بن فضيل عن أبيه | ١٢٤٢ |
| دخلت على المغيرة بن أبي حكيم في مرضه (ث) | ابن أبي روّاد | ٤٥١ |
| دخلت على هارون الرشيد يوم الجمعة وهو يُقلّم اظفاره (ث) | الأصمعي | ١٥٩ |
| دخلت مسجد حمص فإذا أنا بقوم لهم روأ، فظننت (ث) | معمر بن راشد | ٣٢٠٨ |
| دخلت مع ابن عمر على عبد الله بن جعفر بن أبي طالب رضي الله عنهما فأعطاه (ث) | نافع مولى ابن عمر | ٧٨٢ |
| دخلتُ مع أبي على علي بن أبي طالب رضي الله عنه فسلّم عليه، فقال: (ث) | الفرزدق | ١٥٣٢ |
| دخلت مكة فإذا أنا بجويرية متعبّدة الليل أجمع (ث) | مالك بن دينار | ١٥١٥، ٣١٣٨ |
| دخل رجلٌ على المنصور فقال له: ما مالك ..(ث) | المعلّى بن أيوب | ١٤٢٣ |
| دخل رجلٌ على المهدي من بعض أشراف أهل البصرة (ث) | الأصمعي | ٧١١ |
| دخل رسول الله صلى اللّه عليه وسلم بعائشة رضي الله عنها وهي بنت تسع سنين | (  ) | ١١٣٣ |
| دخل السوق فكبر الناس (ث) | أبو عوانة | ٢١٥٧ |
| دخل صديق لعبد الله بن طاهر عليه كان يعرفه قديماً (ث) | معلى بن أيوب | ٨٩٧ |
| دخل عطاء بن أبي رباح على عبد الملك بن مروان وهو على سرير (ث) | الأصمعي | ٣٠٥ |
| دخل على عبد الله بن حازم يعزيه بابنه حين قتل (ث) | عبد الله بن ذكوان | ١٧٧٥ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| دخل عليَّ طاوس يعودني فقلت له | عبيد الله بن أبي صالح | ١٢٤١ت |
| دخل عمرو بن سعيد على معاوية في مرضه الذي مات (ث) | عبد الملك بن عُمير | ١٣٧٧ |
| دخل فرقد على الحسن فقال: السلام عليك (ث) | يعلى بن حكيم | ٦٤١ت |
| دخل مالك بن هنادٍ على بلال بن أبي بردة فقال له(ث) | الحسن بن أبي جعفر | ١١١٥ |
| دخل مكة على رأسه المغفر ... | أنس بن مالك | ٣٤٨٣ |
| دخلت الجنة فإذا فيها طير كأنها البخت | أبو سعيد الخدري | ١١٠٢ت |
| دخلت الجنة فاستقبلتني جارية شابة | بريدة | ١١٠٢ت |
| دخلنا على عامر بن عبد الله وهو يبكي بكاءً شديداً (ث) | يزيد الرقاشي | ٤٠٨ |
| درجة الرّضا عند الله درجة المقربين وهم أكثر (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٥٥٤ |
| دعا أعرابيٌّ بعرفة فسمعته يقول: اللّهم إني أعوذ (ث) | مؤرج | ١٦٦٣ |
| دعا أعرابي لمسروق فقال: وقاك الله خشية (ث) | عبيد بن يعيش | ٢٣٤٢ |
| دعا بإناءٍ فأُتي بقدحٍ من زجاج فيه شيء من ماء .. | أنس بن مالك | ٣٠٨٢ |
| دعا له ومسح رأسه (أبو محذورة) ... | عطاء | ٩٤٧ |
| دعا بإسحاق فاستجيب له وزيد يعقوب (ث) | مجاهد | ١١٤٨ |
| دعا رجلٌ بعرفات إلى جنب عمر بن عبد العزيز فقال في (ث) | سفيان بن عيينة | ١٨١٣ |
| دعا رجلٌ رَجُلاً إلى الغداء فقال له: هذا بكرا ... (ث) | المدائني | ١٧٦٥ |
| دعا علي الناس إلى البيعة فجاء عبد الرحمن بن ملجم المرادي فرده مرتين (ث) | عامر بن واثلة | ١٠٤١ت |
| دع الدواء ما احتمل بدنك الداء (ث) | ابن أبجر | ١٩٨٧ |
| دع الكذب حيث ترى أنّه ينفعك فإنه يضرك (ث) | بعض أهل العلم | ٨٨٤ |
| دعاء المرء لنفسه ... | عائشة | ١٥٦٧/م |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| دعاء موسى حين وُجِّه إلى فرعون ودعاء رسول | | |
| الله (ث) | الضّحاك بن مزاحِم | ٢٨٩٠ |
| دعاء عيسى صلى الله عليه وسلم وقت رفعه الله عزّ | | |
| وَجَلَّ وهو دعاء (ث) | وهب بن منبه | ٧٢٨ |
| دعائي ودعاء الأنبياء قبلي عشية عرفة | عبد الله بن عمر | ٤٩ت |
| دعاء الكرب: لا إله إلاّ الله الكريم الحليم | أبو مسعود | ٤٣٥ت |
| دعاني إبراهيم بن أدهم إلى طعامه فأتيت | | |
| فجلست (ث) | بقية بن الوليد | ١٩٤٧ |
| دعاؤك لنفسك خير لك من دعائي لك (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٢٤٠ |
| دعاؤك لنفسك خيرٌ لك من دعائي لك أما (ث) | ابن عيينة | ١٢٤١ |
| دعت أعرابية لرجلٍ فقالت: كبت الله كل عدوٍ (ث) | محمد بن سلاّم | ١٩٣٣ |
| دعني عن هذايا أبا عمرو فإنّه بلغني أنّه من (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٩٦ |
| دعني فإنّي في وِردي (ث) | ثابت البناني | ٢٥٥٦ |
| دعني يا حَضَري فإنّي أحبُّ أن تنشأ (ث) | دَبْرة بن ينبوب | ٢٥٧٣ |
| دعوة سرٍ أفضل من سبعين (ث) | عقبة بن عبد الغفار | ٢٧٣٥ |
| دعوة مستجابة ... مسيرة يومٍ للشمس من قال (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٤٦٥ |
| دفع أردشير إلى رجلٍ كان يقوم على رأسه كِتاباً (ث) | الأصمعي | ١٣١٣ |
| دفن شهداء المؤمنين بأحدٍ بدمائهم ولم يغسلهم ... | أنس بن مالك | ٣٣٦٧ |
| دلوني على رجل أسكن إليه في الرخاء والشدة | أبو مسعود | ٤٣٨ت |
| دون الله تبارك وتعالى سبعون ألف حجاب من نور... | سهل بن سعد الساعدي | ٢٥٧٧، ٣٠٢٢ |
| دياركم أمامكم وحياتكم بعد موتكم ... (ث) | أحمد بن المعدّل | ١٥٦٢ |
| دينُ الله ومن أحسن من الله ديناً (هي الفطرة) (ث) | ابن كثير | ١٤٦٥ |
| دينك دوام نعم الله عزّ وجلّ عليك (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٦٥٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الداء الذي لا دواء له إلا رضوان الله عز وجل (ث) | وهب بن منبه | ٢٠٩٧ |
| الدعاء مستجاب ما بين النداء | أنس بن مالك | ١٠٤٧ت |
| الدعاء ينفع مما نزل ومما لم ينزل فعليكم ... | ابن عمر | ١٦٨٦ |
| الدنيا حلوه، فمن أخذها بِحقِّها بارك الله له ...(ث) | محمد بن عبد الرحمن عن عمّته | ٢٧٨٨ |
| الدنيا دار صدقٍ لمن صدقها ودار نجاةٍ لمن فهم (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢١١ |
| الدنيا دول ما كان منها لك أتاك على ضعفك ...(ث) | علي بن أبي طالب | ٥٦١، ٢٣٦٩ |
| الدنيا طالبة ومطلوبة فمن طلب الدنيا طلبه الموت (ث) | أبو حازم | ٣٠١٢ |
| الدنيا العافية والشباب الصحة (ث) | سلم بن قتيبة | ١٧٢٩ |
| الدنيا كُلُّها أربعة وعشرون ألف فرسخ فملك (ث) | أبو الجلد | ٨٣٥ |
| الدنيا كُلُّها غموم فما كان فيها من سرور فهو ربح (ث) | ابن مسعود | ٣٣٩٦ |
| الدنيا وقتك الذي يرجع إليك فيه طرفك (ث) | بعض الحكماء | ٢١٣١ |
| الدّهر أعرض مِنه ... ولا أُخاف أن أموت في أوله (ث) | خالد بن صفوان | ٢٠٣١، ٢٤٨٦ |
| الدواوين عند الله تبارك وتعالى ثلاثة فديوان لا يغفره | عائشة | ٦ |
| ذاك رجلٌ مذكورٌ في الدنيا شريف فيها منسيٌ في الآخرة ... | هشام بن محمد عن أبيه | ١٠١٦ |
| ذاك رجلٌ ليس له صديق في السِّرِّ ولا عَدُوّ في (ث) | شبيب بن شبيبة | ٣٢٩٦ |
| ذاك علم صفة، وهذا علمٌ وضع مواضعه (ث) | المهلب | ١٦٧٧/م |
| ذاك مالي جدت به، وهذا عقلي بخلت به | عبد الله بن جعفر | ٣/٢٤٣٥ |
| ذاك والله الكامل (ث) | أعرابي | ٢١٠٦ |
| ذاك يزيد في الرقم (ث) | يحيى بن معين | ٢٧٠١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ذاك يوم القيامة (ث) | عكرمة | ١٠٧١ |
| ذاك يوم ولدتُ فيه ويوم أُنزِل عليّ فيه ... | عمر بن الخطاب | ٢١٢ |
| ذاكرت أحمد بن حنبل هذا الحديث (ث) | إدريس الحداد | ٢٧ |
| ذكر أعرابيٌّ أميراً فقال: كان إذا ولي لم يطابق (ث) | أبو نصر | ٢٢٠٣ |
| ذكر أعرابي رجلاً فقال: كان أحلم من فرخ طائر (ث) | ابن عائشة | ٨٠٢، ٣٣٢٦ |
| ذكر أعرابيٌّ رجلاً فقال: ما أدري أي الصبرين (ث) | الأصمعي | ١٧١٠ |
| ذكر أعرابي رجلاً فقال: لا تراه الدهر إلا وكأنه لا غنى به عنك ... | محمد بن سلاّم الجمحي | ٨/٢٤٣٥ |
| ذكر أعرابيٌّ قوماً فقال: والله ما نالوا بأطراف (ث) | الأصمعي | ٢١١٩ |
| ذكر جعفر بن محمد رضي الله عنه عن أبيه أنه كره الهمز (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٧١٦ |
| ذكر لسفيان بن عيينة حديث رسول الله صلى الله عليه وسلم (ث) | علي المديني | (٢٤) ملحق |
| ذكروا امرأةً في البادية بالحجاز أنها ترقي برقية عجيبة (ث) | ابن قتيبة | ٧١٨ |
| ذكرت يوماً تتقلب فيه القلوب والأبصار (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٠٣ |
| ذلك عدو اليهود من الملائكة | عبد الله بن سلام | ٧٢٤ |
| ذلك نكاحٌ لم نشهده (ث) | الشعبي | ٢١٤٧ |
| ذللت طالباً لطلب العلم فعززت مطلوباً (ث) | ابن عباس | ١٦٣٥ |
| ذمَّ رجلٌ الدّنيا عند علي بن أبي طالب رضي الله عنه (ث) | عاصم بن ضمرة | ١٢١١ |
| ذمَّ رجلٌ رجلاً فقال: اجتمع فيه ثلاث أشياء (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢١٧١ |
| ذنب يغفر وذنب لا يغفر | أبو هريرة | ٣ت |
| ذهب أبو فلان الأعرابي في حاجة له فدعته امرأة | المدائني | ٥٦٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ذهب النّاس فلا صوت ولا عين (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿أو تسمع لهم ركزاً﴾) (ث) | الحسن البصري | ٤٧٢، ٢٣٧٠ |
| ذهب بعمل يدي، فلم يقم من مجلسه حتى (ث) | محمد بن سيرين | ٤٢٧ |
| ذهب من كنت أتعلَّمُ منه ومن كان يتعلّم مني (ث) | سفيان الثوري | ٩٤٢ |
| الذنب الذي لا يترك مظالم العباد بعضهم من | | |
| بعض (ث) | محمد بن كعب | ٢٨٩٣ |
| الذنوب ... الاستغفار ...ألا يعود في الذنب (ث) | الربيع بن خثيم | ٢٣١٧، ٢٩٨٤ |
| الذنوب ثلاثة: ذنب يغفر (ث) | ابن عباس | ٦ت |
| الذي قتل عثمان بن عفان رضي الله رجل من | | |
| مراد من (ث) | عيسى بن عبيد عن عمّتِه | ٣٠٠١ |
| الذي يأكل بدينه(ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٠ |
| الذين لا يظلمون وإذا ظلموا لا ينتصرون (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿وبشر المحسنين﴾) (ث) | عمرو بن أوس | ٤١٦، ٣٠٣١ |
| رأى بعض متفرِّسي العرب معاوية وهو صبي | | |
| صغير (ث) | صالح بن كيسان | ٢٣١١ |
| رأى الثوري رَجُلاً عِند قومٍ يشكو ضيقةً فقال له (ث) | أبو حذيفة | ١٣١٨ |
| رأى رجل ليحيى بن سعيد القطان قبل موته (ث) | عفان بن مسلم | ١١٧٥، ٣٤٠٠ |
| رأى صاحب لنا رَبَّ العِزّة عز وجل في النوم قبل | أبو عبد الرحمن الزاهد | |
| موت (ث) | (رفيق بشر بن الحارث) | ٤٤٨ |
| رأى فضيل بن عياض رجلاً يسأل في الموقف | | |
| فقال (ث) | بشر بن الحارث | ١٣١٧ |
| رأى قائفان وهما منصرفان من عرفة بعد النّاس | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يوم (ث) | أبو طرفة الهذلي | ٢٥٥٩ |
| رأت جارية المنصور وعليه قميص (ث) | محمد بن منصور | ٢٣١٤ |
| راحتها أريد (ث) | الربيع بن خثيم | ١٢٠٤ |
| رأس مائة سنة يبعث الله ريحاً طيبة ... | بريدة الأسلمي | ١٩٨٩ |
| رأيت أبا بلال في النوم كلباً تذرف عيناه فقال ..(ث) | أخت بلال بن مرداس ابن أديّه | ٢٧٢ |
| رأيت أبا معاوية الأسود وهو يلتقط الخِرق من المزابل ويغسلها (ث) | يحيى بن معين | ٩٧ |
| رأيت ابن طارق في الطواف وعليه نعلان مخصوفتان (ث) | محمد بن فضيل عن أبيه | ١٢٤٣ |
| رأيت أربع ضرائر في غارٍ ما لهنّ بيت (ث) | مسلم | ٢٢٧٨ |
| رأيت إصبع طلحة بن عبيد الله التي وقى بها رسول الله صلى الله عليه وسلم شلاّء (ث) | قيس | ٤٨٣ |
| رأيت أصبعي طلحة قد شلتا | قيس بن أبي حازم | ٤٨٣ت |
| رأيت أعرابياً بمنى فصيحاً يسأل الناس فسمعته يقول: (ث) | الأصمعي | ١٣٨٦ |
| رأيت أعرابياً عند الملتزم فقال: اللّهم إنّ لك عليَّ حقوقاً (ث) | الأصمعي | ١٥٦، ٣٣٧٢ |
| رأيت أعرابياً في بني عذرة قد أتت عليه مئةٌ وعشرون سنة (ث) | الأصمعي | ٦٦٠ |
| رأيت أعرابياً يضرب أمّه فقلت له: أتضرب أمك؟ ... (ث) | الأصمعي | ٣٢٥٨ |
| رأيت أعرابية ذات جمالٍ رائع تسأل بمنىً فقلت (ث) | الأصمعي | ١٥٨٥ |
| رأيت الأسود بن يزيد قد سالت عيناه على خديه (ث) | حنش بن الحارث | ١١٦٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رأيت الأسود بن يزيد قد ذهبت إحدى عينيه من الصوم | | ١١٦٦ت |
| رأيت الأوزاعي في المنام فقلت له:... (ث) | يزيد بن مذكور | ٣٥٧٨ |
| رأيت البارحة فيما يرى النائم كأن قائلاً (ث) | حبيب بن هيثم العايشي | ٢٢٨٠ |
| رأيت ببلاد الهند شجراً لها وَرْد أحمر فيه (ث) | حبيب بن وائل | ٢٠٨١ |
| رأيت بشراً الحافي في النوم (ث) | الحسن بن مروان | ٣٥٧١ |
| رأيت بشراً الحافي يبكي (ث) | يحيى بن المختار | ٣٥٧٥ |
| رأيت بشر بن الحارث ومعروفاً الكرخي في النوم | أبو جعفر السّقا | |
| كأنهما (ث) | (رفيق بشر بن الحارث) | ٣٦٩ |
| رأيت بشر بن ميمون وهو عند الحجام وقد (ث) | محمد بن يعقوب | ٢٤٩٣ |
| رأيت الثوري جالساً وقد التحف بردائه فلم | | |
| يصب (ث) | عبد الرحمن بن مصعب | ٢٨٣٢ |
| رأيت جبريل عند سدرة المنتهى عليه ستمائة ... | عبد الله بن مسعود | ١٩٩٠ |
| رأيت جَدَّةً بنت إحدى وعشرين سنة، قال: وأقل (ث) | الحسن بن حي | ١١٣٣ |
| رأيت جعفر بن أبي طالب يطير في الجنة | أبو هريرة | ٢٥٢٠ |
| رأيت الحسن في بعض طرقات مكة في جوف الليل وهو | | |
| يجر ردائه (ث) | صحار بن عائذ | ٢٩٣٧ |
| رأيت الحسن في المنام مسروراً شديد البياض | | |
| تتبرق (ث) | مالك بن دينار | ١٤٣ |
| رأيت الحسن ودع رجلاً وعيناه تهملان وهو | | |
| يقول: (ث) | إياس بن دغفل | ١٤٣١ |
| رأيت حمزة الزَّيات في النوم وفي سكرجة فيها | | |
| خردل (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٥١ |
| رأيت الخضر عليه السلام وهو يمشي مشياً | عمرو بن عبد العزيز | |
| سريعاً (ث) | القرشي | ١٨٨٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رأيت داود الطائي يصلي كأنّما يطلع في النار (ث) | معاوية بن عمرو | ١٩٤٠، ٢٩٦٧ |
| رأيت دبرة بن ينبوب الأعرابي وهو يضرب أمه فقلت له (ث) | الأصمعي | ٢٥٧٣ |
| رأيت الذنوب تميت القلوب ويتبعها الذل إدمانها (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٧٧ |
| رأيت رجلاً بالأهواز قيل له قل لا إله إلا الله (ث) | ربيع بن خثيم البصري | ٣٨٤ |
| رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ صفه لي (ث) | جهضم بن الضحاك | ٢٦٢١ |
| رأيت سفيان الثوري سجد سجدة فطفت سبعة أسابيع (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٧٩٧ |
| رأيت سفيان الثوري في المنام بعد ما مات فقلت: (ث) | أبو خالد الأحمر | ١٤٢ |
| رأيت سفيان الثوري في النوم وهو في بستان وهو يقول:(ث) | أبو معاوية | ٢٦٣٧ |
| رأيت طلحة بن عبيد الله لما حول من مكانه فرأيت | عائشة بنت عبيد الله | ١٢٥٦ت |
| رأيت عابداً من العبّاد وقد اجتمع عليه النّاس (ث) | ضمرة بن ربيعة | ٢١٩٢ |
| رأيت عاصماً الجحدري بعد موته بسنتين في منامي(ث) | رجل من آل عاصم الجحدري | ١٤٢/م |
| رأيت عجباً اليوم ... جئت قبل الفجر وأنت تدعو وقوم (ث) | أبو عمران التّمار | ٣٩٦ |
| رأيت عروة بن الزبير فرأيته بحراً لا تكدره الدّلاء (ث) | الزهري | ١٨٥ |
| رأيت على البراء خاتماً من ذهب (ث) | محمد بن مالك الجوزجاني | ٣٦٧ت |
| رأيت على رأس ابن الزبير من المسك ما لو كان (ث) | أبو الضُّحى | ٣٣٤٧ |
| رأيت علياً رضي الله عنه يلتقط حب الرمان يأكله (ث) | مرجانة | ٦٣٥ت |
| رأيت علياً عليه السلام أبيض الرأس واللحية (ث) | أبو إسحاق | ٢٦٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رأيت عمر بن الخطاب رضي الله عنه يطوف | | |
| بالبيت (ث) | ابن عباس | ١٣٠٩ |
| رأيت عمر بن الخطاب رضي الله عنه يطوف بالكعبة | | |
| وعليه (ث) | علي بن أبي طالب | ٦٠٥ |
| رأيت فلاناً مولى باهلة يطوف بين الصفا والمروة (ث) | المدائني | ٢١٢١ |
| رأيت قائد الفيل وسائِسه بمكة أعميين (ث) | عائشة | ١٢٥٤ |
| رأيتك أفسدت عليه دنياه وأفسد عليك (ث) | أسماء بنت أبي بكر | ٣٣١٦ |
| رأيتك تأكل فكلّما أكلت لقمة رميت للكلب | | |
| مثلها (ث) | عبد الله بن جعفر | ٣٢٢٩ |
| رأيت الكساني في المنام فقلت إلى ماذا صرت (ث) | حميد الرواسي | ٢٧٣ |
| رأيتك قصرت في الأكل (ث) | الأوزاعي | ٨٧٦ |
| رأيت لو أنّ رجلاً صام الدهر لا يفطر وقام الليل لا | عمر بن محمد | ٢١٩٦، |
| يفتر (ث) | بن المنكدر | ٢٩٨٨ |
| رأيت مالك بن دينار بعد موته في منامي فقلت (ث) | سهل أخو حزم | ١٤١ |
| رأيت مالك بن عبيد الله الخثعمي يتوضأ وكان في ساقه | | |
| مكتوب «لله» (ث) | حسان مولى بني مالك | ٢٢٩٧ |
| رأيت محمد بن سيرين دخل السوق فكبّر الناس (ث) | أبو عوانة | ٢١٥٧ |
| رأيت مسكينة الطفاوية في منامي (ث) | عمار بن الراهب | ٣٥٣٠ |
| رأيت مسلم بن يسار في النوم بعد موته بسنة (ث) | مالك بن دينار | ١٤٠ |
| رأيت منك منظراً الجنة تُدرك بدونه (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٩٧٥ |
| رأيت النبي صلى الله عليه وسلم بسوق ذي المجاز | | |
| وهو يقول: يا أيها الناس قولوا ... | ربيعة بن عباد | ١٣٠٤ |
| رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يمسح على الخفين | جرير بن عبد الله البجلي | ٢٠٧١ |
| رأيت يد طلحة بن عبيد الله شلاّء | قيس بن أبي حازم | ٤٨٣ت |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رأيتك البارحة في المنام كأن آتٍ أتاك ومعه إبريق | | |
| فضة فقال: (ث) | رجل | ١٧٠٣ |
| رُبَّ قائمٍ مشكور له ورب نائم مغفور له ...(ث) | أبو الدرداء | ٧٢٢ |
| ربَّ قومٍ عمّروا من عبسهم في نعيم وسرور | | |
| غدق (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٣٠ |
| رب كلمة تقول دعني (ث) | رجل | ٢٣٥٤ |
| ربّما أمر منصور بن المعتمر للسائل بالدّراهم ... (ث) | هلال | ٤٩٢ |
| ربّما قال الرجل لا إله إلا الله فأخشى عليه النار (ث) | الفضيل بن عياض | ٦٦٣ |
| رجعت لما رُمتُ مستحسراً (ث) | الأعمش | ٩١٣ |
| رجل صالح من أهل بيت النبوّة لأسمعنّ إلى | | |
| دعائه (ث) | طاووس | ٤١٥ |
| رجلٌ واقفٌ على باب داري جاءني في حاجة (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٦٢ |
| رجم يهودياً ويهودية ... | ابن عمر | ٣٢١٠ |
| رحم اللّه أبا قلابة لقد صدق أنه كان خيرة لي (ث) | قائد من قواد عبيد الله | |
| | بن زياد | ٥١٨ |
| رحم اللّه أباك كان يقرّ العين جمالاً والأذن بياناً (ث) | خالد بن صفوان | ١٦٤٠ |
| رحم الله ابني علياً قرأ آية من كتاب الله فخر في | | |
| محرابه ميّتاً (ث) | الفضيل بن عياض | ١٦٢٧ت |
| رحم الله امرئٍ كان ذا حسب فصان حسبه | | |
| عن الكذب (ث) | بعض الزهاد | ١٧٤٤ |
| رحم الله الحريص الجاهد والقانع الزاهد (ث) | الحسن البصري | ١٧٤٥ |
| رحم الله سفيان هذا من مخبأة سفيان (ث) | أحمد بن حنبل | ٣٩٥ |
| رحم اللّه عبداً عمل في طاعة الله، فإن ابتلي | | |
| بضعف (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٨٢٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رحم اللّه علياً إنّ علياً كان سهماً لله في | | |
| أعدائه (ث) | الحسن البصري | ١٢٦٧، |
| | | ٢٩١٢ |
| رحم اللّه لبيداً حيث قال: (ث) | عائشة | ٣٤٥٣ |
| رحمة اللّه على أديب الملوك، وجليس | | |
| الفقراء (ث) | صالح المري | ١٥٠٠ |
| رحمة اللّه عليه ذاك أقلُّ للزحام ...(ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٨ |
| رحمك اللّه أبا محمد إن كنت لناصر | | |
| الحق (ث) | الحسين بن علي | ١٠٢٢ |
| رحمك اللّه يا أبة لقد قمت بالدين هين وهى | | |
| شعبة (ث) | عائشة | ٢٤٢٢ |
| رد رجل من رجل جارية اشتراها منه | معتمر | ٦٢١ت |
| رَدُّ المعروف أشدُّ من ابتدائه لأنّ الإبتداء (ث) | سلم بن قتيبة | ٦٨٢ |
| رُدَّ عليَّ السلام ... أكثر الله مالك وولدك (ث) | عبد الله بن عمر | ٢٥٢٥ |
| ردا السائل ولو بظلف محرق | حواء | ٢٤٧١/م ت |
| رضا الرجل عن نفسه دليلٌ على قلة عقله (ث) | أردشير | ١٨٥٧ |
| رضي الناس من العمل بالعلم | أبو حازم | ١٣٢٧ت |
| رفع الأولياء وخفض الأعداء وطول البقاء (ث) | عبد اللّه بن الأهتم | ٢١١٠ |
| رفع رجلٌ قصة إلى عمر بن عبد العزيز (ث) | الأصمعي | ٣٥٨٤ |
| رُفع عيسى ابن مريم عليه السلام وهو ابن ثلاث | سعيد بن المسيب | ٢٥٩٩، |
| وثلاثين (ث) | | ٣٣٨٨ |
| رفعت رأسي يوم أحد فما منهم من أحدٍ إلا | | |
| وهو (ث) | أبو طلحة | ٢٧٨٩ |
| رفعتها إلى من لا تختزل دونه الحوائج | أبو حازم | ١٣٢٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ركب زيد بن ثابت فأخذ ابن عباس بركابه فقال | | |
| له: لا تفعل (ث) | الشعبي | ١٣١٤ |
| ركب الناس في أرجلهم وركب ذوات الأربع في (ث) | الأصمعي | ١٤٣٩، ٤/٣٣٥٤ |
| ركوب الهوى وترك الحياء (ث) | عبد الله بن جعفر | ٣٠٧٨ |
| رمى الحدثان نسوةَ آل حرب (ث) | فضالة بن شريك | ٣١٩٩ |
| رئي عبد الله بن جعفر يماكس في درهم فقيل له: | محمد بن سلام | ٣/٢٤٣٥ |
| روايا الأرض يسوقها الله عز وجل إلى قوم | أبو هريرة | ٢٦٤٨ |
| رويداً فكأن قد بلغت المدى وعُرِضت أعمالك (ث) | علي بن أبي طالب | ١٤٧٠ |
| رويدك لا تعجل بُليت بصارم (ث) | عمرو بن معدي كرب الزبيدي | ٣٤٢٢ |
| الرأي المُفرد كالخيط السَّحيل والرأيان كالخيطين (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٩٣ |
| الربا سبعون باباً أدناها عند الله عزّ وجلّ (ث) | أبو هريرة | ١٥٩٠ |
| الرثع الدناءة، يعني الذي يميل إلى الدَّني من العطية (ث) | ابن قتيبة | ٣٠٧١ |
| الرجال أربعة: جواد وبخيل ومسرف ومقتصد (ث) | بعض الحكماء | ٢٧٨٤ |
| الرجال أربعة رجل يدري ولا يدري أنّه يدري (ث) | الخليل بن أحمد | ٢٣٢ |
| الرجال والنساء فيه سواء أما سمعت قول (ث) | الشعبي | ١٢١٧، ٣٣٧٨ |
| الرجل الراتع الذي يرضى بالقليل من العطاء (ث) | الكسائي | ٣٠٧١ |
| الرغد عند أهل اللّغةِ الرزق الواسع الذي (ث) | إسماعيل بن إسحاق | ٢٧٠٦ |
| الرفق والآناة محمود إلا في ثلاث قالوا ما هنّ (ث) | الأحنف بن قيس | ٢٦٧٥ |
| الركون إلى من لا تأمن من غشه والمن مع الصدقة (ث) | بعض الحكماء | ١٦٣٠ |
| الروم يحاربون على الدين، والترك (ث) | عبد الله بن المبارك | ٢٤٨٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الرّياح ثمانٍ: أربعة رحمة وأربع عذاب. الرحمة: | | |
| المبشرات (ث) | ابن عباس | ٢٨٧٦ |
| زعمت أنها مكسلة مهرمة منسأة للحاجة (ث) | ابن عباس | ٢٠٤٧ |
| زمزم لِمَا شُرِبَ له ... | ( ) | ٥٠٩ |
| زهدنا لله وإياكم زهد من أمكنه الحرام والذنوب من | | |
| الخلوات (ث) | بكر بن عبد اللّه المزني | ٢٠٧٨ |
| زَهَّدك الله زهد من أمكنتهُ الذنوب.... (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٣٧٦ |
| زهرة الدنيا وزينتها (ث) | مجاهد | ٤٤ |
| زيادةُ منطق الرجل على عقله خدعة وزيادة (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٢٣٥٣ |
| زينة الكهل العلم وحسبه الحلم (ث) | عبد الملك بن مروان | ١٦٧٧ |
| الزّبد والكمأة (ث) | الأحنف بن قيس | ٦٣٨ |
| الزّهد أن يكون حالك في المصيبة وحالك (ث) | يونس بن ميسرة | ٢٠٨٠ |
| الزّهد ثلاثة أصناف فزهدٌ فرضٌ وزهدٌ فضلٌ و (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٩٠٥ |
| الزّهد في الرئاسة أشد من الزهد في الدنيا (ث) | يوسف بن أسباط | ٩٥ |
| سأل أعرابيٌ عن رجلٍ فقالوا: أحمق مرزوق فقال (ث) | الأصمعي | ٢١٠٦ |
| سأل أعرابي قوماً فرق له رجلٌ فضمَّهُ إليه (ث) | الرّياشي | ١٤٢٥ |
| سأل أعرابي قوماً فقالوا له: بورك فيك (ث) | الأصمعي | ٢٩٢١، ٢/٣٠٧١ |
| سأل الحجاج بن الفرّية عن الصبر (ث) | محمد بن سلام | ١٧٠٩ |
| سأل الحجّاج رجلاً من العرب عن عشيرته فقال: (ث) | وهب الحارثي | ١٨٧٠ |
| سأل يحيى بن أبي كثير عطاء عن مسألة وعطاء | | |
| لا يعرفه فقال: (ث) | بشير بن صالح | ٢٧٤٠ |
| سُئِلَ أعرابي فقيل له: كيف كتمانك للسر، فقال: أنا | | |
| لحدها (ث) | الأصمعي | ٢٤٦ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| سألت أحمد بن حنبل عن إسحاق بن أبي إسرائيل | | |
| وضرباء فقال: يهجرون (ث) | موسى الرفاء | ٢٧٤٥ |
| سألت الفزاري عن رجلٍ أغتبته (ث) | محبوب بن موسى الفرّاء | ٣٥٣٧ |
| سألتك بالله أنت قلته ...فما الذي أردت (ث) | المعتصم | ٣١٢٤ |
| سألت بعض الرهبان: أيّما أقتل للمحبين (ث) | جعفر | ٣٢١٤ |
| سألت محمد بن عدي بن سوأة بن حُبشم بن | | |
| سعد: كيف سماك أبوك محمداً؟ (ث) | خليفة بن عبدة المنقري | ١٣٠٥ |
| سألت رجلاً من العبّاد من الشهيق الذي يعتري (ث) | خلف بن إسماعيل | ٢٧٦٣ |
| سأل رجلٌ أسد بن عبد الله فاعتل عليه فقال له الرجل | أبو زيد | ١٤٠٩ |
| سأل رجلٌ رجلاً حاجة فقال له صنع الله لك (ث) | سفيان بن عيينة | ٥٥٣ |
| سألت ربي ثلاثاً فأعطاني ثنتين | سعد بن أبي وقاص | ٣١٧١ت |
| سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم: متى تنقطع | | |
| معرفة | أبو موسى الأشعري | ١١٥ت |
| سألت سفيان بن عيينة فقلت له: دلني على جَليس | | |
| أجلس إليه (ث) | إبراهيم بن بشار | ٤٣٨ |
| سألت عبد الرحمن بن مهدي قلت أين ابن | | |
| المبارك من الثوري | نعيم بن حماد | ٣٠١٩/م |
| سألت الندى والجود حران أنتما | ( ) | ٢٢٣٢/م |
| سأل رجلٌ عبد الملك بن مروان الخلوة فقال (ث) | عبد الله بن بكر السّهمي | |
| | عن أبيه | ١١٣١ |
| سأل رجلٌ قوماً فقال رجل منهم: اللهم هذا سألنا (ث) | الأصمعي | ٥٥٢ |
| سأل زياد رجلاً من حكماء الفرس ما المروءة | | |
| فقال: (ث) | الأصمعي | ٢٧٦١ |
| سأل محمد صلى الله عليه وسلم ربّه أن لا يلبس | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أمته شيعاً | ابن عباس | ٣١٧١ |
| سأل نبي الله موسى صلى الله عليه وسلم فلقاً (ث) | ابن عباس | ٢٨٤٤ت |
| سألتني بالله، فما وجدت في عملي شيئاً | بشر بن أبي عاصم | ٣٧٠ |
| سبحان الله استشرتك فأشرت عليَّ به (ث) | زياد بن عبيد الله الحارثي | ٥٩٨ |
| سبحان الله لو كان ينبغي لله أن يتخذ خليلاً من خلقه (ث) | الملائكة | ٣٧ |
| سبحان ذي الملك والملكوت، سبحان ذي العزة والجبروت (ث) | الخضر | ١٠٤٦ |
| سبحان من شمل فضله وعمَّ بالإحسان شكره وعلا (ث) | العتبي | ٣٠١٩ |
| سبحان من لم يأنس بمن بقي ولم يستوحش ممن مضى | راهب | ٦٤ |
| سبع للبكر وثلاث للثيب | أنس | ٦١٠ت |
| سبعة أشياء تفسد العقل: الإكثار من البصل والباقلاء | ( ) | ٢٣٤٩ |
| سبعة ممّن تحدث عنهم، الحربي اسمه أسد (ث) | إبراهيم بن إسحاق الحربي | ١٠٧ |
| سبق السيف العذل (ث) | ضبّة بن أد | ٥٣٢ |
| سبقنا إليه غيرنا فتولاه دوننا (ث) | عبد الله بن المبارك | ٢٢٩٢ |
| ستة لا يخلون من الكآبة: رجل افتقر بعد غنى (ث) | أبو عبيدة | ٦٦١ |
| ستعلم يا مسكين تنفق دينك في شهوتك (ث) | الحسن البصري | ١١٩١ |
| ستوره، وأهل اليمن يسمون الستر المِعذار (ث) | الضّحاك | ١٠٧٠ |
| سِرت في بعض الفلوات فرأيت طيراً مكسور (ث) | شقيق البلخي | ٣٣٥٠ |
| سرقت يا يسار ... نعم يا يسار | الربيع بن خثيم | ٥٧٥ت |
| سجد أبو بكر وعمر رضي الله عنهما في ﴿اقرأ باسم ربك ...﴾ | أبو هريرة | ٣١٦٢ |
| سجد نا مع النبي صلى الله عليه وسلم في ﴿إذا | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| السماء انشقت﴾ | أبو هريرة | ٣١٦٢ت |
| سرعة المشي تذهب ببهاء المؤمن (ث) | إبراهيم بن يزيد النخعي | ٨٢٥، ٣٣٣٩ |
| سَرَّك الله فيما ساءك، ولا ساءك فيما سرك | عبد الله بن صالح | ٧٦٨ت |
| سرك من دمك، فربما افشيته فيكون فيه سبب | | |
| حتفك (ث) | أكثم بن صيفي | ٨٨٨ |
| السر فيه ضرب العنق (ث) | أكثم بن صيفي | ٨٨٨ |
| سس خيار الناس بالمحبة وامزج للعامة الدعابة | | |
| بالرهبة (ث) | أنو شروان | ٢٢٠١ |
| سفري بعيد بلا زاد وينزل بي في حفرة من | | |
| الأرض (ث) | حبيب الفارسي | ١٨٨ |
| سفيان الثوري من أئمة المسلمين (ث) | الأوزاعي | ٢٨٧٧ |
| سقط جرادٌ بقرب بيت أبي حنبل جارية بن مرّ (ث) | الأصمعي | ٢٢٣٣ |
| سل الأرض فقل لها من شق أنهارك (ث) | بعض الحكماء | ١٧٥٩ |
| سل حاجتك؟ (قاله لأبي حازم) (ث) | سليمان بن عبد الملك | ١٣٢٠ |
| سل حاجتك ... سل فليس يمكنك ذلك (ث) | المنصور | ١٤٢٢ |
| سل ربّك واشترط أن يرزقك صحابةً صالحين (ث) | الأعمش | ٤٩٧ |
| سل عما بدا لك ... اللهم نعم (ث) | المنصور | ١٤٢٢ |
| سلام عليكم، أما بعد: يا أخي لأن أبيت ليلة واحدة | | |
| مهتماً بأمر عيالي (ث) | عبد العزيز بن أبي رواد | ٢٧٤٩ |
| سلّم عليك أخوك فلم تسلم عليه .... (ث) | أبو بكر الصديق | ١٨٢٢ |
| سلم سلم ... يا مالك لا أعود (ث) | عمران الخواص | ١٥٩٣ |
| سلني حاجة ... الآن قد خرجت فسلني ... (ث) | هشام بن عبد الملك | ٨٠ |
| سلني يا أعرابي ... أسرفت يا أعرابي ... ما أدري | | |
| يا أعرابي أي أمريك (ث) | خالد القسري | ١٦٥٦ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| سلهم لم ذلك وما منعني أن أجيبهم، ألست | | |
| أسمع السامعين | قول الله تبارك وتعالى | ١١١٩ |
| سلوا ولا تكثروا، فإن النهار لن يرجع، والعمر لن | | |
| يعود (ث) | راهب | ٧٣٥ |
| سماهم لي رجلٌ عالم بأمرهم (ث) | معمر | ٣٥١٧ |
| سمع أعرابي ابن عباس يقرأ سورة آل عمران ... (ث) | الأصمعي | ٥٠٧ |
| سمع مطرف رجلاً يقول: استغفر الله وأتوب إليه | | |
| فأخذ بذراعه فقال: (ث) | الحسن بن أبي جعفر | ١٩٣٤ |
| سمعاً لمن فهم عن الله وذكَّر به وأعوذ بالله (ث) | المنصور | ١٩٣٧ |
| سمعت إبراهيم بن أدهم يتمثل بأبيات من الشعر (ث) | أبو عبد اللّه القلانسي | ١٧٧ |
| سمعت أبي يقول: حضر رجلاً من أهل المدينة | | |
| الوفاة (ث) | مصعب | ٣١٢٠ |
| سمعت أبي يقول سُئِلَ رجلٌ: هل كتبت الحديث (ث) | المدائني | ٢٧٠١ |
| سمعت أبي يقول عن بعض أهل العلم: أقيمت الصلاة | | |
| فجعل القوم يتدافعون (ث) | عبد الرزاق | ١١٠٦ |
| سمعت أبي يقول: كانت دعوة بكر بن عبد الله | | |
| المزني (ث) | ابن عائشة | ٢٠٧٨ |
| سمعت أبي يقول لبعض الزهّاد: ما تعدون | | |
| الزاهد (ث) | الحسن بن علي الأُشناني | ١٤٥٧ |
| سمعت أبي يقول: مرَّ بهول في السوق وهو | | |
| يأكل (ث) | الحسين بن الحسين | ٩٨٣ |
| سمعت أعرابياً عند الملتزم يقول: اللّهم أعني على | | |
| الموت (ث) | الأصمعي | ٣٤٥٠ |
| سمعت أعرابياً من حكماء العرب يقول : كفى | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| جهلاً أن يمدح المادح بخلاف ما يعرف من نفسه (ث) | الأصمعي | ٧/٢٤٣٥ |
| سمعت أعرابياً وأعطاه رجل أثواباً فقال: (ث) | العتبي | ٢٦٨٩ |
| سمعت أعرابياً يقول: اللّهم أمتعنا بخيارنا (ث) | الأصمعي عن أبيه | ٢٣٣٣، ٣٤٤٩ |
| سمعت أعرابياً يدعو ويقول في دعائه: اللهم اجعل (ث) | الأصمعي | ٢٩١٩ |
| سمعت أعرابياً يدعو يقول: إذا أردت أن تعرف الرجل (ث) | الأصمعي | ٣٣٢ |
| سمعت أعرابياً يقول: لو صُوِّر العقل لأظلمت (ث) | ابن عائشة | ١٨١٨ |
| سمعت أعرابية بعرفات وهي تقول: اللّهم إن كان رزقي (ث) | الأصمعي | ٣٤٣٥ |
| سمعت الفراء يقول في قوله تعالى ﴿ومكروا ومكر الله﴾ (ث) | محمد بن الجهم | ٣٥٨١ |
| سمعت أمية بن أبي الصلت عند وفاته وأغمي عليه (ث) | إسماعيل الثقفي | ٦٢٦ |
| سمعت أهل الفضل يقولون وجدنا أعلم الناس (ث) | أيوب السختياني | ٢٨٢٥ |
| سمعت بعض أصحابنا يقول: رحم الله امرءاً كان ذا (ث) | صالح المري | ٢٩٧٨ |
| سمعت بعض أصحاب يوسف بن أسباط يقول ليوسف (ث) | ابن خبيق | ١٦٥١ |
| سمعت بعض الحكماء يقول: الرجال أربعة، جواد وبخيل (ث) | ابن أبجر | ٢٧٨٤ |
| سمعت بعض الصالحين من أصحابنا يدعو في جوف (ث) | سفيان الثوري | ٦٧٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| سمعت بعض العباد يقول: إنّ مثل الرجل لولده (ث) | النباجي | ٣٤٣٠، ٣٠١١ |
| سمعت بعض العبّاد يقول من ذكر الله على حقيقة (ث) | محمد بن الحسين | ٢٦١٧ |
| سمعت بعض أهل العلم يقول العلم نورٌ لصاحبه (ث) | سعيد بن داود الزنبري | ١٦٦٧ |
| سمعت بعض أهل العلم يقول: خطباء أصحاب رسول (ث) | الزُّبير بن بكار | ٣٠٥٧ |
| سمعت بعض أهل العلم يقول: كم يعالج جهد البلاء (ث) | المعتمر | ١٣٤٩ |
| سمعت راهباً يدعو في صومعةٍ له: سبحان من لم (ث) | أبو سليمان الداراني | ٦٤ |
| سمعت رجالاً من أهل العلم يقولون الاعتصام بالسنةِ (ث) | الزهري | ٣٦٣ |
| سمعت رجلاً بمكة يدعو ربه أن يحرسه من(ث) | داود بن رشيد | ٢٤٤٠ |
| سمعت رجلاً من العرب يقول لرجلٍ من الحضر (ث) | ابن الأعرابي | ٢٧١٠ |
| سمعت رجلاً من حكماء العرب يقول لا أتزوج (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٣٢٨٠ |
| سمعت رسول الله يستعيذ بالله من عذاب القبر | عائشة | ٣٤٩٥ |
| سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يجمع لي أبويه يوم أحد | علي بن أبي طالب | ٣٤٩ت |
| سمعت عجوزاً من عجائز الأنصار تقول: رأيت ابن عباس (ث) | يحيى بن سعيد الأنصاري | ٧٧٩ |
| سمعت قريش صائحاً يصيح على أبي قيس وهو يقول (ث) | عبد المجيد بن أبي عبس | ١٢٦٦ |
| سمعت محمد بن النضر الحارثي يقول ثلاث كلمات نفعني الله بهنّ | عبد الله بن المبارك | ٣٢٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| سمعت مشيخة البصرة يقولون ربّما كان المطر | | |
| الشديد (ث) | الأصمعي | ٣٣٨٤ |
| سمعت هذا الرجل يقول ليوسف بن أسباط من | | |
| مَلَكَ المال (ث) | ابن خبيق | ١٦٥٢ |
| سمّاهم لي رجلٌ عالِمٌ بأمرهم (ث) | معمر | ٣٥١٧ |
| سمك البحر كله ليس له لسان ولا دماغ | الجاحظ | ١٣١٥ت |
| سموك غضباناً وسنك ضاحك | | |
| لقد غلطوا إذ لم يسموك ضاحكاً (ث) | الحجاج | ٢٠٧٠ |
| سيأتي على النّاس زمان تخرب صدورهم من | | |
| القرآن (ث) | أبو العالية | ٢٨١١ |
| سيأتي على النّاس زمان لايبقى من الإسلام إلا | | |
| اسمه (ث) | علي بن أبي طالب | ٥١٩ |
| سيئة تسوءك خيرٌ من حسنةٍ.... (ث) | هشام بن حسان | ٢١٦٠ |
| سيخرج في ثقيف كذّاب ومبير | أسماء بنت أبي بكر | ٣٣١٦ |
| سيِّد أهل الوَبْر | | ٣٣٢٨ |
| سيردون فيعلمون ... (ث) | إسحاق بن إبراهيم | ٣٤ |
| سئل أعرابي وأنا أسمع: كيف برك بأمك؟ (ث) | الأصمعي | ٢٥٧٢ |
| سُئِل أعرابي فقيل له: كيف كتمانك للسرّ (ث) | الأصمعي | ٢٤٦ |
| سئل أقرَا أهل اليمامة للضيف كيف ضبطكم | | |
| للقِراء (ث) | الأصمعي | ٦٥١ |
| سُئل بعض أهل اللغة عن قول عمر بن الخطاب (ث) | محمد بن سلاّم | ١٤٩٩ |
| سئل بزرجمهر الحكيم: من أولى الناس بالسعادة؟ | | |
| فقال: من سلم من الذنوب (ث) | محمد بن سلام | ٢٦٣٨ |
| سئل بعض الحكماء عن أفضل العبادة، قال بذل | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الحيلة (ث) | محمد بن الحسين | ٢٨٤٩ |
| سئل بعض الحكماء عن الإخوان في الدّنيا فقال (ث) | محمد بن سلاّم | ١٦٥٥ |
| سئل بعض الحكماء عن المروءة فقال إنصاف من هو (ث) | الزيادي | ١٧٠٥ |
| سئل رجل عن حاله فقال: كنا إذا نحن أردنا (ث) | الزيادي | ١٩٠٦ |
| سئل لقمان الحكيم: أيُّ عملك أوثق في نفسك (ث) | سفيان الثوري | ٨١٩، ٣٣٣٦ |
| سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهى عن المثلة | أسماء بنت أبي بكر | ٣٣١٦ت |
| السآمة الخاصة. يقال كيف السآمة والعامة (ث) | ابن قتيبة | ١٩٠٠ |
| السدُّ الحبل وجمعها أسداد تفسير قوله تعالى: ﴿وجعلنا من بين أيديهم سداً﴾ (ث) | أبو عبيدة | ٩٣١ |
| السلام عليك أيّها الأمير ... (ث) | محمد بن منصور | ١٧٣ |
| السلام عليكم يا بني إسرائيل (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٠٢ |
| السماء والأرض والجبال والأسحار تفسير قوله تعالى: ﴿وإن من شيء إلا يُسبح بحمده﴾ (ث) | الحسن البصري | ١٠٣ |
| السندرة شجرة يعمل منها القسي والنبل (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٩٠٤ |
| السنة للبكر سبع وللثيب ثلاث (ث) | أنس | ٦١٠ت |
| السؤدد التبرع بالمعروف والإعطاء (ث) | الحسن بن علي | ٢٦٤٤ |
| السؤدد الصبر على الذّل (ث) | العتبي | ١٩٧٧، ٣٠٦٥ |
| السؤدد مع السواد يعني من أتته في (ث) | الأحنف بن قيس | ١٥٧٨ |
| شارط إبراهيم بن أدهم رجلاً على شيءٍ يعمله (ث) | أبو علي الهروي | ١٩٥٥ |
| شبع يحيى بن زكريا عليه السلام ليلة شبعة من (ث) | علي بن أبي الحسن | ٢٩٥٩ |
| شر الزاد إلى المعاد الذنب بعد الذنب (ث) | بعض الحكماء | ٢٨٢٣ |
| شرار كلُّ دينٍ علماؤهم غير المسلمين (ث) | الشعبي | ١١٦٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| شربةٌ من ماء (ث) | حُطيط | ٣١٢٣ |
| شرُّ الأيام والسنين والشهور والأزمنة أقربها (ث) | عبد الله بن مسعود | ٢٩٢٤ |
| شرُّ النَّسك نسكٌ أعجمي ... | سعيد بن المسيب | ٢٣١٢ |
| شطره فينا قِبْلَة (تفسير قوله تعالى: ﴿فولوا وجوهكم شطره﴾) (ث) | علي بن أبي طالب | ١٤٦١ |
| شعار المهاجرين عبد الله وشعار الأنصار ... | سمرة بن جندب | ٢٥٦٧ |
| شغلوا قلوبهم عن الله بحُبِّ الدنيا ولو تركوها (ث) | رابعة العابدة | ١٤٥٣ |
| شكراً لله عز وجل الذي لم يجعلني مثل هذا (ث) | ابن عباس | ٢٦٨١ |
| شكى نبيٌّ من الأنبياء إلى الله الفقر فأوحى الله (ث) | وهب بن منبه | ١٥٨٤ |
| شكٌّ في العتاق والهجن من الخيل فدعا سليمان (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٣٩ |
| شهادة أن لا إله إلا الله (ث) | أبو الجوزاء | ١٢٥١، ٢٣٧٢ |
| شهادة أن لا إله إلا الله منذ ثمانين سنة (ث) | أبو فراس | ٥٥٩ |
| شهدت ثابتاً البناني وشهده أهل البصرة (ث) | الربيع بن صبيح | ٨٦٨ |
| شهدت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كان عند القتال | النعمان بن مقرن | ١١٣٩ت |
| شهدت النبي صلى الله عليه وسلم يُنشدُه قول سويد | مسلم الخزاعي | ٥٥٧ |
| شهد عرفة وأتى جمعاً ... انطلقوا بنا نصلي على (ث) | ابن عمر | ١٨٨٥ |
| شيئان يورثان العقل التين اليابس (ث) | يحيى بن خالد | ٢٣٤٨/م |
| شيبتني هذه الجنائز ... هم نبذوني (ث) | جرير | ٦٩٦ |
| شيخها الحسن وفتاها إياس بن معاوية (ث) | المدائني | ١٨٤٨ |
| الشَّبع داعية إلى البشم والبشم داعية إلى السقم (ث) | ابن أبجر | ٢٢٤٨ |
| الشحيح أعذر من الظالم (ث) | رجل | ٣٢٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الشربدؤه صغار فاصفح عنه لكي لا تخرجك (ث) | أكثم بن صيفي | ١٠٣٥ |
| الشريف إذا ترقى تواضع، والوضيع إذا ترقّى (ث) | يحيى بن خالد | ١٦٠٥ |
| الشطر النِّصف وهي بِلُغة تغلب، ولكنه تفسير قوله تعالى: ﴿شطر المسجد الحرام﴾ (ث) | أبو العالية | ١٤٦٣ |
| الشعر الذي كنت تمثلين به ... | عائشة | ٦٩٨ |
| الشكر ثلاثة منازل لمن فوقك بالطاعة ولنظيرك بالمكافئة | بعض الحكماء | ١١٥٨ |
| الشِّيب (تفسير قوله تعالى: ﴿وجاءكم النذير﴾ (ث) | بكّار بن مالك | ١٣٦٤، ٣٣٥٦ |
| صاحب الدّين مأسورٌ يوم القيامة يشكو إلى (ث) | البراء بن عازب | ٢١٣ |
| صاحب السوء جذوةٌ من النار (ث) | سفيان الثوري | ٥٢٢ |
| صاد رجلٌ غراباً فأُتي به أبا بكر الصديق رضي الله عنه (ث) | سفيان بن عيينة | ٩٨ |
| صبراً يا نفس صبراً لأيام تنفذ لتلك الأيام الأبد(ث) | الخضر عليه السلام | ١٨٨٦ |
| صبروا عن الدنيا ... (ث) | صالح المري | ١٢١٦ |
| صخرة في النار إذا وضع عليها يده ذابت (ث) | أبو عياض | ١٨ |
| صدرك أوسع لسرك، فإن سرك من دمك (ث) | بعض الحكماء | ١٧٩٠ |
| صدق أخي إنّ الله يأمركم أن تؤدوا (ث) | البراء بن عازب | ١٧٠١ |
| صدقت هو أخبرني أنّ له ابناً اسمه عمر (ث) | قتادة | ٢٩٠١ |
| صدقت ولكن الركوب انفرج فيه (ث) | أبو الأسود | ٣١٢٥ |
| صدق والله ثم صدق ثم صدق فيما اعتبر به (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٦٨٩ |
| صعدت حائط عكا فإذا حُميد بن موسى في (ث) | محمد بن منصور | ٢٢٧١ |
| صفراء الظلف ... صافي (تفسير قوله تعالى: ﴿بقرةٌ صفراء﴾) (ث) | سعيد بن جُبير | ١٤٨٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| صِف لنا ما نحن فيه من نعيم هذه الدنيا (ث) | هارون الرشيد | ١٦٢١ |
| صف لي شيئاً أعمل عليه فإنّي أظنّ (ث) | الحجّاج بن يوسف | ١٩٨٥ |
| صِف لي عمر بن الخطاب رضي الله عنه (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ١٣٠٠ |
| صلاةٌ في الحرم مئة ألف صلاة قال الله ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٦٦٥ |
| صلاته سبّوح قدّوس سبقت رحمتي (ث) | عطاء | ١١٦٨ |
| صلى بنا أبو رجاء العطاردي العتمة ثم أوى (ث) | دويك العطاردي | ١٩٥٣ |
| صَلّى بنا زرارة بن أوفى الغداة فقرأ ... (ث) | جعفر بن حكيم | ١٣٦ |
| صلى خلف أبو بكر ... | عائشة | ٢١٢٨ |
| صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه الذي مات فيه | عائشة | ٢١٢٨ت |
| صلى صلاة الصبح يوماً فلما انفتل قام مُتَمِّمّ (ث) | أبو بكر الصديق | ٣١٣٦ |
| صلى على النجاشي فصفّنا صفين ... | جابر بن عبد الله | ١٢٤٥ |
| صلة الرحم تهون على المرء الحساب يوم القيامة (ث) | جعفر بن محمد | ٢٠١٠ |
| صليت خلف رسول الله صلى الله عيه وسلم وأبي بكر وعمر وعثمان و .... | أنس بن مالك | ٣٥٠١ |
| صلى مع رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو غلام وجعل الناس يقبلون يد | يزيد بن الأسود | ١٥٣٧، ٢٧٧٧ |
| صليت خلف عمر بن عبد العزيز فقرأ ﴿وقفوهم﴾ (ث) | مقاتل بن حيان | ٢٢٦٧ |
| صن بهذه الحكمة التي أتاك اللّه عز وجل (ث) | الليث سعد | ١١٧٩ |
| صِنفان من الناس إذا صلحا صَلُحَ الناس القُرّاء (ث) | سفيان الثوري | ٤٦٩ |
| صوتاً خفياً فقال: هو صوت الأقدام ... (ث) | سفيان بن عيينة | ١٠٥٣ |
| صوم عاشوراء كفّارة سنة وصوم عرفة | أبو قتادة | ٣١٦٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| صوموا التاسع والعاشر يعني ... (ث) | ابن عباس | ٢٥٩٤ |
| الصاحب رقعة في قميص أخيه (ث) | الأصمعي عن أبيه | ٧٠٧ |
| الصّبر اعترافُ العبد إلى الله بما أصابه (ث) | سعيد بن جبير | ١٧٠٧ |
| الصّبر عن محارم الله عز وجل والسماحة .... (ث) | الحسن البصري | ١١٥٥، ١/٣٤٢٤ |
| الصّحة والفراغ نعمتان مغبونٌ فيهما ... | ابن عباس | ٩٧٧ |
| الصّدق والوفاء يكونان للعباد حصناً (ث) | الحسن بن علي | ٢٩٧٦ |
| الصديق يزين صاحبه في كل موطن إلا موطنين (ث) | بعض حكماء العرب | ١٧١٩ |
| الصديق بالصحة هو الذي يحضك النصح فيما ساءك وسرك (ث) | بعض الحكماء | ٩٩٢ |
| الصلاة تبلغك نصف الطريق والوضوء (ث) | عبد العزيز بن محمد | ٤٤٠، ١١٠٩ |
| الصلاة وما ملكت أيمانكم.... | أنس بن مالك | ٢٣٩١ |
| الصّمت لا يعدو صاحبه وفضل المنطق ... (ث) | الأحنف بن قيس | ١٩٢٤ |
| الصمت يكسب أهله المحبة (ث) | أكثم بن صيفي | ٨٨٢ |
| الصّمد السّيد الذي انتهى سؤدده لأنّ ... (ث) | سالم الأفطس | ١٠٤٣ |
| الضرو: الحبة الخضراء ... (ث) | ابن قتيبة | ١٧٦٠ |
| ضحّيتُ له كي استظلّ بظله إذا الظلُّ أضحى (ث) | أحمد بن المعذّل | ٤٢٢ |
| ضرب الزبير بن العوام رضي الله عنه يوم الخندق عثمان بن عبد الله ... (ث) | ابن أبي الزناد | ١١٤١ |
| ضربت ثمانية عشر ألف سوط بالتفاريق | أبو هيثم الحداد | ٧٥٥ت |
| ضعفت حسانك وتجاوزت عن سيئاتك | قول الله تعالى | ٥ |
| ضللنا مرة الطريق فاسترشدنا عجوزاً فقالت: (ث) | شيخ من قضاعة | ٢٣٣٠ |
| الضرورة والأمل أقدماني عليك (ث) | بعض الحكماء | ٣٣٠٨ |
| طاعة الله (تفسير قوله تعالى: | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ﴿بقيّة الله خيرٌ لكم﴾) (ث) | مجاهد | ٨٣٨ |
| طاف ليلةً فإذا هو بامرأةٍ في جوف دار لها (ث) | عمر بن الخطاب | ٢١٦ |
| طالب الدنيا مثل شارب ماء البحر كلما ازداد شرباً ازداد عطشاً (ث) | عيسى عليه السلام | ١٤١٨ |
| طلب منازل الأخيار بأعمال الأشرار (ث) | بعض الحكماء | ١٦٣٠ |
| طلبت هذا الأمر لغير الله فأعقبني إلى ما ترون ..(ث) | سفيان بن عينية | ٨١٤ |
| طلبنا العلم وما لنا فيه نية ثم رزق الله ... (ث) | سفيان الثوري | ١٧٢٢، ٢٩٦٩ |
| طوبى لمن سمعت أذناه ما يقول لسانه | عيسى عليه السلام | ١٢٢٤ |
| طوبى لمن علمه الله كتابه ثم لم يمت جباراً | عيسى عليه السلام | ١١٩٦ |
| طوبى للذين يرحمون فعليهم تكون الرحمة، فطوبى للمخلصة (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٢٩ |
| طوبى لأمة ينزل هذا عليها | الملائكة | ١٤ |
| طول بقاء البخيل أثقلُ شيءٌ على .... (ث) | بشر بن الحارث | ١٧٣٩ |
| طيّبها لهم، تقول العرب هذا طعامٌ معرف (ث) | الفراء | ٣٥٨٠ |
| طيّبها لهم قال: والعرب تقول هذا طعام معرف (ث) | أبو عبيدة | ١٣٦٣ |
| طير الماء وحيتان البحر لا ألسنة لها (ث) | أبو زيد | ١٣٥١ |
| الطاعون شهادة لكل مسلم | أنس | ٥٨ت |
| الطاعون كفارة لكل مسلم | أنس | ٥٨ت |
| الطبيعة النقيةُ يلتقي من الأدب برائحته (ث) | الموبذ | ١٨٨٢ |
| الطُّحربة: اللّباس (ث) | إبراهيم الحربي | ٧٢١ |
| الطوفان والجراد والقمّل والضفادع والدم (تفسير قوله تعالى: ﴿ولقد أتينا موسى تسع آيات بينات﴾) (ث) | الزهري | ٥٠٤ |
| ظَفِرَ الإسكندر ببعض الملوك فسأله (ث) | وهب بن منبه | ٩٩١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ظلّ رجل صائماً في عام سَنَة فابتلى بسائل (ث) | عون بن عبد الله | ٦٥٠ |
| ظهر الفساد والخبث في النّاس منذ استأصلوا (ث) | الخليل بن أحمد | ٢٥٣١، ١٥٢٥ |
| الظالم أعذر من الشحيح الظالم يُغفر (ث) | الحسن البصري | ٣٢٠ |
| عاد رجلٌ عليلاً فعزّاهم به، فقالوا: إنّه يموت (ث) | أبو حصين | ٣٢٦٤ |
| عاد قومٌ مريضاً في بني يشكر فأطالوا عنده (ث) | الأصمعي | ٨٧٣ |
| عادة السوء شر من المغرم، ومن عودته شيء (ث) | بعض الحكماء | ٢٩٤٥ |
| عاش المستوغر بن ربيعة ثلاثمائة وعشرين سنة (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٦٩٧ |
| عاشر الناس بالجميل وسدِّد وقارب (ث) | محمد بن عبد الله الحضرمي | ٢٩٩٦ |
| عاشرت النّاس وكلّمتُ أهل الكلام فما رأيت قوماً أوسخ وسخاً (ث) | القاسم بن سلاّم (أبو عبيد) | ٨٦٥ |
| عافاه الله ... له عندي يد ليس يعرفها أحد (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٠١ |
| عالم يجوز عليه حكم جاهل (ث) | بعض الحكماء | ١٥٦٥ |
| عبادَ الله: عَظُم قدر الدارين وارتفع جزاء العاملين (ث) | المأمون | ٢٣٥٢، ٢٩٩٣ |
| عباد اللّه لا تغرّنكم الحياة الدنيا فإنّها دار بالبلاء محفوفة (ث) | علي بن أبي طالب | ٢١٣٠ |
| عباس إنّ الجهل مزرٍ بأهله ... (ث) | مرداس بن عامر | ٣٤٦٩ |
| عبدك يا رب نزل بفنائك مسكينك يارب بفنائك (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طلب | ٤١٥ |
| عبدي ما يزال ملك كريم يصعد إلى بعمل قبيح | قول الله تعالى | ١٨١ |
| عبدي مالك لم تحج؟ | قول الله تعالى | ٢٨٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| عثرت امرأة فتح الموصلي فانقطع ظفرها | | |
| فضحكت (ث) | زيد بن أبي الزرقاء | ٣٠٦١ |
| عجباً كيف تنام عينٌ مع المخافة أو يغفل قلبٌ بعد (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٠٦ |
| عجباً لقومٍ أوذنوا بالرّحيل وترحل أوائلهم وهم (ث) | الحسن البصري | ٨٤٣ |
| عجباً لمن قيل فيه الخير وليس فيه خير كيف يفرح | ( ) | ٦/٢٤٣٥ |
| عجباً لمن ينقطع إلى رجلٍ من أهل الدنيا (ث) | عبد الله بن إدريس | ٢٤٧ |
| عجبت لقومٍ ركنوا إلى غير مركن وألفوا إلى غير مألف (ث) | حبر من أحبار بني إسرائيل | ٢٦٧١ |
| عجبت للعالم كيف تجيبه دواعي قلبه إلى الضّحك (ث) | وهب بن منبه | ٨٧٨ |
| عجبتُ لمن تحمّىَ من الطعام والشراب مخافة الدّاء (ث) | عبد الله ابن شبرمة | ١٧٥ |
| عجبت لمن يجري في مجرى البول مرتين (ث) | الأحنف بن قيس | ٢١٦٣ |
| عجبت لمن لم يطلب العلم كيف تدعوه نفسه إلى مكرمة (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٧ |
| عجبتُ لمن يهلك والنّجاة معه قيل ... (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٠٧ |
| عجبت ممن يحزن على نقصان ماله ولا يحزن على فناء عمره (ث) | بعض الحكماء | ١١٢٠ |
| عجبت من النّاس أنهم ينظرون إلى الموتى في كل يوم وهم في الدنيا في غفلة (ث) | بعض العباد | ٢١٩٢ |
| عجّل عليٌّ بصحيفةٍ فكتب دَيناً مالاً بعشرين ألف (ث) | سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| عددت أربعاً وثمانين لقمة من خبز الماء (ث) | سلم بن قتيبة | ٢٦٠٥ |
| عرَّض بنا النصراني الخبيث (ث) | عبد الملك بن مروان | ٤٩٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| عَرف الحقَّ لأهله... | الأسود بن شريح | ٥٦٢ |
| عز الشريف أدبه | عبد الله بن المبارك | ١٠/٢٤٣٥ |
| عزى رجل هارون الرشيد فقال: يا أمير المؤمنين | | |
| كان (ث) | المعلّى بن أيوب | ٧٦٨ |
| عسرت عليّ حاجةً زماناً فكتبت هذا ... (ث) | ابن أبي الدنيا | ٢٤٧٠ |
| عصمة بن سالم أبو أمي (ث) | نصر بن علي | ٢٧٢٥ |
| عضوا على النواجذ من الأضراس فإنّه ... (ث) | علي بن أبي طالب | ١١٤٢ |
| عَظُمَ قدر الدّارين وارتفع جزاء العاملين وطالت (ث) | المأمون | ٢٩٩٣ |
| عِظْني وأوجز (قاله لابن السماك) (ث) | هارون الرشيد | ١٤٥٤، ٣٣٦٦ |
| عفواً عفواً من قَدَرَ أن يحسن الكلام قَدَرَ أن (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٢٢٣٧، م/٣٤٢٢ |
| عقد التوبة النصوح يكفّر كُلَّ سيئة (ث) | عباية بن رفاعة | ٢٨٦٣ |
| عقول كل قومٍ على قدر زمانهم (ث) | مطرف بن عبد الله | ١٧٢٦ |
| على التوكل على الله عز وجل ... بنيت أمري | | |
| على (ث) | حاتم الأصم | ١٦١٧، ٦/٣٠٣٨ |
| على رسلك أيّها الرجل تقدّمت منك طاعة (ث) | الحسن بن سهل | ٢٢٠٥ |
| على الصراط (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿يوم تبّدل الأرض غير الأرض﴾) ... | عائشة | ٤١ |
| على طعامكم حمى؟ (ث) | أعرابي | ٣١٢٧ |
| على قدر نياتهم وعلى ما قدموا من أعمالهم (ث) | راهب | ٧٣٥ |
| علامة التوبة الخروج من الجهل والندم على | | |
| الذنب (ث) | بعض العباد | ٣٣٩٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| علقمة ومسروق والرّبيع وكان الربيع أشدّ القوم (ث) | عامر الشعبي | ٤٢٨ |
| عَلَمُ الإسلام الصلاة فمن فرّغ لها قلبه وحادّ | علي بن أبي طالب | ٢٣٨٠ |
| علمهم الصّدق كما تعلمهم القرآن وجنّبهم | | |
| السفل (ث) | عبد الملك بن مروان | ١٧٦٦ |
| علم القوم بأن الله عز وجل يراهم على كل (ث) | زهير البابي | ٢٦٥٩ |
| علمت أن ما له في المجلس عدّو أعدى منّي فنظر (ث) | ابن شكلة | ٣١٢٤ |
| علمك من روحك وفعالك من بدنك (ث) | يونس بن حبيب | ١٩٠١ |
| علّم الناس فإنّه ليس عليك فيما أخذ (ث) | ابن مسعود | ٢٢٢٨ |
| علمني علماً لعلي ازداد إيماناً ... لعل الله عز وجل | | |
| يطوقني ذلك (ث) | ذو القرنين | ١٣٤٠ |
| علّمه القرآن فهو خير له من الشعر (ث) | علي بن أبي طالب | ١٥٣٢ |
| عَلّمي حفصة رقية النملة.... | ( ) | ٧١٨ |
| علي أن لا أضحك أبداً حتى ألقاه فأنظر من أهل | | |
| الجنة أنا أم | غزوان الرقاشي | ٢٧١١ |
| عليك بالأناة فإنّ بها تنال الفرصة (ث) | حُبيش بن زهير | ٢٧١٣ |
| عليك بالمغفلة والمنشلة ... (ث) | أبو بكر الصدّيق | ٩٣٣ |
| عليك بالورع يُخفف الله عليك الحساب يوم | | |
| القيامة(ث) | سفيان الثوري | ٢٠٧٧ |
| عليكم بالتلبين البغيض النافع والذي نفسي بيده إنّه | | |
| ليغسل بطن أحدكم .... | عائشة | ٢٨٨٧ |
| عُمرة في شهر رمضان تعدل حجّة ... | وهب بن حُنَيش الطائي | ٣٥٢٥ |
| عمل صالح قبل الغزو، فإنكم تقاتلون بأعمالكم (ث) | أبو الدرداء | ١١٣٥ت |
| عملتم بأعمالهم (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿وسكنتم في مساكن الذين﴾) (ث) | النضر بن إسماعيل | ٤٤٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| عملك فأصلحه (ث) | أبورَزين | ٢٨٧٢ |
| عمله (تفسير قوله تعالى: ﴿وكل إنسان ألزمناه | | |
| طائره ... ﴾) (ث) | الحسن البصري | ١٣٢٩ |
| عن المرء لا تسأل وسل عن قرينه (ث) | عديّ بن زيد | ٥٢٣ |
| عن شيخ له من العجم وكان عالماً قال: كان أنوشروان | | |
| إذا ولى رجلاً أمر الكاتب ... (ث) | محمد بن سلاّم | ٢٢٠١ |
| عن فهم القرآن (تفسير قوله تعالى: ﴿سأصرف عن | | |
| آياتي﴾) (ث) | الفضيل بن عياض | ٨٤ |
| عند رأس المئة سنة يبعث الله | بريدة | ١٩٨٩ت |
| عيب ابن آدم ما علمت كثير ... (ث) | أبو العتاهية | ٣٢٥٣ |
| عينٌ خرارة في أرضٍ خوّارة تعول ولا تعال ... (ث) | عبيد بن شرّية | ٢٧٤٧ |
| عيّرت اليهود عيسى بن مريم عليه السلام بالفقر | | |
| فقال: (ث) | الحسن البصري | ١٥٨٠ |
| العاقل أحرص على إقامة لسانه منه (ث) | سليمان بن عبد الملك | ١٦٩٧ |
| العاقل الذي لا يتكلم هذراً ولا ينظر شزراً (ث) | الغضبان القبعثري | ٢٠٧٠ |
| العالم مثل السراج من مرَّ به ... (ث) | سفيان الثوري | ١٦٩٥ |
| العبادة سلطان على كل شيء (ث) | بعض حكماء الفرس | ٢١٢٠ |
| العبد يكون من أهل الآخرة ثم يرجع إلى الدنيا (ث) | كرز | ٢٠٥٧ |
| العبد من الله وهو منه ما لم يُخدم فإذا خُدِمَ ... | أبو الدرداء | ٢٤٠٨، ٤٨٢ |
| العرش ياقوتة حمراء ... (ث) | سعد الطائي | ٢٥٧٩ |
| العز والعدد من العرب في معد ... أنا أبو عشرة وعم عشرة | | |
| وخال عشرة (ث) | عامر بن أجيمر | ٢٠٢٦ |
| العِفّةُ والحِرفة (سئل عن المروءة) (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٢٤٥، ٣٣٣٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| العلماء الذين إذا علموا عملوا (ث) | ابن عائشة | ٣٥٣ |
| العلماء (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٠ |
| العلم الأكبر خوف الله عز وجل (ث) | يوسف بن أسباط | ١٤٤٦ |
| العلم نور لصاحبه ودليل لحظه ووسيلة تنبري إلى درجات السعداء (ث) | بعض أهل العلم | ١٦٦٧ |
| العمامة جُنّةٌ في الحرب مكنّةٌ في الحرِّ والقرِّ (ث) | أبو الأسود | ٣٣٤٤ |
| العين حقّ .... | أبو هريرة | ٣١٨٠ |
| غدوت يوماً قبل الفجر إلى مجلس الحسن الجعدي (ث) | أبو عمران التّمار | ٣٩٦ |
| غرّني منك مجالستك القراء وعمامتك (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٤٧١ |
| غزا نبيٌّ من الأنبياء فقال لا يغزون ... (ث) | عبيد بن عمير | ١١٣٧ |
| غُشِيَ على عبد الرحمن بن عوف غشيةً ظنّوا أن (ث) | أمّ كلثوم بنت عقبة | ٣٧٨ |
| غضب معاوية رضي الله عنه على ابنه فهجره فقال له الأحنف بن قيس (ث) | عطاء بن السائب | ١٠٩٤ |
| غِفار غفر الله لها وأسلم سالمها الله ... | أبو هريرة | ٣١٥٣ |
| الغفلة سنة كريم | طلق بن معاوية | (١٠) ملحق |
| غلة شهرٍ بشهر (تفسير قوله تعالى: ﴿وجعلتُ له مالاً ممدوداً﴾) (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٤٢٣ |
| غمِّزي يا سليمة فإنّهما ما مشيا إلى حَرام قط (ث) | الهيثم بن جميل | ٢٠٣٩، ٢٦٩ |
| غمضت جعفراً المعلِّم وكان رجلاً عابداً | أبو ميسرة | ٢٦٢٤ت |
| غير محسوب (تفسير قوله تعالى: ﴿فلهم أجرٌ غير ممنون) ... (ث) | مجاهد | ٢٥٢٦ |
| غيّروا الشيب ولا تشبهوا باليهود ... | الزبير | ٣٤٥١ |
| الغمرات ثم ينجلين ... (ث) | عمرو بن العاص | ١٨٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فاتحة الكتاب ثلثا القرآن (ث) | ابن عباس | ١٤٨١ |
| فاتحة الكتاب شفاءٌ من كل داء ... (ث) | عبد الملك بن عمير | ١٤٨٢ |
| فاكهة الشتاء في الصيف وفاكهة الصيف في الشتاء (ث) | إبراهيم بن مهاجر | ٢٠٥ |
| فأخبرني رجل من منبج قال قدم علينا الحكم وهو (ث) | العُتبيُّ | ١٩٢٣ |
| فإذا عسر على المرأة ولدها فليكتب لها هذا (ث) | ابن عباس | ١٩٩٥ |
| فأشهدي الله وأشهديني برضاك عنه (ث) | عبد اللّه بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| فأطلق عن ابن عمّتك وواري أخاك واحمل (ث) | قيس بن عاصم | ٨٠٤ |
| فأفزعني واللّه فأقبلت على القبلة بعد هذه (ث) | ابن إدريس | ٢٩٤١ |
| فأما عمود الجمال فالطول وأما رداءه (ث) | خالد بن صفوان | ٣١٢٦ |
| فأنت الذي لا علم لك به أراك رأيته يرفع رأسه (ث) | عمر بن الخطاب | ٧٠٨ |
| فأنت حرٌّ والحائط لك ... ما رأيت كاليوم .. (ث) | عبد اللّه بن جعفر | ٣٢٢٩ |
| فأنت حرة ... فأنت حرة (ث) | ابن عون | ٢٤٨٠ |
| فإن الله الكريم يسأل الرجل عن جاهه (ث) | علي بن أبي طالب | ١١ت |
| فإن كنت كاذباً فأماتك اللّه (ث) | مطرف بن عبد الله | ١٨٦٦ |
| فإنّي قد عاهدت الله عز وجل لئن سُئِلت لأصدقنَّ (ث) | حُطيط | ٣١٢٣ |
| فأين رحمة الله ...(ث) | سليمان بن عبد الملك | ١٥٠٧، ٣٤٥٦ |
| فأين المهرب؟ ... فإذا فعلت ذلك فما لي؟ (ث) | النعمان بن امريء القيس | ١٢٢٢ |
| فأيُّ الرّجلين أعظم أمانةً الذي أدّاها مرتين ... | أبو هريرة | ٦١١ |
| فأيّ شيءٍ كنت ترى إذا وصلت إلى اللّحدِ (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٣ |
| فتدخلهم دهشة من أهوال القيامةلأن الموت والبعث والقيامة (ث) | ابن عباس | ١٠٨١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فترتج الأرض بأهلها فتكون كالسفينة المرنفة | | |
| في البحر | (  ) | ١٤٤٣ |
| فجئت فأخذت بيده فإذا هي أبرد من الثلج (ث) | يزيد بن الأسود | ٢٧٧٧ |
| فجئنا بالثوبين لنكفّن فيها حمزة فإذا إلى جنبه (ث) | الزبير بن العوّام | ٢٧٩٦ |
| فحفظتهنّ فما دعوت بهنّ في كربٍ إلا فرّج | | |
| عليٌّ (ث) | طاوس | ٤١٥ |
| فضل الأدب في غير الدين مهلكة (ث) | بعض الحكماء | ٢٣٢٥ |
| فضلت على النّاس بأربع ... | أنس بن مالك | ١٦٢٣، |
| | | ٣/٣٠٣٨ |
| فضل صلاة الليل على صلاة النّهار ... | عبد الله بن مسعود | ٣٥٤٤ |
| فعلى ماذا أصّلتم أصولكم يا أبا إسحاق؟ (ث) | شقيق البلخي | ١٤٤ |
| ففاتني يوماً فحبستُ أياماً (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٣ |
| فقد كذبوا والله لقد اجتمع حُبّهما في قلوبنا (ث) | أنس بن مالك | ٢٩٢٩ |
| فقه الرجل في دينه وإصلاح معيشته وحسن (ث) | الحسن بن علي | |
| | ابن أبي طالب | ١٧٠٤ |
| فكانت شهادةً للمقتول وتوبة للحي (ث) | قتادة | ١٥٤٠ |
| فكرت في الخلق فوجدت من لم يخلق أغبط | عيسى ابن مريم | |
| عندي ممن خلق (ث) | عليه السلام | ٤٨٦ |
| فلا أذكر قوله أبداً إلاّ أبكاني (ث) | زيد الحميري | ٧٣٣ |
| فلا تحسبني كافراً لك نعمةً عليّ يا شاهد الله | | |
| فاشهدِ (ث) | الأعشى | ٦٦٧ |
| فلأي شيءٍ تشتم الناس؟ (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٦٩٦ |
| فلا يدع الله دعوةً دعا بها عبده إلا بيّن له | جابر بن عبد الله | ١٢٦ |
| فلقد رأيتنا يكثر مراؤنا ولغطنا (ث) | أبو هريرة | ٦١١ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لم يزل عطاء كمداً من قول مالك بن دينار أربعين | | |
| سنة حتى مات (ث) | عثمان بن الهيثم المؤذن | ١٧٧٣ |
| فلم يزل يقول: الساعة، الساعة | | |
| حتى استوت بالغمام (ث) | عبد الله بن المبارك | ٢٢٩٢ |
| فلما نظر إليه قال: يا هذا رجلٌ محزون قد (ث) | بشر بن الحارث | ٢٤٢٦ |
| فما ذنبي إن كان قد نزع من قلبك الرحمة ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٧٠٩ |
| فما كان التفاتك يميناً وشمالاً لا يفتر (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٩٤ |
| فما قلت لها ... أحسنت يا غلام أعطه... (ث) | الواثق | ٣٤٢٠ |
| فنظرت أنا ومسروق في المصحف فلم نجد سورةً | مرَّة بن شرحبيل | |
| ثلاثين إلا تبارك ...(ث) | أو مرَّة الطيب | ٩٩٧ |
| فما هذه القدور التي على النار ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢١٦ |
| فما يمنعك أن تقول له: ما حاجتك عندي (ث) | الحميدي | ٨٦٢ |
| فهذا رجلٌ خرج من ذنبٍ لايعلم ماذا عليه فيه (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٨٦٨ |
| فوالله ما خرجت من نفسي (أي العجب) (ث) | يحيى بن أبي كثير | ٢٧٤٠ |
| فوْت الحاجة خيرٌ من طلبها إلى غير أهلها ... (ث) | خالد بن صفوان | ١٣٨٥، ١٤٢٤ |
| فوت الحاجة خير من طلبها من غير أهلها (ث) | أعرابي | ١٣٨٥ت |
| في بعض الكتب إن الله تبارك وتعالى يقول: إن | | |
| أغبط أوليائي عندي ... (ث) | عبد الواحد بن زيد | ١٧٥٦ |
| في بعض الكتب يقول الله تبارك وتعالى الحاسد عدوّ | | |
| نعمتي (ث) | ابن أبجر | ٦٥٨ |
| في التوراة طوبى لمن أكل من ثمرة يده (ث) | مالك بن دينار | ١٦٥٠ |
| في التوراة مكتوبٌ مات موسى كليم الله فمن...(ث) | عقبة بن أبي زينب | ٢٣٢٣ |
| في ثقيف رجلان كذاب ومبير | أسماء بنت أبي بكر | ٣٣١٦ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| في الدنيا لأنّه احتجب عزّ وجلّ عن جميع خلقه | عبد اللّه بن مسلم | |
| في (ث) | بن قتيبة | ٩٢٩ |
| في الصيف ضيعت اللبن (ث) | عمرو بن عمرو التميمي | ١٠٢٨ |
| في طاعة الأمير ... هي لك يا أمير المؤمنين (ث) | معن بن زائدة | ١٩٥١ |
| في كتاب الهند ثلاثة أشياء لا تنال إلا بارتفاع (ث) | عبد الله بن مسلم بن | |
| | قتيبة | ٣٠٠٨ |
| فيك ثلاث خِلال لك شرف والشرف يمنع | | |
| صاحبه (ث) | هارون الرشيد | ٨٦٩ |
| فيما تتنازعون؟ قلنا: في لحم الصّيد يأكله المحرم | طلحة بن عبيد الله | ٣٥٢٧ |
| فيم كنتم ... فتمنّوا وأنّا أتممنا معكم ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٤٩٦ |
| فيه يقول الشاعر: وهل لكم فيها فأنّي طبيب (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٦٣٧ |
| الفاسق أرى أنّه خيرٌ مني وذلك أنّي (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٧٤ |
| الفرس لا طِحال له والبعير لا مرارة له ... (ث) | أبو عبيدة وأبو زيد | ١٣٥١، ٣/٣٣٥٢ |
| الفروج الثغور وإحداها فرج قال ... (ث) | ابن قتيبة | ١٨٥٠ |
| الفقر في الوطن غربة، والغنى في الغربة وطن، وفقد الأحبة غربة (ث) | بزرجمهر | ٦٦٩ |
| الفقه في الدّين والصبر على النوائب والحلم (ث) | الأحنف بن قيس | ١٧٣٠ |
| قال آدم عليه السلام: يا رب ذنبي الذي كتبته عليَّ ... (ث) | عُبيد بن عمير | ٢٦٢٨ |
| قال آدم بن عبد العزيز بن عمر بن عبد العزيز | المدائني | ١٨٠٨ |
| قال أنو شروان لبزرجمهر لما أراد قتله: إنّي قاتلك فتكلّم بشيء تذكر به (ث) | محمد بن سلام | ٢٥٣٦ |
| قال أنو شروان للموبذ: ما رأس الأشياء؟ قال: الطبيعة | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| النقيّة يلتقي من الأدب برائحته (ث) | محمد بن سلام | ١٨٨٢ |
| قال إبليس: من كانت فيه واحدة من ثلاث فقد | | |
| استمكنت منه ... (ث) | ابن السماك | ٩٢٦ |
| قال ابن أبحُر في بعض الكتب: يقول اللّه تبارك وتعالى: | | |
| الحاسد عدوّ نعمتي متسخطٌ ... (ث) | موسى بن مسعود | ٦٥٨ |
| قال أبو البختريُ: لَوَدَدْتُ أنّ اللّه يُطاع وإنّي عبدٌ | | |
| مملوكٌ (ث) | سفيانُ الثوري | ٤٨٩ |
| قال أردشير: رضا الرجل عن نفسه دليل على قلّة | | |
| عقله (ث) | الأصمعي | ١٨٥٧ |
| قال أعرابيٌ: أأغْسِلُ رأسي أم تطيب مشاربي ... (ث) | الأصمعي | ٧٩٣ |
| قال أعرابي: أن للموت تفحماً على الشيب (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ١٦١٩ |
| قال أعرابيٌ لخالد القسري: أصلح الله الأمير(ث) | الأصمعي | ٢٣٢٧ |
| قال أعرابيٌ: ما تاهَ عليٌّ أحدٌ ... (ث) | الأصمعي | ١٥٨٣ |
| قال أعرابيٌ: وماتَ ابنٌ له: اللهّم إنّي قد وهبت له | | |
| ما قصّر فيه من... (ث) | الرَّياشي | ٢٣٣٢ |
| قال أكثم بن صَيفيٌ: إذا اتّخذتم عند رجلٍ يداً | | |
| فانسوها،ولا تمتنّوا (ث) | وهب بن منبه | ٦٨٤ |
| قال أكثم بن صيفي: الإفراط في الأنس يكسب | | |
| قرناء السوء (ث) | الحسن بن أبي جعفر | ٣٤٧٩ |
| قال أكثم بن صيفي: الانقباض من النّاس مكسبةٌ | | |
| للعداوة وإفراطُ الأنس بالنّاس مكسبةٌ ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٦٧١ |
| قال أكثم بن صيفي: الحزم في الأمور حفظُ ما كلّفْتُ | | |
| وترك ما كُفيت ... (ث) | الأصمعي | ٨٢٠ |
| قال أكثم بن صيفي: السرٌّ فيه ضربُ العُنق ... (ث) | أبو فَحْذم | ٨٨٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال أكثم بن صيفي: الشر بدؤه صغار فاصفح عنه لكي لا تخرجك (ث) | أبو عبيدة معمر بن المثنى | ١٠٣٥ |
| قال أكثم بن صيفي:الصَّمت يكسبُ أهله المحبَّة (ث) | المدائنيُ | ٨٨٢ |
| قال أكثم بن صيفي: المِزاح يذهب المهابة ... (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٨٩٣ |
| قال أكثم بن صيفي: أملك النّاس لنفسه من كتم سِرَّه من صديقه وخليله كيلا يتغيّر الذي ... (ث) | أبو قَحْذَم | ٨٨٨ |
| قال أكثم بن صيفي: سِرُّكَ من دمك فربّما أفشيته فيكون فيه سبب حتفك ... (ث) | أبو قَحْذَم | ٨٨٨ |
| قال أكثم بن صيفي: مقتل الرجل بين فكّيه يعني لسانه والفكّان اللّحيان ... (ث) | علي بن أصمع | ٣٤٣٧ |
| قال الله تبارك وتعالى في بعض كتبه: ما أحدٌ أطاعني إلا استجبت له من قبل أن يدعوني ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٩٨٥ |
| قال اللّه تبارك وتعالى للملائكة إذا همّ عبدي بحسنه فاكتبوها واحدة ... | أبو هريرة | ٢٨ |
| قال الله تبارك وتعالى: من أشغله الثناء عليَّ من مسألتي أعطيته أفضل ما أعطي السائلين ... (ث) | مالك بن الحارث | ٤٩ |
| قال اللّه تبارك وتعالى: ﴿نار اللّهِ الموقدة التي تطلع على الأفئدة﴾ فلا تأكله النّار حتّى تبلغ فؤاده وهو حيّ ...(ث) | محمد بن المنكدر | ٤١١ |
| قال اللّه تبارك وتعالى: والمراد بهذا القول صحابة رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم كما في تفسير: ﴿وعد اللّه الذين آمنوا وعملوا الصالحات ...﴾ (ث) | ابن قتيبة | ١٥٧٤ |
| قال اللّه عزّ وجلَّ في بعض كُتُبِهِ: ما أحدٌ أطاعني إلاّ أستجيب له ... (ث) | سفيان الثوري | ٩٢٤ |
| قال بزرجمهر الحكيم: احذروا صولة اللئيم إذا | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| شَبع (ث) | الأصمعي | ٢٤٥ |
| قال بزرجمهر الحكيم:آخ ذا العقل والكرم واسترسل | | |
| إليه (ث) | الرياشي | ١٧٢٤ |
| قال بزرجمهر: أرهب تحذر، وأنعم تشكر، ولا | | |
| تمازح فتحقر (ث) | عمر بن هلال الحَبَطيّ | ٩٣٦ |
| قال بزرجمهر الحكيم: أرهب تحذر، وأنعم تشكر، ولا | | |
| تمازح فتحقر (ث) | عثمان بن الهيثم عن أبيه | ٣٤٨٠ |
| قال بزرجمهر الحكيم: إذا اشتبه عليك أمران فلم | | |
| تدر أيهما الصواب (ث) | الأصمعي | ١٤٠٦ |
| قال بزرجمهر: إذا أقبلت إليك الدنيا فأنفق فإنها | | |
| لا تغني (ث) | الأصمعي | ١٣٨٣ |
| قال بزرجمهر الحكيم: ثمر القناعة الراحة (ث) | الأصمعي | ٢٤٤١ |
| قال بزرجمهر: الفقرُ في الوطن غربة، والغنى في | | |
| الغربة وطنٌ وفقد الأحبّة غربة ... (ث) | الأصمعي | ٦٦٩ |
| قال بزرجمهر الحكيم كل عزيز دخل تحت | الأصمعي، | ١٣٤٥، |
| القدرة فهو ذليل (ث) | مؤرج | ٢١٧٦ |
| قال بزرجمهر الحكيم لبعض ملوك الفرس إياك فورة | | |
| الغضب فإنها مصيرتك إلى ذُلّ الاعتذار(ث) | ابن عائشة | ٢١٤٢ |
| قال بزرجمهر: لا ينبغي أن يكون الفاضل من الرجال | | |
| إلاّ مع الملوك مكرماً (ث) | محمد بن سلام | ١٥٧٩ |
| قال بعض الأشراف: الصبّر على حقوق المرؤة | | |
| أشدُّ من الصبر على ... (ث) | المازنيُ | ٢١٠٩ |
| قال بعض الأعراب إياك وصدر المجلس فإنّه ... (ث) | ابن الأعرابي | ٢١٤٥ |
| قال بعض أهل العلم: دع الكذب حيث ترى أنّه | | |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ينفعك (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٨٤٤ |
| قال بعض أهل المدينة: من ثقل على صديقه خف | | |
| على (ث) | مصعب بن عبد الله | ١١٣٠ |
| قال بعض بني ضبّة: أقول وقد فاضت بعيني غبرة (ث) | محمد بن سلام | ٧٠١ |
| قال بعض الحكماء:أبين النّاس فضلاً من سبقك (ث) | المازنيُ | ٢٦٤٣ |
| قال بعض الحكماء: أحسن الدنيا أقبحها عِند من | | |
| ينصرها وذلك أنّها تشغل ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣٤٣٢ |
| قال بعض الحكماء: إذا استكمل العبد العمل والعقل | | |
| في القلب .... (ث) | ابن عائشة | ١٦٢٦ |
| قال بعض الحكماء: إذا غرست من المعروف غرساً | | |
| فأحسن ... (ث) | صالح المرّي | ٢٦٤٢ |
| قال بعض الحكماء: إذا قصّرت يُدك عن المكافئة | | |
| فليطل لسانك بالشكر ... (ث) | ابن السّماك | ٧٠٩ |
| قال بعض الحكماء: ارغب إلى من شئت فإنّك | | |
| أسيره .... (ث) | ابن عائشة | ٢٦٤٠ |
| قال بعض الحكماء: أشد الأعمال ثلاثة: إنصاف الناس | | |
| من نفسك (ث) | سفيان بن عيينة | ١٠٢٦ |
| قال بعض الحكماء: اصحب النّاس بثلاثة بالحذر | | |
| ورفض ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٨٥٥ |
| قال بعض الحكماء: إصلاح المعيشة الاجتهاد (ث) | عبد الوهاب بن عطاء | ٢٧٤٨ |
| قال بعض الحكماء: اطلبوا الرّزق عند الرحماء | | |
| تعيشوا ... (ث) | ابن عائشة | ١٩٧٤ |
| قال بعض الحكماء: أعظم الناس خطيئة يوم القيامة عند | | |
| الله المثلث (ث) | الأصمعي | ١٦٩٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال بعض الحكماء: أفضل العقل معرفة الرجل | | |
| نفسه (ث) | محمد بن الحُسين | ١٧٢٥ |
| قال بعض الحكماء: أقل الاعتذار موجب للقبول | | |
| وكثرته ريبة .... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٧٩١ |
| قال بعض الحكماء: أكرم الصفايا أشدها ولهاً إلى | | |
| أولادها .... (ث) | عبد اللّه بن مسلم | ٢١٠٣ |
| قال بعض الحكماء: إن لله عباداً يستقبلون | | |
| المصائب ... (ث) | محمد بن سلاّم | ٢٦٧٩ |
| قال بعض الحكماء: إن من أعجب العجب ترك | سعيد بن عبد الرحمن | |
| التعجب من العجب .... (ث) | المخزومي | ١٥٠٤ |
| قال بعض الحكماء: إن من سعادة المرء أن يضع معروفه | | |
| عند من يشكره .... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٨١٧ |
| قال بعض الحكماء: بذل الحيلة في طلب الحلال (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ١٧٨٤ |
| قال بعض الحكماء: البخيل خازن أعدائه | | |
| والحليم ...(ث) | محمد بن سلاّم الجُمحي | ٢٧٥٢ |
| قال بعض الحكماء التسليط على المماليك | | |
| من الدناءة .... (ث) | داود بن رشيد | ٢٠٩٣ |
| قال بعض الحكماء: التواضع مع البخل خير من السخاء | | |
| مع الكبر ... (ث) | علي بن الحسن عن أبيه | ١٦٢٨ |
| قال بعض الحكماء ... الصديق بالصحة هو الذي | | |
| يحضك النصح فيما ساءك وسرّك ... (ث) | سفيان الثوري | ٩٩٢ |
| قال بعض الحكماء: الندم على السكوت خير من | | |
| الندم على القول ... (ث) | المدائني | ٨٨٢ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة أشياء تميت القلب مجالسة | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الأنذال ومجالسة الأغنياء (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١١١٦ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة يحكم لهم بالمروءة حتى | | |
| يتكلموا رجل رأيته ... (ث) | الأصمعي | ٨٢٧، ٣٢٤٦ |
| قال بعض الحكماء: ثلاثة يخلقن العقل وفيهن (ث) | محمد بن سلاّم | ١٨٥٣ |
| قال بعض الحكماء: جلّ من استغنى عنك وما سد | | |
| فقرك ... (ث) | الربيع بن نافع | ٢٦٤٦ |
| قال بعض الحكماء: خمسة أشياء ضائعة سراج يوقد | علي بن الحسن | |
| في الشمس ... (ث) | بن خلال | ٧١٣ |
| قال بعض الحكماء: الدنيا وقتك الذي يرجع إليك | | |
| فيه طرفك (ث) | ابن عائشة | ٢١٣١ |
| قال بعض الحكماء: سَلِ الأرض فقل لها من شق | محمود بن يحيى | |
| أنهارك و ... (ث) | السعدي وابن قتيبة | ١٧٥٩ |
| قال بعض الحكماء: شرُّ الزّاد إلى المعاد الذنب بعد | | |
| الذنب (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٧٢٣ |
| قال بعض الحكماء: الشكر ثلاثة منازل لمن فوقك | | |
| بالطاعة (ث) | الأصمعي | ١١٥٨ |
| قال بعض الحكماء: صدرك أوسع لسرّك فإنّ | | |
| سرَّك ... (ث) | داود بن مُحبّر | ١٧٩٠ |
| قال بعض الحكماء: عابَ رجلٌ رجلاً عند بعض أهل | جعفر بن أبي عثمان | |
| العِلم فقال له: قد استدللت على كثرة عيوبك .. (ث) | الطيالسي | ٦٦٤ |
| قال بعض الحكماء: عادة السوء شرٌّ مِن المغرم | | |
| ومن عوّدته شيئاً ... (ث) | يونس بن حبيب | ٢٩٤٥ |
| قال بعض الحكماء: عجبت ممن يحزن على نقصان | | |
| ماله ولا يحزن على فناء عمره (ث) | محمد بن إسحاق الثقفي | ١١٢٠ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال بعض الحكماء: فضل الأدب في غير الدّين | | |
| مهلكة ... (ث) | مضاء بن الجارود | ٢٣٢٥ |
| قال بعض الحكماء: قد تقطع الشجرة بالفؤوس فتثبت | | |
| وتقطع اللحم بالسيف فيندمل... (ث) | المدائنيُ | ٦٧٤ |
| قال بعض الحكماء: كلُّ عدوٍ أحبُّ أن يعود لي | | |
| صديقاً إلا ما كان ... (ث) | حوثرة | ٢١٨٧ |
| قال بعض الحكماء: كنت في بلاد الروم إذْ سمعت | | |
| صوتاً من الهوى ... (ث) | وهيب بن الورد | ١٥٤٥ |
| قال بعض الحكماء: لا تسخر من شيءٍ | | |
| فيَحْربك ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٩١ |
| قال بعض الحكماء: لا تضع معروفك عِند فاحشٍ ولا | | |
| أحمق ولا لئيم ... (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ٢٨١٨ |
| قال بعض الحكماء: لا يغلّبن جهل غيرك علمك | | |
| بنفسك ... (ث) | ابن الأعرابي | ١٨٠٦ |
| قال بعض الحكماء: لولا أنّ في قولي إنّي لا | | |
| أعلم ...(ث) | أبو عُبيدة | ١٨٣٣ |
| قال بعض الحكماء:ليس غنيٌّ أغنى من سكون | | |
| القلب ...(ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٧٦٤ |
| قال بعض الحكماء: ليس من الحيوان شيءٌ يستطيع | | |
| أن ينظر ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٢٣٣ |
| قال بعض الحكماء:ما أعان على نظم شيء | سلم بن قتيبة | ١٧٢٩ |
| قال بعض الحكماء: من أُعطي أربعاً لم يمنع | | |
| أربعاً ... (ث) | إسماعيل بن عياش | ٥٩٥ |
| قال بعض الحكماء: من طاب رِيحُهُ زاد عقله | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ومن نظّف ... (ث) | المضاء بن الجارود | ٢٢٢٧ |
| قال بعض الحكماء: مجالسة أهل الديانة تجلو عن | | ١٩٧٦، |
| القلوب صدأ ... (ث) | الحسن بن علي الخلّال | ٣٠٦٤ |
| قال بعض الحكماء: مدار صالح الأمور في أربع في | | |
| الطعام لا يأكل إلاّ على شهوة ... (ث) | الفضيل بن عياض | ٦٤٦ |
| قال بعض الحكماء: معالجة الموجود خيرٌ من انتظار | | |
| المفقود ... (ث) | الرِّياشي | ٢٨٩٧ |
| قال بعض الحكماء: من أبطره الغِنى أذله الفقر | | |
| ومن ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٦٦٢ |
| قال بعض الحكماء: من أحبك نهاك ومن أبغضك | | |
| أغراك ... (ث) | ابن عائشة | ٢٣٨٩ |
| قال بعض الحكماء: من أخطأته سهام المنايا ... (ث) | الرّبيع بن نافع | ٢٦٧٠ |
| قال بعض الحكماء: من استطال عليك بمسألته وبخل | | |
| عليك .... (ث) | ابن عائشة | ٢٧٥١ |
| قال بعض الحكماء: من التوقي ترك الإفراط في | | |
| التوقي ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٢٠٧ |
| قال بعض الحكماء: من حدّث نفسه بطول البقاء فليوطن | | |
| نفسه ... (ث) | أحمد بن نيّزك | ٢٧٤٦ |
| قال بعض الحكماء: من ذكر الله عز وجل على | | |
| حقيقة ... (ث) | ابن عائشة | ٢٦٥٦ |
| قال بعض الحكماء: من طاب ريحه زاد عقله ... (ث) | علي بن حِجر | ٣٤١٤ |
| قال بعض الحكماء: من كان صبره على حادثات الرزية | | |
| كشكره (ث) | الزّيادي | ١٧١١ |
| قال بعض الحكماء: من كان منطقه في غير ذكر الله | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تعالى فقد لغا ... (ث) | عبد اللّه بن المبارك | ٣٣٧ |
| قال بعض الحكماء: من لم يداوِ نفسه من سقم الأيام | | |
| أيام حياته ... (ث) | ابن عائشة | ٢٩٣٣ |
| قال بعض الحكماء: من لم ينشط لحديثك فارفع عنه | | |
| مؤنة الاستماع إليك ... (ث) | مُحمّد بن الحسين | ١٥٠١ |
| قال بعض الحكماء: من نظر إلى امرأةٍ ثم غض طرفه | | |
| عنها ... (ث) | صالح المرّي | ٢٨٥٨ |
| قال بعض الحكماء: من هوان الدنيا على الله عز | | |
| وجل ألا يعصى إلا فيها ... (ث) | سعد بن خثيم | ١٨٠٥ |
| قال بعض الحكماء: وسُئل عن رجلٍ فقال: بلغ من | | |
| كرمه أنّه لا يسأل أحداً ... (ث) | الأصمعي | ١٨٠٠ |
| قال بعض الحكماء: وعائِبٌ تعيب بفضل | | |
| عيبه ... (ث) | ابن الأعرابي | ٢٢٤٧ |
| قال بعض الحكماء: وقيل له: ما العقل؟ قال: الإصابة | | |
| بالظَّن ... (ث) | أبو سعيد المدني | ٦٠٠ |
| قال بعض الحكماء: لا تكن في الإخاء مكثر ثم | | |
| تكون فيه مدبر (ث) | القاسم بن سلاّم | ١٠٢٧ |
| قال بعض الحكماء: يحسب الجاهل الشيء الذي هو | محمد بن سعيد | |
| لا شيء ... (ث) | الأصبهاني | ٢٥٥٢ |
| قال بعض الحكماء: ينبغي لصاحب الدّنيا أن يكون | | |
| بمنزلة المريض ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٧١٧ |
| قال بعض حكماء العرب: أحمد البلاغات الصمت | | |
| حيث لا يُحسن ... (ث) | أبو مسعود القتات | ١٩١١ |
| قال بعض حكماء العرب: اطلبوا الرزق إلى الرحماء | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تعيشوا في أكفانهم ... (ث) | عبد العزيز | ٢٩٢٢ |
| قال بعض حكماء العرب: الصّدق يزيّنُ صاحِبه | | |
| في ... (ث) | ابن عائشة | ١٧١٩ |
| قال بعض حكماء العرب: إن مما تُعَجَّل عقوبته | | |
| ولا تؤخر ... (ث) | الأصمعي | ٢٦٧٧ |
| قال بعض حكماء العرب: إنّه ليس شيءٌ أدعى إلى تغيير | | |
| نعمة أو تعجيل نقمة ... (ث) | المدائنيُّ | ٢٨٥٧ |
| قال بعض حكماء العرب: إنّي امتحنت خصال النّاس | | |
| فوجدت أشرفها ... (ث) | العائشي عن أبيه | ٢٦٨٣ |
| قال بعض حكماء العرب: كلُّ إناءٍ يفرغ فيه يضيق | | |
| ويمتليء إلاّ ... (ث) | يونس بن حبيب | ١٦٩٦ |
| قال بعض حكماء العرب لابنه: يا بني احتفظ من (ث) | المدائنيُّ | ١٦٩٨ |
| قال بعض حكماء العرب: لا يحتجب الوالي إلاّ | | |
| عن ثلاث: عن عيٍ .... (ث) | الأصمعي | ٢٢٦٠ |
| قال بعض حكماء العرب: لكل جوادٍ كبوة ولكل | | |
| صارمٍ نبوة ... (ث) | الأصمعي | ١٦٧٤ |
| قال بعض حكماء العرب: ما أعان على نظم مروءات | | |
| الرجال ... (ث) | سالم بن قتيبة | ١٧٢٩ |
| قال بعض حكماء العرب: من أحبَّك نهاك | | |
| ومن ... (ث) | ابن عائشة | ٢٣٨٩ |
| قال بعض حكماء العرب من أهل خُراسان لنصر بن | | |
| سيار: ينبغي أن يكون ... (ث) | الأصمعي | ١٦٦٤ |
| قال بعض حكماء الفرس: العبادة سلطانٌ على كلِّ | | |
| شيءٍ وما استنبط الصواب ... (ث) | ابن قتيبة | ٢١٢٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال بعض حكماء الهند: ما أقلَّ منفعة كثرة المعرفة | | |
| مع سرف ... (ث) | الأصمعي | ١٦٧٣ |
| قال بعض الخلفاء: ما مالك؟ فقال: الرّضا عن الله | | |
| والغنى ... (ث) | أبو حازم | ٣٢٧١ |
| قال بعض زهاد البصرة والناس عنده: يا ابن آدم | | |
| عجباً .... (ث) | محمد بن كثير بن الأزهر | ٣٠٥٨ |
| قال بعض الزّهاد: إن للّه تبارك وتعالى عباداً لم توسِّخ | | |
| الدّنيا قلوبهم ولم تغلل ... (ث) | أبو بكر بن أبي الدّنيا | ٢٨٣٥ |
| قال بعض الزّهاد: رحم اللّه امرءاً كان ذا حسبٍ | | |
| فصان ... (ث) | صالح المرّي | ١٧٤٤ |
| قال بعض الزّهاد من الناس: ليس الزّهد بترك الدّنيا ولكن | | |
| الزهد التهاون بها ... (ث) | يوسف بن أسباط | ٩٥٦/م |
| قال بعض الزّهاد: من لم يستحي من طلب الحلال | | |
| خِفت ... (ث) | يوسف بن أسباط | ١٦٤٩ |
| قال بعض الزّهاد: يا بن آدم ما أقلَّ وفاءك ... (ث) | محمد بن موسى البصري | ٧٤٥ |
| قال بعض السَّلف: يكون في آخر الزّمان غِلمان | | |
| يزهدون في الدنيا ولا يزهدون ... (ث) | ابن عائشة | ٣٠٥١ |
| قال بعض الشّعراء: احذر مغايظ أقوامٍ ذوي أنفٍ (ث) | أحمد بن داود | ٣٣٣١ |
| قال بعض الشّعراء: لأصبرنّ على يسري ومعسري | | |
| يوماً .... (ث) | حاتم بن يحيى | ٣٠٦٩ |
| قال بعض الصّالحين: لئِن أعربنا في كلامنا حتى ما نلحن | | |
| لقد كنا ... (ث) | محمد بن الحسين | ١٦٣٨ |
| قال بعض العُبّاد: أشرف العلماء من هَرَبَ | | |
| بدينه من ... (ث) | يحيى بن يحيى | ١٦٨٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال بعض العُبّاد: عَلامة التوبة الخروج من الجهل | عبد اللّه بن بكر | |
| والندم على الذنب .... (ث) | السهمي | ٣٣٩٩ |
| قال بعض العُبّاد: لَحَقٌ على العاقل أن يدوم ذِكره لما | عبد الواحد | |
| بعد هذا ... (ث) | | ١٧٢٧ |
| قال بعض العُبّاد: لم أجد طعم العيش حتى استبدلت | | |
| الخُمُص ... (ث) | شاذ بن فياض | ٢٢١٨ |
| قال بعض العُبّاد: لا تغضبه فيعاديك وينتصب | محمد بن الحسين | |
| لك (ث) | البرجلاني | ١٧٥٤ |
| قال بعض العُبّاد من الحكماء: الجوع فيه ثلاثة خِلال | | |
| حياة القلب .... (ث) | هارون بن معروف | ١٥١٠ |
| قال بعض العرب: من اتخذ الصّبر جُنّةً وقاه ... (ث) | الرّياشي | ١٧١٣ |
| قال بعض العرب: الهوى هوانٌ، ولكن غلط باسمه | الأصمعي | ١٤٠٦ |
| قال بعض العلماء: لولا العلم لم يُطلب العمل ولولا | | |
| العمل .... (ث) | ابن عائشة | ١٨٣١ |
| قال بعض العلماء: ليس من فضيلة العلم .... (ث) | أبو الدرداء | ١٨٨٠ |
| قال بعض العمال لأعرابي: ما أحسبك تدري كم | عبد اللّه بن مسلم | |
| تصلي في كل يومٍ وليلة ... (ث) | بن قتيبة | ٢١٣٦ |
| قال بعض القائلين: الدّنيا أُسست على الفناء فمن | أبو إسحاق بن أبي | |
| طلبها للبقاء ... (ث) | الشيخ | ٢٥١١ |
| قال بعض الملوك لمؤدب ولده: لا تخرجهم من علمٍ | | |
| إلى علم حتى ... (ث) | ابن قتيبة | ١٦٣٩ |
| قال بعض ملوك فارس لحكيم من حكمائهم | المدائني | ٤/٣٠١١ |
| قال بعض النُّسّاك: أنا لما لا أرجوا أرجا مني .... (ث) | عبد العزيز بن المبارك | ١٥٠٥، ٣٠٤٧ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال بعضهم:أقلُّ ما لترك الحسد في تركه أن | | |
| يصرف عن نفسه ... (ث) | ابن عائشة | ٢٢٠٨ |
| قال بعضهم: التمس لحوائجك صِباح الوجوه فإنّ | | |
| حسنَ ... (ث) | الأصمعي | ١٧٩٢ |
| قال بعضهم: التواضع مع البخل خيرٌ من السخاء | | |
| مع ... (ث) | والد الحسين بن علي | ٢٥٥٧ |
| قال بعضهم: غضب العربي في رأسه فإذا غضب لم يهدأ | | |
| حتى يُخرجه بلسانه أو يده ... (ث) | الرّياشي | ١٦٠٤ |
| قال بعضهم لا تشغلك ذنوب النّاسِ عن ذنبك | | |
| ولا... (ث) | ابن عائشة | ١٧٨٧ |
| قال بعضهم: لا تهاونّ بإرسال الكذبة في الهزل | | |
| فإنّها ... (ث) | ابن عائشة | ٢١٧٠ |
| قال بعضهم: ما يفقد الحر من الصيانة أكثر من | | |
| قدر الفائدة (ث) | داود بن رشيد | ٣٠٦٤/م |
| قال بعضهم: من عاب سفلةً فقد رفعه ومن عاب | | |
| شريفاً ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢١٨٨ |
| قال بعضهم: من فاز بالإيمان ربحت تجارته ... (ث) | داود بن المُحبّر | ١٧١٢ |
| قال بعض ولد طلحة بن عبيد الله: لبس طلحة | محمد بن عبد اللّه | |
| ابن عبيد الله رضي اللّه عنه رداءاً ... (ث) | القرشي | ١٦٦٨ |
| قال تياذوق طبيب الحجّاج للحجاج: إن اللّحم على | | |
| اللّحم يقتل السبّاع في البرية ... (ث) | جعفر بن سليمان | ٣١٢٩ |
| قال بنو شيبة يوماً لأعرابي: هب لنا حتّى ندلّك على | | |
| شيءٍ تأمن معه العمى ... (ث) | الأصمعي | ٣٤٤٧ |
| قال حبرٌ من أحبار بني إسرائيل وكان حكيماً: | | |
| عجبت (ث) | وهب بن منبه | ٢٦٧١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال حكيم لابنه: يا بُنيَّ اغتنم مسالمة من لا بُدّ لك | | |
| بعيداً أو حبيباً حتى تأمن .... (ث) | محمد بن الحسين | ٢٧٩٤ |
| قال حكيمٌ لحكيمٍ:أوصني قال: اجعل اللّه تبارك | | |
| وتعالى هَمَّك .... (ث) | صالح المرّي | ٢٦٥٧ |
| قال حكيمٌ لحكيمٍ:أوصني، فقال: اجعل اللّه عز | محمد بن الحسين | ١٧٧١، |
| وَجَلَّ همّتك، واجعل الحزن ... (ث) | | ٣٤٢٨ |
| قال حكيمٌ لحكيمٍ: لا تُظهر خوفك فيجتريء عليك | | |
| عدّوك ولا تكابرنّ من الأمور ما أدبر ... (ث) | محمد بن الحسين | ٢٧٩٤ |
| قال حكيمٌ من الحكماء: أشكر النّاس للّه عزّ وجلَّ | | |
| أشكرهم لعباده، ومن لم يشكر الناس .. (ث) | ابن عائشة | ٣١٠٨ |
| قال حكيمٌ من الحكماء: اعلموا أن العاقل يعترف | | |
| بذنبه ... (ث) | داود بن المحبّر | ٢٦٦٢ |
| قال خال الفرزدق: إذا ما الدّهر جدّ عليّ ... (ث) | الأصمعي | ٣٣٠٥ |
| قال داود صلى الله عليه وسلم: يا ربِّ دُلني على | | |
| عملٍ يدخلني ... (ث) | صالح المرّي | ١٧٥٢ |
| قال راهب لسعيد بن جُبير: يا سعيد عند الفتنة تعلم | | |
| من ... (ث) | أبو سنان | ٢٤٣٧ |
| قال ربُّكم تبارك وتعالى: المجاهد في سبيل اللّه عليَّ | | |
| ضامنٌ إن قبضته ... | ( ) | ١٣٩٢ |
| قال رجلٌ لأبيه: يا أبت إنّ عِظمَ حَقِكَ عليَّ لا يذهبُ | | |
| صغيرحقّي عليك .. | المدائنيُ | ١٠٩٢، |
| | | ٣٢٢٠ |
| قال رجلٌ لبعض الحكماء وأراد مفارقته: أوصني؟ | | |
| قال له: إيّاك أن تسيء إلى من تحبُّ ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٩٢٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال رجلٌ لحكيمٍ من الحكماء: عظني، فقال له | | |
| اعلم .... (ث) | ابن عائشة | ٢٦٦٨ |
| قال رجلٌ لخالد بن صفوان: أنّي إذا رأيتكم | | |
| تتذاكرون ... (ث) | مؤرج | ١٧٣٨ |
| قال رجلٌ لرجلٍ من حكماء العرب: أشِر | | |
| عليَّ ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٢٥٠ |
| قال رجلٌ لرقبة بن مصقلة: ما أكثرك في كلّ | | |
| طريق ... (ث) | المدائِنيُّ | ١٦١٢ |
| قال رجلٌ للأحنف بن قيس: ما دخلت بين اثنين | | |
| قطّ حتى يكونا هما الذي يدخلاني ... (ث) | حماد بن زيد | ٨٢١ |
| قال رجلٌ للمهلَّب: بم بلغت قال: بالعلم قال.... (ث) | مؤرج | ١٦٧٧/م |
| قال رجلٌ ليوسف بن أسباط: رأيتك البارحة في | محمد بن عبد الرحمن | |
| المنام كأنّ آتٍ ... (ث) | البزاز | ١٧٠٣ |
| قال رجلٌ: ما رأيت ذاكِبرٍ قط إلا تحوّل | | |
| داؤه ... (ث) | الأصمعي | ١٥٣٨ |
| قال رجلٌ من أخيار المسلمين: ما غنى من يملك | أحمد بن محمد (مولى | |
| نفسه وما ... (ث) | بني هاشم) | ٢٠٩٩ |
| قال رجل من حكماء العرب: بنات العم أصبر، | | ١٤٣٨، |
| والغرائب أنجب (ث) | الأصمعي | ١/٣٣٥٤ |
| قال رجلٌ من حكماء العرب: ما رأيت ذا كِبرٍ قط إلا | | |
| تحوّل داؤه فيَّ (ث) | الأصمعي | ٢١٢٢ |
| قال رجلٌ من قريش لشيخٍ من حكماء العرب: | | |
| يا عمِّ علِّمْني الحلم، فقال له: ابن أخي إنّ الحلم | | |
| هو الذّل ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣١٩٤ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال سليمان بن داود صلّى اللّه عليهما: أوتينا | | |
| ممّا أُتيَ النّاس ومما لم يؤتوا ... (ث) | ابن أبي نجيح | ٢٩٢٨ |
| قال سليمان لأبي حازم: سل حوائجك. فقال: قد | | |
| رفعتها إلى من ... (ث) | سفيان بن عيينة | ١٣٢٠ |
| قال شعيا النبي عليه السلام: وذكر أصحاب رسول | | |
| الله صلى الله عليه وسلم ... (ث) | وهب بن منبه | ١٨٦٩ |
| قال عيسى بن مريم عليه السلام: فكّرت في الخلق | | |
| فوجدت من لم يخلق ... (ث) | أبو الجلد | ٤٨٦ |
| قال عيسى بن مريم عليه السلام: لا يستقيم حُبّ | | |
| الدّنيا ... (ث) | سفيان الثوري | ١١٥٠ |
| قال عيسى بن مريم: يا معشر الحواريين اجعلوا | | |
| كنوزكم في السماء (ث) | إبراهيم التيمي | ٤٦ |
| قال عيسى بن مريم صلى الله عليه وسلم: بُطِحت | | |
| لكم الدنيا وجلستم على ظهرها فلا ينازعكم .... (ث) | الفضيل بن عياض | ٩٨٤ |
| قال عيسى بن مريم صلى الله عليه وسلم: بُطِحت لكم | | |
| الدنيا وجلستم على ظهرها فلا ينازعكم .... (ث) | سفيان بن عيينة | ٩٨٤ |
| قال عيسى بن مريم صلى الله عليه وسلم: طوبى | | |
| لمن سمعت ... (ث) | مالك بن دينار | ١٢٢٤ |
| قال عيسى بن مريم: طالب الدّنيا مثل شارب ماء | | |
| البحر كُلّما ازداد شُرباً ازداد عطشاً ... (ث) | أبو عبد اللّه الصّوفي | ١٤١٨ |
| قال عيسى بن مريم عليهما السلام: طوبى لمن علّمه الله | | |
| كتابه ثم لم ... (ث) | ثابت | ١١٩٦ |
| قال عيسى صلى الله عليه وسلم لأصحابه: بحقّ أقول | | |
| لكم إنه من طلب الفردوس فخبز الشعير له ... (ث) | إبراهيم التيمي | ٥٧٧ |
| قال عيسى عليه السلام: تعملون للدنيا وأنتم ترزقون | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فيها ... (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ١٨٠٤ |
| قال كِسرى: لا تنزلنّ ببلدٍ ليس فيها خمسة أشياء، | أحمد بن سلاّم (مولى | |
| سلطان ... (ث) | يزيد بن حاتم) | ١١٨٨ |
| قال عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه وهو على المنبر: | | |
| إنّ الذين ... (ث) | ابن المنكدر | ١٠٢٣ |
| قال لقمان الحكيم: ثلاثة لا يعرفون إلا في ثلاثة | | |
| مواطن ... (ث) | وهب بن منبّه | ٥٢٠ |
| قال لقمان الحكيم لابنه: ثلاثة من كنّ فيه فقد استكمل | | |
| الإيمان | سفيان الثوري | ١٣١١ |
| قال لقمان الحكيم لابنه: يا بُنيَّ لا تأكل إلا أطيب الطعام | | |
| ولا تنم إلا على لين الفراش ... (ث) | عبد الواحد بن زياد | ٨٢٢ |
| قال لقمان لابنه: يا بُنيَّ انزل نفسك بمنزلة من | عبد الله بن دينار | |
| لا حاجة لك به ... (ث) | البصراني | ٣١٣٩ |
| قال لقمان لابنه: يا بُنيَّ إنّ الكِبْرردداء الله فلا تنازعنّ الله | | |
| رداءه ... (ث) | معبد بن خالد الجهني | ١٨٤٦ |
| قال لي أبي: يا بُنيَّ إن وليت من أمر المسلمين شيئاً | | |
| فأكرم قريشاً ... (ث) | أبان بن عثمان | ٢٥٣٩ |
| قال لي راهب: يا مالك إن استطعت أن تجعل بينك | | |
| وبين النّار ... (ث) | مالك بن دينار | ١٥٤٨ |
| قال لي رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم: ما اسمك؟ قلت | | |
| شهاب | هشام بن عامر | ٣٤٩٧ |
| قال لي هشام بن عروة: تشرب النبيذ؟ قال: قلت: | أبو الغصن الدجين | |
| نعم أي والله ... (ث) | بن ثابت | ١١٠٣ |
| قال موبذان لكسرى: لا ينبغي للملك أن يغضب لأنّ | | |
| القدرة من وراء حاجته (ث) | الزيادي | ٢١٢٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قال موسى عليه السلام: من أعبَدَكُمْ يا بني إسرائيل فقيل له: فلان ما يُعرف فينا أعبد منه ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٨ |
| قال موسى عليه السلام: يارب أنت في السماء ونحن في الأرض فما علامةُ غضبك ... (ث) | قتادة | ٤٢٥ |
| قال يونس النبي صلى اللّه عليه وسلم لجبريل عليه السلام: دلني على أعبد أهل الأرض .... (ث) | وهب بن منبّه | ١٨٠ |
| قالت أعرابية للمنصور في طريق مكة بعد وفاة أبي العباس ... (ث) | الأصمعي | ٣١١٣ |
| قالت أعرابية من بنات عدي: أعظم اللّه أجرك في أخيك (ث) | الأصمعي | ٧٦٧ |
| قالت أعرابية من بنات عدي: للمنصور في طريق مكة (ث) | الأصمعي | ٣٢٣٥ |
| قالت الحكماء: الإنسان يعيش حيث تحيى النّار (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٢١٣٤ |
| قالت الحكماء: ثلاثة أشياء تورث الهزال (ث) | عبد الله بن مسلم بن قتيبة | ٢٣٤٩ |
| قالت الحكماء: العقل رائد الروح والعلم رائد العقل (ث) | محمد بن المغيرة | ١٤٩٦ |
| قالت الحكماء: فضل الأدب في غير الدين مهلكة (ث) | شاذ بن فياض | ٢١٦٧ |
| قالت الحكماء: الناس حازمان وعاجز، فأحد الحازمين (ث) | ابن عائشة | ١٤٠٥ |
| قالت حكماء الهند: لا ظفر مع بغي، ولا صحة (ث) | داود بن رشيد | ١٥٣٦ |
| قالت الصبا للشمال: اذهبي بنا ننصر رسول الله (ث) | ابن عباس | ١١٤٠ت |
| قالت الصحة إني لاحقة بأرض العرب، فقال | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الجوع (ث) | حكم بن جابر | ٢٠١٧ |
| قالت لي أمي: يا بُني قد خلقت خلقة لا تصلح (ث) | إبراهيم بن المنذر | ٢١٢٦ |
| قالت لي ما قالت بنت الأعشى للأعشى (ث) | المازني | ٣٤٢٠ |
| قالت اليهود: خلق الله تبارك وتعالى الأرض في (ث) | الحسن البصري | ٢٥٨١ |
| قام أعرابي إلى سليمان بن عبد الملك فقال: يا أمير المؤمنين | | |
| إني مكلمك بكلامٍ فاحتمله (ث) | عوف بن أبي جميلة | ٦١٣ |
| قام أعرابي بين يدي هشام فقال: يا أمير المؤمنين | | |
| أتت على الناس سنون (ث) | الأصمعي | ٦١٤ |
| قام بعض الزهاد بين يدي المنصور فقال: إن الله تبارك | محمد بن منصور | |
| وتعالى أعطاك الدنيا بأسرها فاشتر نفسك (ث) | البغدادي | ٦١٢ |
| قام بعضهم إلى بعض بالخناجر فقتل بعضهم | مجاهد وسعيد | |
| بعضاً لا يحمي الرجل على (ث) | بن جبير | ١٥٣٩ |
| قام رجلٌ إلى هارون الرّشيد وقد أسدى إليه معروفاً | | |
| فقالت: مثلك أوجب حقاً لا يجب عليه ... (ث) | محمد بن سلاّم | |
| | الجمحي | ٧١٠ |
| قام رجلٌ من العباد إلى يزيد بن المهلّب فقال: إنك والله | | |
| يا أيُّها الأمير ... (ث) | صالح المرّي | ٢٦٨٠ |
| قام ليلة إلى الصبح بعَمٍّ يتساءلون، فلما بلغ | صالح بن حي | ٢٢٦٩ |
| قام موسى يوماً في قومه فذكرهم بأيام الله | أبي بن كعب | ١ت |
| قاموا صفّين فقتل بعضهم بعضاً حتى قيل كُفّوا (ث) | قتادة والزهري | ١٥٤٠ |
| قِبَلَهُ . تفسير ﴿فولوا وجوهكم شطره﴾ (ث) | البراء | ١٤٦٠ |
| قبيلةٍ لا يغدرون بذمةٍ ولايظلمون (ث) | قيس بن عمرو بن | |
| | مالك الحارثي | ٩٨٨ |
| قتل الرجل صبراً كفارة لما قبله | أبو هريرة | ٥٨ت |
| قتل الصبر لا يمر بذنب إلاّ محاه | أبو هريرة | ٥٨ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قُتِلَ يوم الأربعاء ودفن بالبقيع وصلى عليه جُبير بن مطعم (ث) | عثمان بن عفّان | ٢٤٠ |
| القتل شهادة | أبو هريرة | ٥٨ت |
| القتل في سبيل الله شهادة | أبو هريرة | ٥٨ت |
| القتل في سبيل الله يكفر كل خطيئة | أبو هريرة | ٥٨ت |
| قد أصبتها لولا عِظم ثديها ... (ث) | الحكم بن أيوب | ١٩٦٦ |
| قد أغناك اللّه بالعذر منّا عن الاعتذار، وأغنانا بالمودّةِ لك | | ١٠٩٧ |
| قد أمرنا لك بشيءٍ هو دون قدرك ... (ث) | جعفر بن يحيى | ٣٢٢٢ |
| قد بلغني ما قلتم أمّا إنّكم إن شئتم قلتم: ألم تأتنا طريداً فأويناك .... | عبد الله بن ظاهر | ٢٢٨٥ |
| قد بعثت بمائي إلى الطبيب بالحيرة وأنا بالكوفة ينظر إليه ... (ث) | رافع بن خديج | ٣٣٦٠ |
| قد تقطع الشجرة بالفؤوس فتثبت، وتقطع اللحم بالسيف فيندمل (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٢٦ |
| قد تهنيت بالعيش ها هنا، أفر بديني من شاهق إلى شاهق (ث) | بعض الحكماء | ٦٧٤ |
| قد جئتني وأنا أريد أن أضرب عنقك فما من أحدٍ أحبَّ إليَّ منك ... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٩ |
| قد رآني ... قال لي، إنّي أفعل ما أشاء ... (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ٤٣٦ |
| قد صادف منّا حاجة (ث) | داود الطائي | ٥١ |
| قد صدقتني نفسي في الحياة ما لي شيء أوصي به ... (ث) | أبو نصر الجهني | ٩٧٥ |
| قد علمت أني أشقى من ذلك أن أكون عند الله بمنزلة أولياءه (ث) | هرم بن حيّان | ٣٤٤ |
| | الفضيل بن عياض | ٢٢٩٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قد علمت حبسي نفسي بعد أبيك فإنْ كان لي عندك شيء ... (ث) | عاتكة بنت زيد بن عمرو (زوجة الزبير) | ٢٠٩٢ |
| قد مَلّنا الحياة لكثرة ما نقترف من ... (ث) | داود الطائي | ١٩٢٦ |
| ما تقدمون عليه بما ... (ث) | عون بن عبد اللّه | ١٤٧٣ |
| قد كان الرجل يدع المال إلى جنبه ولو شاء أتاه ... (ث) | الحسن البصري | ٢٨٦٠ |
| قد كان الإخوان يتفقد بعضهم بعضاً فإن أراد أن... (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٧٥٧ |
| قد كنت حذرتك آل المصطلق (ث) | قيس بن الربيع | ٣٠٧٥ |
| قد مات الأمم وأنتم آخرها فماذا تنتظرون وقد أسرع بخياركم... (ث) | الحسن البصري | ٦١٦ |
| قد ندمت على ما قلت ولم أندم على ما لم أقل (ث) | ملك | ٢٤٤٢ |
| قد ورد الأول، والآخر متعب منتظر فأصلحوا | | |
| قدم أعرابيٌ الحضر فأكل فُطراً فأصابته الذُبحة فقيل له... (ث) | الزيادي | ٢٤٥٥ |
| قدم الجابية على جمل أورق تلوح صلعته بالشمس ليس عليه قلنسوة ولا عمامة... (ث) | أبو الغادية الشامي | ٩٨٦ |
| قَدُمَ العهد وأسلاني... (ث) | عمران بن موسى الجزري | ٧٤٣ |
| قَدِمَ بريد ملك الرّوم على عمر بن الخطاب رضي الله عنه فاستقرضت امرأةُ عمر ديناراً اشترت به عطراً... (ث) | مالك بن أوس بن الحدثان (مالك الدار) | ٢١٥ |
| قدم داود من السواد ولا نفقة ، فلم يزل يتعلم ويتعبد حتى ساد أهل الكوفة | أبو عمر | ٥٣ |
| قدم رجلٌ على سليمان بن عبد الملك في خلافته | محمد بن سلاّم | ١١٥٩، |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فقال: ... (ث) | الجمحي | ٣٢١٨ |
| قدم رجلٌ مِنا من سفر يقال له عبد بن عوف فلّما | طلق بن معاوية | ٤٧١، |
| قَدِمَ مهّدت له امرأته فراشاً فنام عليه وكانت له | | ٢٣٨٥ |
| ساعة يصلي فيها من ... (ث) | | |
| قدم رجلٌ من بعض الفروج على عمر بن الخطاب | محمد بن سيرين | ١٨٥٠ |
| رحمة الله عليه ... (ث) | | |
| قدم رصافة هشام رجل من بني أسد | ابن كناسة الأسدي | ٦١٤ت |
| قدم على زياد نفرٌ من الأعراب فقام خطيبهم فقال: | الأصمعي | ٢٢٧٣ |
| أصلح الله الأمير ... (ث) | | |
| قدم علينا الأحنف بن قيس الكوفة مع ... (ث) | عبد الملك بن عمير | ٢٥٠٢ |
| قدم علينا عمر بن الخطاب فدفع إلي قميصاً | صاحب أذرعات | ٩٨٦ت |
| قدم علينا هارون أمير المؤمنين يريد الحجّ فنزل | ابن إدريس | ٩٨٢ |
| الحيرة فاختلفت إلى الحيرة ... (ث) | | |
| قدم من السواد ولا نفقة، فلم يزل يتعلّم ويتعبّد | داود الطائي | ٥٣ |
| حتى ساد أهل الكوفة ... (ث) | | |
| قدم هارون الرشيد المدينة، وكان قد بلغه أن مالك بن | | |
| أنس رحمه الله | عتيق بن يعقوب الزبيري | (٣) ملحق |
| قدمت امرأة من هوازن على عبيد الله بن أبي بكرة | الأصمعي | ١٩٧٩ |
| بالبصرة (ث) | | |
| قدمت على أبي دلف فأقمت عنده ثلاثاً ثم كتب | | |
| إليه (ث) | العتابي | ٨٠٦ |
| قدمت مكة فبينا أنا أطوف في السحر إذ الناس (ث) | محمد بن الحسين | ٢٦١٤ |
| قدمت مكة وإذا الناس قد قحطوا من المطر وهم | عبد الله بن المبارك | ٢٢٩٢ |
| يستسقون (ث) | | |
| قد وجهت إليك بفرس أسيل الخد حسن القد (ث) | الحجاج | ٢١٠٢ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قذف المحصنة يحبط عمل سبعين سنة (ث) | أيوب السختياني | ٢٦١، ٣٣٧٩ |
| قراءةُ حمزة بدعة (ث) | أبو بكر بن عياش | ٣٠١٥ |
| قرأ الأصمعي: ﴿لا يأكله إلا الخاطئون﴾ | الأصمعي، محمد بن | |
| ثم أنشد قول الشاعر ... (ث) | سلام الجمحي | ١٢١٩ |
| قرأ القرآن في ركعة في الكعبة وقرأ في الركعة الثانية بـ ﴿قل هو الله أحد﴾... (ث) | سعيد بن جبير | ٣٩٩ |
| قرأت البارحة القرآن مرّتين ونصف فثقل لساني ... (ث) | سعيد بن جبير | ٣٩٨ |
| قرأت على أسكفة بالكدرة: هذه الدار أواها قبلنا عصبة بادوا وخلوها لنا | الرّياشي | ٨١ |
| قرأت على حجر منذ أربعين سنة: إن البلية أن تحب ... (ث) | محمد بن عبيد | ٣٠٧٤ |
| قرأت على ركن دارٍ مشيدة: لو كنت تعقل يا مغرور ما راقت ... (ث) | عبد الله بن محمد | ٣٢٢٨ |
| قرأت في الإنجيل أن المسيح صلى الله عليه وسلم قال للحواريين ... (ث) | وهب بن منبّه | ٢٠٨٤ |
| قرأت في الإنجيل أنّ المسيح صلى الله عليه وسلم قال لما فتح فاه بالوحي قال: طوبى للذين ... (ث) | عبد الله بن مسلم ابن قتيبة | ٩٢٩ |
| قرأت في الإنجيل أنّ مفاتيح كنوز قارون وقر ستين بغلاً غرّاً محجلة ... (ث) | خيثمة | ٢٨٢١ |
| قرأت في اثنين وسبعين كتاباً من كتب الله، كتب الله (ث) | وهب بن منبه | ١٠٣١ |
| قرأت في الزّبور أن الله تبارك وتعالى يقول: من ... (ث) | وهب الذّماري | ٢٤٧٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قرأت في بعض الكتب أنّ الحوت في الماءِ مكتوبٌ | | |
| على رأسه من يأكله؟ (ث) | سفيان الثوري | ٤٠٧ |
| قرأت في بعض الكتب: عجباً لمن قيل فيه الخير | محمد بن عبد الرحمن | |
| وليس فيه خير | القرشي | ٦/٢٤٣٥ |
| قرأت في بعض الكتب يا ابن آدم تأكل | | |
| رزقي ... (ث) | الحسن البصري | ٢٢٤١ |
| قرأت في بعض الكتب يا معشر الظّلّم لا تجالسوا | مالك بن دينار | ١٠٧٣ |
| أهل الذّكر حتى ... (ث) | | |
| قرأت في بعض الكتب يقول اللّه تبارك وتعالى: | | |
| عبدي لا يزالُ ملكٌ كريمٌ يصعد إليّ ... (ث) | وهب بن منبه | ١٨١ |
| قرأت في التوارة أن الذي يعمل (ث) | مالك بن دينار | ١٦٥٠ت |
| قرأت في حكم الهند: ليس من خُلةٍ يمدح | أحمد بن داود | |
| بها الغني إلا ذُمَّ بها ... (ث) | المازني | ١٥٩٦ |
| قرأت في بعض كتب الله عز وجلّ: يا ابن | | |
| آدم أطعني فيما أمرتك ... (ث) | يونس بن حبيب | ١٥٨٦ |
| قرأت في زبور داود عليه السلام: ذكر نبيّنا صلّى | | |
| الله عليه وسلم أنّه يجوز من البحر إلى البحر (ث) | وهب بن منبه | ٧٥٩ |
| قرأت في سير العجم أنّ أربعةً من الملوك | عبد الله بن مسلم | |
| اجتمعوا... (ث) | ابن قتيبة | ٢٤٤٢ |
| قرأت في سير العجم أن أردشير قال يوماً لوزراءه | عبد الله بن مسلم | |
| وخاصته ... (ث) | ابن قتيبة | ١٧٨٨ |
| قرأت في سير العجم: أنّ أردشير بن بابك بن | عبد الله بن مسلم | |
| ساسان كتب إلى الرعية: بسم الله الرحمن | ابن قتيبة | ١٩٦٨ |
| الرحيم (ث) | | |
| قرأت في سير العجم أن أردشير حين استوسق له | عبد الله بن مسلم | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| له أمره | ابن قتيبة | ١٩٩٧ |
| قرأت في سير العجم أن بعض ملوك الفرس | عبد الله بن مسلم | |
| قال لحاجبه: إنّي جعلتك عيني فانظر بها ...(ث) | ابن قتيبة | ٢٢١٤ |
| قرأت في سير العجم: حُسن الجوار خير قرين | | |
| والأدب ... (ث) | محمد بن حفص | ١٠٨٩ |
| قرأت في سير العجم، علامة الأحرار أن تلقوا | | |
| ما يحبون ويحرموا ... (ث) | ابن قتيبة | ٢١٢٣ |
| قرأت في صحف إبراهيم صلّى الله عليه وسلم: | | ١١٥٤ |
| طوبى للأبرار الذين أطاعوني ... (ث) | داود بن هلال | ٢١٢٩ |
| قرأت في كتاب الهند: من التمس من الإخوان | | |
| الرخصة عند المشورة | ابن قتيبة | ٥٩٢ |
| قرأت في كتاب الهند: من الحمق التماس الرجل | | |
| الإخوان بغير ... (ث) | عبد الله بن مسلم | ١١٣٢ |
| قرأت في كتاب رجلٍ إلى بعض الخلفاء: كان لي | | |
| فيك أمَلان ... (ث) | أحمد بن عبادة عن أبيه | ١١٥٧ |
| قرأت في كتاب شعيا قيل لي: قم نظاراً فانظر | | |
| ما ترى حتى تَخبر به ... (ث) | وهب بن منبه | ٧٧٨ |
| قرأت في كتاب شعيا: وقد أقسمت بنفسي | | |
| كقسمي أيام الطوفان | وهب بن منبه | ١٨٦٩ |
| قرأت في كتب الهند: إذا كانت الموجَدة من غير | عبد الله بن مسلم | |
| علّة كان ... (ث) | ابن قتيبة | ٢٢٧٤ |
| قرأت في كتب الهند: ذو المروءة يكرم (ث) | ابن قتيبة | ٢١٠٨ |
| قرأت في مزامير داود صلى الله عليه وسلم: يا | | |
| داود هل تدري من أغفر له من عبادي ... (ث) | وهب بن منبه | ١٥٥٥ |
| قرأت في مناجاة داود عليه السلام: اللّهمّ ما | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| جزاء من بكى من خشيتك ... (ث) | أبو عمران الجوني | ٢٨٧ |
| قرأت في مناجاة عُزير: اللّهم إنّك اخترت من | | |
| الأنعام الضانية ... (ث) | وهب بن منبه | ٢٠٨٣ |
| قرأت في واحدٍ وسبعين كتاباً فوجدت في | | |
| جميعها ... (ث) | وهب بن منبه | ١٦٢٤ |
| قرأت كتاب سعيد بن جبير إلى أبي: اعلم أن كل | | ١١٧٠ |
| يومٍ يعيش فيه المؤمن فهو غنيمة (ث) | عمر بن ذر | ٢٣٤٥ |
| قرأت نيفاً وسبعين كتاباً من كتب الله | | |
| عز وجل (ث) | وهب بن منبه | ١٠٣١ت |
| قُرأ على قبرٍ: ما حالُ من سكن القُرى ما حَاله (ث) | محمد المستملي | ٩١٤ |
| قُرِىء على قبرٍ: حملوه على الرِّقاب ابتداراً... (ث) | جعفر بن محمد المستملي | ٩١٦ |
| قُرِىءعلى قبرٍ مكتوبٌ باليمن بالحميرية فترجَمها | | |
| بالعربية: أنا عمرو بن شمر الملك الجرهمي ...(ث) | عبد الواحد بن زيد | ٧٠٠ |
| قُرِىءَ على قبرٍ: هذا منازل أقوامٍ عهدتهم ... (ث) | محمد بن بشر المرثدي | ٩١٦ |
| قُرِىء على قبرٍ: يا باكي الميت على قبره ... (ث) | جعفر بن محمد المستملي | ٩١٥ |
| قِراءتُك على العالم وقراءته عليك سواء ... (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٣٦ |
| قَرَّب رجلٌ من بني إسرائيل قرباناً فلم يَتقبل منه، | | |
| فرجع وهو يقول لنفسه مِن قِبَلِك أُتيت ... (ث) | وهب بن منبّه | ٣٠١٤ |
| قريبٌ من المحسنين ـ حكاه لما سُئِل أين رحمه | | ١٥٠٧ |
| الله ـ (ث) | أبو حازم | ٣٤٥٦ |
| قِصَرُ الأمل (ث) | سفيان الثوري | ٢٨٤٨ |
| قصة سليمان بن عبد الملك مع أبي حازم | | ٣٤٥٦ |
| قضى سعد بن وقاص رضي الله عنه حاجةً للحرقة | | |
| بنت النعمان بن المنذر فكان من دعائها له أن قالت | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| له: لا جعل الله إلى لئيم حاجة (ث) | بلال بن سعد | ٤٤٧ |
| قطع اللّه لسانه فأين هو عن ....(ث) | أحمد بن أيوب | ١٨٧١ |
| قِفوا لي على أهل الصُّفة حتّى انظر إليه يعني | | |
| أبا نصر (ث) | هارون الرشيد | ٩٧٥ |
| قل.... سل... (ث) | خالد بن يزيد | ٢٢٣٢/ م |
| قل آمنت بالله ثم استقم | سفيان بن عبد الله الثقفي | ١٧٢١ |
| قل ربي الله ثم استقم | سفيان بن عبد الله الثقفي | ١٣٨٨ |
| قل لبشر بن الحارث لو سجدت لي على الجمر | قول الله تعالى | ٤٤٨ |
| قل لقومك إني بريء ممن سحر أوسحر له | قول الله تعالى | ٢٢٧٢ |
| قل للذي يرجو البقاء وقد رأى (ث) | محمد بن فضاله النحوي | ٧٣٩ |
| قل للرجل إنها وافقت قدراً وقد (ث) | الحجاج بن يوسف | ٣٢٧٤ |
| قل له: إنها قد وافقت قدراً (ث) | الحجاج بن يوسف | ١٥٥٤ |
| قل له: كنا فاحمدنا، وبنا فما ندمنا (ث) | هند بنت أسماء | ٢٣٣١ |
| قل له: يحشرون على مثل قرصة النقي (ث) | محمد بن علي بن الحسين | ٢٢٥٦ |
| قل لهم أن السياج ذمتي وإن القصر شريعتي | قول الله تعالى | ١١١٩ |
| قل لهم كيف ترون في أرض كانت زماناً من زمانها | | |
| خربة | قول الله تعالى | ١١١٩ |
| قل لهم يخفون لي أعمالهم | قول الله تعالى | ٨٩ |
| قل ما خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبة | معقل بن يسار | ١٥١١ |
| إلا أمرنا فيها بالصدقة (ث) | وأنس بن مالك وأبو برزة | |
| | وعمران بن حصين وسمرة | |
| | ابن جندب | ١٥٨٨ |
| قلة الفكر وطول الدعة والنوم على الكظة (ث) | أعرابي | ٢٣٤٧ |
| قل يا ملين القلوب لين قلبي قبل أن تلينه عند الموت(ث) | معروف الكرخي | (١٩) ملحق |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قل يا ذا المعروف الذي لا ينقطع معروفه أبداً (ث) | ملك الموت | ١٢٢ |
| قُلت لأبي إنّي أراك تطيل النظر إلى وجه علي بن | | |
| أبي طالب رضي الله عنه... (ث) | عائشة | ٣٥٠٣ |
| قلت لأبي لم تجلس إلى فلان، وقد عرفت عداوته | محمد بن الفضل | |
| .... (ث) | الهاشمي | ٢٧٠٨ |
| قلت لأبي: ما تقول في رجلٍ سبَّ أبا بكر؟ | سعيد بن عبد الرحمن | |
| قال: يقتل... (ث) | ابن أبزى | ٣٥٤٩ |
| قلت لإسرائيل أبي موسى أنّه كان بين أظهركم | | |
| رجلٌ فرَحَّلكم قال... (ث) | سفيان الثوري | ٢١٠١ |
| قلت لبعض الصّوفيين: تَبِعْ جُبّتك الصّوف؟ (ث) | النضر بن شميل | ١٨٥٦ |
| قلت لجار عطاء السُّلمي: من كان يخدم | | |
| عطاء.... (ث) | معتمر بن سليمان | ٢١١٤ |
| قلت لراهب: أي يوم أسرُّ إليك؟ (ث) | أبو سليمان الدّاراني | ٣٥٣١ |
| قلت لراهبٍ: يا راهب، متى عيد هذا | | |
| الدّين؟... (ث) | النباجي | ١٦٩ |
| قلت للحسن: إن أخاك جابر بن يزيد في الموت | | |
| وهو يومئذٍ متواري... (ث) | سحّار | ٢٧٢٤ |
| قلت لها ما قال جرير: ثقي بالله ليس له | | |
| شريك (ث) | المازنيُّ | ٣٤٢٠ |
| قلت ليوسف بن أسباط: أقعد إلى القاصّ | | |
| ... فأقيمه... (ث) | أبو سعيد الخياط | ١٦٣١ |
| قُم إنّك لنائم الساعة التي يقسم الله فيها | | |
| الرزق لعباده أما سمعت... (ث) | عبد الله بن عباس | ٢٠٤٧ |
| قم بالباب فامنع من لا تعرف وائذن لمن | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تعرف... (ث) | عدي بن حاتم | ٢١٦٩/م |
| قمت على باب الجنةِ فإذا عامّةُ من يدخلها | | |
| المساكين... | أسامة بن زيد | ٢٠٣٢ |
| قم عنها فإنّها مُبخرة مجفرة تتفل الرِّيح | | |
| (حكاه لمن يجلس في الشمس) (ث) | علي بن أبي طالب | ١٩٨٠ |
| قم فأطلق عن ابن عمّك، ووار أخاك، واحمل | قيس بن عاصم | |
| إلى أمّه مئة من الإبل... (ث) | المنقري | ٣٣٢٨ |
| قوام أمتي بشرارها | ميمون بن سُنْباذ | ٢٧٢٩ |
| قول العرب: لقد ذلّ من بالت عليه الثعالِب | القاسم بن سلاّم أبو | |
| (قيل فيما بلغنا أنّ رجالاً من العرب كانوا | عبيد | |
| يعبدون صنماً...)(ث) | | ١٠١٠ |
| قول النبي صلى اللّه عليه وسلم : «أنا ابن | إبراهيم الحربي | |
| العواتك من سُليم» العواتك ثلاث نسوةٍ... (ث) | وعبد الله بن مسلم | |
| | ابن قتيبة | ٢٣٩٠ |
| قول علي : مُجَفّرة أي تذهب | | |
| شهوة... (ث) | ابن قتيبة | ١٩٨١ |
| قوله أهدفت لي معناه: أشرفت لي ومنه قيل | عبد الله بن مسلم | |
| للبناء.... (ث) | ابن قتيبة | ١٠٧٧ |
| قوله: أخفر ذمة اللّه أي: نقض ذمة الله وعهده | | |
| .... يقول: إذا نقضوا ما بينكم وبينهم من | | |
| الصلح.... (ث) | إبراهيم الحربي | ١٤٤٢ |
| قوله: فما ينبسون أي ينطقون بعدها نطقة، | ابن قتيبة (عبد الله بن | ٢٢٩٤ |
| قال... (ث) | مسلم) | ٢٢٩٤ |
| قولوا: اللّهم احرسنا بعينك الّتي لاتنام واحفظنا | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| في كتفك... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٠٩ |
| قولي له: ليس ها هنا وأعني موضع قدمي.... (ث) | محمد بن سيرين | ٢٣١٠ |
| قومٌ هم: بنو حنيفة، والداعي إلى قتالهم أبو بكر الصّديق رضي اله عنه وقال آخرون... (ث) | مسلم بن قتيبة | ١٥٧٣ |
| قومي يا فاعلة إنّ رجلاً يبيع جنّةً عرضها السموات والأرض بمقياس... (ث) | أبو فلان الأعرابي | ٥٦٤ |
| قيل: العيال أرضة المال... (ث) | الأصمعي | ٣٣١٤ |
| قيل للربيع بن خثيم لو أرحت نفسك؟ قال: راحتها أريد | سفيان الثوري | ١٢٠٤ |
| قيل لآخر بالبصرة قل لا إله إلا الله (ث) | الربيع بن خثيم البصري | ٣٨٥ |
| قيل لأعرابي: أتشرب الخمر؟ قال لا أشرب ما... (ث) | الأصمعي | ١٥٧٢ |
| قيل لأعرابي: أنّ فلاناً أفاد مالاً عظيماً قال: فهل أفاد معه... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٥٨١ |
| قيل لأعرابي إنّك تكثر لبس العمامة فقال: إنّ عَظماً فيه السمع والبصر.... (ث) | الأصمعي | ٣٣٤٣ |
| قيل لأعرابي: أي ولدك أحبُّ إليك فقال: صغيرهم.... (ث) | الأصمعي | ١٠٩٦ |
| قيل لأعرابي: تمنّهْ. قال: الكفاية والانتقال من ظل إلى ظل | الأصمعي | ١١ /٢٤٣٥ |
| قيل لأعرابي سمين: ما أسمنك قال: أكلي الحار وشربي.... (ث) | الرّياشي | ٢٣٤٦/ م |
| قيل لأعرابي: فلان يخطب ابنتك: فقال: هو موسر من عقلٍ ودين... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣٢٨٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قيل لأعرابي: كيف برّك بأمّك؟ قال: لم | أبو عبيدة | ٣٢٢١ |
| أضربها قط... (ث) | | |
| قيل لأعرابي: كيف حزنك اليوم على ولدك | | |
| فقال... (ث) | الأصمعي | ١٩٠٨ |
| قيل لأعرابي: كيف لك ولدك وكان عاقاً | | |
| فقال: عذابٌ... (ث) | أبو عبيدة | ١٠٩٥ |
| قيل لأعرابي: ما أحسن الثناء عليك؟ فقال: بلاء | الأصمعي | ٢٥١٦، |
| الله عندي أحسن من وصف المادحين وإن | | ٣١٩٢ |
| أحسنوا... (ث) | | |
| قيل لأعرابي: ما أسمنك؟ قال: قِلّة الفكر... (ث) | الزّيادي | ٢٣٤٧ |
| قيل لأعرابي: ما تشتهي؟ قال: اشتهي ضرساً | | |
| طحوناً (ث) | الأصمعي | ٣١٢٨ |
| قيل لأعرابي: ما تعدون السّيد فيكم قال من | | ٢٠٥٠ |
| غلب رأيه هواه... (ث) | الرّياشي | ٣٠٦٨ |
| قيل لأعرابي: مات فلان أصحّ ما كان فقال: | | |
| أو صحيح (ث) | ابن عائشة | ١٥٣ |
| قيل لأعرابي وأراد الحجاج قتله:اشهد على | | |
| نفسك بالجنون: فقال | حلبس | ١٥٦٦ |
| قيل لأعرابية مات ابنها: ما أحسن عزاك؟ | محمد بن الحسين | ٧٨٩ |
| فقالت: إنّ فقدي إيّاه... (ث) | البرجلاني | ٣٢٠١ |
| قيل لأعرابية مات ابنها: ما أحسن عزاك؟ فقالت: (ث) | المبرد | ٣٤٧٥ |
| قيل للأعمش: ما بال أصحاب الحديث لا يشبعون | | |
| من الحديث... (ث) | عيسى بن يونس | ١٨٣ |
| قيل لبَزَرجمهر الحكيم: بم أدركت ما أدركت | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من العلم؟ قال: ببكور كبكور الغراب... (ث) | الأصمعي | ٣١٠ |
| قيل لبزرجمهر الحكيم هل من أحدٍ ليس فيه عيب؟ قال: لا إن الذي لا عيب فيه... (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٦٦٨ |
| قيل لبزرجمهر الحكيم: هل يستطيع أحدٌ أن يفعل المعروف من.... (ث) | الأصمعي | ١١١٤ |
| قيل لبعض الأعراب: ما آفة النسيان (ث) | الرياشي | ١/٣٠٩٦ |
| قيل لبعض الحكماء: أي الطعام أحبُّ إليك؟ (ث) | معتمر بن سليمان التيمي | ٦٤٨ |
| قيل لبعض الحكماء: ما أرادوا بالخلوة والعزلة؟ قال: ليستعدوا بذلك دوام الفكر... (ث) | إبراهيم القاري | ٢٢٤ |
| قيل لبعض الحكماء ما البلاغة؟ قال: ما بلّغك الجنة وعدل بك عن النار... (ث) | ابن عائشة | ٣٣٨ |
| قيل لبعض الحكماء ما المروءة؟ قال: إنصاف من هو دونك والسمو إلى من هو فوقك... (ث) | محمد بن حفص | ٣٠٩٥ |
| قيل لبعض الحكماء: مالك تدمن إمساك العصا، ولست... (ث) | أحمد بن علي | ١٢٨٤ |
| قيل لبعض الحكماء: مالك لا تُرْضي بني فلان؟ قال: ليس يرضيهم شيء.... (ث) | الأصمعي | ٢٩٣٤ |
| قيل لبعض الحكماء: ما لكم أطلب الناس للعلم قال: لأنّا أعمل الناس به... (ث) | سفيان الثوري | ٦٩٤ |
| قيل لبعض الحكماء: ما كمال الحمق؟ قال: طلب منازل الأخيار بأعمال الأشرار ... (ث) | ابن عائشة | ١٦٣٠ |
| قيل لبعض الحكماء: متى تفحش زوال النعمة | داود بن رشيد | ٢/٣٠٧٦ |
| قيل لبعض الحكماء: متى يدرك العبد أمله من الله؟ قال: إذا لم تنظر عينه... (ث) | محمد بن الحسين | ١٦٣٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قيل لبعض الحكماء: لو زدتنا من فضل لسانك لعلّنا ننتفع... (ث) | محمد بن الحسين | ٢٧١٦ |
| قيل لبعض الحكماء: لو زدتنا من فضل (ث) | القاسم بن سلاّم | |
| | أبو عبيد | ٢٧٩٣ |
| قيل لبعض الحكماء: من أحقُّ الناس بالرحمة؟.... (ث) | شاذ بن فياض | ١٥٦٥ |
| قيل لحبيب أبي محمد: أيا أبا محمد: مالك لا تضحك | عثمان بن الهيثم المؤذن | ٣٥ |
| قيل لحكيم من حكماء العرب: تمنَّ فقال: مخادمة الإخوان وكفاف من عيشٍ يسُدُّ خلّتي (ث) | الأصمعي،عيسى بن عمرالنحوي | ٢٩٤٦ |
| قيل للحمار لم لا تجتر قال: أكره مضغ المحال الباطل... مدوا الحبل (ث) | أيوب السختياني | ٢٩٥٠ |
| قيل لراهب: ما لكم يا معشر الرهبان تدمنون إمساك العصا، فقال: نذكر أنّا مسافرون... (ث) | عبد الواحد بن زيد | ٧٣٤ |
| قيل لرجل من البصريين: مالك لا ينمى مالك؟ قال: لأني اتخذت | الرياشي | ٢١٠٧ |
| قيل لرجلٍ من قريش وكان من حكمائهم: يا عمّ علّمنا... (ث) | محمد بن سلاّم | ٢٥١٥ |
| قيل لشيخ: كم بقي منك؟ ... يسبقني من بين يدي ويدركني من خلفي.... (ث) | أبو عبيدة | ١٢٧٩ |
| قيل لعبيد الله بن الحسن العنبري أتجوز شهادة رجلٍ | أحمد بن شعيب البصري | ٦٢٢ |
| قيل لعمرو بن عبيد: ما البلاغة؟ | | ٣٣٨ت |
| قيل لعيسى صلى الله عليه لو اتخذت حماراً | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تركبه.... (ث) | ثابت البُناني | ٢٠٧٦ |
| قيل للربيع بن خثيم في مرضه الذي مات فيه: ألا ندعو لك طبيباً؟ | عبد الملك بن عمير | ١٨٩ |
| قيل للعجّاج: إنّك لا تُحسِنُ الهجاء؟ فقال: إنّ لنا أحلاماً... (ث) | الأصمعي | ٥٣٤ |
| قيل لمحمد بن واسع لم لا تجلس متكئاً، قال: تلك ... (ث) | جعفر | ١١٧٧ |
| قيل لمدني: كيف حالك؟ فقال: كيف يكون ... (ث) | ابن قتيبة | ٢١٠٨ |
| قيل لملك الموت صلى اللّه عليه وسلم: كيف تقبض الأرواح؟ قال: أدعوها فتجيبني ... (ث) | أبو قيس الأودي | ٧٠٤ |
| قيل لنافع بن جبير بن مطعم: ألا تشهد الجنازة؟ (ث) | عثمان بن واقد | ٢٥٣٢ |
| قيل لنصيب: هرم شعرك، قال: لا، ولكن هرم الجود والمعروف | العتبي | ٣٠٨٠، ١٩٢٣ |
| قيل ليوسف عليه السلام: مالك تجوع وأنت على خزائن الأرض ... (ث) | وهب بن منبّه | ١٩٢ |
| قيل من أظلم النّاس؟ قال: من ظلم غيره | محارب بن دثار | ٣٥٤٠ |
| قيلوا فإنّ الشياطين لا تقيل | ابن عباس | ٢٠٤٧ |
| قيوداً لا تنحلُ والله أبداً... حكاه في تفسير قوله تعالى: ﴿إن لدينا أنكالاً وجحيماً﴾ ... | أبو عمران الجوني | ١٠٤ |
| القرآن ذكرٌ فذكروهُ | عبد الله بن مسعود | ١٠٣٢، ١٠٣٢ت |
| القبر أول منازل الآخرة | عثمان | ١٣٠٣ت |
| القضاةُ ثلاثة، إثنان في النار، وواحد في الجنة ... | ( ) | ١٥٩٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| القلب إذا لم يكُن فيه عزنٌ خرب (ث) | مالك بن دينار | ٢٦٥٨ |
| القلب المعنى بأمر الله في علو من الله | أبو معاوية الأسود | ١٢٣٥ت |
| القلب ملك البدن، وللملك جنود، فرجلاه بريداه | | |
| ويداه جناحاه ... (ث) | أبو هريرة | ٥٧٠ |
| القلوب أوعية، فخيرها أوعاها (ث) | علي بن أبي طالب | ١٨٢٤ت |
| القمح الذي يرفع رأسه ويضع بصره ـ تفسير قوله | | |
| تعالى: ﴿فهم مقمحون﴾ ـ (ث) | أبو عبيدة | ٩٣١ |
| القوام من العيش، والغنى عن الناس ... لو قلت | | |
| له قليل ... (ث) | الهيثم بن الأسود | ٢٧٥٠ |
| القول قول أبي عبيدة، ولم نَرَ أحداً يجيز ...(ث) | عبد الله بن مسلم | ٩٣٢ |
| القيد والرتعة، ومن كان في ضيافة الأمير سمن | الغضبان بن القبعثري | ٢٣٤٧/م |
| كاد العلماء أن يكونوا أرباباً | الأحنف بن قيس | ١٩٠١ |
| كان آدم شديد الأدمة عظيم البطن والعينين ... | أبو جعفر محمد بن علي | ٢٦٤، ٣٤٠٦ |
| كان إبراهيم إذا طلبه إنسان لا يُحبُّ أن يلقاه خرجت | | |
| الجارية فقالت: اطلبوه في المسجد ... (ث) | مغيرة بن مقسم | ٣٠٥٦ |
| كان ابن أبي مالك بالكوفة وكان معتوهاً ذاهباً | | |
| لا يعرف ماالناس فيه .... (ث) | إدريس | ٢٩٤١ |
| كان ابن أخي مطرف حبسه السلطان في شيء | | |
| فكان يخاف عليه ... (ث) | غيلان بن جرير | ١٦٨١ |
| كان ابن عمر لا يذكر رسول اللّه صلى الله عليه | إسحاق بن عبد اللّه | |
| وسلم إلا بكى ... (ث) | الغطفاني | ٢٥٢٢ |
| كان ابن عمر لا بها (يعني المزارعة) بأساً حتى (ث) | سعيد بن المسيب | ١٠٢٠ت |
| كان أبو بصير اسمه يشكر بن وائل من بني | | |
| يشكر ...(ث) | الأصمعي عن أبيه | ١٩٣٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان أبو خالد يزيد المؤذن إذا أذن بكى وصرخ (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٦١٣ |
| كان أبو صادق لا يتطوع من السّنة ولا يصلي | | |
| غير الفريضة ... (ث) | مهدي بن ميمون | ٢١٦٥ |
| كان أبو عبد الله البرائي يتمثل بهذين البيتين | محمد بن الحسين | ٢٩٣٨ |
| كان أبو عثمان النهدي من قضاعة وأدرك النبي | عبد القاهر بن السري | |
| صلى الله عليه وسلم ولم يره (ث) | عن أبيه عن جده | ١٩٩٤ |
| كان أبوعوانة واسمه الوضّاح مولى يزيد بن عطاء | | |
| البزاز من أهل واسط ... (ث) | ابن عائشة | ١٥٧٧ |
| كان أبو محجن الثقفي لا يزال يجلد في الخمر (ث) | ابن سيرين | ١٠١٤ |
| كان أبونا لا يرفع المواعِظ عن أسماعنا أبداً إذا | | |
| أراد ... (ث) | عمرو بن عتبة | ١٤٩٣ |
| كان أبيض أمهق يعلوه حمرة وكان يُصَفِّرُ | | |
| لحيته ... (ث) | عمر بن الخطاب | ١٩٤ |
| كان أبيض نحيفاً خفيف العارضين أجنأ لا يستمسك | | |
| إزاره (وصف أبي بكر) (ث) | عائشة | ١٦٣ |
| كان أحب الأوقات إليه أن يلقى العدو إذا لم يلقه | | |
| أول النهار أن يلقاه إذا زالت الشمس | النعمان بن مقرن | ١٩٣٩ |
| كان أحدهم إذا بلغ أربعين سنة طوى فراشه وكان | | |
| بعضهم يحيي اللّيل ... (ث) | عبد الله بن داود الخريبي | ١٣١ |
| كان أحلم من فرخ طائر (ث) | أعرابي | ٨٠٢، ٣٣٢٦ |
| كان أحمد بن حنبل إذا ضاق به الأمر آجر نفسه (ث) | إدريس الحداد | (٨) ملحق |
| كان أحياناً إذا دخل بيته يقول: | عائشة | ٣٣٥٩ت |
| كان أحمد بن المعذّل إذا حجّ لا يستظل (ث) | محمد بن موسى البصري | ٤٢٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان إدريس خياطاً، وزكريا نجاراً ـ تفسير قوله تعالى | | |
| ﴿ورفعناه مكاناً علياً﴾ | أبو هريرة | ٣١١٨ |
| كان إذا أتي بالشيء سأل عنه أهدية أم صدقة | بهز بن حكيم عن أبيه | |
| | عن جده | ١١٦٢ |
| كان إذا أتى الخلاء أوقال قضاء الحاجة | أنس بن مالك | ٢٨٤٣ |
| كان إذا أراد أن يعاقب رجلاً | عمر بن عبد العزيز | ٢٨٠٠، |
| حبسه ثلاثة أيام ثم عاقبه (ث) | | ٣٣٣٠ |
| كان إذا إستراث خبراً يتمثل بقافية بيت طرفه: | | |
| ويأتيك بالأخبار من لم تزود ... | عائشة | ٣٣٥٩ |
| كان إذا اشتكى أحدٌ من أهله شيئاً لا يزال .. (ث) | عائشة | ٢٨٨٧ |
| كان إذا بكى مسح وجهه ولحيته من دموعه (ث) | محمد بن المنكدر | ٤١٠ |
| كان إذا توضأ فضَّل موضع سجوده بماء | الحسن بن علي بن | |
| | أبي طالب | ١٦٠٧ |
| كان إذا حجّ لا يستظل ... (ث) | أحمد بن المعدّل | ٤٢٢ |
| كان إذا حزبه أمرٌ قام في الليل يصلي ويأمر أهله | | |
| بالصلاة (ث) | أحمد بن المعدّل | ٣٠٥٥ |
| كان إذا حضرت الصلاة بسطنا بساطاً لنا فقام | أنس بن مالك | ٢٨٣٦ |
| كان إذا خرج من المسجد عَرَف جيرانه ذلك | | |
| بطيب رائحته ... (ث) | ابن مسعود | ٣٣٤٨ |
| كان إذا عاد مريضاً لم ينتفع به أهله يوماً وليلةً، | | |
| وإذا شيّع جنازة ... (ث) | الحسن البصري | ٩٦٧ |
| كان إذا قام من الليل يستقي | أبو معاوية الأسود | ٩٧ت |
| كان إذا قدم عليه الوفد سألهم عن حالهم | | |
| وأسفارهم ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٤٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان إذا كبّر يرفع يديه في الصلاة حتّى يُرى أطراف أنامله | أبو هريرة | ٣١٦٧ |
| كان إذا ولي لم يطابق بين جفونه وأرسل العيون على عيونه | أعرابي | ٢٢٠٣ |
| كان اسم الذئب الذي أكل يوسف كذا وكذا فقالوا: إن يوسف لم يأكله الذئب ... (ث) | أبو كعب القاضي | ٣٢٥٧ |
| كان أشدّ النّاس عليّ كلاماً عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه ... كان يلقن من السماء ... (ث) | غيلان القدري | ٣٠٢٣ |
| كان أشراف قريش يأتون النبي صلى الله عليه وسلم وعنده بلال، وصهيب ... | مجاهد | ١٤٤٩ |
| كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يثبت لهم عدو فواقاًعند ... (ث) | أبو إسحاق | ١٢٥٩ |
| كان أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يتجرون في البرّ والبحر والقدوة بهم ...(ث) | أحمد بن حنبل | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |
| كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم عمال أنفسهم | عائشة | ٧٥٤ت |
| كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يتجرون في البحر منهم سعيد بن زيد | سعيد بن المسيب | ٧٥٤ت |
| كان أصحاب عبد الله بن مسعود سُرَجَ هذه القرية ـ يعني الكوفة ـ (ث) | سعيد بن جبير | ٤٣٠ |
| كان أصلع أقنا له جُمّة أسفل من أذنيه ... (ث) | عثمان بن عفان | ٢٤٠ |
| كان الأحنف بن قيس يفر من الشرف والشرف يتبعه .... (ث) | خالد بن صفوان | ١٥٧٥ |
| كان الأسود بن شيبان إذا حجّ لا يتزود شيئاً من | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الطعام ولا يشتري ... (ث) | مالك بن إسماعيل | ١٤٦٨ |
| كان الأسود صوّاماً قوّاماً كثير الحج وكان علقمة (ث) | عامر الشعبي | ٤٢٩ |
| كان أنو شروان إذا ولى رجلاً أمر الكاتب (ث) | شيخ من العجم | ٢٢٠١ |
| كان أنوشروان يكتب إلى مراذبته عليكم بأهل...(ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٣٥٥ |
| كان أهل الجاهليةلا يسودون إلا من كانت فيه (ث) | العتبي | ١٧٠٦ |
| كان أهل المدينة يكرهون اتخاذ أمهات الأولاد (ث) | ابن أبي الزناد | ١٩٣٥ |
| كان أيوب السختياني يخفي قيام الليل (ث) | سلام بن أبي مطيع | ٢٤٧٧ |
| كان بالبصرة حارسان من بني عدي زمن زياد يحرسان أعرابيان ... (ث) | أبو صفيّة | ٥٠٦ |
| كان بالبصرة قاض ظريف يقال له أبو الربيع (ث) | محمد بن سلام الجمحي | ٢٣٣٧ |
| كان بالكوفة ثلاثة لو لقيل لأحدهم إنك تموت غداً لم يقدر أن يزيد في عمله، محمد بن سوقة ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٣٢٤ |
| كان بدء الرافضة أن قوماً من الزنادقة اجتمعوا (ث) | عبد الرحمن بن عبد الله | (٢٦) ملحق |
| كان بدوٌّ توبة داود الطائي أنّه دخل المقبرة فسمع امرأة عند قبر (ث) | داود الطائي | ٥١، ٥٥ |
| كان بَصَرُ محمد بن سيرين بالعلم كبصر التاجر الأريب ... (ث) | ابن عون | ١١٧٦ |
| كان بشر بن منصور عند الحجّام | مالك بن ضيغم | ٤١٣ |
| كان بين اثنين عبدٌ، فقام أحدهما فجعل يضربه ..(ث) | أبو حصين | ٣٢٦٣ |
| كان بين يديه لحم فجاءت حدأة (ث) | سعد بن أبي وقاص | ٣٥٠ |
| كان الثوري إذا جالسنا إنما نسمع منه الموت (ث) | أبو أسامة | ٨١٧ |
| كان الحسن البصري يشبّه بأصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم (ث) | أبو إسحاق | ٢٧٦٦ |
| كان الحسن يبصر من الفتنة إذا أقبلت كما يبصر | أيوب السختياني | ٢٤٠٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان حطيط صوّاماً قوّاماً يختم في كل يوم وليلة | | |
| ختمة (ث) | جعفربن أبي المغيرة | ٣١٢٣ |
| كان الرجل إذا أراد أن يشين أخاه طلب من (ث) | ابن عائشة | ١٦٠٠ |
| كان يقال للرجل خبيث العمل (ث) | أبو يذين | ٢٨٧٢ |
| كان الرّجل يقوت أهله قوتاً دون وبعضهم ... (ث) | ابن عباس | ٢٧٧٨ |
| كان الزّبير بن العوّام يضرب في المغنم بأربعة أسهم: | | |
| سهم له .... (ث) | عروة بن الزبير | ٤٥٦ |
| كان الفقراء في مجلس سفيان هم الأمراء (ث) | قبيصة | ٢٩٥٧ |
| كان الفقراء في مجلس سفيان هم الأمراء... (ث) | يحيى بن اليمان | ٢٩٥١ |
| كأنّ القلوب ليست منّا وكأنّ هذا الحديث يُعنى به | مطرّف بن عبد الله | |
| غيرنا ... (ث) | الشخيِّر | ٧٩٦ |
| كان الناس يجلسون في مسجدهم ولا | | |
| يجلسون .... (ث) | الشعبي | ١٩١٠ |
| كان النّاس يدعون بهذا الدّعاء وكان يدعو به | | |
| بكاءُ بني إسرائيل يقول ... (ث) | وهب بن منبه | ١٦٤٤ |
| كان جرير بن يزيد في دار المطلب فجاء إنسان | | |
| يسأله ... (ث) | يحيى بن معين | ١١٨٧ |
| كان جميلاً ويعجب الناس من طوله (ث) | علي بن عبد الله بن عباس | ٣٤١٦ |
| كان حسن السبلة | العداء بن خالد | ٢٦٢١ |
| كان داود زراداً وكان آدم حراثاً | ابن عباس | ٣١١٨ت |
| كان داود صلى اللّه عليه وسلم يقول في مناجاته: | | |
| اللّهم (ث) | عثمان بن أبي العاتكة | ٢٨٨ |
| كان داود صلى اللّه عليه وسلم يقول في مناجاته: | | |
| إلهي (ث) | عثمان بن أبي العاتكة | ٢٨٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان داودعليه السلام: ينادي في جوف الليل: | | |
| أوه من ... (ث) | صفوان بن محرز | ١٥١٧ |
| كان داود يقول في مناجاته: طوبى لمن أرضاك في | | |
| دار الفناء ... (ث) | وهب بن منبّه | ٣٥٠٥ |
| كان دعاءُ عيسى صلوات الله عليه الذي يدعو به (ث) | وهب بن منبّه | ١٢٠٣ |
| كأن راكبها عضن بمروحة إذا | | |
| تدلّت به أوشارب ثمل | | |
| دونك ناقتك .... (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٨٥٢ |
| كان رجلان متواخيان فطلب أحدهما من الآخر | | |
| شيئاً فمنعه ... (ث) | محمد بن سوقة | ٢٥٧٠ |
| كان رجلٌ فيمن كان قبلكم يبايع بالأمانة فدعا | | |
| رجلاً فبايعه ... (ث) | أبو هريرة | ٦١١ |
| كان رجلٌ مِنْ إخواننا إذا جلس جلس على | | |
| رجليه فقيل ... (ث) | أبو الجلد | ١٣٤٣ |
| كان رجلٌ من أعراب بني عامر له شويهات ترعى، | عبد الرحمن بن يزيد | |
| فإذا كان اللّيل ... (ث) | بن معاوية النخعي | ١٨٢٧ |
| كان رجلٌ من الصالحين عندنا بالبصرة فما رُئي | | |
| قطّ إلا كأنه غشيته النّار ... (ث) | أحمد بن المعدّل | ٩٧١ |
| كان رجلٌ من الصالحين قد احتاج فقالت له | | |
| امرأته ... (ث) | المدائني | ٢٠٤٢ |
| كان رجلٌ من العُبّاد قلّ ما ينام من الليل فغلبته | | |
| عينه ... (ث) | مضر بن عبد الله القاري | ١١٠ |
| كان رجلٌ من العرب في الجاهلية إذا رأى رجلاً يظلم | | |
| قال إنّ هذا ... (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٦١٨، ٢٠٦٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان رجلٌ من بني تميم يقال له: فرغان لا يزال يغير على الناس .... (ث) | الأصمعي | ٢٠٦٤ |
| كان رجلٌ من ملوك بني إسرائيل قد أُعطي طول عمر، وكثرةُ مالٍ، وكثرةُ أولاد ... (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٨٦٨ |
| كان رجلٌ يقول: اللّهم صلّ على مَلَكُ الشمس فيكثر ذلك .... (ث) | أبو قلابة الجرمي | ٨٧ |
| كان رسول الله صلى اللّه عليه وسلم إذا أتى الخلاء أو قال إذا قضى الحاجة | أنس بن مالك | ١٩١٤ |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر | أبو هريرة | ٣١٦٧ت |
| كان رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم لا يكاد يقوم من مجلس إلا دعا بهؤلاء الدعوات | عبد الله بن عمر | ٧٢٥ |
| كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حذو منكبيه | أبو هريرة | ٣١٦٧ت |
| كان رسول اللّه وأبو بكر وعمر وعثمان لا يجهرون ببسم اللّه الرحمن الرحيم ... | أنس بن مالك | ٣٥٦٩ |
| كان روح بن زنباع إذا دخل الحمام فخرج منه | الوليد بن أبي عون | ٣٥٤ |
| كان زكريا صلى اللّه عليه وسلم نجاراً | أبو هريرة | ١٣٣٣ |
| كان زيد بن ثابت من أفكه الناس في أهله وأزمتهم إذا جلس | الثوري | ١٠٣٨ |
| كان سالم بن نوفل الدّيلي سيد بني كنانة فخرج عليه ذات ... (ث) | الكلبي | ١٧٣٥ |
| كان ستة رجالٍ يحملون عنقوداً من العنب ... | | |
| حكاه في تفسير قوله تعالى: ﴿ادخلوا الأرض المقدسة﴾ ... (ث) | أبو مسلم | ٢٧٧٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان سعد بن عبادة يبسط رداءه ويقول: | | |
| اللهم ارزقني ... (ث) | ابن أبي سُبرة | ١٣٧١ |
| كان سعيد بن العاص إذا سَئل سائل فلم يكن | | |
| عنده شيء ... (ث) | سفيان بن عيينة | ١٣٠٨ |
| كان سعيد بن مسلمة أخو القعنبي عنده كتابٌ عن | | |
| منصور (ث) | يحيى بن معين | ٢٧٠٢ |
| كان سفيان الثوري إذا ذكر النّار وَلِهَ لذكرها فكنّا | | |
| نخرجه من منزله نديره في الأسواق | يحيى بن اليمان | ٢٧٩٨ |
| كان سفيان الثوري إذا مرَّ بشيءٍ ... (ث) | قبيصة | ٢٤٩٤ |
| كان سفيان الثوري رحمه الله إذا جلسنا معه كأنه | | |
| على مقلاه | يحيى بن اليمان | ١٠٨١ |
| كان الشعر أبغض الحديث إليه | عائشة | ٣٣٥٩ت |
| كان صوّاماً قوّاماً يختم في كلِّ يوم وليلة ختمة ..(ث) | حُطَيْط | ٣١٢٣ |
| كان عالماً برعيته عادلاً في نفسه قليل الكبر، قبولاً | | ٣٣٨٥، |
| للعذر، سهل الحجاب ... (ث) | عمر بن الخطاب | ١٣٠٠ |
| كان عبيد الله بن أبي بكرة من الأجواد فاشترى | | |
| يوماً .... (ث) | مؤرج | ١٩٠٥ |
| كان عثمان رضي الله عنه إذا اطلع في القبر بكى، | | |
| وقال .... (ث) | مالك بن دينار | ١٣٠٣ |
| كان عثمان إذا وقف على قبر بكى حتى يبل لحيته | هانيء مولى عثمان | ١٣٠٣ت |
| كان عثمان رضي اللّه عنه كنيته أبا عمرو (ث) | الواقدي | ٢٣٧ |
| كان عطاء السلمي جالساً في حدائته مع مالك بن | | |
| دينار (ث) | عثمان بن الهيثم المؤذن | ١٧٧٣ |
| كان عظماء الترك يقولون القائد العظيم ... (ث) | المدائني | ١١٣٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان على خاتم طاهر «وضع الخدّ للحقّ عِزٌّ» (ث) | محمد بن منصور | ٦٠٧ |
| كان على خاتم علي بن الحسين رضي الله عنه «غفلت فاعمل» | محمد بن الحنفية | ٣٣٤٥،٦٠٦ |
| كان على ظهر بيتٍ وهو شاكٍ من خرّاج كان خرج منه ... (ث) | سعيد بن أبي وقاصّ | ١٠١٤ |
| كان علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه حَذِراً في الحرب جداً شديد الروغان ... (ث) | مصعب بن عبد اللّه عن أبيه عن جدّه | ١٢٦١ |
| كان علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب رضي الله عنه إذا توضأ اصفر | عبد الرحمن بن حفص القرشي | ٧٨٧ |
| كان علي بن عبد الله بن عباس يصلي كل يوم ألف سجدة | الأوزاعي وعلي بن أبي حملة | ٥٤٤ |
| كان علي بن الفضيل بن عياض لا يستطيع أن يقرأ القارعة ... (ث) | أبو سليمان الداراني | ١٢٣٤، ٢٢٦٩ |
| كان عليٌّ رحمه اللّه يقرأ والعصر ... (ث) | عمرو بن مُرّة | ٢٥٤٦ |
| كان علينا أبو موسى الأشعري أميراً بالبصرة | ضبة بن محصن | ٢٢٣٨ |
| كان عُمرُ آدم ألف سنة، وكان عمر داود ستين سنة.. | ابن عباس | ٣٣٩٠ |
| كان عمران الخوّاص إذا مرَّ على الجسر فيقول، سلّم سلّم ويظن أنه ... (ث) | أبو نصر | ١٥٩٣ |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه إذا بعث عاملاً اشترط عليه ...(ث) | عاصم | ١٢٢٠ |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه إذا رأى الرجل يتلجلج في كلامه | محمد بن سلام الجمحي | ٣٣٤ |
| كان عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه إذا قدم عليه الوفد سألهم | إبراهيم | ٣٤٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه يقول لمن | | |
| ورد عليه هل يثبت ... (ث) | سفيان بن عيينة | ١٢٦٠ |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه يأتي | | |
| أم كلثوم | ابن أبي نجيح | ٣٧٧ |
| كان عمر بن الخطاب رضي الله عنه يلبس وهو | | |
| أمير المؤمنين جُبَّةً من صوف مرقوعة من أدمٍ ...(ث) | قتادة بن دعامة السدوسي | ٢١٤ |
| كان عمر بن عبد العزيز في سفرٍ مع سليمان بن | | |
| عبد الملك فأصابتهم السماء برعدٍ وبرقٍ .. (ث) | عطاء بن السائب | ١١٠١ |
| كان عمرو بن مسعدة في ديوان خالد القسري وكان | | |
| موجزاً في كتابه فكتب إلى صديق له ... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٧١٢ |
| كان عند أبي وجدّي ورقة يتوارثونها قبل الإسلام | | |
| بزمانٍ فيها ... (ث) | عمرو بن حفص | ١٢٩٨ |
| كان عندنا صيّاد يصطاد النّينان فكان يخرج | | |
| يوم الجمعة ... (ث) | الأوزاعي | ٧٦٢ |
| كان غاب يحيى بن زكريا عليه السلام وعلى أبيه | | |
| يعني غاب فقده أبوه .... (ث) | وهب بن منبه | ١٥١٨ |
| كان غلّة طلحة بن عبيد الله رضي الله عنه كل | | |
| يوم ألف وافٍ ... (ث) | عمرو بن دينار | ٤٨٥ |
| كان فداء أسارى بدر أربعة آلاف إلى ما دون ذلك | | |
| فمن لم يكن ... (ث) | الشّعبي | ٢١٧٨ |
| كان فداء أسارى بدر مختلفاً | عكرمة | ٢١٧٨ت |
| كان فتىً بمكة لا ينام الليل كله فقيل له في ذلك (ث) | عبد الوهاب المكي | ١٩٤٥، ٢٨٤٠ |
| كان في بني إسرائيل رجل له ملك عظيم فقال: | أبو عبيدة | ١٢٧٢، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أرى أحداً ... (ث) | | ١٦٤٦ |
| كان في بني إسرائيل متعبد في صومعته فأراده | | |
| الشيطان فلم .... (ث) | هلال بن يساف | ٢٥٦٩ |
| كان في بني إسرائيل ملكة يقال لها روزبة هكذا | | |
| قال .... (ث) | أبو السليل | ٢٧٠٠ |
| كان في خدي ابن عباس رضي اللّه عنه خطان من | | |
| الدموع | ابن عباس | ٧٣١ |
| كان في قرية من قرى أنطاكية لا يخالط أحداً ولا | | |
| يخرج إلا في مواقيت الصلاة .... (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٩٩٠ |
| كان في همذان رجلٌ له فضل وعبادة قال ... (ث) | شريح العابد | ١٦٢٩ |
| كان كرجلٍ من رجالكم كأحسن النّاس ... | عائشة | ١٩١٥ |
| كأنكم تعادون إلى الثريد ... حكاه لأضيافه لما تعادوا | | |
| وعلى صوتهم ... (ث) | مالك | ٢٥١٢ |
| كان لا يرى بأساً أن يُعَجِّل الرجل من زكاة ماله إذا | | |
| رأى لها موضعاً (ث) | الحسن البصري | ٩٤٥ |
| كان لا يؤذن لرسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | | |
| إلا في الفجر وكان لا يؤذن حتى يطلع الفجر (ث) | أبو محذورة | ٩٤٧ |
| كان لأبي الحلال غُرفة لها أربعة أبواب فكان يقوم | عبد الله بن أبي الجلال | |
| على كل ... (ث) | عن أُمِّهِ عن عمتها | ١١٧٣ |
| كان لأبي وائل شقيق بن سلمة خص تكون فيه | | |
| هو وفرسه ... (ث) | عاصم بن أبي النجود | ١١٨٣ |
| كان لبيد بن ربيعة يثبت القدر في الجاهلية ومن | | ١٩٣١، |
| قوله .... (ث) | حمّاد الراوية | ٣٤١٩ |
| كان لسفيان الثوري عباءة يلبسها بالنهار | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ويرتدي ...(ث) | بكر العابد | ٢٠١٥ |
| كان لعبد الله بن جدعان جفنة يطعم النّاس فيها في | | |
| الجاهلية كان يأكل منها الراكب ... (ث) | أبو عبيدة | ٣٠٠٣ |
| كان لكسرى جامات من ذهب يأكل فيها ...(ث) | الأصمعي | ١٩٠٢ |
| كان للحسن بن هانيء خاتمان خاتم فضة من عقيق مربع | | |
| عليه مكتوب ... (ث) | دعبل الشاعر | ٦٠٨ |
| كان لنا جار من أهل العلم والفقه فمات فرأيته في | بشر بن أبي عاصم | |
| النوم فقلت له ما صنع اللّه عز وجل بك ... (ث) | الكوفي | ٣٧٠ |
| كان له جامٌ فيه حبُّ الرّمان مدفون على مائدة . (ث) | إبراهيم بن صالح | ٢٤٥٧ |
| كان له خاتمان يعني أحدهما من عقيق مربع عليه: | | |
| تعاظمني ذنبي فلما قرنته ... (ث) | الحسن بن هانيء | ٦٠٨، ٣٣٤٦ |
| كان ماؤه في دَنٍّ مُقَيِّر فيه الصيف والشتاء .. (ث) | داود الطائي | ٥٧٨ |
| كان محمد بن جحادة من العابدين وكان لا ينام الليل | | |
| إلا اليسير | سفيان بن عيينة | ٢٣١٩ |
| كان محمد بن سوقة لا يُحسن يعصي الله عز | | |
| وجل ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٣٢٤ |
| كان محمد بن سيرين يذكر أوزانه لكي لا ... (ث) | عبد اللّه بن فروج | ٢٧٦٨ |
| كان مسلم بن أبي مريم شديداً على القدرية عياباً | | |
| لهم .... (ث) | عتيق بن يعقوب الزبيري | ١٦٠٩ |
| كان مع موسى صلى اللّه عليه وسلم ست مائة | | |
| ألف واتباعهم ... (ث) | قتادة | ١٣٣٧ |
| كان ملك من الملوك لا يأخذ أحداً من أهل الإيمان | | |
| باللّه إلا أمر بصلبه ... (ث) | هشام بن إسماعيل | ١١٢١ |
| كان معاوية رضي اللّه عنه يستعمل سنة مروان بن الحكم | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ثم يعزله ويولي (ث) | المدائني | ٣٠٨٤ |
| كان مما حُفِظ عن أردشير من حكمته قال: | | |
| حسبكم دلالة على علو منزلة العلم (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٦٨٥ |
| كان من البكائين ... (ث) | عمار بن أبي الحسن | ٢٧٢٨ |
| كان من تحميد داود صلى اللّه عليه وسلم الحمد لله عدد | | |
| قطر المطر وورق الشجر وتسبيح الملائكة ... (ث) | وهب بن منبّه | ١٥٧٠ |
| كان من دعاء النبي صلى اللّه عليه وسلم: | | |
| (يا رزاق النَّعاب في عشه) (ث) | الأحوص بن حكيم | ١٣٥٣ |
| كان منا رجل من بني النجار | أنس | ٢٣٩٢ت |
| كان موّرق العجلي من العُبّاد المجتهدين ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٧٨٤ |
| كان النبيَ صلى الله عليه وسلم إذا لم يقاتل | | |
| أول النهار | النعمان بن مقرن | ١١٣٩ت |
| كان نصر بن مالك على شرطة أبي مسلم (ث) | الرياشي | ٥٩٧ |
| كان نعيمان الأنصاري يدور في أسواق المدينة | | |
| فإذا دخل | ( ) | ٧٤٩ |
| كان ها هنا بالمدينة في سنةِ سبعٍ وثمانين رجلٌ يكني | | |
| أبا نصر من جُهينة ذاهب العقل ... (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| كان هشام الدستوائي لا يطفيء سراجه بالليل | روح بن عبادة | ٣٥٥ |
| كان والله أخي في الليلة ذات الأزيز والصراد يركب | | |
| الجمل التفال .... (ث) | مُتمّم بن نويرة | ٣١٣٦ |
| كان والله إذا وعد الخير وفى، وإذا وعد الشر | حيّان بن سُليم | ١٨٩٦، |
| أخلف (ث) | | ٣٠٥٤ |
| كان والله عمر أعقل من أن يخدع وأفطن من أن | | |
| يخدع (ث) | المغيرة بن شعبة | ٤٤٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كانوا هؤلاء هربوا حين قتل الحسن بن محمد بفجّ | | |
| في أيام موسى .... (ث) | عثمان بن عبد الرحمن | ٢٨٩٩ |
| كان وهيب بن الورد ساجداً في المسجد الحرام فأطال | محمد بن عبد اللّه بن | |
| السجود ... (ث) | عمرو القرشي المدني | ١٤٦٦ |
| كانوا لا يجهرون ببسم الله الرحمن الرحيم | أنس | ٣٢١١ت، |
| | | ٣٥٠١ت |
| كانوا يستحبون أن يختموا القرآن أول اللّيل وأول | | |
| النّهار ... (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٨٤ |
| كانوا يعدون النعيم أن يتغدى الرجل ثم يتعشى | | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿لتسألنّ يومئذٍ عن النعيم﴾ (ث) | الحسن البصري | ٢٩٦٨ |
| كانوا يكرهون أن يزيد منطق الرجل ... | داود بن رشيد | ١٣٤٤ |
| كان يأخذ بيده اليمنى أذنه اليسرى ويجمع (ث) | عمر بن الخطاب | ٨٣٤ |
| كان يأكل معنا اللّحم ويقرأ القرآن (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٥٩٥ |
| كان يبدأ بغسل يديه من الجنابة ... | عائشة | ٣٤٥٢ |
| كان يتعوذ بالله من عذاب القبر ... | سفيان الثوري | ١٠٨١ |
| كان يتعوذ في صلاته من المغرم | عائشة | ١٦٤٥ |
| كان يتعوذ من شر السآمة والحامة ... | ابن قتيبة | ١٩٠٠ |
| كان يتمثل بهذا البيت: كفى بالإسلام والشيب للمرء | | |
| ناهياً ... | الحسن البصري | ٣٣٥٨ |
| كان يتمثل بهذين البيتين: إذا أنت لم تزرع وأبصرت | | |
| حاصد ... أراد إذا أنت لم ... (ث) | الحسن بن صالح | ٤٧٩ |
| كان يتمثل بهذين البيتين: | | |
| تيقنّ فإنّ الرزق غادٍ ورائح ... (ث) | أبو عبد الله البرائي | ٢٩٣٨ |
| كان يثبت القدر في الجاهلية ... (ث) | لبيد بن ربيعة | ٣٤١٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان يحب أن يليه المهاجرون (ث) | أنس بن مالك | ١٨٧٥ |
| كان يحتجم ثلاثاً ثنتين (ث) | أنس بن مالك | ٢٤١٠ |
| كان يحلف ألا أحدّثكم ثم يُحدثُهم ويقول ... (ث) | عكرمة | ٢٣٤١ |
| كان يخرج إلى الأعراب يُفَقِهُهُم ويعطيهم ... (ث) | الزّهري | ٣٢٢ |
| كان يدعى الفاروق لأنه فرق بين الحق والباطل | الزهري | ١٩٥ |
| كان يرتدي رداءاً بألف ... (ث) | ابن عباس | ٥٣٦ |
| كان يُستحب أن لا تُقرأ الأحاديث التي عن... (ث) | قتادة | ٢٦٥٣ |
| كان يُستحبُّ أن يُؤَمّن على دعاء الرّاهب فإنّهم | | |
| يستجاب لهم فيكم ... (ث) | حسان بن عطية | ١٠٠٦ |
| كان يستفتح بسبحان ربي الأعلى الوهاب | سلمة | ٣٠٩٩ |
| كان يسجد حتّى أنّ العصافير لتقعنّ على | | |
| ظهره ... (ث) | عيسى بن عقبة | ٥٨٠ |
| كان يشربُ قائماً ... | أنس بن مالك | ٣١٧٠ |
| كان يصلي الليل أجمع فكان إذا غلبه النّوم في | | |
| الشتاء .... (ث) | بلال بن سعد | ٤٥٠ |
| كان يُصلي في موضع بول الحسن والحسين ... | عائشة | ٢٨٨٩ |
| كان يُصلي في نعليه ... | ابن عمر | ٣١٦٩ |
| كان يصلي كل يوم ألف سجدةٍ وكان آدم | علي بن عبد اللّه | |
| جسيماً .... (ث) | بن عباس | ٥٤٤ |
| كان يطحن الشعير بيده ويأكل ويغزو ولا يأخذ سهمه | | |
| ولا يأكل منه ... (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩١ |
| كان يعجبه الصلاة في الحيطان ... | معاذ بن جبل | ٢٨٥٥ |
| كان يفرغ على رأسه ثلاث حفن مجمع يديه | جابر | ٣٥٢٦ |
| كان يقال: إذا فَرِحَ القلب نديت العينان ... (ث) | سفيان الثوري | ٢٧٣٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان يقال: أربعة يسوّدن العبد، الأدب، ... (ث) | داود بن رشيد | ١٢٦٣ |
| كان يقال: أشعر النّاس الزرق العيون في أصول الفضاء، | | |
| يعني بني قيس بن ثعلبة ... (ث) | أبو عمرو بن العلاء | ٣١٠٧ |
| كان يقال العلماء إذا علموا عملوا، فإذا عملوا | | |
| شغلوا ... (ث) | ابن عائشة | ٣٥٣ |
| كان يقال: أنّ أفضل ما أُعطي العبد .... (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٦٦٩ |
| كان يقال: انتهزوا فُرَص القولِ فإنّ للقول ساعات | | |
| يضرّ ... (ث) | الأصمعي | ٢٢٠٢ |
| كان يقال: إنّه مالك من عمرك ما أطعت اللّه فيه (ث) | محمد بن عيسى البغدادي | ٣٤٤٣ |
| كان يقال بالمدينة: من أراد العلم والسخاء والجمال | | |
| فليأت دار ... (ث) | الواقدي عن عمّه | ١٣٠٦ |
| كان يقال: السؤدد الصبر على الذل | العتبي | ١٩٧٧، ٣٠٦٥ |
| كان يقال: شرُّ خِصال الملوك الجبن عن .... (ث) | داود بن رشيد | ١٩٧٣، ٣٠٦٢ |
| كان يقال: لصاحب رقعة في قميص الرجل فلينظر | | |
| بمَ يرقعه (ث) | الأصمعي عن أبيه | ٧٠٧ |
| كان يُقال: ظنُّ الرجل قطعةٌ من عقله ... (ث) | المدائني | ٥٩٩ |
| كان يقال: عقل الرّجل مدفون في لسانه ... (ث) | الزيادي | ٣٠٤٨ |
| كان يقال: عنوان صحيفة المسلم حسن خلقه ... (ث) | داود بن رشيد | ١٧٩١ |
| كان يقال: لا تواخينّ من مودّته لك على قدر | | |
| حاجته ... (ث) | محمد بن سلاّم | ٥٢٤ |
| كان يقال: لا يزال النّاس بخيرٍ ما تباينوا فإذا تساووا | | |
| فقد هلكوا (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢١٧٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان يقال: لأجر حاكمٍ عَدَلَ يوماً أفضل من رجل | | |
| يصلي ... (ث) | الحسن البصري | ١٥٩٨ |
| كان يقال: لأن تطلب الدّنيا بأقبح ما تطلبُ به | | |
| الدنيا ... (ث) | الفضيل بن عياض | ٣٣٩٨ |
| كان يقال: ما أحسن الإيمان يزينه العلم وأحسن العلم | | |
| يزينه العمل ... (ث) | حبيب بن حجر | ٧٩٨، ٣٣٢٢ |
| كان يقال: من أخطأ وجه الطّلب (ث) | محمد بن سلاّم | ٢٤٦٨ |
| كان يقال: من أراد عِزّاً بلا عشيرة وهيبة | | |
| وسلطان ... (ث) | سفيان الثوري | ١٣١٠ |
| كان يقال: من قلّم أظفاره يوم الجمعة أخرج اللّه تعالى | | |
| منه داءً وأدخل فيه شفاءً ... (ث) | حميد الحميري | ١٥٨ |
| كان يقال: من يستقبل وجوه الأراء (ث) | حمّاد بن أبي حنيفة | ٢٦٣٠ |
| كان يقال: يأتي على النّاس زمان لا يفهمون فيها | | |
| الكلام ... (ث) | المعتمر عن أبيه | ٤٩٣ |
| كان يقال: يأتي على النّاس زمانٌ نرضى فيه من العلم | | |
| بالعمل ... (ث) | عون بن عبد اللّه | ١٣٢٧ |
| كان يقصّ شاربه | ابن عباس | ٣٥٢١ |
| كان يقول: نُسَرُّ بما يبلى ونفرح بالمنى ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٦٠٩ |
| كان يَمُرُّ بالآية من ورده باللّيل فيسقط حتى | | |
| يعاد منها أيّاماً | عمر بن الخطاب | ٥٤٥ |
| كان ينزل بماء يقال له الشجري على ثلاث ليالٍ من | | |
| البصرة ويأتي يوم الجمعة .... (ث) | مطرف بن عبد اللّه | ٣٤٠٣ |
| كان ينهى عن ركض الفرس إلافي حق | عمر بن عبد العزيز | ٩٤٦ |
| كان يهوذ بن يعقوب عليه السلام صيّتاً فقال | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ليوسف عليه السلام ... (ث) | وهب بن منبه | ١٠٤٥ |
| كان يوتر بثلاث بـ ﴿سَبِّحَ﴾، و﴿قل يا أيها الكافرون﴾، | | |
| و﴿قل هو الله أحد﴾ ... | ابن عباس | ٩٥٢ |
| كان يوسف بن أسباط لا يرى أن يأمر السفلة .. (ث) | العباس بن مسلم | ٢٥٧٥ |
| كان يوسف بن أسباط في قرية من قرى أنطاكية | ابن خبيق | ٢٩٩٠ |
| كان يومئذٍ فقيراً إلى شقّ تمرة ـ تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿إني لما أنزلت إليّ من خيرٍ فقير﴾ ... (ث) | ابن عباس | ٢٨٤٤ |
| كانت إذا جالستنا لبست ثوباً رقيقاً (ث) | حماد بن زيد | ٤٩٩ |
| كانت امرأة من التابعين تقول في سجودها، | عتبة بن الوليد | ١٧٩، ١٦٤٣ |
| سبحانك .... (ث) | | ٣٣٧٤ |
| كانت امرأة من العابدات بالبصرة تصاب بالمصيبة | | |
| العظيمة .... (ث) | جعفر بن سليمان | ٦٩٥ |
| كانت تأكل مسامير رتجهم ـ والرتج الأبواب ـ (ث) | مجاهد | ٧٢٠ |
| كانت تعزية أهل الجاهلية: كل مصيبة ما عدا | | |
| النفس (ث) | شريح بن عبيد | ٢٤٢٣ |
| كانت حاضنتي من بني بكر بن سعد فانطلقت | عتبة بن عبد | ١٤٦ |
| كانت خيرة أم الحسن مولاة أم سلمة (ث) | علي بن زيد | ١١٩٣ |
| كانت الخيل وحوشاً لا تركب فأول من ركبها (ث) | ابن عباس | ٢٠٢٩ |
| كانت السماء لا تمطر والأرض لا تنبت (ث) | عطية العوفي | ٢١٥٨ |
| كانت السماء مخلوقة وحدها والأرض (ث) | أبو صالح | ٢١٥٩ |
| كانت سودة بنت عمارة تبكي علياً رضي الله | | |
| عنه (ث) | عمرو بن شمر | ١٠٧٩ |
| كانت غلة طلحة بن عبيد الله ألفاً وافياً | سفيان بن عيينة | ٤٨٥ |
| كانت الغنم والأسد والوحش ترعى في خلافة | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| عمر بن عبد العزيز | موسى بن أعين | ٢٠٤ |
| كانت قيمة ما ترك الزبير إحدى وخمسين أو (ث) | عبد الله بن الزبير | ٢٢٠٠ت |
| كانت لحيته عظيمة فرأيت الدّخان يخرج من خلل | | |
| لحيته ... (ث) | أسلم | ٢١٦ |
| كأنكم تأكلون في رهن | إبراهيم بن أدهم | ٣٦٠ت |
| كتب إبراهيم بن أدهم رحمه اللّه عبد العزيز بن أبي | | |
| رواد أما بعد: يا أخي | حذيفة المرعشي | ٢٧٤٩ |
| كتب أبزويز إلى ابنه شيرويه: إنّ كلمة منك تسفك | | |
| دماً، وأخرى منك تحقن دماً (ث) | ابن قتيبة | ٢١٤٣ |
| كتب إلى أهل الكوفة والبصرة ومصر والشام | عمر بن الخطاب | ٢٣٩٠ |
| كتب أبو الدرداء إلى سلمان أن هَلُم إلى الأرض | | |
| المقدسة ... (ث) | عبد اللّه بن هبيرة | ١٢٣٨ |
| كتب إلى أبي موسى الأشعري أنّه بلغني عنك تأذن | | |
| للنّاس جَمّاً غفيراً .... (ث) | عمر بن الخطاب | ٤٤٢ |
| كتب إلى أبي موسى الأشعري أنّه لم يزل للنّاس وجوه | | |
| يرفعون حوائج الناس إليهم ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٤٣١ |
| كتب عمر بن الخطاب إلى أبي موسى الأشعري رضي | | |
| اللّه عنهما أما بعد فإن للناس نفرة عن سلطانهم | عمر بن الخطاب | ١١٩٨ |
| كتب إلى الحسن البصري رحمهما اللّه تعالى: | | |
| عِظني وأوجز ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٧٩٥ |
| كتب إلى المهلّب يستعجله في الأزارقة ... (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ٥٩٤، ٢٣٤٣ |
| كتب إلى بعض عُمّاله: أمّا بعد فإذا دعتك قدرتك | | |
| على النّاس ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٥٨٩ |
| كتب إلى بعض عماله: حسبي بقاء الله من | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كان ميتٍ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٧٩٠ |
| كتب إلى سلمان: (من أبي الدرداء إلى سلمان أما بعد): | | |
| يا أخي إني أُنبئت أنّك اشتريت خادماً ... (ث) | أبو الدرداء | ٤٨٢، ٢٤٠٨ |
| كتب إلى عمر بن الخطاب رضي اللّه عنهما: وهو | | |
| على الكوفة يستأذنه في بناء منزلٍ يسكنه ... (ث) | سفيان بن عيينة | ٥٤٦ |
| كتب إلى عمر بن عبد العزيز استعن بأهل الخير يكن | | |
| عملك خيرٌ كلّه ولا تستعن بأهل الشرّ ... (ث) | طاووس | ٤٦٦ |
| كتب إلى عمر بن عبد العزيز: فيما أمر اللّه به شغلاً | | |
| عمّا نهى عنه ... (ث) | الحسن البصري | ٢٧٩٥ |
| كتب إلى عمرو بن العاص رحمة اللّه عليه وهو على مصر: | | |
| كُنْ لرعيّتك كما تحب أن يكون لك أميرك ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٤٦ |
| كتب إلى عمرو بن العاص رحمة اللّه عليه وهو على مصر: | | |
| كُنْ لرعيّتك كما تحب أن يكون لك أميرك ... (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٣٨٦ |
| كتب الحجاج بن يوسف إلى الحكم بن أيوب: | | |
| أخطب لي على عبد الملك بن الحجاج | الأصمعي عن أبيه | ١٩٦٦ |
| كتب الحسن إلى الحسين رضي اللّه عنهما يعيب | | |
| عليه إعطاء ... (ث) | ابن عون | ١١٧١ |
| كتب اللّه تعالى على نفسٍ حظّاً من الزّنا ... (ث) | أبو هريرة | ٥٧٠ |
| كتب إليه: حسبي حياةُ الله من كل ميت ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٢٠٢ |
| كتب إليه: ﴿وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث﴾ | | |
| (ث) | الوليد بن عبد الملك | ٣١٠٥ |
| كتب إليّ الفضلُ بن عيسى، أمّا بعد فإنّ الدّار التي | | |
| أصبحنا فيها .... (ث) | عبد اللّه بن المغيرة | ١٠٥٥ |
| كتب إلى ملك الزنخ فكان في آخر كتابه (ث) | محمد بن منصور | ٢٥٠٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كتب إليّ أمير المؤمنين يعزيني عن محمد بن يوسف | أبو محمد بن عمرو | |
| ويذكر رضاه عنه ويأمرني بالصّبر ... (ث) | الثقفي | ٣٠٨٨ |
| كتب بعض إخواننا من الكتاب إلى عامر أو كان | | |
| سعى به لست .... (ث) | المعلا بن أيوب | ١١٢٧ |
| كتب بعض الحكماء إلى ملك من الملوك، أيّها الملك | | |
| إنّ أحق النّاس ... (ث) | عبد الرحمن القرشي | ٢٥٥١ |
| كتب بعض الزّهاد إلى أخ له: كثر تعجبي من | | |
| القلب ... (ث) | السكن بن سليمان | ٢٤٠٣ |
| كتب بعض الزّهاد إلى أخ له: كَبُرَ تعجبي من قلبٍ | | |
| يألف الذنب .... (ث) | أبو بكر بن عياش | ٩٠٩ |
| كتب بعض العُبّاد إلى عمر بن عبد العزيز أمّا بعد: | | |
| فإنّ الدنيا ليست دار الإقامة ... | معمر | ٢٠٥٥ |
| كتب بعض العلماء إلى سلطان: أُعيذك بالله أن تكون | | |
| لاهياً عن الشكر محجوباً ... (ث) | ابن قتيبة | ٢٠٥٢ |
| كتب بعضهم إلى أمير: من أخطأ في ظاهرِ | | |
| دنياه ... (ث) | محمد بن منصور | ٢٤٥٦ |
| كتب حذيفة المرعشي إلى يوسف بن أسباط: أما بعد | | |
| فإني أوصيك ... | ابن خبيق | ١٣٨٧ |
| كتب حكيمٌ إلى حكيم: أما بعد فقد أصبحنا وبنا | | |
| من نعم الله ما لا نحصيه ولا ندري .... (ث) | هارون بن معروف | ٣٤٠٩ |
| كتب رجلٌ إلى أخ له: يا أخي إنك قد أُوتيت عِلماً فلا | | |
| تُطفئنّ نور علمك بظلمة الذنوب .... (ث) | ابن السماك | ٣١٢ |
| كتب رجلٌ إلى السلطان: مِثلك أوجب حقّاً لا | | |
| يجب عليه .... (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٣٢١٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كتب رجلٌ إلى بعض الزّهاد: أنا ـ أكرمك اللّه ـ رجلٌ من إخوانك قد أوبقتني ذنوبي وكثرت عيوبي ... (ث) | محمد بن الحسين | ٢٨٢٢ |
| كتب رجل إلى صديق له: قد أفردتك برجائي بعد الله (ث) | ابن قتيبة | ١/٣٧٠١ |
| كتب رجلٌ إلى صديقٍ له: قد عرضت لي قبلك حاجة ... (ث) | ابن السِّكيت | ١٠٦٢ |
| كتب رجلٌ إلى صديقٍ له: وجدتُ المودة منقطعة ما كانت الحشمة متبسطة .... (ث) | عبد اللّه بن مسلم ابن قتيبة | ٣٢٩٥ |
| كتب رجلٌ إلى صديقٍ له يحني عليه: عبت عليَّ ولا ذنب لي ... (ث) | أبو سعيد المدني | ٣٣٠٣ |
| كتب عبد الحميد بن عبد الرحمن بن عبد العزيز أما بعد: يا أمير المؤمنين | الأصمعي | ٢٦٨٨ |
| كتب يعقوب بن داود إلى بعض العُباد للقدوم عليه فأتى محمد بن نضر الحارثي .... (ث) | إبراهيم الحربي | ١٣١٥ |
| كِتْمان السِّرّ والتباعد من الشرّ (ث) | الأحنف بن قيس | ١٩٦٩، ٣٠٩٥ |
| كذَّبتك الظهائر (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٣٢ |
| كذبتك الهواجر | المستورد الفهري | ٦٣٢ت |
| كذب من ادعى مودتي فإذا جنّ الليل نام عني | قول الله تعالى | ١٣٢ |
| كَذَبَ، لا يكون المعروف معروفاً حتّى يصرف في أهله وفي غير أهله ... (ث) | أبو الدّيك | ٩٨٠ |
| كذبوا ليس هؤلاء بموّحدين، هؤلاء زنادقة من زعم أن القرآن مخلوق (ث) | عبد اللّه بن إدريس الأودي | ٢٦٦٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كَرِه الترياق إذا كان فيه الحمّة ... (ث) | محمد بن سيرين | ٧١٧ |
| كرم المرء دينه ومروّته عقله وحسبه خُلُقُهُ.... | أبو هريرة | ٢٦٨٤ |
| كظم ما يغيظك واحتمال ما ينوبك | الحجّاج بن الفرية | ١٧٠٩ |
| كفّى بالإسلام والشّيب للمرء ... | الحسن البصري | ١٣٧٣ |
| كفى بالموت واعظاً، وكفى باليقين غِناً .... (ث) | ابن عائشة | ١٩٢٥ |
| كفى جُرماً أن تُطْعَن الخيلُ .... (ث) | أبو محجن | ١٠١٤ |
| كفى جهلاً أن يمدح المادح بخلاف ما يعرف المدوح من نفسه (ث) | بعض حكماء العرب | ٧/٢٤٣٥ |
| كفاك من الغفل ما أوضح ... (ث) | الحسن البصري | ١٦٧١ |
| كفاك من علم الدين أن تعرف ما لا يسع .... (ث) | محمد بن علي | ١٧٢٣ |
| كفاك ناصِراً أن ترى عدُّوك يعصي اللّه عز وجل ... (ث) | محمد بن علي بن الحسين | ١٤١٠ |
| كفّارة الاغتياب أن تستغفر لمن اغتبته ... | أنس بت مالك | ٣٥٤٢ |
| كفّارة الذّنب النّدامةِ ... | ابن عباس | ١١١٧ |
| كفرهم بعيسى وكفرهم بمحمد صلى اللّه عليه وسلم (ث) | عِكرمة | ٢٦٩٨ |
| كَفِّروا عني كفارة يمين واحدة فإنّي أضمن أنّي قد حنثت في دهري في يمينٍ واحدة ... (ث) | أحمد بن حنبل | ٢٥٣ |
| كل إنسان يعطي ما عنده | عيسى عليه السلام | ١٤٩٤ |
| كُلُّ النّاس استطيع أن أرضيه إلاّ حاسد نعمة لا يرضيه إلاّ زوالها ... (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٦٥٧ |
| كلام الرّجل فيما لا يعنيه مقت من اللّه عزّ وجلّ .... (ث) | معروف الكرخي | ٢٥٦ |
| كلا والله لو كان ذلك القليل لله ... (تفسير قوله | | |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تعالى: ﴿ولا يذكرون الله إلا قليلاً﴾ (ث) | الحسن البصري | ٢٦٩٥ |
| كلاّ وَرَبِّ الكعبة لا يتأثّمُ بها أبو بكر في حياته وأتحمّلُها | | |
| بعد موته (ث) | عمر بن الخطاب | ١٦٤ |
| كل إناء يفرغ فيه يضيق ويمتليء إلا القلب | بعض حكماء العرب | ١٦٩٦ |
| كل خطبةٍ ليس فيها شهادة فهي كاليد ... | أبو هريرة | ١٠٦٨ |
| كلُّ دَينٍ مأخوذ من حسنات صاحِبِه إلاّ من أدان | | |
| في ثلاث .... (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٦١١ |
| كل ذات صدار خالة | همام بن مرة الشيباني | ١٠٦٦ت |
| كل شراب أسكر فهو حرام | عائشة | ١٦٣٣ت |
| كُل شيء وكل إنسانٍ في طلب شيءٍ وهذا ... (ث) | هرمز بن كسرى | ١٧٥١ |
| كل عدو أحب أن يعود لي صديقاً إلا من كان سبب | | |
| عدواته النعمة | بعض الحكماء | ٢١٨٧ |
| كلُّ عزٍّ لم يؤيد بعلمٍ فإلى ذُلٍّ ... (ث) | الأحنف بن قيس | ٢٣٥٥ |
| كُلكم أفضل منه | مسلم بن يسار | ٧٥١ |
| كُلّما أبلى الثّرى وجههم (ث) | عمران بن موسى الجزري | ٧٤٤ |
| كُلّما أحدثوا خطيئة أحدّثنا لهم نعمة وأنسيناهم | | |
| الاستغفار (ث) | ابن عباس | ٣٤٠٨ |
| كَلَّم النّاس عبد الرحمن بن عوف أن يُكلّم عمر بن | | |
| الخطاب رضي اللّه عنه في ... (ث) | الأصمعي | ١١٩٩ |
| كُلُّ مُسكرٍ حرام ... | عمر بن الخطاب | ١٦٣٣ |
| كُلُّ مسكرٍ حرام أوله وآخره | عائشة | ١١٠٣ |
| كل مسكر خمر وكل مسكر حرام | ابن عمر | ١٦٣٣ت |
| كُلُّ مطيع مستأنس وكلُّ عاصٍ مستوحش ... (ث) | زهير الباني | ٢٧٦٥ |
| كُلُّ معروف صدقة | جابر بن عبد الله | ٣١٧٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كُلُّ معروفٍ صدقة | حُذيفة | ٣١٧٩ |
| كُلُّ نخلةٍ على وجه الأرض فمنقولة من الحجاز | | |
| نقلها النماردة إلى ... (ث) | محمد بن إسحاق | ١٦١١ |
| كُلُّ نِعمَةٍ لا تُقرِّب من الله عزّ وجلّ .... (ث) | أبو حازم | ١١٦٣ |
| كُلُّ نَعيمٍ زائل إلا نعيم أهل الجنّة وكل غَمٍ .... (ث) | الحسن البصري | ١٥٤٤ |
| كلام الرجل فيما لا يعنيه، مقت من الله عز وجل(ث) | معروف الكرخي | ٢٥٦ |
| كلمات الفرج: لا إله إلا اللّه الحليم الكريم... | ابن عباس | ٤٣٥، ٢٧٧٠ |
| كلمات لو رحلتم فيهنّ المطي لأنضيتموهنّ قبل | | |
| أن تدركوا مثلهنّ ... | علي بن أبي طالب | ٣٠٩ |
| كُلّ ما شئت والبس ما شئت إذا أخطأتك ... (ث) | ابن عائشة | ١٦٠١ |
| كُل ما شئت ولا تشرب الماء فإنّك إذا لم تشرب | | |
| الماء لم يجئك النوم (ث) | سفيان الثوري | ٤٠١ |
| كل من كليتيه فإنها تزيد في الدماغ | سليمان بن عبد الملك | ٣٢٦٠ |
| كُلُّ واحدٍ منهما عمُّ الآخر لأمّه (ث) | يحيى بن أكثم | ٢٤٠٩ |
| كلوا فوالله ما اضطرب الغاربان (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٤٦٢ |
| كلوا كأنكم تأكلون في رهن (احتطب حطباً كثيراً | | |
| ثم جاء به ... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٦٠ |
| كلوا ما نبذ عنه، ودعوا ما طغى | جابر | ٣٤٩٨ |
| كُل يا ابن شهاب | عمر بن عبد العزيز | ٥٠٤ |
| كما أنت حتى أنوي ... أمض | نافع بن جبير بن مطعم | ٣٥٣٢ |
| كما تُحبُّ (سئل عن حاله) ... (ث) | عبد الرحمن بن مهدي | ٤٧٨ |
| كم بلغكم عن الدنيا .... فكم بلغكم مقدار يوم | | |
| القيامة .... (ث) | كرز | ٩١٧ |
| كم ثمن هذين البيتين؟ .... أرخصت يا غلام، اعطه | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أربعة آلاف درهم ... (ث) | عبد الله بن طاهر | ٣٢١٧ |
| كم عندك؟ ... فيسرُّك أن يكون عندك أربعة آلاف؟ ... فأنت فقير لا أقبلها .... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٥٧٦ |
| كم كان سن علي رضي الله عنه حين قتل؟ | إسحاق بن عبد الله | ٢٦٤ |
| كم لكفّك من أصبُع ... عجلت بالجواب ... (ث) | إياس بن معاوية | ١٨٤٧ |
| كم من عامرٍ موثقٍ عما قليلٍ يخرب وكم من مقيمٍ مغتبط ... (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢١٩٣، ٢٩٨٩ |
| كم من كان يحدث بهذا الحديث أكل التراب لسانه | هشام الدستوائي | ٣٥٦ |
| كم يعالج جهد البلاء من لم يعالج الأيتام | بعض أهل العلم | ١٣٤٩، ٢/٣٣٥٢ |
| كن ذنباً ولا تكن رأساً | إبراهيم بن أدهم | ٩٥٨، ٢٢٤٢ |
| كن كالنخلة إذا أكلت طيباً وإذا وضعت | راهب | ٢١٢ |
| كن لربك كالحمام الألوف لأهله | علي بن أبي طالب | ١٧٥٠ |
| كن لرعيتك كما تحب أن يكون لك أميرك | عمر بن الخطاب | ٥٤٦، ٣٣٨٦، ٣٥٨٦ |
| كنا إذا جلسنا إلى الثوري، كأن النار قد احاطت بنا لما نرى | موسى بن مسعود | ٨١٦ |
| كنا على باب أبي دلف خلق كثير من الشعراء يعدنا | العتابي | ٨٣٩ |
| كنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم نستمتع بالقبضة من الطعام | جابر بن عبد الله | ١١٦١ت |
| كنّا عند بعض المحدثين بالبصرة فحدّثنا بحديث النبي صلى اللّه عليه وسلم ... | أحمد بن شعيب | ٢١٥٤ |
| كنّا عند سفيان بن عيينة فحدثنا بحديث زمزم | الحميدي | ٥٠٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كنّا عند سفيان الثوري فأتاه رجلٌ يقال له، أبو | | |
| عبد اللّه ... (ث) | يعلى بن عبيد | ١١٧٤ |
| كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم فقال له العباس: | | |
| إني أريد أن أمدحك | خزيم بن أوس | ١٢١٨ |
| كنّا عند يحيى بن معين فجاء رجل مستعجل | جعفر بن أبي عثمان | ٥١٠ |
| كنا في طريق مكة فجاء أعرابي في يوم صائف | | |
| شديد الحر | شبيب | ٢٧٠ |
| كن وسطاً وامش جانباً | عيسى عليه السلام | ١٠٨٦ |
| كن إلى الاستماع أسرع منك إلى (ث) | صالح المري | ١٧١٥ |
| كنا عند حماد بن زيد فحدثنا بأحاديث كثيرة (ث) | سليمان بن حرب | (٢٢) ملحق |
| كنّا مع إبراهيم بن أدهم في بلاد الروم | خلف بن تميم | ٣٥٩ |
| كنّا مع الأسود بن شيبان بباب الأبواب، | | |
| فأصاب الناس ... (ث) | محمد بن المهاجر | ٢٢٧٠ |
| كنا مع النبي صلى اللّه عليه وسلم في بعض أسفاره | | |
| فنام عن الصبح | عمران بن حصين | ٢٩٣٢ |
| كنا ملوك هذا المصر قبلك يجبى إلينا خراجه | حرقة بنت النعمان | ٢٢٢٥ |
| كنا نستمتع بالقبضة من التمر والدقيق | جَابر بن عبد الله | ١١٦١ت |
| كنا ونحن فتيان نريد أن نخرج لحاجة فنقول | أبو الزناد | ٣٣٨٣ |
| كنت آتي ابن عباس وقريش حوله فيأخذ بيدي | | |
| فيجلسني معه ... (ث) | أبو العالية | ٣٠٣ |
| كنت إذا أحسست من قلبي قسوةً أتيت محمد بن | | |
| واسع فنظرت إليه نظرة .... (ث) | جعفر | ١٧٨ |
| كنت إذا رأيت مجاهداً ظننته خربندج | الأعمش | ٣٠١٥/م |
| كنت أسمع أن البر شيء هين التحفة والكلام اللين(ث) | عبد الرحمن بن قاسم | ١٤٩٥ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كنت أطوف بالبيت ليلاً، فإذا أنا بجارية وهي تقول: | | |
| اللّهم اعصمني ... (ث) | ثابت البناني | ٨٥٤ |
| كنت أغتسل أنا ورسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم | | |
| من تورٍ ... (ث) | عائشة | ٣٤٨٤ |
| كنت أقعد إلى سفيان الثوري فيحدث فأقول ما | | |
| بقي ... (ث) | عبد الله بن المبارك | ٢٧٨٠ |
| كنت إلى منكب أبي فكان أبي إلى منكب | علي بن عبد اللّه بن | |
| جدّي ... (ث) | عباس بن المطلب | ٣٤١٦ |
| كنت أماشي بعض عباد أهل البصرة فقال لي: | | |
| من أين ... (ث) | محمد بن نجيح | ٢٢٦٦ |
| كنت أؤذن للنبي صلى الله عيله وسلم فكنت أقول | | |
| في آذان الفجر | أبو محذورة | ٩٤٧ت |
| كنت بالشام فسمعت رجلاً فقيل له: | | |
| قل لا إله إلا اللّه عند الموت .... (ث) | ربيع بن خيثم البصري | ٣٨٣ |
| كنت بمكة مع الثوري رحمه الله في المسجد الحرام | | |
| فقال: ويحك ... (ث) | عطاء الخفاف | ١٠٨٣ |
| كنت بين يدي اللّه عزّ وجلّ فلم أكن أصرف وجهي | | |
| عن اللّه عز وجل ... (ث) | الربيع بن خثيم | ٥٧٥ |
| كنت جالساً في مسجد الرسول عليه السلام ضحوةً | | |
| وحدي قال: إذ أتاني ... (ث) | عروة بن الزّبير | ١٦٦٩ |
| كنت جالساً مع هارون الرّشيد فأصعد إليه الأسقف | | |
| وكان طبيباً عالماً ... (ث) | الأصمعي | ٣١٣٠ |
| كنت رديف أبي فلقيه جرير على بغلٍ فحيّاه أبي | | |
| وسلم ... (ث) | شيبة بن عقال | ١٠٨٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كنت عصيت اللّه في هذا الموضع ... (ث) | عتبة الغلام | ١٦١٨ |
| كنت عند عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه وأتاه رجلٌ يتوكأ على ... (ث) | عثمان بن أبي العاص | ١٢٦٤ |
| كنت عند هارون الرشيد وعنده أبو يوسف القاضي فذكر أبو يوسف حديث ابن عمر أنّه سابق بين الخيل .... (ث) | الأصمعي | ٣٠٤ |
| كنت في بادية بني حنيفة فحدّثني رجلٌ منهم أن حكيماً من حكمائهم ... (ث) | مؤرج | ٢٧١٨ |
| كنت في الجيش فجاعوا، ... نحرت | قيس بن سعد | ١٤٢١ت |
| كنت في بلاد الروم إذ سمعت صوتاً من الهواء | بعض الحكماء | ١٥٤٥ |
| كنت في حلقةٍ مع مسعر، فجعل مسعر ينظر، فجعل يلتفت إلى حلقةٍ أخرى ... (ث) | سفيان الثوري | ٣٢١٣ |
| كنت في عسكر مروان أيامَ زَحَفَ إلى شيبان الخارجي فلما التقى الزحفان ... (ث) | أبو دلامة | ١٠١١ |
| كنت كذلك ما شئت أن تكون لا يعلم كيف أنت إلا أنت ثم خلقت الخلق ... (ث) | خالد بن عبد القسري | ٩٧٤ |
| كنت متى شئت أن أجد مَن يعد وينجز وجدته ... (ث) | عمرو بن الحارث | ١١٦٠ |
| كنت مع إبراهيم بن أدهم بصور ...، فصلّى على جنازة ... (ث) | بقيّة | ١٢٤٠ |
| كنت مع قتيبة بن مسلم بخراسان على مائدته فقال لي | الشعبي | ٣٦٥ت، ١٩٨٢ت |
| كنت مئثاثاً فقلت ذلك لبعض إخواني فقال لي: إذا جامعت ... (ث) | أبو الزناد | ١٩٩٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| كنت واقفاً على رأس المأمون أمير المؤمنين وقد قعد | | |
| إلى المظالم ... (ث) | الحسن بن قحطبة | ٢٠٢٨ |
| كنّا أجنّةً في بطون أُمهاتنا فسقط منّا من سقط، | | |
| وكنّا فيمن بقي ... (ث) | مكحول | ٩٩٠ |
| كنّا جلوساً عند يحيى البكّاء، فقرأ عليه القاريء | | ١٢٣٠، |
| ﴿ولو ترى ...﴾ (ث) | حمّاد بن زيد | ٢٢٦٨ |
| كنّا عند أبي بكرٍ الصديق رضي الله عنه فأتاه | | |
| غلامه بطعام ... (ث) | زيد بن أرقم | ١٣٩١ |
| كُنّا عند سفيان الثوري فأتاه رجلٌ فقال: | | |
| يا عبد اللّه رأيت في المنام ... (ث) | محمد بن عُبيد | ١١٨٦ |
| كُنّا في الجاهلية نعبد حجراً فسمعنا منادياً ينادي أنّ | | |
| ربكم قد هلك فالتمسوا ربّاً غيره .... (ث) | أبو عثمان النهدي | ١٠٠٩ |
| كنّا في طريق مكة فجاء أعرابي في يومٍ صائف شديد | | |
| الحر ومعه جارية له سوداء ... (ث) | ثبيب | ٢٧٠ |
| كنّا مع ابن أبي أوفى في جنازةٍ فقالت له امرأة ..(ث) | بلال بن المنذر الحنفي | ١٢٣٩ |
| كنا مع طلحة ونحن محرمون فأهدى لنا | عبد الرحمن بن عثمان | ٣٥٢٧ت |
| كنّا مع النبي صلى اللّه عليه وسلم في بعض أسفاره فنام | | |
| عن الصبح حتّى طلعت الشمس فأمر المؤذن فأذّن | عمران بن حصين | ٢٩٣٢ |
| كنّا نعد الأواب الحفيظ الذي إذا قام من مجلسه | | |
| قال ... (ث) | عبيد بن عمير | ٢٣٠٣ |
| كنّا نغزوا فكان عطاء الخرساني يحي اللّيل كُلّه ... | | |
| قوموا فتوضؤا وصلّوا فإنّ قيام ... (ث) | عبد الرحمن بن يزيد | ١٥٦٩ |
| كُنّا يُسرق نخلنا فعرفنا آثارهم فركبوا .... (ث) | عوسجة بن مغيب القائف | ٢٥٥٨ |
| كُنّيتُ أبا عثمان وأبا ليلى، وكان أبو عثمان عفّان | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خرج في تجارة إلى الشام فهلك هناك .... (ث) | عثمان بن عفّان | ٢٣٨ |
| كونوا حلماً كالحيات يلهاً كالحمام | عيسى عليه السلام | ٢٠٨٤ |
| كيف أصبحت يا أبا محمد، هذا صوت من لا عهد لك به مذ كنا بخير ما رأيت من يتقرب إليه بالهجران ... (ث) | رقبةُ بن مصقلة | ٢٥٣٢ |
| كيف أكون مسكيناً ومولاي له ما في السموات وما في ... (ث) | أبو حازم | ٢٧٤٣ |
| كيف أنتم إذا مرج الدّين وظهرت الرّغبة واختلفت الإخوان ... | ميمونة | ٣٣٦٢ |
| كيف تجدك؟ ... لأن تكون في ميزاني أحبُّ إليَّ من أن أكون في ميزانك (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٨١ |
| كيف تقولين هذا فواللّه ما فيَّ عمودُ الجمال ولا رداؤه ولا برنسه ... (ث) | خالد بن صفوان | ٣١٢٦ |
| كيف رأيت كلامي ... أنا أكرر وأردد حتى يفهم من لا يفهم .... | ابن السّماك | ١٤٢٠ |
| كيف رأيت ما صنعت بعدوّ اللّه؟ (قاله لأسماء بنت أبي بكر) ... (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ٣٣١٦ |
| كيف لا يُسرع إليَّ الشيب ولا أعدم رجلاً من العرب، فأيّما ... (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٢٠٢٢، ٢٢٢٦ |
| كيف وصلت إليَّ؟ ... والله لا تخرج إلا وهي معك .... (ث) | يزيد بن المهلّب | ١٦٠٦ |
| كيف يسأم ذو داءٍ يرجو أن يكون له من آية شفاء ...(ث) | عُفَيرة العابدة | ٧٣٢ |
| كيف يُصنع إذا مات نصيف الناس حتى يكون | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| البيت .... (ث) | أبو ذر | ٢٣١٦ |
| الكبائر أربعة، وأكبر الكبائر الإياس من روح اللّه | أبو إسحاق إبراهيم | |
| عزَّ وَجَلَّ ... (ث) | بن أدهم | ١٧٦ |
| الكتاب هو الفرقان سُمِّي فرقاناً لأنّه ... (تفسير قوله تعالى: | | ١٣٣٦، |
| ﴿وإذا آتينا موسى الكتاب والفرقان﴾) .... (ث) | مجاهد | ٣٣٥٥ |
| الكرسي تحت العرش | مالك بن دينار | ٢١ت |
| الكريم لا تحكمه التجارب ... (ث) | ابن شهاب | ١٥٩٥ |
| الكريم يلين إذا استعطف، واللئيم يقسو إذاألطف(ث) | علي بن أبي طالب | ١٦٥٨ |
| الكفاية والانتقال من ظل إلى ظل ومحادثة الإخوان | أعرابي | ١١/٢٤٣٥ |
| الكلام على أربعة وجوه فمنه كلامٌ يرجوا | | |
| منفعته ... (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٣٦٦ |
| الكمال في ثلاث، الفقه في الدّين (ث) | محمد بن الحنفية | ١٩٧٠، |
| | | ٢/٣٠٧٩ |
| لأن أبيت نائماً وأصبح نادماً أحبُّ إليَّ من أن (ث) | مُطرِّف بن عبد اللّه | ٢١٦١، |
| | | ٢٧١٤ |
| لأن أغدوا فيما غدوتُ فيه كُلَّ يوم أحبّ إليَّ من (ث) | معاوية بن قرّة | ٢٥٨٧ |
| لأن أقضي حاجة لأخٍ أحبُّ إليّ من أن أعتكف | | |
| سنة (ث) | الحسن البصري | ٧١٤ |
| لأن أموت عطشاً أحبّ إليَّ من أن أكون مخلافاً | عوف بن النعمان | |
| للوعد ... (ث) | السيباني | ١٨٧٢ |
| لأن تكون في ميزاني أحب إليَّ من أن يكون ما أحب | عمر بن عبد العزيز | ٣٨١ |
| لأن يترك الرّجل درهماً حراماً خيرٌ له من أن يتصدق | | |
| بمائة ألف درهم (ث) | مالك بن دينار | ١٩٤١ |
| لأن يُطيعني سفهاء قومي أحبُّ إليَّ من أن يطيعني | | ١٣٧٠، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| حكمائهم (ث) | المهلب | ٢٩٩٥م |
| لأنّك أخّرْتَ مالك ولو قَدَمْتَه لسرَّك أن (ث) | الحسن البصري | ١٥٢٢، ٢٤٠٢ |
| لأنّك حمار في مثال إنسان (ث) | خالد بن صفوان | ١٧٣٨ |
| لأنك سميتني بغير اسمي، اسمي الكلب العقور | راهب | ٤٣٤ |
| لأنّك قصَّرت في الطعام (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٨٧٦ |
| لأنّكم عمّرتم الدنيا وخرَّبتم الآخرة، فإنكم تكرهون ... (ث) | أبو حازم | ٢٧١، ٣٤٥٦ |
| لأنّه أشبه شيء بلباس أهل المصائب (ث) | ثوبان الرّاهب | ٧٣٣ |
| لأنّه دخل المسجد مع أبيه فَصَلَّى فأساء صلاته فحصبته ... (ث) | سعيد بن المسيّب | ٢٥٤٢ |
| لأنّه وَطِيء مضجعي وأكْرَمَ مجلسي فحقَّ عليّ له (ث) | ذو الرُّمّة | ٢٧٢٠ |
| لباب البرِّ بلعاب النحل بخالص السمن (ث) | الحسن البصري | ١٧٣٧ |
| لبيكما لبيكما ها أنذا لديكما | أميّة بن أبي الصلت | ٦٢٦ |
| لتأخذوا في أبراز الجنة (ث) | حماد بن زيد | (٢٢) ملحق |
| لتحبّنّ إليكم الدنيا حتّى تتعبَّدون لها (ث) | كعب | ١١٤٩ |
| لحق على العاقل أن يدوم ذكره لما بعد هذه الدار | بعض العباد | ١٧٢٧ |
| لَزِمَ بعض الحكماء باب كسرى في حاجةٍ له دهراً فلم يصل إليه (ث) | أبو الأشهب | ٣٣٠٨ |
| لزمْتُ الخليل بن أحمد عشرين سنة فكان ينشدني في كُلِّ يوم بيتين (ث) | النضر بن شُمَيْل | ٢٣١ |
| لسان الطفل من وراء قلبه فإذا أراد الكلام تفكّر (ث) | الحسن البصري | ١٥٠٢ |
| لسان العاقل من وراء قلبه، فإذا أراد أن الكلام تذكّر (ث) | الحسن البصري | ٣٠٤٩، ٣١١٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لسان المرء ترجمان عقله | عدي بن حاتم | ١٧١٩ |
| لسان المرء قطعة من عقله | عمرو بن العاص | ٥٩٩ت |
| لست أخاف عليك أن تخاف، ولكن أخاف عليك أن لا تخاف | عبد بني مخزوم وهو زياد ابن أبي زياد | ١٥٠٣ |
| لستُ بخير الناس ولا أنت بشرٌ الناس .... يا أبا فراس ما أعددت لهذا المضجع (ث) | الحسن البصري | ١٦٨٩ |
| لستُ بخيرهم ولست بشرٌهم ولكن (ث) | الحسن البصري | ١٨٧٤ |
| لستُ ترى أحداً تكبر في الإمارة إلاّ وهو يعلم (ث) | يحيى بن خالد | ٢١٤٤ |
| للسفر مروءة وللحضر مروءة، فأمّا مروءة السفر فبذلُ الزاد وقلّة الخلاف على أصحابك (ث) | ربيعة بن أبي عبد الرحمن | ٣٢١ |
| لضربة بسيفٍ أهون عليٌّ من كلمة في مَذَلَّةٍ (ث) | ابن الزبير | ١٩١٢، ٢١٨٢ |
| لعلك أن ترى عبد بني فلان فتندم من ألاّ يكون (ث) | عقبة بن عامر | ٢٨٨٣ |
| لعلك ترى أنّك إذا قضيتَ حاجة (ث) | الفضل بن العبّاس | ٢٦٤١ |
| لعلك لا تفعل من وَعَدَ فقد أوجب (ث) | مُطرِّف بن عبد اللّه | ١٩٣٤ |
| لعمرك ما قال الفتى بذخيرةٍ (ث) | ابن الأعرابي | ٣٢٢٥ |
| لعنة اللّه عليه ما أدري ما هذا، ما له إلاّ ابن عبّاس(ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٨٣٧ |
| لقد أدركت من كنت أستحيي أن أتكلّمَ عنده (ث) | ميمون بن مهران | ٢٠٣٩ |
| لقد أطفأ من نور اللّه ما أصبح على (حكاه لما قتل الحجاجُ سعيد بن جُبير) (ث) | الحسن البصري | ٢٣٢٠ |
| لقد اندقّ في يدي يوم مؤتة تسعةُ أسياف (ث) | خالد بن الوليد | ٢٢٥٣ |
| لقد أهدفت لي يوم بدر فصرفت عنك ولم أقتلك | عبد الرحمن بن أبي بكر الصديق | ١٠٧٦ |
| (قاله لأبيه أبي بكر الصديق) (ث) | | |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لقد بلغني إن اللّه تبارك وتعالى يأمر الملك من الملائكة بأمر | سفيان الثوري | ١٢٧١ |
| لقد تزوّجْتُ فاطمة بنت محمد صلى الله عليه وسلم | | ١٣٦١، |
| وما لي فراش غير جلد كبش (ث) | علي بن أبي طالب | ٣٣٦٤ |
| لقد تكلّم اليوم رجل عند أمير المؤمنين ما سمعتُ كلاماً (ث) | الزهري | ٢٤٣٦ |
| لقد جُعْتُ حتى أكلتُ النّوى المحرّق (حكاه عن أعرابي) (ث) | الأصمعي | ١٣٨٦ |
| لقد حملت خبيصة في خام فقصدت إلى دار (ث) | يونس بن عُبَيْد | ٢٣١٠ |
| لقد دعوتني بدعاء لو كان ابناك ميتين لنشرتهما لك (ث) | قول اللّه تعالى | ٢٨٩١ |
| لقد دفن اليوم علم كثير | ابن عباس | ٣٣٩ت |
| لقد رأيت بالمدينة مشيخة في زي الفتيان (ث) | ربيعة بن أبي عبد الرحمن | ١٩١٨ |
| لقد رأيتني أربط الحجر على بطني من شدّة الجوع | | ٢٠٣٨، |
| في عهد النبيِّ صلى اللّه عليه وسلم (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٩٦٢ |
| لقد سبق إلى جنّات عدن أقوام ما كانوا بأكثر صلاة ولا صيام ولا حجٍّ (ث) | علي بن أبي طالب | ٧٢ |
| لقد شكوك في كل شيء حتى في الصلاة | عمر بن الخطاب | ١٢٩٤ت |
| لقد ظللنا عليك وما نعرفك (ث) | جرير بن عبد اللّه | ٨٤٧ |
| لقد عدل عليك من جعلك حسيب نفسك (ث) | الحسن | ١٣٢٩ت |
| لقد علمْتُ آخر أهل النار خروجاً من النّار، وآخر أهل الجنة دخولاً الجنة | أبو ذَرٍّ | ٢٦٣ |
| لقد غيرك الدهر؟! | معاوية بن أبي سفيان | ٢٠٦٨ |
| لقد فارقكم بالأمس رجل لم يسبقه الأولون بعلم | الحسن بن علي بن | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| | أبي طالب | ١٠٣٠ |
| لقد كان من خيرنا وأوصلنا للرَّحِمِ (عثمان بن عفّان) (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٨٤ |
| لقد لقيتُ كذا وكذا زحفاً، وما في جسدي شبرٌ إلاّ وفيه ضربةٌ بسيف (ث) | خالد بن الوليد | ٨٣٦ |
| لقد مكث العرش على الماء قبل خلق السموات دهوراً (ث) | ابن عبّاس | ٧٨ |
| لقد وارت الأرض أقواماً لو رأوني (ث) | المسور بن مخرمة | ٣٧٣ |
| لقد وقذتني كلمة سمعتها من الحجّاج بن يوسف ... نعم سمعته (ث) | الحسن البصري | ١٨٤٠ |
| لَقِّنْ ميِّتك فإذا قالها فدعه ولا تَضجره (ث) | سليمان التيميّ | ٣٨٦ |
| لَقِّني ولا تُعِدْ عليَّ إلاّ أن أتكلَّمَ بكلام ثانٍ (ث) | ابن المبارك | ٣٨٧ |
| لَقِيَ حكيم حكيماً فقال: أوصني فقال: إجهل معرفة من كنت تعرفه (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ٢٨٥٠ |
| لقي حكيم حكيماً فقال له: من أدّبك؟ (ث) | مصعب | ٢٦٣٩ |
| لقي ذو القرنين ملكاً من الملائكة (ث) | جابر بن عبد الله | ١٣٤٠ت |
| لقي رجلٌ راهباً، فقال: يا راهب! كيف ترى النهر؟ قال: يخلق الأبدان، ويجدد الآمال (ث) | أبو سليمان الدّاراني | ٤٣٢ |
| لقي رجل ممّن كان قبلكم رجلاً هو أعلم منه (ث) | وهب بن منبّه | ١٦٦٥ |
| لقي رجل من أصحاب محمد صلى اللّه عليه وسلم رجلاً من الجنّ فصارعه (ث) | ابن مسعود | ٢٤٧٥ |
| لقي عالم من العلماء راهباً من الرهبان فقال له: كيف ترى الدهر؟ | أبو عمرو الشيباني | ٤٣٢ت |
| لقي زاهدٌ زاهداً، فقال له: يا أخي إنّي أحبّك في | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّه (ث) | بشر بن الحارث | ٩٦٩ |
| لقي عالم من العلماء راهب من الرهبان فقال له: | | |
| كيف ترى الدهر؟ | أبو عمرو الشيباني | ٤٣٢ت |
| لقي عيسى بن مريم عليه السلام رجلاً، فقال له: | | |
| ما تصنع؟ (ث) | إبراهيم التّيميّ | ٧٥٣ |
| لقي يحيى بن خالد الجاثليق وهو على بغلة | الرياشي | ٢/٢٤٣٥ |
| لقيت إبراهيم بن أدهم في بلاد الشام فقلت له: | | |
| تركت خراسان | شقيق البلخي | ٢٨٩٠ |
| لقيتُ طبيب كسرى شيخاً أَوْثَقَ حاجباه فسألته عن | | |
| دواء المشي (ث) | يزيد بن الأصمّ | ٢٩١٨ |
| لقيت أهوالاً وزلازل عِظاماً | مسلم بن يسار | ١٤٠ |
| لقيتُ عمر صاحب إبراهيم بن أدهم بمكة، فقلت له: | | |
| راكبٌ (ث) | إسحاق بن خلف | ١٢٣١ |
| لك في مالك شريكان أيُّهما جاء أخذ ولم | | |
| يؤامرك (ث) | أبو ذر الغفاري | ٦٨٦ |
| لك ما سألت ومثله معك | حديث قدسي | ٧٩ |
| لكلِّ أُمَّةٍ أمين وأمين هذه الأُمَّةِ | عمر بن الخطاب | ٢٤٩٦ |
| لكل أُمَّةٍ مجوس ومجوس هذه الأمة القدرية، فإنّ | | |
| مرضوا فلا تعودوهم | أبو هريرة | ٨٦٣ |
| لكنك لو أهدفت لي لم أنصرف عنك (قاله لابنه | | |
| عبد الرحمن) (ث) | أبو بكر الصديق | ١٠٧٦ |
| لكني أعرف رجلاً لم يزل البارحة يقرأ: | | |
| ﴿ألهاكم التكاثر﴾) (ث) | ابن المبارك | ١٢٣٢ |
| للإنسان أربع ثنايا وأربع رباعيات، والواحدة | | ١٨١٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| رباعية (ث) | أبو زيد | ٣٠٦٠ |
| للبكر سبع وللثيب ثلاث | أنس | ٦١١٠ت |
| للجار أن يضع خشبة على جدار جاره | ابن عباس | ٣١٦٠ت |
| للسفر مروءة وللحضر مروءة | ربيعة بن أبي عبد الرحمن | ٣٢١ |
| للشهيد عند الله ستُ خِصال، أول قطرة تسقط من دمه | | |
| على الأرض يغفر له (ث) | الحسين | ٧٨٠ |
| لله أفرح بتوبة عبده من العقيم الوالد | أبو هريرة | ٣١٤٦ت |
| للَّهُ عَزَّ وجل أفرح بتوبة أحدكم | أبو هريرة | ٣١٤٦ |
| لله ما وجدت كلاماً أبلغ ولا أوجز ولا أنفع في | | |
| عاجله منه | زياد | ٢٢٧٣ |
| لليدين والرجلين، قوله تعالى: ﴿نزاعة للشوى﴾ | قتادة | ٢٠٦٩ |
| لم أجد طعم العيش حتى استبدلت الخمص بالكظة | بعض العباد | ٢٢١٨ |
| لم أر ابناً قطّ أبرَّ بأبيه من الفضل بن يحيى بلغ من برّه | | ١٠٩٨، |
| أن يحيى كان لا يتوضّأ إلاّ بماء سُخْنٍ (ث) | المأمون | ٣٢٢٣ |
| لم أرك رثيت زيداً كما رثيْتَ أخاك مالكاً(قاله لمتمِّم | | |
| ابن نويرة) (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٣٦ |
| لم أر واعظاً أوعظ من قبرٍ ولا ممتعاً أمتع (ث) | العمريّ الزاهد | ١٨٨٧، |
| | | ١/٣٠٤٥ |
| لِمَ ... (أُقْفِلَ على قلبي كلما أردت أن أقولها) ... | | |
| لم (بعقوقي والدتي) | عبد الله بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| لِمَ تَتْبَعوني، أليس قد جلستُ معكم من غدوة إلى الساعة | | |
| أحدِّثكم (ث) | جعفر بن عون | ٢٨٢٦ |
| لم تجبني بشيء (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| لم يدع الزبير ديناراً ولا درهماً إلا أرضين (ث) | عبد الله بن الزبير | ٢٢٠٠ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لم تردّها؟ ... أيُّ رجليك أطول؟ (ث) | إياس بن معاوية | ٦٢١ |
| لم تر قاتل عثمان رضي الله عنه (ث) | طاووس | ١٧٦١ |
| لِمِ تُمَعَّر وجوهكم؟ دُعُوا فَأتوا فأسرعوا، وأبطأنا (ث) | سهيل بن عمرو | ٦١٧ |
| لم يسمع السامعون بمصيبةٍ قطُّ أعظم بمصيبة من دخل النار (ث) | وهب بن منبّه | ١٧ |
| لم يكن شخص أحبَّ إليهم من رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانوا إذا رأوه لم يقوموا له لما يعلمون من كراهيته | أنس بن مالك | ٢٣٥ |
| لم يكن عثمان بالطويل ولا بالقصير، وكان حسن الوجه رقيق البشرة (ث) | أبو اليقظان | ٢٣٩ |
| لم يكن لخالد بن برمك أخ إلاّ بنى له داراً (ث) | محمد بن منصور | ٢٣٤٦ |
| لم ينزل عذاب قطٌّ من السماء على قوم إلاّ عند انسلاخ الشتاء (ث) | قتادة بن دعامة | ٤٢٦، ٢٩٢٥ |
| لم يؤيّد المُلْكُ بمثل كلب، ولم تَعْلُ المنابر بمثل قريش (ث) | الحكم بن عوانة عن أبيه | ٢٢٨٢ |
| لمّا اتخذ اللّهُ عَزَّ وَجَلَّ إبراهيم خليلاً كان يُسْمَع خفقان قلبه من بعد (ث) | وهب بن منبّه | ٣٨ |
| لمّا أوتي عمر بن الخطاب رضي الله عنه بتاج كسرى وسواريه | ابن أبي نجيح | ٣٧٤ |
| لما احتضر ضيغم قيل له: ألاّ توصي؟ قال بلى، أوصيكم بالكتاب والسنة (ث) | سفيان بن عيينة | ٣٨٢ |
| لمّا أراد أن يعبر إلى أهل البحر عَبَرَ بهذه الكلمات (ث) | العلاء بن الحضرمي | ٢٠٨، ٣٣٧٣ |
| لمّا أرادوا أن يلقوا إبراهيم عليه السلام في النّار ضَجَّت عامّة الخليقة إلى ربّها (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٦٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لمّا أرادوا حفر العين (قال سفيان: تُسَمَّى عين أبي | | |
| الزناد) (ث) | جابر | ١٢٥٦ |
| لمّا أرادوا غسل النبيّ صلى اللّه عليه وسلم قالوا: | | |
| واللّه ما ندري كيف نغسله (ث) | عائشة | ١٦٠ |
| لمّا أرسل اللّه تبارك وتعالى من الرِّيح على عاد اعتزل هود | | |
| ومن معه (ث) | وهب بن منبّه | ٢٨٧١ |
| لما اعتل داود الطائي قيل له: ألا ندعوا لك الطبيب | أبو نعيم | ٥١ |
| لما التقم الحوت يونس عليه السلام فبلعه إلى التخوم | | |
| السفلى (ث) | وهب بن منبّه | ١٢٤ |
| لمّا أُهبط آدم إلى الأرض قيل له: لن تأكل الخبزَ | | |
| بالزيت (ث) | قتادة بن دعامة | ٥١٣، ٢٩٠٨ |
| لمّا أُهبط آدم صلى اللّه عليه وسلم قال: يا ربِّ | | |
| أطعمني (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٩٠٧ |
| لمّا انتهى موسى إلى البحر، قال: هُنْ أبا خالد | | |
| فأخذه (ث) | سفيان الثوري | ١٤٤٠ |
| لمّا بانَ للأكياس أعلا الدّارين منزلةً طلبوا العلو (ث) | أبو محرز الطفاوي | ١١٥٣ |
| لمّا بعث اللّه عَزّ وجل نبيّه محمد صلى اللّه عليه وسلم | | |
| قال: هذا نبيّي (ث) | الحسن البصري | ٢٦٣١ |
| لمّا بنى بفاطمة بنت عبد الملك بن مروان أسرج في | | ٢٥١٨، |
| مسارجه تلك الليلة الغالية (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٠٠٦ |
| لما بويع أبو بكر رضي اللّه عنه (ث) | عبد الله بن عكيم | ١٢٩٠ |
| لمّا بُيع أبو بكر رضي اللّه عنه (ث) | الشعبي | ١٢٨٩ |
| لما توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم واستخلف | | |
| أبو بكر وكفر من كفر | أبو هريرة | ٢٢٣٨ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لمّا ثقل الحسن بن علي رضي اللّه عنه دخل عليه | | |
| الحسين بن علي (ث) | يحيى بن معين | ٤٧٦ |
| لمّا جاء البشير إلى يعقوب صلى اللّه عليه وسلم، قال: | | |
| على أيّ (ث) | سفيان الثوري | ١٢١٣ |
| لمّا حبس أمير المؤمنين الرشيد أبا العتاهية جعل | محمد بن منصور | |
| له عيناً(ث) | البغدادي | ٢٢٣٢ |
| لمّا حشر اللّه الخلائق إلى بابل بعث عليهم ريحاً | | |
| شرقية (ث) | أنس بن مالك | ١٩٥٢ |
| لمّا حضر أبو بكر رضي اللّه عنه الوفاة أرسل إلى | | |
| عائشة رضي اللّه عنهما فدعاها (ث) | مسروق | ١٣٧٦ |
| لمّا حضرت سلمان الفارسي رحمه اللّه الوفاة فقيل له: | | |
| ما يبكيك (ث) | الحسن البصري | ١١٢٤ |
| لمّا حضرت مرداس بن عامر الوفاة قال لابنه عباس | ابن جناح السلمي | ٣٤٦٩ |
| لما حضرت هارون الرشيد الوفاة فكان ربما غشي عليه | هيثم بن عدي | ٢١٨٣ |
| لما خرج هارون الرشيد في طلب سيار (ث) | الهيثم بن عدي | ٢١٨٣ت |
| لمّا خرجت إلى يوسف بن أسباط اكتريت حماراً ... | | |
| ما كنت لأحمّله أكثر (ث) | شعيب بن حرب | ٢٧٧٤ |
| لمّا خلق اللّه الجنّة، قالت: رَبِّ لمن خلقتني؟ قال: لمن مات | | |
| وهو يخافني (ث) | الحسن البصري | ٣٤٠٧ |
| لمّا خلق اللّه الخلق كتب كتاباً فهو عند فوق العرش | أبو هريرة | ٢٩ |
| لما رأت امرأة ما يصنع عيسى بن مريم عليه السلام | أبو عبيدة | ١١٩٦ت |
| لمّا رأى إبراهيم عليه السلام ملكوت السموات | | |
| والأرض أبصر عبداً على سوء (ث) | سلمان | ٢٩٢٦ |
| لمّا دخل علي بن أبي طالب الكوفة دخل عليه رجل | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من حكماء (ث) | المدائني | ١٨٣٦ |
| لمّا دفن هرم بن حيّان مُطِرَ من يومهِ وأنبت (ث) | قتادة | ٢٣٢١ |
| لمّادلي زيد بن ثابت في قبره | الزهري | ٣٣٩ |
| لمّا ضربت الدراهم والدنانير حملها إبليس (ث) | وهب بن منبّه | ٣٥٨٣ |
| لمّا طُعِنَ أبو عبيدة بن الجراح رضي اللّه عنه بالأردن | سعيد بن أبي سعيد | |
| وبها قبره (ث) | المقبري | ٣١٤٣ |
| لمّا قال فرعون لقومه: ﴿ما علمت لكم من إله غيري﴾ | | |
| نشر جبريل (ث) | محمد بن كعب القرظي | ١٢٧٤ |
| لمّا قبض النبي صلى اللّه وُسْوِسَ ناسٌ من أصحابه فكنت ... | | |
| ما علمت بتسليمه ... قبض رسول الله (ث) | عثمان بن عفّان | ١٨٢٢ |
| لمّا قتل عثمان بن عفّان رضي اللّه عنه رثاه كعب بن مالك | | |
| الأنصاري (ث) | الشعبي | ٦٢٤، ٢٨٠٧ |
| لما قتل أهل الحرة هتف هاتف بمكة على أبي قبيس | المدائني | ١٤٧٥ |
| لمّا قُتِلَ الزّبير وجد الحجّاج صندوقاً في خزانته عليه | | |
| أقفال (ث) | المدائني | ٢٣٨٦ |
| لمّا قُتِلَ عمر رضي اللّه عنه محى الزبير اسمه من | | |
| الديوان (ث) | عروة بن الزبير | ٤٥٥ |
| لما قدم إبراهيم عليه السلام على ربّه جَلَّ وعزَّ ، قال له: | | |
| يا إبراهيم كيف وجدت الموت؟ (ث) | عبد اللّه بن أبي مليكة | ٣٩ |
| لمّا قدم ركب خزاعة على النبي صلى اللّه عليه وسلم | | |
| يستغفرونه | حزام بن خالد | ٥٨٤ |
| لما قدمت عائشة بنت طلحة البصرة أتاها رجل | المثنى بن سعيد | ١٢٥٦ت |
| لمّا كان زمن زياد أو ابن زياد أُصيبَ في بعض بيوت آل | | |
| كسرى (ث) | أبو قحذم | ٩٢ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لما كان وقت صلاة الظهر من يوم الاثنين | أبو بكر الدينوري | (٧) ملحق |
| لمّا كان يوم أحد،أقبلت امرأةٌ تسعى حتّى كادت | الزبير بن العوّام | ٢٧٩٦ |
| لمّا كان يوم القادسية طُعِنَ المغيرة بن شعبة في | | |
| بطنه (ث) | الشّعبي | ٢٨٣٤ |
| لما كانت ليلة الأحزاب، قالت الجنوب للشمال: | | |
| انطلقي بنا (ث) | عكرمة | ١١٤٠ |
| لمّا كلّم اللّه عَزّ وَجَلَّ موسى صلى اللّه عليه وسلم يوم | عُبيدة، | ٢٣٦٢، |
| الطور كان على موسى جُبَّةٌ من صوف (ث) | وهب بن منبّه | ٣١٢٢ |
| لمّا مات أبو بكر الصديق رضي اللّه عنه أمرَ عمر بن | | |
| الخطاب رضي اللّه عنه خالداً (ث) | المدائني، الهيثم بن عدي | ١٠١٨ |
| لمّا مات ذر بن عمر بن ذر وقف على قبره فقال: | | |
| يرحمك اللّه يا ذرّ (ث) | عمرو بن جرير | ٣٨٠ |
| لمّا مات ذو القرنين وحُمِلَ على النعشِ اجتمعت | | |
| الحكماء إليه (ث) | وهب بن منبّه | ٤٦٠ |
| لمّا مات شبيب بن شيبة أتاهم صالح المرّي للتعزية ... | | |
| وكان شبيب بن شيبة أبصر النّاس بمعاني الكلام (ث) | المازني | ١٥٠٠ |
| لمّا مات عبد الرحمن بن أذينة ذكر (ث) | أيوب السختياني | ١٨٦٧ |
| لمّا مات عطاء السلمي، حزنت عليه حزناً شديداً (ث) | صالح المرّي | ٣٥٧٧ |
| لمّا مات عمر بن عبد العزيز خرجت جارية وهي | | |
| تقول: ألا هلك الجود والنّائل (ث) | المدائني | ٣٠٦٦ |
| لمّا مرض أبي واشتدَّ مرضه ما أنّ ... فما أنَّ حتّى | | |
| مات (ث) | عبد اللّه بن أحمد بن حنبل | ٢٥٣ |
| لمّا مرّوا بجنازة داود الطائي، قالت امرأة: من هذا؟ | | |
| ....هذا عابد ... هنيئاً لك يا عابد (ث) | علي بن الجعد | ٣١٤١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لمّا نزلت: ﴿إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مئتين﴾ | | |
| فرض عليهم ألاّ يفرَّ منهم (ث) | ابن عباس | ٢٥٣٧ |
| لما هدم الوليد بن عبد الملك كنيسة دمشق.... (ث) | سعيد القرشي | ٣١٠٥ |
| لما وجد رسول الله صلى الله عليه وسلم من نفسه خفة | عائشة | ٢١٢٨ت |
| لمّا ولي إياس بن معاوية القضاء دخل عليه الحسن وإياس | | |
| يبكي (ث) | حميد الطويل | ١٥٩٧ |
| لِما يعلم ما بيني وبينه من العداوةِ فأردت أن أشيط | | |
| بدمه | دِعْبل | ٣١٢٤ |
| لن تخلوا الأرضُ من أربعين بهم يغاث النّاس (ث) | قتادة | ١٥٩١ |
| لن يبرح المتهجدون عن عرصة القيامة حتّى يُؤْتى (ث) | وهب بن منبه | ١٠٩ |
| لن يستكمل عبدٌ الإيمان حتّى يدع المراء، وإنْ | | |
| كان | أبو هريرة | ١٤٤٨ |
| لن يفوتك أصحابك (ث) | سعيد بن المسيب | ٥١٧ |
| لو أخذتُ كفّاً من تراب فضربتك به أكان | | |
| يوجعك؟ (ث) | إياس بن معاوية | ٢٥٣٥ |
| لو أدرك هذا الإسلام | مسلم الخزاعي | ٥٥٧ |
| لو أصبت من طعامنا | شبيب | ٢٧٠ |
| لو أصدقها ملء كف ـ وذكر الطعام ـ فرضيت به | | |
| لكان صداقاً | جابر بن عبد الله | ١١٦١ت |
| لو استقبلت من أمري ما استدبرت ما غسّله إلاّ | | |
| نساؤه (ث) | عائشة | ١٦٠ |
| لو أنّ ألَمَ شعرة من ألم الموت وُضِعَ على أهل السموات | | |
| والأرضين (ث) | ياسين الزيّات | ١٤٨٤ |
| لو أن رجلاً أعطى امرأة ملء يديه طعاماً، كانت به | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| حلالاً | جابر بن عبد الله | ١١٦١ت |
| لو أنّ رجلاً ترك الدنيا ما قلنا له إنّك زاهدٌ لأنّ الزهد | | |
| لا يكون إلاّ بترك الحلال المحض (ث) | يوسف بن أسباط | ٩٥٦ |
| لو أنّ رجلاً تزوّج امرأة على مِلء كفٍ من طعام | جابر بن عبد اللّه | ١١٦١ |
| لو أنّ الروم سبت من المسلمين كذا وكذا ألفاً ثم | | |
| فداهم رجل كان في قلبه سوءاً لأصحاب النبي | | |
| صلى اللّه عليه وسلم (ث) | بشر بن الحارث | ١١٢ |
| لو أن الروم بأسرهم جاءوا | بشر بن الحارث | ١٠٢ت |
| لو أنّ الصبر والشكر بعيران ما باليت أيهما | | |
| أركب (ث) | عمر بن الخطاب | ١٥٥٨ |
| لو أن للمرءِ عملَ سبعين نبياً إلى عمله لَظَنَّ أن | | |
| لا ينجو (ث) | أبو عمران الجوني | ٢٥٩٨ |
| لو أن الوحش طعمت طعم الإسلام (ث) | أبو الدّرْداء | ١٨٤٥ |
| لو أنزل الله تبارك وتعالى كتاباً أنه يعذب رجلاً | | |
| واحداً (ث) | رجل من الصالحين | ٩٧١ |
| لو ائتمنّي رجل على بيت مالٍ لظننت أني أؤدّي (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٢٥٥ |
| لو برز رجل من أهل النّار إلى الدنيا لأظلمت | | |
| الدنيا (ث) | كعب الأحبار | ١٥٢١ |
| لو تخابثت الأمم، وجئنا بالحجاج لغلبناهم (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٨١٧، |
| | | ٣٤٦٧ |
| لو جاءت كل أمة بخبيثها وفاسقها (ث) | الحسن | ١٨١٧ت |
| لو حَبَسَ الله عزّ وَجَلَّ الرّيح ثلاثاً لأنتن (ث) | كعب الأحبار | ٢٦٥٢ |
| لو حَدّثت الناس بكلّ ما أعلم لقالوا: رحم الله قاتل | | |
| سلمان (ث) | سلمان الفارسي | ١٧٥٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لو دخلت هذا المسجد وهو منغص بالرجال، فقيل لي (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ١٠٤٠ |
| لو دعوت مخلوقاً لدعوته بما يعرف ولكني أدعوا من يعرف ما في القلب من غير (ث) | رجل | ١٨١٣ |
| لوددت أن الذي يُخلَفُ عليّ كان الساعة (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٢١٩ |
| لوددت أن الله عزّ وجلّ يطاع وأنّي عبدٌ مملوك | أبو البحتري | ٤٨٩ |
| لوددت أنّك رثيْتَ أخي بما رثيتَ أخاك (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٣٦ |
| لو ثنتَ ذكرتُ أحسنَ من هذا يا أمير المؤمنين من شعره (ث) | ابن أبي محجن | ٦٠٢ |
| لو صليتُ خلف إنسان يقرأ قراءة حمزة الزيات لأعدت الصلاة (ث) | سفيان بن عيينة | ٣٠١٦ |
| لو صور العقل لأظلمت معه الشمس ولو صور الحمق لأظلم معه الليل | أعرابي | ١٨١٨ |
| لو ضاعت سخلة على شاطيء الفرات لخاف عمر أن يسأله الله عزَّ وجلَّ عنها (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٧٥ |
| لو علم المحبّون في الدنيا أنهم لا يرون ربَّهم في الآخرة (ث) | الحسن البصري | ٢٩٧٤ |
| لو عيَّرتُ رجلاً برضاع الغنم لخشيت أن أُرضعها (ث) | عمرو بن شرحبيل | ٨٩٠ |
| لو غسلتُ وجهي للناس ما كنت إلاّ مرائياً (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٠، ٢/٢٩٩٣ |
| لو فعلت ذلك لأتاك نصيبك (ث) | شريك | ٢٣٢٩ |
| لو قسّمت في النّاس مئة ألف درهم كانوا أكثر (ث) | الأصمعي | ٢١٧٧ |
| لو قُسِمت هذه الكلمة على أهل الأرض لوسعتهم وذلك أنّه لا دين إلاّ بك (ث) | العتابي | ٣٣٠٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لو كان بعدي نبيٌّ لكان عمر بن الخطاب | عقبة بن عامر | ٢١٧ |
| لو كان الخير في كفّي ما نلته إلاّ بمشيئة الله | مطرف | ٢٣٩٨ |
| لو كان الشكر والصبر بعيرين ما باليت (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٥٤٤/م |
| لو كان قَتْلُ عثمان هدى لأحتلبت به الأمة لبناً ولكن كان ضلالاً (ث) | الحسن البصري | ٢٤٣ |
| لو كان لقلبي حياة ما نطق لساني بذكر الموت أبداً (ث) | عمر بن ذرّ | ٣٩٧ |
| لو كان للذنوب ريح ما قدرتم | محمد بن واسع | ١٥٧ت |
| لو كان للنّاس جميعاً عقول خربت الدنيا (ث) | الحسن البصري | ١٣١٢ |
| لو كان لي طلاع الأرض ذهباً لفتديت به من هول المطلع (ث) | عمر بن الخطاب | ١٠٨١ |
| لو كان الموت عَلَماً يُسبَقُ إليه ما سبقني إليه أحد (ث) | خالد بن معدان | ٨١٨ |
| لو كان هذا هكذا، لكان رأسُ الأمير مثل رأس البغل (ث) | أعرابي | ٣٢٦٠ |
| لو كانت الصحف من عندنا لأقللنا الكلام (ث) | مالك بن دينار | ٣٥٧ |
| لو كنت أعجب من شيء لأعجبني (ث) | كعب بن زهير | ٥٣٥ |
| لو كنت قدمت الإسلام على الشيب لأجزتك (ث) | عمر بن الخطاب | ١٣٦٥ت |
| لو كنت منافقاً لم تخش (ث) | حذيفة بن اليمان | ٢٣٥٦ |
| لو لم يبك العاقل فيما بقي من عمره حتّى يخرجَ من الدنيا ... صدقت (ث) | أبو سليمان الدّاراني | ٥٤٣ |
| لو لم يسمع الرّجل من العلم إلاّ هذا لكان كثيراً (ث) | أحمد بن حنبل | ٢٧ |
| لو مات أهل الدنيا غيري وغيرك ما اعتبرنا | سفيان الثوري | ٢٤٢٥ |
| لو مَرَّ بك رجل أقطع، فقلت: بيدك وأشرت إليه هذا أقطع كانت (ث) | أبو إياس | ٢٧٣٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لولا أن أبا محجن موثقاً بالحديد لقلت أنه أبو | | |
| محجن (ث) | سعد بن أبي وقاص | ١٠١٤ |
| لولا أن سرورك لا يتم بأن تسلم وأسقم (ث) | كثير | ٨٧٥ |
| لولا أن السؤال يكذبون ما قدس (ث) | عائشة | ٢٤٧١ |
| لولا أن في قولي لا أعلم، شيئاً لأني أعلم (ث) | بعض الحكماء | ١٨٣٣ |
| لولا أن لا تدافنوا لدعوت الله أن يسمعكم | أنس بن مالك | ٣٢ |
| لولا أني صادفت ربّاً رحيماً لكان عرشي (ث) | عمر بن الخطاب | ١٤٤٣ |
| لولا ثلاث ما أستطيع ابن آدم أنك لتجدهن (ث) | الحسن البصري | ٢١٥٢ |
| لولا العلم ما طلب العمل ولولا العمل (ث) | بعض العلماء | ١٨٣١ |
| لولا كلمات أقولهنّ إذا أصبحت وإذا أمسيت (ث) | كعب الأحبار | ١٦٧٠ |
| لي على كل خائن أمينان الماء والطين | عمر بن الخطاب | ١٢٢٠ |
| ليت آل الخطاب هكذا (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٨ |
| ليت تلك الشجرة لم تخلق (ث) | أويس القرني | ٢٩١٠ |
| ليتق الله رجلٌ وإن كان زاهداً فلا يجعل زهدَه | | |
| عذاباً (ث) | أيوب السختياني | ٣٣٦ |
| ليدخل قاتل ابن صفية النّار | علي بن أبي طالب | ٤٥٢ |
| ليدخلن الجنة بشفاعة رجل من أمتي | الحسن البصري | ٢٢١٦ |
| ليدخلن الجنة بشفاعة رجل من أمتي | عبد الله بن أبي الجدعاء، | |
| | أبو أمامة | ٢٢١٦ت |
| ليس أحد أصبر على أذى يسمعه من ... (ث) | أبو موسى الأشعري | ٢٦٣٦ |
| ليس أنت الذي أقمتني، إنما أقامني الذي لم يرد أن | | |
| أصيب من الدنيا شيئاً (ث) | عيسى عليه السلام | ١٠١٧ |
| ليس بين العبد وبين أن يكون فيه خير إلاّ أن (ث) | الحسن البصري | ٢١٦٤ |
| ليس الخائف من بكى وعصر عينيه، ولكن الخائف من | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ترك الأمر (ث) | إسحاق بن خلف | ١٧٦ |
| ليس الزهد بتقشف الشعر، وتفل الريح، وخشونة | | |
| الملبس (ث) | الزهري | ٩٢٣، ٢٩٨٣ |
| ليس شيءٌ تغيب أذناه إلا وهو يبيّض وليس شيءٌ (ث) | علي بن أبي طالب | ١٣٥٢، ٤/٣٣٥٢ |
| ليس شيء من الجسد لا يشكو إلى الله اللسان | | |
| على حدته | أبو بكر الصديق | ١٠٨١ت |
| ليس شيءٌ من الكلام يضاعف مثل قول الرّجل: | | |
| الحمد لله (ث) | سفيان الثوري | ٢٠٦ |
| ليس العاقل الذي يحتال للأمر إذا وقع فيه، ولكن | | |
| العاقل (ث) | زياد | ٦٧٠ |
| ليس العاقل الذي يعرف الخير من الشرّ، ولكن العاقل | | |
| الذي يعرف خير الشّرين (ث) | عمرو بن العاص | ٦٧٠ |
| ليس العاقل الذي يعرف الخير من الشر ولكن العاقل | | |
| الذي يعرف الخير فيتبعه (ث) | سفيان بن عيينة | ٦٧٠ت |
| ليس غني أغنى من سكون القلب وليس فقراً أفقر | | |
| من اضطراب القلب (ث) | بعض الحكماء | ١٧٦٤ |
| ليس في بيتي حديث أجود من هذا (ث) | شعبة | ٢٥٩٦ |
| ليس فيه حميٌ فكل حيث شِئْت (ث) | عبد الملك بن مروان | ٣١٢٧ |
| ليس الكذاب مَن أصلح بين الناس، فقال: خيراً (ث) | أم كلثوم بنت عقبة بن أبي معيط | ٣٢٠٦ |
| ليس بعاقل من لم يعدَّ البلاء نعمة والرخاء مصيبة (ث) | سفيان الثوري | ١١٨ |
| ليس له إلى ناقتي سبيل (ث) | النباجي | (٢٧) ملحق |
| ليس مع العزاء مصيبة ولا مع الجزع فائدة، والموت | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| أهون ما قبله (ث) | أبو بكر الصديق | ٧٧٠ |
| ليس من أعلام المحبِّ أن يُحبَّ ما يبغضه حبيبه (ث) | بشر بن السَّريّ | ٥٧٦ |
| ليس من الحيوان شيء يستطيع أن ينظر إلى أديم السماء غير الإنسان (ث) | بعض الحكماء | ٢١٣٣ |
| ليس من خلق الله تبارك وتعالى أكثر من الملائكة (ث) | عبد الرحمن بن زيد ابن أسلم | ٢٤ |
| ليس من شهوات الدنيا ولذاتها | صالح المري | ٢/٣٠١١ |
| ليس مِن طعام الأحرار (سُئِل عن أكل الصحناه) (ث) | الحسن البصري | ٢٤٨٣، ٢٩٤٩ |
| ليس من عبدٍ إلاّ بينه وبين رزقه حجاب فإن اقتصد أتاه رزقه (ث) | عمر بن الخطاب | ١١١٢ |
| ليس من فضيلة العلم علمي إلا أني لست أعلم | بعض العلماء | ١٨٨٠ |
| ليس من المروءة كثرة الالتفات في الطريق (ث) | إبراهيم بن يزيد النخعي | ٨٢٥، ٣٣٣٩ |
| ليس من واحد إلاّ وهو يعرف عيب نفسه (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٥٦ |
| ليس منّا من أحدٍ إلاّ وله قرين | ابن عبّاس | ٢٢٨٩ |
| ليس نحو الغاية إنما هو الغاية(ث) | الأصمعي | ٣٠٤ |
| ليس الندب ولكن صفوة الوجه (تفسير قوله تعالى: ﴿سيماهم في وجوههم﴾) (ث) | مجاهد | ١٨٩٨ |
| ليس هذا من الحوائج التي ترفع إلى الأمير (ث) | يزيد بن أبي مسلم | ١٥٥٤ |
| ليس يرضيهم شيء إلا زوالها، وما أحب | بعض الحكماء | ٢٩٣٤ |
| ليست خُلَّةٌ من خلال الخير يكون فيها الرجل أحرى أن يكونَ جامعة فيه (ث) | أبو قحذم | ٨٨١ |
| ليست اللعنة بسوادٍ يُرى في الوجه، ولكن إنما هو ألا تخرج (ث) | حمّاد بن سلمة | ٧٦٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ليطول مقامي في الظلّ (ث) | روح بن حاتم | ٢١٠٤ |
| ليعرفون: (تفسير قوله تعالى: ﴿وما خلقت الجن | | |
| والإنس إلا ليعبدون﴾) (ث) | ابن عبّاس | ٢٢٥، ٣٤٤٢ |
| ليلة أُسريَ به مَرَّ على إبراهيم عليه السلام خليل الرحمن، | | |
| فقال إبراهيم: يا جبريل من هذا الذي معك؟ | أبو أيوب الأنصاري | ٣٦ |
| ليلة سبع يغيب القمر (ث) | محمد بن سيرين | ٨١٥، ٢٤٦٧ |
| لئن أعربنا في كلامنا حتى ما نلحن لقد لحّنا في | | |
| أعمالنا حتى ما نعرب (ث) | بعض الصالحين | ١٦٣٨ |
| لئن جزع الحجاج ما من مصيبة (ث) | الفرزدق | ٣٠٨٨ |
| لئن دخلت الجنّة لتندمنّ؟ (ث) | عقبة بن عامر | ٢٨٨٣ |
| لِيُنْزِل أحدكم نفسه أنّ قد حضره الموت فاستقال ربَّه | | |
| فأقاله (ث) | العلاء بن زياد | ٤٨٧، ٢٠٩٨ |
| ماء البركة في الدنيا خير من صديد أهل جهنم (ث) | بلال بن سعد | ٤٥٠ |
| ما آمن بالقرآن من استحلّ محارمه | صهيب | ٥٧ |
| ما أبالي على أي حال أصبحت (ث) | عمر بن الخطاب | ١٥٥٨ت |
| ما أبعد مركبك من مركب المسيح | يحيى بن خالد | ٢/٢٤٣٥ |
| ما أبكي على ما فاته في الدنيا غير أنّي أتخوّف أن لا | | |
| ألقاه في الآخرة (ث) | مالك بن دينار | ٦٩٣ |
| ما أبكي جزعاً على الدنيا ولكن عهد إلينا رسول الله | | |
| صلى الله عليه وسلم أن تكون (ث) | سلمان الفارسي | ١١٢٤ |
| ما أتيت عالماً قط فاستأذنت عليه ولكن صبرت حتى | | |
| يخرج إليّ (ث) | أبو عبيد القاسم بن سلاّم | ١٧٢٠ |
| ما الأثر؟ (قاله لأبي حمزة السكري) (ث) | علي بن الحسين بن شقيق | ٣٢٦ |
| ما اجتمعت العرب اجتماعها على السؤدد | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| والإفضال (ث) | أبو عبيدة | ١٧١٦ |
| ما أجلسكم ها هنا تريدون الدخول على هؤلاء (ث) | الحسن البصري | ٤٦١ |
| ما أحبَّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ عبداً إلاّ أحبَّ أن لا يشعر به (ث) | أيوب السختياني | ٩٥٩ |
| ما أحب إني ذهبت أتعرض لغضب الله | سفيان بن عيينة | ٢٦٣٥ |
| ما احتلم نبيٌّ قطّ، وإنّما الاحتلام (ث) | ابن عبّاس | ٢٥٠٨ |
| ما أحد أطاعني إلا استجبت له من قبل أن يدعوني | أثر إلهي | ٩٢٤، ٢٩٨٥ |
| ما أحدٌ عرضت عليه الإسلام والنبوة إلاّ كانت له كبوة | | ١٠٧٧ |
| ما أحدٌ من أهل العلم إلاّ وفي وجهه نضرةٌ (ث) | الفضيل بن عياض | ١١٤ |
| ما أحسن الثناء عليك... اللّه أحسن عندي (ث) | الأصمعي | ٢٥١٦ |
| ما أحسن حال من انقطع إلى ربّه (ث) | عبد اللّه بن المبارك | ٣٥٠٦ |
| ما أحسن الرجل ناطقاً عالماً ومستمعاً داعياً (ث) | الحسن البصري | ١٨٣٢ |
| ما أحسن زرع ظهير، خذوا زرعكم وردوا عليه نفقته | رافع | ١٠٢٠ت |
| ما أحسن هذه الكناية، املؤوا بيتها خبزاً ولحماً (ث) | قيس بن سعد | ١٤٢١ |
| ما أخاف على دمي إلاّ من القرّاء أو العلماء (ث) | إبراهيم بن يزيد النخعي، سفيان الثوري | ٢٨٨١ |
| ما أخاف على شيء إلاّ على بناتي، فإني أخاف الضَّيعة لهم بعدي (ث) | بعض نساك أهل البصرة | ٩٢٨ |
| ما أخرج من بيتي فيستقبلني أحدٌ إلاّ رأيتُ له الفضل عليَّ (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٩٣٩ |
| ما أخرجك هذه الساعة، وقد قلت لا أجد فيها أحداً إلا فعلت به وفعلت (ث) | الحجّاج | ١٩٩٩ |
| ما أدري أي النعمتين أفضل (ث) | صالح بن مسمار | ٢٦٨٦ |
| ما أدري ما إيمانُ رجلٍ كره شيئاً لم يدعه للّه (ث) | مسلم بن يسار | ٨٧٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أرى أخذت شيئاً...انظروا إلى هذا | عمر بن الخطاب | ١٨٦٨ |
| ما أرى إساءة تكبر عند عفو اللّه فلا تيأس (ث) | منصور بن عمار | ١٢٢٣ |
| ما أرى مجلساً مثل مجلس ابن عبّاس ولقد مات (ث) | مجاهد | ١٢٢٥ |
| ما أرى يُعَذّبُ اللّهُ الخلق إلاّ بذنوب العلماء (ث) | يوسف بن أسباط | ٩١ |
| ما أراك إلاّ تسأل عمّا اختلف فيه (ث) | سعيد بن المسيب | ٢٩٠٢ |
| ما أردنا المشقة عليك، ولكن بلغني عنك حديث ثوبان (حكاه لأبي سلاّم) (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٠٣٣ |
| ما أرفع قدماً ولا أضع قدماً إلاّ رأيت أن الموت خلفي (ث) | راهب | ٢٠١٢ |
| ما استرعى اللّه عبداً رعية فلم يحفظها | عبد الرحمن بن سَمُرة | ٢٣٤ |
| ما استقصى حكيم قط | عطاء الخراساني | ٣ت |
| ما استودعت قلبي شيئاً قطّ فخانني (ث) | سفيان الثوري | ٣١٦، ٢٩١٤ |
| ما أسرّ إبليس اللعين من الكذب (تفسير قوله تعالى: ﴿وأعلم ما تبدون وماكنتم تكتمون﴾) (ث) | سفيان بن سعيد | ٢٦٦١ |
| ما اسمك؟ ... بل أنت هشام | هشام بن عامر | ٢٤٩٧ |
| ما أسمنك؟ .... متى نزلت هذه البلدة؟ (ث) | الحجاج بن يوسف | ٢٧٣٠ |
| ما اسمنك؟ (ث) | الحجاج بن يوسف الثقفي | ٢٣٤٧/م |
| ما اسمنك؟ (ث) | (  ) | ٢٣٤٦/م، ٢٣٤٧ |
| ما أشبه عينيك بعيني رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم (قاله لثابت فبكى حتى عميت عيناه) (ث) | أنس بن مالك | ٤١٤ |
| ما أشدُّ قطام الكبير (ث) | مالك بن دينار | ١١٨٩ |
| ما أشدُّ من حمل المروءة ... لا تعمل شيئاً في السِّرِّ تستحي منه في العلانية (ث) | محمد بن عمران | ٨٢٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أشدّ الوصف إذا لم يكن معه الموصوف (ث) | ابن السّماك | ٢٧٦٢ |
| ما أشغلهم يومئذٍ عن الأكل والشرب (ث) | هشام بن عبد الملك | ٢٢٥٦ |
| ما أصاب إبليس من أيوب شيئاً إلاّ الأنين في مرضه (ث) | سفيان الثوري | ٢٥٢ |
| ما أصاب أحداً قطّ هَمٌّ ولا حزَنٌ، فقال: اللّهم إني عبدك | عبد اللّه بن مسعود | ١٨٠٣ |
| ما أصاب بمصيبة فاذكر معها النّار إلا صارت في عيني أصغر من التراب (ث) | امرأة من العابدات | ٦٩٥ |
| ما أصبحت صباحاً قط فلم أرَ أحداً ببابي طالب حاجة (ث) | حكيم بن خذيم | ١٧٩٣ |
| ما اصتدتموه وهو حي فكلوه | جابر | ٣٤٩٨ت |
| ما أصيب ابن آدم بعد ذهاب دينه أشد من ذهاب عينيه | حديث قدسي | ١٧٨١ |
| ما أضرّهم ما أصابهم في الدنيا، جبر اللّه لهم بالجنّةِ (ث) | أبو معاوية الأسود | ٩٧ |
| ما أطال عبدٌ الأمل إلاّ أساء العمل (ث) | الحسن البصري | ٢٥٤١ |
| ما أطول خجله المرء غداً إذا خرج اسمه مع اسم أهل (ث) | عبد الواحد بن زيد | ١٧٥٥ |
| ما أطول عمرك (ث) | الأصمعي | ٦٦٠ |
| ما أعان على نظم شيء (ث) | بعض الحكماء | ١٧٢٩ |
| ما أعجب ـ يا أمير المؤمنين ـ ما نحن، كيف غلبت علينا (ث) | ابن السماك | ٣٣٦٦ |
| ما أعرف أحداً يقول بقوله(ث) | يونس بن عبيد | ١١٩٢ |
| ما أعطي أحد ماأعطيت هذه الأمة ولا نبياً مثل نبينا محمد صلى اللّه عليه وسلم (ث) | سعيد بن جبير | ١٣٩٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أعطي رجلٌ من الدنيا إلاّ قيل له (ث) | الحسن | ٣٣١٣ |
| ما اغبرّت نعلي في طلب دنيا قطُّ (ث) | ثبيل بن عوف | ١١٦٩، ٢٣٤٤/م |
| ما أفسدت عليك أكثر أم كراي ... فأطرح لك من الكرى بقدر ما أفسدت عليك (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٧٩ |
| ما أفظعَ الموت وأبعد السَّبا، وأشدَّ منهما فقير يتملّق صاحبَ مالٍ (ث) | الشعبي | ٥٠٥، ٢٤٢٠ |
| ما أقبح بالرجل أن يأكل حتى لا يكون فيه فضلٌ (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٤٣ |
| ما أقدمك؟ ... وكيف ذلك؟ (ث) | سليمان بن عبد الملك | ١١٥٩، ٣٢١٨ |
| ما أقرب شيءٍ، وأبعدُ شيء، وآنسُ شيءٍ، وأوحشُ شيءٍ؟ (ث) | سفيان بن عيينة | ٩٩٤ |
| ما أقعص عنك ما تكره (ث) | معاوية | ١٨٥٩ |
| ما أقل منفعة المعرفة مع سرف الطبيعة وغلبة الشهوة(ث) | بعض حكماء الهند | ١٦٧٣ |
| ما أقول فيمن كان أبوه أصله وابنه فرعه (ث) | عامر بن عبد اللّه | ٢٤٤ |
| ما أكثر الأسماءعلى اسمك، وما أكثر الأسماء على اسمي (ث) | عطاء | ١٦١٦، ١/٣٠٣٨ |
| مالي إلى مخلوق حاجة (ث) | عطاء بن أبي رباح | ٣٠٥ |
| مألقى البحر أو جزر عنه فكلوه | جابر | ٣٤٩٨ت |
| ما أنت بواجدٍ شيئاً أضيع لك من تركه (ث) | أبو هريرة | ١٦٩٤ |
| ما انشقَّ القبر عن عبدٍ ولا أمةٍ إلاّ وملكان قائمان (ث) | مالك بن دينار | ١٥٤٣ |
| ما أنفق الرّجل درهماً من نفقةٍ أعظم أجراً (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٩٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أنكرت من زمانك فإنما أفسده عليك عملك (ث) | أبو يوسف | ٣٥١٠ |
| ما أنكرت من زمانكم فيما غيرتم | أبو الدرداء | ٣٥١٠ت |
| ما أنكرتم من زمانكم فبسوء عملكم | الحسن البصري | ٣٥١٠ت |
| ما أهون الورع! (ث) | ابن سيرين | ٤٥٧ |
| ما بال المتهجدين بالليل أحسن الناس وجوهاً | الحسن البصري | ١٣٣ |
| ما البحر حاجتي ... ما صنعت بمالنا ... أفسدتَ علينا مالنا (ث) | طاووس | ٢٥٨٨ |
| ما البخل؟ (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| ما بَطِنَ قوم قطُّ إلاّ فقدوا عقولهم، وما مضت عزيمةٌ (ث) | عمرو بن العاص | ٦٤٧ |
| ما بعث اللّهَ نبياً إلاّ وقد تخوّف عليه (ث) | سفيان الثوري | ٢٢٥٥ |
| ما بقي شيءٍ أتمنّاه على اللّه قبل أن أموت إلاّ نظرةً (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٩٦٣ |
| ما بقي على وجه الأرض مثل يحيى بن أبي كثير (ث) | أيوب السختياني | ١١٨٤ |
| ما بقي عليَّ شيء من لَذّةِ الدنيا إلاّ وقد نلتُه (ث) | هشام بن عبد الملك | ٢٧٤١ |
| ما بقي من الدنيا تلذ به؟ | معاوية بن أبي سفيان | ١٣٨٢ |
| ما بكيت من زمان إلا بكيت عليه (ث) | .... | ٢١٨٤/م |
| ما بينهما وقت (سُئِل عن مواقيت الصلاة فأمر بلالاً، فَقدَّم وأخَّر) | البراء بن عازب | ٣١٤٤ |
| مات أبي فما سألت اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ حولاً (ث) | عامر بن عبد اللّه بن الزبير | ١٧١٤ |
| مات أخ لنا فلمّا وضع في قبره ومُدَّ عليه الثوب (ث) | الحسن البصري | ١١٢٩ |
| ما تخاف أن يكون سرفاً (ث) | الأوزاعي | ٨٧٦ |
| مات رجل فأتي في قبره فقيل له: أنا جالدوك (ث) | أبو ميسرة | ٢٦١٨ |
| مات سهيل بن عمر بن عبد العزيز بن مروان فكتب إلى عمر بن عبد العزيز | أبو إسحاق | ٧٩٠، ٣٢٠٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما ترك حب الغداء والعشاء لنا حزناً | أعرابي | ١٩٠٨ |
| ما ترك عبد شيئاً لا يتركه إلاّ للّه تبارك وتعالى (ث) | أبي بن كعب | ٢٥٨٣ |
| ما تشتاق إلى النّاس؟ ... فعلى الإسلام أنت؟ .. | | |
| فحسدتة واللّه على مكانه ذلك (قاله لراهب) (ث) | عبد الواحد بن زيد | ٨٥٧ |
| ما تصعدتني خطبة ما تصعدتني خطبة النكاح (ث) | عمر | ١٤٩٩ت |
| ما تصعَّدّني كلام كما يصعَّدَني خطبُ النكاح (ث) | عمر بن الخطاب | ١٤٩٩ |
| ما تعتيت ولا تَمَنَّيْتُ ولا شربت خمراً في جاهلية | | |
| ولا إسلام (ث) | عثمان بن عفّان | ٢٨٥ |
| مات في يوم صائف فلمَّا أن دُفِنَ جاءت سحابة | | |
| قدر قبره (ث) | هرم بن حيّان | ٣٤٦ |
| ما تقول فيَّ؟ ... فما قولك في أمير المؤمنين؟ ... خذوه | | |
| فقطِّعوا عليه العذاب (يعني حُطيطاً) (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ٣١٢٣ |
| ما تلذذت لذاذاةً قطّ ولا تنعمتُ نعيماً (ث) | مطرِّف المازني أبو سعيد | ١٧٧٠، ٢٧٣٧ |
| ما تمنّيتُ شيئاً قطُّ (ث) | محمد بن سيرين | ٤٥٧ |
| ما توسَّل إليَّ أحدٌ بوسيلة هي أقرب يداً (ث) | جعفر بن محمد | ٦٨٣ |
| مات يتيم لعائشة أمِّ المؤمنين رحمةَ اللّهِ ورضوانه عليها | | |
| فجزعت عليه (ث) | المدائني | ١٣٥٠ |
| ما تاه على أحد قط مرتين | بعض حكماء العرب | ١٥٨٣، ٢١٢٢ |
| ما جاءني أحدٌ من بغداد يطلب هذ الأمر لله ـ يعني الحديث ـ إلاّ رجل واحد وهو بشر بن الحارث (ث) | أبو الوليد الطيالسي | ٨١١، ٣٢٣٩ |
| ما جال في نفسي شيءٌ منذ أربعين سنةً إلاّ تركتُه (ث) | حذيفة بن قتادة المرعشي | ٢٢٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما جسنس الزيادي وهو شيخ من قدماء الفرس وحكمائهم | الأصمعي | ١٢٩٩ |
| ما جلس الربيعُ بن خثيم في مجلس (ث) | الشعبي | ١٩٠٩ |
| ما جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه لأحد | علي بن أبي طالب | ٣٤٩ت |
| ما جمع رسول الله صلى الله عليه وسلم أبويه لأحد إلاّ لسعد | علي بن أبي طالب | ٣٤٩ت |
| ما حاجتي أن أتكلم بكلمة، إن وقعت علي ضرتني | ملك | ٢٤٤٢ |
| ما حاضت امرأة بعد خمسين سنة (ث) | عائشة | ١١٣٤ |
| ما حجبني رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا رآني إلاّ ابتسم | جرير بن عبد اللّه البجلي | ٨٢، ٣١٦٨ |
| ما حجبني رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا رآني منذ أسلمت إلاّ ابتسم | جرير بن عبد الله البجلي | ٨٢ت |
| ما حسدتُ أحداً قطُّ على شيءٍ إنّ كان من أهل النّار (ث) | محمد بن سيرين | ٢٩٣١ |
| ما خان شريفٌ ولا كذبَ عاقلٌ ولا اغتاب مؤمنٌ (ث) | الأحنف بن قيس | ١١٢٨ |
| ما خدعني أحدٌ قط إلا غلام من بني الحارث | المغيرة بن شعبة | ٩/٢٤٣٥ |
| ما خطبنا رسول الله صلى اللّه عليه وسلم إلاّ أمرنا بالصدقة | عمران بن حصين | ٥١٥ |
| ما خلق اللّه تبارك وتعالى أو قال: ما ذرأ الله من نفسٍ أكرم (ث) | ابن عبّاس | ٢٥٢٧ |
| ما خيرٌ لك. بعتَ عِلْمَ أبيك بأربعةآلاف دينارٍ (ث) | عكرمة | ٧٨٣ |
| ما دخلت بين اثنين قط حتى يكونا هما يدخلاني في أمرهما (ث) | الأحنف | ٣٢٤٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما الدنيا في الآخرة إلاّ مثل ما يجعلُ أحدُكم أصبعه في اليَمِّ (ث) | المستورد بن شدّاد | ٨٥٠ |
| ما الدنيا كلها من أوّلها إلى آخرها إلاّ كرجل نام نومة (ث) | الحسن البصري | ٢٠٥٦ |
| ما ذاك يرحمك الله الذي كتبت إلي ... فآلى يوسف على نفسه لا يأكل لبناً أبداً (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٢٤ |
| ما رأس الأشياء؟ ... صدقت وبحق قلدانك ما قلدانك (ث) | أنو شروان | ١٨٨٢ |
| ما رأيت أجرأعلى اللّه من فلان (ث) | رجل | ١٧٦١ |
| ما رأيت أحداً أشجع (ث) | ابن عمر | ٣٤٦١ |
| ما رأيتُ أحداً الخوف أظهر على وجهه (ث) | أبو سليمان الدّاراني | ٢٢٦٩ |
| ما رأيت أحداً أنصح للعامة | يونس بن عبيد | ٤/٣٠٥٨ |
| ما رأيتُ أحْضَرَ جواباً من زنديق أُدْخِلَ على الرّشيد (ث) | الأصمعي | ٣١١٥ |
| ما رأيتُ أميراً قطّ أفضل من المهلّب بن أبي صفرة (ث) | أبو إسحاق | ١٥٣٠ |
| ما رأيتُ رجلاً أعبدَ من ثابت البناني إنْ كان ليصلّي (ث) | سرار العنزي | ٢٥٥٦ |
| ما رأيت رجلاً أورع من ابن عمر ولا أفقه من ابن عبّاس (ث) | ميمون بن مهران | ٢٥٨٤ |
| ما رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يستلم إلاّ هذين الركنين | ابن عمر | ٣٤٦٢ |
| ما رأيتُ سرفاً قطّ إلاّ وإلى جانبه حَقٌّ مُضَيَّع (ث) | سفيان بن عيينة | ٦٧٠ |
| ما رأيت قرشياً قَطّ أقرأ من علي بن أبي طالب (ث) | أبو عبد الرحمن السلمي | ١٠٧٨ |
| ما رأيتُ لهؤلاء رأياً قط، إني لم أر رأياً قط (ث) | إبليس | ١٨٠١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما رأيت مثل الجنة نام طالبُها، وما رأيت مثل النّار نام هاربُها (ث) | مهران بن حيّان | ٨٤٨ |
| ما رأيتُ مجلساً أكرم من مجلس ابن عبّاس (ث) | عطاء بن أبي رباح | ١٢٢٧ |
| ما رأيتُ من النّاس رجلاً لا يتكلم ببعض ما لا يريد غير عاصم بن عمر بن الخطاب | محمد بن سيرين | ٢٠٩٤ |
| ما رأيت هناك درجةً أرفع من درجة العلماء (ث) | الأوزاعي | ٣٥٧٨ |
| ما رأينا العقل قط إلاّ خادما للجهل | يحيى بن خالد | ١٠٥٨ م |
| مارؤي قط إلاّ وهو يطيع اللّه (سئل عن كرز) (ث) | ابن شبرمة | ١٢٤٤ |
| ما زال لقمان الحكيم يعظ ابنه حتى انشقت مرارته من خوف الله عز وجل | فضيل الرقاشي | ١٣٤١ |
| ما زال يتقلّبُ في أصلاب الأنبياء (ث) | ابن عبّاس | ٣٤٨٩ |
| ما زلتُ أسمع من أشياخ أهل المدينة أنه لم يبلغ أحد من ولد ...(ث) | عبد الرحمن بن عبد اللّه الزهري | ١٢٦٢ |
| ما زلنا أعزّةً منذ أسلم عمر بن الخطاب رضي الله عنه (ث) | ابن مسعود | ١٩٣ |
| ما سأل الله العبد شيئاً أحب إليه ... | عبد الله بن عمر | ١٥٦٧ت |
| ما سألت اللّه الجنة قطُّ وإنّي لأستحيي منه (ث) | داود الطائي | ١٩٢٦ |
| ما سئلت بهذه الرحم قط قبل اليوم، وقد بعت لي حائطاً بسبع مائة ألف درهم | طلحة بن عبيد الله | ١٣٠٧ |
| ما سألني أحدٌ قطُّ حاجةً فرددتُه إلاّ رأيتُ الغنى (ث) | معن بن زائدة | ٥٥٠ |
| ما سايرتُ ثابتاً البناني في حاجةٍ قطّ إلاّ كان أول (ث) | حميد الطويل | ١٧٩٦ |
| ما السَّخاء ؟ (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| ما السرور يا أبا عبد اللّه؟ (قاله لعمرو بن العاص) (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ١٨٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما سقط غبار موكبي على أحدٍ قطُّ (ث) | يحيى بن خالد | ١٠٥٨ |
| ما سُمِعَ من أيوب مزحة قط غيرها (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٦٠٠ |
| ما سمع النّاس بمثل عمر رضي اللّه عنه في باب الدين والدنيا | الأحنف بن قيس | ١٧٦٧ |
| ما سمعت رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يقول لأحدٍ يمشي على الأرض إنّه من أهل الجنّة إلاّ لعبد اللّه بن سلاّم | سعد بن أبي وقّاص | ٣٤٥٩ |
| ما سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يستفتح دعاء إلاّ | سلمة بن الأكوع | ٣٠٩٩ت |
| ما سمعت قول حسّان بن ثابت رضي اللّه عنه: إذا تذكرت شجواً من أخي ثقة فاذكر أخاك أبا بكر (سُئِل أيّ النّاس أوّل إسلاماً) (ث) | ابن عبّاس | ٦٢٥ |
| ما سمعنا شيئاً أحسن من هذا في كلام ابن سيرين (ث) | مسلم بن إبراهيم | ٢٩٣١ |
| ما السيف الصارم في كف الرجل (ث) | المهلب بن أبي صفرة | ٢٦٠١ |
| ما شبع آل محمد صلى اللّه عليه وسلم منذ قدموا المدينة ثلاث ليالٍ متتابعة (ث) | عائشة | ٣٧٦، ٩١٩ |
| ما شبَّهت القاريء إلاّ بالدّرهم المزيّف إذا قشرته خرج ما فيه (ث) | سفيان الثوري | ٢٨٨٠ |
| ما شَرِبَ أبو بكر رضي اللّه عنه خمراً في الجاهلية ولا في الإسلام (ث) | عائشة | ١٥٢ |
| ما شيء أشدُّ تَوَلِّياً من قاريءٍ إذا تَوَلّى (ث) | الحسن البصري | ٢٩٠٥ |
| ما شيءٍ أقعد بامرىءٍ عن (ث) | عمر بن الخطاب | ١٩٦٤ |
| ما شَيَّبَ رأسي إلاّ الرّفقاء (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٩٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما شتمتُ أحداً قطُّ ولا رددت سائلاً قطُّ (ث) | أسماء بن خارجة | ٤٩٩ |
| ما صنعت بكم الشجرة؟ ... فما رأيت أحداً كان أسرع جواباً منه (ث) | رقبة بن مصقلة | ٢٩٠٩ |
| ما الصوم والصلاة والجهاد عند الأمر بالمعروف (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٤٥/م |
| ما صِيْدَ من صَيد ولا عُوضِدَ من شجرةٍ إلاّ لما ضيّعت من التسبيح (ث) | أبو بكر الصديق | ٩٨ |
| ما ضُرِبَ النّاس بضربِ سَوْط أشدّ من الفقر (ث) | سعيد بن عبد العزيز | ٢١٨١ |
| ما ضَلَّ قوم بعد هدىً كانوا عليه إلاّ أوتوا | أبو أمامة | ١١٠٤ |
| ما ظنُّك بأقوامٍ قاموا على أقدامهم مقدار خمسين ألف سنة(ث) | الحسن البصري | ١٦١٣ |
| ما ظنُّكم بقومٍ وقفوا بين يدي اللّه عَزَّ وجلَّ مقدار خمسين ألف سنة (ث) | بشر بن الحارث | ٣٥٧٤ |
| ما ظنكم بمكر العربي ودهاء العجمي إذا اجتمعا في رجل | عمر بن الخطاب | ١٥٣١ |
| ما عاتبَ المرءُ الكريم كنفسه (ث) | لبيد بن ربيعة | ٥٥٤ |
| ما عالج المَتعبِّدون شيئاً أشدَّ عليهم من اتقاء حب الثناء (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٨٦٢ |
| ما عزّاني أحدٌ بمثل تعزيتك (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٣٦ |
| ما عَصى اللّه عَزَّ وَجَلَّ كريمٌ ولا آثر الدنيا على الآخرة حكيم (ث) | هَرِم بن حيَّان | ٣٠١٣ |
| ما على ظهر الأرض من نفسٍ منفوسة تأتي عليها مئة سنة | جابر بن عبد اللّه | ٣١٣٧ |
| ما على ظهر الأرض من رجل مسلم يدعو | عبادة بن الصامت | ١٢٤ت |
| ما عندي ثمنه ... أنا أُنْظِرُ نفسي إلى الآخرة (ث) | أبو حازم | ٩٦٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما العيش يا أبا جعفر؟ (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ٣٠٧٨ |
| ما غبنت قطّ حتى يغبن قومي | أعرابي | ١٤٠٧ |
| ما فجر غيور قطّ يقول: إن الغيور هو الذي (ث) | همّام بن مرّة الشيباني | ١٠٦٦، ١٠٦٦ت |
| ما فعل أخوك إبراهيم بن أدهم ... أما إنّ عهدي به أنّه | | |
| ليركب (حكاه لأبي عثمان الأسود) (ث) | عبد العزيز بن أبي روّاد | ١٩٤٩ |
| ما فعل الشاب؟ ... ما هذا السويق؟ (ث) | الأصمعي | ٧٦٩ |
| ما في جهنّم أحدٌ يتنفّسُ لا رجل ولا امرأة حبس (ث) | عبد الله بن أبي الهذيل | ١٥١٩ |
| ما في الدنيا شيء يسرُّك إلاّ قد أُلْزِقَ به (ث) | أبو حازم | ١٣٩٩ |
| ما في السماء الدنيا موضع قدم | عائشة | ٢٢ت |
| ما في السموات سماء منها موضع إلاّ وعليها جبهة ملك (ث) | ابن مسعود | ٢٢ |
| ما في الشيطان شَرٌّ مما ذكرت (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٥٦ |
| ما في هذا ممّا يمدحهم به، قال: أراد أنهم ملوك حلول (ث) | الأصمعي | ٧٤٨ |
| ما قال فيكم؟ (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٨ |
| ما قرأ عليٌّ عِلج أقرأ منك (قاله للحسين بن واقد) (ث) | الأعمش | ٢٥٦١ |
| ما قل سفهاء قوم قط إلا ذلوا | محمد بن المنذر | ١٣٦٩ |
| ما كان أحدٌ يطيق ينظر إلى الحسن البصري إلاّ بكى (ث) | عبد الواحد بن زيد | ٢١٥١ |
| ما كان اللّه عز وجل ليراني أنّ أرى نفسي أهلاً لمجلس أبي بكر (ث) | عمر بن الخطاب | ١٢٩١ |
| ما كان عملك فإنّي لأراك لا تهدأ من البكاء (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٣ |
| ما كتبْتُ سواداً في بياض قطُّ، ولا حدّثني رجل | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| بحديث إلاّ حفظته (ث) | الشعبي | ٣١٧ |
| ما كذبْتُ قطُّ إلاّ مرّةً واحدة، فإنّ أبي قال لي: (ث) | عبد اللّه بن داود الخريبي | ٢٥٤ |
| ما كُنّا نشاء أن نرى رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم من الليل | أنس بن مالك | ٢٣٥٨ |
| ما كنت أرى أحداً يسمع بذكر الجنّة والنّار يأتي عليه (ث) | راهب | ٢٠١٢ |
| ما كنت أرى هذا يكون، وقد علمت أن الكلبة (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٠٨٥ |
| ما كنت لأعبدَ شيئاً لم أره ... لم تره الأبصار بمشاهدة العيان، ولكن رأته القلوب (ث) | محمد بن علي بن الحسين | ٢٢٥٧ |
| ما لك جالستَ أقواماً يريدون أن يدفنوا ما جاء به محمد صلى اللّه عليه وسلم (ث) | ابن سيرين | ٥٦٣ |
| ما لَكَ يا أبا محمد واقفاً في هذا الموضع؟ (قاله لسفيان ابن عيينة) (ث) | الحميدي | ٨٦٢ |
| ما لكم لا آب غازيكم ولا زالت نساؤكم في رنةٍ (ث) | عائشة | ٣٠٨٣ |
| ما لنا نكره الموت؟ (قاله لأبي حازم) (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٢٧١، ٣٤٥٦ |
| ما لي أراك كئيباً ... وما ذاك ... ويحك يا ابن المبارك (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٢٩٢ |
| مالي وللدنيا يكفيني صاع من طعام في كُلِّ جمعة (ث) | أبو ذَرٍّ | ٩٠٧ |
| ما لي أرى عينيك لا تجف من البكاء .. عسى أن (ث) | عبد الرحمن بن يزيد بن جابر | ١٤١٩ |
| مالي أراكم أخصب شيء ألسنة وأجدبه قلوباً | الحسن البصري | ٩٥٥ت |
| ما مالك؟ لقد تلطفت للسؤال | أبو جعفر المنصور | ١٤٢٣ |
| ما مر بي مثلها | الفرزدق | ٣٤٧٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما المروءة؟ (سأل معاوية بن أبي سفيان) (ث) | عمرو بن العاص | ٨٢٣ |
| ما المروءة؟ (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| ما المروءة يا أبا عبد اللّه؟ ... فما النجدة؟ .. ..فما الجود؟ | معاوية بن أبي سفيان | ١٧٠٤ |
| ما مست يد رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم يد إمرأة قطّ | عائشة | ٣٢٠٩ |
| ما مُسِخَ أحدٌ قطُّ فكان لهم نَسْلٌ ولا عقب | أم سلمة | ٥١٢ |
| ما مضى من خطاياهم، وما خلفها من خطاياهم (تفسير قوله تعالى: ﴿فجعلناها نكالاً لما ... ﴾) (ث) | مجاهد | ١٤٨٨ |
| ما من أحد أسدى إلى أحدٍ من بني هاشم يداً فلم يكافئه | عثمان بن عفّان | ٢٨٠ |
| ما من أحد أطاعني إلا استجبت له من قبل أن يدعوني | قول اللّه تعالى | ٩٢٤، ٢٩٨٥ |
| ما من أحدٌ يغدو أو يروح إلى المسجد ويؤثره على ما سواه | أبو هريرة | ١١٩ |
| ما من أهل بيتٍ إلاّ ومَلَكُ الموت يطوف بهم (ث) | مجاهد | ١٤٥١، ٢٠٣٠ |
| ما من حاكم يحكم بين النّاس إلاّ حُشِرَ، وملك آخذ بقفاه (ث) | عبد اللّه بن مسعود | ٣٢٥ |
| ما من داع يدعو إلا | زيد بن أسلم | ١٢٥ت |
| ما من رجل من المسلمين إذا أصبح إلاّ اجتمع هواه وعمله (ث) | أبو الدّرداء | ١٧٩٨ |
| ما من رجل ينتقص من أمانته إلاّ انتقص إيمانه (ث) | عروة بن الزّبير | ١٧٠٢، ١٩٤٨ |
| ما من شعرة تبيّض إلاّ تقول للسوداء يا أختاه (ث) | وهب بن منبّه | ٢١٩٨، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| | | ٣٤١٣ |
| ما من شيءٍ تقرؤون في القرآن (ث) | خيثمة | ٢٤٦٣ |
| ما من صاحب كبيرة لا يكون وجل القلب إلاّ كان ميّت القلب (ث) | الحسن البصري | ٢٤٧٤، ٣٠٠٢ |
| ما من عامٍ إلاّ تظهر بدعة وتموت سنّة (ث) | ابن عباس | ٨١٣ |
| ما من عبد مؤمن يخرج من عينيه دموع | ابن مسعود | ١٩٩ |
| ما من عبد يكف بصره عن محاسن امرأة | عائشة | ٢٨٥٨ت |
| ما من العمل شيء أشدّ على أهله من طول الكمد (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٧٧٢، ٣٤٢٨/م |
| ما من قومٍ يجتمعون في بيتٍ من بيوت اللّه (ث) | أبو هريرة | ٢٣٤٤ |
| ما من قوم يعمل فيهم بالمعاصي هم أعزّ وأكثر | جرير | ٢٥٠٦، ٣٠٣٧ |
| ما من قوم يكون بين أظهرهم من يعمل بالمعاصي هم أعزّ وأمنع | جرير | ٢٨٨٢ |
| ما من مسلم يدعو الله عز وجل بدعوة | أبو سعيد الخدري | ١٢٥ت |
| ما من معمر يعمر في الإسلام أربعين سنة إلا صرف اللّه عنه | أنس بن مالك | ١٣٣٤ |
| ما من مولود يولد إلا وفي سُرَّته من تربة الأرض التي يموت فيها (ث) | هلال بن يساف | ١٩٠ |
| ما من نبي إلاّ وله سبع نجباء | علي بن أبي طالب | ٣٥١٤ |
| ما من يوم إلاّ وليلته قبله إلاّ يوم عرفة (ث) | ابن عبّاس | ٥٤٠ |
| ما منعك أن تجيبني؟ ... وما اسمك؟ (ث) | العتابي | ٤٣٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما النّار في يَبَس العرفج بأسرع من الكذب في فسادِ مروءة (ث) | عمر بن الخطاب | ١٧٤٤ |
| ما النّاس إلا من قال حدثنا وأخبرنا (ث) | أحمد بن حنبل | ٣٤٣٨ |
| ما نسيتُ شيئاً قطُّ (ث) | قتادة | ٢٦٠٢ |
| ما نظمت في الغضب بكلمة ندمت عليها في الرِّضا (ث) | مؤرق العجلي | ١٦٩٩ |
| ما نعلم في أهل البدع والأهواء أقواماً أضعف عقولاً ولا أكثر اختلافاً وتخليطاً من الرّافضة (ث) | عبد اللّه بن مسلم ابن قتيبة | ١٠٦٥ |
| ما نفعني مالٌ قطُّ إلاّ مال أبي بكر | أبو هريرة | ١٥١ |
| ما ننكر للّه قدرة إلاّ أنّي أنكر أن يكون هذا أحداً من أهل زماننا يفعل به هذا، والربيع بن صبيح وحميد عدلان مرضيان (ث) | سليمان بن علي أمير البصرة | ٨٦٨ |
| ما نهاني الأطباء عن شيء ما نهوني عن الشرب متكئاً ... واللّه لا أشرب متكئاً أبداً (ث) | هشام | ١٩٨٦ |
| ما ها هنا رجل ممن إدرك أصحاب النبي صلى اللّه عليه وسلم | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| ما هبَّت الصبا إلاّ بكيت على أخي زيد، وكان إذا لقي متمم بن نويرة (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٨٧، ٢٠١٦ |
| ما هذا ... أتحبُّ أن توكل إليها، أنبُذْها عنك (ث) | عمران بن حصين | ١٨٣٨ |
| ما هذا الأثر بوجهك ... أما أنك لو ركبت الأشهب لم يصبْك (حكاه للحارث بن بدر) (ث) | زياد | ١٦٤٢ |
| ما هذا الدعاء؟ ... عليك من الدعاء بما يُعرف .... صدقت (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٨١٣ |
| ما هذا؟ ... قولوا لهم: اخسؤوا فيها ولا تكلّمون (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ١٩٨٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما هذا؟ ... وما الكتّان؟ (ث) | عمر بن الخطاب | ٩٨٦ |
| ما هذا يا أمير المؤمنين؟ (ث) | الزهري | ٥٠٤ |
| ما هذا يا أبا بكر ما أعرف هذا من فعالك | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٨ |
| ما هلكَ جِيلٌ قطُّ حتَّى تَخَلَّفَ فيه المنانيّة (ث) | منصور بن المعتمر | ٢٦٠٣ |
| ما هما بأحبّ الطعام إليه، ولكنّه يحبُّ خصب المسلمين (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٣٨ |
| ما وجدت لئيماً قطُّ إلاّ وجدتُه رقيق المروءة (ث) | عمر بن الخطاب | ١٦٥٩، ٢٨٩٨ |
| ما وجدتُ مثل القاضي العالِم إلاّ مثل رجل وقع في بحر (ث) | أبو قلابة | ١٨٦٧ |
| ما وُصف لي رجل بفضلٍ فلقيته إلاّ وكان دون ما وُصِفَ لي (ث) | الحجّاج بن عبد الأعلى | ٢١٥٠ |
| ما وعظني أحدٌ أحسنَ ممّا وعظني طاوس، كتب إليَّ: استعنْ بأهلِ الخيرِ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٤٦٦ |
| ما يجلسكم ... قوموا (ث) | سفيان الثوري | ١٠٨٢ |
| ما يسرني أنّ أحداً من العرب (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٢٣٤ |
| ما يسرني إني أنزل دار معجزة فأسمن وألين (ث) | أكثم بن صيفي | ٥٠٣ |
| ما يسرّني أني قمت بدار معجزة وإنّي أسمنت (ث) | أكثم بن صيفي | ١٩٢٢ |
| ما يسرّني أني كذبت كذبة (ث) | مطرِّف بن طريف | ٢٦٣٥ |
| ما يسرّني بذل نفسي كذا وكذا (ث) | الأحنف بن قيس | ١٩١٢، ٢١٨٢ |
| ما يصنع هؤلاء؟ | | |
| ما صلي على أبي بكر إلاّ في المسجد (ث) | عروة بن الزبير | ٢١٧٩ت |
| ما يفقد الحر من الصيانة أكثر | ... | ٣٠٦٤/م |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما يقول هذا الخراساني؟ ... قولوا له نعم | سفيان بن عيينة | ٢٢٧٩ |
| ما ينبغي لمن خرج من مخرج البول مرتين | الأحنف بن قيس | ٢١٦٣ت |
| ما ينفعك دعائي لك وعلى بابك أكثر من مئتين | | |
| يدعون عليك | بلال بن أبي بردة | ١١١٥ |
| ما يمنعك أن تزورنا ... فنزلت: | | |
| ﴿وما نتنزل إلاّ بأمر ربِّكَ﴾ | ابن عبّاس | ١٠١٩ |
| متى أجد ثمانية دراهم أشتري بها فروا (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٥٩ |
| متواضع في جبايته، عربي في نمرته، أسد في تامورة | سعد بن أبي وقّاص | ٢٠٢٠ |
| مثل أصحاب الحديث مثل الصيّاد (ث) | إبراهيم الحربي | ٣٤٨١ |
| مثل الذي يدعو لغير عمل مثل الذي (ث) | وهب بن منبّه | ٢٣٠٤ |
| مثل المجاهد في سبيل الله كمثل القانت الصائم الذي | ( ) | ١٣٩٢ |
| مثل النخلة لا يتحرَّك، فسار موسى عليه السلام | | |
| ومن معه (ث) | عمرو بن ميمون الأزدي | ١٣٣٨ |
| مُثّلت الدنيا على طائر، فمصر والبصرة الجناحان (ث) | إياس بن معاوية | ٣١٨ |
| مثلك أوجب حقاً لا يجب عليه، وسمح | | |
| بحق يجب له | رجل | ٧١٠، ٣٢١٩ |
| مثلكم لا يساكن أهل الثغر (ث) | القاسم بن سلاّم | ٨٦٥ |
| مجّدوا الله وهو للمجد أهل (ث) | أمية بن أبي الصلت | ٣٤٠٤ |
| مخادمة الإخوان، وكفاف من عيش يسد خلتي | بعض حكماء العرب | ٢٩٤٦ |
| مُذْ أربع وعشرين سنة (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٣٨ |
| مرحباً بابنتي فأقعدها عن يمينه ثم أسرَّ إليها حديثاً فبكت عائشة | | ١٣٦٢ |
| مَرَّ أبو الديك وكان معتوهاً على معلم كتاب في | | |
| جبانة كندة (ث) | أبو نعيم الفضل بن دكين | ٩٨٠ |
| مر أمتك فليكثروا من غراس الجنّة | إبراهيم عليه السلام | ٣٦، ١٧٦٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| مرَّ أويس القرني على قصّار في يوم شديد البرد | | |
| فرحمه أويس (ث) | الحكيم بن عتيبة | ٥١٤ |
| مَرَّ بعبد اللّه بن جعفر وهو يبيع | عمرو بن حريث | ٢٠٧٢ |
| مر بهلول في السوق وهو يأكل فاستقبله | الحسين بن الحسين عن أبيه | ٩٨٣ |
| مر الحجاج في يوم جمعة فسمع استغاثة فقال: | السُّري | ١٩٨٤ |
| مَرَّ رجل بامرأة من العرب في بادية، فقال لها: | | |
| هل من لبن يباع؟ (ث) | أبو زيد النحوي | ٢٣٨٨ |
| مَرَّ رجل بجارين له ومعه ريبة، فقال أحدهما لصاحبه: | | |
| فهمتُ ما معه (ث) | جعفر | ٢١٧٣ |
| مَرَّ رجل بصديق له ومعه رجل ثقيل (ث) | ابن قتيبة | ٢١٤٦ |
| مَرَّ رجل على راهب، فقال له: يا راهب كيف | | |
| رأيت نشاطك (ث) | وهب بن منبّه | ٢٠١٢ |
| مَرَّ رجلٌ في بادية بني عذرة فإذا بفتاة كأحسن ما يكون | | |
| فنظر إليها (ث) | أبو نصر | ٣٢٨٥ |
| مَرَّ رجل من الصالحين بأرض فيها فتىً جميل فرجع | | |
| إليه بعد شهرٍ (ث) | ابن عائشة عن أبيه | ٢٨٨٤ |
| مَرَّ سليمان بن داود صلى اللّه عليه وسلم والطير تظلّله | | |
| والجنُّ والإنس (ث) | أبو عمران الخولاني | ٢٠٧٤ |
| مر ظلمة بني إسرائيل أن يقلوا من ذكري فإنّي | أثر إلهي | ٩٦٨ |
| مر على باب الدار بإزاء باب جعفر بن سليمان الهاشمي صالح المري | | ١٥١٦ |
| مَرَّ عيسى صلى اللّه عليه وسلم ببقرة قد اعترض ولدها | | |
| في بطنها (ث) | ابن عبّاس | ١٩٩٥ |
| مَرَّ عيسى صلى اللّه عليه وسلم بخراب، فقال: | | |
| يا خراب الخربين أين أهلك الأوّلون؟ (ث) | ابن عبّاس | ٧٩٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| مَرَّ عيسى صلى اللّه عليه وسلم بقوم يبكون على (ث) | ابن شوذب | ٢٤٩٨ |
| مر النبي صلى الله عليه وسلم بناس من قريش | | |
| في ظل الكعبة | عمرو بن العاص | ٦٧٣ت |
| مَرَّ يحيى بن زكريا بقبر دانيال النبيّ صلى اللّه | | |
| على نبيّنا وعليه فسمع (ث) | معاذ بن رفاعة | ١٦٤٧ |
| مررت بأعرابية وبين يديها شاب في السياق ثم | | |
| رجعت وبين يديها قدح (ث) | الأصمعي | ٦٧٩، ٣٢٣٦ |
| مررت بدير حرملة وبه راهب كأن عينيه غرلاً مزاده، | | |
| فقلت له (ث) | خلف بن تميم | ١٨٢٥ |
| مررت بدير فإذا راهب ينادي فرفعت رأسي إليه، فقال | | |
| لي: ويحك هب أنّ المسيء (ث) | العتابي | ٤٣٣ |
| مررتُ بديرٍ فصحتُ يا راهب ... يا صاحب | | |
| الدير (ث) | العتابي | ٤٣٤ |
| مررت برجل من العبّاد بالبصرة وهو يبكي، فقلت: | | |
| ما يبكيك؟ (ث) | بشر بن الحارث | ١٨٢، ٣٣٧٦ |
| مررت بطاق المحامل وإذا أنا بـ «عُلْيان» المجنون جالس | | |
| فلمّا أنْ جزته (ث) | حفص بن غياث | ٩٨١ |
| مررت بقصار يلوي ثوباً في يوم شديد البرد | رقبة بن مصقلة | ٢٩٠٩ |
| مررت على راهب في جبل أسود فناديتُه: يا راهب | | |
| فأشرف عليَّ (ث) | حذيفة المرعشي | ٢٠١٣ |
| مُري أبا بكر فليصلِّ بالنّاسِ | عائشة | ٣٥٦١ |
| مسيرة سبعين ألف سنة (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿وظلٍّ محدود﴾) (ث) | عمرو بن ميمون | ٤٧ |
| مشريق الباب مدخل الشمس فيه (حكاه تفسيراً لكلام | | ٢٦٠٨، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وهب) (ث) | إبراهيم الحربي | ٣٠٢٠ |
| مَطْلُ الغنيِّ ظلمٌ | بهلول | ٩٨٣ |
| معالجة الموجود خير من انتظار المفقود | بعض الحكماء | ٢٨٩٧ |
| معنى الزهد هو ثلاثة أحرف: زاي وهاء ودال، فأمّا | | |
| معنى الزاي (ث) | سفيان بن عيينة | ٧٠ |
| معنى قول العرب: ذَكَّرْتني الطعن وكنتُ ناسياً | | |
| سببَه (ث) | المفضَّل بن محمد الضبيّ | ٥٣٣ |
| معنى قول النّاس: الحديث ذو شجون قال: هوَ ضَبَّة | | |
| ابن أُدٍّ وكان له ابنان سعد وسعيد (ث) | المفضَّل بن محمد الضبيّ | ٥٣٢ |
| معنى قول النّاس في الصيف ضيعت اللبن | المفضل الضبي | ١٠٢٨ |
| معنى قول النبي صلى اللّه عليه وسلم: اكتفوا من | عبد اللّه بن مسلم | |
| الأعمال (ث) | بن قتيبة | ١٣٥٨ |
| معنى قول النبيّ صلى اللّه عليه وسلم: من نوقش الحساب | | |
| عُذِّب ... والنقش هو الاستقصاء حتَّى لا يترك | | |
| منه شيء (ث) | سفيان بن عيينة | ٣ |
| معنى قوله: أنا الذي سمتني أمّي حيدرة. ذكروا أن | | |
| علي بن أبي طالب رضي اللّه عنه وأبوه أبو طالب | عبد اللّه بن مسلم | |
| غائب فسمَّته أمّه فاطمة ابنة أسد (ث) | بن قتيبة | ٩٠٤ |
| معنى هذه الآية أن عيسى صلى اللّه عليه وسلم غاب | | |
| عن خالته زماناً (تفسير قوله تعالى: ﴿ومكروا ومكر | | |
| اللّه﴾) (ث) | الفرّاء | ٣٥٨١ |
| معنى هذا الحديث حسن، وذلك أنّ اللّه عزَ وجلَّ | | |
| يخلد المؤمن في جنّته (تأويل حديث النبي صلى | عبد اللّه بن مسلم | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّه عليه وسلم: «نية المؤمن خير من عمله» | بن قتيبة | ١٣٥٧ |
| مقام الرّجل في الصّف في سبيل اللّه أفضل من | | |
| عبادة ستين سنة | عمران بن الحصين | ٣٤٥٧ |
| مقتل الرجل بين فكيه يعني اللسان والفكان اللحيان | أكثم بن صيفي التميمي | ٨٧٩، ٣٤٣٧ |
| مكابدة العفّة عنهنّ أيسر من الاهتمام (ث) | العتابي | ٢٧٥٣ |
| مكتوب في التوراة: ابن آدم انظر ما نَحَلْتَ (ث) | أبو قلابة الجرمي | ٢٥٧ |
| مكتوب في صحف إبراهيم صلى اللّه عليه وسلم: | | |
| يا دنيا ما أهونك على الأبرار (ث) | داود بن هلال | ١١٥٤ |
| مكتوب في الكتاب الأوّل: مَثَلُ أبي بكر مثل القطر | | |
| حيث وقع نفع (ث) | الربيع بن أنس | ١٦٧ |
| ملك حادث ... قص الجناح ... عرس جديد | عبيد اللّه بن أبي بكرة | ١٣٨٠ |
| ملكان بين نابي الإنسان (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿ما يلفظ من قولٍ إلاّ لديه رقيب عتيد﴾) (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٦ |
| الملكان لا يعلمان الغيب ولكن إذا همّ العبد بحسنة(ث) | سفيان بن عيينة | ٢٨ |
| ملئت الجنّة في ثلاثة أصناف من الحيوان: فالإبلُ تحنُّ | | |
| إلى أعطانها (ث) | الأصمعي | ٣٣٣ |
| ممّن الرّجل؟ ... ولدُ تميم فلاناً وفلاناً .. من فلان (ث) | قتادة | ٢٨٢٩ |
| ممّن سمعت هذا؟ (سمع جارية تدعوا) (ث) | ثابت البناني | ٨٥٤ |
| من أبطره الغنى أذله الفقر ومن أمرحته العافية | | |
| هده السقم | بعض الحكماء | ١٦٦٢ |
| من أتى الجمعة فليغتسل | ابن عمر | ٣٥١٩، ٣٥٥٧، ٣٥٥٨ |
| من اتّجرَ في شيءٍ ثلاث مرّات فلم يُصب منه | عمر بن الخطاب | ٢٥١٣، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فليتحوّل إلى غيره (ث) | | ٣٠٠٩ |
| من اتخذ الصبر جنة وقاه اللّه عزّ وجلّ عظيمات الزلل | بعض العرب | ١٧١٣ |
| من اتّقى اللّه لم يشفِ غيظه ومن خاف اللّه (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٣٦٤ |
| من الإثم (تفسير قوله تعالى: ﴿وثيابك فَطَهِّرْ﴾) (ث) | عطاء بن أبي رباح | ١٥٢٩، ٣٠٤٣ |
| من أحب اكتساب محمود الذكر | يوسف بن أسباط | ١٦٥١ |
| من أحبَّ أن تمثل الرِّجال له قياماً فليتبوأمقعده من النار | ( ) | ٣٤٢ |
| من أحبّ أن يعصي اللّه لم يزل له عمل ومن دعا (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٠٨ |
| من أحبَّ أن يعلم ماله عند اللّه عَزَّ وَجَلَّ فليعلم (ث) | ميمون بن مهران | ١٥٥١ |
| من أحب أن ينظر إلى سيد شباب أهل الجنة | جابر بن عبد الله | ٣١٦٤ت |
| من أحبك نهاك ومن أبغضك أغراك | بعض الحكماء | ٢٣٨٩ |
| من أحبّني فارزقه العفاف والكفاف ومن أبغضني فأكثِر ماله وولده | أبو هريرة | ٢٩٨٠ |
| من أحسنَ عبادة اللّه في شبيبته لقّاه اللّه تبارك وتعالى الحكمة عند كبر سنّه، وذلك قوله عَزّ وجَلَّ: ﴿فلما استوى آتيناه حكماً وعلماً﴾) (ث) | الحسن البصري | ٣١٥، ٢٥٩٧ |
| من أدرك شهر رمضان فصامه من أوّله إلى آخره | ابن عبّاس | ١٦٢٢ |
| من أذن له منكم في الدعاء فتحت له أبواب الرحمة | ابن عمر | ١٥٦٧ت |
| من أراد أن يذكر هذين فليذكرهما هكذا أو فَلْيَدَع (ذِكْرُ عثمان وعلي وفضلهما وسابقتهما وقرابتهما) (ث) | ابن عمر | ٥٠٢ |
| من أراد أن يذل نفسه، فليدخل (ث) | بشر بن الحارث | (١٦) ملحق |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من أراد أن يكرم دينه (ث) | عبد الله بن مسعود | ١١١٦ت |
| من أراد الدّنيا فليتهيّأ للذلّ (ث) | وهيب | ٣٣٩٧ |
| من أراد سرور الدنيا وخزي الآخرة فليتمن ما هذا فيه | عليان المجنون | ٩٨١ |
| من أراد صلاح دينه فعليه بترك مخالطة الناس | مالك بن أنس | (٤) ملحق |
| من ازداد علماً ولم يزددّ ورعاً لم يزدد من الله إلاّ (ث) | بشر بن الحارث | ١٢٨٧ |
| من ازداد علماً ازداد وجعاً (ث) | سفيان الثوري | ١٢٨٧ت |
| من استتر عن طلب العلم بالحياء لبس الجهل سربالاً (ث) | الحسن البصري | ١٦٣٦ |
| من استشار رجلاً فأشار عليه بما رأى (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٣٩٨ |
| من استطاع منكم أن يموت في المدينة فليفعل فإنّه | | |
| من مات بالمدينة | ابن عمر | ٨١٠ |
| من استطال عليك بمسألته، وبخل عليك بماله | بعض الحكماء | ٢٧٥١ |
| من استلحقَ نسباً ليس مِنْهُ، حَتّه اللّهُ حَتَّ الورَق | سعد بن أبي وقّاص | ١٣٩٠ |
| من أشغله الثناء عن مسألتي | مالك بن الحارث | ٤٩ |
| من أصاب مالاً من مأثم فوصل به رحماً أو تصدق به (ث) | القاسم بن مُخَيْمرة | ١٤٩١ |
| من أصاب من الإيمان ما يعرف به ربّه فهو مهتدِ القلب | | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿ومن يؤمن باللّه يهدِ قلبه﴾) (ث) | ابن جريح | ٢٢٣، ٣٤٤١ |
| من أصبح وله هَمٌّ غير اللّه فليس من اللّه عَزَّ وَجَلَّ (ث) | الحسن بن صالح | ١١٦ |
| من أصغى بسمعه إلى صاحب بدعة نزعت منه العصمة (ث) | محمد بن النضر بن الحارث | ٣٣٥ |
| من اعتدل يوماه فهو مغبون ومن كان غدُه شرٌّ (ث) | أبو حازم | ١٨٦١ |
| من أعطى في صداق امرأة ملء كف سويقاً | جابر بن عبد الله | ١١٦١ت |
| من أعطى في صداق امرأة ملء كف تمراً | جابر بن عبد الله | ١١٦١ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من أعلام الخوف الورع من غضب الحليم، ثلاثة من | | |
| أعلام السخاء: البذلُ للشيء (ث) | زهير الباني | ٢٩٢٠ |
| من أعلام المعرفة الإقبال على اللّه، والانقطاع إلى اللّه، | | |
| والافتخار باللّه (ث) | حاتم الأصمّ | ٣١١٦ |
| من اغتاب خرق ومن استغفر (ث) | الحسن البصري | ١٣٤٧، |
| | | ٣٣٥٢ |
| من اغتسل من الجنابة فإنه عبدي حقاً | أثر إلهي | ٢٤٧٨ |
| من أقال مؤمناً عثرته أقاله اللّه عثرته يوم القيامة | أبو هريرة | ٦٢ |
| من أقال نادماً بيعته أقاله اللّه عثرته يوم القيامة | أبو هريرة | ٦١ |
| من اقتراب الساعة أن يفشوَ الفالج وموت الفجأة | أنس بن مالك | ٣١٧٦ |
| من أكبر الذنب أن يقول الرّجل لأخيه (ث) | عبد اللّه | ٢٦١٩ |
| من أكل بَرْجُلٍ مسلم أكلةً فإنّ اللّهَ عَزَّ وَجَلَّ يطعمه | | |
| مثلها | المستورد بن شدّاد | ١٨٢٣ |
| من الذي يقول: ... فمن الذي يقول؟ ... النابغة | | |
| أشعر شعرائكم (ث) | عمر بن الخطاب | ١٤٠٢، |
| | | ١٤٠٣، |
| | | ١٤٠٤ |
| من أهانَ قريشاً أهانه اللّه | عثمان بن عفّان | ٢٥٣٩ |
| من أنت؟ ... أنت الذي يقول في هذه القرية: | | |
| إنّك خيرهم (ث) | أبو حبيب البدوي | ٣٦٨ |
| من أنت؟ ... ذو الإبل الكثيرة ... فما صنعت إبلك؟ ... | | |
| ذلك خيرٌ سبيلها ... عَلِّمه القرآن فهو خيرٌ له (ث) | علي بن أبي طالب | ١٥٣٢ |
| من أنت؟ ... واللّه لليلة من أبي بكر ويوم خير من | | |
| عمر وآل عمر (ث؟) | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٨ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من أنتم ... أنتم المتوكّلون، إنّما المتوكل الذي (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٠٢٧ |
| من أنسأ معسراً أو وضع له | أبو قتادة | ٣٥٠٢ت |
| من أنظر مُعْسِراً أظلّه اللّه في ظِلّه يوم لا ظِلّ إلاّ ظِلّه | أبو هريرة | ٥٦ |
| من أنظر مُعْسِراً إلى ميسرة أنظره اللّه | جابر | ٣٥٠٢ |
| من انقطع إلى ربّه (ث) | ابن المبارك | ٢٥٥٣، ٢٧٠٧ |
| من أهان قريشاً أهانه اللّه | عثمان بن عفّان | ٢٥٣٩ |
| من ترك الأمر الذي يخاف أن يعذب عليه غداً (سُئِلَ من الخائف؟) (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٢٧ |
| من ترك الحيات مخافة طلبهن | ابن عباس | ١٧٦٢ت |
| من ترك الفضول واقتصر على ... من كان رأيه.... | | |
| من بَدّل دنياه في ... من رَدَّ جهلَه علْمه (حكاه جواب على أسئلة معاوية) (ث) | عمرو بن العاص | ١٧١٨ |
| من تزوّج امرأة فليتزوجها عزيزة في قومها (ث) | خالد بن صفوان | ٣٢٧٩ |
| من تَعَلَّم علماً يبتغي به وجه اللّه لا يتعلّمه إلاّ ليصيب به عرضاً من الدنيا | أبو هريرة | ٩٧٦ |
| من ثقل على صديقه خف على عدوه | بعض أهل المدينة | ١١٣٠ |
| من جلس إلى صاحب بدعة نزعت | كثير بن سعد | ١١٢ت |
| من جلس مع صاحب بدعة | الفضيل بن عياض | ١١٣ت |
| من حدث نفسه بطول البقاء فليوطن نفسه على المصائب | بعض الحكماء | ٢٧٤٦ |
| من حفظ على أُمّتي أربعين حديثاً من أمر دينها | أبو هريرة | ٣٠٧٠ |
| مِنْ حوائج الدنيا أم من حوائج الآخرة (ث) | سالم بن عبد اللّه بن عمر | ٨٠ |
| من خاف سلطاناً عنيداً أو شيطاناً مريداً أو ساحراً (ث) | السُّدّي | ٢٥٩٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من خلصت نيّته ولو على نفسه كفاه اللّه ما بينه وبين النّاس (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٥٣٤ |
| من دعا لظالم بطول البقاء (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٣٧٣ |
| من الدناءة أن يقول الرجل لصديقه: ادخل معي الحمام (ث) | ابن المبارك | ٢١١٢ |
| من ذكر اللّه عَزَّ وَجَلَّ على دنسٍ عادت عليه عقوبات أدناسه (ث) | زهير الباني | ١٧٦٣ |
| من ذكر اللّه على حقيقة نسي في جنبه كل شيء | بعض العبّاد | ٢٦١٧ |
| من ذكر اللّه على حقيقة نسي بجنبه كل شيء | بعض الحكماء | ٢٦٥٦ |
| من ذهبت له قطيفة (ث) | أشعب | ٢٤٨٥ |
| من رأى من أخٍ له منكراً فضحك (ث) | الفضيل بن عياض | ١٩٢٧ |
| مَن رزقه اللّه رزقاً حسناً فليكن أسعد النّاس به (ث) | سعيد بن العاص | ٢٣٤١/م |
| من روى عن أمتي أربعين حديثاً | أبو هريرة | ٣٠٧٠ت |
| من زار قبري وجبت له شفاعتي | ابن عمر | ١٢٩ |
| من زارني بعد موتي فكأنّما زارني في حياتي | حاطب بن أبي بلتعة | ١٣٠ |
| من زارني في مماتي | ..... | ١٣٠ت |
| من زارني وزار أبي | ..... | ١٣٠ت |
| من زرع في أرضِ قومٍ فليس له من الزرع | رافع بن خديج | ١٠٢٠ |
| من زرع في أرض قوم بغير إذنهم فليس له | رافع بن خديج | ١٠٢٠ت |
| من زهد على حقيقةٍ كانت مؤنته في الدنيا حقيقة (ث) | أبو عبد اللّه البرّاني | ٢٣٩٦ |
| من سأل اللّه عَزّ وَجَلَّ الدنيا فإنّما يسأله طول (ث) | بشر بن الحارث | ١٣٩٧ |
| من سبب عداوته النعمة يعني الحاسد (سئل أي الأعداء لا تحب أن يعود صديقاً) | ابن السمّاك | ٦٥٧ |
| من سرّه أن يرى كيف يذهب العلم | ابن عبّاس | ٣٣٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من سره أن ينجيه الله من كرب | عثمان بن عفان | ٥٦ت |
| من سره أن ينجيه الله من كُرب | أبو قتادة وجابر بن عبدالله | ٣٥٠٢ت |
| من سَرَّه أن ينظر إلى أورع من أدركنا في زماننا فلينظر | | ١٩٤٢، |
| إلى ورع محمد بن سيرين (ث) | بكر بن عبد الله المزني | ٢٨٣١ |
| من سَرَّه أن ينظر إلى رجل من أهل الجنة فلينظر إلى هذا | | |
| (الحسين بن علي) | جابر بن عبد الله | ٣١٦٤ |
| من سَرَّه أن ينظر إلى قوم يرون أنهم يغفلون وهم لا | | |
| يغفلون (ث) | هشام بن أبي عبد الله | ٣٥٢ |
| من سعادة ابن آدم استخارة الله عزّ وجلّ | سعد بن أبي وقّاص | ٢٦٦٧ |
| من سلك طريقاً يطلب علماً سهَّلَ اللَّهُ | أبو هريرة | ٢٣٤٣/م |
| من سلم من الذنوب ... المجتهد الموفق ... الورع | بزرجمهر الحكيم | ٢٦٣٨ |
| من سمع المنادي فلم يمنعه من اتباعه عذر | ابن عباس | ٣٣٦٨ت |
| من سمع النداء فارغاً صحيحاً فلم يجب فلا | | |
| صلاة له | أبو موسى الأشعري | ٣٣٧١ |
| من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له | ابن عبّاس | ٣٣٦٨ |
| من السنة إذا تزوج الرجل البكر على الثيب | أنس | ٦١٠ت |
| من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له (ث) | ابن عبّاس | ٣٣٦٩، |
| | | ٣٣٧٠ |
| من السنة الغسل يوم الجمعة (ث) | عبد اللّه بن مسود | ٣٥٥٩ |
| من شرب الخمر في الدنيا لم يشربها في الآخرة | ابن عمر | ٣٥٦٦ |
| من شهد إملاك رجل مسلم كان كمن صام يوماً | عبد اللّه بن عمرو | ٢٦٢٢ |
| من صام رمضان إيماناً واحتساباً غفر له ما تَقَدَّم | | |
| من ذنبه | أبو هريرة | ٧٧٧ |
| من صَلّى أربعاً بعد العشاء الآخرة يحسن فيهنّ الركوع | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| والسجود (ث) | كعب | ٢٨٨٨ |
| من صَلّى الصبح في مسجد الجماعة ثم ثبت فيه حتّى يُسَبِّح | أبو أمامة، وعتبة السلمي | ٣٠٨٩ |
| من صلى الصبح فقد أخفره الله عز وجل | أبو بكر | ١٤٤١ |
| مَنْ ضحك ضحكة مجَّ مَجَّةً من العلم (ث) | علي بن الحسين | ٣١٤ |
| من ضمن لي واحداً ضمنت له أربعة: من وصل رحمه (ث) | علي بن أبي طالب | ٢١٨٠ |
| من طاب ريحه زاد عقله، ومن نظفت ثيابه | بعض الحكماء | ٣٤١٤، ٢٢٢٧ |
| من طال عمره ورأى في عدوّه ما يَسُرُّه(ث) | زياد | ١٨٥٩، ٣٠٦٧ |
| من طلب الرئاسة بالعلم فاته علمٌ كثير (ث) | سفيان الثوري | ١٨٣٠ |
| من طلب العلم لنفسه فالقليل منه يكفي (ث) | مالك بن دينار | ١٨٨١ |
| من طول البكاء على سادات مضر ... فذاك واللّه أطول لعويلي عليهم (ث) | الخنساء | ٦٩٠ |
| مَنْ ظلم لغيره (أظلمُ الناس) (ث) | محارب بن دثار | ٣٥٤٠ |
| من ظلم منهم أحداً فقد أخفر ذِمّة (ث) | أبو بكر الصّديق | ١٤٤١ |
| من عَلِم أن للكلام ثواباً وعقاباً قلَّ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٧١٧ |
| من عصى الله فقد انتقم منه | بشر بن الحارث | ٣٥١١ |
| من عمل بالمعاصي فقد انتقم اللّه منه (ث) | بشر بن الحارث | ٧٦٦ |
| من غدا إلى المسجد أو راح | زيد بن أسلم | ١١٩ت |
| من الفاضح إئتوني به (ث) | مروان بن عبد الملك | ١٠١١ |
| من فتح له في الدعاء منكم فتحت له أبواب الرحمة، وما يسأل اللّه | ابن عمر | ١٥٦٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من الفجِّ العميق ... البيت العتيق ... عفا الأثروأنضر | | |
| الشجر (ث) | صعصعة بن صوحان | ١٨٣٥ |
| من قال إذا أصبح: بسم اللّه العليِّ الأعلى الذي لا ولَدَ | | |
| له ولا والد ولا صاحبة ولا شريك (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٣ |
| من قال: استجيرُ باللّه من النّار ثلاث مرّات | أنس بن مالك | ٣٥٦٤ |
| من قال: سبحان اللّه العظيم وبحمده غرست له | | |
| نخلة في الجنّة | جابر بن عبد اللّه | ٦٧، ٣٠٨٦ |
| من قال العشر كلمات ليلة عرفة ألف مرّة لم يسأل اللّه | | |
| شيئاً إلاّ أعطاه إيّاه | ابن مسعود | ٥٨٣ |
| من قال في ديننا برأيه فاقتلوه | | ٣٤١١ت |
| من قال مؤمناً | أبو هريرة | ٦٢ت |
| من قَبِلَ الكلمة التي عرضتها على عَمِّي | أبو بكر الصديق | ١٨٢٢ |
| من قُتِلَ دون ماله فهو شهيد | أبو هريرة | ٣١٥٧ |
| من قتل عصفوراً عبثاً جاء يوم القيامة وله صراخ | أنس بن مالك | ٣١٨١ |
| من قرأ ﴿ألم نشرح لك صدرك﴾ فكأنّما أتاني وأنا | | |
| مغموم ففرّج عنّي | زر بن حُبَيش | ١٣٩ |
| من قرأ بالآيتين من آخر سورة البقرة في ليلة كفتاه | أبو مسعود | ٢٨٢٠ |
| من قرأ البقرة وآل عمران في ليلة كان أجره ما بين (ث) | حميد الشامي | ٢٩٠٦ |
| من قرأ القرآن زوّجه اللّه بكلِّ حرف زوجتين (ث) | يوسف بن أسباط | ١٤٧٨ |
| من قرأ القرآن فقام به أناء الليل والنهار | أبو هريرة | ٢١٨٩ت |
| من قرأ ﴿قل هو اللّه أحد﴾ مئتي مرّة غُفِرَ له ذنبُ | | |
| مئتي سنة | أنس بن مالك | ١٣٨ |
| من قلم أظفاره يوم الجمعة | ابن حميد عن أبيه | ١٥٨ |
| من أخطأته سهام المنايا قيدته الليالي والسنون | بعض الحكماء | ٢٦٧٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من قيس بن عاصم المنقري، لقد اختلفت إليه في الحلم | | |
| كما تختلف إلى الفقهاء في الفقه (ث) | الأحنف بن قيس | ٨٠٤ |
| من كان صبره على حادثات الرزية كشكره على | | |
| متداوم العطية | بعض الحكماء | ١٧١١ |
| من كان صغير الدنيا أعظم في عينيه من كبير | | |
| الآخرة (ث) | زرعة | ١٤٠٠ |
| من كان عنده مظلمة لأخيه | أبو هريرة | ٣٥٤٢ت |
| من كان له إما فقراءته له قراءة | جابر | ٣٥٢٣ |
| من كان الليل والنّهار مطيته فإنّه يُسارُ به (ث) | الحسن البصري | ١٠٢٩ |
| من كان مسروراً بمصرع هالك فليأت نسوتنا بوجه | | |
| نهار | محمد بن بشر المرثدي | ٧٤٠ |
| من كان منطقه في غير ذكر اللّه | بعض الحكماء | ٣٣٧ |
| من كان يمهزُ له أو يكفيه أويسعى له؟ | مسلم بن يسار | ٧٥١ |
| من كانت فيه واحدة من ثلاث، زوّجه اللّه من | | |
| الحور العين | أم سلمة | ١٤٨٧ |
| من كانت فيه واحدة من ثلاث فقد استمكنت منه | أبليس | ٩٢٦ |
| من كتب ولم يعارض كا ن كمن دخل الخلاء (ث) | يحيى بن أبي كثير | ٢٢٧٥ |
| من كثر كذبه ذهب جماله ومن لاحى الرجال | عيسى عليه السلام | ٢٩٩٤ |
| من كَفَّ غضبه ستر اللّه عورته | ابن عبّاس | ٣٥٤٣ |
| من كف لسانه ستر الله عز وجل عورته | عبد الله بن عمر | ٣٥٣٦ت |
| من كنوز الجنّة كتمان الصدقة والمصيبة والمرض (ث) | حذيفة المرعشي | ٢٨٤٧ |
| من لطم وجه عبده فإنّ كفارته عتقه | عبد اللّه بن عمر | ٣٥٣٦ |
| من لم يخطىء عندنا في الحديث فهو كذّاب (ث) | يحيى بن معين | ١١٧٢ |
| من لم يداوِ نفسه من سقم الأيام أيام حياته | بعض الحكماء | ٢٩٣٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| من لم يرضى الدنيا خطراً لنفسه (أعظم النّاس خطراً) (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ١٣٧ |
| من لم يزدد يوماً بيوم خيراً فذاك رجل (ث) | عثمان بن عفّان | ١٥٤٦ |
| من لم يستح من طلب الحلال خفت مؤنته وقل كبرياءه | بعض الزهاد | ١٦٤٩ |
| من لم يصبر على كلمة، سمع كلمات، ورُبّ غيظٍ قد تجرّعته مخافة ما هو أشدّ منه (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٣٢٧/م |
| من لم يكن به داء فلا يتعالج لأنّ الدواء (ث) | عبد الملك بن أبْجَر | ٢٠٢٧ |
| من لم ينشط لحديثك فارفع عنه مؤنة الاستماع إليك | بعض الحكماء | ١٥٠١ |
| من مال أو ولد أو زهرة أو أهل | مجاهد بن جبير | ٤٤ت |
| من مالي أو من مال غيري ... رغيفين (ث) | ميسرة الأكول | ٢٦٠٤ |
| من مشى مع أخٍ له في حاجةٍ | ابن عباس | ٣٥٤٣ |
| من المعدة إلى العينين عرقان فإذا أثقلت المعدة | أبو سليمان الدارني | ٤٠٢ت |
| من نال الرّضا عن اللّه سقطت عنه الهموم (ث) | حذيفة المرعشي | ٢٥٥٥ |
| من الناس من يقول: كان أبو بكر رضي الله عنه | عائشة | ٢١٢٨ت |
| من نزل على قوم فلا يصومن إلا بإذنهم | عائشة | ٣١٦١ت |
| من نصر أخاه بالغيب نصره اللّه في الدنيا والآخرة | أنس بن مالك | ١٤١٢ |
| من نظر إلى امرأة ثم غضّ طرفه عنها | بعض الحكماء | ٢٨٥٨ |
| من نظر إلى محاسن امرأة فغض طرفه | أبو أمامة | ٢٨٥٨ت |
| من نفس عن مؤمن كربة من كرب الدنيا | أبو هريرة | ٢٣٤٤ |
| من نوقش الحساب عُذّب | عائشة | ٣ |
| من هذا ... أخبرني عن يوم القيامة ما يأكل الناس فيه (ث) | هشام بن عبد الملك | ٢٢٥٦ |
| من هذا كلّه بُدٌّ، ولكن لا بُدَّ لنا من الموت ثم البعث | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ثم الوقوف بين يدي اللّه عَزَّ وجلَّ (ث) | أبو حازم | ٢٧٤ |
| من هذا الميِّتَ منك؟ .... وما كان يعمل (ث) | داود القصّاب | ٣٢٦١ |
| من هوان الدنيا على اللّه أن لا يعصى إلا فيها ولا ينال إلا بتركها | بعض الحكماء | ١٨٠٥ |
| من وَقر صاحب بدعة أورثه اللّه تبارك وتعالى العمى قبل موته (ث) | الفضيل بن عياض | ١١٣ |
| من ولد له ولد فأذن في أذنه اليمنى | الحسن بن علي | ٣٢١٢ت |
| من يُتَّهم بالكذب، ومن يُكثر الغلط ومن يخطيء في حديث مجمع عليه (سُئِلَ: من الذي يترك | | ١٨٩٠، |
| حديثه؟) (ث) | شعبة | ٣٠٥٢ |
| من يدلُّني على رجلٍ بكّاء بالليل بَسَّام بالنهار؟ (ث) | حجاج الأسود | ٧٨٥ |
| من يرد الله به خيراً يفقهه في الدين ويلهمه رشده (ث) | عبيد بن عمير | ٦٦٣ت |
| من يعزر بالمعصية أورثه اللّه عَزَّ وَجَلَّ (ث) | الحسن البصري | ٢٦٩٢ |
| من يعلم علمه؟ (افتقد ثابت بن قيس بن شماس) | أنس بن مالك | ١٠٥ |
| من اليهود ... من النصارى ... من المجوس ... كذبوا ليسوا هؤلاء (ث) | عبد اللّه بن إدريس الأودي | ٢٦٦٦ |
| من يؤذن الأمير بنا؟ اخرج يأتي بشر بن مروان فلمَّا أتى الباب (ث) | أيمن بن خزيم | ٣٤٢١ |
| منذ أربعة وعشرين سنة وما جئت لرباط ...جئت لأشبع من خبز (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٤٣، ٢٨٣٨ |
| منزلتهما منه منزلتهما منه اليوم (سُئِلَ عن وعمر من رسول اللّه) (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ١٤١١ |
| مَه أما علمت أنها من العرب مَذَلَّةٌ ومن العجم | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خدعة (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٠٤٩ |
| مَه، خلافة اللّه عنده أجلّ من أن يجعلها (ث) | ( ) | ٢٢٧٧ |
| مواعيد عرقوب أخاه يثرب | ابن قتيبة | ٨٦٠ |
| موطنان لا أستحيي من العي فيهما: عند مخاطبتي | | |
| جاهلاً (ث) | سعيد بن العاص | ٣٢٩٢ |
| موعدك الجنّة (مرَّ في السوق فنظر إلى الفاكهة) (ث) | أبو حازم | ٩٦٥ |
| موسى صلى اللّه عليه وسلم ... محمد صلى اللّه عليه | | |
| وسلم هؤلاء أشراف الرسل (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من | | |
| كَلَّمَ اللّه﴾) (ث) | الشعبي | ١٩٩١ |
| مؤمل حينا لتبقى لنا فمات المؤمل (ث) | صالح المرّي | ١٩١ |
| الماء (تفسير قوله تعالى: ﴿يخرج الخبء في | سعيد بن المسيَّب | ٢٦٥٠، |
| السموات والأرض﴾) (ث) | | ٢٧٦٠ |
| المال ودائع اللّه في الدنيا، وأنتم ونحن | | |
| وكلاؤهما | جرير بن عبد اللّه البجلي | ١٩٧٥ |
| المتاع (تفسير قوله تعالى: ﴿ويمنعون الماعون﴾) (ث) | ابن عبّاس | ٣٥٥١ |
| المتماحلة: الطول، يقال: فتن يطول أمرها وتعظم، | عبد اللّه بن مسلم | |
| ويقال رجل متماحل | بن قتيبة | ٩٠٣ |
| المثلث: هو الرجل يسعى بأخيه إلى الأمام (ث) | الأصمعي | ١٦٩٠ |
| المخلوق يُرْزَقُ فإذا سخط قطع رزقه (ث) | الفضيل بن عياض | ١٣٢١ |
| المذبوح واللّه أنت فانظر إلى أين (ث) | المنذر | ٢٣٥٤ |
| المراء في القرآن كفر | أبو هريرة | ٣٤٩٧ |
| المرأة المرأة | الزبير بن العوام | ٢٧٩٦ |
| المرء وزن عمله، امرؤٌ حاسب نفسه، امرؤٌ فَكَّر | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فيما (ث) | الحجاج بن يوسف الثقفي | ٩٧٣ |
| المرء يطلب والمنية تطلبه ويد الزمان تديره وتقلبه | محمد بن منصور | ٧٣٨ |
| المزاح يذهب المروءة (ث) | الحسن البصري | ٤٩٦، ٣٤٦٦ |
| المزاح يذهب المهابة | أكثم بن صيفي | ٨٩٣ |
| المستغني بالدنيا عن الدنيا كالمطفيء النّار بالتّبن (ث) | بكر بن عبد اللّه المزني | ٥٤٨ |
| المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده | عبد اللّه بن عمرو | ٣٤٤٥ |
| المشركون لا يسألون عن ذنوبهم | قتادة | ١٠٠٠ت |
| المشي الهمس الوطيّ الخفيّ والصوت الخفي أيضاً (ث) | أبو محمد القُتَيْبي | ٧١٩ |
| المغفلة: العنفقة سُمِّيت بذلك لأنّ كثيراً من | ابن قتيبة | |
| النّاس (ث) | (عبد الله بن مسلم) | ٩٣٣ |
| المكيال مكيال أهل المدينة والوزن وزن أهل مكة | ابن عمر | ١٨٣٧ |
| الملكان لا يعلمان الغيب ولكن إذا هَمَّ العبدُ بحسنة فاح منه رائحة المسك (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٨ |
| الملوك لا تتحمل ثلاثة أشياء، إفشاء السِّرِّ والتعرض للحرمة | المأمون | ٨٧١ |
| المواتية لما نهوى ... المتجانبة لما نرضى ...بالميزان (ث) | عقيل بن أبي طالب | ١٧٣٦ |
| الموت كفارة لذنوب المؤمنين | خزيمة بن ثابث | ٥٨ت |
| الموت كفّارة لكلّ مسلم | أنس بن مالك | ٥٨ |
| المؤمن لم يأخذ دينه عن رأيه ولكن أخذه من قبل ربه (ث) | الحسن البصري | ١٨٣٩ |
| المؤمن مثل الشاة المأبورة يريد التي أكلت في العلف إبرة | مالك بن دينار | ٩٢٠ |
| المؤمن وقّاف على نفسه يحاسب نفسه للّه (ث) | الحسن البصري | ١٥٥٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| المؤمنون عند شروطهم (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٥٥ |
| نادى عمر بن الخطاب رضي اللّه عنه بالصلاة جامعة | عمر المخزومي | ١٦٨٢ |
| ناعمون (تفسير قوله تعالى: ﴿إنّ أصحاب الجنّة اليوم | | |
| في شغل فاكهون﴾) (ث) | الفرّاء | ١٠٠٢ |
| نجاة (تفسير قوله تعالى: ﴿إن تتّقوا اللّه يجعل لكم | | |
| فرقانا﴾) (ث) | عكرمة | ٢٨٧٣ |
| نجر خشبة، فجعل المال في جوفها | أبو هريرة | ٦١١ت |
| نحن في طرف من عذاب اللّه (ث) | وهب بن منبه | ٢٤٠٠ |
| نحن نؤمن بجميع ما جاء في مثل هذا القرآن وعن | ابن قتيبة (عبد اللّه | |
| الرسول صلى اللّه عليه وسلم (ث) | بن مسلم) | ٩٢٩ |
| نحن لا نحب أن نموت حتى نتوب (ث) | أبو حازم | ١٢٦٥ |
| نحوه ... نحوه (تفسير قوله تعالى: ﴿فولّوا | | |
| وجوهكم شطره﴾) (ث) | مجاهد | ١٤٦٢ |
| ندعوا اللّه تبارك وتعالى فيما نحب فإذا وقع ما نكره | | |
| لم نخالف اللّه فيما أحب | محمد بن علي بن الحسين | ١٠٩٩ |
| نُرقّع دنيانا بتمزيق ديننا فلا ديننا(ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٩٦١ |
| نزل أعرابي بقوم ومعه زوجته وابنته | أحمد بن صالح عن أبيه | ٢٤٦٩ |
| نزل ببعض علماء البصرة الموت وهو في طريق | | |
| مكة (ث) | المدائني | ١٨٨٤ |
| نزل جبريل عليه السلام على النبي صلى اللّه عليه وسلم | | |
| فقال: يا محمد | أنس بن مالك | ٢٦٣٤ |
| نزل سلمان وحذيفة على نبطيّة فلما حضرت (ث) | ميمون بن مهران | ٢٥٩٠ |
| نزل القرآن على سبعة أحرف | أبو هريرة | ٣٤٩٧ت |
| نزل منزلاً بين مكة والمدينة في يوم صائف وقرّبَ | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| غداه (ث) | سعيد بن سالم | ١٣٤ |
| نزل المنذر في كتيبته موضعاً فقال له رجل: أبيت اللعن | المفضل الضبي | ٢٣٥٤ |
| نزل يهودي بأعرابي فمات عنده، فقام الأعرابي | | |
| فَصَلَّى عليه، فقال: اللّهمَّ ضيف (ث) | أبو حصين | ٣٢٦٢ |
| نزلنا في طريق مكة في بعض المناهل وحضرت | | ١٠٣٤، |
| الجمعة (ث) | الأصمعي | ٢٥٣٨ |
| نزلت: ﴿إنّما يريد اللّه ليذهب عنكم الرجس أهل | | |
| البيت﴾ في خمسة (ث) | أبو سعيد | ٣٥٥٤ |
| نزلت الصُّفاحَ في يوم صائف شديد الحرِّ، فإذا | | |
| رجل نائم (ث) | جرير بن عبد اللّه | ٨٤٧ |
| نساء بني عجلان يحملن أربع سنين (ث) | أحمد بن حنبل | ٣٣٥٣ت |
| نشرت رجل عروة بالمنشار فما تكلم بشيء في (ث) | سفيان بن عيينة | (٢٥) ملحق |
| نضّر اللّه امرءاً سمع منّا حديثاً | ( ) | ١١٤ |
| نضرة في وجوههم وسروراً في قلوبهم (تفسير | | |
| قوله تعالى: ﴿ولقّاهم نضرةً وسروراً﴾) (ث) | الحسن البصري | ٥٦٠ |
| نطيلُ الكلام ليفهم ونوجز ليحفظ (ث) | الخليل بن أحمد | ٥٠١ |
| نظر إلى قوم ببابه فقال: يا قنبر من | علي بن أبي طالب | ١٢٤٩ |
| نظر بعض ملوك الأعاجم إلى شيبٍ في رأسه فجمع | إسحاق بن منصور | |
| نساءَه (ث) | بن دينار | ٣١٩٠ |
| نظر بعض الملوك إلى العذري الناسب في عباءة فازدراه | سفيان بن عيينة | ٦٠٤ |
| نظر الجاثليق إلى الحسن البصري فسجد له، فقالت له | | |
| النصارى (ث) | الحسن بن أبي جعفر | ٢٧١٩ |
| نظر شريح إلى رجل يقوم على رأسه وهو يضحك | ابن عائشة | ١٧٩٩ |
| نظر قوم إلى راهب يخرج نحو الجبل، فقالوا له: أين | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| تريد؟ (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٥٥، ٢٠١٤ |
| نظرتُ إلى الجنة فإذا الرّمّانة من رمّانها كجلد البعير المقتّب | أبو سعيد الخدري | ١١٠٢ |
| نظرتُ في بَدْءِ هذا الأمر ممّن هو فإذا هو من اللّه تبارك وتعالى (ث) | مُطَرِّف بن عبد اللّه الشِّخِّير | ٤٢ |
| نظرتُ في هذا الأمر فوجدت لجميع النّاس توبةً إلاّ من تناول أصحاب رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم (ث) | بشر بن الحارث | ٢٨١٦ |
| نظرنا في صحابة الأنبياء فما وجدنا نبيّاً كان له صاحب (ث) | الربيع بن أنس | ١٠٧٥ |
| نعم الإدام الخلُّ | جابر بن عبد اللّه | ٢٨٥٤ |
| نعم أصلحك اللّه وإنّ شرفاً وبيتاً وقدماً ... ما رأيته قبل هذا الوقت (ث) | ابن شبرمة (عبد اللّه) | ١٤٢٩ |
| نعم ... اللهم إني أسألك يا مَنْ تملك حوائج (ث) | وهب بن منبه | ٢٤٧٠ |
| نعم ... لا دون أن يقفه عليه ثم يسأل عنه (ث) | الحسن البصري | ٢٦١٢ |
| نعم (أليس الحديث صحيحاً الذي حدثتنا به في زمزم أنه لما شرب له) (ث) | سفيان بن عيينة | ٥٠٩ |
| نعم القتيل إذا الرِّياح تناوحت (ث) | متمِّم بن نويرة | ٣١٣٦ |
| نعم كما نعودُ اليهودي والنصراني على رجليك (ث) | أبو بكر بن عيّاش | ٨٦٦ |
| نعم ما جزاك على الذنب (ث) | أبو عثمان | ١٣٢٨ |
| نعم،من أحببت له الخير وبذلت له الود فقد أصاب معروفك | بزرجمهر الحكيم | ١١١٤ |
| نعم يا أمير المؤمنين ضعضع قناتي وشيّب شواتي (ث) | ابن أبي أوفى النهدي | ٢٠٦٨ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس | ابن عبّاس | ١٦٧٥ |
| نعمة اللّه عليَّ فيما زوى عنّي من الدنيا أعظم ممّا أعطاني (ث) | أبو حازم | ٢٥٤٩ |
| نفذت نفقة إبراهيم بن أدهم بمكة فبقي خمسة عشر يوماً يسفُّ الرَّمْل (ث) | عطاء بن مسلم | ٢٩١ |
| نقص النّاس في حفظهم كما نقصوا في نيّاتهم (ث) | سفيان الثوري | ٣٦٢ |
| نمت عن جزئي الليلة، وكان وردي البقرة فرأيت بقرةً تنطحني (ث) | أبو أسيد | ٢٩٦٠ |
| نهى أمير المؤمنين عن الملق (ث) | عمر بن الخطاب | ١٨٦٨ |
| نهى أن يشرب الرجل قائماً | أنس | ٣١٧٠ت |
| نهى أن يُصلى على قارعة الطريق | ابن عمر | ١٩٥٦، ٣٢٠٤ |
| نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن القزع | ابن عمر | ١٣٨٩ت |
| نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يصلي الرجل على جواد الطريق | جابر بن عبد الله | ٣٢٠٤ت |
| نهى عن الدّباء | أنس | ٢٨١ |
| نهى عن الرُّقي إلاّ ثلاث رقية النملة | ابن سيرين | ٧١٨ |
| نهى عن ركض الفرس إلاّ في حَقٍّ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٩٤٦ |
| نهى عن القزع للصبيان | عائشة | ١٣٨٩ |
| نهى عن المحاقلة والمزابنة | جابر بن عبد اللّه | ٣٥٢٠ |
| نهى عن مياثر الإرجوان، وعن التختم بالذهب | عمر بن الخطاب | ٣٥٤٨ |
| نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن النذر | ابن عمر | ٣٥٠٠ت |
| نهانا رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم عن خاتم الذهب وحلقة الذهب | البرّاء بن عازب | ٣٥٤٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| نهانا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن النهبة والمثلة | عبد الله بن يزيد الخطمي | ٥١٥ت |
| نهيت أن أمشي عرياناً | العباس | ١٨٦٢ |
| نوم أول النّهار خرقٌ وأوسطه خُلُقٌ وآخره حمق (ث) | حوار بن جبير | ٢٠٤٦ |
| نوم على يقين خيرٌ من صلاة على شك (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٩٤٤ |
| نؤملُ جنة لا نوم فيها ودنيا لا يكدرها البلاء (ث) | أحمد بن المعدّل | ٣٤١ |
| نية المؤمن خير من عمله | أبو هريرة | ١٣٥٧، ١٣٥٧ت |
| الناس تبع لقريش في هذا الشأن، فمسلمهم تبع لمسلمهم | أبو هريرة | ٣١٤٩ |
| الناس عاملان عامل في الدنيا للدنيا قد شغلته (ث) | أبو حازم | ٢٣٦١ |
| الناس ما داموا في عافية مسرورين، فإذا نزل البلاء صاروا | الحسن البصري | ١٩١٧ |
| الناس يكتبون أحسن ما يسمعون ويحفظون أحسن (ث) | يحيى بن خالد | ١٨٨٨، ٢/٣٠٤٥ |
| النَّحلُ أحبُّ إليَّ من الحمام، الحمام يدخلُ الغريب (ث) | يوسف بن أسباط | ٢١٤٨ |
| الندم توبة | | ١١١٧ت |
| الندم على السكوت خير من الندم على القول | حكيم | ٨٨٢ |
| النسخ. قال: ألستم بقوم عرب | عبد الله بن عباس | ١٢٥٠ت |
| النسناس خلقٌ باليمين لأحدهم عينٌ ويدٌ ورجلٌ (ث) | ابن إسحاق | ١٧٦٠ |
| النظر إلى وجه الظالم خطيئة (ث) | سفيان الثوري | ٣٧١ |
| النظر إلى وجه الظالم خطيئة، والنظر إلى وجه الأحمق (ث) | بشر بن الحارث | ٣٧٢ |
| النظر في وجهه عبادة (يعني علياً) | أبو بكر الصديق | ٣٥٠٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| النظر في المصحف عبادة | جابر بن عبد الله | ٣٥٠٣ت |
| النقباء كلُّهم من الأنصار (ث) | معمر | ٣٥١٥/م |
| | | ٣٥١٦ |
| النهار يعمل عمله (ث) | سفيان الثوري | ١٠٨٣ت |
| هات يا بن الأهتم (ث) | هشام بن عبد الملك | ٢٩٠٣ |
| هاتِ يا أعرابي ... أما أنت يا أعرابي فقد نصحت | | |
| وأرجوا أنّ اللّه (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٦١٣ |
| هاجت ريح سوداء في أيام المهدي فاسّودت الدنيا | | |
| وخفنا (ث) | سالم الحاجب | ١٠٨٠ |
| هاجرت وأنا في بطن أمّي فما كان يصيبها (ث) | عبد اللّه بن الزبير | ٢٤٣٤ |
| ها هنا فرغوا من القضاء (ث) | الشعبي | ٢٥٠٩ |
| هب لي من قلبك الخشوع | أثر إلهي | ١٧١ |
| هبطت مرّةً وادياً في بعض أسفاري فإذا براهب قد حَبَسَ | | |
| نفسه في بعض (ث) | عبد الواحد بن زيد | ٨٥٧ |
| هبك عَمَّرْتَ مثل ما عاش نوح (ث) | أبو مسهر | ٣٠٣٨ |
| هجا الحميديُّ الشاعرَ الفضل بن يحيى ثم أتاه راغباً | | |
| معتذراً (ث) | مُعَلَّى بن أيوب | ١١٢٩ |
| هجا النجاشي - وهو قيس بن عمرو بن مالك الحارثي | | |
| الشاعر - بني العجلان فاستعدوا عليه عمر بن الخطاب | | |
| رضي اللّه عنه (ث) | سماك | ٩٨٨ |
| هجم بهم العلم على حقائق الأمور فباشروا روح (ث) | علي بن أبي طالب | ١٨٢٤ |
| هذا أوردني الموارد | أبو بكر | ١٠٨١ |
| هذا بيت جيِّد إنْ كان قاله عمر رضيّ الله عنه، ولايحفظ | | |
| لأبي بكر شعر ولا لعمر (ث) | الأصمعي | ٢٨٥٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| هذا تقوله العرب في معنى الإغراء: كذبتك كذا أي | | |
| عليك به (ث) | إبراهيم الحربي | ٦٣٣ |
| هذا حقك وهذا معروف منّا لك (ث) | ابن عمر | ٢٩٥٥ |
| هذا الدعاء هو دعاء الفرج ودعاء الكرب: يا حابسَ | | |
| يد إبراهيم عن ذبح ابنه (ث) | الحسن البصري | ١٢٣ |
| هذا رجل جهل العلم (ث) | أحمد بن حنبل | ٧٥٤، ٢٩٤٨ |
| هذا صاحب القدح، فسألوه، فَأَقَرَّ (ث) | قتادة | ٢٨٢٨ |
| هذا عَبَدَ اللّه ستين سنة مشتغلاً به ولم تشتغل (ث) | عبد الواحد بن زيد | ١٥٩٤ |
| هذا عبد لا يحسد النّاس على ما آتاهم اللّه من فضله | أثر إلهي | ١٧٤٦ |
| هذا كما قد قال الشاعر: | | |
| إذا حشرجت يوماً (في مرض موت أبيها) (ث) | عائشة | ١٣٧٦ |
| هذا لمن يموت كثير | نوح | ٢٤٥٠ |
| هذا ما أعتق عبد اللّه بن عتيق الكلابي، أعتق جارية له | | |
| سوداء (ث) | عبد اللّه بن عتيق | ٢٧٠ |
| هذا مالٌ كثير فماذا تركت لأهلك | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٩ |
| هذا ممّا أصاب عبد العزيز بن مروان في مصر إذ كان | | |
| والياً (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٥٠٤ |
| هذا نبيي، هذا خيرتي من خلقي فتأسوا به | أثر إلهي | ٢٦٣١ |
| هذا وأبيك الشرف، هذا وأبيك السُّؤدد (ث) | عبد الملك بن مروان | ٣٠٥ |
| هذا والله غير مغن عنك، فانظر لنفسك فإنك وعمر | | |
| تسألان | أبو نصر الجهني | ٩٧٥ |
| هذا واللّه المفلس ... المفلس من دينه (ث) | زادان | ١٥٢٤ |
| هذا يومئذٍ على الحق ... | كعب بن عجرة | ٢٢١٥ |
| هذان بيتان قديمان لا يعرف قائلهما، ويروى أنّ أبا بكر | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الصديق رضي اللّه عنه ورحمه كان ينشدهما (ث) | المبرّد أبو العبّاس | ٣٠٨٥ |
| هذان ثوبان جئتُ بهما لأخي حمزة قد بلغني قتله (ث) | صفيّة بنت عبد المطلب | ٢٧٩٦ |
| هذه الشيعة لا شيعتكم (ث) | أبو جعفر المنصور | ٢٠١٨ |
| هذه لك بطول السهر (ث) | محمد بن جحادة | ٢٣١٩ |
| هذه ليست من الحوائج التي ترفع إلى الأمير (ث) | يزيد بن أبي مسلم | ٣٢٧٤ |
| هكذا أمرنا أن نفعل بأهل بيت نبيّنا صلى اللّه عليه وسلم | زيد بن ثابت | ١٣١٤ |
| هكذا أمرني ربّي عَزَّ وَجَلَّ | أنس بن مالك | ٩٤٩ |
| هكذا جرى أمرك عندي، أفترى من أجلك أُعيد الدّنيا | أثر إلهي | ١٥٨٤ |
| هكذا الدنيا تصبح لك مسرَّةً وتمسي لك متنكرة (ث) | السائب بن الأقرع | ١٧٧٤، ٣٤٢٩ |
| هكذا كلاب بلخ إذا رُزِقت أكلت وإذا مُنِعت صبرت (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٤٤ |
| هكذا هذا العلم يزيد الشريف شرفاً ويجلس الملوك على الأسرّة (ث) | ابن عبّاس | ٣٠٣ |
| هكذا واللّه ينبغي أن تكون نساء قومي | أبو جعفر المنصور | ٢٨٩٩ |
| هكذا يكون العلم يا بن شهاب (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٥٠٤ |
| هل تدرون لما حلقت رأسي لأنّي أؤدي الخراج (ث) | حذيفة | ٢٣٢٢ |
| هل تدرون ما قال ربّكم؟ | أنس بن مالك | ٢٦٢٦ |
| هل تدرون ما قال لها؟ | سليمان النبي | ١/٢٤٣٥ |
| هل ترى ربّك؟ فقال جبريل عليه السلام: إنّ بيني وبين العرش سبعين حجاباً | زرارة بن أوفى | ٦٥ |
| هل جزاء من قال: لا إله إلاّ اللّه إلاّ الجنّة (ث) | ابن عبّاس | ٣٥٧٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| هل سافرت معه؟ ... فهل كانت بينك وبينه معاملة؟ | | |
| فهل ائتمنه على شيء؟ (ث) | عمر بن الخطاب | ٧٠٨ |
| هل علمتم أحداً أوتي مثل ما أُوتيت؟ ... | | |
| مالك لا تتكلم؟ | النعمان بن امرىء القيس | ١٢٢٢ |
| هل قدم فلان؟ (ث) | سعيد بن المسيب | ٥١٧ |
| هل لكِ من زوج؟ ... فأنا ثابت (ث) | ثابت البناني | ٨٥٤ |
| هلاّ أقررتم الشيخ في بيته حتى كنا نأتيه تكرمة | | |
| لأبي بكر | الزهري | ١٦٢ |
| هلك أخ لبعض الأعراب فأظهر له الشماتة بعض | | |
| بني عَمِّه فأنشأ الأعرابي يقول: | | |
| ولقد أقول لذي الشماتة إذ رأى فجعي (ث) | المبرّد أبو العبّاس | ٣١٣٢ |
| هَلُمَّ إلى الغداء ... ما أقبح بالرجل أن يأكل حتَّى | | |
| لا يكون فيه فضل (ث) | عبد الملك بن مروان | ٦٤٣ |
| هم أمناؤنا على أنفسنا فإذا نحن أخفناهم (سُئل عن عدم | | |
| ضربة الغلمان) (ث) | يحيى بن خالد | ٢١٤١ |
| هم الذين لا يؤذون الذرّ (سُئِلَ عن الأبرار من | | |
| هم؟) (ث) | الحسن البصري | ٤٥ |
| هم يستبطئون المطر ... لكنّي والله أستبطىء | | |
| الحجارة (ث) | مالك بن دينار | ٧٢٩ |
| هم الشعث رؤوساً، الدنس ثياباً الذين لا ينكحون | | |
| المتنعمات | عمر بن الخطاب | ٢٠٣٣ |
| هم الناس وهم النسناس وأناس غمسوا في | | |
| ماء الناس(ث) | مطرف | ٦١٦ت |
| همزه بعينه وإغماضه فيما لا يحبُّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ (تفسير | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| قوله تعالى: ﴿يعلم خائنة الأعين﴾) (ث) | قتادة | ٩٣٠ |
| هن أبا خالد | موسى عليه السلام | ١٤٤٠ |
| هن بمنزلة الأضلاع إن سويته انكسر | الغضبان القبعثري | ٢٠٧٠ |
| هنيئاً مريئاً غير داءٍ مخامرٍ (ث) | الشعبي | ٣٣٢٤ |
| هو أشرف شراب أهل الجنّة وهو للمقربين صرْف(تفسير | | |
| قوله تعالى: ﴿ومزاجه من تسنيم﴾) (ث) | أبو صالح | ١٠٠٥ |
| هو أكبر منّي وأنا ولدتُ قبله (قيل له: أنت أكبر أو | | |
| النبي صلى اللّه عليه وسلم) (ث) | العبّاس بن عبد المطلب | ٣٣٩١ |
| هو أن يحاسب الرجل بذنبه كله | إبراهيم النخعي | ١٢٠ت |
| هو أن يقول الرجل: زنيتُ ولم يزنِ، وقتلتُ ولم | عبد الله بن مسلم | |
| يقتل (الابتهان) (ث) | بن قتيبة | ٣٠٧٣ |
| هو حرام ... حلال .... حلال .... حلال (ث) | إياس بن معاوية | ٢٥٣٥ |
| هو خليلي، ليس لي خليل غيره في الأرض، وأنا إلهه | | |
| ليس له إله غيري | أثر إلهي | ٦٣ |
| هو ذا أجمع الخير كله في كلمتين الخيز من حلّه | حذيفة المرعشي | ١٧٤٨ |
| هو قول الرجل لأخيه ما ليس فيه يقول له: إن كنت | | |
| كاذباً فأنا (ث) | أبو طالب | ١٤٨٣ |
| هو مالك بن أنس (ث) | سفيان بن عيينة | (٢٤) ملحق |
| هو المرباع وهو ربع (تفسير قول النبيّ صلى اللّه عليه | ابن قتيبة (عبد اللّه | |
| وسلم «تربع») (ث) | بن مسلم) | ٢١٩٠ |
| هو نهاية في العلم لا تلدُ النساء مثله أبداً في زماننا (ث) | ابن المقفّع (عبد اللّه) | ٢١٦٨ |
| هو اليوم التاسع ... نعم (سُئِلَ عن عاشوراء؟) (ث) | ابن عبّاس | ١٨٦٣، ٢٥٩٣ |
| هؤلاء أشراف الرسل يوم القيامة (ث) | الشعبي | ١٩٩١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| هؤلاء الذين يُصْعَقون إذا قرىء عليهم (ث) | محمد بن سيرين | ١٩٢٩ |
| هؤلاء الذين يقولون، فلانٌ في الجنة (ث) | يحيى بن معين | ٢٥٠٩ |
| هلا أقررتم ... وأمرهم أن يغيِّروا شعره (ث) | الزهري | ١٦٢ |
| هي أرضُ مصر إن لم يصبْها مطر (تفسير قوله تعالى: ﴿فطلٌّ واللّه بما تعملون بصير﴾) (ث) | زيد بن أسلم | ٢٧٧١ |
| هي التوبة (تفسير قوله تعالى: ﴿وحيل بينهم وبين ما يشتهون﴾) (ث) | الحسن البصري | ٤٤ |
| هي الدنيا تعذِّب من هواها (ث) | الحسن البصري | ٣٩٣ |
| هيهات يا أبا يحيى أنا ميت | جار مالك بن دينار | ٢٠١ |
| الهانية الرب: مأخوذ من إله. كأن القلوب تأله عند التفكير في عظمته ... إذا وقع العبد في عظمة اللّه وجلاله (ث) | عبد اللّه بن مسلم بن قُتَيْبَة | ٣٠٧٢ |
| وابصاً إيْ برَّاقاً ... وبَصَ الشيء إذا برق (ث) | الحربي (إبراهيم بن إسحاق) | ٩١٣ |
| وأبيض يستسقي الغمام بوجهه ربيع اليتامى عصمة للأرامل | الحربي | ٥٧٤ |
| وأحدكم يسرق إوزة جاره ثم يدخل المسجد والريش على رأسه | سليمان عليه السلام | ٣١٦ |
| وأحسن ما قيل في الكبر: أرى بصري قد رابني بعد صحّة (ث) | الأصمعي | ٢٧٦ |
| وأحسنُ مرثية قول أوس بن حجر الكندي: أيتها النفس احملي جزعاً (ث) | الأصمعي | ٢٧٦ |
| وإذا الفاحش لاقى فاحشاً (ث) | مسكين الدّارمي | ٢٩٩٩ |
| وأعجب من ذلك من أحب نفسه على اليقين وأبغض | محمد بن | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الناس | عبد الرحمن القرشي | ٦/٢٤٣٥ |
| والذي بعثك بالحقّ لا لقيتك إلاّ على الذي أفارقك | | |
| عليه (ث) | أبو ذر الغفاري | ٢٨٧٤ |
| والذي نفس الحسن بيده ما أصبح في هذه مؤمن إلا وقد | | |
| أصبح مهموماً | الحسن البصري | ١٩١٧ |
| والذي نفسِ محمدٍ بيده ما خرج أحدٌ من المدينة | جابر بن عبد اللّه | ٢٢٦٣، |
| رغبة عنها | الأنصاري | ٢٩٠٤ |
| والذي نفسي بيده إنّه لمكتوب عند اللّه عَزَّ وَجَلَّ | ابن أبي لبينة عن جدّه | ١٢٤٦ |
| والذي نفسي بيده لأحدهم أهدى بمنزلة في الجنة | | |
| منه بمنزلة | أبو سعيد الخدري | ٢٧٣٤ |
| والذي نفسي بيده لأن اتقيتم وأحسنتم ليوشكن (ث) | أبو بكر الصديق | ١٠٥٧ |
| والذي نفسي بيده ما أطاع العبد ربّه بشيءٍ أفضل | ابن عبّاس | ٢٤٩٢ |
| واللّه إنّ هذا الذي أدّى هذا لأمين (لما أُتِيَ بتاج كسرى | | |
| وسواريه جعل يُقَلِّبها بعود) (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٧٤ |
| واللّه إنّي لا أستحي أن أسأل الدنيا من يملك الدنيا، | | |
| فكيف أسألها (ث) | رابعة | ١٥٦١ |
| والله إني لأستحيي من اللّه أن يراني أرى أن رحمته | | |
| عجزت عن أحد من خلقه | محمد بن المنكدر | ١٢٤٧ |
| واللّهِ إنّي لأكون في بيتي فيفتح على لساني (ث) | عبد ربّه اليشكري | ٢٥٠٣ |
| واللّه إنّك لتعلم أني أعلم أنك كذّاب (ث) | عمرو بن العاص | ٢٥٤٣ |
| واللّه إني لأرجو أن يكون الحسن منهم | قتادة | ١٥٩١ |
| واللّه لأعطينّك عطية لا يعطيها العبدُ فأعطاه (ث) | حكم بن عوانة | ١٩٠٤ |
| واللّه لحمل الكارات أهون من العبادة ولا يُسَمَّى الرجل | | |
| عابداً (ث) | ثابت البناني | ٥٧٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| واللّه لقد رأيت أصحاب محمد صلى اللّه عليه وسلم | | |
| فما أرى اليوم شيئاً (ث) | علي بن أبي طالب | ١٤٦٦ |
| واللّه لقد كنت حريصاً على أن أوفّر رفث | | |
| فيّ المسلمين (ث) | أبو بكر الصديق | ٢٣٩٣ |
| واللّه لقد هربت منهم ... سألتك باللّه إلاّ طلبته (ث) | الأعمش | ٢٣٠٩ |
| والله لو أن لي طلاع في الأرض ذهباً (ث) | عمر بن الخطاب | ١٠٨١ت |
| واللّهِ لو أنّ الوحشَ طعمت طعْمَ الإسلام ما تركته | | |
| أبداً (ث) | أبو الدرداء | ٧٩٥ |
| واللّه لو وُلّيْتُ من أمر المسلمين شيئاً ما كان فيكم | | |
| أحدٌ (ث) | الحسن البصري | ٢٠٩٦ |
| واللّه لئن كان لباسكم وفقاً لسرائركم (قاله لأصحاب | | |
| الصوف) (ث) | ابن السّماك | ٥٣٨ |
| واللّه ما أبكي جزعاً من العزل، ولا ضناً بالولاية | محمد بن الضحاك | ٤٤١ |
| واللّه ما أردت بهذا إلا مقاربتي وإن كنت لأحببت أنّ | | |
| فيك خيراً (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٢٣ |
| واللّه ما بعث اللّه هذا الكلب يبحث في هذا الزّبْل (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٤٦١ |
| واللّه ما دعوته ولا غدرت به (ث) | أبو بكر الصديق | ٣١٣٦ |
| واللّهِ ما رأيت قراء زمانٍ وأغلظ رقاباً ولا أدق | | |
| ثياباً (ث) | زُبَيْد | ٩٦١ |
| واللّه ما عندي نقد وإني لأكره أن يكون علي دين | أعرابي | ١٦٤١ |
| واللّه ما فاضت عينا عبدٍ قطّ حتّى يضعَ اللّه يده على | | |
| قلبه (ث) | الفضيل بن عياض | ٢٩٨١، ٣١٣٥ |
| والله ما قال أبو بكر بيت شعر في جاهلية ولا في | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إسلام (ث) | عائشة | ٢٨٥١ت |
| واللّه ما قدمتُ مرابطاً ولا مجاهداً، وإنّما قدمْتُ الشام لأشبع | | ١٩٤٣، |
| من خبز الحلال (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٣٨ |
| واللّه ما قمت هذا المقام قطٌّ إلاّ وكأنّي أطّلعُ في | | |
| نار جهنّم (ث) | داود الطائي | ٢٨٣٩ |
| واللّهِ ما منكم من أحدٍ إلاّ سيخلو به ربُّه (ث) | ابن مسعود | ٨ |
| واللّه ما نالوا بأطراف أناملهم شيئاً إلاّ وقد وطئناه | | |
| بأخماص أقدامنا | أعرابي | ٢١١٩ |
| واللّه ما وضع رجل يده قط في قصعة رجل إلاّ ذلّت له | | |
| رقبته (ث) | سفيان الثوري | ٢٧٢٢ |
| واللّه لا آكلهما حتّى تَخْصِبَ الناس (ث) | عمر بن الخطاب | ١٩٤ |
| واللّه لا أجمع عليكم عياً ولؤماً من أخذ شاةً (ث) | عبد اللّه بن عامر | ٢٤٥٨ |
| والله لا تشهد علي شمس بأكل ولا يشهد (ث) | عبدة بن هلال | ١٧٢ |
| والله لا حبسته أبداً في الخمر (ث) | سعد بن أبي وقاص | ١٠١٤ |
| والله لليلة من أبي بكر ويوم خير من عمر وآل عمر | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٨ |
| والله يا أمير المؤمنين لقد أبخر ماء أنفك (ث) | عمرو بن سعيد | ١٣٧٧ت |
| واللّه يا أمير المؤمنين لقد زنت الخلافة وما زانتك | بعض الحكماء | ١٨٣٦ |
| واللّه يا أمير المؤمنين ما رأيت أحداً من أهل بيتك في مثل | | |
| حالك إلا مات | عمرو بن سعيد | ١٣٧٧ |
| واللّه ينبغي أن تكون نساء قومي (ث) | المنصور أمير المؤمنين | ٢٨٩٩ |
| والنقش هو الاستقصاء | سفيان بن عيينة | ٣ |
| وإن من علامة رضاي رضا المساكين | أثر إلهي | ١١١٩ |
| وأنا أقول كما قال العبد الصالح يا غدار (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٤٢٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وأنا معك رحمك اللّه (ث) | عبد اللّه بن مولة | ٢٠٠٢، ٢٩٢٧ |
| وأنا واللّه لا أشربها أبداً (ث) | أبو محجن الثقفي | ١٠١٤ |
| وأنما سميت هند بنت صعصعة عمة الفرزدق ذات الخمار لأنها (ث) | أبو عبيدة | ٢٠٢٦ |
| وأين النّاس، إنما النّاس رجلان (ث) | عبد اللّه بن عروة بن الزبير بن العوّام | ٢٠٠٤ |
| وتدريان ما التواضع؟ ... تخرج من بابك فلا تلقى مسلماً إلاّ (ث) | الحسن البصري | ١٦٨٠ |
| وُجِدَ على ميلٍ في طريق مكة مكتوب: ألا يا طالب الدنيا دع الدنيا لشانيكا (ث) | أحمد بن محرز الهروي | ٣٢٩٣ |
| وجد في بعض خزائن ملوك فارس لوح (ث) | ابن عائشة | ١٥٠٥ت |
| وجدت الحلم أنصر لي من الرجال، ثم أنشد في إثره (ث) | الأحنف بن قيس | ١٨٢١ |
| وجدت على بعض ألواح المقابر: وما عاشق الدنيا بناجٍ من الرَّدى (ث) | جعفر بن محمد المستملي | ٣٠٦٣ |
| وجدت علم النّاس في أربع، أوّله أن تعرف ربَّك (ث) | الفضل الرقاشي | ٢٢٧ |
| وجدت في التوراة أنّه قال: حين خلقت آدم ركّبت جسدَه من أربعة أشياء (ث) | وهب بن منبّه | ١٤٣٦ |
| وجدنا أعلم النّاس بالقضاء أشدّهم له كراهية (ث) | أيوب السختياني | ٢١٨ |
| وجدنا السخي لا تنفعه التجارب (ث) | الزهري | ١٥٩٥ت |
| وجعل النّاسَ يقبلون يد رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم فجئت فأخذت بيده (ث) | يزيد بن الأسود | ١٥٣٧ |
| والحجامة على النقرة والبول في الماء الراكد | | ٢٣٤٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وددتُ أنّ رزقي في حصاةٍ أمُصُّها حتّى أموت (ث) | مالك بن دينار | ٩٧٨ |
| وَدَدْتُ أنّ العشرُ منها كان صالحاً (ث) | مؤرق العجلي | ٧٨٤ |
| وددت أني كنت أكسب يوماً بيوم ما يقوتني (ث) | عبد الملك بن مروان | ١٨٠٧ |
| ودع رجل صديق له فقال: ـ (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ١٤٣٢ |
| ودّعت أعرابية رجلاً فقالت: كبت اللّه لك | | |
| كُلَّ عدو (ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٤٠٤ |
| ورب السماء والأرض ما أريد سفاد لذة، ولكن | | |
| أردت أن يكون من نسلي ونسلك (ث) | عصفور | ١/٢٤٣٥ |
| ورث عشرين ديناراً فأكلها في عشرين سنة (ث) | داود الطائي | ٥٢ |
| ورثت عن أبي ضياعاً بخمس مئة ألف بالكوفة | | |
| فجرى (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٠٣٦ |
| ورثت عن أبي نحو مئة ألف درهم فلم أرزأ منها درهماً | | |
| إلاّ هذا المصحف (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٢ |
| وسُئِل أعرابي وأنا أسمع كيف برُّك (ث) | الأصمعي | ٢٥٧٢ |
| وشى واشٍ برجلٍ إلى الإسكندر فقال له: أتحبُّ أن | عبد اللّه بن جعفر | |
| نقبل منك (ث) | الرقي | ١١٢٦ |
| وصف رجلٌ رجلاً، فقال: كان يغلط في عمله من | يونس بن حبيب | ١٨٨٩، |
| وجوه (ث) | | ٣٠٥٠ |
| وضع أحمد بن حنبل عندي نفقته فكان يجيء في كلّ | | |
| يوم (ث) | محمد بن الفضل | ١١٤٣ |
| وعائب تعيب بفضل عيبه، ويبغضهم يحسب بغضه | بعض الحكماء | ٢٢٤٧ |
| وعداً منه له بالعمل الصالح والإيمان (ث) | مجاهد | ١٠٥٢ |
| وعزتي وعظمتي وجلالي ما من عبد آثر هواي (ث) | قول الله عز وجل | ١٤٨٠ |
| وعظ بعض الزّهاد أصحابه بالبصرة، فقال في كلامه: | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إن التراجع في المواعظ يوشك (ث) | مُعَلّى بن عبد الرحمن | ٥٨٧ |
| وعندي يومئذٍ مالٌ كثير واللّه لأُفْضُلَنَّ أبا بكرٍ (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٩ |
| وفد أبو زياد الكلابي مع أعراب سنة المجاعة (ث) | الرياشي | ١٤٢٥ |
| وفد الأحنف والمنذر بن الجارود على معاوية رضي اللّه عنهم فتهيّأ المنذر (ث) | الأصمعي | ١٥٧٦ |
| وفطنت لذلك .... فإن له علي ديناً (ث) | إبراهيم بن هشام | ٢٦٧٨ |
| وفي تفسير مجاهد: « زهرة الدنيا ولذّتها» (تفسير قوله تعالى: ﴿وحيل بينهم وبين ما يشتهون﴾) (ث) | سفيان بن عيينة | ٤٤ |
| وقال بعض الحكماء: إنّ النّاس سمعوا اللّه ولم يعرفوه ... كان يقال إنّها لك في عمرك (ث) | يحيى بن ضريس | ٢٢٥/م |
| وقاك اللّه خشية الفقر وطول الأمل (ث) | أعرابي | ٢٣٤٢ |
| وقت كان لي سن لم يكن لي خبز والساعة (ث) | يزيد بن هارون | ١٩٠٧ |
| وقد بلغني أنّك كنت تُعَيِّره بابن ذات النطاقين، وقد واللّه كنتُ ذات النطاقين (ث) | أسماء بنت أبي بكر | ٣٣١٦ |
| وقّعَ المأمون في رقعة متظلم من عليٍّ بن هشام: علامة الشريف (ث) | محمد بن منصور | ٢٢٨٦ |
| وقف عبد الملك بن مروان على قبر معاوية فتمثل (ث) | أبو قحذم | ٧٧٣ |
| وقفَ على قتلى بدرٍ ومعه أبو بكر | عثمان بن إبراهيم الخلطي | ١٣٧٤ |
| وقف المأمون في بعض أسفاره وهو قافل إلى (ث) | مُعلى بن أيوب | ٢١٨٤ |
| وقفت أعرابية على قبر ابنها، فقالت: واللّه ما لك (ث) | الزيادي | ٢٤٢١ |
| وقفت على بزاز بمكة اشتري منه ثوباً فجعل يمدح | | |
| وحلف (ث) | الحسن البصري | ٢٠٩١ |
| وقوف الشريف بباب الدّنيء لا يؤذن له (ث) | حيّاء المدينة | ٥٤٩ |
| وكان أصلع أقنى له جمة أسفل من أذنيه (ث) | إبراهيم الحربي | ٢٤٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| وكان المهاجرون يشغلهم الصفق في الأسواق | أبو هريرة | ٧٥٤ت |
| وكان يُقال حدِّث عن البحر ولا حرج وحدِّث | | |
| عن (ث) | محمد بن منصور | ١٩٠٣ |
| وكُلُّ شيءٍ سألتني تحفظه (ث) | سعيد بن المسيب | ٢٩٠٢ |
| وكيف أمنتك؟ ... قاتله اللّه أخذ أماناً (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٠٤ |
| وكيف ذلك؟ ... أمّا الحدّة فإنّ السّوط يقوّمك، وأمّا | | |
| الدمامة (ث) | عمر بن هُبَيْرة | ١٨٤٧ |
| وكيف لا يعجل عليَّ وأنا أعرض عقلي على (ث) | عبد الملك بن مروان | ٢٤٥٩ |
| وكيف يا سلمان وفيها الثمار؟ (ث) | جرير بن عبد اللّه | ٨٤٧ |
| وُلِدَ لسيرين معبد ومحمد ويحيى وأنس وحفصة وكريمة | | |
| بنت سيرين (ث) | إبراهيم بن فهد | ٢٧٢٧ |
| ولدت في السنة التي مات فيها أبو حنيفة (ث) | الشافعي | ٣٥٥٦ |
| ولست بشاتمٍ أحداً لأنّي (ث) | أحمد بن مروان | ٢٩٩٧ |
| وما أردت بهذا ؟ ... اطلقوه (ث) | المعتصم | ٣١٢٤ |
| وما أصف لك من دار من صَحَّ فيها (ث) | علي بن أبي طالب | ٥٣٩ |
| وما أصنع بالجوارش وأنا لم أشبع منذ كذا وكذا (ث) | ابن عمر | ٩٢١ |
| وما أصنع بأن أكون أميراً (ث) | أبو ذر | ٩٠٧ت |
| وما الذي رأيت؟ (ث) | الحسن الجعدي | ٣٩٦ |
| وما حملك على ذلك؟ (سأله رجل فاعتلّ عليه) (ث) | أسد بن عبد اللّه | ١٤٠٩، ٣٢٧٥ |
| وما رمى إياس بالعي قط وإنما عابوه بالإكثار (ث) | المدائني | ١٨٤٨ |
| وما قدر الدنيا حتى يحمد من زهد فيها | محمد بن واسع | ١/٣٠١١ |
| وما لأهل النّار راحةٌ غير العويل والبكاء (ث) | محمد بن المنكدر | ٤١٢ |
| وما مسألتك عن هذا؟ ... واللّه يا أخي لو لم يتواعدني | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| اللّه تبارك وتعالى إنْ أنا عصيته (ث) | يزيد | ١٤١٩ |
| وما يعجبك من هذا، وهل يسفك الدم (ث) | الشعبي | ٦٧٣ |
| ومعنى الستر الجميل أن يستر على عبده في الدّنيا | سفيان بن عيينة | ٢ |
| ومن أبو محمد؟ ...لا أستحل أن أبيت بها (ث) | معمر بن راشد | ٣٢٠٨ |
| ومن أعجب ما رأينا صعود غنيمات العامري على | | |
| سرير كسرى (ث) | سلمان الفارسي | ١٨٢٧ |
| ومن عجيب ما قيل قول النابغة: ـ (ث) | أبو العباس المبرد | ٣١٣١ |
| ومن هي؟ ... يا حرقة ما كان شأنكم؟ ... (ث) | سعد بن أبي وقاص | ٢٢٢٥ |
| ﴿ومن يعش عن ذكر الرحمن﴾: يعرض عنه. ومن | | |
| قرأ بنصب الشين أراد يعمى عنه (ث) | الفرّاء | ٩٣٢ |
| ومن يعقل يسأل عمّا لا يختلف فيه (ث) | قتادة | ٢٩٠٢ |
| والموت أهون ما يمرُّ على الحِبِلَّة (ث) | ابن عائشة | ٢٨٥٦ |
| ونحن نعمل بأيدينا | معاذ بن جبل | ٧٥٤ت |
| وهل تفعني اللّه إلاّ بك | أبو بكر | ١٥١ |
| وهل أنا إلاّ رجل من أهل الصُّفّة. ادفعوها إلى | | |
| فلان (ث) | أبو نصر الجهني | ٩٧٥ |
| ولا أبالي أن لا يكون لي به عهدٌ أبداً ... أما تعلم | | |
| أنّي الجافي المراغم والملح (ث) | الأعمش | ٢٥٣٢ |
| ويح كلمة رحمة (ث) | الحسن البصري | ١٤٣٤ |
| ويحكِ. إنّكِ إذا أطفأتيه ذكرتُ ظلمة القبر (ث) | هشام الدستوائي | ٣٥٥ |
| ويحكِ، البارحة تنوّرْت، اذهبي ليس عليه شيء (ث) | أبو عياض القاضي | ٣٢١٥ |
| ويحك دعنا نتعاشر بستر اللّه عزّ وجل إنّي أخاف أن | | |
| نصطحب (ث) | الحسن البصري | ١١٥٦ |
| ويحك. كُل واجعل أدم خبزك العافية فإنه | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ما أدمٌ (ث) | بشر الحافي | ٦٤٩ |
| ويحك من يسكن البحر إن انفتق (ث) | سفيان الثوري | ٩٤١ |
| ويحك هب أنّ المسيء قد عفي عنه أليس قد فاته ثواب الصالحين (ث) | راهب | ٤٣٣ |
| ويحك وهل أحدٌ يسمع بذكر النار تطيب نفسُه أن ينام (ث) | الفضيل بن عياض | ٧٢٣ |
| ويحك يا ابن عوف إني خلوت فحدثتني نفسي (ث) | عمر بن الخطاب | ١٦٨٢ |
| ويحك يا عطاء نحن جلوس والنهار يعمل عمله (ث) | سفيان الثوري | ١٠٨٣ |
| ويحك يا يزيد من يصوم عنك مَن يُصَلّي عنك بعد الموت (ث) | يزيد الرّقاشي | ٧٣٠، ٢٨٠٤ |
| ويحك، يا ويحك يا أحمد بلغني أنه من حج من غير حِلّه ثم لبى (ث) | أبو سليمان الداراني | ٩٦٨ |
| ويحك يا وكيع! أنت ناقد الحديث (ث) | بنان الطفيلي | (١١) ملحق |
| ويحكم من يسكن البحر إذا انبثق (ث) | سفيان الثوري | ٢٩٧٠ |
| ويلٌ للمحدِّث إذا استضعفه أصحاب الحديث (ث) | وكيع بن الجرّاح | ٢٩١٣ |
| ويلك أتملك نشر الماء (ث) | الحسن البصري | ٩١٢ |
| ويلك لا تفعل فإنّ علياً رحمه اللّه يُشتم (ث) | محمد بن عبد اللّه بن عروة بن الزبير | ٢٥٠٥ |
| ويلك وما قاتل الثلاثة (ث) | عمر بن الخطاب | ١٦٩٠ |
| ويلي على الأعرابي الجلف (ث) | أبو جعفر المنصور | ٣٤١٨ |
| الواق والصرد والحاتم : الغراب. وسمّته العرب الحاتم لأنه يحتّم بالفراق عندهم (ث) | عبد اللّه بن مسلم بن قتيبة | ٩٣٧ |
| الوضوء قبل الطعام ينفي الفقر، وبعده ينفي اللّمم (ث) | الحسن البصري | ٦٤٠، ٢٠٤٠ |
| الوعد الرق، فإذا وعد أحدكم أخاه، فليلتمس العتق | أنس بن مالك | (٢٣) ملحق |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا، أبو سهل الخراساني رَجُلٌ آخر. ولم يسمع نصر | | |
| ابن ثابت من هشام بن عروة (ث) | يحيى بن معين | ٨٩٨ |
| لا أتزوج من امرأة حتى انظر إلى ولدي منها (ث) | رجل من حكماء العرب | ٣٢٨٠ |
| لا أجلسُ مجلساً أعلم إنّي لا أقام عن مثله، ولا أقف | | |
| على باب (ث) | الأحنف بن قيس | ٣٢٤٣ |
| لا أُحدّثكم بشيءٍ حتّى تجيئون معي إلى السوق ... هؤلاء | | |
| أصحاب الحديث (ث) | غندر | ٢٦٣٣ |
| لا أدركت أنا ولا أنت زماناً يتغاير الناس فيه على | | |
| العلم (ث) | عمر بن الخطاب | ١٥٦٤ |
| لا أدري ما صعد اليوم من عملي (ث) | الضّحاك بن مزاحم | ٢٩٨٦ |
| لا أزالُ أُحْسِنُ صلاتي ما حصبني سعيد (ث) | الحجّاج بن يوسف الثقفي | ٢٥٤٢ |
| لا أسكن بلداً قتل فيه ابن بنت رسول اللّه صلى اللّه | | |
| عليه وسلم (ث) | أبو عثمان النهدي | ١٩٩٤ |
| لا أعتذر من العي إلاّ في حالين إذا خاطبت (ث) | سعيد بن العاص | ١٧٣٤ |
| لا أفارقك حتّى تمليه عليَّ فإنّما هذا دعاء أنطق اللّه | | |
| به زهيراً (ث) | بشر بن الحارث | ٢٦٦٣ |
| لا أكافئهم رجل بدأني بالسلام، ورجل أوسع لي في | | |
| المجلس (ث) | ابن عبّاس | ٦٨١ |
| لا، إن الذي لا عيب فيه لا ينبغي أن يموت أبداً (ث) | بزرجمهر الحكيم | ٦٦٨ |
| لا، إنْ أمنت النِّعال فافعل (ث) | يوسف بن أسباط | ١٦٣١ |
| لا، إلاّ أن يتوبوا (ث) | يوسف بن أسباط | ٣٣٠ |
| لا، إلاّ أن يضع يده على الفرج (ث) | إبراهيم النخعي | ٩٥١ |
| لا بأس أن يعجل الرجل زكاته ثلاثة أعوام (ث) | الحسن | ٩٤٥ت |
| لا بأسَ عليك إنّي غير قاتلك حتّى تشربه (ث) | عمر بن الخطاب | ٣١٠٤ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا بُدَّ للناس من متنفَّسات (ث) | الحسن البصري | ١٩٥٠ |
| لا، بل كان لمن قبلي فزال عنه وصار إلي وكذلك يزول عني (ث) | النعمان بن امرىء القيس | ١٢٢٢ |
| لا تأذن لعَنبسة علينا إلاّ أن تكون له حاجة (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٩٩٩ |
| لا تباشر المرأة المرأة تنعتها لزوجها | جابر | ٣٥٢٤ |
| لا تباشر المرأة المرأة ولا الرجل الرجل | جابر | ٣٥٢٤ت |
| لا تبكوا عليَّ فإنّي لم أتنطف بخطيئة منذ أسلمت (ث) | أبو سفيان بن الحارث | ١٦٨٨، ٢٥٦٢ |
| لا تجزيء صلاةٌ لا يقيم الرجل صلبه في الركوع والسجود | جابر بن عبد اللّه | ٢١١ |
| لا تجعل بينك وبين اللّه منعاً عليك، وإذا سألت فسأل اللّه (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٣١٦ |
| لا تحجبن عني أحداً إذا أخذت مجلسي | خالد بن عبدالله القسري | ٢٢٦٠ت |
| لا تُحقِّروا حملة العلم فإنّ اللّه عَزَّ وَجَلَّ لم يحقِّرهم حيث علمه عندهم (ث) | أبو قدامة شيخ<br>لليث بن سعد | ٣٠١ |
| لا تخبره فتعري قلبه، ولكن ادع له واثني عليه (ث) | علي بن بكار | ٣٥٣٨ |
| لا تخرجهم من علم إلى علم حتى يحكموه (ث) | بعض الملوك | ١٦٣٩ |
| لا تُخَفِّف عنه دعه يلقى اللّه بدمِ الزبير (ث) | عبد اللّه بن الزبير | ٢٤٦٠ |
| لا تدخلوا الجنّة حتّى تؤمنوا | أبو هريرة | ٣٤٨٥ |
| لا تدنقوا فيدنق عليكم (ث) | الحسن البصري | ٢٧٥٦ |
| لا تراه الدهر إلاّ وكأنه لا غنا به عنك (ث) | أعرابي | ٨/٢٤٣٥ |
| لا تردّوا السائل ولو بشقّ تمرة | عائشة | ٢٤٧١/م |
| لا تردّوا الطيب فإنّه طيّبُ الريح خفيف المحمل | أبو هريرة | ٢٨١٠، ٣٣٤٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا تزول قدم ابن آدم يوم القيامة عند ربّه عزّ وجلّ | | |
| حتّى يسأله عن خمس | عبد اللّه بن مسعود | ٧ |
| لا تسبّوا أصحاب النبيّ صلى اللّه عليه وسلم فإنّهم | | |
| أسلموا خوفاً من اللّه (ث) | أبو الأحوص | ٢٣٣ |
| لا تسخر من شيء فَيَحْرُ بكَ (ث) | بعض الحكماء | ٨٩١ |
| لا تُسَمِّني أميراً، وسمِّني أسيراً (ث) | عبد اللّه بن طاهر | ١٧٣، ٣٣٧٧ |
| لا ترفع عصاك عن أهلك | ( ) | ١٥٥٢ |
| لا تشاور صاحب حاجة تريد قضاءهاو لا جائعاً | | |
| ولا حاقناً (ث) | الأصمعي | ٥٩٦ |
| لا تشرك بالله شيئاً | معاذ بن جبل | ١٥٥٢ت |
| لا تشرك بالله شيئاً | أم أيمن | ١٥٥٢ت |
| لا تشركن بالله شيئاً | أميمة | ١٥٥٢ت |
| لا تشركوا بالله شيئاً | عبادة بن الصامت | ١٥٥٢ت |
| لا تصبحون في أمرٍ إلاّ أتاكم أشدّ منه | حذيفة | ٢٩٦١ |
| لا تضامون في رؤيته؛ والتضام من الناس يكون في | عبد اللّه بن مسلم | |
| أوّل الشهر عند طلبهم الهلال (ث) | بن قتيبة | ٩٢٩ |
| لا تضع معروفك عند فاحش ولا أحمق ولا لئيم (ث) | بعض الحكماء | ٢٨١٨ |
| لا تطلبوا الحوائج في غير حينها ولا تطلبوا إلى | | |
| غير أهلها (ث) | خالد بن صفوان | ١٠٦١ |
| لا تطلبوا ما لا تستحقون فإنّ من طلب (ث) | خالد بن صفوان | ١٧٩٤ |
| لا تطلبوا الجلوس في الشمس (ث) | عمر بن الخطاب | ١٩٨٠ت |
| لا تظهرن خوفك فيجتريء عليك عدوك (ث) | بعض الحكماء | ٢٧٩٤ |
| لا تعادِينّ رجلاً، ولا تناصبه حتّى تنظر إلى سريرته بينه | | |
| وبين اللّه (ث) | أبو حازم | ١١٠٠ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا تعبأ بصاحب عيال | سفيان الثوري | ٢٢٦٥ت |
| لا تُعَجِّلْ حتَّى تُصَلِّي (ث) | سعيد بن المسيب | ٥١٧ |
| لا تُعفِّروا الأقدام إلاّ إلى أقدارها (ث) | سفيان بن عيينة | ١٤٣٠ |
| لا تعمل شيئاً في السِّرِّ تستحي منه في العلانية (ث) | محمد بن عمران | ٨٢٦، ٤/٢٤٣٥، ٣٣٤٠ |
| لا تعنّا فقد أخذه من لا يرده، ورآه من لا يفش عليه | كسرى | ١٩٠٢ |
| لا تغتروا بطول السلامة مع تضييع الشكر واسترعوا شارد النعم (ث) | بعض الزهاد | ١٤٩٢ |
| لا تغتسلي في الحشِّ ولا في مكان يبال فيه (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٩٥ |
| لا تغرنكم صلاة امريء ولا صيامه (ث) | عمر بن الخطاب | ٧٠٨ت |
| لا تغضبه فيعاديك وينتصب لك فلا تقوم لمكره (ث) | بعض العباد | ١٧٥٤ |
| لا تغفلوها عن ذكر اللّهِ فإنَّ من أغفلها فقد قتلها (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا تقتلوا أنفسكم﴾) (ث) | الفضيل بن عياض | ٨٥ |
| لا تفرح بها إذا أتتك ولا تأس عليها لما فاتتك | معروف الكرخي | (٦) ملحق |
| لا تفرح بما أقبل، ولا تأسف على ما أدبر ... تخرج من بيتك فلا تلقى أحداً (ث) | يوسف بن أسباط | ١٤٥٥ |
| لا تفعل، لأن تلقى اللّه عز وجل وعليك دَيْنٌ ولك دِينٌ خير من أن تلقاه وقد | محمد بن النضر الحارثي | ١٣١٥ |
| لا تفعل يا ابن عمٍّ رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم (ث) | زيد بن ثابت | ١٣١٤ |
| لا تقدموا رمضان بصوم يوم أو اثنين | أبو هريرة | ٢٦٥٤ت |
| لا تقف على بابي ساعةً واحدةً إلاّ ساعة تعلم أنّي جالسٌ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٢٦٠، ٣٣٨٠ |
| لا تقل فيما لا تعلم فتتهم فيما تعلم | بعض الحكماء | ١٧٥٧/م |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا تَقُل كما تحبُّ فإنّي لا أحبُّ لمن أحبَّ شيئاً | | |
| من الدنيا (ث) | زهير بن نعيم الباني | ٤٧٨، ٢٣٧٥ |
| لا تقولوا شاء اللّه وشاء فلان، ولكن قولوا | حذيفة بن اليمان | ١٩٨٨ |
| لا تقوم الساعة حتى تقاتلوا قوماً | أبو هريرة | ٣١٥٠ت |
| لا تقوم الساعة حتّى تقاتلوا اليهود | أبو هريرة | ٣١٥٤ |
| لا تكرعوا واغسلوا أيديكم واشربوا | عبد الله بن عمر | ٢٠٥٣ |
| لا تكفنوني في قميصٍ. فلمّا مات وغُسِّلَ (ث) | أهبان بن صيفي | ٢٤٠١ |
| لا تكن في الإخاء مكثراً ثم تكون فيه مدبراً (ث) | بعض الحكماء | ١٠٢٧ |
| لا تلبسها على غدرة ولا فجرة (تفسير قوله تعالى: | عكرمة | ١٥٢٨، |
| ﴿وثيابك فَطَهِّرْ﴾) (ث) | | ٣٠٤٢ |
| لا تلد النساء إلى ألف سنة مثله غير أنّ فيه عيباً (ث) | الخليل بن أحمد | ٢١٦٨ |
| لا تلقى المؤمن أبداً إلاّ شاحباً ولا تلقى المنافق إلا | | |
| وابصاً (ث) | الحسن البصري | ٩١٣ |
| لا تلقوا اللؤلؤ إلى الخنازير، فإنها لا تصنع به شيئاً (ث) | عيسى بن مريم | ٣١١ |
| لا تلوموني فإنّ يعقوب عليه السلام فقد سبطاً من | علي بن الحسين بن علي | |
| ولدِه فبكى حتّى ابيضّت عيناه (ث) | بن أبي طالب | ٦٩٢ |
| لا تماروا فيه فإن المراء | سعد مولى عمرو | |
| | بن العاص | ٣٤٩٧ت |
| لا تمازح الشريف فيحقد عليك، ولا الدنيء فتهون | | |
| عليه (ث) | سعيد بن العاص | ٨٩٤ |
| لا تمنعوا إماء اللّه مساجدَ اللّه وليخرجنّ | ( ) | ١٩٨١ |
| لا تنزلت ببلد ليس فيه خمسة أشياء (ث) | كسرى | ١١٨٨ |
| لا تنسوا نصيبكم من الدنيا، فإن نصيبكم منها بقية | | |
| أعماركم (ث) | إبراهيم الحربي | ١٨٦١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا تنظروا إلى خفض عيشهم ولين (ث) | مطرِّف بن عبد اللّه | ٢٢٩٩ |
| لا تؤاخ الفاجر فإنّه لك فعْله (ث) | علي بن أبي طالب | ١٣٧٩ |
| لا تودَنّ عاقاً، كيف يودّنك وقَدعَقّ أباه (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١٠٩١ |
| لا جعل الله لك إلى لئيم حاجة (ث) | حرقة بنت النعمان | ٤٤٧ |
| لا حاجة لي في الكرى. المسلمون عند شروطهم (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٩٧٩ |
| لا حتّى تدفيء الضجيع وتروي الرّضيع (ث) | علي بن أبي طالب | ١٩٦٧ |
| لا حساب عليهم (تفسير قوله تعالى: ﴿وكلا منها رغداً حيث شئتما﴾) (ث) | مجاهد | ٢٧٠٦ |
| لا حول ولا قوة إلاّ باللّه (ث) | إبراهيم عليه السلام | ٣٦، ١٧٦٩ |
| لا خيرَ في أسفلٍ مِن ذلك | أبو بكر الصديق | ٣١٧٤ |
| لا خير في الدنيا إلاّ لرجلين: رجل تائب، ورجل يعمل في الدرجات (ث) | ميمون بن مهران | ٨٤٩ |
| لا خير فيمن لا يجمع المالَ فيقضي دينه ويصل رحمه (ث) | سعيد بن المسيب | ٢٢١١ |
| لا خَيْرَ ولا شر (ث) | عبد الله بن عبّاس | ٩٣٧ |
| لا شيءَ معه (ث) | ابن أبي نجيح | ١٠٥١ |
| لا صبر له على النِّساء (ث) | طاووس | ١٠٦٩ |
| لا ضَرَرَ، ولا ضرار، من ضارَّ | أبو سعيد الخدري | ٣١٦٠ |
| لا ظفر مع بغي، ولا صحة مع نهم، ولا ثناء مع كبر (ث) | حكماء الهند | ١٥٣٦ |
| لا عاش بخيرٍ من لم يَرَ برأيه ما لم يَرَه بعينيه (ث) | ابن الزبير | ٦٠٠، ١٥٢٨ |
| لا عدوى ولا طيرة | | ٩ت |
| لا غيبة لثلاثة: فاسقٍ مجاهر بفسقه، وذي بدعة، وإمام جائر (ث) | الحسن البصري | ١٣٤٧، ٣٣٥١ |

| طرف الأثر او الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا فقير أفقر من غنيٍ أمِن الفقر (ث) | زيد بن جبلة | ٢٥١٤، ٣١٩٥ |
| لا ... لأنّ كفّك بالجزيل أكثر من مسألتي باللّسان (ث) | نُصَيْب | ٢٧٥٥ |
| لا محظور عليها كما يحظر على بساتين الدنيا (تفسير قوله تعالى: ﴿وفاكهة كثيرة لا مقطوعة ولا ممنوعة﴾) (ث) | عكرمة | ١٠٠٣ |
| لا مرحباً بهذه الوجوه التي لا تُرى إلاّ في الشرّ (ث) | عمر بن الخطاب | ٦٥٢ |
| لا نعلم أربعة أدركوا النبي صلى اللّه عليه وسلم هم وأبنائهم (ث) | سفيان بن عيينة | ٢٣٠٢ |
| لا والذي نجّاني يوم بدر (ث) | عكرمة بن أبي جهل | ٢٩٥٤ |
| لا واللّه إلاّ أنّي أرويها منذ زمان (ث) | عبيد بن شرية الجرهمي | ٧٧٥ |
| لا واللّه ولكنه جذبني جذبة محق (ث) | فرغان | ٢٠٦٤ |
| لا واللّه يا أمير المؤمنين، وما نظرة (ث) | ابن شكلة | ٣١٢٤ |
| لا وجدّته إنّما بنيت هذه المساجد لمّا بُنِيَتْ | بُريدة | ٢٣٤٠ |
| لا، وسأوريكم. ادعوا لي أبا مورد حاجبي.... | عبيد اللّه بن | |
| اخرج حتّى تنظر ما الرِّيح (ث) | الحسن العنبري | ٦٢٢ |
| لا وَكَلَهُ اللّهُ إلى عبادته (ث) | أبو بكر النهشلي | ٣١٤١ |
| لا، ولكن إنّما يُوَفّى العامل أجره إذا قضى عمله (ث) | أبو هريرة | ٢٩٩١ |
| لا ولكن لي أخت بمنزلة الولد (ث) | المازني | ٣٤٢٠ |
| لا ولكن هرم الجود والمعروف، لقد مدحت الحكم بن عبد المطلب بقصيدة (ث) | نُصَيب | ١٩٢٣، ٣٠٨٠ |
| لا ولكنهم الذين يكثرون أكل لحوم النّاس (ث) | سفيان الثوري | ١١٧٤ |
| لا ولا نعمة عين ولا كرامة، قد بعث اللّهُ من هو خيرٌ منك إلى من هو شرٌّ منّي (ث) | هارون الرشيد | ٩٩٣ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا يأمن من قطع في خمسة دراهم خير أعضائك أن يفعل ذلك غداً (ث) | يونس بن حبيب | ٢٤١٢ |
| لا يَتِمُّ المعروف إلاّ بثلاثة:تعجيله وتصغيره عنده (ث) | عبد الله بن عبّاس | ٦٨٥ |
| لا يجلس قوم مجلساً لا يصلّون فيه على النبيّ صلى اللّه عليه وسلم إلاّ كان عليهم حسرة | أبو سعيد الخدري | ١٢٧ |
| لا يحتجب الوالي إلاّ عن ثلاث: (ث) | بعض حكماء العرب | ٢٢٦٠ |
| لا يحلُّ لعمر من مال اللّه إلاّ حُلّتين: حُلّةً للشتاء (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٣٩٤ |
| لا يدخل الجنة من كان في قلبه مثقال حبة | عبد اللّه بن مسعود | ٦٧٨ |
| لا يدرك النّاس ما قدّمت من حسن (ث) | كعب بن الأشعري | ٣٩٩٣ |
| لا يرى امرؤ من أخيه عورةً فيسترها عليه | أبو سعيد الخدري | ١٦٧٩ |
| لا يردُّ الدّعاء بين الأذان والإقامة | أنس بن مالك | ١٠٤٧ |
| لا يزال الرجل يزداد في رأيه ما نصح لمن استشاره (ث) | والد أبي جعفر المنصور | ٥٩٧ |
| لا يزال لسانك رطباً بذكر الله | عبد الله بن بُسْر | ٣٩٤ت |
| لا يزال المرء عالماً ما طلب العلم (ث) | عبد الله بن المبارك | ٣٠٨ |
| لا يزال المسروق في تهمة من هو بريء (ث) | عائشة | ٨٩٨ |
| لا يزال الناس بخير ما أبقى اللّه عز وجل سفيان الثوري (ث) | أبو حنيفة | ٢٦٢٧ |
| لا يزال الناس بخير ما تُعجِّب من العجب (ث) | أبو الزناد | ٦٥٤ |
| لا يزال الناس بخير ما دام يختلج في صدر الرجل شيء (ث) | يونس بن عبيد | ١٨٠٩، ٣٤٣٦ |
| لا يزال في الناس بقية ما تعجب من العجب (ث) | أبو الزناد | ٦٥٤ت |
| لا يزيد في العمر إلاّ البر ولا يَردُّ القدر (ث) | ثوبان | ١٨٩٢ |
| لا يستحق أحد حقيقة الإيمان حتّى لا يعيب (ث) | الحسن البصري | ١٩١٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا يستقيم حب الدنيا وحب الآخرة في قلب مؤمن(ث) | عيسى عليه السلام | ١١٥٠ |
| لا يستر عبدٌ عبداً إلاّ ستره الله يوم القيامة | أبو هريرة | ١٦٧٩ت |
| لا يستقيم طالبُ الآخرة إلا بالمبادرة إليها (ث) | محمد بن النضر الحارثي | ٣٢٣ |
| لا يسكن مكّة سافكُ دمٍ، ولا آكلُ رِباً (ث) | عبد الرحمن بن سابط | ٦٧٣ |
| لا يصوم عبد يوماً في سبيل اللّه إلاّ باعد اللّه | أبو سعيد الخدري | ٢٠٩٤ |
| لا يعتدُّ بمن له عيال ... يَؤُمُّ بالرجل (ث) | سفيان الثوري | ٢٢٦٥ |
| لا يعدي شيء شيئاً | | ٩ت |
| لا يعلوا طير في السماء أكثر من اثني عشر ميلاً (ث) | كعب الأحبار | ٨٤٢ |
| لا يغلبنّ جهل غيرك علمك بنفسك (ث) | بعض الحكماء | ١٨٠٦، ٦/٢٤٣٥ |
| لا يغني حذر من قدر والدعاء ينفع | عائشة | ١٦٨٦ت |
| لا يقف أحدكم موقفاً يضْرَبُ فيه رجل مظلوماً (ث) | عبد الله بن عبّاس | ١٠٦ |
| لا يقول رجلٌ في رجلٍ من الخير ما لا يعلم إلا أوشك (ث) | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ٢١١٨ |
| لا يقولون حتّى يقول ويأمر وينهى (ث) | إبراهيم التيميّ | ١١٤٦ |
| لا يكون البكاء إلاّ من فضلٍ وإذا اشتدَّ الحزن ذهب البكاء (ث) | العتبي | ٣٣٧٥ |
| لا يكون الرجل قَيِّمٌ لأهله حتى لا يبالي أي (ث) | علي بن أبي طالب | ١٦٦٦ |
| لا يلهك النّاس عن نفسك فإنّ الأمر يصير إليك دونهم (ث) | عمر بن الخطاب | ١٨٩٥ |
| لا يمنعكم شؤماً تعلمون مِنّا أن تقبلوا منّا أحسن (ث) | بلال بن أبي بردة | ١٥٦٣ |
| لا يموت أحدٌ أبداً حتّى يرى في الجنّة (ث) | عطية العوفي | ٢٢٤٥ |
| لا يموت رجل مسلم إلاّ أدخلَ اللّه عَزَّ وَجَلَّ مكانه النّار | أبو بردة | ٢٤٧٢ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| لا ينبغي أن يكون الرجل قاضياً حتى تكون | | |
| فيه خصال (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٠٧١ |
| لا ينبغي أن يكون الفاضل من الرجال إلا مع | | |
| الملوك مكرماً (ث) | بزرجمهر | ١٥٧٩ |
| لا ينبغي للإمام أن يكون سفيهاً ومنه يلتمس الحلم، | | |
| ولا جائر (ث) | عيسى عليه السلام | ١٥٢٣ |
| لا ينبغي للملك أن يغضب لأن القدرة من وراء | | |
| حاجته (ث) | أُسقف نجران | ٢٨٠١ |
| لا ينبغي للمؤمن أن يُذِلَّ نفسه ... يتعرض من البلاء | | |
| ما لا يطيق | عمرو بن عاصم الكلابي | ٣٤٩٤ |
| لا يؤخذ العلم من أربعة: سفيه معلن بالسفه، | مالك بن أنس | ١٨٩١، |
| وصاحب هوى (ث) | | ٣٠٥٣ |
| لا يؤمن عبد حتَّى أكون أحبَّ إليه من أهله وماله | أنس بن مالك | ٣٤٧، |
| | | ٣٥٦٧، |
| | | ٣٥٦٨ |
| لا يؤمن العبد الإيمان كله | أبو هريرة | ١٤٤٨ت |
| يا أبة مالك إذا تكلمت أبكيت الناس (ث) | عمر بن ذر | ٧٣٦ |
| يا أبا إسحاق إلى متى هذا. إخوانك يكفونك؟(ث) | الأوزاعي | ٩٦، |
| | | ١/٢٩٩٣ |
| يا أبا إسحاق: أنت أستاذنا (إبراهيم بن أدهم) (ث) | شقيق البلخي | ١٤٤ |
| يا أبا إسحاق. نعم الشيء هذا إنْ لم يكن تكرمة على | | |
| دين (ث) | سلم الخواص | ٣٦١ |
| يا أبا إسماعيل ذهب بهاء العلم (ث) | سفيان بن عيينة | ٣١٢١ |
| يا أبا بكر ما ظنّك باثنين اللّه ثالثهما | أبو بكر الصديق | ٢٨٦٩، |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ٢٢٣٨ت | | |
| يا أبا بكر لا تحزن إنّ اللّه معنا | عمر بن الخطاب | ٢٢٣٨ |
| يا أبا ثابت ما هذا؟ | سعد بن عبادة | ٢٢٣٠ |
| يا أبا ثور حدّثنا بعجيبة بسم اللّه الرحمن الرحيم (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٤٢٢ |
| يا أبا جهل بن هشام، ويا شيبة بن ربيعة ويا أمية بن | | |
| خلف، ألا هل | أنس بن مالك | ٢٢٦٤ |
| يا أبا الجهم إياك والسلطان فإنّه يغضب غضب | | |
| الصبيان (ث) | معاوية بن أبي سفيان | ١٦٠٣ |
| يا أبا حازم عظني وأوجز | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| يا أبا حازم ما لنا نكره الموت | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| يا أبا حازم ما هذا الجفاء؟ | سليمان بن عبد الملك | ٣٤٥٦ |
| يا أبا ذرٍّ من أنعمُ الناسِ بالاً؟ ... صدقت يا أبا | | |
| ذرٍّ (ث) | عمر بن الخطاب | ١٧٨٦ |
| يا أبا زكريا حدثني بشيء أذكرك به | رجل | ٥١٠ |
| يا أبا زيد ... إياك عنّي إنا معاشر قريش لا ندعو | عمرو بن عتبة | |
| موالينا (ث) | بن أبي سفيان | ٢٢٣٥ |
| يا أبا سعيد أخاف أن لا أُؤدّي شكره (ث) | فرقد السبخي أبو يعقوب | ٦٤١ |
| يا أبا سعيد أخبرني عن العبد يذنب ثم يتوب | | |
| ويستغفر | الأشعث بن سوار | ٢٦١٢ |
| يا أبا سعيد تدري ما يقول الناس ... يقولون: إنك | | ١٦٨٩، |
| خير ... شهادة أن لا إله إلاّ إلاّ اللّه (ث) | الفرزدق | ١٨٧٤ |
| يا أبا سعيد على ودّي إنّ الدجال قد خرج وبيدي | | |
| راية وأنا بين يدي (ث) | فرقد السبخي | ٦٤٢ |
| يا أبا عبد الرحمن رأيتك تصنع أربعاً لم أر أحداً (ث) | عبيد بن جريج | ٣٤٦٢ت |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا أبا عبد اللّه إنّ الخليفة لا يصلحه إلاّ التقوى | | |
| والسلطان (ث) | المنصور | ٢٢٥٢ |
| يا أبا عبد اللّه إنّك لو حدّثتَ النّاس بهذا لاتسعْتَ | | |
| واتّسَعَ أهلك (ث) | يحيى بن سعيد | ٩٧٠ |
| يا أبا عبد اللّه الحديث الذي روي أن اللّه تبارك | | |
| وتعالى (ث) | أبو عبد اللّه السلال | ١١٧٤ |
| يا أبا عبد اللّه لا تبرمّن أمراً حتى تفكر فيه (ث) | المنصور | ٢٢٥١ |
| يا أبا عبد اللّه لا ينبغي أن يكون الحاجِب جهولاً | | |
| ولا عييّاً (ث) | المنصور | ٢٢٦١ |
| يا أبا عطارد إنّ سويق العدس بارد وهو يدفع | | |
| الدم (ث) | ابن سيرين | ٦٣٥ |
| يا أبا علي أخزى اللّه امرءاً رضي أن يرفعه هِنّاه (ث) | يحيى بن خالد | ١٩٢١ |
| يا أبا علي لا تعتد بصاحب عيال (ث) | سفيان بن عيينة | ٩٩ت |
| يا أبا عمير ما فعل النُّغير؟ | أنس بن مالك | ٢٨٣٦ |
| يا أبا فراس ما أعددت لهذا اليوم؟ نعمًا فأبْشرْ (ث) | الفرزدق | ٥٥٩ |
| يا أبا قلابة وأي خيرة في كسر رجلي جميعاً (ث) | قائد من قواد عبيد الله | |
| | بن زياد | ٥١٨ |
| يا أبا محمد إنما سألت حوائج غيرك وقد قضيناها | | |
| فما حاجتك؟ (ث) | عبد الملك بن مروان | ٣٠٥ |
| يا أبا محمد تدري كُنّا نقول للرجل إذا أحسن | | |
| فينا (ث) | أنس بن مالك | ٢٥٢٨ |
| يا أبا محمد حاجتك؟ (ث) | عبد الملك بن مروان | ٣٠٥ |
| يا أبا محمد! الملكان يعلمان الغيب؟ | أبو نواس الشاعر | ٢٨ |
| يا أبا مسلم، هذا أبو جعفر (ث) | أبو العبّاس (الخليفة) | ٢٣٣٤ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا أبا موسى أو يا عبد اللّه بن قيس ألا أعلمك كلمة من كنز الجنة | أبو موسى الأشعري | ٢٣٦٨ |
| يا أبا نصر رعيتي ودهري غير رعية عمر ودهره (ث) | هارون الرشيد | ٩٧٥ |
| يا أبا نصر ما الشرف؟ (ث) | ابن أبي فديك | ٩٧٥ |
| يا أبا النعمان نحن قوم مساكين فلم يزل يدافعني حتى خرج (ث) | أحمد بن حنبل | ١١٤٣ |
| يا أبا يحيى ادع اللّه لي (ث) | مالك بن دينار | ١١١٥ |
| يا أبا يزيد أطرفنا ممّا سمعت بمكة(ث) | الشعبي | ٦٧٣ |
| يا أبا يعقوب إن عندنا ها هنا قوماً لا يؤمنون بمنكر ونكير (ث) | رجل | ٣٤ |
| يا أبا يعقوب بلغني أنّكَ لا تأكل الفالوذج (ث) | الحسن البصري | ٦٤١ |
| يا إبراهيم كيف وجدت الموت (ث) | قول اللّه تعالى | ٣٩ |
| يا ابن إدريس أنت تعلم إني آخذ الرغيف وما (ث) | بهلول | ٩٨٢ |
| يا ابن آدم إذا رأيت الناس يكرمونك على طاعة اللّه عَزَّ وَجَلَّ (ث) | سليمان التيّمي | ١٥٤٩ |
| يا ابن آدم أطعني فيما أمرتك ولا تعلمني بما يصلحك | قول الله تبارك وتعالى | ١٥٨٦ |
| يا ابن آدم أكلت الطيب ولبست اللّين وركبت الذلول (ث) | الحسن البصري | ١٥٩٢ |
| يا ابن آدم أمرك ربّك أن تكون (ث) | زيد بن أسلم | ١٧٧٧ |
| يا ابن آدم لا غنى بك عن نصيبك من الدنيا (ث) | الحسن البصري | ١٩١٧ |
| يا ابن آدم تضحك ولعلّ أكفانك قد خرجت (ث) | عبد اللّه بن ثعلبة | ٥٦٦ |
| يا ابن آدم عجباً لك كيف تقر عينك أو يزايل الوجل قلبك (ث) | بعض زهاد البصرة | ٣٠٥٨ |
| يا ابن آدم، عليك بنفسك فاحفظها من المعاصي (ث) | زهير الباني | ٢٨٤٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا بن آدم فرحت ببلوغ أملك وإنما بلغته بانقضاء | | |
| مدّة أجلك (ث) | داود الطائي | ٢٩٨٧ |
| يا ابن آدم كُلْ في ثلث بطنك واشرب في ثلث (ث) | وهيب بن الورد | ٢٢١٧ |
| يا ابن آدم ليس يوم القيامة قصاص (ث) | الحسن البصري | ٢٤٤٨ |
| يا ابن آدم ما أقل وفائك، أبلى ما يكون حبيبك | | |
| في قبره (ث) | بعض الزهاد | ٧٤٥ |
| يا ابن آدم ما تصنع الدنيا | ابن عباس | ٤٢١ت |
| يا ابن آدم نهارك ضيفك، فلا يدخلنَّ عليك (ث) | الحسن البصري | ١٢٨٦ |
| يا ابن آدم هذه حسنة قد عملتها في مكان | | |
| كذا وكذا(ث) | عبد اللّه بن مسعود | ٢٧٧٩ |
| يا ابن آدم لا تحمل هَمَّ يومك الذي يأتي على | | |
| يومك الذي أنت فيه (ث) | علي بن أبي طالب | ١٢٠٥ |
| يا ابن أخي أنت لم تتعوّد الصيام (ث) | أبو هريرة | ٣١٩ |
| يا ابن أخي إني أقدم على أمرٍ لم أقدم على مثله (ث) | الحسن بن علي | ٤٧٦ |
| يا ابن شهاب أخبرني عن قول اللّه عزّ وجلّ: ﴿ولقد | | |
| آتينا موسى تسع آيات بيّنات﴾ ما هنّ؟ (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٥٠٤ |
| يا ابن المبارك إذا عرفت نفسك لم يضرُّكَ ما قيل | | |
| فيك (ث) | عبد اللّه بن المبارك | ٢٨٧٨ |
| يا ابن المبارك: فقيه وطبيب | سفيان الثوري | ١٢/٢٤٣٥ |
| يا أبة أنت حدثتني عن جبريل عليه السلام أنه | | |
| أخبرك (ث) | يحيى عليه السلام | ١٥١٨ |
| يا أبتي تفعل به مثل هذا وقد هجاك (ث) | شيبة بن عقال | ١٠٨٨ |
| يا أبة مللْ لي ربّك الحزن فلعليّ أنجو بطول (ث) | علي بن الفضيل | ١٢٣٣ |
| يا أحمد إنّه إذا جنَّ الليلَ وهدأت العيون وأنِسَ كُلّ | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| خليل بخليله (ث) | أبو سليمان الداراني | ١٧٠ |
| يا أحمد إنّ اللّه تبارك وتعالى أوحى إلى موسى: مُرْ ظلمة بني إسرائيل (ث) | أبو سليمان الداراني | ٩٦٨ |
| يا أخي، استقيل اللّه إن عافاك أن تتوب (ث) | صالح المرّي | ٢٨٥١ |
| يا أخي، إن العبادة لا تكون بالشركة إنّه من لم (ث) | البراثي | ١٧٨٢ |
| يا أخي إنّك لا تدري إنّ مع الثروة والنعمة (ث) | قيس بن زهير | ٢٢٠٦ |
| يا أخي لأيّ شيءٍ تجزع تقدم على رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم وعلى علي بن أبي طالب وهما أبواك (ث) | الحسين بن علي | ٤٧٦ |
| يا آدم أنت اليوم عدل بيني وبين ذريتك | أثر إلهي | ١٠٧٢ |
| يا أسلم احمل عليَّ .. لا أمَّ لك يا أسلم بل أنا أحمله لأنّي أنا (ث) | عمر بن الخطاب | ٢١٦ |
| يا أسلم تدري لم ربضت بحذاهم ... رأيتهم يكون (ث) | عمر بن الخطاب | ٢١٦ |
| يا أصمعي، وهل أحد أخشى للفقر مني (ث) | هارون الرشيد | ١٥٩ |
| يا أعرابي كل مما يليك (ث) | عبد الملك بن مروان | ٣١٢٧ |
| يا أمة اللّه، إيش بكاء هؤلاء الصبيان؟ (ث) | عمر بن الخطاب | ٢١٦ |
| يا أمير المؤمنين أتت على الناس سنون (ث) | أعرابي | ٦١٤ |
| يا أمير المؤمنين أتسأل هذا ولد أبي بكر (ث) | عبد الرحمن بن عوف | ١٦٤ |
| يا أمير المؤمنين، اتّق اللّه في حرم اللّه وحرم رسوله (ث) | عطاء بن أبي رباح | ٣٠٥ |
| يا أمير المؤمنين احذر قاتل الثلاثة... الرجل يأتي إلى الإمام (ث) | أسقف نجران | ١٦٩٠ت |
| يا أمير المؤمنين احمل عنّي كَلَّك أو أعنّي على حمله (ث) | عاتكة بنت عبد الملك المخزوميّة | ٢٨٩٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا أمير المؤمنين استهديتك رجلاً عالماً (ث) | المهدي | ٢٩٤ |
| يا أمير المؤمنين أنا الذي قلت هذا ونميته إلى دعبل (ث) | ابن شكلة | ٣١٢٤ |
| يا أمير المؤمنين، إنّ أحقّ الناس بمطعم طيبٍ (ث) | الربيع بن زياد الحارثي | ٦٢٣ |
| يا أمير المؤمنين إنّ اللّه قد أعدّ لك منّي قلباً معقوداً (ث) | جرير بن جرير | ٢٩٦٤ |
| يا أمير المؤمنين، إنّ ملكاً من الملوك خرج في عام مثل عامنا (ث) | خالد بن صفوان بن الأهتم | ٢٩٠٣ |
| يا أمير المؤمنين أنت أمين اللّه عز وجل يؤدون إليك(ث) | رجل | ٣٧٤ |
| يا أمير المؤمنين إنك أعز ما تكون أحوج ما تكون إلى اللّه عزّ وَجَلَّ (ث) | رجل | ٨٣١، ٣١١٢، ٣٢٤٨ |
| يا أمير المؤمنين، إنما أعطيته على جودك (ث) | مروان بن أبي حفصة | ٣٤١٨ |
| يا أمير المؤمنين، إنما الدنيا سوق من الأسواق فمنها خرج الناس (ث) | محمد بن كعب | ٦١٥ |
| يا أمير المؤمنين، إنّه أصابتنا في الجاهلية مجاعة شديدة (ث) | عمر بن معدي كرب الزبيدي | ٣٤٢٢ |
| يا أمير المؤمنين، الانتقام عدل، والتجاوز فضل (ث) | رجل | ٨٢٩ |
| يا أمير المؤمنين، أولادنا ثمار قلوبنا وعماد (ث) | الأحنف بن قيس | ١٠٩٤ |
| يا أمير المؤمنين فإن الناس قد أصابوا من الخير (ث) | عبد الحميد بن عبد الرحمن | ٢٦٨٨ |
| يا أمير المؤمنين، فأين أنتم عن عجيبة﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾(ث) | عمر بن معدي كرب الزبيدي | ٣٤٢٢ |
| يا أمير المؤمنين، فما تصنع بدنيا لا تشتري بولةً (ث) | ابن السّماك | ٧٧٦ |
| يا أمير المؤمنين، قد بعثت إليك بفرس (ث) | الحجاج بن يوسف الثقفي | ٢١٠٢ |
| يا أمير المؤمنين، كان لك الأجر لا بك (ث) | رجل | ٧٦٨ |
| يا أمير المؤمنين، لو منع عنك البول ساعةً واحدةً (ث) | ابن السّماك | ٧٧٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا أمير المؤمنين، لو منع عنك الماء ساعةً واحدةً (ث) | ابن السّماك | ٧٧٦ |
| يا أمير المؤمنين، لي على يزيد خمسون ألف درهم (ث) | سعيد بن عمرو | ١٦٠٦ |
| يا أمير المؤمنين، ما انتهى إلى غاية من شكرك إلا وجدت وراءها (ث) | بعض أشراف أهل البصرة | ٧١١ |
| يا أمير المؤمنين ما زدت على أن قمئت نفسك (ث) | عبد الرحمن بن عوف | ١٦٨٢ |
| يا أمير المؤمنين، ما عند اللّه خير لها ممّا عندك وثواب اللّه (ث) | شبيب بن شيبة | ٧٩٢ |
| يا أمير المؤمنين، ما في بصري سوء ولكن نزهتك من عذاب اللّه (ث) | أحمد بن المعذّل | ٣٤٢ |
| يا أمير المؤمنين، منع الجود سوء الظنّ باللّه عز وجل (ث) | محمد بن عبد الله ابن طاهر | ٢٦٤٧ |
| يا أمير المؤمنين ، هذا آثار رحمته فيه شدائد كما ترى، فكيف بآثار سخطه (ث) | عمر بن عبد العزيز | ١١٠١ |
| يا أمير المؤمنين: هذا موضع لا يؤدّي (ث) | أبو مسلم | ٢٣٣٤ |
| يا أمير المؤمنين، وتخشى أنت أيضاً الفقر؟ (ث) | الأصمعي | ١٥٩ |
| يا أمير المؤمنين، لا تكوننّ لشيء من أمور رعيتك (ث) | عمرو بن العاص | ١٩٧٢ |
| يا أهل الخلود، ويا أهل الغنى، إنكم (ث) | بلال بن سعد | ١٨٤٤ |
| يا أهل الشام عسى اللّه أن يجعل بعد عسر يسراً وبعد عيٍّ بياناً (ث) | يزيد بن أبي سفيان | ١٠٢٤ |
| يا أهل القبور، يا أهل البلاد، يا أهل الوحشة ما الخبر عندكم؟ (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٧٨ |
| يا أهل الكوفة أيُّ أمير كنت لكم؟ (ث) | سعد بن أبي وقاص | ١٢٩٤ |
| يا أيوب أما علمت أن لله عز وجل عباداً اسكتتهم خشيته (ث) | الفتى الذي كلّم أيوب | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| | في بلاءه | ١٠٢١ |
| يا أيها السائل عن هاشم ... (ث) | حبيب بن شوذب | ٣٠٧٩ |
| يا أيها الناس أنا سلطان اللّه في أرضه أسوسكم بتوفيقه (ث) | أبو جعفر المنصور | ٢٣٦٧ |
| يا أيها الناس تداووا | عبد الله بن عباس | ٣٤٦٣ |
| يا أيها الناس توبوا إلى اللّه عزّ وَجَلَّ من ذنوبكم توبة نصوحاً (ث) | معاذ بن جبل | ٣١٤٣ |
| يا أيها الناس: لن تعدموا منّي ثلاث خلال أن لا أحقّر لكم جيشاً (ث) | محمد بن الضحاك بن قيس الفهري | ٤٤١ |
| يا أيوب أما علمت أن لي عباداً علماء حكماء (ث) | أثر إلهي | ١٠٢١ت |
| يا بقية كن ذنباً ولا تكن رأساً (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٢٢٤٢ |
| يا بني احتفظ من النزق عند سورة الغضب فأنك متى افتتحت (ث) | بعض الحكماء | ١٦٩٨ |
| يا بني إذا طلبت شيئاً فاطلبه بالقناعة (ث) | سعد بن أبي وقاص | ١١١٠ |
| يا بني إذا طلبت الغنى فاطلبه بالقناعة (ث) | سعد بن أبي وقّاص | ١٨٤٣ |
| يا بني إذا قدمت مكة فجالس عمرو بن دينار فإنّ أذنَه (ث) | طاووس | ١٨٤ |
| يا بني إذا مِت فضعني في اللحد وقل: بسم اللّه وعلى نبيّه رسول اللّه صلى اللّه عليه وسلم (ث) | عبد الرحمن بن العلاء عن أبيه | ٧٥٧ |
| يا بني استعن على الكلام بطول الفكر في (ث) | عبد اللّه بن الحسن | ١٧٥٨ |
| يا بني استهدني (ث) | أبو جعفر المنصور | ٢٩٤ |
| يا بني اغتنم مسالمة من لا بد لك، بعيداً أو حبيباً (ث) | بعض الحكماء | ٢٧٨٣ |
| يا بني الزموا الأناة واغتنموا الفرصة (ث) | مالك بن المنذر | ٢٦٧٣ |
| يا بني إن الكبرياء رداء اللّه فلا تنازعنّ اللّه رداءه (ث) | لقمان الحكيم | ١٨٤٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا بني، انوِ في كُلِّ شيءٍ تريده حتّى خروجك (ث) | زبيد | ٣٥٣٣ |
| يا بني إنّي قلت أبياتاً فاحفظوها عنّي (ث) | أوس بن حارثة | ٣٤٦٨ |
| يا بني إياك والتسويف، ولا تدفع الواجب بالباطل (ث) | بعض الحكماء | ١٩٩٣ |
| يا بني انزل نفسك بمنزلة من لا حاجة لك به ولا بد لك من (ث) | لقمان | ٣١٣٩ |
| يا بنى إياك وصحبة المدبر فإنك إن صحبته (ث) | بعض الحكماء | ٢٧١٥ |
| يا بني السائب إنّكم قد أضويتم فانكحوا في النزائع (ث) | عمر بن الخطاب | ١٤٣٧، ٣٣٥٤ |
| يا بَني عاشروا الناس معاشرة، إن غبتم حنوا إليكم وإن متم بكوا عليكم (ث) | علي بن أصمع | ٢٩٣ |
| يا بني عبد المطلب اشتروا أنفسكم من اللّهِ، يا أم الزبير | أبو هريرة | ٣١٤٨ |
| يا بني ليس أحد أفضل من أحدٍ إلاّ بالعافية، ولو كانت للذنوب ريح (ث) | محمد بن واسع | ١٥٧ |
| يا بني ليست النائحة الثكلى مثل النائحة المستأجرة (ث) | ذَرّ بن عمر بن ذر | ٧٣٦ |
| يا بني لولا أني معهم لرجوت أن يغفر لهم (ث) | بكر بن عبد اللّه المزني | ٢٦٩٧ |
| يا بني ما هذا البكاء؟ ... فابك يابني | زكريا عليه السلام | ١٥١٨ |
| يا بني لا تطلبنّ ما عند اللّه من غير اللّه (ث) | عائشة | ١٨١٢، ٢٤١٣ |
| يا بني لا تَعدَّ الملك الكذوب ملكاً، ولا الناسك المخادع (ث) | ابن المقفّع | ٢٤٨٢ |
| يا بنية، اسكتي ... شاهت الوجوه | فاطمة | ٢٥٢١ |
| يا بنية انظري ما يدعو به عبد اللّه بن جعفر إذا خلا ... | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| فأتيت الحجّاج (ث) | الحسين بن علي | ٤٣٦ |
| يا بنية حوليني من هذا المكان فقد أضربي | | |
| الندى (ث) | طلحة بن عبيد اللّه | ١٢٥٥ |
| يا بهلول إنّي طالب حاجة فادع اللّه لي (ث) | ابن إدريس | ٩٨٢ |
| يا ثابت ما وجدت لغرمائك محبساً إلاّ داري (ث) | عبيد اللّه بن أبي بكرة | ١٩٠٥ |
| يا جابر، أعلمْتَ أنّ اللّه تبارك وتعالى أجلس أباك | | |
| فكلّمه | جابر بن عبد اللّه | ٣٥١٥ |
| يا جارية خذي بيده (ث) | هارون الرشيد | ٣١٣٠ |
| يا جبريل: بم نال هذه المنزلة من اللّه عز وجل | أنس بن مالك | ٢٦٣٤ |
| يا جبريل من هذا الذي معك؟ | إبراهيم عليه السلام | ٣٦، ١٧٦٩ |
| يا جرير تواضع في الدنيا، فإنّه من تواضع في | | |
| الدنيا (ث) | سلمان الفارسي | ٨٤٧ |
| يا جواد اللّسان من غير فعل (ث) | عامر بن الطفيل | ٣٠٥٤ |
| يا حرقة ما كان شأنكم (ث) | سعد بن أبي وقّاص | ٢٢٢٥ |
| يا حسن لا تملّ النّاسَ (ث) | الحجاج بن يوسف الثقفي | ٣٠٣٩ |
| يا حسين! يقول اللّه تبارك وتعالى في بعض كتبه: | | |
| كذب من ادّعى (ث) | الفضيل بن عياض | ١٣٢ |
| يا حماد أنا والله لم أسأل الدنيا قط من يملكها (ث) | رابعة العدوية | ٤٤٩ |
| يا حميراء أما علمتِ أنّ العبدَ إذا سجد لله سجدةً | عائشة | ٢٦١٥، ٢٨٨٩ |
| يا حيّ حين لا حيّ، ويا حيّ قبل كُلّ حيّ (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٤٥ |
| يا خالق النفس من النفس ويا مخرج النفس | | |
| من النفس (ث) | عيسى عليه السلام | ١٩٩٥ |
| يا خرب الخربين أين أهلك الأولون (ث) | عيسى عليه السلام | ٧٩٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا خليفة رسول اللّه أوصني (ث) | سلمان الفارسي | ١١٢٣، ٢١٩١ |
| يا داود اسمع مني والحق أقول لك (ث) | قول اللّه تعالى | ١٧٤٩ |
| يا داود أتمناهم وأتمناك (ث) | داود بن رشيد | ٣٥٠٨ |
| يا داود مجدني بذلك الصوت الحسن الرخيم (ث) | قول اللّه تعالى | ٧٠٥ |
| يا داود هل تدري من أغفر له من عبادي (ث) | قول اللّه تعالى | ١٥٥٥ |
| يا دنيا مري على المؤمن ولاتحلوي له فتفتنيه (ث) | أبو سنان عن بعض مشيخته | ٢٩٤٢ |
| يا ذا القرنين كنا نفخر بالنظر إلى وجهك، فقد صرنا الساعة (ث) | رجل من عظماء الحكماء | ٤٦٠ |
| يا رازق النّعاب في عُشّه (ث) | الأحوص بن حكيم | ١٣٥٣ |
| يا راعي هَلُمَّ إلى الغداء ... أو تصوم في هذا الحر الشديد؟ (ث) | روح بن زنباع | ١٣٤ |
| يا رب، أعريتني وأعريت عيالي (ث) | الفضيل بن عياض | ٣٥٧٥ |
| يا رب اقبض روحي في الأرواح، واهمل جسدي في التراب (ث) | عابد | ٢٤٨ |
| يا رب، إن كنت عصيتك في أمور كثيرة (ث) | أبو جعفر المنصور | ٣٤٧٦ |
| يا رب، خليلك يلقى في النّار، إإذن لنا فنطفيء عنه(ث) | عامة الخليقة | ٦٣ |
| يا رب ذنبي الذي كتبته علي قبل أن تخلقني أو ابتدعته من قبلي | آدم عليه السلام | ٢٦٢٨ |
| يا رب غدا الغادون في حوائجهم وغدوت إليك (ث) | عامر بن عبد اللّه | ٤٠٨ |
| يارب كم من شهوةٍ قد ذهبت لذّتها وبقيت تبعتها (ث) | جويرية المتعبّدة | ١٥١٥، ٣١٣٨ |
| يا رب ما أعطيتني شيئاً أحجُّ به | إبراهيم بن أدهم | ٢٨٩ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يارب من هذا؟ | موسى عليه السلام | ١٧٤٦ |
| يا ربيع أحين دنا ما كنت أرجو دنوه | هارون الرشيد | ٢١٨٣ |
| يا ربيع من هذه؟ (ث) | المنصور | ٢٨٩٩ |
| يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيامة | أبو هريرة | ٢١٩٠ت |
| يا زكريا ! إما أن تكف عنك أنينك أو أقلب الأرض ومن عليها (ث) | أثر إلهي | ٤٠ |
| يا زهري قنوطك من رحمة اللّه التي وسعت كُلَّ شيء (ث) | علي بن الحسين | ٢٤٩٩ |
| يا سارية؛ الجبل (ث) | عمر بن الخطاب | ٥٨٤ |
| يا سبحان اللّه أنكروا على غير منكر (ث) | سفيان الثوري | ٢٤٧٩ |
| يا سبحان اللّه جئتم بطبيب الملوك ولا أعطيه شيئاً(ث) | يوسف بن أسباط | ٣٠٩٣ |
| يا سعد لا جعل اللّه لك إلى لئيم حاجة (ث) | حرقة بنت النعمان | ٤٤٧، ٢٢٢٥ |
| يا سعيد عند الفتنة تعلم من يعبد الله ممن يعبد الشيطان | راهب | ٢٤٣٧ |
| يا سفيان إنّ حديثك لطيِّبٌ وإنّ في الصلاة لشغلاً عن حديثك (ث) | أبو حبيب البدوي | ٣٦٨ |
| يا سفيان إنَّ منعَ اللّه كلَّه عطاء لأنّه عمل (ث) | أبو حبيب البدوي | ٣٦٨ |
| يا سفيان ما تصنع بهذا الخف؟ (ث) | حسّان الراهب | ٢٧٩٩ |
| يا شاب قل لا إله إلاّ اللّه | عبد اللّه بن أبي أوفى | ٥١٦ |
| يا شفي كل الحلال وصل آخر الصفوف تقبل (ث) | سفيان الثوري | ١٩٤٤ |
| يا شقيق على ماذا أصَّلتم أصولكم؟ (ث) | إبراهيم بن أدهم | ١٤٤ |
| يا شقيق ولم لا تكون أنت الطير الصحيح الذي أطعم (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٣٥٠ |
| يا شيخ أيسرك أن تموت؟ ولمَ وقد بلغت في (ث) | سليمان بن عبد الملك | ٢٠٢١ |
| يا شيخ حفظت مالا ينفعك اللّه به (ث) | بشر بن الحارث | ٢٨٨٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا عائشة إنّه لا يشكر اللّه من لا يشكر الناس | عائشة | ٦٩٨ |
| يا عائشة إيّاك ومحقرات الذنوب فإنّ لها | عائشة | ١٧٠٠ |
| يا عائشة ... هذا جبريل عليه السلام يقرئك السلام | عائشة | ٢٩٨ |
| يا عبّاس كيف كان إسلامك ... صدقت | عباس بن مروان السلمي | ٢٠٤٤ |
| يا عبد اللّه إذا أنا مِتُّ فخبِّر إسماعيل بن داية (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٨٩٤ |
| يا عبد اللّه إنّه لقبيح بالرَّجل أن نظنَّ به الخير (ث) | سفيان بن عيينة | ٨٦٢ |
| يا عبد اللّه دعاؤك هذا ... فادع اللّه به دبر كُلِّ صلاة (ث) | علي بن أبي طالب | ١٠٢ |
| يا عبد اللّه ما ترى هؤلاء القوم يشتمون علي بن أبي طالب (ث) | معمر بن راشد | ٣٢٠٨ |
| يا عبد الرحمن إنْ أدخلك اللّه الجنّة كان لك فيها فرس من ياقوت | عبد الرحمن بن ساعدة | ٢٧٩ |
| يا عبد الرحمن إنّي لا أجد لهم إلا ذلك واللّه لو أنهم يعلمون ما لهم عندي (ث) | عمر بن الخطاب | ١١٩٩ |
| يا عثمان ما سألني عنها أحد غيرك (تفسيرها لا إله إلاّ اللّه واللّه أكبر (تفسير قوله تعالى: ﴿له مقاليد السموات والأرض﴾) | عبد اللّه بن عمرو | ٢٩٢٣ |
| يا عطاء إنّ في الجنّة حوراء (ث) | مالك بن دينار | ١٧٧٣ |
| يا عطاء هذه خامسة زادنا اللّه في هذا الحديث (ث) | مسعر بن كدام | ١٨٩٣ |
| يا عطاء ويحك قم حتّى نعمل فإنّ النهار يعمل عمله (ث) | سفيان الثوري | ٣١٠٠ |
| يا عَقيل أعطيك خيراً منها (ث) | الزهري | ٣٢٢ |
| يا عمر لو أعلم إنّ أخي صار حيث صار أخوك ما رثيته (ث) | متمم بن نويرة | ٣١٣٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا عدوّ اللّه. أنت الذي يقول في بني العباس إنهم | | |
| في الكتب (ث) | المعتصم | ٣١٢٤ |
| يا غلام احملني معك (ث) | عمر بن الخطاب | ١٤٠١ |
| يا غلام اسقه الماء (ث) | سلم بن قتيبة | ٣٦٥ |
| يا غلام أعطه أربعة آلاف درهم أخرى (ث) | عبد اللّه بن طاهر | ٣٢١٧ |
| يا غلام أعطه بعيراً وبغلاً وبرذوناً وفرساً (ث) | معن بن زائدة | ١٩٠٣ |
| يا غلام اكتب تبنون ما لا تسكنون وتجمعون ما لا(ث) | أبو هريرة | ٨٠٨ |
| يا غلام: أيسرك أني أبوك (ث) | الفرزدق | ٣٤٧٧ |
| يا غلام لمن أنت؟ ... لقد رأيت منك عجباً (ث) | عبد اللّه بن جعفر | ٣٢٢٩ |
| يا فالق الإصباح أنت ربّي (ث) | الحسن البصري | ٢٩٣٧ |
| يا فتى ألك حاجة؟ (ث) | سعيد بن العاص | ٣٠٨٤ |
| يا فتى إنّ من كان قبلنا مرّوا على الخيل (ث) | سفيان الثوري | ٥٨٦ |
| يا فتى ما الذي بلغ بك ما أرى .... سألتك باللّه إلاّ | | |
| صدقتني (ث) | عمر بن عبد العزيز | ٣٨٩ |
| يا فديتك معي واللّه من لطف السؤال ما لا تطيب | | ٢٤٨٤، |
| نفسي بتركه (ث) | أشعب | ٣٣١٢ |
| يا فرقد أتدري ما سوء الحساب؟ | | ١٢٠ت |
| يا فرقدضع نصرانيتك هذه عنك فلقد رأيتنا(ث) | حماد بن أبي سليمان | ١٩٢٠ |
| يا فضيل خلقك وأفرغ نعمه ظاهرة وباطنة وحرسك | | |
| بعينه (ث) | الفضيل بن عياض | ١٥٠٩ |
| يا قنبر من هؤلاء؟ (ث) | ( ) | ١٢٤٩ |
| يا كميل القبر صندوق العمل وعند الموت يأتيك | | |
| الخبر (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٧٨ |
| يا كميل، لو أُذِن لهم في الجواب لقالوا: (إنّ خيرَ | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| الزاد التقوى) (ث) | علي بن أبي طالب | ٢٧٨ |
| يا كهيعص، يا نور النور، يا قدوس، يا الله، يا رحمن | علي بن أبي طالب | ٤٣٧ |
| يا لُكع وهل تؤدي شكر الماء البارد (ث) | الحسن البصري | ٦٤١ |
| يا ليتني أنا ذلك الرجل (ث) | الحسن البصري | ٣٥٧٥ |
| يا مازني ألك ولد ... فما قالت لك (ث) | الواثق | ٣٤٢٠ |
| يا مالك إن استطعت أن تجعل بينك وبين النار سوراً من | | |
| حديد فافعل (ث) | راهب | ١٥٤٨ |
| يا مسكين تنفق دينك في شهوتك سرفاً (ث) | الحسن البصري | ٣٤٠٥ |
| يا معشر الحواريين، اجعلوا كنوزكم في السماء (ث) | عيسى ابن مريم | ٤٦ |
| يا معشر الحواريين إني كفتّ لكم الدنيا فلا تتغشوها | | |
| فإنه لا خير (ث) | عيسى عليه السلام | ٩٨٥ |
| يا معشر الشباب كم من زرع لم يبلغ (ث) | الحسن البصري | ١٢٨٥ |
| يا معشر عدوان إنّ الخيرَ ألوفٌ (ث) | عامر بن الظرب العدواني | ٢٣٣٩ |
| يا معشر الناس ألا تبكون وتَنوّحون على أنفسكم باقي | | |
| حياتكم من الموت (ث) | يزيد الرَّقَاشي | ٧٣٠، ٢٨٠٤ |
| يا معشر الناس لا يمنعكم سوء منا أن تقبلوا أحسن ما | | |
| تسمعون (ث) | بلال بن أبي بردة | ١٦٣٧ |
| يا معن شاب رأسك ... إن فيك لبقية ... بلغني إنك | | |
| أعطيت (ث) | المنصور | ١٩٥١ |
| يا من لا تختزل الحوائج دونه اقض له حوائج | | |
| الدنيا والآخرة (ث) | بهلول | ٩٨٢ |
| يا من لا يشغله سمع عن سمع (ث) | الخضر | ١٠٢ |
| يا موسى إذا رأيت الغنى مقبلاً فقل: | | |
| ذنبٌ عجلتُ عقوبته (ث) | أثر إلهي | ١٦٦١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يا موسى أنا جليس من ذكرني (ث) | أثر إلهي | ١٤٥٢ |
| يا موسى أنا فوقك وأمامك وخلفك ومحيطاً بك (ث) | أثر إلهي | ١٤٥٢ |
| يا موسى إني أقمتك مقاماً (ث) | أثر إلهي | ٢٣٦٢ |
| يا موسى إنّي أنا اللّه رب العالمين (ث) | أثر إلهي | ١٤٥٢ |
| يا موسى تعلم العلم لتعمل به، ولا تتعلمه لتحدث به(ث) | الخضر | ٢٨١٩ |
| يا موسى لو شئت أن أزينكما بزينة يعلم فرعون حين ينظر إليها (ث) | أثر إلهي | ١٨٩٤ |
| يا موسى إن الذي لك عندي على قدر مالي عندك (ث) | أثر إلهي | ١٧٧٦ |
| يا موسى بن عمران لأن تجعل يدك في فم تنين إلى المرفق (ث) | أثر إلهي | ٢٠٦٥ |
| يا نفس الذي قيّض هذا الطير الصحيح لهذا الطير المكسور الجناحين في فلاةٍ من الأرض (ث) | شقيق البلخي | ٣٣٥٠ |
| يا نفس بهذا أمرتِ ولهذا خلقت يوشك أن يذهب ..... يا نفس قومي (ث) | عامر بن عبد اللّه | ١٥٤٧ |
| يا نفس لو كان فيك خيراً ما أساء الحسن بك الظن (ث) | مالك بن دينار | ٢٠٦٩ |
| يا هذا ارفع رأسك فإنّ الخشوع لا يزيد على ما في القلب (ث) | عمر بن الخطاب | ١٦٩١، ٣١٩١ |
| يا هذا اعلم أني منذ خمسين سنة أصوم يوماً وأفطر يوماً (ث) | غندر | ٢٦٣٣ |
| يا هذا لا تغرق في شتمنا ودع للصلح موضعاً (ث) | عمر بن ذر | ١٦٠٢ |
| يا هذا الرجل إنْ كانت هذه السجادة للّه فلا | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يحلُّ لك (ث) | سفيان الثوري | ٣٢٩ |
| يا هذا شكوت من يرحمك إلى من لا يرحمك (ث) | سفيان الثوري | ١٣١٨ |
| يا هؤلاء قد قتل أصحابكم فإنّا للّه وإنّا إليه (ث) | ابن الزبير | ١٤٧٥ |
| يا يحيى هذا عملك الذي عملته وقد أعطيتك ثواب عملك (ث) | أثر إلهي | ٢٢٩١ |
| يا يزيد سرْ على بركة اللّه فإذا دخلت بلاد العدو فكن بعيداً من الحملة (ث) | أبو بكر الصديق | ١٥٣٥ |
| يأتي على النّاس زمان لا تحمل فيه النخلة إلاّ تمرة (تفسير قوله تعالى: ﴿ونقص من الثمرات﴾) (ث) | رجاء بن حيوة | ١٣٩٣ |
| يأخذ عبده بالحق (تفسير قوله تعالى: ﴿سوء الحساب﴾) (ث) | إبراهيم بن يزيد النخعي | ١٢٠ |
| يأكل الرجل حتى ينسى متى بدأ الأكل (ث) | أبو تراب النخشبي | (١٤) ملحق |
| يأكلها داجنهم (يعني الشاة) (ث) | عمر بن الخطاب | ٣٠٠٤ |
| يبعث واللّه علي يوم القيامة ثم تهمُّه نفسه | علي بن الحسين بن علي بن أبي طالب | ١٢٤٨ |
| يجاءبالجبارين والمتكبرين رجال في صورة الذَّرّ | أبو هريرة | ١٩٥٧ت |
| يجتمع عشرة آلاف فيهم يعني ألف مقاتل أو أكثر ويجتمع ألف (ث) | الأصمعي | ٣٣٣٢ |
| يجمع فقراء هذه الأمة ومساكينها فيبرزون (ث) | عبد اللّه بن عمرو ا بن العاص | ٢٠٣٧ |
| يجيء صاحب القرآن يوم القيامة | أبو هريرة | ٢١٨٩ت |
| يجيء قوم قبل قيام الساعة يُسَمَّون الرافضة برآء من الإسلام (ث) | الحسن | ٢٥٧٦ |
| يحتجب الحرم، وأجزل صلته وصرفه (ث) | بشر بن مروان | ٣٤٢١ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يحسب الجاهل الشيء الذي هو لا شيء شيء (ث) | بعض الحكماء | ٢٥٥٢ |
| يحشر المتكبرون يوم القيامة أمثال الذّر في صور الرِّجال | عبد اللّه بن عمرو بن العاص | ١٩٥٧ |
| يحشر الناس كلهم عراة ما خلا أهل الزهد (ث) | الحسن البصري | ٢١٣٢ |
| يُخرج لابن آدم يوم القيامة ثلاث دواوين (ث) | أنس بن مالك | ٥ |
| يخرج ناس في طلب العلم إلى المشرق فلا يجدون عالماً | أبو موسى الأشعري | ٨٠٩ |
| يخطر على قلب الولي الشيء في الجنّة فيأتي به على الوصف (ث) | معاوية بن صالح | ٧٣ |
| يرحمك اللّه يا ذر (ث) | عمر بن ذر | ٣٨٠ |
| يد اللّه فوق رأس المؤذن فإذا فرغ من أذانه | أنس بن مالك | ٩٥٠ |
| يدخل الجنة أقوام أفئدتهم مثل أفئدة الطير | أبو هريرة | ٣٥١٨ |
| يدخل الجنة بشفاعة أُويس مثل ربيعة ومضر | عمر بن الخطاب | ٢٢١٦ت |
| يدخلون النار بغير حساب (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون﴾) (ث) | قتادة | ١٠٠٠ |
| يدخلونها ولكن لا يأكلون فيها ولا يشربون (ث) | مجاهد | ١٢١٢ |
| يدعو اللّه تبارك وتعالى المؤمن يوم القيامة حتّى يوقفه بين يديه (ث) | جابر بن عبد اللّه | ١٢٦ |
| يدنو المؤمن من ربِّه تبارك وتعالى يوم القيامة حتّى | ابن عمر | ٤ |
| يرحم اللّه أبا بكر لقد أتعب من بعده (ث) | عمر بن الخطاب | ٢٣٩٣ |
| يرحمك اللّه وأيُّ مصيبة أعظم من مصائب الذنوب (ث) | ثوبان الرّاهب | ٧٣٣ |
| يُرزق الصادق ثلاث خصال الحلاوة والملاحة والمهابة (ث) | يوسف بن أسباط | ١٨٦٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يريد أنّا ليس بالمجوس، وذلك أنهم كانوا يقولون إنّ | | |
| ولدَ الرجل من أخته (تفسير قول الشاعر: ولا يعيب | | |
| فينا غير ....) (ث) | ابن قتيبة | ٧١٨ |
| يزعم أهل العراق أنّي بقية ثمود ونِعمَ و اللّه (ث) | الحجّاج | ٢٣٠٦ |
| يسألني أحدكم عن خبر السماء ويدع أظفاره | أبو أيوب الأنصاري | (٢١) ملحق |
| يستحب للرجل إذا دعا أن يقول في دعائه: اللّهم استرنا | | |
| بسترك الجميل، ومعنى الستر الجميل أن يستر على عبده | | |
| في الدنيا (ث) | سفيان بن عيينة | ٢ |
| يسر اللّه عليك طاعته (ث) | الخضر عليه السلام | ٢٠٠٧ |
| يشتد كرب ذلك اليوم حتى يلجم (ث) | عبد الله بن عمرو | ٢٠٣٧ |
| يشفّعهم في إخوانهم ويزيدهم من فضله ... يشفعهم | | |
| في إخوان إخوانهم (تفسير قوله تعالى: ﴿ويستجيب | | |
| الذين آمنوا وعملوا الصالحات﴾) (ث) | الضحاك | ٤٩٥ |
| يصاح برجل من أمتي على رؤوس الخلائق يوم القيامة | عبد الله بن عمرو | ٢٢٩٥ت |
| يضرب الناس آباط الإبل، فلا يجدون عالماً أعلم | ..... | (٢٤) ملحق |
| يعتذر اللّه تبارك وتعالى إلى آدم يوم القيامة؛ يا ابن آدم | | |
| أنت اليوم عدل (ث) | الحسن البصري | ٢٧٩٠ |
| يعرض أهل الأهواء على إبليس اللعين يوم القيامة (ث) | عوانة | ١٨٠١ |
| يعرفون بسيماهم (تفسير قوله تعالى: ﴿ولا يسئل عن | | |
| ذنوبهم المجرمون﴾) (ث) | ابن أبي نجيح | ١٠٠١ |
| يُعطى الملك بيمينه والخلدَ بشماله ويوضع | أبو هريرة | ٢١٨٩ |
| يعلم أن المصيبة من اللّه فرضي بها (تفسير قوله تعالى: | | |
| ﴿ومن يؤمن باللّه يهدِ قلبه﴾) (ث) | مجاهد | ١٤٨٥ |
| يعني لولا أنّي لقيت ربّاً رحيماً فتجاوز عنّي (ث) | أبو محمد (ابن قتيبة) | ١٤٤٣ |
| يعني الملك (تفسير قول الأعمش: يا شاهد اللّه) (ث) | أحمد بن داود الدينوري | ٦٦٧ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يغتاب بين يديه رجل فيعجبه فيقول: لا إله إلا | | |
| اللّه، وليس هذا موضعها، إنّما هذا موضع (ث) | الفضيل بن عياض | ٦٦٣ |
| يغفر للحاج ولمن استغفر للحاج ذا الحجة (ث) | ياسين الزّيات | ٢٤٧٦ |
| يغيب القمر نصف الليل (قاله في ليلة سبع)(ث) | محمد بن سيرين | ٨١٥ |
| يقال إنّ الرجل ليستفرغ ولد امرأتين يولد له (ث) | حرب بن قطان | ١١٣٤ |
| يقال أنّ للّه تبارك وتعالى ملكاً موّكلاً (ث) | الشعبي | ١٢٥٢ |
| يقال أنّ الحرّ من أعتقته المحاسن والعبد من | | ١٦٥٧، |
| استعبدته(ث) | محمد بن سلاّم الجمحي | ٢٨٩٦ |
| يقال: ثلاثة من لم يكن فيه لم يجد طعم الإيمان (ث) | ضمرة | (٩) ملحق |
| يقال الثناء يضاعف كما تضاعف الحسنات (ث) | الأُصمعي | ٣/٣٠٧١ |
| يقال الظنون مفاتيح العقول (ث) | المدائني | ٥٩٩ |
| يقال الغنى في الغربة وطن، والفقر في الوطن (ث) | ابن قتيبة | ٢١٠٨ |
| يقال ما سبق عيال مالاً قط إلاّ كان صاحبه فقيراً (ث) | الرياشي | ٢١٠٧ |
| يقال من لم ينفعك ظنّه لم ينفعك يقينه (ث) | المدائني | ٥٩٩ |
| يقال يوم القيامة لآكل الربا خذ (ث) | ابن عبّاس | ٢٧٦٧ |
| يقتصُّ اللّهُ عَزَّ وجل يوم القيامة لبعضهم من بعض | | |
| حتى الجلحاء من القرناء (ث) | أبو هريرة | ٣١٠٢ |
| يقول ابن آدم حفظةً يحفظون رزقك وأجلك وعملك | | |
| (تفسير قوله تعالى: ﴿وهو القاهر فوق عباده ويرسل | | |
| عليكم حفظة﴾) (ث) | قتادة | ١٤٥٠ |
| يقول اللّه تبارك وتعالى: انتصر لمن أبغض ممن | | |
| أبغض (ث) | محمد بن المنكدر | ٢٠٦١ |
| يقول اللّه تبارك وتعالى للمؤمن يوم القيامة: ما دعوتني | | |
| بشيء إلاّ استجيب لك (ث) | الحسن البصري | ١٢٥ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| يقول اللّه تبارك وتعالى: ما أصيب ابن آدم بعد | | |
| ذهاب دينه | بريدة | ١٧٨١ |
| يقول اللّه تبارك وتعالى يوم القيامة: ابن آدم ألم أحملك | | |
| على | أبو هريرة | ٢١٩٠ |
| يقول اللّه عزّ وجلّ إذا أخذت من عبدي كريمتيه | العرباض بن سارية | ١٧٨٠ |
| يقول اللّه عز وجل لآدم يوم القيامة: أنت عدل | | |
| بيني (ث) | الحسن البصري | ١٠٧٢ |
| يقول اللّه عزّ وجلّ: وعِزَّتي وعظمتي وجلالي ما من | | |
| عبدٍ آثر هواي على هواه (ث) | وهيب بن الورد المكي | ١٤٨٠ |
| يقول المال: أراني صاحبي أعمر، ويقول (ث) | عروة بن الزبير | ٢/٣٣٤٢ت |
| يقول الناس: يوسف بن أسباط لا يقتل شيئاً (ث) | يوسف بن أسباط | ٢٨٨٥ |
| يكب على وجهه ولا تستقبل بفرجه القِبلة (سُئِل عن ميِّت | | |
| مات لم يوجد له كفن كيف يدفن ؟)(ث) | ابن عبّاس | ٩٥٣ |
| يكسب الدرهم ويصلي وحده أفضل لكي لا يضيع | | |
| عياله (ث) | سفيان الثوري | ٢٩٥٢ |
| يكفي من الدعاء من البرّ ما يكفي من الطعام (ث) | أبو ذر | ٢٣٠٥ |
| يكون آخر هذه الأمّة خليفة يحثي المال | جابر بن عبد اللّه | ٢٢٦٣ |
| يكون بجنبي ولا يكون بفروتي (ث) | إبراهيم بن أدهم | ٣٥٩ |
| يكون الرجل عالماً ولا يكون عابداً، ويكون عابداً (ث) | الحسن البصري | ٢٥٣٠ |
| يكون في آخر الزمان قوم إخوان العلانية (ث) | معاذ بن جبل | ٣/٣٠٥٨ |
| يلقى على أهل النّار الجوع حتى يعدل ما فيهم | | |
| من العذاب | أبو الدرداء | ٨٤٦ |
| يلقون ملك الموت ليس من مؤمن يقبض روحه (تفسير | | |
| قوله تعالى: ﴿تحيتهم يوم يلقونه سلام﴾) (ث) | البراء بن عازب | ٣٦٧ |
| يمطر الناس قبل البعث أربعين عاماً مطراً خاثراً (ث) | سليمان الفارسي | ٧٦ |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| ينادي منادٍ يوم القيامة: أين الذين أكلت عيالاتهم أماناتهم (ث) | الفضيل بن عياض | ٩٩ |
| ينادي منادٍ يوم القيامة: أين الذين (ث) | مجاهد | ٣٥٥٢ |
| ينال بكلّ شيءٍ حلية وحلّة (ث) | محمد بن عبيد والد ابن أبي الدنيا | ١٧٣٤ |
| ينبغي أن يكون للأمير ستة أشياء: (ث) | بعض حكماء العرب | ١٦٦٤ |
| ينبغي لصاحب الدنيا أن يكون بمنزلة المريض الذي لا بد له من قوت (ث) | بعض الحكماء | ٢٧١٧ |
| ينبغي لقارىء القرآن أن يعرف بليله إذ الناس نائمون (ث) | ابن مسعود | ٢٣٠٠ |
| ينبغي للخوف أن يكون أغلب على الرجاء فإذا غلب الرجاء على الخوف فسد القلب (ث) | أبو سليمان الداراني | ٩٠٨ |
| ينبغي للرجل أن يكونَ في أهله مثل الصبيّ فإذا التمس ما عنده (ث) | عمر بن الخطاب | ١٠٣٨، ٣١٨٨ |
| ينبغي للعالم أن يضع التراب على رأسه تواضعاً للّه عَزّ وَجَلَّ (ث) | أيوب السختياني | ٤٨٨، ٣٠٣٢ |
| ينبغي للعالم أن يضع الرّماد على رأسه تواضعاً للّه عَزّ وَجَلَّ (ث) | أيوب السختياني | ٤٨٨، ٣٠٣٢ |
| ينبغي للقاضي إذا ابتلي بالقضاء (ث) | الفضيل بن عياض | ٣٢٨ |
| ينزل الله عز وجل إلى السماء الدنيا | عائشة | ٩٤٤ت |
| ينزل ربنا تبارك وتعالى ليلة النصف من شعبان | أبو بكر الصديق | ٩٤٤ت |
| ينشيء اللّه لأهل النار سحابة سوداء مظلمة فإذا أشرفت (ث) | يَعْلَى بن منبّه | ٣٤١٠ |
| ينظر ما عندك فلا تضعه إلاّ في حَقٍّه ... فمن أجل ذلك ملئت جهنّم ... الثقة بما عند اللّه ... قد رفعتها | | |

| طرف الأثر أو الحديث | الراوي | الرقم |
|---|---|---|
| إلى (ث) | أبو حازم | ١٨١٠ |
| يهجرون ويضربون ولا يجلس معهم (ث) | أحمد بن حنبل | ٢٧٤٥ |
| يهمّ بالمعصية ثم يتركها من مخافة اللّه (ث) | مجاهد | ١٣٣١ |
| يؤتى بابن آدم يوم القيامة حتّى يوقف بين كفتي الميزان (ث) | أنس بن مالك | ١٦٢٥ |
| يؤتى بالرجل يوم القيامة فينظر إلى حسناته قد جُمِعَتْ (ث) | سعيد بن المسيّب | ٢٨٩٢ |
| يؤتى بالعبد يوم القيامة فيقال: ألم أجعل لك | أبو هريرة وأبو سعيد الخدري | ٢١٩٠ت |
| يؤتى بالقاضي يوم القيامة فيوقف على شفير جهنم | عبد الله بن مسعود | ٣٢٥ت |
| يؤتى برجل يوم القيامة فيوزن بحبة حنطة فلا يزن (ث) | كعب بن عجرة | ١٢ |
| يؤتى برجل يوم القيامة ويخرج له تسعة وتسعون (ث) | عبد اللّه بن عمرو بن العاص | ٢٢٩٥ |
| يؤتى بمعلّم الكتاب يوم القيامة فإنّ كان عَدَل بين الغلمان (ث) | مجاهد | ٦١٩ |
| يؤتى بالناس يوم القيامة إلى الميزان (ث) | عبد الله بن مسعود | ١٠ |
| يؤذن يوم القيامة للبر والفاجر في القيام (ث) | عبد الله سلاّم | ٢٦٩٦ |
| يوشك أن لا يُجبَى من الشام دينار ولا قفيز (ث) | جابر بن عبد اللّه | ٢٢٦٣ |
| يوم بدر كنت أرمي بين يدي النبي صلى الله عليه وسلم | سعد بن أبي وقاص | ٣٤٨ت |
| يومين وليلتين لم تسمع الخلائق بمثلهما، يوم تأتيك البشرى من اللّه تبارك وتعالى (ث) | أنس بن مالك | ١٩ |
| اليد العُليا خير من اليد السفلى | ( ) | ٣٣٥٠ |
| اليوم مات رباني هذه الأمة (ث) | محمد بن علي بن أبي طالب | ١٢٢٦ |

# فهرس القوافي

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل [1] |
|---|---|---|---|
| | | - ء - | |
| نؤمل جنةً لا موت فيها | البلاءُ | ٣٤١ | أحمد بن المعذل |
| إذا أثنى عليك المرء يوماً | الثناءُ | ٤٩ | أمية بن أبي الصلت |
| أأذكر حاجتي أم قد كفاني | الحياءُ | ٤٩ | أمية بن أبي الصلت |
| فأرضك كل مكرمة بناها | سماءُ | ٤٩ | أمية بن أبي الصلت |
| إذا ما مات خارجة بن حصن | السماءُ | ٤٩٩ | الأخطل |
| يباري الريح مكرمة وجوداً | الشتاء | ٤٩ | أمية بن أبي الصلت |
| إنما مصعب شهاب من اللّه | الظلماءُ | ٨٣٣، ٣٢٥٠ | ابن قيس الرقيات |
| فبورك في بنيك وفي أبيهم | الفداءُ | ٤٩٩ | الأخطل |
| كريم لا يغيره صباح | مساءُ | ٤٩ | أمية بن أبي الصلت |
| ولا رجع البشير بغنم جيش | النساءُ | ٤٩٩ | الأخطل |
| فيوماً منك خير من رجال | وشاءُ | ٤٩٩ | الأخطل |
| هي الدنيا تعذب من هواها | وداءٌ | ٣٩٣ | الحسن |
| هنالك لا أبالي نخل | الإناءِ | ٧٦٠ | عبد اللّه بن رواحة |
| وآب المسلمون وغادروني | الثواءِ | ٧٦٠ | عبد اللّه بن رواحة |
| إذا يلّغتني وحملت رحلي | الحساءِ | ٧٦٠ | عبد اللّه بن رواحة |
| يا طالب الطب من دائي | بالداءِ | ٣٠٥٤ / م | الفرزدق |
| هل ذاكراً اللّه يحيى | والداءِ | ٥٠٦ | حارس من بني عدي |

(١) ما بين المعقوفتين من تخريجنا.

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وليس الرزق عن طلبي | الدلاءِ | ٨٠٧، ٣٣٣٥ | |
| قل ما بدا لك من زور | صماءِ | ١٠٣٥ | [بشار بن برد] |
| تجيء بمثلها طورا وطورا | ماءِ | ٨٠٧، ٣٣٣٥ | |
| هو الطيب فمنه البرء | بالماءِ | ٣٠٥٤/م | الفردزق |
| فزادك أنعما وخلال | ورائي | ٧٦٠ | عبد الله بن المبارك |
| | ـ أ ـ | | |
| أرض إذا سار بها الجني | أرى | ١٠١٨ | |
| فالرزق يأتي بلا عناء | تعنّى | (١٥) ملحق | |
| إني ... له قنوع | تمنّى | (١٥) ملحق | |
| ارفع ضعيفك لا يحر بك | جنى | ٦٩٨ | زهير بن حباب |
| يجزيك أو يثني عليك وإن | جزى | ٦٩٨ | زهير بن حباب الكلبي |
| لله در رافع | سوى | ١٠١٨ | |
| وأفناهم كر النهار | فتى | ١١٠٨ | مسعر |
| عند الصباح يحمد القوم السرى | الكرى | ١٣١ت | [الجميع أو الحليج التغلبي] |
| | ـ ب ـ | | |
| أين المفر والإله الطالب | الغالب | ٣/١٢٥٣ | أبرهة [أو نفيل بن حبيب] |
| كم من حسيب أخي عز | انتسبا | ١٦٧٨/م | [أبو الأسود الدؤلي] |
| بذلك أوصانا أبونا وجدنا | تؤنبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| ونجتنب الآفات والإثم كله | تؤنبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| لا أعير الناس سمعي | حبيبا | ٣٠٧٦ | |
| قد يجمع المرء مالاً | والحربا | ١٦٧٨/م | [أبو الأسود الدؤلي] |
| فإذا ما كان كون | خطيبا | ٣٠٧٦ | |
| في بيت مكرمة آباؤه | ذنبا | ١٦٧٨/م | [أبو الأسود الدؤلي] |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وجامع العلم مغبوط به | والسلبا | م/١٦٧٨ | [أبو الأسود الدؤلي] |
| تركت أباك مرعشة | شراباً | ١٢٦٤ | |
| العلم زين وذخر لا نفاذ | صحبا | م/١٦٧٨ | [أبو الأسود الدؤلي] |
| لا ولا أحفظ عندي | العبويا | ٣٠٧٦ | |
| نجاوز أكفافاً وننزل بالربى | غيبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| إذا غنمت حمامة بطن | كلابا | ١٢٦٤ | |
| وما يبقى فينا المجاور | والمحصبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| أحفظ الإخوان كما | المغيبا | ٣٠٧٦ | |
| فنحن مناجيب لا كرم | منجبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| وخامل مقرب الآباء | والنسبا | م/١٦٧٨ | [أبو الأسود الدؤلي] |
| لنا خيرا ونحن أعزة | وننصبا | ٣٤٦٨ | أوس بن حارثة |
| لا والذي حجت الأنصار | أربُ | ١٠١٢ | [محمد بن إبي حمزة الكوفي] |
| وإذا أردت صواب أمر | أصوبُ | ١/٣٠٧٦ | |
| نهيج منازل الأموت وجدا | اكتئابُ | ٧٤٦ | بعض بني العنبر |
| فيا ليت شعري بعد عيبك | تؤوبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| واعمل لنفسك في | يتقلبُ | م/١٨٧٣ | |
| يا مظهر الكبر إعاجباً بصورته | تثريبُ | ١٥٨٢ | |
| منازل لا يجيبك حين تدعوا | تجابُ | ٧٤٦ | بعض بني العنبر |
| ما أكثر الإخوان حين تعدهم | تجربُ | ١/٣٠٧٦ | |
| وإذا حسبت ذوي الثقات | تحسبُ | ١/١٧٠٣ | |
| أقول وقد فاضت يعيني | تذهبُ | ٧٠١ | بعض بني العنبر |
| وكيف يجيب من ندعوه | والترابُ | ٧٤٦ | بعض بني العنبر |
| فطول قيام الليل أطول مؤنة | وتلتهبُ | ١١١ | [راشد بن عبد ربه السلمي][1] |

(١) ونسب لغيره كما بيناه في موطنه.

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| مات المبرد وانقضت أيامه | ثعلبُ | (١٧) ملحق | ثعلب |
| أرب يبول الثعلبان برأسه | الثعالبُ | ١٠١٠ | |
| تزيد بلاءً كل يوم وليلة | حبيبُ | ٥١، ٥٥ | نائحة |
| كل بني أم حبيب يسرهم | حبيبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| نعى لك ظل الشباب | الخطوبُ | ٦٢٩ | [أبو العتاهية، أبو حفص الشطرنجي] |
| إذا مات خلوت الدهر يوماً | رقيبُ | ١٢٨٠ | الحجاج بن يوسف التيمي |
| أأغسل رأسي أم تطيب مشاربي | سليب | ٧٩٣ | أعرابي |
| لو فكر الناس فيما في | شيبُ | ١٥٨٢ | |
| ومن يتتبع جاهداً | صاحبُ | ٢٢٢٨/م | [كثير عزة] |
| إذا كان السبعون سنك | طبيبُ | ١٢٨٠ | الحجاج بن يوسف التيمي |
| وقبلك داوى المريض | الطبيبُ | ٦٢٩ | [أبو العتاهية، أبو حفص الشطرنجي] |
| ومن لا يغمض عينه | عاتبُ | ٢٢٢٨/م | (كثير عزة] |
| كفى حزناً بأنك في ضريح | عريبُ | ٢٤٦٩ | |
| أجارتنا إن المزار قريب | عسيبُ | ١٨٦٠، ١/٣٠٦٧ | امرىء القيس |
| أضحت تشجعني هند | العطبُ | ١٠١٢ | [محمد بن أبي حمزة الكوفي] |
| معجل علي أم على شقيقه | غريبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| كنا عبرات للغريب عن أهله | غريبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| إذا ما انقضى الذي أنت | غريبُ | ١٢٨٠ | الحجاج بن يوسف التيمي |
| وبنتك خادم لسوى أبيها | غضوبُ | ٢٤٦٩ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وبنتك خادم لسوى أبيها | غضوبُ | ٢٤٦٩ | |
| مقيم إلى أن يبعث اللّه خلقه | قريبُ | ٥١، ٥٥ | نائحة |
| فأنا الذي يأتيك بالرزق | قريبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| فكن مستعداً لداعي المنون | قريبُ | ٦٢٩ | [أبو العتاهية، أبو حفص الشطرنجي] |
| ودع أميمة حان منك رحيل | قريبُ | ٦٩٦ | جرير |
| وإني لأستحي أخي وهو ميت | قريبُ | ٧٩٣ | أعرابي |
| ترى المرء يبكيه | قريبُ | ٢٠٦٦ | |
| تغطي عيوب المرء | كذوبُ | ١٥٩٦/م | |
| وإن امرءً قد سار سبعين | لقريبُ | ١٢٨٠ | الحجاج بن يوسف التيمي |
| ولست منهم ولا أهوى | اللعبُ | ١٠١٢ | [محمد بن أبي حمزة الكوفي] |
| يرى راحة في كثرة المال | متعبُ | ٣/٣٠٧٩ | |
| فيما ذل اليتيمة في أناس | مجيبُ | ٢٤٦٩ | |
| حلفت فلم تترك لنفسك | مذهبُ | ١٤٠٤ | النابغة |
| بيت من الآداب أصبح | مستخربُ | (١٧) ملحق | ثعلبُ |
| يا ابن التراب | ومشروبُ | ١٥٨٢ | |
| هل في ابن آدم مثل | مضروبُ | ١٥٨٢ | |
| أخلائي لو غير الممات | معتبُ | ٧٠١ | بعض بني ضبة |
| أنف يسيل وأذن | ملعوبُ | ١٥٨٢ | |
| يا عجبا للناس لذات عيوبهم | منتصبُ | ١١١ | |
| فلست مستبق أخا لا تلمه | المهذبُ | ١٤٠٤ | النابغة |
| إذا ما صك في وجهي | النحيبُ | ٢٤٦٩ | |
| نسيبك من أمسى يواريك | نسيبُ | ٧٩٣ | أعرابي |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أجارتنا إنا غريبان | نسيبُ | ١٨٦٠، ١/٣٠٦٧ | امرؤ القيس |
| يحب الفتى المال الكثير | نصيبُ | ٢٠٦٦ | |
| عليك لنا قلب | ووجيبُ | ٥٧٢ | الشموس |
| بادر هواك إذا | يتجنبُ | ٨٧٣/م | |
| واحذر ذوي الملق | يحطبُ | ١٨٧٣/م | |
| يخاف على نفسه من يتوب | يتوبُ | ٦٢٩ | [أبو العتاهية، أبو حفص الشطرنجي] |
| ومن يسأل من الناس | يخيبُ | ٢١٥٣ | |
| إذا قل مال المرء قلت همومه | يشعبُ | ٣/٣٠٧٩ | |
| عمر الفتى قريب | يشيبُ | ٢٥٦٤ | |
| ومن يجهل الدنيا إذا هي | يلعبها | ٢٥٦٤ | |
| إن يعلموا الخير يخفوه | كذبوا | ٢٢٤٧ | [طريح الثقفي] |
| للحرب قوم أهل اللّه | وثبوا | ١٠١٢ | [محمد بن أبي حمزة الكوفي] |
| فما سودتني عامر من | أبِ | ٩٨٩ | عامر بن الطفيل. |
| ذهب الذين يعاش في أكنافهم | الأجربِ | ٣٤٥٣ | لبيد بن ربيعة |
| إلى من تفزعون إذا خشيتم | الترابِ | ١٤٧٤ | أبو فراس |
| أحين دنا من كنت أرجو | جانبِ | ٢١٨٣ | هارون الرشيد |
| أنت الكريم الذي تعطي | جدبِ | ٣٢١٧ | |
| وما الدهر والأيام إلا كما | حبيبِ | ٧٧٣ | |
| وما الدهر إلا هكذا | حبيبِ | ١٤٣١ | |
| طارت عقاب المنايا في سقائفه | والحربِ | ٢٣٠/م | إبرهيم بن المهدي |
| لنالك اليوم مني من | والحربِ | ٣٤٢٢ | |
| رأيت رفيع الناس من كان عالماً | بحسيبِ | ٣٠٣ | محمد بن الحارث |
| يا فالق الأصباح أنت ربي | حسبي | ٢٩٣٧ | الحسن |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| إذا قتلت أخا في السلم تظلمه | الحقبِ | ٣٤٢٢ | عمر بن الخطاب |
| سأبكي على الوصل الذي | الذواهبِ | ٢١٨٣ | هارون الرشيد |
| تقول سليمي ما لرأسك | ذوائبي | ٥٧١ | رجل من ثقيف |
| محل قلوب العارفين بروضة | الربِ | ٥/٣٠٣٨ | |
| ومتى تصبك خصاصة خارج الغنى | فارغبِ | ٥٩١ | النمر بن تولب |
| من الصبح والإمساء والفقر | صاحبِ | ٥٧١ | رجل من ثقيف |
| لست للشر ما تباعد | بصاخبِ | ٢٩٩٦ | |
| لو كنت آخذ في الإسلام | والصلبِ | ٣٤٢٢ | عمر بن الخطاب |
| باللّه ربك كم بيت مررت به | والطربِ | ٢٣٠/م | إبراهيم المهدي |
| أروني من يقوم لكم | العتابِ | ١٤٧٤ | أبو فراس |
| الحر يأنف مما أنت تفعله | والعربِ | ٣٤٢٢ | عمر بن الخطاب |
| يغشوا بينهم المودة | بعقاربِ | ٢٣٧٧ | |
| فأضحيت مرحوما وكنت | العواقبِ | ١٢٨٣ | هارون الرشيد |
| لو كان قولي هذا الشعر | والغربِ | ٣٢١٧ | |
| إذا حل أرض عاش فيها | بغريبِ | ٣٠٣ | محمد بن الحارث |
| حرفوني وجهوني غمضوني | غيبوبي | ١٣٦٧ | |
| لا تغضبن على امرىء في ماله | فاغضبِ | ٥٩١ | النمر بن تولب |
| عاشر الناس بالجميل | وقاربِ | ٢٩٩٦ | |
| معسكرها فيها وجني ثمارها | فربِ | ٥/٣٠٣٨ | |
| سل الخير أهل الخير قدما | قريبِ | ١٣٨٥، ٣٢٧٦ | |
| فأصلحن باليقين قلبي | الكربِ | ٢٩٣٧ | الحسن |
| واعتقل الأيام بالصبر والعزاء | مجانبِ | ٢١٨٣ | هارون الرشيد |
| إن رد اللئيم سمك | المصائبِ | ٢٩٩٦ | |
| لا تبع عرضك | المكالبِ | ٢٩٩٦ | |
| يا رب قائله يوما وقد | منجابِ | ٣٨٥ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| العلم ينهض بالخسيس | المنسوبِ | ٢٥٦٣ | |
| ولكني أحمي حماها | بمنكبِ | ٩٨٩ | عامر بن الطفيل |
| ذهب الوفاء ذهاب | ومواربِ | ٢٣٧٧ | |
| واحترس من أذى | بالمواهبِ | ٢٩٩٦ | |
| إني وإن كنت ابن سيد | موكبِ | ٩٨٩ | عامر بن الطفيل |
| المال يرفع بيت لا عماد له | والنسبِ | ١/١٦٥٢ | |
| تراجع عزيز علي فقده قد رزيته | النوائبِ | ٥٧١ | رجل من ثقيف |
| لا يسود الجميع من لم | بالنوائبِ | ٢٩٩٦ | |
| أنا للشر كاره | هائبِ | ٢٩٩٦ | |
| وعدت وكان الخلف منك سجية | بيتربِ | ٨٥٩ | الأشجعي الشاعر |
| | ـ ت ـ | | |
| وأقبل الدينا إذا سلست | امتنعتْ | ٢/٢٠٦٦ | [أبو العتاهية] |
| اقطع الدينا بما انقطعت | اندفعتْ | ٢٠٦٦/م | [أبو العتاهية] |
| المرء دنيا نفسه | انقضتْ | ٢٢١٤/م | |
| من لم تزل نعمته قبله | بالموتْ | ١٧٣ | عبد اللّه بن طاهر |
| وأرتك قبر في القبور | تمتْ | ١٩٠/م | |
| تفنى له بفناءه | حصلتْ | ٢٢١٤/م | |
| وعظتك أجداث صمت | خفتْ | ١٩٠/م | |
| وتكلت عن أوجه تبلى | سبتْ | ١٩٠/م | |
| ما خير موضعة | غدتْ | ٢٢١٤/م | |
| بارد فقد أسمعك الصوت | الفوتْ | ١٧٣ | عبد اللّه بن طاهر |
| تطلب النفس الغنى | قنعتْ | ٢/٢٠٦٦ | [أبو العتاهية] |
| تحير من نهمة حسنة | بيتها | ٣٢٩١ | |
| وجوه الباكيات معلمات | بيناتُ | ٣٢١٤ | |
| بينا غنى بيت وبهجته | البيتُ | ١٤٤٣/م | الأخفش |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أيا جامع الدنيا لغير بلاغة | تموتُ | ٩١٤ | |
| عبادك يخطئون وأنت | تموتُ | ١٢١٩ | |
| ميتا خلقت ولم أكن | حييتُ | ١٥٦٢ | السمؤل |
| تناجيك أجداث وهن | خفوتُ | ٩١٤ | |
| واجتنب المقاذع حيث | خشيتُ | ١٤٠٦/م | الزبير بن عبد المطلب |
| ومن تحت الثياب حسوم | ذائباتُ | ٣٢١٢ | |
| خدودهم مغمرة بدمع | ساهراتُ | ٣٢١٤ | |
| ويذهب نخوة المختال عني | صموتُ | ٥٥٨ | سعيد بن المسيب |
| كن كيف شئت فقصرك | فوتُ | ١٤٤٣/م | الأخفش |
| إذا ما الحي عاش | ميتُ | ٢١٠٥ | |
| بكفي ماجد لا عيب فيه | يستميتُ | ٥٥٨ | سعيد بن المسيب |
| هنيئا مريئا غير داء مخامر | استحلتِ | ٨٠٠، ٣٣٢٤ | الشعبي |
| نراع إذا الجنائز | الباكياتِ | ٩١٦/م | عروة بن أذينة |
| من لم تزل نعمته | بالموتِ | ٣٣٧٧ | |
| كروعة ثلة لمغار سبع | راتعاتِ | ٩١٦/م | عروة بن أذينة |
| واجعل الصمت إن عييت | السكوتِ | ٢٦٨٢ | |
| استر العي ما استطعت بصمت | للصموتِ | ٢٦٨٢ | |
| ومنهن من تسعى بأخضر | فرتِ | ١٧٦٧ | |
| بادر فقد أسمعك | الفوتِ | ٣٣٧٧ | |
| فمنهن من تسقي | مرتِ | ١٧٦٧ | |
| نوم الغداة وشرب بالعشيات | المروءاتِ | ٣٣٤١/م | |
| تؤمل بعد شيبك | المئتينِ | ٢٠٦٦/م | |
| | - ج - | | |
| ورب فتى سدت عليه | مخرجا | ٣٣٠٢ | |
| وإني لأرجو الله والأمر | ينفرجا | ٣٣٠٢ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لئن كنت محتاجاً إلى الحلم | أحوجُ | ٨٠٥، ٣٣٢٩ | |
| فإن قال بعض الناس فيه | أسمجُ | ٨٠٥ | |
| إذا تضايق أمر فالتمس | الفرجُ | ٩٨٩/م | |
| إلا بما ضاق بأهله | مخرجُ | ٨٠٥، ٣٣٢٩ | |
| ولي فرس للحلم بالحلم | مسرجُ | ٨٠٥، ٣٣٢٩ | |
| فمن شاء تقويمي فإني | معوجُ | ٨٠٥، ٣٣٢٩ | |
| | -ح- | | |
| وما العيش إلا في الخمول مع | تروحُ | ١٥٥/م | عبد الله بن مسلم بن قتيبة |
| يقولون حصن ثم تأبى | جنوحُ | ٣١٣١ | النابغة |
| ما عاتب المرء الكريم كنفسه | الصالحُ | ٥٥٤ | لبيد بن ربيعة |
| ولم يلحظ الموتى القبور | صحيحُ | ٣١٣١ | النابغة |
| والشيب يحسن بالفتى | قبيحُ | ٣٢٨٣ | |
| الخال يقبح بالفتى في خده | مليحُ | ٣٢٨٣ | |
| فعما قليل ثم جاء | ينوحُ | ٣١٣١ | النابغة |
| قتل الخيار بنو الخيار | والسماح | ١٤٧٥ | |
| وتكاملت فيك المروءة | الصالح | ٣٠٨٨ | [زياد الأعجم] |
| والصائمون القائمون | الصلاح | ١٤٧٥ | |
| تيقن فإن الرزق غاد | صوالح | ٢٩٣٨ | |
| ماذا بواقم والبيقيع | والصياح | ١٤٧٥ | |
| المهتدون المتقون | الفلاح | ١٤٧٥ | |
| الآن لما كنت أكمل | القارح | ٣٠٨٨ | [زياد الأعجم] |
| ونحن على جوانبها قعود | القماح | ٩٣١ | [بشر بن أبي خازم الأسدي] |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| ثقي بالله ليس له شريك | بالنجاح | ٣٤٢١ | جرير |
| | - د - | | |
| كنا إذا نحن أردنا لم نجد | نرد | ١٩٠٦ | |
| إمام له كف يضم | عودها | ١٥٥٢ | التغلبي |
| وغير محيط بالبرية | وبعيدها | ١٥٥٢ | التغلبي |
| صدق ظني وظن الناس | وأجدادا | ٣٢١٧ | |
| لا زلت في روضة خضراء | وأعوادا | | |
| أخا لك لا تراه الدهر | جوادا | ٣٢٢٦ | [زياد بن سليمان]، [ابن نباتة] |
| وكل على ذاك لاقى الردى | خامدونا | ٨٤١ | عبد الله بن المبارك |
| أخيين كنا فرق الدهر | الدهرا | ٦٢٧ | سيبويه |
| سألناه الجزيل فما تلكا | وزادا | ٣٢٢٦ | [زياد بن سليمان]، [ابن نباتة] |
| رمى الحدثان نسوة آل حرب | سمودا | ٧٧٤/م، ٣١٩٩ | فضالة بن شريك |
| فرد شعورهن السود بيضا | سواد | ٧٧٤/م، ٣١٩٩ | فضالة بن شريك |
| فأحسن ثم أحسن ثم عدنا | فعادا | ١٢٢٦ | [ابن نباتة]، [زياد بن سليمان الأعجم] |
| إذا شئت عناني الحديد | المناديا | ١٠١٤ | أبو محجن |
| لا يبعد الله إخوانا | والأبدُ | ٣١٩٨ | |
| نمدهم كل يوم | أحدُ | ٣١٩٨ | |
| مالي مرضت فلم تعدني | فأعودُ | ١٤٣٣ | عبد الله بن مصعب الزبيري |
| أقسم جسمي في | باردُ | ٢٢٣٤ | عروة بن الورد |
| أين أهل الديار من قوم | وثمودُ | ١٢٧٥ | عدي بن زيد |
| أتهزأ مني إن سمنت | جاهدُ | ٢٢٣٤ | عروة بن الورد |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| يسوسون أحلاما بعيدة | والجدُ | ٢٢٢٧/م | الحطيئة |
| فما ذهب الزمان | الجدودُ | ١٨٠٨ | آدم بن عبد العزيز بن عمر بن عبد العزيز |
| فإن قالت رجال قد تولى | جديدُ | ١٨٠٨ | آدم بن عبد العزيز بن عمر بن عبد العزيز |
| فلا يعش يوما بعيش | جديدُ | ١٨٧١، ١/٣٠٥٨ | |
| لياليك تفنى والذنوب تزيد | جديدُ | ٢٥٦٥ | |
| أخالد إني لم أزرك لحاجة | جوادُ | ١٦٥٦ | |
| بينما هم على الأسرة | الخدودُ | ١٢٧٥ | عدي بن زيد |
| وما كنا لنخلد | الخلودُ | ١٨٠٨ | آدم بن عبد العزيز |
| ففكر ودبر كيف أنت | رشيدُ | ٢٥٦٥ | |
| سألت الندى والجود | لعبيدُ | ٢٢٣٢ | |
| أخالد بين الحمد والأجر | عمادُ | ١٦٥٦ | |
| كم من عليل تخطى | والعودُ | ١٢٧٦ | |
| وأطبائهم بعضهم لحقوهم | واللدودُ | ١٢٧٥ | عدي بن زيد |
| أبا صالح صبرا | محمدُ | ١٧٧٥ | عبد الله بن ذكوان |
| إني امرؤ عافي إنائي | واحدُ | ٢٢٣٤ | عروة بن الورد |
| العبد يقرع بالعصا | الوعيدُ | ١٥٥٢ | مالك بن الديب |
| ثم لم ينقض الحديث | والوعيدُ | ١٢٧٥ | عدي بن زيد |
| فلا الجود يفني المال | يزيدُ | ١٨٧١ | |
| فقلت ومن مولاكما | يزيدُ | ٢٢٣٢/م، ١/٣٠٥٨ | |
| وتحسب أن النقص فيك زيادة | يزيدُ | ٢٥٦٥ | |
| وصحيح أضحى يعود مريضا | يعودُ | ١٢٧٥ | عدي بن زيد |
| أملوا عليهم لا أبا لأبيكم | أوسدوا | ٢٢٢٧/م | الحطيئة |
| أولئك قوم إن بنوا | شدوا | ٢٢٢٧/م | الحطيئة |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وإن كانت النعماء فيهم | كدوا | ٢٢٢٧/م | الحطيئة |
| ومن الحوادث لا أبالك | بالأسدادِ | ٩٣١ | الأسود ين يعفر |
| بعيدا قصيا أو قريبا | بعدي | ٢٢٣٤/م | |
| وما بالي أن تهون علي | بعدي | ١٣٨١ | |
| أرض تخيرها لطيب | دؤادِ | ١٢٢٢ | الأسود بن يعفر |
| فلا تحسبني كافرا لك | فاشهدِ | ٦٦٧ | الأعشى |
| نزلوا بأنقرة تسيل | أطوادِ | ١٢٢٢ | الأسود بن عفير |
| تمنى رجال أن أموت | بأوحدِ | ٣٣٠١ | يزيد بن عبد الملك |
| ماذا اؤما بعد آل | إيادِ | ١٢٢٢ | الأسود بن يعفر |
| ستبدي لك الأيام ما كنت | تزودِ | ٣٣٥٩ت | طرفة |
| ومنا ابن مر أبو حنبل | الجرادِ | ٢٢٣٣ | |
| وكيف يشبع المرء زادا | والجهدِ | ٢٢٣٤/م | |
| جهد المقل إذا أعطاك | الجودِ | ١٣٨٤ | |
| أرض الخورنق والسد | سنادِ | ١٢٢٢ | الأسود بن يعفر |
| وزيد لنا ولنا حاتم | الشدادِ | ٢٢٣٣ | |
| وبالجبلين | الصعادِ | ٢٢٣٣ | |
| تصل الذنوب إلى الذنوب | العابدِ | ٢٣٥٦ | محمود |
| ملكناه في أوليات | عادِ | ٢٢٣٣ | |
| رأيت سحابة فظننت | بعادِ | ٢٧٣١ | |
| وإني لعبد الضيف | العبدِ | ٢٢٣٤/م | |
| وإني لأقلي المرء من غير | عمدِ | ٢٧٠٨ | |
| وتعود سيدنا وسيد غيرنا | بالعوادِ | ٨٧٥ | كثير |
| فإنك لا تدري بأية بلدة | غدِ | ١٣٨٢/م، ٣٢٧٣ | |
| وما هذه الأيام إلا معارة | فتزودِ | ١٣٨٢/م، ٣٢٧٣ | |
| قليل المال يصلحه | الفسادِ | ٨٧١، ٢١٥٣ | الملتمس |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| | | ١/٣٠٥٨ | |
| إلا سليمان إذا قال | الفندِ | ١٤٠٤ | النابغة |
| أحب بنيتي ووددت أني | لحدِ | ١٣٨١ | |
| ولا يرهب ابن العم | المتهددِ | ١٨٩٦/م | |
| وما أبالي إذا ضيفي تضيفني | مجهودي | ١٣٨٤ | |
| وإذا ذكرت مصيبة تسلوا | محمدِ | ٧٧١، ٣٢٣٧ | |
| إن الرزية لا رزية | ومحمدِ | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| اصبر لكل مصيبة وتجلدا | مخلدِ | ٧٧١، ٣٢٣٧ | |
| قد علموا لو ينفع | بمخلدِ | ٣٣٠١ | يزيد بن عبد الملك |
| ما اهتدى منها لموضع | مرادِ | ٩٣١ | الأسود بن يعفر |
| ملكان قد خلت المقابر | بالمرصدِ | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| قل للقبائل من سُليم | المسجدِ | ٢٠٤٤ | |
| يا ناظر يرنو بعيني | مشاهدِ | ٢٣٥٦/م | محمود |
| ألم يقل الإله إلي عبدي | المعادِ | ٣٩٠ | فتى من الأزد |
| ألم يرث البكاء أناس صدق | المقادِ | ٣٩٠ | فتى من الأزد |
| عن المرء لا تسأل وسل | مقتدِ | ٥٢٣ | عدي بن زيد |
| إن الذي بالفوز أرسل | مهتدي | ٢٠٤٤ | |
| منية تجري لوقت | موعدِ | ٣٣٠١ | يزيد بن عبد الملك |
| وإني وإن أوعدته أو وعدته | موعدي | ١٨٩٦/م | |
| متى تأته تعش إلى ضوء | موقدِ | ٩٣٢ | الحطيئة |
| جرت الرياح على محل | ميعادِ | ١٢٢٢ | الأسود بن يعفر |
| أوجده اللّه فما مثله | ناشدِ | ٣٤٤٦ | أبو نواس |
| فأرى النعيم وكل ما يلهى | ونفاذِ | ١٢٢٢ | الأسود بن يعفر |
| ونسيت أن اللّه أخرج | واحدِ | ٢٣٥٦/م | محمود |
| وليس اللّه بمستنكر أن | واحدِ | ٣٤٤٦ | أبو نواس |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| ولا أقول نعم يوما فاتبعها | والولد | ٥٢٧ | |
| يقولون لا تبعد، ومن | يبعدِ | ٣٢٧٣ | |
| لخولة أطلال ببرقة ثهمد | اليدِ | ٣٣٥٩ت | طرفة |
| ولا ائتمنت على سر فبحت به | يدي | ٥٢٧ | |
| ليحدث ودا بعد بغضاء | يردي | ٢٧٠٨ | |
| | - ذ - | | |
| لكل جديد لذة غير | لذيذِ | ٢١٣٨ | [ضابيء البرجمي] |
| | - ر - | | |
| وأين المدل بسلطانه | افتخرْ | ٥٨٨ | مالك بن دينار |
| يا عائب الفقر | تعتبرْ | ١٦٥٥/م | |
| إنك تعصي لتنال الغنى | تفتقرْ | ١٦٥٥/م | |
| تفانوا جميعا فما مخبر | الخبرْ | ٥٨٨ | مالك بن دينار |
| تروح وتغدو بنات الثرى | الصورْ | ٥٨٨ | مالك بن دينار |
| أتيت القبور فناديتها | المحتقرْ | ٥٨٨ | مالك بن دينار |
| فيا سائلي عن أناس مضوا | معتبرْ | ٥٨٨ | مالك بن دينار |
| من شرف الفقر ومن | النظرْ | ١٦٥٥/م | |
| ولو قال أن الفيل | أحمرا | ١٠٦٥ | هارون بن سعيد العجلي |
| وأخلف من بول البعير | أدبرا | ١٠٦٥ | هارون بن سعيد العجلي |
| ومن عجب الرافضة جلد | تجفرا | ١٠٦٥ | هارون بن سعيد العجلي |
| فقبح أقوام رموه بفرية | تنصرا | ١٠٦٥ | هارون بن سعيد العجلي |
| إذا كان لي شيئان | تخيرا | ٥٢٨ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أخيين كنا فرق الدهر | الدهرا | ٦٢٧، ٣٣٩٥ | |
| بالبناء الأعلى الذي سبق | سريرا | ١٢٢١، ٣٤٠٤ | أمية بن أبي الصلت |
| هل من الموت ـ لا أبالك ـ | صارا | ٣٠٣٨ | |
| شرجعا ما يناله | صورا | ١٢٢١، ٣٤٠٤ | أمية بن أبي الصلت |
| أما أتت لك زلة | عذرا | ٣٠٤٠، ٣٤٧١ | [أبو العتاهية] |
| غنى النفس ما يكفيك | فقرا | ٣٠٤٠، ٣٤٧١ | [أبو العتاهية] |
| لما رأيت الأمر أمر منكرا | قنبرا | ١٠٦٥ | علي بن أبي طالب |
| إذا كف أهل الحق | قصرا | ١٠٦٥ | هارون بن سعيد العجلي |
| قف بديار المترفين فقل | والقرا | ١١٠٨ | مسعر |
| وقد بهرت فما يخفى | القمرا | ٩٢٩ | ذو الرمة |
| بسم اللّه والرحمن | قهرنا | ٣٤٢٢ | |
| مجدوا اللّه وهو للمجد أهل | كبيرا | ١٢٢١، ٣٤٠٤ | أمية بن أبي الصلت |
| فطائفة قالوا إمام | المطهرا | ١٠٦٥ | هارون العجلي |
| وفي واجد إن لم يكن | معسرا | ٥٢٨ | |
| ألم تر أن الرافضين تفرقوا | منكرا | ١٠٦٥ | هارون العجلي |
| إلا لا ولا يدري على ما | موفرا | ٣٩١ | |
| رأيت اللسان على أهله | مغيرا | ٨٧٩ | |
| سليم دواعي الصبر لا باسط | هجرا | ٣٠٤٠، ٣٤٧١ | [أبو العتاهية] |
| إلا إنما الدنيا مقيل لرائح | هجرا | ٣٩١ | |
| أحب الفتى ينفي | وقرا | ٣٠٤٠، ٣٤٧١ | [أبو العتاهية] |
| هبك عمري مثل ما عاش | يسارا | ٣٠٣٨ | |
| تبرأ من دم القتيل | إزارها | ١٨٥٠/م | أبو ذؤيب |
| فنفسك فأكرم من | تستعيرها | ٢٠٦٧ | |
| ولا تركب الذنب العضيم | مريرها | ٢٠٦٧ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فكنت عليه احذر الموت وحده | أحاذرُ | ٧٨٩، ٣٢٠١ | |
| | | ٣٤٧٥ | [أبو نواس] |
| صاحت بهم حادثات | أثرُ | ٩١٦، ٢٣٧١ | |
| والمرء ما عاش محدود له | الأثرُ | ٥٣٥ | كعب بن زهير |
| وبينما المرء في دنياه | الأعاصيرُ | ٧٧٥ | حريث |
| إلا أيها الزوار لا يدعنكم | وأكبرُ | ٨٣٩ | أبو دلف |
| حسناتها محسوبة قد أحصيت | أكثرُ | ٤٢٣، ١٦٣٢/م | معبد بن طرفة العنبري |
| وإن كنت أفردتموني للرجا | أكثرُ | ٨٣٩ | أبو دلف |
| إن يقطع العباس عنا رغيفه | أكثرُ | ١٤٢٥/م | أبو زياد |
| وليس بشافيك الشفيق ورأيه | وأنحرُ | ٦٠١ت | |
| يرى بارزا للناس | بدرُ | ٣٤٢١ | أيمن بن خزيم |
| من عاش أخلقت الأيام | البصرُ | ١٢٧٧ | ابن أبي فنن |
| كل دين يوم القيامة | بورُ | ١٢٥٣/٢ت | طفيل |
| فلو كان ينهاك الذي أنت | تديرُ | ٧٤٧ | |
| تزود من الدنيا فإنك | تسيرُ | ٧٣٩ | |
| وتصح تبينها وأنت خالد | تسيرُ | ٧٤٧ | |
| وأنفع من شاورت من كان | تشاورُ | ٦٠١ | |
| فأنفق إذا أنفقت إن كنت | تعسرُ | ١٣٨٣/م | |
| عيب ابن آدم ما علمت | تغريرُ | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |
| وتبين رب الخورنق إذا | تفكيرُ | ١٢٢٢، ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| تعطي صحيفتك التي | تنشرُ | ١٦٣٢/م | |
| فلا تستنكحي فدما غبيا | ثارُ | ٣٢٨٩ | |
| فتعلم آفاق البلاد أنني | جسورُ | ٣٠٧٧ | |
| هل في يديك | حقيرُ | ٢٢١٤/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لا تغبط الدنيا فإن | حقيرُ | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |
| ولو شاء بشر أغلق | حمرُ | ٣٤٢١ | أيمن بن خزيم |
| أتعمى عن الدنيا وأنت بصير | خبيرُ | ٧٤٧ | |
| هذي منازال أقوام | خطرُ | ٩١٦، ٢٣٧١ | |
| من رأيت المنون خالدون | خفيرُ | ١٤٤٢، ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| هل في يدك من الحوادث | خفيرُ | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |
| أن يرزق اللّه أقواما | الخنازيرُ | ٣٠٦٩ | |
| إلا يا ليل إن خيرت | الخيارُ | ٣٢٨٩ | |
| لعمرك ما مال الفتى | الذخائرُ | ٣٢٢٥ | |
| أين كسرى كسرى الملوك | سابورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| بعيد مرد العين مراد | سترُ | ٣٤٢١ | أيمن بن خزيم |
| سره حاله وكثرة ما يملك | والسديرُ | ١٢٢٢، ٢٩٠٣ | عدي بن خزيم |
| إذا المرء أخفى الخير مكتتما | سيظهرُ | ٧/٣٠٣٨ | مسعر |
| ولكن بشرا يسر الباب | والشكرُ | ٣٤٢١ | أيمن بن خزيم |
| أبى ذا ولكني سهل الإذن | الشكرُ | ٣٤٢١/ت | أيمن بن خزيم |
| رأيت الذي لا كله | صابرُ | ٣٢٨٤ | |
| أماوي من يغني الثراء | الصدرُ | ١٣٧٥، ١٣٧٦ | [حاتم الطائي] |
| فهل من خالد إما هلكنا | عارُ | ١٣٧٧/م ت | |
| لأصبرن على يسري | العصافيرُ | ٣٠٦٩ | |
| ولا خير في جر | فقيرُ | ٣٠٧٧ | |
| نل ما بدا لك أن تنال | فقيرُ | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |
| كفى حزنا ألا أمر ببلدة | قبرُ | ٧٤٢ | |
| فدونك فاصنع كما أنت | قبورُ | ٧٤٧ | |
| أما القبور فإنهن أوانس | قبورُ | ٧٩٤، ٣٢٠٠ | سعيد الجرمي |
| نذكر الموت عند ذاك وننسى | القبورُ | ٧٧٤ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لو كنت أعجب من شيء لأعجبني | القدرُ | ٥٣٥ | كعب بن زهير |
| قالت عهدتك مجنونا فقلت لها | الكبرُ | ١٢٧٧ت | ضرار بن عمرو العتبي |
| يا جامع المال الكثير | كبيرُ | ٢٢١٤/م، | |
| | | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |
| إن آيات ربنا بينات | الكفورُ | ١٢٥٣ | أمية بن أبي الصلت |
| قلبي ذكي وعقلي | مأثورُ | ١٨٥٢، ٣٢٩٨ | ابن عباس |
| عمت مصيبته فعم | مأجورُ | ٧٩٤، ٣٢٠٠ | سعيد الجرمي |
| فلا الجود يفني المال والجد | مدبرُ | ١٣٨٣/م | |
| وبنو الأصفر الكرام | مذكورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| فألقت عصاها واستقر | المسافرُ | ١٥٥٢، ٢٢٣١ | مضرس الأسدي |
| يبكي الغريب عليه ليس يعرفه | مسرورُ | ٧٧٥ | حريث |
| ويكسى رداء بالذي هو عامل | المشهرُ | ٧/٣٠٣٨ | مسعر |
| أم لديك العهد الوثيق | مغرورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| كفاني من مالي دلاص سائح | ومغترُ | ٨٣٩ | أبو دلف |
| حبس الفيل بالمغمس | مقعورُ | ١٢٥٣ | أمية بن أبي الصلت |
| وكنت متى أرسلت طرفك | المناظرُ | ٣٢٨٤ | |
| يسعى الفتى لأمور ليس | منتشرُ | ٥٣٥ | كعب بن زهير |
| ردت صنائعه إليه حياته | منشورُ | ٧٩٤، ٣٢٠٠ | سعيد الجرمي |
| لم يهبه ريب المنون | مهجورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| أيها الشامت المعير | الموفورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| وإني للمعروف أهل وموضع | موقرُ | ٨٣٩ | أبو دلف |
| مما حكم الزوار فيه | مؤمرُ | ٨٣٩ | أبو دلف |
| استقدر اللّه خيرا | مياسرُ | ٧٧٥ | حريث |
| أيرضى الكريم بالعفاف | نصيرُ | ٣٠٧٧ | |
| ماذا تقول إذا رحلت إلى | ونكيرُ | ٣٢٥٣ | أبو العتاهية |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لن يلبث القرناء أن | ونهارُ | ١١٠٧ | مسعر |
| أن يأخذ اللّه مني عيني | نورُ | ١٨٥٢، ٣٢٩٨ | ابن عباس |
| وليس بشلفيك الشفيق | وأغرُ | ٥٩٩/م | |
| شاده مرمرا وخلله | وكورُ | ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| فإن المرء لم يخلق حديدا | الوبارُ | ١٣٧٧ | |
| يا ساكن الدنيا ألم | يصيرُ | ٣٢٥٤ | أبو العتاهية |
| احذر مغايظ أقوام | يتدرُ | ٣٣٣١ | |
| إذا امرء أمسى أبوه وأمه | يتفكرُ | ٤٢٣، ١٦٣٢/م | معبد بن طوق |
| ولكن كالشهاب يرى ويخبوا | يحارُ | ١٣٧٧ | |
| وإذا قيل مات فلان | يخيرُ | ٧٧٤ | |
| متى أبصرت عيناك شيئا | يسيرُ | ٧٤٧ | |
| عزتك نفسك للحياة | يسيرُ | ٣٥٢٣ | أبو العتاهية |
| تلقى الفتى حذر المنية | يشعرُ | ٤٢٣، ١٦٣٢/م | معبد بن طوق |
| فارعوى قلبه وقال | يصيرُ | ١٢٢٢، ٢٩٠٣ | عدي بن زياد |
| قل للذي يرجو البقاء | يصيرُ | ٧٣٩ | |
| تعطي صحيفتك التي أمليتها | ينشرُ | ٤٢٣ | معبد بن طوق |
| نصبت حبائلها من حولها | ينظرُ | ٤٢٣، ١٦٣٢/م | معبد بن طوق |
| وعيرها الواشون إني | عارها | ٢٣٣٥ | ابن الزبير |
| فليس من مسلم له | ذكروا | ٢٧٣٢ | حسان بن ثابت |
| عاشوا بلا فرقة حياتهم | قبروا | ٢٧٣٢ | حسان بن ثابت |
| ثلاثة برزوا بسبقهم | نشروا | ٢٧٣٢ | حسان بن ثابت |
| وعمادة الدين التي | أبو بكرِ | ٢٢٨٨/م | الفرزدق |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| هذا يعاديك إدبارا | بإدبارِ | ١٢٨٢ | |
| ألا أبلغ أبا حفص رسولا | إزاري | ١٨٥٠ | [أبو المنهال بقيلة الأكبر الأشجعي] |
| هل لك في أشبههم | الأزهرِ | ٣٠٧٩ | حبيب بن شوذب |
| نعم القتيل إذا الرياح | الأزورِ | ٣١٣٦ | متمم بن نويرة |
| ولا كان ناكثا لعهد | والأمرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| إن الشباب وإن الشيب | بإصرارِ | ١٢٨٢ | |
| ولعمري لو رمته أنت | بتارِ | ٣٤٢٢ | |
| ويسلم واحد ويعد | البحارِ | ٢١٨٤/م | |
| أو فيء ظل زال | بدرِ | ٢٤٤٤ | |
| إذا أنت لم تزرع وأبصرت | البذرِ | ٤٧٩ | الحسن بن صالح |
| أظن خيول المسلمين | البشرِ | ١٠١٨ | |
| لا يسمعون إلى شيء | للبشرِ | ٣٤٧٠ | |
| لا ضيع الله ما جمعت | والبقرِ | ٣٤٧٠ | |
| يسعى عليك بما اشتهيت | البكورُ | ١٦٢١ | أبو العتاهية |
| اعمل بعملي ولا تنظر إلى | تقصيري | ١٦٣٧/م | الخليل بن أحمد |
| لا يقتبس الجار منهم | الجارِ | ٣٢٥٤ | |
| يا أيها السائل عن | جعفرِ | ٣٠٧٩ | حبيب بن شوذب |
| لو كنت تعقل يا مغرور | حذرِ | ٣٢٢٨ | |
| مضنة عن عتابك | حرِ | ٢٤٧٣ | |
| ساعة كانت لوقت حين | حرفوني | ١٣٦٧ | |
| فمالك يوم الحشر شيء سوى | الحشرِ | ٤٧٩ | الحسن بن صالح |
| قلائصنا هداك الله | الحصارِ | ١٨٥٠ | [أبو المنهال بقيلة الأكبر الأشجعي] |
| لو لم تكن فيه آيات | بالخبرِ | ٧٥٨/م، ٣٢٣٤ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أأذكر الضر والبلوى | خبري | ٣٣١٨ | جرير |
| فهل لكم في السير | الخدرِ | ١٠١٨ | |
| رفقاء متكئين في غرف | خضرِ | ٢٢٨٨/م | الفرزدق |
| أعزى عليه والعزاء | الدهرِ | ١٧٧٥ | عبد الله بن خازم |
| إذا أنا لم أقبل | الدهرِ | ٢٠١٩ | [أبو العتاهية] |
| قضى ما قضى فيما مضى | الدهرِ | ٢٠٩٤ | عاصم بن عمر بن الخطاب |
| قوم إذا أكلوا أخفوا | والدارِ | ٣٢٥٤ | |
| لن يرحل الشيب عن دار | الدارِ | ١٢٨٢ | |
| كل تلك الأرامل قد قضيت | الذكرِ | ١٢١٧، ٣٣٧٨ | [جرير] |
| ألا أيها الباكي على صبابة | ذكري | ٢٤٩١ | |
| إذا سار من خلف امريء وأمامه | سائرِ | ٧٧٢/م | |
| فلم أر يوما كان أعظم | والسترِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| إن أهل الأرض في الأرض | سترِ | ٣٠٣٨/٤، ٣٤٢٧ | |
| وكم أزمة للدهر ألقت | ستري | ٢٤٨٩ | |
| يجد النساء حواسرا | الأسحارِ | ٧٤٠ | [الربيع بن زياد العبسي] |
| ويجنب سراً الحي | سرِ | ١٥٩٦/م | سعيد بن زيد |
| يرتع في أكناف عيش | سكرِ | ٢٤٤٤ | |
| أقول إن سكتوا | والشجرِ | ٣٤٧٠ | |
| ما الدهر إلا ليلة | الشهرِ | ٢٤٤٤ | |
| فإن أبكه أعذر لفقدي | صبرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| تعودت مس الضر حتى | الصبرِ | ٢٠١٩ | [أبو العتاهية] |
| وإني لصبار على ما ينوبني | الصبرِ | ٢٠١٩/م | |
| وحينا بعد قوام ظهري | صبري | ٢٤٤٤ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وكم رمية للدهر من بيت | صبري | ٢٤٨٩ | |
| فما كان في دين الإله | الصدرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| فإذا النفوس تقعقعت | الصدورِ | ١٦٢١ | أبو العتاهية |
| يعمر واحد ويعد | الصغارِ | ٢١٨٤/م | |
| فجزاك المليك سواء | وصغارِ | ٣٤٢٢ | |
| ويك إن من يكن له | ضرِ | ١٥٩٦/م | سعيد بن زيد |
| يعقلهن جعدة شيظمي | الظئارِ | ١٨٥٠ | [أبو المنهال بقيلة الأكبر الأشجعي] |
| وهل لمريء يبكي لعظم | عذرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| يا عمر من يدري كمن | للعذرِ | ٢٤٤٤ | |
| عجيب لقوم أسلموا | وللعذرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| ما بين ميلاد الفتى | العصرِ | ٢٤٤٤ | |
| يا ليت شعري ثم يا ليت | العمرِ | ٢٤٤٤ | |
| عين جودي لفارس مغوار | غزارِ | ٣٤٢٢ | |
| فهناك تعلم موقنا | غرورِ | ١٦٢١ | أبو العتاهية |
| وإن امريء دنياه | غرورِ | ٣٠٢٥ | [الشويعر الحنفي] |
| في ظل من عنت الوجوه | الغفرِ | ٢٢٨٨/م | الفرزدق |
| سبع وهو ذو وفاء | الفخارِ | ٣٤٢٢ | |
| إذا افتقروا عضوا | الفقرِ | ١٥٨٠ | |
| فعش فقيرا | الفقرِ | ٢٤٤٤ | |
| ولست بنظار إلى جانب | الفقرِ | ٢٥١٤/م | |
| إنا نؤمل أن يقيم | فهرِ | ٢٢٨٨/م | الفرزدق |
| إنا لنا قبرين قبر | قبرِ | ١٢٥٨ | ابن جمانة الباهلي |
| سكن منك الباكيات | القبرِ | ٢٩٣٨ | |
| ولم أر نعمة شملت | بقبرِ | ١٤٣٣ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فقل للذي يتقي خلاف | قدرِ | ٣٣٠١ | يزيد بن عبد الملك |
| لهف نفسي على بقائك | للأقدارِ | ٣٤٢٢ | |
| عش ما بدا لك سالما | القصورِ | ١٦٢١ | أبو العتاهية |
| فهذا الذي بالصين عمت | القطرِ | ١٢٥٩ | لبن جمانة الباهلي |
| بعدما جز ما به | الكفارِ | ٣٤٢٢ | |
| لا يمسك العوراء تحت ثيابه | المئزرِ | ٣١٣٦ | متمم بن نويرة |
| مجالسهم خفض العيش | المخاصرِ | ١٥٥٣ت | [صفوان الأنصاري] |
| أتيناه زوارا فأمجدنا | المخامرِ | ١٧٥٩ | |
| ما بال قوم سهام الموت | والمدرِ | ٣٢٢٨ | |
| إذا اعتذر الصديق إليك | مقرِ | ٣٤٧٣ | |
| ولنعم حشو الدرع | المثورِ | ٣١٣٦ | متمم بن نويرة |
| هل قائم للّه في ليلة | النارِ | ٥٠٦ | حارس من بني عدي |
| فما قلص وجدن | النجارِ | ١٨٥٠ | [أبو المنهال بقيلة الأكبر الأشجعي] |
| عثمان إذا قتلوه | النحرِ | ٢٢٨٨/م | الفرزدق |
| وإني لأرضى من معايش | النذرِ | ٢٤٨٩ | |
| رأيت الشيب من نذر المنايا | نذيرِ | ١٣٦٤، ٣٣٥٦ | |
| إليس قصر المرء | نسرِ | ٢٤٤٤ | |
| فلو أنهم سيموا من الضيم | والنصرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| قد كن يكنن الوجوه | للنظارِ | ٧٤٠ | كعب بن مالك [الربيع ابن زياد العبسي] |
| من كان مصروعا بمصرع هالك | نهارِ | ٧٤٠ | [الربيع بن زياد العبسي] |
| أئمة حق يشرحون سبيله | والهجرِ | ٤/٣٠٣٨، ٣٤٢٧ | |
| وأوسعناه علما فرد | يحاورِ | ١٧٥٩ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| غداه أصيب المسلمون بخيرهم | واليسرِ | ٦٢٤، ٢٨٠٧ | كعب بن مالك |
| أدعوته باللّه ثم غدرته | بغدرِ | ٣١٣٦ | متمم بن نويرة |
| يطرد نومي عند جفوني | بوترِ | ٢٤٤٤ | |
| | - س - | | |
| كدحت بأظفاري واعملت | أملسا | ٣٣٢١ | |
| وأجمعت أن ألقاه | تنفسا | ٣٣٢١ | |
| تشاغل لما جئت في وجهه | عسا | ٣٣٢١ | |
| فقلت له لا بأس | مبلسا | ٣٣١٢ | |
| للناس مال ولي مالان | حراسُ | ٣٢٧٢ | |
| إذا لم يكن صدر المجالس سيدا | المجالسُ | ٨٦١/م | عبد للّه بن محمد البغدادي |
| أجد إذا ضمرت تعزز لحمها | لا تنبسُ | ٢٢٩٤ | [الملتمس] |
| ما لي الرضا بما أصبحت | الناسُ | ٣٢٧٢ | |
| لا تهلك النفس إسرافا | يأسُ | ٢٧٣١ | |
| وما مر يوم أرتجي | أمسِ | ٦٥٣، ٢١٨٤/م | العباس بن الأحنف |
| أقبلن في وقت الضحا | بالشمسِ | ٣٢٨٧ | |
| وكم قائل قد قال إنك راجل | فارسِ | ٨٦١/م | عبد اللّه بن محمد البغدادي |
| ما أقبح الكذب المنقوص | الناسِ | ٢٦٨٣ | |
| تجري على كبد السماء | بالنفسِ | ٢٠٦٠ | تبع الأول |
| مطلوعها بيضاء صافية | كالورسِ | ٢٠٦٠ | تبع الأول |
| | - ش - | | |
| وقد أطعمنا منك | رشاشها | ١٨٩٧، ٢/٣٠٦٩ | خالد [ابن الديسم] |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فلا غيما يصحو | عطاشها | ١٨٩٧، | |
| | | ٢/٣٠٦٩ | خالد [ابن الديسم] |
| أخالد إن الري | ومعاشها | ١٨٩٧، | |
| | | ٢/٣٠٦٩ | خالد [ابن الديسم] |
| | - ص - | | |
| وما كنت أرجو أن ينالك حرها | حائصا | ٤٢٢ | أحمد بن المعذل |
| ضحيت له كي أستظل بظله | قالصا | ٤٢٢ | أحمد بن المعذل |
| لعمري لئن ضاعت أمور بأهلها | خالصا | ٤٢٢ | أحمد بن المعذل |
| وغارت نفوس الناس عند | ساخصا | ٤٢٢ | أحمد بن المعذل |
| وهنالك قال المرء ياليت أنني | قامصا | ٤٢٢ | أحمد بن المعذل |
| فوا أسفا أن سعيك | ناقصا | ٤٢٢ت | [أحمد بن المعذل] |
| رجعت لما رمت مستسحرا | وبيضا | ٩١٣ | الأعشى |
| أيضمن لي فتى يدرك | بالخلاص | ٢٤٤٥ | |
| | - ض - | | |
| ولقد أقي عرضي بما ملكت يدي | الأعراض | ١١٧١/ت | إبراهيم بن إسماعيل |
| | - ط - | | |
| من القوم ذا لونين وسع | يوسطا | ٣٢٩٠ | |
| | - ع - | | |
| فلم يستطع إذا جاءه الموت | امتنعْ | ٩٣٩/م | سابق |
| كلما أبلى الثرى وجههم | فانقشعْ | ٧٤٤ | عمران بن موسى |
| خزر يخطر ما لم يراني | انقمعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| يا سائلي عن مقالة الشيع | والبدعْ | ١١٩٤/ت | الرياشي |
| إياك أعني يا ابن آدم | تنتفعْ | ٢٣٢٤/م | |
| شغل الخلائق بالحياة | تقترعْ | ٢٣٢٤/م | |
| لو كان عمرك | تنقطعْ | ٢٣٢٤/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وقرب من لحد فصار | جمعْ | م/٩٣٩ | سابق |
| ويحيني إذا لاقيته | رتعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| من كان ينوي أهله | رجعْ | ١٠١١ | |
| فأصبح تبكيه النساء | رفعْ | م/٩٣٩ | سابق |
| لم تقبل الدنيا بخدعتها | شبعْ | م/٢٣٢٤ | |
| لم يضرني غير أن يحسدني | الضرعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| وخارج أخرجه حب | الطمعْ | ١٠١١ | |
| لعبت بنا الدنيا وكيف | فينخدعْ | م/٢٣٢٤ | |
| إن البلية لا تزل | مجتمعْ | م/٢٣٢٤ | |
| والمرء بوطنها ويعلم | منقلعْ | م/٢٣٢٤ | |
| وكم من صحيح بات للموت | هجعْ | م/٩٣٩ | سابق |
| كيف ترجون سقاطي | وصلعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| فر من الموت وفي الموت | وقعْ | ١٠١١ | |
| لا يترك الموت الغني | يدعْ | م/٩٣٩ | سابق |
| قد كفاني اللّه ما | يضعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| رب من أنضجت غيظا | يطعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| ويراني كالشجي في صدره | ينتزعْ | ٢٢٠٩ | سويد بن أبي كاهل |
| ولما مضى معن | أجدعا | ٣٤١٨ | مروان بن أبي حفصة، أو [الحسن بن مطير الأسدي] |
| أخ كان أغنى أيمن | أجمعا | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| سميا نبي اللّه لا رزية | أخضعا | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| لئن جزع الحجاج ما من | وأوجعا | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| فلا تنكحي إن فرق الدهر بيننا | بانزعا | ٣٢٩٠ | [هدبة بن الخشرم العذري] |
| ولكن ضممت الجود | تصدعا | ٣٤١٨ | مروان بن أبي حفصة، |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أو [ابن مطير الأسدي] | | | |
| وكنا كندماني جذيمة حقبه | نتصدعا | ٦٨٧، ٢٠١٦ | متمم بن نويرة |
| تعز أبا العباس عنه | تضعضعا | ٣٤١٨ | مروان بن أبي حفصة، أو [الحسين بن مطير الأسدي] |
| جناحا عقاب فارقاه | لتضعضعا | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| وأهون مفقود إذا الموت | تقنعا | ١٤٣٣ | جرير |
| ضروبا بلحيته على عظم | تقنعا | ٣٢٩١ | |
| يا ميتا في كل بعضه | جميعا | ٧٤١ | |
| رحيب ذراع بالله لا تشينه | ذرعا | ٢٤٢١ | |
| تمنى رجال شاؤه من ضلالهم | وظلعا | ٣٤١٨ | [الحسين بن مطير الأسدي] أو مروان بن أبي حفصة |
| ألما على معن فقلا | مربعا | ٣٤١٨ | [الحسين بن مطير الأسدي] أو مروان بن أبي حفصة |
| فتى عيسى من معروفه | مرتعا | ٣٤١٨ | [الحسين بن مطير الأسدي] أو مروان بن أبي حفصة |
| فيا قبر معن كنت | مضجعا | ٣٤١٨ | [الحسين بن مطير الأسدي] أو مروان بن أبي حفصة |
| فلما تفرقنا كأني ومالك | معا | ٦٨٧، ٢٠١٦ | متمم بن نويرة |
| ويا قبر معن كنت | ممرعا | ٣٤١٨ | مروان بن أبي حفصة، أو [الحسين بن مطير |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| | | | الأسدي] |
| من المصطفى والمصطفى من | فودعا | ٣٠٨٨ | الفرزدق |
| وما كان إلا الجواد | فودعا | ٣٤١٨ | مروان بن أبي حفصة، أو [الحسين بن مطير الأسدي] |
| أيها النفس أجملي | وقعا | ٢٧٦ | أوس بن حجر الكندي |
| وإني بحمد اللّه لأثوب | أتقنعُ | ١٥٢٨، ٣٠٤٢ | غيلان بن أسلمة |
| فما القيد أبكاني ولا | أجزعُ | ٤٤١ | أخو كنانة [درج الضباني] |
| إن الصلاة أربع | أربعُ | ٢١٣٦ | أعرابي |
| ثم ثلاث بعدهن | أربعُ | ٢١٣٦ | أعرابي [ ] |
| أليس ورائي إن تراخت | الأصابعُ | ٥٥٥، ١٢٨٣ | لبيد بن ربيعة |
| بلى إن أقواما أخاف عليهم | أمنعْ | ١٤٤ | أخو كنانة [درج الضباني] |
| فإذا طلبت فلا إلى متضايق | أوسعُ | ١,٣٤/م | [أبو العتاهية] |
| ولأتين عليك يوم مرة | تسمعُ | ٦٨٩ | متمم بن نويرة |
| ولا بد من تلف يصيبك | تصرعُ | ٦٨٩ | متمم بن نويرة |
| ثم صلاة الفجر | تضيعُ | ٢١٣٦ | أعرابي |
| النفس راغبة إذا رغبتها | تقنعُ | ٢٧٦، ٢١٥٣ | أبو ذؤيب |
| أعاذل ما يدريك إلا تظننا | راجعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| وما الناس إلا عاملان | رافعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| أخبر أخبار القرون | | ٥٥٥، ١٢٨٣ | لبيد بن ربيعة |
| وما المرء إلا كالشهاب وضوءه | ساطعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| فلا تبعدن إن المنية موعد | وطالعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| فلا جزع إن فرق الدهر | فاجعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فأصبحت مثل السيف أخلق | قاطعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| فمنهم سعيد آخذ بنصيبه | قانعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| أتجزع مما أحدث الدهر للفتى | القوارعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| فلرب لذة ليلة قد | مدفوعُ | ٣١٨٢، ٣١٨٣ | |
| قد يدرك الشرف الفتى | مرقوعُ | ٢٣١٤، ٣١٨٢ | |
| | | ٣١٨٣ | ابن هرمة |
| بلينا وما تبلى النجوم الطوالع | والمصانعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| وقد كنت في أكناف جار | نافعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| نرقع دنيانا بتمزيق ديننا | نرقعُ | ١٩٦١ | إبراهيم بن أدهم |
| أيدعوني شيخا وقد عشت | نوازعُ | ١٠١٣ | أبو الطفيل [عامر بن واثلة] |
| وما البر إلا مضمرات من | ودائعُ | ٥٥٥ | لبيد بن ربيعة |
| وما شاب رأسي من سنين | الوقائعُ | ١٠١٣ | أبو الطفيل [عامر بن واثلة] |
| فامتنع ولا تنكر لربك | ويرفعُ | ١٠٤٣/م | [أبو العتاهية] |
| أما تريني شاحبا مبتذلا | فيضيعُ | ٣١٨٢، ٣١٨٣ | |
| إن المطامع ما عملت | يطمعُ | ١٠٣٤/م | [أبو العتاهية] |
| إلا أبابيل أعطيتها | الأربع | ٣٣٦٠ | العباس بن مرداس |
| ومن يأمن الدنيا يكن | الأصابع | ٣٠٢٥ | |
| أتجعل نهبي ونهب العبيد | والأقرع | ٣٣٦٠ | العباس بن مرداس |
| وقد كنت في الحرب ذا | أمنع | ٣٣٦٠ | العباس بن مرداس |
| ولم أتبع الدنيا بدين أبيعه | بائع | ١٣٠١ | عبد الله بن إدريس، العمري العابد |
| جمع الشر المال من غير | تابع | ١٣٠١ | عبد الله بن إدريس، العمري العابد |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وتقضي وليد الحي إن كان | بجائع | ٣٥٨٠ | |
| إعرض عن الغوراء إن | تسمع | ١٠٣٥ | |
| ولم تستحلني المرديات | تصانع | ١٣٠١ | عبد اللّه بن إدريس، العمري العابد |
| فإنك لو سألت حياة | تطاعي | ١٥٦١/م | قطري بن الفجاءة |
| إن تبقى تفجع بالأحبة | تفجع | ٣١٣٢ | |
| أشمت فقد قرع الحوادث | تقرع | ٣١٣٢ | |
| ومن يجعل الرحمن في قلبه | راتع | ١٣٠١ | عبد اللّه بن إدريس، العمري العابد |
| لقد ظننت بأيامك يا | زنباع | ١٣٤ | روح بن زنباغ |
| كل فريق بديههم حسن | للشبع | ١١٩٤ | |
| بنعمة ربي ما أريد | قانع | ١٣٠١ | عبد اللّه بن إدريس، العمري العابد |
| أحسن ما فيه أن يقال | بمنتطع | ١١٩٤ | |
| فما كان حصن ولا حابس | المجمع | ٣٣٦٠ | العباس بن مرداس |
| إن الصنيعة لا تكون صنيعة | المصنع | ٩٨٠ | [عيسى بن يزيد البجلي أو الهذيل الأشجعي] |
| إذا كان ديني ليس فيه | المطامع | ١٣٠١ | عبد اللّه بن إدريس، العمري العابد |
| ومالي من عبد ولا من | واسع | ١٣٠١ | عبد اللّه بن إدريس، العمري العابد |
| دع من يقوم الكلام | ورع | ١١٩٤ | |
| ولقد أقول لذي الشماتة | يجزع | ٣١٣٢ | |
| وما كنت دون امريء منهما | يرفع | ٣٣٦٠ | العباس بن مرداس |

ـ ف ـ

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| عين من لا تحب | الجفا | ٣٣٠٤ | |
| خذ من الدهر ما كفى | صفا | ٣٣٠٤ | |
| لا تلجن بالبكاء | عفا | ٣٣٠٤ | |
| خل عنك العتاب | هفا | ٣٣٠٤ | |
| ألا يا رسول اللّه كنت رجائيا | جافيا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبد المطلب |
| تنادي بصوت لا يفوت | أتكلفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| بأية أعمال رقوا درجاتهم | أرأفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| سلوا واحملوا واستكثروا | سأعلفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| ولكن سحاب من سحائب | وتتحفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| وتلك سحاب ليس تكرى | تخلفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| بغير رعود لهم لامع | ترجفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| فتبا لدنيا لا يدوم | وتصرفُ | ٢٢٢٥ | الحرقة بنت النعمان |
| لا يدرك الناس ما قدمت | شرفُ | ٣٣٩٣ | كعب بن الأشعري |
| تدر عليهم فوق غاية | مصرفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| وبينا نسوس الناس | نتنصفُ | ٢٢٢٥ | الحرقة بنت النعمان |
| سحاب على أعلى الفراديس | ويعصفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| أولئك كانوا ينصحون | ينصفُ | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| فما اقترحوا شيئا | سفوا | ١٦١٢/م | محمد بن فضالة |
| إن يسلم السعدان يصبح | المخالفِ | ١٢٦٦ | |
| فتدخل أيد في حناجر | المعرفِ | ١٣٦٤ | |
| فإن ثواب اللّه الطالب | رفارفِ | ١٢٦٦ | |
| أجيبا إلى داعي الهدى | عارفِ | ١٢٦٦ | |
| يا سعد سعد الأوس كن | الغطارفِ | ١٢٦٦ | |
| | ـ ق ـ | | |
| إنك إن كلفتني | أطقْ | ٣٠٧٥ | قيس بن الربيع |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وقلت يا هذا | وانطلقْ | ٣٠٧٥ | قيس بن الربيع |
| أو كعذرى رفعت عن ذيلها | فانمزقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| أيها السائل عما قد مضى | خلقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| ساءلت ما سرك | خلقْ | ٣٠٧٥ | قيس بن الربيع |
| وإذا الفاحش لاقى | الطبقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| رب قوم غبروا من عيشهم | وغدقْ | ٢٣٠ | محمد بن سلام الجمحي |
| أو غلام السوء إن | فسقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| قد كنت حذرتك | المصطلقْ | ٣٠٧٩ | قيس بن الربيع |
| سكت الدهر زمانا عنهم | نطقْ | ٢٣٠ | محمد بن سلام الجمحي |
| إنما الفحش ومن يعتاده | نعقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| أو حمار السوء إن أشبعته | نهقْ | ٢٩٩٩ | مسكين الدارمي |
| خل النفاق وأهله | الطريقَ | ٢٤٤٦ | إبراهيم بن العباس |
| وكن أكيس الكيسا إذا | أحمقا | ٣٠٤٥ | |
| وللدهر أيام فكن في لباسه | وأخلقا | ٣٠٤٥ | |
| لقد خاب من أولاد | أزرقا | ١٦٨٩، ١٨٧٤ | الفرزدق |
| أخاف وراء القبر | وأضيقا | ١٦٨٩، ١٨٧٤ | الفرزدق |
| إذا شربوا فيها الصديد | تمزقا | ١٦٨٩، ١٨٧٤ | الفرزدق |
| إن على كل رئيس حقا | تندقا | ١٠١٥ | الأحنف |
| إني لأعرض عن أشياء | حمقا | ٣٣٢٦ | |
| ثلاثين أخرى على قدرها | الخالقينا | ٨٤١ | عبدالله بن المبارك |
| الكذب شين لمن أمسى | خلقا | ٢٦٨٣ | |
| أخشى جواب سفيه | صدقا | ٣٣٢٦ | |
| وأرغب بنفسك أن ترى | صديقا | ٢٤٤٦ | إبراهيم بن العباس |
| إذا جاءني يوم القيامة | الفرزدقا | ١٦٨٩، ١٨٧٤ | الفرزدق |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| يساق إلى دار الجحيم | محرقا | ١٦٨٩، ١٨٧٤ | الفرزدق |
| والرزق يخطىء باب عاقل قومه | الأحمقِ | ٨٠٧ | عباد التميمي |
| قد رجلوني وما بالشعر | أخلاقِ | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| وأرسلوا فتية من خيرهم حسبا | إطباقِ | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| وأنت لما ظهرت | الأفقِ | ١٢١٨ | العباس بن عبدالمطلب |
| والغيث محرمة أناس سغب | جلقِ | ٨٠٧/م | عباد التميمي |
| أفرق بين معروفي | والحقوقِ | ٨٩٧ | |
| وقسموا المال وأرفضت | خذاقِ | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| لا تسأل القوم ما مالي | خلقي | ٦٠٢ | أبو محجن |
| ولقد بلوتهما فلم أحدهما | رفيقِ | ٨٩٥ | مسعر بن كدام |
| فلا تفرح بأمران | السحيقِ | ١٤٠٥ | |
| ولقد حبوتك يا كدام نصيحتي | شفيقِ | ٨٩٥ | مسعر بن كدام |
| أميل مع الذمام على ابن عمي | الشقيقِ | ٨٩٧ | |
| أما المزاحة والمراء فدعهما | لصديقِ | ٨٩٥ | مسعر بن كدام |
| فإن ألفيتني ملكا عظيما | الصديقِ | ٨٩٧ | |
| ومن لم يتق الضحضاح | العميقِ | ١٤٠٥ | |
| قد أركب الهول مسدولا عساكره | العنقِ | ٦٠٢ | أبو محجن |
| القوم أعلم أني من سراتهم | بالفرقِ | ٦٠٢ | أبو محجن |
| كأن فؤادي بين أظفار | محلقِ | ١٨٩٧/م | |
| وطيبوني وقال أيما رجل | مخراقِ | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| فإن الأمر يبعد بعد | المسوقِ | ١٤٠٥ | |
| وعزة مرة من فعل | موقِ | ١٤٠٥ | |
| هل للفتى من بنات الدهر | واقِ | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| حذار امرىء قد كنت | يصدقِ | ١٨٩٧/م | |
| كفى جرما إن تطعن الخيل | وثاقيا | ١٠١٤ | أبو محجن |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| إذا مت فادفني إلى أصل كومة | عروقها | ٦٠٢ | أبو محجن |
| | ـ ك ـ | | |
| أطع الله بجهدك | جهدكْ | ١٢٠٨ | |
| أعط مولاك كما | عبدكْ | ١٢٠٨ | |
| حسبي حياة الله من | هالكْ | ٣٢٠٢ | |
| اشدد حيازيمك للموت | آتيكا | ١٠٤١ | [علي بن أبي طالب] |
| وحاذرت لومي فبادرتني | أبدركَ | ٣٣٠٣ | |
| سألت عن المكارم أين | إليكا | ٣٢١٧ | |
| وكان بنا برا رؤوفا يمننا | باكيا | ٧٥٨ | صفية بنت عبدالمطلب |
| عدمت الحياة ولا نلتها | ألحدوكا | ٣٤٤٨ | |
| يا جواد اللسان في | راحتيكا | ٣٠٥٤ | عامر بن الطفيل |
| وكيف أذوق لذيذ | وسدوكا | ٣٤٤٨ | |
| ألا يا طالب الدنيا | لشانئكا | ٣٢٩٣ | [بهلول المجنون] |
| سموك غضبانا وسنك | ضاحكا | ٢٠٧٠ | الحجاج |
| لكن جهلت مقالتي فعذلتني | فعذرتكا | ٢٣٢ | الخليل بن أحمد |
| لئن كنت تعقل ما أقول | عذلتكا | ٢٣٢ | الخليل بن أحمد |
| فجد لي يا ابن طاهر | عليكا | ٢٣١٧ | |
| كأن المنايا قد قصدن | لديكا | ٢٤٩٠ | |
| عتبت علي ولا ذنب لي | لكَ | ٣٣٠٣ | |
| فكنا كما قيل فيما مضى | يأخذكَ | ٣٣٠٣ | |
| إلى كم تطلب الدنيا | يكفيكا | ٣٢٩٣ | [بهلول المجنون] |
| ويا نفس إن اليوم | اشتغالكِ | ١٦٣٢ | |
| أيا نفس لا تنسي | بشمالكِ | ١٦٣٢ | |
| ومسؤولة يا نفس | سؤالكِ | ١٦٣٢ | |
| ومسلسلة يا نفس أنت | فعالكِ | ١٦٣٢ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| حسبي بقاء الله من كل ميت | هالك | ٧٩٠، ٣٢٠٢ | عمر بن عبدالعزيز |
| حسبي حياة الله عن كل ميت | هالك | ٣٠٨٨ | أبو محمد بن عمرو الثقفي |
| إذا ما لقيت | هنالك | ٧٩٠، ٣٠٨٨ | أبو محمد بن عمرو الثقفي |

- ل -

| | | | |
|---|---|---|---|
| من هداه سبل الخير | أضلْ | ١٩٣١، ٣٤١٩ | لبيد بن ربيعة |
| مؤمل دنيا لتبقى له | الآملْ | ١٩١ | صالح المري |
| وبات يروي أصول الفسيل | الرجلْ | ١٩١ | صالح المري |
| إن تقوى ربنا خير نفل | وعجلْ | ١٩٣١، ٣٤١٩ | لبيد بن ربيعة |
| وفي اسم ذي الآلاء | غفلْ | ٣٤٢٢ | |
| أحمد الله فلا ند له | فعلْ | ١٩٣١، ٣٤١٩ | لبيد بن ربيعة |
| مننا على عمرو فعاد لحيه | فعلْ | ٣٤٢٢ | |
| رابط الجأش على فرجهم | متلْ | ١٨٥٠/م | لبيد |
| أراك تؤمل حسن الثناء | البخيلا | ٣٢٥٦ | |
| من لم يكن لك منصفا | بديلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| وعليك نفسك فارعها | جميلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| والمرء إن عرف | الجميلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| سأقسم كل ذي جن وإنس | حللنا | ٣٤٢٢ | |
| خير البرية أتقاها وأعدلها | حملا | ٦٢٥ | حسان بن ثابت |
| إن كنت متخذ خليلا | الخليلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| إن لم تنل خيرا | ذليلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| يا متنبي الدار التي | الرحيلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| والثاني التالي المحمود مشهده | الرسلا | ٦٢٥ | حسان بن ثابت |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فكذاك لا جعل | سبيلا | ١٦٩٣ | سابق |
| فلا تبغين سواها | سبيلا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| وأوضح للمسلمين السبيل | سبيلا | ١١٩٥/ت | مصعب بن عبدالله |
| فخلهم والذي يهصبون | طويلا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| فلرب شهوة ساعة | طويلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| إذا أحدثوا بدعة في القرآن | عدولا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| أناس لهم رية في | غليلا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| ولربما سئل البخيل | فتيلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| فامسك عليك فضول | فضولا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| إذا تذكرت شجوا من أخي | فعلا | ٦٢٥ | حسان بن ثابت |
| وتجنب الشهوات واحذر | فتيلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| وكيف يسود أخو بطنه | قليلا | ٣٢٥٦ | |
| ولا تصبحن أخا بدعة | قيلا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| ومن استخف بنفسه | وقيلا | ١٦٩٣ | سابق البربري |
| وقد أحكم الله آياته | كفيلا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| وأقل ما تجد اللئيم | مستطيلا | ١٦٩٣ | سابق |
| وهل تغني جلادة | نزلنا | ٣٤٢٢ | |
| ليتني كنت قبل ما قد | الوعولا | ٦٢٦ | أمية بن أبي الصلت |
| كل عيش وإن تطاول دهرا | يزولا | ٦٢٦ | أمية بن أبي الصلت |
| فإن مقالته كالظلال | يزولا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| ترى المرء يعجب أن يقول | يقولا | ١١٩٥ | عبدالله بن مصعب |
| فيقول لا أجد السبيل | ينيلا | ١٦٩٣ | سابق |
| إن يكن ما به أصيب | أجلُ | ٧٩١، ٣٢٠٣ | |
| وإن تكن الأرزاق | أجملُ | ٢٦٨٣ | |
| وإذا ما الجدُّ ولى | الأصيلُ | ٨٦١/م | بعض الحكماء |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وإن تكن الأبدان للموت | أفضلُ | ٢٦٨٣ | |
| فإن تكن الدنيا تعد نفيسة | وانبلُ | ٢٦٨٣ | |
| ألا كل شيء ما خلا | باطلُ | ١٣٧٨ | |
| ودع التشاغل بالذنوب | تتعللُ | ٢٢٩ | محمد بن يعقوب القاضي |
| ويقسم ميراثي رجال | وتشغلُ | ١٧٧٤، ٣٤٢٩ | السائب |
| ثم يبقى الله والأعمال | الجميلُ | ٨٦١/م | بعض الحكماء |
| إذا المرء لم يدنس من اللوم | الجميلُ | ١٤٧٦ | دكين الراجز |
| القوم بعدك في حال | الحالُ | ٢٠٦٦/م | |
| ناداهم صارخ من بعد ما دفنوا | الحللُ | ٨٨ | |
| إنما الدنيا جدود | ذليلُ | ٨٦١/م | بعض الحكماء |
| فإن هو لم يضرع عن اللوم | سبيلُ | ١٤٧٦ | دكين الراجز |
| فساخط أمر لا يبدل غيره | سيبدلُ | ١٢١٠ | |
| خطب يوم الحساب خطب | العقولُ | ١٧٦٨ | |
| ترعى مذانب وسمي أطاع لها | القيلُ | ١٢٥٣ | [طفيل الغنوي] |
| ملوا البكاء فما يبكيك | والقالُ | ٢٠٦٦/م | |
| باتوا على قلل الأجيال | القللُ | ٨٨ | |
| أين الوجوه التي كانت | الكللُ | ٨٨ | |
| الفقر يزري بأقوام ذوي | المالُ | ١٥٩٦/م | |
| تعبت مالك ميراثا | المالُ | ٢٠٦٦/م | |
| لقد غرت الدنيا رجالا | متحولُ | ١٢٠١ | |
| هم يمنعون الجار حتى | منزلُ | ٣١٨٤ | مروان بن أبي حفصة |
| وأخو الفقر حقير | نبيلُ | ٨٦١/م | بعض الحكماء |
| وبالغ أمر يأمل دونه | يأملُ | ١٢١٠ | |
| وإن تكن الأبدان | يبخلُ | ٢٦٨٣ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| ألا قد أرى إلا الخلود | ويحجلُ | ١٧٧٤، ٣٤٢٩ | السائب |
| ويطير الشرار منها | يحولُ | ١٧٦٨ | |
| إن كنت تفهم ما أقول وتعقل | يرحلُ | ٢٢٩ | محمد بن يعقوب |
| كل بؤس ونعيم | يزولُ | ٨٦١/م | بعض الحكماء |
| فيه نار تفوح من | ويصولُ | ١٧٦٨ | |
| أنساك جانب علمه | فيجعلُ | ٢٢٩ | محمد بن يعقوب |
| فافصح القبر عنهم حين ساء | يقتتلُ | ٨٨ | |
| هم القوم إن قالوا | وأجزلوا | ٣١٨٤ | مروان بن أبي حفصة |
| قد طال ما أكلوا دهرا | أكلوا | ٨٨ | |
| واستنزلوا من أعالي عز | نزلوا | ٨٨ | |
| صليت مني هذيل بحرق | يملوا | ١٣٥٨ | ابن أخت تأبط شرا أو خلف الأحمر |
| مالك وضاح دائم | الأجلِ | ٢٣٥٧ | وضاح اليمن |
| أنزلوني تحت صخر | أثقلوني | ١٣٦٧ | |
| وأبيض يستسقى الغمام بوجهه | للأراملِ | ٥٧٤، ٢٥٣٤ | أبو طالب |
| ترحل ما ليس بالقافل | بالآفلِ | ٦٢٨ | عبدالحميد الكاتب |
| حتى متى أنا في حط | وإقبالِ | ٢١٨٤ | المأمون |
| فاقني حياءك لا أبا لك | اقتلِ | ٣٤٧٢ | عنترة |
| ولكنما أسعى لمجد | أمثالي | ١٥٩٥ | امرىء القيس |
| يا موت ما أن تزال | الأملِ | ٢٣٥٧ | وضاح اليمن |
| وإنما المنية في المواطن | الأملِ | ٣٤٧٣ | عنترة |
| لعقوني أدرجوني ثم قاموا | أنزلوني | ١٣٦٧ | |
| إذا المرء أعطى نفسه | باطلِ | ٢٢٣٢/م، ٣١٩٠ | |
| دع الدنيا وكل أخ عليها | البخيلِ | ١٩٣٦/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لموت الفتى خير من البخل | بخيلِ | ٣٢٥٥ | ابن جهم الكاتب |
| أبكي على ذا وأبكي | الثاكلِ | ٦٢٨ | عبدالحميد الكاتب |
| وقار الحلم يقرع | بالثقيلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| فما يبحث الساعات إلا على | ثكلِ | ٢٠٦٦/م | |
| كأن راكبها غصن بمروحة | ثملِ | ٢٨٥٢ | |
| شرهت فلست أرضى | جليلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ومالك غير تقوى | الجميلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| يدور على القدور | جيلِ | ١٩٣٦/م | |
| أسخو بنفسي لأني | حالِ | ٣٢٦٦ | الخليل بن أحمد |
| نعى نفسي إلي من الليالي | حالِ | ٣٢٩٧ | |
| ثم أضحوا لعب الدهر بهم | حالِ | ٧٣٧ | عدي بن زيد |
| إذا أردت مساماة تقعدني | الحالِ | ١٥٩٦/م | |
| وقائل كيف أنت | حالي | ٢١٤٦ | |
| ونازح الدار لا ينفك | حالي | ٢١٨٤ | المأمون |
| تمني الذي يأتيك | الحبلِ | ١٨٩٧/م، [٣٠٧٠/م] | |
| قبيلة لا يغدرون بذمة | خردلِ | ٩٨٨ | قيس بن عمرو |
| وللدنيا يد تهب | الخليلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ومالك غير عقل | دليلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| وللدنيا دوائر دائرات | وبالذليلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ولست بشاتم أحدا | الرحالِ | ٢٩٩٧ | |
| فلهفي من الخلف النازل | الراحلِ | ٦٢٨ | عبدالحميد الكاتب |
| لقد كذب الواشون | برسولِ | ١٨٥٠/م | [كثير عزة] |
| ألا يا عاشق الدنيا | الرحيلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| لعمرك ما الدنيا بدار | رجلِ | ٢٠٦٦/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| قد يدرك المتأني بعض | الزللِ | ٢٦٧٣/م | القطامي |
| صل لذي العرش | والزللِ | ٢٣٥٧ | وضاح اليمن |
| هب الدنيا تساق إليك عفوا | زوالِ | ٣٢٩٧ | |
| رب قوم قد أناخوا عندنا | الزلالِ | ٧٣٧ | عدي بن زيد |
| ألا هلك الجود | السائلِ | ٣٠٦٦ | |
| أعاذل ليس البخل منه | سبيلِ | ٣٢٥٥ | ابن جهم الكاتب |
| وما انفك من شهوات | السبيلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| لقد ينعش الله الفتى | شملِ | ٣٤١٥ | |
| لئن عوفيت من شهوات | طويلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| وكم من ملك صغر الموت | ظليلِ | ٣٠٦٣/م | |
| وميزان عدل لا يخيس | عائلِ | ٢٥٣٤ | أبو طالب |
| وساقت إليه الإثم والعار | عاجلِ | ٢٢٣٢/م، ٣١٩٠ | |
| كأن ممرضي قد قام يسعى | عجالِ | ٣٢٩٧ | |
| وإن امرىء في حومة الموت | لعليلِ | ٢٣١ | الخليل بن أحمد |
| كلانا في تصرفه | العليلِ | ١٩٣٦/م | |
| وما عاشق | غليلِ | ٣٠٦٣ | |
| يطيف به الهلال من آل هاشم | وفضائلِ | ٢٥٣٤ | أبو طالب |
| فنفسي لا تطاوعني ببخل | فعالي | ٥٢٦ | عبدالله بن معاوية |
| لسانك أحلى من جنى | قفلِ | ١٨٩٧/م، ٣٠٧٠/م | |
| وما انفك من أمل | وقيلِ | ١٩٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ما أفضح الموت للدنيا وزينتها | لأهليها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ | محمود |
| إذا الله عادى أهل | مقبلِ | ٩٨٨ | قيس بن عمرو |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| فما ترجو بشيء ليس يبقى | الليالي | ٣٢٩٧ | |
| ولو أني قنعت | بمالِ | ٣٢٩٧ | |
| أبلغ سليمان أني عنه في | مالِ | ٣٢٦٦ | الخليل بن أحمد |
| أرى نفسي تتوق إلى أمور | مالي | ٥٢٦ | عبدالله بن معاوية |
| فمالي لست مشغولا | مالي | ٣٢٩٧ | |
| وإذا جعل اللئيم | مالي | ٢٩٩٧ | |
| الرزق على قدر | محتالِ | ٣٢٦٦ | الخليل بن أحمد |
| إن المنية لو تمثل مثلت | المنزلِ | ٣٤٧٢ | عنترة |
| فأجبتها إن المنية | المنهلِ | ٣٤٧٢ | عنترة |
| بكرت تتخوفني الحتوف | بمعزلِ | ٣٤٧٢ | عنترة |
| ولا يردون الماء إلا عشية | منهلِ | ٩٨٨ | قيس بن عمرو |
| أولاد حفدة حول قبر أبيهم | المفضلِ | ٧٤٨ | حسان بن ثابت |
| فلو أن ما أسعى لأدنى | المالِ | ١٥٩٥/م | امرىء القيس |
| ولو قعدت أتاني الرزق | المالِ | ٢١٨٤ | المأمون |
| رزقت لبا ولم أرزق مالا | المالِ | ١٥٩٥ | |
| رابط الجأش على فرجهم | منلِ | ١٨٥٠/م | لبيد |
| ومنه الحادثات بكل | والمطيلِ | ١٩٣٦/م | |
| لهم وهب النعمان بردي | المحصلِ | ٢٠٢٦ | الفرزدق |
| ومن كان يطمع في ماله | والنائلِ | ٣٠٦٦ | |
| تعاف الكلاب الضاريات | نهشلِ | ٩٨٨ | قيس بن عمرو |
| ولا عيب فينا غير غرق | النملِ | ٧١٨ | |
| فخذ القليل وكن كأنك | نفعلِ | ٨٠٦ | أبو دلف |
| أعجلتنا فأتاك عاجل | تقللِ | ٨٠٦ | أبو دلف |
| يسود أقوام وليسوا | نوفلَ | ١٧٣٥ | |
| تبكي من ابن لها قاطع | واصلِ | ٦٢٨ | عبدالحميد الكاتب |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| تنال كفاك كل | الوعلِ | ٢٣٥٧ | وضاح اليمن |
| من لي سواك يكون | يكلاني | ٣٠٥٥ | |
| فما ثم في سعد ولا | يتبهدلِ | ٢٠٢٦ | القرزدق |
| الذل في حمة النفوس | انشغالها | ٢٥١٨ | |
| إذا كنت تبغي أيما | وخالها | ٣٢٨١ | |
| فإنهما منهما كما هي | مثالها | ٣٢٨١ | |
| فإن لم يكن إلا تعلل ساعة | قليلها | ٣٢٨٥ | ذو الرمة |
| فإن الذي يرجو من المال | وخبالها | ٣٢٨١ | |
| ولا تطلب البيت الدني | مالها | ٣٢٨١ | |
| تعفوا الملوك عن | لفضلها | ٢٢١٣ | النعمان بن المنذر |
| وإلا ليعرف فضلها | نكلها | ٢٢١٣ | النعمان بن المنذر |
| بنت الخليفة والخليفة | بعلها | ٢٠١١ | |
| ولقد تعاقب في | لجهلها | ٢٢١٣ | النعمان بن المنذر |
| فدا لرسول الله أمي وخالتي | عياليا | ٧٥٨ | صفية |
| | -م- | | |
| وداعك مثل وداع الربيع | الديمْ | ١٤٣٢ | [إسحاق الموصلي] |
| فإذا الأشائم كالأيامن | كالأشائمْ | ٩٣٧/م | |
| وكذاك لا خير ولا شر | بدائمْ | ٩٣٧/م | |
| وإذا صاحبت فاصحب ماجدا | وكرمْ | ٢٨٣٧ | |
| عليك السلام فكم من وفي | كرمْ | ١٤٣٢ | [إسحاق الموصلي] |
| قوله للشيء: لا | نعمْ | ٢٨٣٧ | |
| وكأن من نزلت به أولاهما | أخراهما | ٩٧٢/م | |
| ثم كسا الريش والعقا | أدما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| يفلقان هاما من رجال | وأظلما | ١٣٧٤ | |
| تعاظمني ذنبي فلما عدلته | أعظما | ٦٠٨، ٣٣٤٦ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| تقول سل المعروف | أكثما | ١٣١٩ | |
| ولكن فطام النفس أثقل | ترومها | ١٤٩٨ | عمرو بن كلثوم |
| وكنت امرىء لو شئت | تستديمها | ١٤٩٨ | عمرو بن كلثوم |
| أرى بصري قد رابني | وتسلما | ٢٧٦ | [حميد بن ثور] |
| ثم عظاما أمامها عصبا | فالتأما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| تكلفني إذلال نفسي | لتكرما | ١٣١٩ | |
| فما كان قيس هلك في | تهدما | ٨٠٤/م، ٣٣٢٨ | |
| وهل لكم فيها إلي فإنني | حذيما | ٦٣٧ | [أوس بن حجر] |
| أمسوا عبيدا يرعون | حلما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| الخافض الرافع السماء | دعما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| الخالق الباري المصور | دما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| وأين الملوك الناعمون | كالدما | ١١٠٨ | مسعر |
| في هذه الأرض والسماء | رحما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| يا أيها الناس هل ترون | رغما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| الليل شيب والنهار | رحاهما | ٩٧٢/م | |
| تحية من ألبستة | سلما | ٨٠٤/م، ٣٣٢٨ | |
| الحمد لله لا شريك له | ظلما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| المولج الليل في النهار | الظلما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| فعرفوا في البلاء | والعدما | ٥٦٩ | النابغة الجعدي |
| أو سبأ الحاضرون مآرب | العرما | ٥٦٩ | النابغة الجعدي |
| فائتمروا الحق ما بدا لكم | عصما | ٥٦٩ | النابغة الجعدي |
| سيأتيك يوم لست فيه بمكرم | عليكما | ٢٤٩٠ | |
| ففيم عرفت الخير | والغما | ٣٢٧٨ | أبو العتاهية |
| قضى وطرا منه يسيرا | الغما | ١٤٠٦/م | عمرو بن العاص |
| ثمت لا بد أن سيجمعكم | قسما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| واللون والصوت والخلائق | الكلما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| لبيكما لبيكما | لديكما | ٦٢٦ | أمية بن أبي الصلت |
| صفوح عن الإجرام | مجرما | ١٦٩٨/م | |
| ولو شاتم الفتيان في الحي | شتما | ٢/٣٣٥٤ | بعض الشعراء |
| وليس يبالي أن يكون | مسلما | ١٦٩٨/م | |
| إذا أنا لم أشكر على | المذمما | ٣٢٧٨ | أبو العتاهية |
| تنجبتها للنسل وهي غريبة | معمما | ٢/٣٣٥٤ | بعض الشعراء |
| وبدلوا السدر والآراك به | منهدما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| يتناهبان لحومنا ودماءنا | نراهما | ٩٧٢/م | |
| من نطفة قادر مقدرها | والنسما | ٥٦٩ | نابغة الجعدي |
| فأنا النذير الذي الشيبة | هما | ٩٧٢/م | |
| عليك سلام الله قيس بن عاصم | يترحما | ٨٠٤/م، ٣٣٢٨/م | |
| إذا المرء لم يترك طعاما | يمما | ١٤٠٦/م | عمرو بن العاص |
| كفاه من تعرضك الثناء | يوما | ٤٩/ت | أمية بن أبي الصلت |
| فإننا وقد آمت نساء كثيرة | أيمُ | ٣٤٨ | رجل من بجيلة |
| وسعيك فيما سوف تكره | البهائمُ | ٦٠٩ | عمر بن عبدالعزيز |
| فهناك يعذر أن وعظت | التعليمُ | ٢١٨٥ | |
| وما نحن إلا مثلهم | وتقدموا | ٣٢٣٨ | |
| وما نحن إلا مثلهم غير أننا | وتقدموا | ٧٧٣/م | |
| وما قصرت بي في المكارم | فاحرمُ | ١/٣٠٧٩ | [بكر بن النطاح] |
| تسر بما يبلى وتفرح | حالمُ | ٦٠٩ | عمر بن عبدالعزيز |
| ابدأ بنفسك فانهها | حكيمُ | ٢١٨٥ | |
| وأن الله ذو حلم | الحليمُ | ١٨٢١، ٣٣٢٧/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| كسى حلة البهاء وطافت | الخدامُ | ٣٥٣٠ | مسكينة الطفاوية |
| إلى ديان يوم الدين | الخصومُ | ٢٢٣٢ | أبو العتاهية |
| لقد ولت بدولتك الليالي | ذميمُ | ١٨٢١، ٣٣٢٧/م | |
| في كفه خيزران ريحه | شحمُ | ١٥٥٢ | |
| حلي وقيل يا قارىء ارق | الصيامُ | ٣٥٣٠ | مسكينة الطفاوية |
| ولست بحابس لغد طعاما | طعامُ | ١٢٠٦ | النابغة |
| ولست بداخر لغد طعاما | طعامُ | ١٤٠٤ | النابغة |
| ينادي الجار خادمه | الطعامُ | ٢٩٩٥ | |
| حتى متي لا نرى عدلا نسر به | ظلموا | ٥٧٣ | ابن شبرمة |
| أما والله إن الظلم | الظلوم | ٢٢٣٢ | أبو العتاهية |
| وزالت لم تعش | عديم | ١٨٢١ | |
| وزالت ولم يعش فيها | عديم | ٣٣٢٧/م | |
| منبعدا لا انقضاء له | العظيم | ١٨٢١، ٣٣٢٧/م | |
| شروا بآخرة دنيا مولية | علموا | ٥٧٣ | ابن شبرمة |
| إذا أخفر وكم مرة | العمائمُ | ١٤٤٢ | زيد الخيل |
| وادعو حين يحضرني | غلامُ | ٢٩٩٥ | |
| نهارك يا مغرور سهو | لازمُ | ٦٠٩ | [مسعر بن كدام] |
| ألم تر أن الله أظهر دينه | معصمُ | ٣٤٨ | رجل من بجيلة |
| كفى حزنا أن الغنى متعذر | مغرمُ | ١/٣٠٧٩ | [بكر بن النطاح] |
| يغضي حياء ويغضين من | يبتسمُ | ١٥٥٢ | |
| ويشتموا فترى الألوان | أحلامِ | ٨١٨/م، ٣٢٤١، ٣٣٣٣ | [النظام] |
| عباس إن الجهل مزر | فاحلمِ | ٣٤٦٩ | مرداس بن عامر |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| إن خذل المولى فلا | فاعزم | ٣٤٦٩ | مرداس بن عامر |
| عرضنا عليك النزل | الأشائم | ٣٤٢٢ | |
| لن يدرك المجد أقوام | لأقوام | ٨١٨/م، ٣٢٤١، ٣٣٣٣ | [النظام] |
| طحطحتا طحاطح الأعوام | الأيام | ٢٦٠٦ | |
| أمالك أن الحزن أحلام نائم | بدائم | ٧٧٢/م | |
| إذا أنت لم تسل اصطبارا | البهائم | ٧٧٢ | |
| فيا أب لا تنسنا | ترم | ٣٤٢٠ | بنت الأعشى |
| ولا يهلكن المال عندك | فتكرم | ٣٤٦٩ | مرداس بن عامر |
| وكائن ترى من صامت لك معجب | التكلم | ٥٣١ | [الأعور الشني] |
| لا تشكون دهرا صححت له | الجسم | ١٤٣٣ | |
| أإن زل عمر زلة | بحاجم | ٣٤٢٢ | |
| ولقد غدوت وكنت | وحاتم | ٣٩٧/م | |
| فاطلبوا الأجر والمثوبة | الحرام | ٢٦٠٦ | |
| تهوى حياتي وأهوى موتها | الحرم | ١٣٨٠ | |
| لو شئت كنت ككرز | الحرم | ١٢٤٤ | ابن شبرمة |
| سألا عن الجود والمعروف | الحكم | ١٩٢٣ | ابن هرمة |
| ولما رأت أن الشريعة | دام | ١٠١٦ | امرىء القيس |
| لسان الفتى نصف ونصف فؤاده | الدم | ٥٣١/ت | |
| أرانا إذا أضمرتك البلاد | الرحم | ٣٤٢٠ | بنت الأعشى |
| وزادني رغبة في العيش | الرحم | ١٣٨٠ | |
| تأمل رويدا هل تعدن | سالم | ٧٧٢/م | |
| هبك الخليفة كنت | السقم | ١٤٣٣ | |
| عتبت على سلم فلما | سلم | ٢١٨٤/م، ٦٥٣ | نهار بن توسعة |
| فما دون ما تهواه النفس | الصارم | ٣٤٢٢ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| طمعت لما نسك | بالصرائم | ٣٤٢٢ | |
| تيممت العين التي | طام | ١٠١٦ | امرىء القيس |
| فأتيناكم نمد أكفا | الطعام | ٢٦٠٦ | |
| لولا أمية لم أجزع | الظلم | ١٣٨٠ | |
| فما لك فابذل دون | الغلاصم | ٣٤٢٢ | |
| وجئت بعدوان وظلم | الغلاصم | ٣٤٢٢ | |
| خزاعية الأطراف حرية | الفم | ٣٢٨٨ | |
| رويدك لا تعجل بليت | قماقم | ٣٤٢٢ | |
| قد حال دون لذيذ العيش | والكرم | ١٢٤٤ | ابن شبرمة |
| ماذا بمنبج لو تنشر | والكرم | ١٩٢٣ | ابن هرمة |
| وقال علي في التعازي لأشعث | المآثم | ٧٧٢/ت | |
| ولا تنقش الدهر شوكه | المحطم | ٣٤٦٩ | عباس بن مرداس |
| من رآني فقد رآني | مقامي | ٢٦٠٦ | |
| أتروض عرسك بعدما هرمت | الهرم | ١١٨٩ | |
| أحاذر الفقر يوما أن يلم | وضم | ١٣٨٠ | |
| | ـ ن ـ | | |
| وكما تبلى وجوه في الثرى | الحزنْ | ٧٤٣ | عمران بن موسى، أو [أبو العتاهية] |
| إذا ما الدهر | بآخرينا | ٣٣٠٥ | خال الفرزدق |
| فماذا يقوم لأفواههم | البطونا | ٨٤١ | عبدالله بن المبارك |
| وابتلينا وما نفكر في | بيننا | ١٤٩٧ | |
| إذا ما تذكرت أجسامهم | تهونا | ٨٤١ | عبدالله بن المبارك |
| أتيت بسنين قد رمتا | الدفينا | ٨٤١ | عبدالله بن المبارك |
| حملوه على الرقاب | دفينا | ٩١٦/م | |
| وكلهم سائل عن نفيل | دينا | ١٢٥٣ | نفيل بن حبيب |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| على وزن منين إحداهما | رزينا | ٨٤١ | عبدالله بن المبارك |
| كم رأينا معطيا | رهينا | ٩١٦/م | |
| أين من كان قبلنا | وزينا | ١٤٩٧ | |
| وهل شيء يقوم لذكر | عذنا | ٣٤٢٢ | |
| ألا ردي ركائبنا ردينا | عينا | ١٢٥٣ | نفيل بن حبيب |
| عجبا لامرىء يتيقن | عينا | ١٤٩٧ | |
| أي غصن ثوى | وعيونا | ٩١٦/م | |
| هذه الدار أواها قبلنا | لنا | ٨١ | |
| صلى الإله على جسم | مدفونا | ١٠٧٩ | سودة بنت عمارة |
| قد حالف الحق لا يبغي | مقرونا | ١٠٧٩ | سودة بنت عمارة |
| ادفع ضعيفك لا يحر بك ضعفه | ملحنا | ٦٩٨ | زهير بن حباب الكلبي |
| ثم تفنينا وتبقى بعدنا | وطنا | ٨١ | |
| إني امرؤ لا شائن | أفنُ | ٣٣٢٨ | قيس بن عاصم |
| لا يأمنن على النساء أخا أخ | أمينُ | ٩٣ | [أبو شمر الغساني] |
| ما حسن الرجال لها | البيانُ | ٢٧٣٣، ٣٤٢٥ | |
| ولا يرضى الكريم بيوم | دينُ | ٢٠١٩/م | محمود |
| وكم من ماجد أضحى | زمانُ | ٢٧٣٣، ٣٤٢٥ | |
| إذا أعطي القليل فتى | زينُ | ٢٠١٩/م | محمود |
| وأرى الموت قد تدلى | الشاطرونُ | ١٩٩٧ | أبو داود الأيادي |
| وإن تكن العطية من | وشينُ | ٢٠١٩/م | محمود |
| أتيتك عاريا خلقا | الظنونُ | ١٤٠٤ | النابغة |
| أني امرؤ لا شائن حسبي | الغصنُ | ٨٠٤ | قيس بن عاصم المنقري |
| من منقر في بيت مكرمة | الغصنُ | ٣٣٢٨ | قيس بن عاصم |
| خطباء حين يقول قائلهم | فطنُ | ٨٠٤ | قيس بن عاصم |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لا يفطنون لعيب جارهم | فطنُ | ٣٣٢٨ | قيس ن عاصم |
| فعذ بالله والجأ إليه | كونُ | ٢٠١٩/م | محمود |
| كفى بالمرء عيبا أن تراه | لسانُ | ٢٧٣٣ | |
| وجرح السيف تدمله | اللسانُ | ٣٠٤٩/م | |
| وللمرء عيبا أن تراه | لسانُ | ٣٤٢٥ | |
| خطباء حيث يقول قائلهم | لسنُ | ٣٣٢٨ | قيس بن عاصم |
| البر شيء هين | لينُ | ١٤٩٥ | ابن عمر |
| حر الرجال وإن تعفف جهده | سيخونُ | ٩٣ | |
| فألقيت الأمانة لم تخنها | يخونُ | ١٤٠٤ | النابغة |
| أسد على أعدائه ما إن يلين | يكونُ | ٢٥١٩ | |
| وباعوا النفوس فلم يربحوا | أثمانها | ١٧٧ | إبراهيم بن أدهم |
| رأيت الذنوب تميت القلوب | إدمانها | ١٧٧ | إبراهيم بن أدهم |
| لقد وقع القوم في جيفة | إتتانها | ١٧٧ | إبراهيم بن أدهم |
| وهل أهلك الدين إلا الملوك | ورهبانها | ١٧٧ | إبراهيم بن أدهم |
| وترك الذنوب حياة القلوب | عصيانها | ١٧٧ | إبراهيم بن أدهم |
| أشكو إليك حوادثا | الأحزانِ | ٣٠٥٥ | |
| فحكمنا بما أردنا وعاقبنا | والإحسانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| أعددت للضيفان كلبا ضاريا | أرزنِ | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ | |
| فتعالى الذي يميت ويحيى | الأزمانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| والقصور المشيدة الشامخات | والأعوانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| ومعاذرا كلبا | الألزنِ | ٢٥٠٠، ٢٥٠١ | |
| من تحلى بغير ما هو فيه | الامتحانِ | ٢٤٤٣ | |
| ولنا كانت المشاعر والكعبة | والأبطحانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| ولا تأمنن وإن أمسين في حرم | إنسانِ | ٥٥٧ | سويد بن عامر المصطلقي |
| والنهي والعلى والأخذ والإعطاء | وأوانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| إن المنية لا تؤامر من أتت | تستأذنِ | ٨٦١ | |
| ومشيد دارا ليسكن | تسكنِ | ١١٠٧ | مسعر |
| سبحان من لم يزل عليا | ثانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| والخير والشر مجموعان في قرن | الجديدانِ | ٥٥٧ | سويد بن عامر المصطلقي |
| أنت تلهو والمنايا | جفوني | ١٣٦٧ | |
| ألهتك لذة نومة عن | الجنانِ | ١١٠ | جارية |
| لولا رجاؤك والذي | جناني | ٣٠٥٥ | |
| على كل حال يأكل | والحدثانِ | ٧٦٩، ٣٢٣٦ | أعرابية |
| فلبثنا أرباب مكة حتى | الحدثانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| سائل الأيام تخبر | وحزونِ | ١٣٦٧ | |
| تعيش مخلدا لا موت فيه | الحسانِ | ١١٠ | جارية |
| وهجرنا الأهلين بعد وصال | الحسانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| واعلم بأنك لا أبالك في | خازنِ | ٨٦١ | |
| أرى أناسا بأدنى الدين قد قنعوا | بالدونِ | ١٢٠٩ | إبراهيم بن أدهم |
| يا خلائي تعالوا | دوني | ١٣٦٧ | |
| ورضينا من النعم والعطر | والديدانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| فاستغن بالله عن الدنيا | الدين | ١٢٠٩ | إبراهيم بن أدهم |
| لا تضرعن لمخلوق | بالدينِ | ٣٢٧٠ | [أبو العتاهية] |
| ما زلت يوم الهاشمية | الرحمنِ | ١٩٥١ | |
| فعرينا من ملكنا | زمانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| يا رب لم تبك | زمانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| يا ساكن الدنيا أتعمر | ساكنِ | ٨٦١ | |
| فحميت حوزته وكنت | وسنانِ | ١٩٥١ | |
| فلا تأمنن الحرب إن استعارها | شجونِ | ٥٣٢ | الفرزدق |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| ورزق ربي له وجوه | ضمانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| كصخرة إذا تساءل في مراج | ظنونِ | ٨٥٨ | الأخنس الجهني |
| وتركنا مجالسنا تصفر | والغربانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| قضى على خلقه المنايا | فانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| فاستغن بالله عن فلان | فلانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| تيقظ من منامك إن خيرا | بالقرآنِ | ١١٠ | جارية |
| رأيت عرابة الأوس يسمو | القرينِ | ٥٥٦ | الشماخ |
| والعتاق الجياد والقضب | القيانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| واتخذنا الثرى شعارا | والكتانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| رفعوني حرفوني غسلوني | وكفنوني | ١٣٦٨ | |
| قدم العهد وأسلاني الزمن | والكفنِ | ٧٤٣ | عمران بن موسى الجزري |
| وأخذنا النهرين دجلة والنيل | كوفانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| فالمال من حله قوام | واللسانِ | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| والذي يدعي البلاغ إذا | باللسانِ | ٢٤٤٣ | |
| الموت شيء أنت تعلم أنه | متهاونِ | ٨٦١ | |
| لست أرى ما ملكت | مكاني | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| نحن كنا الملوك نقضي | مكانِ | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| أفسدت بالمن ما أسديت | بمنانِ | ١٣٨٤ | |
| كم رأينا من قرون | المنونِ | ١٣٦٧ | |
| واسترزق الله رزقا من خزائنه | والنونِ | ٣٢٧٠ | [أبو العتاهية] |
| ما أنا إلا لمن يغابي | يراني | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | |
| ودعوني أسلموني | يعرفوني | ١٣٦٧ | |
| تساءل عن حصين كل ركب | اليقينِ | ٨٥٨ | الأخنس الجهني |
| إذا ما راية رفعت لمجد | باليمينِ | ٥٥٦ | الشماخ |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| | | ـ هـ ـ | |
| ألهى جهولا أمله | أجلهْ | ٨٣ | |
| ما أنزل الموت حق منزلته | أجلهْ | ١٨٩/م | |
| ويلك يا دنيا لقد قصرت | الآخرهْ | ٢٧٥ | |
| عي الشريف يشين منصبه | أدبهْ | ٢٦٨١ | |
| العبد يقرع بالعصا | الإشارهْ | ١٥٥٢ | القلتاني الفهمي[1] |
| وكيف يبقى آخر قد | أولهْ | ٨٣ | |
| إن البلية أن تحب | تحبهْ | ٣٠٧٤ | |
| ويصد عنك بوجهه | تعبهْ | ٣٠٧٤ | |
| تنفك تسمع ما حييت | تكونهْ | ٣٠٨٥ | أبو بكر الصديق، [خليفة ابن بزار] |
| أضاءت لهم أحسابهم | ثاقبهْ | ١٤٧٦/م، ٣٢٨٦ | لقيط بن زرارة |
| أخوك الذي إن سؤته | جانبهْ | ٣٠٥٩، ٣٤٦٦/م | [بشار بن برد] |
| لا تبك للدنيا ولا أهلها | الحافرهْ | ٢٧٥ | |
| إذا ما الضجيع ثنا | لباسهْ | ١٨٥٠/م | النابغة الجعدي |
| أهلكتني بفلان ثقتي | حسنهْ | ١٤٢٦ | |
| أنا الذي سمتني | حيدرهْ | ٩٠٤ | علي بن أبي طالب |
| ومن دنا من حتفه | حيلهْ | ٨٣ | |
| من صارف الدهر | خدعهْ | ٢٠١٩/م | محمود الوراق |
| ليس مع البخل للبخيل | دعهْ | ٢٠١٩/م | محمود الوراق |
| والمرء قد يرجو | دونهْ | ٣٠٨٥ | أبو بكر الصديق، [خليفة ابن بزار] |
| ولا خير في عقل | ذاهبهْ | ١٧٢٣ | |

(١) ونسب لغيره كما بيناه في موطنه.

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| يا رب حال لغير | زرعهْ | ٢٠١٩/م | محمود الوراق |
| وابك إذا أصبح أهل الثرى | الساهرهْ | ٢٧٥ | |
| أوفيهم بالصاع كيل | السندرهْ | ٩٠٤ | علي بن أبي طالب |
| ليس يستوجب شكرا رجل | سنهْ | ١٤٢٦ | |
| وإني من القوم الذين | صاحبهْ | ١٤٧٦/م | لقيط بن زرارة |
| وهون وجدي في شراحيل | صاحبهْ | ٢٣٧٨ | سليمان بن عبدالملك |
| يخيب الفتى من حيث يرزق | صاحبهْ | ٣٢٦٩ | |
| إلا أن خير العقل ما | وعاقبهْ | ١٧٢٣ | |
| وبقيت سهما في الكنانة | كاسرهْ | ١٠١٣ | أبو الطفيل عامر بن واثلة |
| نجوم سماء كلما غاب | كواكبهْ | ١٤٧٦/م | لقيط بن زرارة |
| فعش واحدا أو صل | ومجانبهْ | ٣٠٥٩، ٣٤٦٦/م | |
| إذا أنت لم تشرب | مشاربهْ | ٣٠٥٩، ٣٤٦٦/م | |
| | [بشار بن برد] | | |
| فلن مع القصد | معهْ | ٢٠١٩/م | محمود الوراق |
| العبد يقرع بالعصا | الملامهْ | ١٥٥٢ | ابن مفرغ الحميري |
| كليث غابات كريه | المنظرهْ | ٩٠٤ | علي بن أبي طالب |
| أوصيك خيراً به فإن له | أحمدها | (١٨) ملحق | أبو دلف |
| يدل ضيفي علي في ظلم الليل | موقدها | (١٨) ملحق | أبو دلف |
| ما أفظع الموت للدنيا | لأهليها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ | |
| | محمود الوراق | | |
| رأى غيره ورأى نفسه | شبيهها | ٣٢٩١ | |
| المال يذهب حله وحرامه | آثانهُ | ١٣٠٢ | |
| تذكر ما يبقى من العيش | أجلهُ | ٢٦٠٩ | |
| فكم من جاهل أردى | آخاهُ | ١٣٧٩ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أقلل زيارتك الصديق | استجدهُ | ٣٠٧٤/م | |
| واستبدلت منه المجالس | أمواله | ٩١٤/م | |
| نغص الموت كل لذة | أوحاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| أمسى وقد درست | أوصالهُ | ٩١٤/م | |
| لا تصحب أخا الجهل | وإياهُ | ١٣٧٩ | |
| يبيت إذا نام | بلابلهُ | ٢٦٠٩ | |
| فلا تنسخ بخطك غير علم | تراهُ | ١٨٩١/م | |
| وهو الباطن الذي | تراهُ | ٢٢٣٦/م | |
| المرء يطلب والمنية تطلبه | وتقلبهُ | ٧٣٨ | [أبو العتاهية] |
| عليك بما يعينك من كل | تقولهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| وخذ للمنايا لا أبالك | تقليهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| وكم من جديد على ظهرها | جدتهُ | ٣٩٢ | ابن أبي المغيرة |
| عجبا أنه إذا مات | وجفاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| حيثما وجه امرؤ | بحذاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ملك ينشر الملوك | حماهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| ما حال من سكن الثرى | حيالهُ | ٩١٤/م | |
| وكم محب لحبيب إذا | خلاهُ | ٩١٥ | |
| مضاجع سكان القبور | خليلهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| قاهر قادر قريب | دعاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| لا تزل تنعى حبيبا أبدا | دونهُ | ١٣٧٢ | |
| تزود من الدنيا بزاد من التقى | رحليهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| هل من قبيل تعلمون | رجالهُ | ٩١٤/م | |
| حسبنا الله باطلا ما سواه | رجاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| تراه إذا ما جئته | سائلهُ | ٣٣٢٠ | زهير |
| ألم تر أن المرء في دار | سبيلهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| يا باكي الميت على قبره | فستنساهُ | ٩١٥ | |
| كم من شفيق لم تجد | وسجاهُ | ٩١٥ | |
| يرى مستكينا وهو للهو | شاغلهُ | ٢٦٠٩ | |
| كم ترى الليل والنهار | وصباهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| يعرج عنه جاره | ضاربهُ | ٩٣٨ | |
| ليس التقي بمتق | وطعامهُ | ١٣٠٢ | |
| والمرء لا يصحبه في القبر | عملهُ | ٨٣ | |
| إن بلالا لم تشنه أمه | عمهُ | ٣/٣٣٥٤ | |
| إن الصديق يمله | عندهُ | ٣٠٧٤/م | |
| أمسى وحيدا موحشا | عيالهُ | ٩١٤/م | |
| من عاين الموت فداك | عيناهُ | ٩١٥ | |
| إلا أن خير الذخر | فضولهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| أنت ما استغنيت عن صاحبك | قوهُ | ٥٢١ | |
| تأوه ذي لب أصيب | قاتلهُ | ٢٦٠٩ | |
| وأي بلاغ تكتفي | قليلهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| ويطيب ما يحوى | كلامهُ | ١٣٠٢ | |
| وكم من مقيم على لذة | لذتهُ | ٣٩٢ | ابن أبي المغيرة |
| قد يحزن الورع التقي لسانه | لمفوهُ | ٢٤٤٣ | |
| ولربما استتر الفتى | لمموهُ | ٢٤٤٣ | |
| يقاس المرء بالمرء إذا | ماشاهُ | ١٣٧٩ | |
| كلما ليس منه بد | مداهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| إنما الشيب لابن آدم | نعاهُ | ٢٢٣٦/م | [أبو العتاهية] |
| وكم نائم نام غبطة | نومتهُ | ٣٩٢ | ابن أبي المغيرة |
| ولربما ابتسم الوقور من الأذى | يتأوهُ | ٢٤٤٣ | |
| وما من كاتب إلا | يداهُ | ١٨٩١/م | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| وترى الفتى سلس القياد | يرهبُ | ٧٣٨ | [أبو العتاهية] |
| وما حادثات الدهر | يزيلهُ | ٣٢٥٢ | أبو العتاهية |
| وليس عتاب الناس للمرء | يعاتبهُ | ٣١٨٩ | |
| أمسى ولا روح الحياة | ينالهُ | ٩١٤/م | |
| ما يقع العين كلما نظرت | أثرِهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| وصحة جسم المرء سقم | اشتكاءِهِ | ٢٤٣٨ | موسى بن المقفع |
| أيها الدائب الحريص | تستوفيهِ | ١٤٠٨، ٣٢٦٧ | |
| قبح الله نائلا ترتجيه | تقتضيهِ | ١٤٠٨ | |
| والموت جزار كل ذي | جزرِهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| ولو لم يجد في العمر قسما لزائر | حسناتهِ | ٥٢٩ | محمد بن منصور البغدادي |
| يشربها والأنام كلهم | حضرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| ولو خذلت أمواله جود كفه | حياتهِ | ٥٢٩ | محمد بن منصور البغدادي |
| إذا أتى يومه المعد له | خبرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| هوى النفس ما لا خير فيه | برأيهِ | ٢٤٣٨ | موسى بن المقفع |
| واذكر منه عفوه وعقابه | برجاءهِ | ٢٤٣٨ | موسى بن المقفع |
| فاعمل وقدم فكل ذي عمل | سقرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| نطق النبلي لنا به | وسلامهِ | ١٣٠٢ | |
| قد جعل الموت نصب | سمرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| طوبى لمن كان مسلما | صدرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| يا غائبا لا يؤوب من سفره | صغرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| وقد أرانا الزمان من عبر | عبرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| وكل ذي غيبة يؤوب | عفرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| قد قدر العمر ذو الجلال | عمرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| ثلاث خلال كلها غير طائل | غشائهِ | ٢٤٣٨ | موسى بن المقفع |
| إنما الجود والسماح | فيهِ | ١٤٠٨، ٣٢٦٧ | |
| فالحمد لله لا شريك له | قدرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| يا أحمد الخير كنت لي | قصرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو ا لعجمي |
| شربت كأسا أبوك | كبرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| وقد حلبت الزمان | كدرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| وقد جعلت نفسي | لقائهِ | ٢٤٣٨ | موسى بن المقفع |
| وليس يبقى سوء الإله | لمدخرهِ | ١٤٧٧ | علي بن عمرو العجمي |
| إن المهالبة الكرام تحملوا | المكروهِ | ٥٣٠ | الفرزدق |
| أضمر في القلب عتابا | هيبتهِ | ٣٠٠٧ | أبو نواس |
| زانوا قديمهم بحسن حديثهم | وجوهِ | ٥٣٠ | الفرزدق |
| فاسأل الله وحده | يرضيهِ | ١٤٠٨، ٣٢٦٧ | |
| لا ترى معطيا لما منع | يعطيهِ | ١٤٠٨ | |
| قبح الله نائلا ترتجيه | يقتضيهِ | ٣٢٦٧ | |
| لا ينال الحريص | فيكفيهِ | ١٤٠٨، ٣٢٦٧ | |
| | -و- | | |
| تسرى فلما حاسب المرء نفسه | السرو | ١٤٢٥ | |
| | -ي- | | |
| وأصبح لا يخشى ظلامه ظالم | باغيا | ٧٧٩ | |
| وكان بنا برا رؤوفا | باكيا | | صفية بنت عبدالمطلب |
| فقل للشامتين لنا | بقينا | ٣٣٠٥ | خال الفرزدق |
| بذلنا له الأموال من جل مالنا | تآسيا | ٧٧٩ | |
| أروح لتسليم عليك | تقاضيا | ٣٣١٩ | |
| أفاطم الله رب محمد | ثاويا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| ويعرض في أهل المواسم نفسه | داعيا | ٧٧٩ | |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| عليك من الله تحية | راضيا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| فلما أتانا واستقرت به النوى | راضيا | ٧٧٩ | |
| صدقت وبلغت الرسالة | صافيا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| فداء لرسول الله أمي وخالتي | وعياليا | ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| هريرة ودع إن تجهزت | غاديا | ١٣٦٥، ٣٣٥٧ | عبد بني الحسحاس |
| فلو أن رب الناس | ماضيا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| كأن على قلبي لذكر | المكاويا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| ثوى في قريش بضع عشرة حجة | مواتيا | ٧٧٩ | |
| نعادي الذي عادى من الناس كلهم | المواسيا | ٧٧٩ | |
| إن تنج منها تنج من ذي عظيمة | ناجيا | ١٢٢٩ | |
| أرى حسنا أيتمته وتركته | نائبا | ٧٥٨، ٣٢٣٣ | صفية بنت عبدالمطلب |
| كفى الشيب والإسلام | ناهيا | ١٣٦٥، ١٣٧٣، ٣٣٥٧، ٣٣٥٨ | عبد بني الحسحاس |
| كفى بالإسلام والشيب | ناهيا | ١٣٧٣ | |
| كفى بطلاب المرء لا يناله | ناهيا | ٣٣١٩ | |
| ونعلم أن الله لا شيء غيره | هاديا | ٧٧٩ | |
| نقلبه لنخبر حالتيه | ولينا | ١٦٠٣ | أبو الجهم |
| مالي وللدهر وصدق الدهر | اطري | ٢٤٤٤ | |
| فاسلك طريقا تمشي غير محتشم | الماني | ٥٥٧ | سويد بن عامر المصطلقي |
| هون عليك ولا تولع بإشفاق | الباقي | ٥٩٠ | يزيد بن خذاق |
| أما لي عبرة في ذكر قوم | ببالي | ٣٢٩٧ | |
| بمشرق الأرض طورا | بالي | ٢١٨٤ | المأمون |
| حسب الخليلين أن الأرض | بالي | ٧٧٤/م، ٣٤٧٤ | النابغة |
| تموت مع المرء حاجاته | بقي | ٣٣١١ | الصلتان |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| أيتها الدنيا فغري غيري | تغري | ٢٤٤٤ | |
| حوائج الناس كلها قضيت | تقضيها | ٣٣١٧ | |
| نروح ونغدو لحاجاتنا | تنقضي | ٣٣١١ | الصلتان |
| أناقة الله حاجتي | حواشيها | ٣٣١٧ | |
| فكل ذي صاحب يوما | فاني | ٥٥٧ | سويد بن عامر المصطلقي |
| فما يزيدهم قتل الذي | فيها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ محمود الوراق | |
| لا ترجعن على الدنيا | مساويها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ محمود | |
| أطاع الله قوم فاستراحوا | المعاصي | ٢٤٤٥ | |
| لم تبق من عيبها | معانيها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ محمود الوراق | |
| إذا ما علمت الزاد | وحدي | ٢٢٣٤/م | |
| وتفنى البنين وتفنى الأهل دائبة | يعاديها | ١٧٦٧/م، ٣٤٢٦ محمود الوراق | |
| لا عشيرتي تحميني | يفيدني | ٦٢٦ | أمية بن أبي الصلت |
| | - ى - | | |
| لقد أيقنت أني غير باق | أبالي | ٣٢٩٧ | |
| نميل على جوانبه كانا | أبينا | ١٦٠٣ | أبو الجهم |
| عفا الله عني حين أصبح ثاويا | أدري | ٢٤٩١ | |
| اختلفنا في المقدرات | فاستوينا | ١٤٩٧ | |
| وابتغينا من المعاش | لاكتفينا | ١٤٩٧ | |
| ما لنا نأمن المنايا | إلينا | ١٤٩٧ | |
| فلو نطقت دار لقالت | وللبلى | ١١٠٨ | مسعر |

| صدر البيت | القافية | الرقم | القائل |
|---|---|---|---|
| لا أكذب على ربي وقد | بلاني | ١٥٦٦ | |
| إلا عللاني بالزجاج وكرروا | تجري | ١٠١٨ | |
| كأن إخواني على حافتي | تجري | ٢٤٩١ | |
| إذا كنت لا تدري بالذي تساءل | تدري | ٢٣١ | الخليل بن أحمد |
| قد قلت ما قال الحكيم | تدري | ٢٤٤٤ | |
| وقولي كلما جشأت لنفسي | تراعي | ١٥٦١/م | قطري بن الفجاءة |
| منع البقاء تقلب | تمسي | ٢٠٦٠ | تبع الأول |
| والفقر ذل عليه باب | والتواني | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| فإنك لو رأيت ولن | رأينا | ١٢٥٣ | نفيل بن حبيب |
| كم رائيا من ميت كان | رأينا | ١٤٩٧ | |
| خدعتنا الآمال حتى جمعنا | وسعينا | ١٤٩٧ | |
| فلي إلى أن أموت رزق | عداني | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| إن دهرا أتى عليهم فأفنى | علينا | ١٤٩٧ | |
| حمدت الله إذا أبصرت | علينا | ١٢٥٣ | نفيل بن حبيب |
| ولنا كانت الرعاء تبيت قدما | الغواني | ٧٠٠ | عمرو بن شمر |
| ولعمري لتمضين ولا تمضي | مضينا | ١٤٩٧ | |
| عن المرء لا تسل وسل عن | مقتدي | ١٣٧٩ | عدي بن زيد |
| ألا عللاني قبل جيش | ندري | ١٠١٨ | |
| ما أنا إلا لمن بغاني | يراني | ٣١٨٥، ٣١٨٦ | أبو العتاهية |
| لا أسأل الناس ما في نفوسهم | يكفيني | ٢٥٠٤ | |
| قد زجر الزاجر | يوري | ٢٤٤٤ | |

* * *

# المحتويات والموضوعات


| | |
|---|---|
| بين يدي الفهارس | ٥ |
| فهرس الآيات | ٧ |
| فهرس الأحاديث النبوية مرتبة على المسانيد (الرجال) | ٢٥ |
| فهرس الأحاديث النبوية مرتبة على المسانيد (النساء) | ٥٧ |
| أحاديث وقعت ضمن أخبار وليست مسندة | ٦٣ |
| فهرس الأخبار والآثار مرتبة على قائليها | ٦٥ |
| فهرس الأخبار والآثار مرتبة على (النساء) | ٣٠٠ |
| المبهمون | ٣٠٣ |
| فهرس الأحاديث المرفوعةوالآثار والأخبار مرتبة على الحروف | ٣١٨ |
| فهرس القوافي | ٦٣٧ |


* * *


التنفيذ والإنتاج

دار الحسن للنشر والتوزيع

هاتف ٦٤٨٩٧٥ . فاكس ٦٤٨٩٧٥ . ص.ب ١٨٢٧٤٢ . عمان ١١١١٨ . الأردن